UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186128

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—880—5-8-74—10,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H355.232 Y54A Accession No. H4488

Author योगेन्द्रनाथ राज

Title आधुनिक युद्ध में नागरिक प्रतिरक्षा।

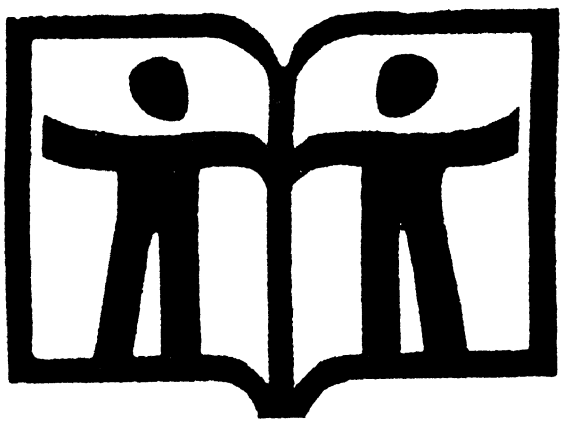
This book should be returned on or before the date last marked below.

आधुनिक युध्द में नागरिक प्रतिरक्षा

(CIVIL DEFENCE IN MODERN WARFARE)

लेखक :

योगेन्द्र नाथ राज



प्रकाशक :

राज प्रकाशन :

जन्मभूमि चेम्बर्स, वैलार्ड एस्टेट, बम्बई–१.

इस हिन्दी ग्रन्थ "आधुनिक युद्धमे नागरिक प्रतिरक्षा" अथवा अग्रेजी के मूल ग्रन्थ Civil Defence In Modern Warfare के सर्वाधिकार लेखक श्री योगेन्द्र नाथ राज के पास सुरक्षित है।

केंद्रीय हिन्दी निदेशालय (शिक्षा एवं समाज कल्याण मत्रालय) Government of India, Central Hindi Directorate, Ministry of Education & Social Welfare की प्रकाशको के सहयोग मे क्रियावित हिन्दी पुस्तको के लेखन, अनुवाद तथा प्रकाशन की योजना के अंतरीत प्रकाशित

मूल्य ३७-५०

भावे प्राइवेट लिमिटेड, बबई ८
मे केप्टेन जी. वी. भावे ने
राज प्रकाशन के लिये छापी।



भारत रत्न श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रधान मंत्री



प्रधान मंत्री

संदेश

जान-माल की हिफाज़त में नागरिक प्रतिरक्षा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह हमारा अनुभव है कि युद्ध के समय इसका महत्व और भी ज्यादा बढ़ जाता है। मुझे विश्वास है कि 'सिविल डिफेन्स' का यह हिन्दी संस्करण उपयोगी सिद्ध होगा।

इस पुस्तक की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं।

इन्दिरा गांधी

(इन्दिरा गांधी)

आधुनिक युध्द में नागरिक प्रतिरक्षा

(CIVIL DEFENCE IN MODERN WARFARE)

लेखक .

श्री योगेन्द्र नाथ राज

एम. ए , डी एड (इग्लैण्ड)

मेम्बर, इन्टरनेशनल सिविल डिफैन्स आरगेनिजेशन, जनीवा, (स्विट्ज़रलैण्ड)

लेखक की अन्य पुस्तकें – भयंकर विस्फोटक बम, अग्निदाहक बम और अग्नि से सावधानी, ब्रिटेन मे वार्डन सस्था, शरणगृह और खाइयां, हवाई हमले से बचाव, रोगिवाहन सेवा, जनता की शिक्षा, शास्त्रकी अर्थव्यवस्था का ग़दर के दौर पर चलना, इकोनोमिक कंट्रोलस् इत्यादि इत्यादि ।

दो शब्द

जनरल के. एम. करियाप्पा

भारत सेना के भूतपूर्व कमाण्डर - इन - चीफ

प्रकाशक :

राज प्रकाशन

जन्मभूमि चेम्बर्स, वैलार्ड एस्टेट, बबई–१.



श्री योगेन्द्र नाथ राज

एम. ए., डी. एड. (इंगलेण्ड), ए. आर. पी. (लन्दन),

मेम्बर, इन्टरनेशनल सिविल डिफैन्स ओरगेनिजेशन, जनीवा (स्विट्ज़रलेण्ड)

समर्पण

संघर्ष से पीड़ित आधुनिक युग की असंख्य निर्दोष जनता को, जिनका अस्तित्व अनिश्चित है और जिन्हें नागरिक प्रतिरक्षा के उपयोगी तौर-तरीक़े, संस्था एवं आवश्यक प्रशिक्षण की अत्यन्त आवश्यकता है ।

दो शब्द

हिंदी के विकास और प्रसार के लिए शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय के तत्वावधान में पुस्तकों के प्रकाशन की विभिन्न योजनाएं कार्यान्वित की जा रही है। हिंदी में ज्ञान-विज्ञान विशेष रूप से सैनिक विज्ञान के क्षेत्र में पर्याप्त साहित्य उपलब्ध नही है, इसलिए ऐसे साहित्य के प्रकाशन को विशेष प्रोत्साहन दिया जा रहा है। यह तो आवश्यक है ही कि ऐसी पुस्तके उच्चकोटि की हों, किन्तु यह भी जरूरी है कि वे अधिक महगी न हों ताकि सामान्य हिंदी पाठक उन्हे ख़रीदकर पढ सके। इन उद्देश्यों को सामने रखते हुए जो योजनाएं बनाई गई है, उनमे से एक योजना प्रकाशकों के सहयोग से पुस्तकें प्रकाशित करने की है। इस योजना के अधीन भारत सरकार प्रकाशित पुस्तकों की निश्चित संख्या मे प्रतियां खरीद कर उन्हे मदद पहुंचाती है।

प्रस्तुत पुस्तक 'आधुनिक युद्ध में नागरिक प्रतिरक्षा' सन् १९६५ में स्वीकृत की गई थी। प्रकाशक कई कारणो से तब इसे प्रकाशित नही कर पाए थे। फिर भी क्योंकि हम प्रतिबद्ध थे और भारत पर पिछले दस वर्षो में जो युद्ध थोपे गए उन्हें देखते हुए नागरिक प्रतिरक्षा का महत्व बढ़ गया है इसलिए यह पुस्तक अब प्रकाशित की जा रही है। पुस्तक में नागरिक प्रतिरक्षा के विभिन्न पहलुओं जैसे खाइयां और शरणगृह, ब्लैक-आउट, रोगिवाहन सेवा, विभिन्न प्रकारके बम, रेडार ओर औद्योगिक प्रतिरक्षा आदि के संबंध में जानकारी चित्रों सहित सरल एवं रोचक शैली मे दी गई है। इसके अनुवाद और कॉपीराइट इत्यादि की व्यवस्था प्रकाशक ने स्वयं की है।

हमें विश्वास है कि शासन और प्रकाशकों के सहयोग से प्रकाशित साहित्य हिंदी को समृद्ध बनाने में सहायक सिद्ध होगा और साथ ही इसके द्वारा ज्ञान-विज्ञान से संबंधित अधिकाधिक पुस्तकें हिंदी के पाठकों को उपलब्ध हो सकेंगी।

आशा है यह योजना सभी क्षेत्रों में उत्तरोतर लोकप्रिय होगी।

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय

(डॉ० गोपाल शर्मा)
निर्देशक

दो शब्द

रोशनआरा,
मरकारा,
कुर्ग.

श्री [illegible] राजने, एक महत्वपूर्ण विषय–"आधुनिक युद्धमे नागरिक प्रतिरक्षा" पर जो एक अनुपम पुस्तक लिखी है, उसके लिए हम सभी उनके कृतज्ञ है, अतएव वह इसके लिए बधाईके पात्र है, राष्ट्रीय संकट की इस घड़ी मे जबकि प्रत्येक व्यक्ति सचेष्ट है कि नागरिक प्रतिरक्षाके निमित्त क्या किया जाय।

इस विषयके लिए यह पुस्तक पूर्णतया पर्याप्त है तथा इसके द्वारा हमें यथोचित एवं यथेष्ट मार्गदर्शन मिलेगा ताकि हम अपने दुश्मन द्वारा किये गये हमारे शहरों पर हवाई आक्रमणों के सामने आवश्यक साधन कर सकें। सभी पहलुओं पर इस पुस्तक मे व्यावहारिक रूपसे विचार किया गया है।

जन साधारणके लिए बहुत–सी उपयोगी बातें इसमे प्रस्तुत की गयी हैं कि किस हालतमे उन्हें 'क्या करना चाहिये एवं क्या नही करना चाहिये'। मै तो चाहूंगा कि हमारे देशमे सभी भाषाओमें इस पुस्तक के यथोचित अंशों को छोटी-छोटी पुस्तिकाओं के रूपमें प्रकाशित किया जाय, ताकि नागरिकोंमें इसका अधिकाधिक प्रचार एव प्रसार हो।

मुझे हार्दिक आशा एवं विश्वास है कि इस विषयपर भारत मे प्रकाशित जो पुस्तकें है, उनमें यह अपने ढंगकी एक ही पुस्तक है। अतः अपने देशमे सभी लोग इसे अवश्य पढ़ेगे। मेरा विचार है कि हमारे सभी कालेजो के विद्यार्थियो द्वारा पाठ्य-पुस्तको के अतिरिक्त यह अवश्य पठनीय है। यह पुस्तक लेखकके उस व्यावहारिक ज्ञान से परिपूर्ण है, जो उन्होने इंगलैण्ड मे द्वितीय महायुद्धके समय अनुभव द्वारा प्राप्त किया था, तथा जबसे वह बराबर इस विषय का अध्ययन करते रहे।

(GENERAL K. M. CARIAPPA)
(जनरल के. एम. करियाप्पा)

बम्बई,
१० जनवरी, १९६३

नन्ददुलारे वाजपेयी
उपकुलपति



विक्रम विश्वविद्यालय
उज्जैन

दिनांक _____
आश्विन सं. २०६५

श्री ओमेन्द्रनाथ दत्त की प्रसिद्ध पुस्तक 'लिविंग थिंकर्स' का हिन्दी अनुवाद मुझे देखने को मिला। उन्हीं अनुवादों पुस्तक का सभी सम्बन्धित लेखों के अध्ययन सम्भव हुआ है। मुझे विश्वास है कि इस हिन्दी संस्करण का भी उचित प्रसार होगा।

पुस्तक की उपयोगिता के विषय में दो मत नहीं हो सकते। अध्ययनशील युग एक ऐसी आवश्यकता है जिसकी पूर्ति कोई भी साधन सम्भव नहीं है। ऐसे युग के प्रतिनिधि के साधन अनेक लेखकों के लम्बे लेख हैं। अध्ययन युग सर्वसुलभ नहीं रहा, विद्यालयी शिक्षा से वंचित लोगों की तरह शिक्षित भी नहीं हैं। प्राचीन भारत में युग केवल पंडितों के बीच होता था, जनता सर्वथा निरक्षर रहती थी। वे युग सर्वथा बदल गया है और युग की विभावना। अभाव पूर्ण अभिनव हो गई है। प्रतिनिधि के साधन अनेक बदल उपाय भी बदल गए हैं और अनेक लेखकों को उनके लिए उचित अनुसन्धान और श्रम करने ही पड़ते हैं।

पुस्तक अपने हिन्दी रूप में बड़ी सुन्दर बन पड़ी है। इसे अनावश्यक रूप से बढ़ाया जा सकता है, कहीं भी अरुचिकर नहीं पड़ता। शैली सरल भी है और उपयुक्त भी।

मैं इस पुस्तक को लिखने के लिए श्री ओमेन्द्रनाथ दत्त को और सुन्दर अनुवाद के लिए डा. शिवनारायण पाण्डेय को हार्दिक बधाई देता हूँ।

नन्ददुलारे वाजपेयी

नन्ददुलारे वाजपेयी
उपकुलपति



विक्रम विश्वविद्यालय
उज्जैन

दिनांक ——————
२७ दिन ८२

श्री योगेन्द्रनाथ राज कृत

पुस्तकका नाम .

"आधुनिक युध्द में नागरिक प्रतिरक्षा"

अनुवादक : डा. शिवसहाय पाठक

(Civil Defence in Modern Warfare)

१– मैंने इस पाण्डुलिपिको आद्योपान्त पढ़कर आवश्यक संशोधन कर दिये है ।

२– पाण्डुलिपि मूल पुस्तकका ठीक अनुवाद है।

३– इसमे भारत–सरकार द्वारा निर्मित पारिभाषिक शब्दावली का ही प्रयोग हुआ है ।

४– पुस्तकमे प्रयुक्त तक्नीकी शब्दोकी हिन्दी अंग्रेजी शब्दावलि आकारादि क्रममे पुस्तकके अन्तमे दी गयी है।

(अध्याय–क्रममे)

५– इस अनुवादमे कोई आपत्तिजनक बात नही है।

६– प्रस्तुत रूपमे पुस्तक प्रकाशित करने योग्य है।

७– पुनरीक्षककी हैसियतमे पुस्तकपर मेरा नाम प्रकाशित किया जा सकता है।

(नन्ददुलारे वाजपेयी)

भूमिका

पूर्ण प्रतिरक्षा की पद्धति मे जिसमे कि . १ · सैनिक, नौसैनिक और हवाई प्रतिरक्षा . २ . नागरिक प्रतिरक्षा . ३ . आर्थिक और . ४ : मनोवैज्ञानिक प्रतिरक्षा सम्मिलित है, नागरिक प्रतिरक्षा सही अर्थो मे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अग है । जब ये चारो अग पूर्ण रूपमे समोचितहो जाते है तो यह अवश्य समझा जाना चाहिये कि सम्बन्धित राष्ट्र अपने लक्ष्य के निकट है । इस प्रसग मे यह अवश्य ही ध्यान मे रखना चाहिये कि यदि नागरिक प्रतिरक्षा पूर्ण नही है तो किसी राष्ट्र की आर्थिक और मनोवैज्ञानिक प्रतिरक्षाए आधुनिक युग मे अधिक परिणाम की नही है । यदि नागरिक प्रतिरक्षा पूर्ण नही है तो यहा तक कि पैदल सेना, नौ-सेना और वायु सेना के द्वारा प्रतिरक्षा अपने अन्तिम प्रभाव मे निषेधात्मकही है, क्योकि विश्व के प्रत्येक भाग मे यह एक स्वीकृत तत्व है कि किसी विश्व युद्ध प्रणाली मे भविष्य के युद्धो का भाग्यनिर्णय युद्धस्थलमे नही बल्कि जनता के घरो मे निर्णत होगा । इस पुस्तक की सर्जना का उद्देश्य उन बुद्धिजीवी लोगो को प्रशिक्षण देना है जो कि प्रेस, सभा–मच और शैक्षणिक सस्थाओ के वाक्-पीठो के माध्यम से आधुनिक युग मे सभी देशो के नागरिक प्रतिरक्षा मे उसे स्थाई स्थान दिला सके और नागरिक प्रतिरक्षा का सगठन करने, उसे पूर्ण करने मे समर्थ हो सके ।

यदि सच पूछा जाय तो नागरिक प्रतिरक्षा के दायित्व को दो मुख्य वर्गो मे विभाजित किया जा सकता है । **सुरक्षात्मक उपाय और बचाव कार्य** । सुरक्षात्मक उपायो मे तमावरण, निष्क्रमण और चेतावनी पद्धति–दीर्घकालिक योजना के रूप मे शरण गृहो का निर्माण, अत्यन्त बौद्धिक रूपमे नगर–नियोजना आदि सम्मिलित है । बचाव कार्यो के अन्तर्गत अन्य वस्तुओ मे अग्नि–शमन, बचाव कार्य, विध्वंस और मलबे की सफाई, यातायात नियमो का स्पष्टीकरण और गृहविहीनो तथा घायलो की देखभाल के कार्य आते है ।

नागरिक प्रतिरक्षा के महत्वपूर्ण उपाय के रूप मे **तमावरण** निर्विवाद रूप से स्वीकृत हो चुका है । अतएव मैने तमावरण और प्रकाश प्रतिबन्ध शीर्षक द्वितीय अध्याय लिखते समय इस विषय पर अपेक्षाकृत अधिक विस्तार न देना ही उचित समझा है । पाठकों को उन महत्वपूर्ण तथ्यो को प्रदान करना ही पर्याप्त समझा गया है जिनसे स्पष्ट ज्ञात हो जाए कि उसके सम्बन्ध मे लोगो को क्या करना चाहिए और क्या नही करना चाहिए । इन सबके साथ ही यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि इस उपाय का आश्रय ग्रहण करते समय किया गया बलिदान सर्वथा इसके उपयुक्त है । सामान्य रूप से लोगोने कठिनाइयो मे फस जाने पर उसका सामना किया है क्योकि यह उनके राष्ट्रीय हित के दृष्टिकोण मे आवश्यक था । यदि मै अपने पाठकों का ध्यान गतयुद्ध मे ग्रेट–

ब्रिटेन मे 'ब्लेक आऊट' तमावरण के अपने वैयक्तिक अनुभव की ओर आकर्षित करू तो यह पर्याप्त रुचिकर होगा। वहां के शहरो की चमक दमक आकस्मिक रूप से अन्तर्धान हो गयी।

हमारे समय के युद्धो मे तमावरण एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अस्त्र हो गया है और इस बात का भलीभाति अनुभव करने के लिए किसी को भी उन नगरो के दमघोट और धड़कनवाले वातावरण मे रहना होगा।

जब लन्दन और अन्य स्थान तमाच्छादित कर दिए गए थे तब वह परिवर्तन अत्यन्त कष्टकारक था, क्योकि उस पीढी के लिये जिसने कि पहले कभी भी अन्धकारमय गलियों को नही देखा था, यह अनुभव सर्वथा नवीन था। वहा काफी बड़ी सख्या मे सडक दुर्घटनाए भी हुई थी। बसो और टेक्सियो को भी अपनी रोशनियो को अत्यन्त मद्धिम करना पडा था ओर तब घटाटोप अधियारे मे अनिश्चित यथार्थता के साथ उन्हे बडी ही धीमी गति से रेगते हुए चलना पड़ा था। बहुत सी बसे कई बार तो देखी ही नही जा सकी और किसी भी व्यक्ति को स्टॉप पर पहुचते ही कण्डक्टर से पूछना ही पड़ता था। अन्धकार के कारण कभी कभी तो एक बस ओर एक लारी के अन्तर को जानना भी कठिन हो जाता था। भिड़न्त के परिणाम स्वरूप बहुत बड़ी सख्या में लोग हताहत हुए थे! अपनी खिडकियो मे से प्रकाश के बहिर्गमन के अपराध पर अनेक व्यक्तियो को दडित भी किया गया था। क्या तमावरण पूर्ण है इसके लिये बायुयानो द्वारा निरीक्षण किया गया था। थोडे ही समय मे लोग प्रत्येक वस्तु के अभ्यस्त हो गये ओर मुझे याद है मैने भी इस प्रकार कार्य किया है। लोगो को काफी सख्या मे यथासम्भव अत्यन्त जोर से गाते हुए जाते देखना भी एक अन्य मनोरजक बात थी। १९१४ मे वे गीत उनके पुर्वजो के द्वारा प्रसिद्ध हो चुके थे। लेकिन समस्त समुन्नत आनन्दोत्सव के साथ जनताने अब सभी सड़को की उस मोहकता को खो दिया था जिसे उन्होने प्रकाश की उद्दीप्ति (Glow) मे पहले देखा था।

बहरहाल इसका उल्लेख किया जा सकता है कि ग्रेट-ब्रिटेन मे कुछ मूल उद्योगो (Key Industries) को कुछ विशेष छूट (Latitude) की आज्ञा थी, पर वह अत्यल्प और अत्यन्त विशेष परिस्थिति में ही थी। कतिपय स्थानो में मद्धिम प्रकाश था जब कि अन्य स्थानो में प्रकाश बिल्कुल ही नही था। श्वेत रग मे रगे खभों का भी उपयोग अनेक स्थानो पर किया गया था और तमावरण में उनकी महत्ता बहुत थी।

'निष्क्रमण' के सम्बन्धमे पाठको का ध्यान इस पुस्तक मे निष्क्रमण (**Evacuation**) शीर्षक ११ वे अध्याय की ओर आकर्षित किया जाता है। विश्व के प्रत्येक भाग मे नागरिक प्रतिरक्षा उपायो के एक आवश्यक अग के रूप मे

निष्क्रमण स्वीकृत है, और किसी आसन्न (Impending) हवाई हमले का स्थिति मे दृढ़तापूर्वक उसे नियोजित, व्यवस्थित और सुपालित होना चाहिए। इस प्रसग मे यह ध्यान रखना चाहिए कि जब तक उपयुक्त नियोजना नही है तब तक किसी भी देश के लिए निष्क्रमण की किसी भी योजना को पूर्ण करना सभव नही है और जब ऐसा है तब सम्पूर्ण निष्क्रमण–योजना को बिना किसी के आकस्मिक रूप से हताहत हुए और एक अत्यन्त व्यवस्थित ढग से पूरा किया जा सकता है। ब्रिटेन का उदाहरण हमारे सामने है और उसके विषयमे विवरण ११ वे अध्याय मे दिया गया है। यदि उस देश मे सम्पूर्ण निष्क्रमण की योजना उसके कार्यान्वयनके बहुत पूर्वही पूर्ण न करली गयी होती तो ब्रिटेनके लोगोके लिए यह सभव न होता कि वे १५ लाख लोगोको गत युद्ध शुरू होनेके तीन दिनोके भीतर और वह मेरी सर्वोत्तम सूचना और मेरे विश्वास के अनुसार बिना किसी के हताहत हुए ही निष्क्रमित कर पाते।

ग्रेट ब्रिटेन मे निष्क्रमण–विषयक इस पुस्तक मे उपस्थित किए गऐ विवरणो के अतिरिक्त यह ध्यान रखना पर्याप्त रुचिकर होगा कि सैनिक प्रयोजन के लिए सेना के स्थानान्तरण के अतिरिक्त नागरिक जनसख्या के निष्क्रमण के लिए दो मुख्य पहलू थे . १ : बच्चो का निष्क्रमण और . २ विश्व विद्यालयो का निष्क्रमण। बच्चो को उन क्षेत्रोसे निष्क्रमित किया गया था जहा पर हवाई आक्रमण का खतरा अपेक्षाकृत अधिक था और उन्हे ऐसे स्थानो पर भेजा गया था जहा पर हवाई हमले का खतरा अपेक्षाकृत कम था और उनमे से हजारो को तो नगरो और उपनगरोसे गावो मे भेज दिया गया था। बहुत से तो लन्दन से वेल्स जैसे दूरके स्थानो को चले गये थे। बहुत सी रेलगाडियो को इस कार्य के लिये उपयोग मे लाया गया था और पेट्रोल की राशनिग के कारण बस सेवा को कम कर दिया था, अतएव दूसरो के लिए कोई यात्रा पूरी करना, खास तोर पर जब कि यह लम्बी यात्रा थी, बडा ही कठिन काम था। बहरहाल, आयान क्षेत्रो (Reception Areas) मे जनता के द्वारा बच्चो का विनम्र रूप से स्वागत किया गया था। सरकार ने केवल अनुबद्ध राशि को (Stipulated amount) ही दिया था जो कि इन्हे भली–भाति रखने और पोषण करने के लिए अपर्याप्त थी। इतने पर भी गृह–स्वामिनियो का उत्साह सही अर्थो मे प्रशसनीय था। अपनी भेटो को इतने विराट पैमाने पर पेश किया कि प्रत्येक कार्य अत्यन्त सहज रूप मे हो गया। स्थानीय क्षेत्रो के कार्यकर्ताओ के द्वारा की गयी व्यवस्थाओ मे कुछ कटिनाई अवश्य हुई थी फिर भी उन कार्यकर्ताओ का प्रयत्न वस्तुतः प्रशसनीय था। सचमुच यह एक सुन्दर दृश्य था जब कि बच्चो से भरी हुई ट्रेने किसी स्टेशन पर पहुचती थी और उन्हे स्त्रियो द्वारा–जिन्होने अपने घरो को उनके रहने के लिए प्रदान किया था विविध स्थानो पर ले जाया जाता था। बच्चो के निष्क्रमण से स्कूलो से सम्बन्धित एक बडा परिवर्तन उपस्थित हुआ था।

चूकि आयान क्षेत्रो (Reception Areas) मे उन्हे स्थान प्रदान करनेके लिए

स्कूलो की संख्या अपर्याप्त थी, इसलिए दो पाली की पद्धति का प्रारम्भ किया गया था। कुछ बच्चो को प्रातः शिक्षा प्रदान की जाती थी जब कि अन्य बच्चो को दोपहर मे भोजन के अनन्तर पढाया जाता था।

कुछ विश्वविद्यालयो को भी निष्क्रमित किया गया था। इसका एक स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करना प्रासंगिक है—लन्दन विश्वविद्यालयो के कार्यालयो को रायल हालोवे कालेज एन्गलीफील्ड ग्रीन सरे मे स्थानान्तरित किया गया था। युनिवर्सिटी कालेज का कला —विभाग एब्रीस्टविथ (वेल्स) के युनिवर्सिटी कालेज मे निष्क्रमित कर दिया गया था, मेडिकल साइंस को कार्डिफ मे, कृषि—विभाग को रीडीग मे, फोरेस्ट्री को बेजर में और इनके अतिरिक्त कैम्ब्रिज, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयो और वहा की प्रशिक्षण संस्था (Institute of Education) को युनिवर्सिटी कालेज नॉटिघम मे और काफी सख्या मे विद्यार्थियो को स्वानसी और अन्य स्थानो मे भेज दिया गया था। युद्ध प्रारम्भ होने के पश्चात जब मै लन्दन मे था तो मुझे ज्ञात हुआ था कि युद्ध शुरू होने के बहुत पहले ही विश्वविद्यालय ने निष्क्रमण की एक पूर्ण रूपरेखा तैयार कर ली थी और इस सम्बन्ध मे कुछ आवश्यक सुरक्षात्मक सावधानी भी ली गई थी। ग्रेट ब्रिटेन मे बच्चो को अन्य देशो मे निष्क्रमित करने की योजना यद्यपि प्रारभ मे नही थी पर परवर्ती बाद मे यह भी एक ज्वलन्त विषय बन गया था। अमरीका और ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य देशो मे बहुतही उत्साहवर्धक अनुक्रिया मिली थी और अपनी व्यवस्थाओ के पश्चात जब शिक्षा—विभागने अनुमोदित किया, अमीर एव गरीब सभी विद्यार्थी अमरीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, भारतवर्ष तथा अन्य देशो मे भेज दिये गये।

सोवियत रूस (यू. अेस. अेस. आर.) मे सोवियत नागरिक प्रतिरक्षा योजनाकी प्रतिक्रिया १९५८ मे की गयी थी। नये विधान के अनुसार बडे शहरोका लघु निष्क्रमण, (बच्चो और ऐसे लोगो तक सीमित जो काम करनेके अयोग्य थे) बमवर्षासे गृहहीन बने हुए लोगो को निवास प्रदान करने की व्यवस्था, ग्राम—क्षेत्रोमे नागरिक प्रतिरक्षा के प्रति अधिक ध्यान देने की भावनाए और थोडी या विना चेतावनी दिये हुए आक्रमणो की बाते सन्निहित थी।

स्वीडनमें निष्क्रमण (Evacuation) राष्ट्रीय योजना का एक भाग है। वहा ऐसा माना जाता है कि निष्क्रमण और समाज कल्याण सेवाएं, गृहहीनोको निवास तथा भोजन देने की व्यवस्था करेगी तथा सीमित सामाजिक सहायता-सेवाका संचालन भी करेगी। जहा तक स्विडिश योजना का सम्बन्ध है, बहुतसे नगरो एव लघु लक्षित प्रदेशोको खाली करनेकी भी व्यवस्था की गयी है।

स्टाकहोमके ४००,००० लोगो मे से केवल ५०,००० से १,००,००० लोग आवश्यक कार्यों और अग्निदमन सेवाओके लिए वहा रह सकते थे, ऐसा माना गया था।

निष्क्रमणके सम्बन्धमे, मै समझता हूं कि नार्थ एटलाटिक ट्रीटी आर्गनायजेशन, अपने सदस्य राष्ट्रो के लिए जो कुछ कर रहा था, उससे भी अधिक कार्य कर सकता था। लेकिन मेरा अपना मत है कि सयुक्त राष्ट्रसघ (United Nations) निष्क्रमणार्थ अत्यधिक महत्वपूर्ण सेवाएं कर सकता है। क्योकि उनका एक मित्र राष्ट्र दूसरे मित्र राष्ट्रके विरुद्ध खडा है, इसलिए वे हस्तक्षेप नही कर सकते, उसके भाग्यविधायकोको यह पूर्णतया भूल ही जाना चाहिए। इसके विपरीत स्वीकारात्मक विचार-धारा उनके लिए अत्यावश्यक है। उन्हे इस बातका अनुभव करना चाहिए कि जीवन-रक्षा और खास आवश्यकताओका कठिन परिस्थियोको दूर रखनेके लिए स्थिरीकरण, उनका बहुत महत्वपूर्ण कार्य है।

सूचना-प्रथा (Warning system) के सम्बन्धमे यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रथम विश्वयुद्धके तरीके अब पुराने हो गए है। इस पुस्तक के "हवाई आक्रमण के विरुद्ध बचाव के उपाय" शीर्षकवाले अध्याय १३ को पढनेसे लोगोको ग्रेट-ब्रिटेन मे सूचना-प्रथा से सम्बन्धित विवरणकी जानकारी प्राप्त हो जायगी जो उनके मार्ग दिखलाने मे बहुत सहायक सिद्ध होगी। पीले एव लाल तथा हरी और श्वेत सूचना का अन्तर अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

शरणगृह एवं खइयों के सम्बन्धमे जहा तक सम्भव हो सका है, पुस्तक की सीमाको देखते हुए मैने प्रथम अध्यायमे जितनी भी हो सकती थी सामग्री देनेका प्रयत्न किया है। इसके सम्बन्ध मे लिखी गयी मेरी बातो को हमेशा ध्यानमे रखना चाहिए एव जब कभी भी नये घरका निर्माण हो, उसमे तलघरका प्रबन्ध अवश्य होना चाहिए।

आपत्कालके समयमे उसका उपयोग शरणगृहके रूपमे और शान्तिकालमे मण्डार-कक्ष, साइकिल शेड गैरेज आदिके रूपमे किया जा सकता है! इसे निश्चित रूपमे समझ लेना चाहिए कि सीधी-मार (Direct Hit) से वह हमे नही बचा सकता है। परन्तु मलबापात आदिसे वह हमारी सुरक्षा कर सकता है! नाभिकीय आक्रमणके समयमे वह हमारी रक्षा कर सकता है। इन कारणोसे तलघरके महत्वको नजरअन्दाज नही किया जा सकता।

मै विश्वास करता हू कि फाल आउट (Fall Out) के सम्बन्ध मे युनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमरीकाका प्रसग पढनेमे बहुतही मनोरजक होगा। फाल-आउट से सुरक्षाके सम्बन्धमे अमरीकाकी बहु प्रतीक्षित घोषणाकी मुख्य बात सामूहिक शरणगृह के निर्माणार्थ प्रस्तुत उनकी विचारधारा है, चाहे वह वर्तमान भवनके रूपमे चुना जानेवाला हो, अथवा सरकार की लघु सहायतासे लोगो द्वारा बनाया गया हो। नया आयोजन अवश्यही शान्त दिमाग की सरलता का नमूना-

सा प्रतीत होता है। परंतु जिस बडे खतरेको वह हटाना चाहता है, वह निश्चित रूपसे साधारण नही है।

फाल आउट (Fall Out) के सम्बन्ध में बहुतसे वैज्ञानिक तथ्य् अभी तक निश्चित नही हुए है। विषयके प्रति वर्तमान विश्वास रेगिस्तानी बालू और सामुद्रिक प्रवालोंपर किये गये परीक्षात्मक विस्फोटो पर ही निर्भर है। वास्तवमे हिरोशिमामे अथवा नागासाकीमे कोई ख़ास फाल आउट (Fall Out) नही हुआ था क्योकि दोनो बम उच्चस्थानोपर संवारे गये थे। इस बात का प्रत्यक्ष अनुभव नही है कि किसी शहरपर होनेवाले फाल आउट (Fall Out) का परिणाम जो विस्तृत रूपमें धरातलपर विस्फोटित हुए बमो से होता है, कैसा होगा। अभिसपात यानि फाल–आउट (Fall Out) के विषयमे स्मरणीय बात है कि उसका स्वरूप आक्रमणके स्वरूप पर निर्भर रहता है। सयुक्त राज्य अमरीका (यू एस. ए.) मे नागरिक प्रतिरक्षा बालबोध, पाच मेगाटन बम पृथ्वीके धरातलपर यदि अकेले विस्फोटित होता है, तो उसके प्रभावो पर ध्यान केन्द्रित करता है। चाहे वह एक छोटी टुकड़ीका शरणगृह हो अथवा एक सामुदायिक शरणगृह हो फाल आउट के सम्बन्ध मे आवश्यक पूर्वोपाय की प्रथा ही बहुत जरूरी है। सामुदायिक शरणगृहके फायदे साफ है किन्तु अमरीका के प्रोग्राम मे फाल आउट के खतरे को ऐसे ढंग मे समझा गया जिसमे इसके खतरे को बहुत बडी मात्रा मे होनेवाले आक्रमण के खतरो मे अलग रखा गया है। उस देश मे वैज्ञानिकोने यह तथ्य् स्वीकार कर लिया है कि उन स्थानोपर जहा अति वजनी परिमाण विनाशक चीजे गिरती है, आठ सप्ताहमे लेकर सात महीने तकके लिये शरणगृह मे रहना अनिवार्य हो सकता है। बहुकालिक खतरोसे अनेक प्रकारकी बीमारियोकी सम्भावना बनी रहती है जैसे कि उम्रका कम होना, अतिश्वेतरक्तता, हड्डीका कैंसर आदि! वैज्ञानिक इस बातसे भी सहमत है कि इसके प्रभाव से भविष्य की सन्तान भी कुरूप एव रोगी हो सकती है। यदि शरणगृहकी दीवारे बहुत मोटी हो और अध्याय १ मे बताये गय पूर्वोपायोको ध्यानमे रखा जाय तो अभिसपात (Fall Out) के प्रभावोसे रक्षा हो सकती है।

आवश्यक पूर्वोपाय उचित समयमे ही किये जाने चाहिए। नागरिक प्रतिरक्षाके अभावमे क्या होगा? जापानियोसे पूछिये! हिरोशिमा तथा नागासाकी मे नागरिक प्रतिरक्षाकी व्यवस्था नही थी, इसे ससार जानता है। जब आणविक बम गिराये गये, वहाके नागरिक सुरक्षाके लिए बिलकुल तैयार नही थे। परिणाम स्वरूप वहा पूर्ण भय की अवस्था उत्पन्न हो गयी। कई हजार आदमी अनावश्यक रूपमें मारे गये, परवार नष्ट हुए और सपत्तिका सर्वनाश हुआ! हजारो गृहहीन अथवा अनाथ हो गए। घायल एव असहाय इसलिए मर गये कि उनकी मदद करने के लिये नागरिक प्रतिरक्षाकी आयोजना नही की गई थी। हो सकता है उचित सहायता पाने पर वे बच गये होते।

उपचार क्रियाएं सुरक्षात्मक दृष्टिकोणसे बहुत महत्वकी है। यू. एस. ए. की वायुसेनाके मुख्य जनरल होयट वेन्डेन्बरी (Hoyt Vandenbery) ने कहा था कि हम लोग शत्रुके सौ जहाज़ोमे से **अधिक से अधिक**

तीसको नीचे गिरा सके और दसमेंसे सात बचकर चले गये । इससे यह नहीं समझना चाहिये कि कोई वायुसेना अक्षम (ineffective) है । असल बात यह है कि वायुवेधी तोप और लड़ाकु जहाज़ कुछ हद तक ही अपना कार्य कर सकते है। जर्मनीका उदाहरण हमारे सामने है जिसके अनुसार जर्मन वायुसेनाकी सम्पूर्ण शक्ति और हिटलरकी वायुवेधी तोपोंकी ताकत भी मित्रराष्ट्रोंके आक्रमक बमवर्षको को नही रोक सकी। मित्र राष्ट्रोंके सौमेंसे दससे भी कम जहाज़ नष्ट हुए । इससे मालूम होगा कि उपचार क्रियाओंका महत्व कितना अधिक है। मित्र, पड़ोसी और अन्य लोग अपग हो गये थे और ईटोके नीचे गाड़ दिये गये थे; इन परिस्थितियोमे क्या आप उद्धार करनेवाले दलोंके महत्वको अस्वीकार कर सकते है? आपको यह मानना पड़ेगा कि उद्धार प्रशिक्षण बहुत ही आवश्यक है । दबे हुए लोगोको मलबेके नीचेसे निकालना पड़ेगा। उनमेसे कुछ अपग होंगे और कुछ अस्पताल ले जाने योग्य होंगे और वहापर कुछ असहाय वृद्ध पुरुष और औरते होगी कि जिन्हे आपको गावोंकी ओर--शायद अपने फार्म घरकी ओर ले जाना होगा। वहा दूधके भूखे बच्चे होंगे और हो सकता है कि वे मातृहीन हो। वहा आपके लिए कार्य होगा। आप उद्धारकार्यके महत्वको तभी समझ सकते है जब आप यह जान ले कि आप कुछ लोगोके प्राणोंकी रक्षा कर सकते है। इसके साथ ही साथ यह भी ध्यान मे रखना चाहिये कि घायलो तक प्रथम उपचारकोंके आनेके पूर्व मलबेकी सफाई करनी पड़ेगी और ऐसा करनेके लिये काफी तादाद मे इन्जीनियरो की आवश्यकता होगी । भोजन, वस्त्र और दवाओंके लानेकी सेवाए विस्तृत एवं विभिन्न रूपोंमे आवश्यक होंगी। वहापर अन्य कार्य भी होंगे जैसे अग्निशमन और परिवारके सदस्योंको घरसे निकालने का कार्य। इनके साथ ही अन्य बहुत सी बातों पर इस पुस्तकमे विचार किया गया है। प्राथमिक उपचारके अध्यायसे घायलोके सम्बन्धमे ध्यान रखनेकी पर्याप्त जानकारी प्राप्तकी जा सकती है। इसे भूलकर भी कि हम यह सब नागरिक प्रतिरक्षा के लिए प्राप्त कर रहे है क्या कोई प्राथमिक उपचारकी शिक्षाको अस्वीकार कर सकता है?

जीवाणु-विज्ञान (Bacteriology) और जीवशास्त्रीय युद्ध के बारेमे भी दो शब्द कह देना आवश्यक है। रासायनिक (Chemical), जीवशास्त्रीय (Biological) और विकिरण विज्ञान सम्बन्धी (Radiological) युद्ध के बारे मे अध्याय ८ मे पर्याप्त विचार किया गया है। परन्तु इसे नही भूलना चाहिये कि जीवशास्त्रीय सग्रामने प्लेग (Plague) उत्पन्न किया जिसने क्रूसेडर्स (Crusaders) को जेरुसलम के फाटकपर ही काट डाला। प्लेगने मूर लोगो (Moors) को चक्कर मे डाल दिया और उसही ने नेपोलियनकी सेनाको जैसेही वह मास्को की ओर बढ़ी, कमज़ोर बना दिया। बोअर युद्ध (Boer War) के समय उन कीटाणुओंने, जिनसे टाइफस (Typhus) बुखार फैला उसके फलस्वरूप यदि गोलीसे मरे हुये लोगों की सख्या एक थी तो इस बुखार द्वारा १० आदमियों की मृत्यु हुई ।

प्रथम महायुद्धके समय इन्फ्लुअेंजाके कारण बहुतसे नागरिक एवं सैनिक मरे थे। इन कीटाणुओंका फैलाव स्वाभाविक था। वे एक व्यक्ति मे जन्म लेकर सम्पर्कके कारण अन्य व्यक्तियोमे भी फैल गये और इसके लिए इन मानवके शत्रुओने न तो कोई योजना ही बनायी थी और न किसीसे सहायता ही ली थी।

ब्रूकला सिस और बैंग्स (Brucelosis & Bangs) जानवरों की बीमारियां जानवरोसे मनुष्यमे फैल जा सकती है और इसी प्रकार खुर एवं मुखकी बीमारियां भी। ये वह.से भी एक व्यापक परिमाणमें प्रारम्भ हो सकती है, जहां पशु अधिक मात्रा मे एकत्रित होते है।

ये सभी अभिशाप है जो आधुनिक युद्ध–तरीकोसे लाये जा सकते है। इससे हम अनुभव कर सकते है कि नागरिक प्रतिरक्षा जो इनको दूर करनेका प्रयत्न करती है हमारे अस्तित्वके लिए बहुत ही आवश्यक है। इस पुस्तकमें इसके साथ ही साथ अन्य बहुत सी बातोके बारे मे विचार किया गया है। इस प्रकार सुरक्षा–तरीकोके महत्वको कोई भी व्यक्ति समझ सकता है।

क्या हम लदनके (ब्लिट्ज़) तड़ित-द्युति गतिसे हुए आक्रमणकी धधकती अग्नि-ज्वालाको भूल सकते है? क्या कोई अग्निशामक तरीकोके महत्वको अस्वीकार कर सकता है? पाठकको इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि ऐसे समयमे जनता केवल फायर ब्रिगेड पर ही निर्भर नही रह सकती। यह उन्हीका काम है जैसे ही ऐसी परि-स्थिति उत्पन्न हो उन्हें उसका सामना करनेके लिए तैयार हो जाना चाहिये।

कल्पना कीजिये कि अमरीकाके किसी एक शहरपर आणविक बम गिराया जाता है। कई हज़ार लोग एक साथ मारे जायेगे। कई हज़ार घायल होगे जिनकी तुरन्त चिकित्सा होगी। सैकडो अपग हो जायगे और उतने ही लोग ध्वंसावशे-षोमे दब जायगे। नष्ट–प्रदेशकी प्रत्येक सड़क पत्थरो अथवा मलवे से अवरुद्ध हो जायगी और बहुतसे स्थानोमे एक साथ ही विशाल अग्नि–ज्वाला भभक उठेगी।

ये मुख्य बाते है जो घटित हो सकती है, परन्तु इनके साथ ही अन्य अनेक बाते भी है। उदाहरणार्थ शहरमे वितरित होनेवाला अन्न कुछ हद तक नष्ट हो सकता है और उसका वितरण भी बद हो सकता है। जलपूर्ति भी स्थगित हो सकती है। नियमित सचार सेवा पूर्णतया बन्द हो सकती है। आवागमन रुक सकता है। भोजन, वस्त्र, शरण एव पैसेके अभावमे हजारो जीवित लोग भी अपने आपको एकाएक असहाय समझ सकते है।

इस बातको नही भूलना चाहिए कि आणविक विस्फोटके परिणामस्वरूप होने-वाले नुकसान एव जीव–क्षतिको रोकना सम्भव नही है। क्षति एव मृत्यु का अवसर तो एक निश्चित खतरा है, जिसे प्रत्येक नागरिकको आधुनिक युद्धमे स्वीकार करना ही चाहिए। यह वही खतरा है, जिसे सैनिक युद्धके मैदानमे झेलते है। सीधी–मार (Direct Hit) के क्षेत्र मे रहनेवालो मे से अधिक तर लोग या तो घायल होगे या

मर जायंगे । इसको रोकनेका कोई उपाय नही है । यह तथा और बहुतसे प्रश्न इस पुस्तकमे स्थान पा सके है । और पाठकका ध्यान विशेषरुपसे अध्याय १ (शरणगृह खाइयाँ), अध्याय ५ (प्रक्षेपास्त्र, परमाणुबम और उदजनबम) तथा तथा अध्याय ८ (रासायनिक कीटाणु-सम्बधी तथा विकिरण-विज्ञान सम्बन्धी युद्ध) पर खीचनेका प्रयास किया गया है।

अणुबम के विरुद्ध भी प्रतिरक्षा सम्भव है। मनुष्य द्वारा बनाये गये किसी भी अस्त्र एवं जीवशास्त्रीय तथा गैसीय आक्रमणसे भी बचाव किया जा सकता है। आधुनिक युद्धमें हजारो का जीवन बचानेवाली एक निश्चित तथा सरल प्रतिरक्षा है, उससे हजारो लोग घायल होनेसे बच सकते है और वह है नागरिक प्रतिरक्षा।

नागरिक प्रतिरक्षा मनुष्य के जीवन और धनको बचानेका एक साधन है । वह युद्धके समय आपको तथा आपके परिवारको बचा सकती है । इसमे आणविक तथा जीवशास्त्रीय (Biological) या केमिकल आक्रमणो के समय भी मनुष्य एवं उत्पादन गतिशील रह सकते हे । नागरिक प्रतिरक्षाका एक उद्देश्य आपको कामपर स्थिर रहनेमे सहायता पहुचाना भी है, चाहे जैसी भी परिस्थिति सामने आये। जब तक देश के सभी लोग कार्य पर नही आते, शत्रु के विजयी होने की सम्भावना बनी ही रहती है।

जो कुछ ऊपर कहा गया है तथा जो पुस्तकमे लिखा गया है, उससे यह अनुमान लगा लेना चाहिये कि भविष्यके सग्राममे नगरीय जनसख्याको ध्यानमे रखकर की गयी लड़ाई ही युद्धके स्तरको निश्चित कर सकेगी। क्या आप अग्निआक्रमण (Fire Attack) के विनाशक स्वरूपकी कल्पना कर सकते है ? सन् १९४३ मे हैमबर्ग (Hamburg) मे अग्नि–ज्वालामे ६०,००० से १,००,००० के बीच जर्मन मारे गये थे । मार्च १९४५ मे टोकियोमे ९४,००० लोग मरे थे और उनकी सख्या हिरोशिमा अथवा नागाशाकीकी सख्यासे कही अधिक ही थी, यह और लदनकी-अग्निज्वाला सम्बन्धी घटना विगत महायुद्धकी कहानी है। आज आणविक अग्नि–शक्तिसे एक बम अथवा प्रक्षेपास्त्र (Missile) सैकडो सशस्त्र बमवर्षकोसे भी अधिक भयानक कार्य कर सकता है। यहाँ विकिरण विज्ञान सम्बन्धी (Radiological)खतरे पर भी विचार कर लेना चाहिये । एक सुनिश्चित विचारके निर्माणके लिए पाठक का ध्यान मै अध्याय ५ (प्रक्षेपास्त्र, परमाणुबम, उदजनबम) तथा अध्याय ६ (अग्निबम और अग्नि से सावधानी) पर खीचना चाहता हू । विगत महायुद्धके शुरू होनेके बहुत दिनों बाद तक इंगलैण्डमे प्रतिरक्षा सेवाए (Defence Services) कार्यरत रही । युद्ध वास्तव मे फ्रान्सके कधेपर लड़ा गया था और उस समय लोग प्राय: यही कहा करते थे–पश्चिमी मोर्चेपर सब कुछ शान्त है, परन्तु वह समय वास्तवमे ब्रिटेनके लिए बहुत ही महत्वका था, जिसके कारण लोगोको हवाई हमले से बचाव (अे आर. पी.) का प्रशिक्षण दिया गया और युद्धकी विभीषिकाओका सामना करनेकी वास्तविक तैयारी की गयी ।

भारत इससे उचित शिक्षा प्राप्त कर सकता है। यद्यपि अब चीनी आक्रमण द्वारा उत्पन्न किया गया ख़तरा कुछ समयके लिए टल गया है, हमें निश्चित रूपसे तैयारी कर लेनी चाहिए, जैसे कि इंग्लैण्डने युद्ध प्रारम्भ होनेके बाद किया था। मैं विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालयोके अधिकारियोसे यह सशक्त निवेदन करता हूँ कि वे नागरिक प्रतिरक्षा एक अनिवार्य एवं सार्वकालिक विषय बनानेके लिए तुरन्त कदम उठाये। किसी प्रकारका एतद्विपयक कालक्षेप मेरी समझ, ज्ञान एवं विश्वासके अनुसार आत्महत्या ही होगा। इसके अतिरिक्त लड़ाई के मौकेके विभिन्न केन्द्रों जैसे बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता और मद्रासमे नागरिक प्रतिरक्षा विशेषज्ञ विद्यालयोंकी भी व्यवस्था होनी चाहिये। नागरिक प्रतिरक्षा सम्बन्धी उच्च शिक्षा देनेके लिए तथा अनुसंधानकी आवश्यकताओको पूर्णकरनेके लिए इन विद्यालयोसे बढ़कर एक स्टाफ कालेज (Staff College) की भी स्थापना की जानी चाहिए जो इन विद्यालयोंका किसी न किसी रूप मे मार्गदर्शन कर सके। मै इस बातके लिए भी परामर्श देता हूं कि विश्वविद्यालयोमे नागरिक प्रतिरक्षा विषय पर अनुसन्धान करनेका अवसर दिया जाय और पी. एच्. डी. एव डी. लिट. मेसे किसी एकके लिए इस विषयको स्वीकार किया जाय। इससे देशमे नागरिक प्रतिरक्षा का अध्ययन अपने उचित मार्गमे आगे बढेगा और उसका पर्याप्त विकास भी होगा।

इस पुस्तकके लिखनेमे मेरे हार्दिक धन्यवादके पात्र जनरल के. एम. करियाप्पा है, जिन्होने बहुतही उत्साहवर्द्धक शब्दो मे इसकी भूमिका लिखने की कृपा की है। इतनाही नही, उन्होने जनरल श्री रिचार्ड हलके उत्साहवर्द्धक विचार प्राप्त करने मे भी काफी सहायता की, जिसके बिना मेरे लिए यह कार्य असम्भव ही रहता। विगत १५ मईको मेरे घरमे प्रीति भोजके समय कहे गए उनके इस वाक्यने "यह पुस्तक संसार मान्य (World authority) होगी," मेरे ऊपर कृतज्ञताका बोझ लाद दिया है। मैं पूर्ण नम्रताके साथ यह कहना चाहता हूं कि यदि मेरी इस पुस्तकसे भयग्रस्त ससारको किंचित सहायता मिलती है, तो मुझे अत्यधिक आनन्द होगा।

मैं जनरल रिचर्ड हल (इम्पीरियल जनरल स्टाफ वार आफिस, लन्दन के मुख्य) का भी ११ अप्रैल १९६३ के पत्रमे जो जनरल करियाप्पाको मेरी पुस्तकके सम्बन्धमें लिखा गया था, मधुर भावात्मक विचारोको प्रकट करनेके लिए आभारी हूं। विशेषकर उन उदार एवं उत्साहवर्द्धक विचारोके लिए जो अपने महत्ववश पुस्तकके मुखपृष्ठपर अंकित किये गये है।

अपने राष्ट्रपति डा. राधाकृष्णन् तथा प्रतिरक्षा मन्त्री श्री वाई. बी. चव्हाण का मैं हृदयसे आभारी हूं जिन्होने मुझे इस पुस्तकके लिखनेमे पूरा सहयोग दिया। डा. एस.

राधाकृष्णन् के वैयक्तिक सचिवने उदारतापूर्वक ता. २०–१२–६२ को बम्बई मे टैलिफोनपर यह बताया कि आदरणीय डा. एस. राधाकृष्णनने मुझे प्रतिरक्षामन्त्री श्री वाई. बी. चव्हाणसे मिलने का सुझाव दिया है। आदरणीय श्री वाई. बी. चव्हाणने मेरे प्रति बड़ी उदारता दिखायी तथा एक लघु प्रतिको लेकर जो उस समय तैयार थी, अपने उत्साहवर्धक विचार भेजने की कृपा भी की।

मै स्व. च भूपति जनरल एम. जे. बी. मानेकजी, डा. डी. एम दयाल, श्री एच. एन. मौटा, श्री बी. एल. साहानी और कलाकार श्री पकज महेरको, जिन्होने इस पुस्तकके सम्बन्धमे अपनी सहायता दी, हृदयसे धन्यवाद देता हू।

मै विशेषरूपसे अपनी पत्नी श्रीमती प्रमिला राज, अपनी पुत्री बीना राज का जिन्होने इस पुस्तक के अग्रेजी संस्करण के मोटे मोटे पहिले (Galley) पन्ने और अन्तिम प्रूफ देखने मे मेरी सहायता की आभार मानता हू। बीना पुस्तक के चित्र सम्बन्धी कलाके लिए विशेषरूपसे धन्यवादके योग्य है।

अन्तमे मै उन सभी लोगोका आभारी हू जिनके विचार एव लेखोने इस पुस्तकके लिखनेमे पर्याप्त सहायता पहुंचायी है। मैने इस पुस्तकको पर्याप्त सक्षिप्त करनेका प्रयास किया है फिर भी इसमे विषय सम्बन्धी––सभी नवीनतम सामग्रियोका उपयोग किया गया है। यही मै यह भी कह देना चाहता हू कि यह विषय इतना विशाल है कि जितना ही अधिक मै लिखता हू, उतनाही अधिक मेरे मनमे यह भाव उत्पन्न होता है कि इसपर कुछ और अधिक लिखना आवश्यक है। यदि मेरे इस प्रयाससे उन लोगोके मनमे, जिन्होने अभी तक नागरिक प्रतिरक्षाका महत्व नही जाना है एव राष्ट्रके कल्याणके लिए इसका उपयोग नही समझा है तथा यह निश्चित नही किया है कि बुद्धिवादी उचित रूपसे इस विषयका प्रशिक्षण प्राप्त करे, एतद्विषयक विचार उत्पन्न हो सका तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। इस लक्ष्यको प्राप्त करनेके लिए सबसे अच्छा तरीका यह है कि इसे विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयोमें स्थायी मान (Permanent Measure) दिया जाय। आजका बच्चा भावी पिता है और उसेही भविष्यके युद्धोका प्रहार सहन करना है।

इस हिन्दी अनुवाद के सबन्ध मे मै अपनी पत्नी श्रीमती प्रमिला राज, अपनी सुपुत्रिया कु० मजु राज और चन्द्रा राज तथा अपने सुपुत्र विजयमोहन राज का आभारी हूं जिन्होने इसका हिन्दी प्रूफ देखने मे बहुत सहयोग दिया।

इन्डस कोर्ट, ए रोड, मैरीन ड्राइव बबई न. २०.
२१–६–६३ (हिन्दी अनुवाद प्रकाशित मार्च, १९७३)

–योगेन्द्रनाथ राज

अनुवादीय निवेदन

प्रस्तुत ग्रन्थ श्री योगेन्द्रनाथ राज कृत 'सिविल डिफेन्स इन मौर्डन वारफेअर' नामक ग्रन्थका हिन्दी रूपान्तर है । भारतवर्षमें अपने विषयका एकमात्र श्रेष्ठ ग्रन्थ है। इसकी महत्ता इतनेसेही स्पष्ट है कि जनरल करियाप्पा, जनरल आइज़नहोवर, जनरल सर रिचर्ड हल प्रभृति महान अधिकारी व्यक्तियोंने इसकी पूरी-पूरी प्रशसा की है । लेखक श्री राजने इसमें 'नागरिक प्रतिरक्षा' विषयका सांगोपांग विवेचन प्रस्तुत किया है ।

आज हमारे देशकी स्वतत्रताके समक्ष अनेक समस्याए उपस्थित हो गयी है। चीनी और पाकिस्तानी आक्रमणोंने हमें बाध्य कर दिया है कि हम अपने राष्ट्रकी प्रतिरक्षाके लिए हर प्रकारसे प्रयत्न करें। राष्ट्रीय प्रतिरक्षाके अन्तर्गत नागरिक प्रतिरक्षाका महत्व स्वय सिद्ध है और इस ग्रन्थमें इसी विषयका सम्यक् प्रतिपादन किया गया है ।

प्रस्तुत ग्रन्थ मूलत आग्ल भाषामें लिखा गया है। इसमें आधुनिक ज्ञान-विज्ञानके आलोकमें इस विषयका विवेचन किया गया है। हिन्दी अनुवाद करते समय पारिभाषिक शब्दोंके प्रसगमें विशेष सावधानी बरती गयी है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित "पारिभाषिक शब्द-सग्रह" का इसमें पूरा-पूरा उपयोग किया गया है। अनुवाद करते समय अनेक अग्रेजी शब्दोंके लिए हिन्दी रूपान्तरोंको गढ़ना पड़ा है, ऐसा करते समय मैंने यह विशेष प्रयत्न किया है कि गढा हुआ शब्द मूल आग्ल शब्दका अर्थ व्यक्त करनेमें पूर्णत. समर्थ हो।

मैंने हिन्दी-रूपान्तरके पुनरीक्षण और भूमिका लेखनके लिए हिन्दीके महान समीक्षक गुरुवर आचार्य प्रवर प. नन्ददुलारे वाजपेयीजीसे प्रार्थना की थी । उन्होंने अत्यन्त अनुग्रहपूर्वक पुनरीक्षण करके और अनेक सुझाव देकर और भूमिका लिखकर मुझे उपकृत किया है । मै परमपूज्य गुरुदेवके 'अमित उपकारों और अनुग्रहोंके लिए उनका सदैव ऋणी हू । मै इस अनुवादके साथ उनके चरणोंकी वन्दना करता हू ।

'नवनीत' हिन्दी डायजेस्टके सम्पादक श्री प. सत्यकाम विद्यालकारके प्रति मै हार्दिक आभार व्यक्त करता हू। पडित सत्यकामजी सही अर्थोंमें पुरानी परम्पराके आधुनिक सन्त है। यह अनुवाद उन्हींकी कृपाका फल है। नवनीत के सहसम्पादक श्री गिरिजाशकर त्रिवेदीजीकी आत्मीयताके लिये मै आभारी हू ।

नवभारत टाइम्स, बम्बईके सम्पादक श्री महावीर अधिकारीजीसे मुझे अनेकों महत्वपूर्ण सुझाव मिले है। एतदर्थ मै उनका सदैव कृतज्ञ हू।

भाई चन्द्रबली सिह, श्रीमती मीरा पाठक, प. नन्दकिशोर तिवारीकी सहायता और प्रोत्साहनके लिए मै सदैव उनका अपना हू ।

पूज्य प. स्वराज्यप्रसाद त्रिवेदीने इस अनुवाद–कार्य मे मेरी बड़ी सहायता की है । मै जानता हूं कि वे धन्यवाद ज्ञापनको मेरी धृष्ठताही मानेगे । मै उनकी सहायताके लिये सदैव कृतज्ञ हू ।

मै इस पुस्तकके लेखक श्री योगेन्द्रनाथ राज, श्रीमती प्रमिला राज और उनके चिरजीवोंके प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हू । अनुवादकालमे जो आत्मीयता और स्नेह मुझे इस परिवारसे मिला है, वह अविस्मरणीय है ।

अपने सुधी पाठको और हिन्दीके विद्वानोके करकमलोमे इस ग्रन्थको सौपते हुए आत्मिक सुख मिल रहा है । 'हौ आप दिसि कीन्ह निहोरा' । जहा तक हो सका, मैने इसे सुन्दर रूपमे प्रस्तुत करनेका प्रयत्न किया है । निश्चयही यह ग्रन्थ प्रत्येक भारतीयके लिए पठनीय है ।

यदि सहृदयोके द्वारा यह ग्रन्थ प्रशसित हुआ और जिज्ञासुओके द्वारा स्वीकृत हुआ, तो मै अपना श्रम सार्थक समझूंगा ।

विनम्र

शिवसहाय पाठक

विषय सूची

अध्याय		पृष्ठ संख्या
	लेखक श्री योगेन्द्रनाथ राज का फोटो	४
	समर्पण और केन्द्रीय निर्देशालय द्वारा दो शब्द	५
	दो शब्द (जनरल करियाप्पाके)	६
	आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी का परिक्षण प्रमाणपत्र	७
	आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी का परीक्षण सर्टिफिकेट	८
	भूमिका	९
	अनुवादकीय निवेदन	२०
१–	शरणगृह और खाइया	२७
२–	तमावरण और प्रकाश–प्रतिबन्ध	५९
३–	सरक्षक सेवा	६५
४–	रोगिवाहन सेवा	७४
५–	प्रक्षेपास्त्र, परमाणु बम और उदजनबम	९६
६–	अग्नि बम और अग्निसे सावधानी	११४
७–	भयकर विस्फोटक बम	१४३
८–	रासायनिक, कीटाणु–सम्बन्धी और विकिरण – विज्ञान सम्बन्धी युद्ध	१५४
९–	सरचनात्मक प्रतिरक्षा	१७८
१०–	प्रथमोपचार	१९१
११–	निष्क्रमण	२३९
१२–	हवाई आक्रमणका स्वरूप, बम–वर्षकोके प्रकार, बमवर्षक किस प्रकार सही रूपमे लक्षण वेध करता है और हवाई हमलेसे क्षति	२५२
१३–	हवाई आक्रमण के विरुद्ध बचावके उपाय	२७२
१४–	बचाव दल, विध्वस दल और मलबेकी सफाई	३००
१५–	नागरिक प्रतिरक्षाका अर्थ और औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षा	३२१
१६–	शिक्षा और जनताके कर्तव्य	३३९
१७–	स्थायी उपायके रूपमे पाठशालाओ, महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयोमे नागरिक प्रतिरक्षापर शिक्षाको मान्यताकी आवश्यकता	३५१
१८–	सरकारी, अर्द्ध–सरकारी और स्वैच्छिक सस्थाये	३६७
१९–	नागरिक प्रतिरक्षामे विशिष्ट प्रशिक्षण	४२२
२०–	विशेष प्रसंगमे नागरिक प्रतिरक्षा	४३४
२१–	शान्तिकालमे नागरिक प्रतिरक्षा का महत्व	४४७
	परिशिष्ट	
	अध्याय १ से लगाकर अध्याय २१ तक सब अध्यायोकी अलग–अलग	४५१
	विज्ञापन विभाग	५०२

चित्र सूची

चित्र संख्या		पृष्ठ संख्या
(१)	एक तलघरीय शरणगृहका निदर्श चित्र	३६
(२)	इस निदर्श–चित्रमें दिखाया गया है कि किस प्रकारसे सीमेन्ट या इस्पाती स्तम्भोंके उपयोग द्वारा चादर छतको सशक्त बनाया जा सकता है।	३७
(३)	एक भवनमें एक शरणगृहका निदर्श चित्र	३८
(४)	निचली मंजिल के एक शरणगृह का निदर्श–चित्र	३९
(५)	एक लीन–टू शरणगृह का चित्र	४०
(६)	एक दरारनुमा या मकरी खाईका आरेख	४२
(७)	इस आरेखमें चार प्रकारकी खाईयां–ऋजु, वक्राकार, बन्द सर्पिल टेढी मेढी और मुक्त टेढीमेढी दिखायी गयी है।	४३
(८)	खाइयोंके प्रारूपिक अभिन्यासका आरेख	४५
(९)	सतह पद्धति का शरणगृह (गोल ओपडीके प्रकारका)	४६
(१०)	सीमेन्ट –कंक्रीटमें बने हुए एक सुरंग शरणगृह का चित्र	४७
(११)	एक सुरंग–शरणगृहका चित्र	४८
(१२)	एक भूमिगत गैरेजका चित्र	४८
(१३)	एक जनता–शरणगृह जिसमें बहुत लोगों के समाने की व्यवस्था की जाती है।	४९
(१४)	एक व्यापारिक केन्द्रमें बने हुए भूमिगत लोक–शरणगृहका चित्र जो एक गोदामके कामके लिए भी उपयोगी है।	५०
(१५)	एक [illegible] चित्र, जिसमें उसके मिट्टीमें ढके जानेके पहलेका सीमेन्ट कंक्रीटका ढांचा दिखाया गया है।	५१
(१६)	इस निदर्श चित्रमें दिखाया गया है कि किस प्रकार एक लड़का पुस्तक पढ़ रहा है।	६०
(१७)	एक सरक्षक का चित्र	७२
(१८)	एक रोगिवाहन का चित्र	९५
(१९)	एक रॉकेट का चित्र	९८
(२०)	एक परमाणविक अस्त्रके विस्फोटका दिखानेवाला प्रथम चित्र	१०५

चित्र संख्या		पृष्ठ संख्या
(२१)	पारमाणविक अस्त्रके विस्फोटको दिखानेवाला द्वितीय निदर्श चित्र	१०६
(२२)	एक परमाणु बमके विस्फोटके द्वारा उत्पन्न बादल	१०६
(२३)	एक परमाणु बमके विस्फोटसे उत्पन्न बादल—मुख्य रूपसे स्थानीय आद्रता की कमीके कारण अपेक्षाकृत अधिक छोटे बादल	१०७
(२४)	चित्र जिसमें एक अग्नि दाहक बमका प्रभाव दिखाया गया है : छोटे और बडे पैमानेपर अग्नि दाह हेतु	११५
(२५)	किलो एलेक्ट्रान बम	११६
(२६)	एक "स्टिरप पप" के माध्यमसे जेटके प्रयोगद्वारा आगको नियन्त्रणमे लाते हुए।	१२१
(२७)	एक जलते हुए अग्नि बम पर "स्टिरप पप" द्वारा पानी छिडकना	१२२
(२८)	एक "स्टिरप पप" का चित्र	१२३
(२९)	चित्र, जिसमे प्रयोगके पश्चात् उचित ढगमे एक "स्टिरपप" को ट्यूब को रखनेका तरीका बताया गया है।	१२४
(३०)	बालूकी सहायतामे किसी अग्नि बमको बुझानेके लिए आवश्यक पदार्थ।	१२६
(३१)	एक अग्नि बमका चित्र, जो बिना विस्फोटके और बिना अग्नि पैदा किये पडा रह गया था।	१२८
(३२)	चित्र, जिसमे धुए के साथ सरकना दिखाया गया है	१२९
(३३)	धुएसे भरे किसी कमरेके दरवाजेको खोलनेका सही तरीका	१३०
(३४)	इस चित्रमे यह प्रदर्शित है कि किसी मूर्च्छित व्यक्तिको कैसे बचाया जाय	१३२
(३५)	इस चित्रमे दिखाया गया है कि सीढियोंसे नीचे किसी मूर्च्छित व्यक्ति को कैसे घसीटा जाय ऐसे व्यक्तिको एक कम्बल मे या उस स्थानपर किसीके कोट मे लपेटकर ऐसा करना अधिक सुदर होता है।	१३३
(३६)	किसी खिड़कीमे कूदते समय प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरणो को प्रदर्शित करनेवाला चित्र	१३४
(३७)	इस चित्रमें दिखाया गया है कि किस प्रकार किसी व्यक्तिको खिड़की मे से बाहर नीचे उतारा जा सकता है।	१३५

चित्र संख्या		पृष्ठ संख्या
(३८)	लोह–वर्म–वेधक वमका चित्र	१४७
(३९)	प्रस्तुत निदर्श–चित्रमे यह दिखाया गया है कि हवाई जहाजसे कैसे गैस बमोको गिराया जा सकता है।	१५९
(४०)	इस चित्रमे दिखाया गया है कि हवाई जहाज़से गैस स्प्रे द्वारा कैसे छोड़ा जा सकता है	१५९
(४१)	मस्टर्ड और ल्यूसाइट गैसोके द्वारा उत्पन्न फफोले	१६१
(४२)	(१) हवा न चलनेके समय गैसके प्रभावका निदर्श चित्र (२) हवाकी धीमी गतिके समय गैसके प्रभावका निदर्श चित्र (३) तीव्र हवा के समय गैस के प्रभाव का निदर्श चित्र	१६२
(४३)	सामान्य नागरिक श्वास–यन्त्र	१६४
(४४)	सिविलियन कार्यावधि श्वास–यन्त्र	१६५
(४५)	सामान्य सेवा श्वासयन्त्र	१६६
(४६)	दीवाल या दरवाजेके बचानेके उपायको दर्शानेवाला चित्र	१८०
(४७)	एक वायु निरोधक का चित्र	१८८
(४८)	कलाईसे रक्त–स्राव बन्द करनेके लिए बाहुमे रक्त–स्राव बन्धन लगानेका चित्र	२००
(४९)	जाघमे रक्त–स्रावके लिए रक्त–स्राव बंध	२०२
(५०)	शिरोवल्कसे रक्त-स्राव बन्द करनेके लिए सिरके चारो ओर कसकर पट्टी बाधनेका चित्र।	२०३
(५१)	पट्टी बंध (पट्टिया) (अ) बाहर फैली हुई पट्टी (ब) एक बार मोड़ी हुई पट्टी (स) चौड़ी पट्टी (द) तग पट्टी	२०६
(५२)	दोहरी गांठ और ग्रेनी गाठ	२०७
(५३)	बड़ी भुजा गल–पट्टी और छोटी भुजा गल पट्टी	२०८
(५३)	(अ) कृत्रिम श्वसन (शेफर–विधि १)	२२५
(५४)	कृत्रिम श्वसन (शेफर–विधि २)	२२५

चित्र संख्या		पृष्ठ संख्या
(५५)	कृत्रिम श्वसनकी मुख से मुख विधि	२२७
(५६)	रोगीको उठानेके लिए ले जाने वाले लोगो का तैयार रहना	२३२
(५७)	चित्र रोगीको उठाते हुए	२३३
(५८)	स्ट्रेचरपर रोगीको रखकर आगे बढ़नेका दृश्य	२३३
(५९)	चित्र रोगीको नीचे रखते हुए	२३४
(६०)	बराज गुब्बारा	२७५
(६१)	हवामार तोप	२८०
(६२)	चित्र जिसमे खोज बत्तियोद्वारा क्षितिजके चारों ओर प्रकाश डालना दिखाया गया है	२८५
(६३)	छद्मावरणके पूर्व तथा पश्चात् एक मोटर ट्रकका चित्र।	२८९
(६४)	रेडार	२९६
(६५)	रस्सी की महायतासे रोगीके हटाये जानेका चित्र	३०८
(६६)	एक जलती हुई इमारतसे आकस्मिक रूपसे ग्रस्त व्यक्ति को बचानेमे दमकलवालोके लिफ्ट का प्रयोग	३०९
(६७)	डेबी सुरक्षा पद्धति और घुमावदार सीढीके माध्यम द्वारा बचाव का प्रदर्शन	३१०
(६८)	जनताकी शिक्षा	३३९
(६९)	विनाशक तत्वोकी वर्षाके समय खुले स्थानमे रहनेवाले लोगों पर प्रभाव	३५७
(७०)	विनाशक तत्वोंकी वर्षाके समय शरणगृह मे रहनेवाले लोगोकी दशा	३५८
(७१)	मेण्ट जान एम्बुलेन्स सघका चिन्ह	४१३

– अध्याय १ –

शरणगृह और खाइयाँ

संयुक्त राज्य अमरीकाके सेना–विभागीय मेजर जेनरल विलियम एम. क्रीजीने १९६० ई. मे 'इनविज़िबिल पेरिल (Invisible Peril) शीर्षक अपने एक लेखमें स्पष्ट कहा था कि गत द्वितीय युद्धमे ५२ मिलियन (५ करोड़ २० लाख) से भी अधिक लोग मारे गये थे अथवा घायल हुए थे। इनमे आधेसे अधिक लोग नगरवासी (Civilian) थे । यदि यह सख्या एक सही दिशाकी ओर संकेत है, तो कोई भी व्यक्ति स्पष्टरूपसे समझ सकता है कि नागरिक जनसख्याकी सुरक्षा का प्रश्न एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है। यदि सच पूछा जाय तो विगत युद्ध उतना अधिक विध्वंसक (destructive) नही था, जितना कि एक नाभिकीय युद्ध हो सकता है और जो हमारे समयकी मानव जातिका महान दुर्भाग्य भी हो सकता है। मै समझता हूं कि ऊपर वर्णित ५ करोड २० लाख मरे हुए अथवा घायल हुए लोगोमेसे अधिकांश नागरिक प्रत्यक्ष मार या प्रहाराघातमे नही मरे, वरन् उनकी मृत्यु बमोके उड़नेवाले टुकड़ों, मलवापातों, उत्स्फोटों (blasts), गम, आक्षोभ और इसी प्रकारकी अन्य चीजोंके कारण भी हुई और इन सबके विरोधमें शरणगृह और खाइयां पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करती है । और यदि कोई व्यक्ति उनमें दो–तीन दिनोंकी अवधि तक रह सके, तो रेडियो सक्रिय या विघटनाभिक (Radioactive) आक्रमणका प्रभाव केवल कमही नही किया जा सकता है, वरन् सम्भव है कि वह बिलकुल प्रभावकारी न हो । ऐसी परिस्थियोंमे शरणगृह और खाइयोको रखनेकी महत्ताको कठिनाईसे ही बलपूर्वक कहा जा सकता है। यह जीवनका एक महत्वपूर्ण प्रश्न है इसीलिए भलेही हमें अर्थव्यय अथवा कठिनाईयोका सामना करना पडे, पर हमारा इसके साथ खेलना सम्भव नही है।

वर्तमान समयमें और भविष्यमे भी विश्व–शक्ति का सन्तुलन विश्व–स्तरपर पूर्ण युद्धकी शक्ति –क्षमताके ऊपर निर्भर है। लोगोंके मस्तिष्कोमे तनाव हर समय इतना अधिक है कि यदि हम युद्ध प्रभावोत्पत्तीकी बाते न भी करे तोभी यह तथ्य शेष रह जाता है कि हम सभी युद्ध–मनोवृत्तिवाले (War minded) तो है ही। कोई भी व्यक्ति जो परिस्थियोंकी यथार्थतासे अपने को परागमुख करनेका प्रयत्न करेगा वह निश्चयही अपने जीवनकी एक गम्भीर भूल कर बैठेगा । बहरहाल इस प्रसंगमें यह समझ लेना चाहिये कि जब हम बमो के टुकडो, मलवापातों, गैस, उत्स्फोट

आक्षोभ, आचूपण, सघहन, (Concussion) आदिके विरोधमें सुरक्षाकी बातें करते है, तो हमें स्थायी व्यवस्थाकी दृष्टिसे विचार करना चाहिये और ऐसा करनेके उपायोमे सबसे पहिला यह है कि हम तलघरीय शरणगृहों की संरचना करे, जिन्हे हम नये भवनोमे उपयुक्त शरणगृहो के रूपमें उपयोगमे ला सके, जिससे कि दुर्घटना के क्षणोमें किसी प्रकारकी दुश्चिन्ता न हो सके—जैसी कि गत नवम्बरमे चीनी आक्रमणके परिणामस्वरूप उठ खडी हुई थी।

शरणगृहोके लिए प्रावधान रखे जानेके लिए हमारे देशमे एक कानून बना देना चाहिए। वस्तुतः विश्वके प्रत्येक देशमे, जहा ऐसे कानून अस्तित्व में नही है, वहाँ इसे एक कानून का रूप देना चाहिए। इसका अर्थ यह होगा कि हवाई आक्रमण के खतरोको चाहे वे उग्र विस्फोटक बमोके द्वारा उत्पन्न हो, चाहे मिसाइलो (Missiles) के द्वारा, कम किया जा सकेगा। यदि सच पूछा जाय, तो विश्वमे जहा ऐसा न हों, वहा एक उपयुक्त विनिमय (Regulation) भी बनाया जा सकता है यहा तक कि पुराने भवनोमे भी इस प्रकारके स्थानोको प्रदान करनेके लिए आवश्यक परिवर्तन किये जा सकते है जो दुर्घटनाके समयमे शरणगृहके रूपमे काम आ सके। मै इस रायका नही हूं कि हमे नवम्बर १९६२ मे दिल्लीमे सुझायी पद्धति पर अग्रेजीके जेड अक्षरके (Z) आकारकी खाइयां और विशिष्ट खाइयो (Dugouts) के निर्माणकी ओर जाना चाहिये। हमे हर समय यह ध्यान रखना चाहिए कि शरणगृहो और खाइयो का निर्माण केवल युद्धके समय के लिए ही नही होना चाहिए बल्कि उनका निर्माण शान्तिकालीन उपयोगके लिए भी होना चाहिए। हम ऐसी 'जेड' आकारवाली खाइयोमे बिना उपयुक्त विचारणाके नही जा सकते और जो यदि खुली रही, तो शरारती तत्वोके उत्पातोके लिए शिकारके रूपमे सिद्ध हो सकती है। और इसके साथ ही वह किसी भी सुन्दर शहरके सौन्दर्यको भी बुरी तरह खराब करेगी। यदि सचमुच ही हमे खाइयोका निर्माण करना है, तो ऐसा इस अध्यायके आगामी पैराग्राफोमे प्रदर्शित रूपमेही किया जाना चाहिये।

नेहरूजीने १७ जनवरी १९६३ को दिल्लीमे एक जनसभामे भाषण देते हुए कहा था कि चीनी आक्रमणका आशय अत्यन्त गम्भीर है। इस झगड़ेका एक सहज और पूर्ण हल निकलनेकी आशा करना एक भूल होगी। उन्होने कहा था कि चीन द्वारा आरोपित खतरा गम्भीर है। लोगोको इसका सामना करनेके लिए स्वयंको तैयार रखना चाहिये, भलेही यह काफी लम्बे अरसे तक चले। प्रधानमन्त्रीके ये उद्‌गार इस अर्थमे स्पष्ट है कि लोगोको किसी भी सम्भाव्य दुर्घटनाका सामना करनेके लिए प्रस्तुत रहना चाहिये। इस तथ्यके प्रकाशमें और इस तथ्य् के भी प्रकाशमे कि आजके हमारे विश्वमे यह कोई नही कह सकता कि कब कष्ट उठ खडा

होगा, यह आवश्यक है कि एक स्थायी आधारपर शरणगृहो और खाइयोको बनाया जाना चाहिये। दिनाक १४ जनवरी १९६३ के वाशिगटनसे प्रसारित एक समाचारके विषयमे यह समझा जाता है कि राष्ट्रपति कैनैडीने उस दिन घोषणा की थी कि सयुक्त राज्य अमरीकाके प्रतिरक्षा बजटको उस वर्ष पुनः वर्द्धित किया गया और उसमे केवल नाभिकीय आयुधोके लियेही डॉलर १५,०००,०००,००० से अधिक एक विनिधान (Alloction) सम्मिलित होना था। इससे इस तथ्य की सूचना मिलती है कि नाभिकीय आयुधोके उत्पादनकी महत्ता अधिकाधिक रूपमे स्वीकृत होती रही है और गत कुछ वर्षोमे हुए निरस्त्रीकरण सम्मेलनो (Disarmament Conferences) का कार्य सचमुच रूपसे आस्थन (Abeyance) की स्थितिमे मे ही चला गया। ऐसी स्थितिमे यह आवश्यक है कि किसी भी नाभिकीय आक्रमणकी स्थितिमे प्रचण्ड अभिपात का सामना करनेके लिये विश्व की प्रत्येक शक्तिको आवश्यक पूर्वोपाय या सावधानी रखनी चाहिये। यह ठीक है कि किसी परमाणु बम अथवा उदजन बमके प्रत्यक्ष प्रहारके विरोधमे सुरक्षा नही होगी, लेकिन यह तथ्य रह जाता है और जैसा कि वैज्ञानिको, जिसमे पोलैण्डके प्रो. राटब्लेट भी सम्मिलित है, जो कि इग्लैण्डमे परमाणविक उर्जा–आयोगके एक सदस्य भी रहे है, के द्वारा स्थापित सिद्धांत सिद्ध हो जाता है कि भलेही रेडियो सक्रिय आक्रमण हो, पर लोगोको बहुत बडी सख्याम बचाया जा सकता है, यदि वे दीवालोके पीछे रहे और यदि वे शरणगृहोमे है तो उससे भी बडी सख्यामे लोगो को बचाया जा सकता है। सभी सम्बन्धित लोगोको स्पष्ट रूपमे यह जान लेना चाहिये कि केवल समाघातके स्थलपर ही क्षति नही होगी, बल्कि उदजन या परमाणु बम काफी लम्बी दूरी तक क्षति पहुचाता है और यह क्षति प्रयोगित बमके आकार और प्रकारके अनुरूप ही होती है। इन सबके आलोकमे यह आवश्यक ह कि नाभिकीय आयुधो और गत युद्धमे प्रयुक्त अन्य प्रकारके आयुधोके विरोधमे सुरक्षाके लिए आवश्यक पूर्वोपायोको एक स्थायी आधार पर शरणगृहो और खाइयोको बनानेके द्वारा प्रदान किया जाना चाहिए और जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि सबके लिए इसे अवश्य ही अपरिहार्य बना देना चाहिए कि वे अपने नये भवनोमे और पहलेसे बनाये गये भवनामे भी ऐसी व्यवस्था करे। जहा तक वृहद जन–शरणगृहोका सम्बन्ध है, यह कार्य राज्य–सस्थाओ या निगमो को (जैसी स्थिति हो) अपने हाथो मे ले लेना चाहिए और हवाई आक्रमणके खतरेकी चेतावनी (Air Raid Alarm) मिलनेपर इन स्थानो का उपयोग छविगृहो, कारखानो अथवा किसी अन्य वृहद् सभाओसे बाहर आनेवाले लोगोद्वारा अवश्यही होना चाहिये अथवा उन अन्य लोगो को भी इनका उपयोग करना चाहिए जो उन मनोवैज्ञानिक क्षणोमे ५ से १० मिनट के अन्तर्गत अपने घरोको नही पहुंच सकते। इस सदर्भमे यह अवश्य स्मरणीय है कि इन स्थायी सुरक्षा उपायोके युद्ध कालीन उपयोग की ही भांति शान्तिकालीन

उपयोगको भी ध्यानमे रखना चाहिये। गर्मीके दिनोमे उनका उपयोग गोदाम या सुरागारके रूपमे अथवा विश्रामके लिये, जो कि गर्मीके मौसममे दिल्ली, आगरा और भारतके अन्य अनेक स्थानो मे अत्यन्त सामान्य है किया जा सकता है। तलघरीय शरणगृहो का उपयोग गैरेजो, गोदामो, सायकिल स्टैण्डो, मनोरंजन स्थलो और थियेटरोके रूपमें किया जासकता है। उनका उपयोग विशाल सभागारोके रूपमे भी किया जा सकता है, जहा पर लोग अपने व्याख्यानोको दे सकते है और महत्वपूर्ण धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक समस्याओका सामूहिक रूपमे अध्ययन कर सकते है।

गत युद्धके अनुभवसे स्पष्ट है कि विभिन्न देशोमे अनेक प्रकारके शरणगृहोका निर्माण किया गया था। उनमेसे कुछका उपयोग प्रधान रूपसे युद्ध–कटिबन्धोमे सैनिको और नागरिक प्रतिरक्षा मुख्यालयो, आरक्षियो और अन्य आवश्यक सेवाओ द्वारा किया गया था और ये शरणगृह ऐसे थे कि उनपर प्रत्यक्ष प्रहार तकका कोई प्रभाव नही हुआ था।

उस समय ऐसी भी स्थितिया थी कि बहुत बडे आकारके शरणगृह भी बनाये गये थे। उदाहरणके लिये, स्टाकहोमके कैटारिनाबर्गेटमे (स्वीडनमे) विश्वका विशालतम शरणगृह जिसमे हवाई आक्रमणके समय बीस हजार लोगो के समाजानेकी व्यवस्था थी, बनाया गया था। जिस पहाडीमे यह शरणगृह स्थित है, वहापर इसका निर्माण करनेके लिए लगभग चालीस लाख घनफूट चट्टानको तोडना पडा था। इस शरणगृहकी भाति स्टाकहोमके तीन अन्य वृहद्तम शरणगृह मूल रूप से गैरेजोके रूपमे बनाये गये थे। बहरहाल हमारे देशमे हवाई आक्रमणसे सुरक्षाके लिए विशाल जनशरणगृहो जिसमे सम्पूर्ण जनता शरण ले सके, के निर्माणका विचार युक्तियुक्त नही है ओर मेरे मतके अनुसार जनताको जहा तक सम्भव हो, वहा तक बिखरा देनेके सामान्य रणचातुर्यकी दृष्टिसे प्रत्यक्ष रूपसे विरोधकी वस्तु है। वैयक्तिक आवश्यकताओके अनुसार किस प्रकारका शरणगृह उपयुक्त है, इस बातका विचार करते समय यह अनुभव करना चाहिये कि उग्र विस्फोटक बमोके प्रत्यक्ष समाघातके विरोधमे सुरक्षा आत्यतिक रूपमे कम है और किसी परमाणु बम या उदजन बम या मिसाइलके प्रत्यक्ष प्रहारमे तो सुरक्षा बिल्कुलही शून्य है। बहरहाल, इन सबोके भी विरोधमे विभिन्न अशोमे एक सुरक्षाका तत्व है और इसी दृष्टिसे शरणगृहो और खाइयोका महत्व है। उनका निर्माण विशिष्ट स्थानोकी स्थितियो, विशिष्ट गृहोकी स्थितियो और जनता (जो इसके लिए व्यय करेगी) की स्थितियोके अनुसार होना चाहिये। बहरहाल, तथ्य यह है कि एक शरणगृह मूल रूपमे ऐसा होना चाहिये जो कि बमोके उड़नेवाले टुकडो, मलवापात, उत्स्फोट, समाधहन आदिसे सुरक्षा प्रदान करनेमे समर्थ हो। वृहद् भयकर विस्फोटक बमो (एक उदजन बम या परमाणु बमकी तो वस्तुत. बात ही नही करनी है) के प्रत्यक्ष प्रहारके विरोधमे पूर्ण सुरक्षा प्रदान करनेके लिए किसी हवाई आक्रमण–शरणगृहको आवश्यक

रूपमें भूमितलमें इतनी गहराईमें विनिर्मित करना चाहिये अथवा इसे ऐसे भीमाकार अनिश्चित शरणगृह निर्माणका रूप देना चाहिये। ऐसा करने से इसका व्यय प्रतिषेधात्मक हो जायगा। वस्तुतः हमारे देशमें बैंक वाल्ट्स, प्रतिरक्षा मुख्यालयों आदिकी भाति उनका निर्माण भी विशिष्ट विचारणाके अन्तर्गत ही किया जाना चाहिये। पातालगृह, तहखाने या खाइयों को प्रत्यक्ष प्रहारके अतिरिक्त अन्य किसी भी वस्तुके विरोधमे स्पष्ट रूपसे सुरक्षित बनाया जा सकता है। शरणगृहका प्रकार वहांकी भूमिकी अवस्थलीय प्रकृति और अधस्तलीय जलके स्तरपर निर्भर करता है।

गत युद्धमें प्राप्त मेरे अनुभवोंके आधारपर शरणगृह और खाइयोंको चार भागोंमें बाटा जा सकता है :–

(१) ऐसे शरणगृह जिनमें प्रतिरक्षा, नागरिक प्रतिरक्षा, आरक्षी, दूरभाष, फायर-ब्रिगेड (दमकल), अस्पताल या अन्य कुछ शासकीय अधिकारी काम करें, ऐसा शरणगृह पुर्नदृढीकृत काक्रीट से बनाया जाना चाहिये और भूमिमें इन्हे काफी गहरा होना चाहिये और जहा कही सम्भव हो पहाडियोंके हिस्सोंको तोडकरके उन्हे बनाया जा सकता है।

(२) गलियों या सड़कोंपर चलनेवाले लोगोंको बमोंके उडनेवाले टुकड़ों, मलवापातों और गैस आदिसे सुरक्षाके लिए जनता शरणगृहों को बनाना चाहिये। ये मुख्यत. उन लोगोंके लिए बनाये जायगे, जो हवाई हमलेकी चेतावनी के भोपूके बजाये जानेके पश्चात् दस मिनटकी अवधि तक अपने घरोंको नही पहुच सकते। इस संदर्भमें यह लिखा जा सकता है कि लदनके गृह – कार्यालय (Home Office) ने ऐसे शरणगृहोंको ५० व्यक्तियोंसे अधिकके लिए बनाये जानेकी सिफारिश नही की है। किसी भी हालतमे ऐसे शरणगृहोंको इस प्रकार बनाना चाहिये कि शान्ति कालमे कारोंको पार्क करनेके लिये उनका उपयोग किया जा सके। अथवा जब ऐसे शरणगृह बनाये जायं तो किसी स्थानकी विशिष्ट परिस्थितिके अनुसार सुचिन्तित अन्य किसी उपयुक्त प्रयोजनके लिये ही बनाये जाय।

(३) कारखानों और व्यापारिक स्थानोंमें बमोंके उडनेवाले टुकड़ों, गैस आदिके विरोधमे सुरक्षाके लिये बनाये गये शरणगृह––लेकिन इनमेंसे कुछ अवश्य ही सामान्यरूपसे बड़े आकारवाले अथवा तलघरीय शरणगृह होंगे, जिनका निर्माण किसी विशिष्ट स्थितिके अनुसार सुनिश्चित किया जा सकता है, लेकिन उन्हे ऐसा होना चाहिये कि उनमें आसानी से कुछ और अधिक लोगोंको स्थान प्रदान किया जा सके। उन्हे अवश्य ही इतना सुदृढ बनाना चाहिये कि यदि भवनका कोई अश उसपर गिर भी पड़े तो भी उस शरणगृहके अन्दर रहनेवाले लोग सुरक्षित रहे। बम्बई जैसे स्थानोंमें इस बातको देखनेके लिए विशेष रूपसे सावधानी रखनी चाहिये कि वर्षाके मौसममें ऐसे शरणगृह जलप्लावित न हो सकें। ऐसे शरणगृहोंको सुदीर्घ सक्रीट, सुरग (Tubes)

के रुपमें भी बनाया जा सकता हैं, जिसका एक अंश भूमिस्तरके नीचे भी हो सकता है, और यदि किसी स्थितीमे सम्पूर्ण भागको भूमितल मे बनाना आसान न हो, तो उसका एक भाग भूमिके स्तरके ऊपर भी हो सकता है, जो सदैव अधिक अच्छा होता है। वस्तुतः ऐसे शरणगृहोको शान्तिकालमे कारोंको पार्क करनेके लिए और साइकिल शेडोके रुपमें उपयोगके लिए पर्याप्त अच्छा बनाना चाहिये।

(४) चौथे प्रकारका शरणगृह बमोके उडनेवाले टुकडो, मलबापातो, गैस आदिके विरोधमे सुरक्षाके लिये आपके घरोमे, विद्यालयोमे अथवा होटलोमे बनाया जाना चाहिये। यदि आपके यहा तलघरीय अश है, तो आपको उनका उपयोग अवश्य करना चाहिये। उस स्थितिमे नवीन शरणगृहोको बनानेकी बिलकुल आवश्यकता नही है। हा, यदि आवश्यक हो, तो उसेही अपेक्षाकृत सुदृढ बनाया जा सकता है। यदि ऐसा नही है, तो उस स्थितिमे सामान्य निर्माण प्रकारके शरणगृहोको बनाया जा सकता है। गैस आक्रमणके विरोधमे सुरक्षाके लिए इन शरणगृहोको इस प्रकारसे बनाना चाहिये कि उन शरणगृहोमे बाहरकी ओरसे हवा प्रवेश न कर सके, ऐसे प्रयोजनोके लिए वायु-शुद्धीकरण सयन्त्र (Air filtration Plant) को भी लगाया जा सकता है।

उपर वर्णित चार विभागोको आसानीसे समझनेके लिए पुन दो भागोमे विभाजित किया जा सकता है। शरणगृह निम्नलिखित हो सकते हैं :--

(१) भवनोके भीतर और

(२) भवनोके बाहर

पहले प्रकारके शरणगृहोके लिए हमे सदैव उसी भवनका चयन करना चाहिये जो ठोस सीमेण्ट बजरी अथवा इस्पती ढाचे (Steel Frame) का बना हो, अथवा जिसका फर्श और छत सीमेण्ट कक्रीटका और विशेषकर ऐसे पदार्थका बना हो, जिससे अग्निके विरोधमे सुरक्षा रहे। जिस कक्षमे अधिक सख्यामे खिडकिया हो, उसकी अपेक्षा उस कक्षका सदैव चयन करना चाहिये, जिसमे कम सख्यामे खिडकिया हो। कोई भी ऐसा कक्ष जिसकी खिडकिया सलग्न भवनो, भीतरी रास्तो या बरामदोके द्वारा सरक्षित हो और जब वे भूमियमाले ग्राउण्ड-फ्लोअर पर हो तो वे सुरक्षाके लिए सदैव और अधिक अच्छे होते है।

भवनोके बाहरके शरणगृह दो प्रकारके होते है--

(१) खाई शरणगृह या पातालगृह और

(२) भूमिकी सतहके ऊपर बने हुए शरणगृह। इनका निर्माण ठोस सीमेण्ट बजरी (कक्रीट) या इस्पाती ढाचेका होना चाहिये।

गत युद्धके दौरान ग्रेट ब्रिटनमे निम्नलिखित प्रकारके शरणगृहोकी सिफारिश कि गयी थी :--

(१) (अ) खाइ शरणगृह या पातालगृह (Trench Sheltere or Dugouts)

(ब) दीर्घ खाइया (Slit Trenches)
(स) सीधी खाई (Straight Trench)
(द) बन्द–सर्पिल खाई (Close Zig'zag Trench)
(य) मुक्त सर्पिल खाई (Open zag' zag trench)
(क) खाइयोका प्रारूपि अभिन्याशस (Typical lay out of Trenches)

अनेक प्रकारके खाई–शरणगृह इस प्रकारके से बनाये गये थे कि उनमे एक सहज प्रवेश द्वार और एक सहज बहिर्गमन द्वार थे। बीचमे थोडे स्थानोको छोड़कर वे आयाताकार बनाये गये थे। इग्लैडमे सुझाये गये रूपोमे सामनेकी पक्तिमे ४ आयाताकार (Rectangular) आकारकी खाइया और उन पक्तियोके मध्यमे मध्यवर्ति स्थलके साथ पीछेकी पक्तियोमे भी चार आयाताकार (Rectangular) खाइया थी ओर प्रत्येक आयातकार खाई आपसमे जुडी हुई थी और उन खाइयो मे बीचमे आसान प्रवेश द्वार और बहिर्गमन द्वारके लिए भी प्रबन्ध था।

(२) तलगृहीय शरणगृह (नये भवनोमे विनियोजित अन्य शरणगृह भी)
(३) व्यापारगृहोमे बनाये गये शरणगृह, जो गोदामोके प्रयोजनोको भी पूरा करते थे ।
(४) भूमिस्तरीय शरणगृह (Ground Floor Shelters)
(५) भोजनालय या रसोईघर, जिसके लिए हम अपने देशमे भोजनालय या भडारगृह शब्दका प्रयोग करते है। इन शरणगृहोका कुछ और अधिक व्यय करने, उनके पुनर्नवीकरण एव विशिष्ट आवश्यकताओके अनुसार उस स्थलके पुनर्दृढीकरण के पश्चात् ही उपयोग किया जा सकता है।
(६) लीन टू–शरणगृह (Lean-to-Shelters)
(७) प्रबलित या पुनर्दृढीकरण ककरीट शरणगृह (Reinforced Concrete Shelters)
(८) सतह–पद्धतिका शरणगृह (Surface type of Shelters)
(९) सुरग–शरणगृह
(१०) सुरग–शरणगृह (इस्पाती लाकशेट प्रणालीका)
(११) जनता–शरणगृह (इस उद्देशके लिए भूमितलीय गैरेजोका प्रयोग किया गया था।
(१२) मालगोदामोके अन्तर्गत शरणगृह
(१३) क्रीडास्थलीय शरणगृह
(१४) थिएटर या छविगृहोके निकट खुली जगहोमे जनताके लिए भूमितलीय शरणगृह, जहापर एक साथ ही बहुत बडी सख्यामे लोगोको रखा जा सके।
(१५) विशाल व्यासवाली कर्कीट सुरग (Large diameter Concrete Tubes)

शरणगृहोको ऐसा होना चाहिये, जिसमे कि सवातन (Ventilation) के

लिये पर्याप्त व्यवस्था हो। दूसरी ओर ऐसे भी शरणगृह हो सकते है, जिनमे सवातनके लिए बिलकुल व्यवस्था ही न हो। उनमे वायु और प्रकाशकी पूर्तिके लिए आधुनिक उपाय पर्याप्त अच्छे है। जहा तक गैसका सम्बन्ध है, ऐसा एक बन्द कमरा एक गैस ताले (Gas Lock) के ही समान है। शरणगृहका तापमान सामान्य और शीतल होना चाहिये और किसी सीमेण्ट कक्रीट शरणगृहोको बनानेके द्वारा बहुत अच्छी तरहसे प्राप्त किया जा सकता है।

यह उपयोगी हो सकता है यदि मै इतना और जोड दूँ कि लदन काउन्टी काउन्सिलने ५० फीटकी दूरीपर फटनेवाले एक उच्च विस्फोटक बमके उडनेवाले टुकडोके विरोधमे सुरक्षाके लिए क्या सिफारिश की थी।

मिट्टी या बालू	३० इच
कक्रीट जो ठोस नही है (जो एकसे छ की अपेक्षा अधिक कमजोर नही है)	१५ इच
सीमेण्ट	साढे १३ इच
ठोस कक्रीट (सामान्य)	१२ इच
ठोस कक्रीट (विशेष)	१० इच
सामान्य इस्पाती चादर	डेढ इच

यह अनुमानित है कि पाच इच मोटी सीमेण्ट कक्रीटकी पट्टी आसानीके साथ एक सवा दो पौण्ड वजनके अग्निबमके प्रहारको सक्षमताके साथ सहन करनेके लिए और उसके प्रभावको व्यर्थ बनानेके लिए पर्याप्त है।

किसी शरणगृह की चादरछतको (Ceiling) चाहे वह जहा कही भी हो, इतना सुदृढ होना चाहिये कि यदि उसपर भवन भी गिर पडे तो भी वह विशीर्ण न हो।

तलघरीय शरणगृह

ये शरणगृह अत्यन्त उपयोगी होते है, क्योकि उन तक पहुचना आसान है। किसी सामान्य घरमे जहापर बमोके उडनेवाले टुकडो, गैस, रेडियोसक्रिय धूलि आदिके प्रभावके विरोधमे उपयोगके लिए शरणगृह बनाया गया है, एक छोटा कमरा पर्याप्त है। जहा तक सम्भव हो, प्रवेशद्वारमे एक गैस प्रतिकक्ष (गैस लाक) की अवश्यही व्यवस्था होनी चाहिये। उसमे एक छोटा-सा प्रसाधन कक्ष भी अवश्यही होना चाहिये, जिसका शरीर-विन्यास और शौचादिसे निवृत्तिके लिये उपयोग किया जा सके। उसमे भोजन सचय (Storage of food) और जलकी भी व्यवस्था अवश्य ही होनी चाहिये, जिससे कि किसी रेडियो सक्रिय आक्रमणकी स्थितिमे आपको दो या तीन दिनो तक भीतर रहना ही पडे, तो आप आसानीके साथ निर्वाह कर सके। प्रवेश द्वारमे एक गैस प्रतिरक्षाकी व्यवस्था, जो कि रेडियो धूलिके प्रभावके विरोधके लिए सामान्य

रूपसे लाभकारी होगी, के अतिरिक्त उसमे एकसकटकालीन बहिर्गमन द्वारके लिये भी व्यवस्था होनी चाहिये, जिससे कि सभाव्य दुर्घटनाके समयमे उसका उपयोग किया जा सके ।

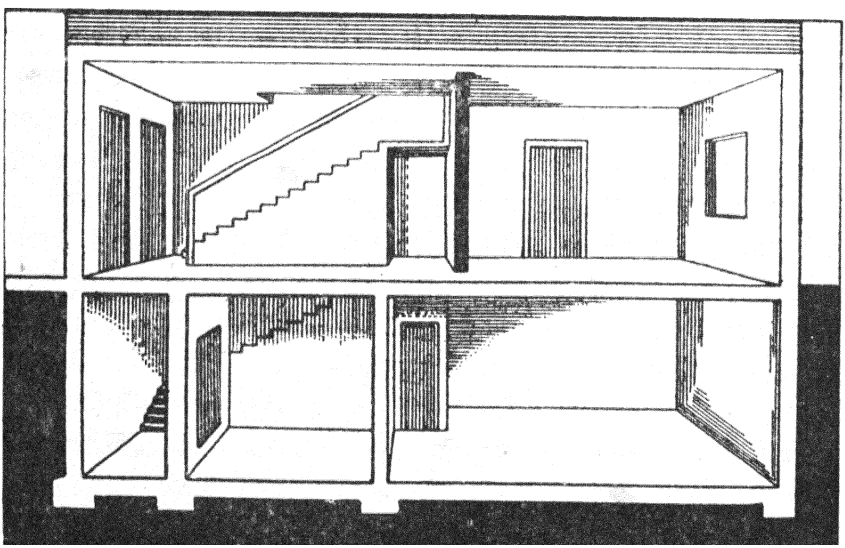
जहा तक सम्भव हो, ऐसे शरणगृहोको भवनके मध्यभागमे होना चाहिये । उन्हे तापक–कक्ष (Boiler Room) या उस प्रकारके अन्य खतरनाक वस्तुओसे दूर होना चाहिये । ठीक इसी प्रकार से, किसी तलघरीय शरणगृहको पानीके टैक ओर भारी मशीनोके नीचे कभी भी नही बनाना चाहिये । यदि भीतरी छत अधिक चौडी नही है तो तुलनात्मक रूपमे यह अधिक अच्छी और सुदृढतर होती है और कोई उसे और अधिक दृढ बनाना चाहे, तो उसमे लागत भी कम लगेगी । बहरहाल अधिक चौडी होनेकी स्थितिमे भीतरी छत को सुदृढतर आधार पर बनानेके लिए व्यवस्था की जा सकती है ।

विशिष्ट स्थानकी स्थितिके अनुसार, तलघरीय शरणगृहोको प्रत्येक भवनमे बनाना चाहिये ।

प्रत्येक देशमे यह कानून बना ही देना चाहिये कि प्रत्येक नये भवनमे नियमित रूपमे एक तलघरीय शरणगृह होना ही चाहिये और जब तक कि एतदविषयक आवश्यक व्यवस्था नही हो जाती, तब तक किसी नये भवनकी योजनाको पास नही किया जाना चाहिये । इस कानूनके अन्तर्गत पुराने भवन भी आते है और सभी मकान–मालिकोको तलघरीय शरणगृहो की व्यवस्था करनेके लिए, जहापर वे अस्तित्वमे न हो, आदेश दिया जाना चाहिये । वस्तुत अमृतसर जैसे शहरमे १९४७ ई मे साम्प्रदायिक दगोके समयमे अनेक भवनोके तलघरोको साफ कर दिया गया था, जिससे कि वे उनके बहुमूल्य द्रव्यो, जेवर आदिको सुरक्षित रखनेके उपयोगमे आ सके । अनेक भवनोमे ऐसे तलघर पाये जा सकते है, और अब उन्हे तलघरीय शरणगृहोके रूपमे किसी विशिष्ट स्थितिके अनुरूप आवश्यक परिवर्तन या सशोधनके साथ एक उग्र विस्फोटक या नाभिकीय आक्रमणके विरोधमे उपयोगमे लाया जा सकता है । यदि तलघरीय शरणगृहोकी व्यवस्था की जाय और अन्य प्रकारके शरणगृहोके सम्बन्धमे आवश्यक एहतियाती कार्यवाही की जाय तो नाभिकीय आक्रमणके समय भी मरनेवालो की सख्या किसी रेडियोधर्मी आक्रमणके समयमे अनजाने रूपमे फस जानेके समय जो मृत्युसख्या होगी, उस स्थितिमे भी दसवा हिस्सा या उससे भी कम होगी । वस्तुत एक परमाणु या उदजनबमका प्रभाव केवल सघात स्थलपर ही, जो कि तुलनात्मक रूपमे छोटा होता है, नही होता, वरन मीलोकी दूरीतक इसका प्रभाव पडता है, जहाँपर रेडियो धर्मी धूलिके द्वारा प्रत्येक वस्तु प्रभावित होती है । रेडियो धर्मी धूलि वह विशिष्ट प्रकारकी धूलि है, जो भयकर गतिमे धावमान होती है, और यह सामान्य सी तर्ककी बात है कि आप उसके विरोधमे अपनेको सुरक्षित रख सकते है,

पर केवल यह तभी हो सकता है जबकि आप शरणगृहके भीतर रहनेकी सावधानी बरते और जब तक इसका प्रभाव समाप्त नही होता, तब तक आप इस (धूलि) से प्रभावित न हो और नवीनतम सिद्धान्तोके अनुसार चन्द दिनोंकी ही अवधिमे यह प्रभाव समाप्त हो जाता है। यह अवश्य याद रखना चाहिये कि यद्यपि जैसा कि उसे कहा जा सकता है, रेडियो–सक्रिय राख या धूलि किसी उच्च विस्फोटक बमके आघातके कारण बमके उड़नेवाले टुकड़ोंके समान नही है, अतः यह परामर्श है कि आप अपने तलघरीय शरणगृहको उसके भी विरोधमे प्रमाण–साधन बना लें, क्योकि किसी भी भूमडलीय युद्धप्रणालीमे जोकि मानवजातिका दुर्भाग्य हो सकता है, परमाणु या उदजन बमके प्रयोगकी सम्भवनीयताको मिटाया नही जा सकता।

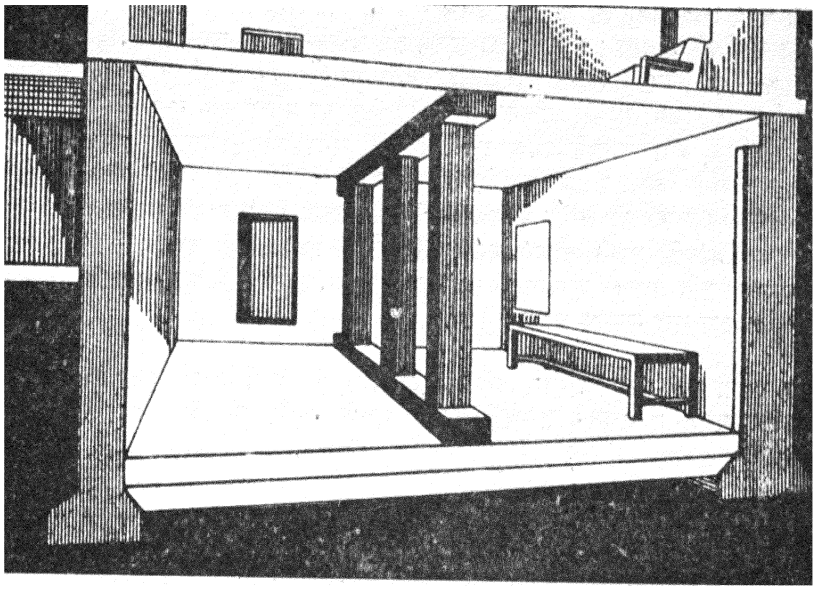
यहा नीचे एक तलघरीय शरणगृहका एक निदर्श–चित्र दिया गया है, जो आवश्यक सशोधन और परिवर्तनके साथ और किसी विशेष स्थानकी आवश्यकता और उसके लिए व्यय भार सहन करनेवाले लोगोकी क्षमता के अनुसार प्रत्येक भवनमे, प्रत्येक होटल आदिमे बनवाया जा सकता है।



चित्र १

एक तलघरीय शरणगृहका निदर्श–चित्र।

यह आवश्यक है कि किसी तलघरीय शरणगृहकी चादर–छतको सुदृढ होना चाहिये। यदि कोई किसी भवनके निर्माणके विषयमे विवरण प्राप्त कर ले, तो चादर–छतकी क्षमताको सुनिश्चित करना निश्चयही सम्भव है। हा, यदि विवरण



चित्र २

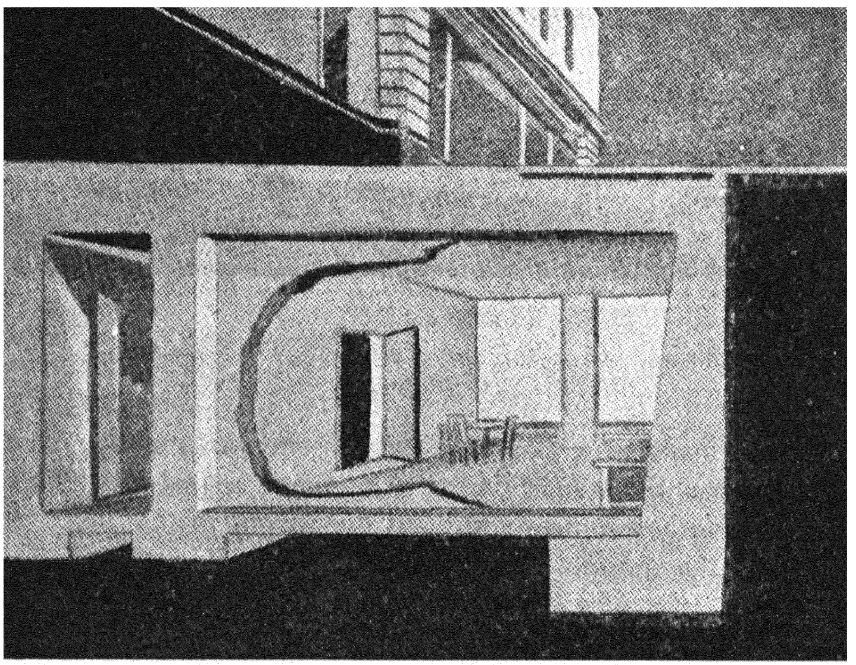
इस निदर्श–चित्रमे दिखाया गया है कि किस प्रकारसे सीमेण्ट या इस्पाती स्तम्भोके उपयोग द्वारा चादरछतको सशक्त बनाया जा सकता है।

प्राप्त न हो सके तो आप चादरछत की क्षमता को सलग्न स्थानों के अतिरिक्त शरणगृहकी लम्बाई, चौडाई और ऊचाईका हिसाब लगाते हुए सुनिश्चित कर सकते है। यदि चादर–छत कमज़ोर है, तो ठोस सीमेण्ट कक्रीटके उपयोगसे उसे अधिक सशक्त बनाया जा सकता है। लेकिन यदि चादरछत अत्यन्त कमज़ोर है, तो एक नितान्त नवीन सीमेण्ट कक्रीटकी चादरछतके द्वारा प्रतिस्थापित की जा सकती है, जैसा कि उपरोक्त निदर्श–चित्रमें दिखाया गया है कक्रीट या इस्पाती स्तम्भोको भी चादरछतोको सुदृढ बनानेके लिए उपयोगमे लाया जा सकता है। किसी तलघरीय शरणगृह कीदीवार को भी चादरछतके भारको सहन करनेके लिए पर्याप्त सुदृढ होना चाहिये ओर यदि उपरीभाग नीचे गिर पडे तो वह उसका भी भार प्रति सहन कर सके। किसी शरणगृहकी सीमेण्ट कक्रीटकी दीवारके बाहरी भागकी चौडाई–मोटाई कमसे कम बारह इंच होनी चाहिये। यदि वह ईट पत्थर या किसी अन्य पदार्थकी बनी हुई हे, तो उसकी शक्ति उन सीमेण्ट कंक्रीट की बारह इंच मोटी दीवारो के बराबर होनी चाहिये।

शरणगृहका फर्श भी अत्यन्त सुदृढ होना चाहिये। इसे चादरछतकी मोटाईसे कमसे कम आधा होना चाहिये। हमें यह भी देखना होगा कि उनके भीतर वायुप्रवेशके

लिए कोई छिद्र नहीं है, अन्यथा उनमें गैस या रेडियोसक्रिय धूलि के प्रवेश के लिए स्पष्ट मार्ग हो जायगा। यदि वे छिद्र उनमे हो, तो उन्हें बन्द कर देना चाहिये। वस्तुतः यह देखनेके लिए अपेक्षित सावधानी रखनी चाहिये कि किसी नलिकाके माध्यमसे भी गैस या रेडियो सक्रिय धूलिके लिए कोई छिद्र या प्रवेश मार्ग नही है। यदि ऐसा है तो उसे मूंद देना चाहिये अथवा इस समस्याके समाधानके लिए जिस किसी भी अन्य उपायको पाया जाय, उसका उपयोग किया जाना चाहिये। विद्युत–प्रकाश अथवा अन्य प्रकारके प्रकाशकी ही भांति मूत्रालय और शौचालय निवृत्ति की भी व्यवस्था होनी चाहिए। आपको उसमे भोजन आदिके लिए भी अवश्य ही प्रबन्ध करना चाहिये, जिससे कि यदि आपको शरणगृहमे एक साथ ही चन्द दिनोके लिए रहना पडे, तो आपके लिए ऐसा करना सम्भव हो सके।

यहा नीचे एक भवनमे बने हुए शरणगृहका निदर्श–चित्र दिया गया है। नये भवनोंमें शरणगृह भवनके तलघरमें अथवा उसके बाहरी भागके समीपमें ही बनाये



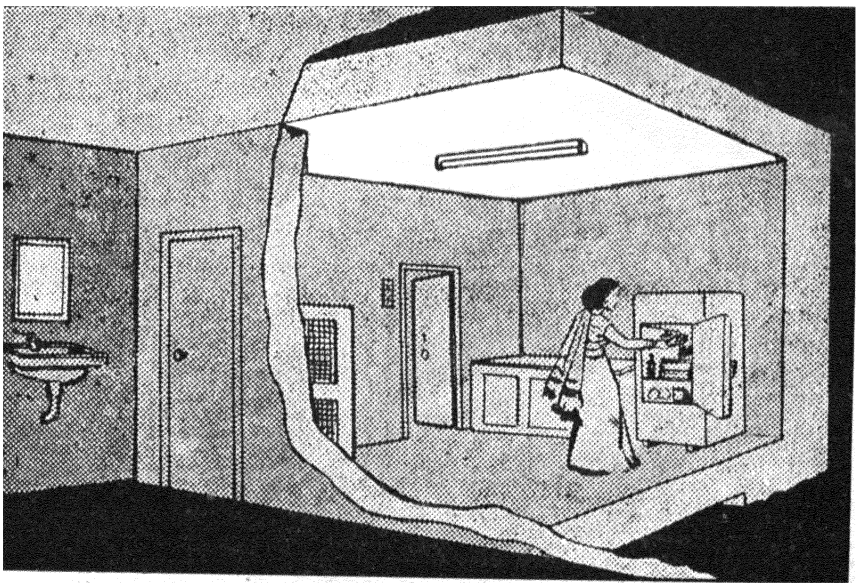
चित्र ३

एक भवनमें एक शरणगृहका निदर्श–चित्र (तलघरमे अथवा बाहरी भागमे)

उन स्थानोमें जहापर किसी भवनके तलघरमे अथवा उस भवनके बाहरी भागमे शरणगृह नहीं बनाया जा सकता, तो ऐसी स्थितिमे उस मंजिलपर प्राप्त सर्वोत्तम

कमरेको ही एक शरणगृहके रूपमें परिवर्तित किया जा सकता है। ऐसा करते समय तलघरीय शरणगृहोके विषयमें ऊपर वर्णित समस्त वस्तुओंका ध्यान रखना ही पडेगा। यदि दोवारे पर्याप्त रूपसे सुदृढ नही है, तो उन्हें कुछ और अधिक मोटा बनाकर पर्याप्त रूपसे सुदृढ बना लेना चाहिये, जिससे कि वे बमोके उडनेवाले टुकडोके विरोधमे निश्चित सुरक्षा प्रदान कर सके। द्वारों और खिड़कियोंको पूर्णत: बन्द कर देना चाहिये जिससे कि गैस या रेडियो धर्मी धूलिके प्रभावोंकी कोई सम्भावना न रहे। बालूके बोरोके प्रयोगके द्वारा ऐसे किसी भी कमरेको अपेक्षाकृत अधिक सुदृढ-तर बनाया जा सकता है।

नये भवनोंमें केवल अत्य–अतिरिक्त व्ययके द्वारा एक रसोईघर या भंडारगृहको एक शरणगृहके रूपमे परिवर्तित किया जा सकता है। उसकेनिर्माणमे, हमे यह देखना होगा कि यदि बाहरी भागकी दीवाले सीमेण्ट कंक्रीटकी है, तो उनकी मोटाई पन्द्रह इंच हो। इसके साथही चादर छतके शीर्षपर एक प्रबलित (Reinforced) कंक्रीटकी पट्टी (Concrete Slab) भी होनी चाहिये। वे दीवारेजो भवन के भीतरी भागमे है, उनके इतनी मोटी होनेकी आवश्यकता नही है, जितनी कि बाहरी भागकी पूर्वोक्त प्रकारकी दीवारे है। इसके लिए सरल कारण यह है कि



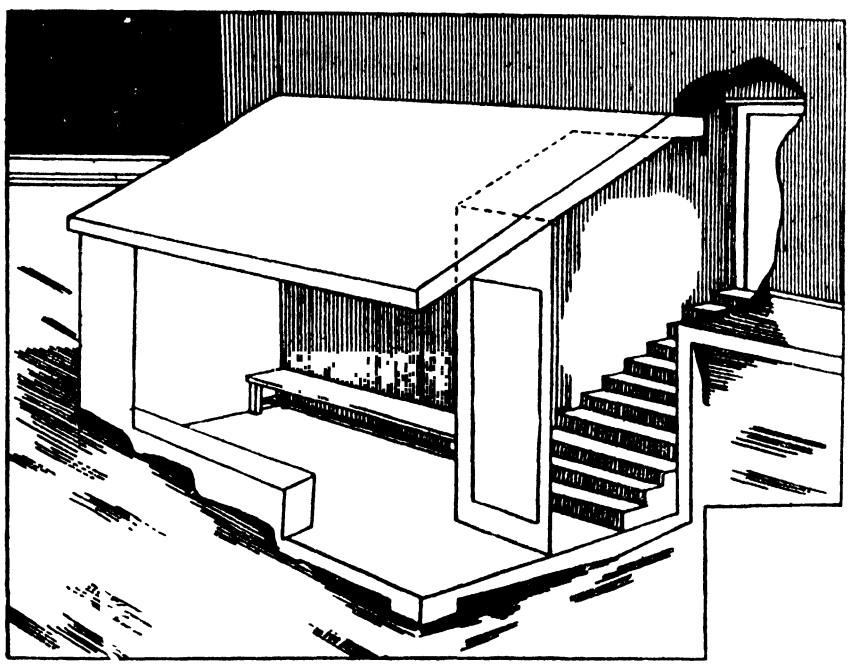
चित्र ४

निचली मजिलके एक शरणगृहका निदर्श–चित्र।

भवनके अन्य भागसे बमोंके उड़नेवाले टुकड़ोंके विरोधमे पर्याप्त सुरक्षा रहती है। बहरहाल, इस कक्षको सभी ओरसे भलीभांति बन्दकर देना चाहिए

जिससे कि भीतरके लोगोको गैस या रेडियो सक्रिय धूलि प्रभावित न कर सके। द्वारोको भी पर्याप्त रूपसे सुदृढ होना चाहिए और श्रेयस्कर रूपसे दो इच मोटी लकडीका बना हुआ होना चाहिए। ऐसे कक्षको बालूके बोरोके प्रयोगके द्वारा अपेक्षाकृत और अधिक सशक्त बनाया जा सकता है। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है तलघरीय शरणगृहके विषयमे अन्य समस्त व्यवस्थाओको इन निचली मजिलके शरणगृहोके सम्बन्ध मे भी प्रस्तुत किया जा सकता है। पिछले पृष्ठ पर एक ऐसे ही शरणगृहका निदर्श–चित्र दिया गया है।

जैसा कि नीचेके चित्रम प्रदर्शित है, ऐसा एक शरणगृह गत युद्धके दौरान इगलैण्डमे एक दीवालके सहारेसे बनाया गया था। ऐसे किसी शरणगृहकी दीवालो और चादरछतोको पर्याप्त रूपमे सुदृढ होना चाहिये और बमोके उडनेवाले टुकडो और मलबेके विरोधमे पूर्ण सुरक्षाके लिए उन्हे पर्याप्त अच्छा होना चाहिये। और ऐसा करनेमे उन्ही अनुदेशो (Instructions) का अनुवर्तन करना चाहिये जो निचली मजिलके शरणगृहोके प्रसग मे ऊपर वर्णित है।



चित्र ५
एक लीन–टू शरणगृहका चित्र।

किसी दीवालमे एसे एक शरणगृहकी चादर छतका निवेशन करनेके विचारसे उस दीवालको भीतरसे खोदना आवश्यक है। यदि प्रस्तुत दीवाल पर्याप्त रूपमे सुदृढ नही है तो यह भी आवश्यक हो सकता है कि दूसरी सहायक दीवाल भी बनायी जाय। ऐसे लोन–टू शरणगृह सामान्य रूपसे इग्लैण्डके नगरो और कस्बोमे आवासीय भवनोके बाहरी भागोमे बनाये गये थे और प्रत्येक देशमे ऐसा ही किया जा सकता है। शान्ति कालमे उनका अनेक प्रकारसे उपयोग किया जा सकता है। गैस या रेडियो–धर्मी धूलिके प्रभावको व्यर्थ बनानेके लिए ऐसे एक शरणगृहको भलीभाति सभी ओरसे बन्द कर देना चाहिये।

खाइयां

दिनाक २२ नवम्बर, १९६२ की नयी दिल्लीसे प्रकाशित एक प्रेस–विज्ञप्तिमे यह कहा गया था कि उन दिनो राजधानीके अनेक भागोमे अग्रेजीके अक्षर जेड (Z) के आकारकी खाइया खोदी गयी थी। जैसा कि इस प्रेस विज्ञप्तिमे कहा गया था वहाके नागरिकोको भी इस प्रकारकी और खाइया खोदनेके लिए कहा गया था, क्योकि राजधानीमे कमसे कम इस प्रकारकी एक लाख खाइयोकी आवश्यकता थी।

इस समस्याके समाधानके लिए यह एक व्यापक योजना थी और शायद दिल्लीमे ही ऐसी खाइयोको अविवेकतापूर्ण ढगसे भयातकके कारण खोदनेका श्रीगणेश किया गया था जिसकी नागरिक प्रतिक्षाकी किसी भी पद्धतिमे अवहेलना की जानी चाहिए। बहरहाल, इस भूलको अन्ततोगत्वा महसूस किया गया और सरकारने उस अविवेकता-पूर्ण ढगसे खाइयोको बिलकुल न खोदनेका निश्चय किया।

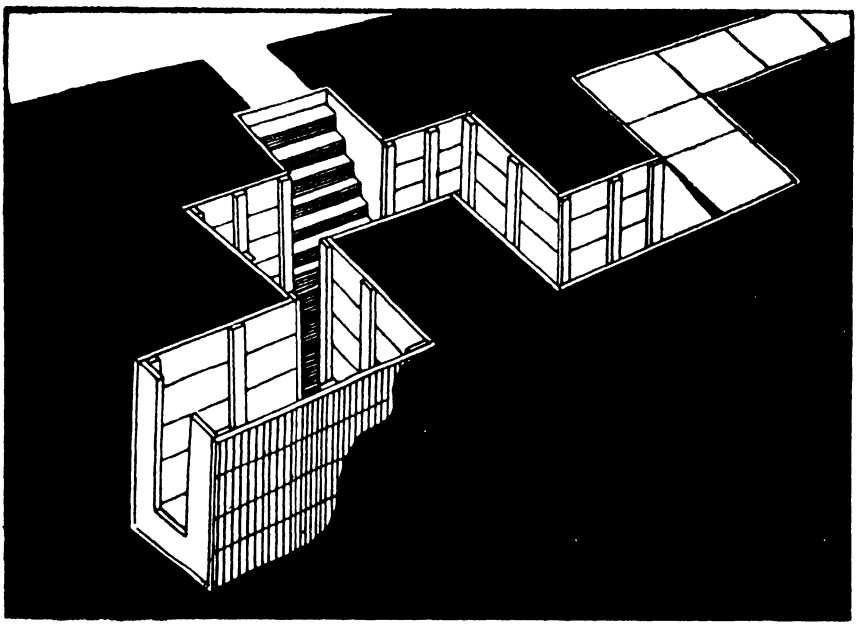
सभी सम्बन्धित लोगोको यह स्पष्ट हो जाना चाहिये कि तब तक शरणगृहो या खाइयोकी कोई पद्धति पूर्ण नही कही जा सकती, जब तक कि नाभिकीय आक्रमणके क्षणोमे रेडियो सक्रिय राखके प्रभावको दूर करनेके लिए उन्हे पूर्णतः ढक नही दिया जाता। यद्यपि सचमुच हमे एक ओर बमोके उडनेवाले टुकडो और मलवापातो और दूसरी ओर विस्फोट द्वारा निर्गत भभकन और समाघहन (Concussion) के विरोधमे सुरक्षाकी बाते सोचनी ही पडती है तथापि इस तथ्यको भी हमे सदैव अपने दृष्टिपथमे रखना चाहिये।

भवनोसे दूर, जहापर दूर–दूर तक खुली हुई जगह है लोग खाइयोको बनानेके द्वारा हवाई या नाभिकीय आक्रमणके विरोधमे स्वय की रक्षा कर सकते है। यह आव-श्यक है, पूर्ण सुरक्षा प्रदान करनेके लिए उनका रूपाकन भलीभाति होना चाहिये। जब उनके निर्माणको आवश्यक समझा जाय, तभी उन्हे स्थायी आधारपर बनाना चाहिये और ऐसा करते समय उनके शान्तिकालीन उपयोगोको भी ध्यानमे रखना चाहिये।

खाइयोको सदैव आच्छादित होना चाहिये, जिससे कि वे उच्च–विस्फोटक बमोंके उडनेवाले टुकडो, किसी उद्जन बमकी रेडियो सक्रिय राख, हवामार तोपोंके परिणामस्वरूप नीचे गिरनेवाले टुकडो और मलवापातोके विरोधमे सुरक्षा प्रदान कर सके ।

गत युद्धके दौरान ग्रेट ब्रिटेनमे उपयोगमे लायी गयी खाइयोके प्रकारोमे से एक प्रकारकी खाई दरारनुमा या सकरी (Slit) खाइयोके नामसे जानी जाती थी।

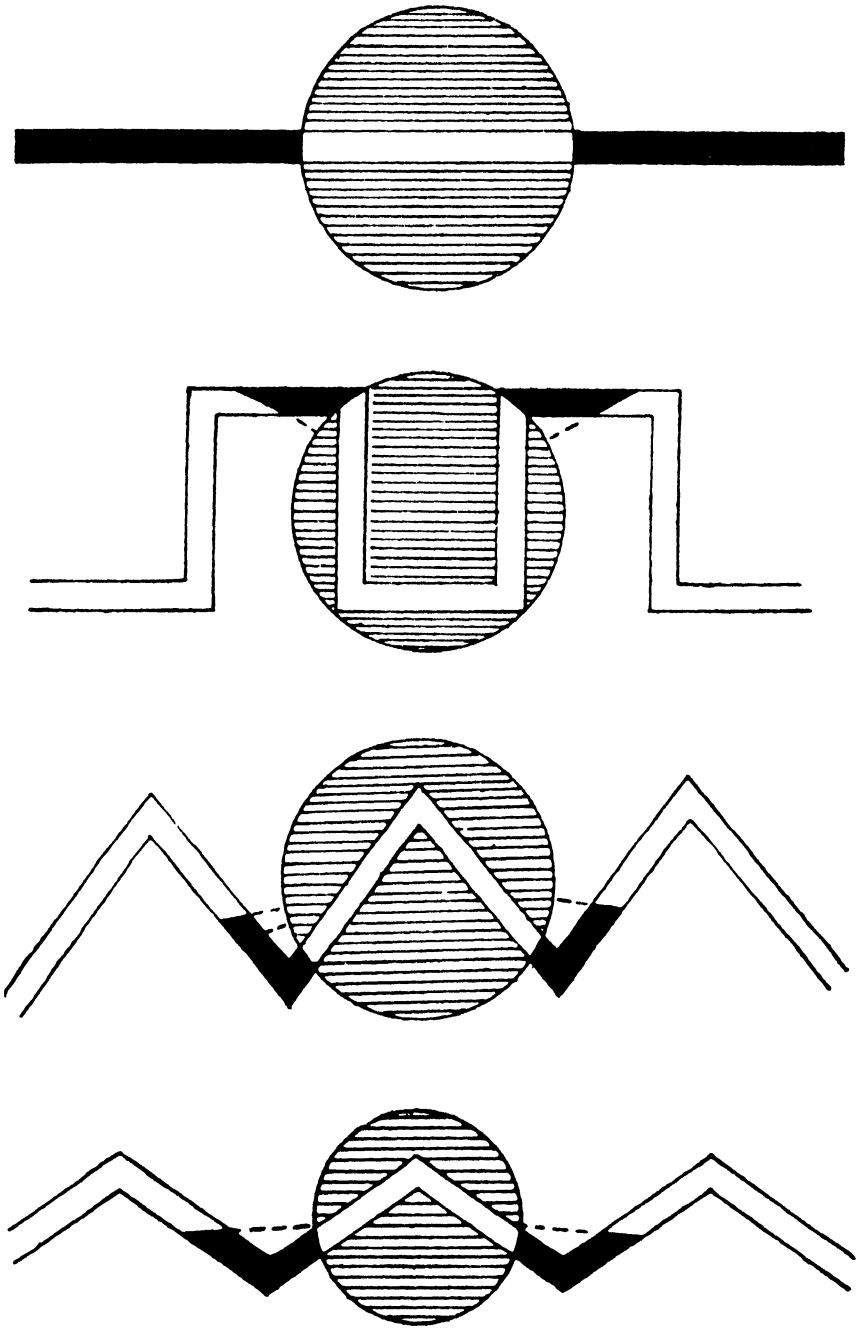
इसे नीचेके आरेखमे दिखाया गया है :–



चित्र ६

एक दरारनुमा या सकरी खाईका आरेख ।

ऐसी खाइयोको बनानेमे लकडोके फलको और सीमेन्ट पट्टियोका उपयोग करना चाहिये। ऐसी खाईको खोदते समय यदि आप जल–स्तर तक पहुच जाय तो आप आगे और खुदाईको बन्द कर दे। आवश्यकताके अनुसार गहराईको पूरा करनेके लिए खाईकी दीवालकी ऊचाईको उस खाई की खुदाईमे निकली हुई मिट्टीके द्वारा अथवा यदि श्रेयस्कर रूपमे प्रबन्ध हो जाय, तो बालूके बोरोके द्वारा अधिक ऊंचा उठाया जा सकता है। बालूके बोरोके उपयोगके सम्बन्धमे यह सदैव याद रखना



(चित्र ७)

उपर्युक्त आरेखमे चार प्रकारकी खाइया—ऋजु, वक्राकार, बन्द सर्पिल टढी-मेढी और मुक्तटेढी—मेढी (Straight, Crenellated, Close Zig Zag & open Zig Zag) दिखायी गयी है।

चाहिये कि वे पूर्णत: ठसे–भरे हुए न हों। बोरोंमें कुछ जगह अपरिहार्य रूपसे खाली रहनी चाहिये, जिससे कि बालूके उन बोरोंको भलीभांति एक दूसरेके ऊपर जमाया जा सके और उनके द्वारा एक अभेद्य दीवाल बनायी जा सके। यह याद रखने योग्य है कि प्रत्यक्ष प्रहारके अतिरिक्त ऐसी खाइयां सुरक्षाके लिए बहुत अच्छी हैं। उन्हें अवश्य ही गैसप्रूफ और रेडियोधर्मी धूलि–प्रूफ बनाना चाहिये। खाइयोंके पार्श्वों को भलीभांति सीमेण्टित या पलस्तेरित होना चाहिये और खाईके शीर्षपर स्थित पट्टी, जो ठोस सीमेण्ट कंक्रीट या लोहेकी चादरोंकी बनी हो सकती है, को भी पर्याप्त रूपसे सुदृढ होना चाहिये। उनमें प्रवेशद्वार और बहिर्गमन द्वारके लिए भी उचित व्यवस्था होनी चाहिये, लेकिन उन्हें भी गैसप्रूफ या रेडियो सक्रिय धूलिप्रूफ होना चाहिये। उसमें भोजनकी भी उपयुक्त व्यवस्था होनी चाहिये, जिससे कि आप उसके भीतर किसी नाभिकीय आक्रमणकी स्थितिमें आवश्यकतानुसार दो–तीन दिनों तक रह सकें।

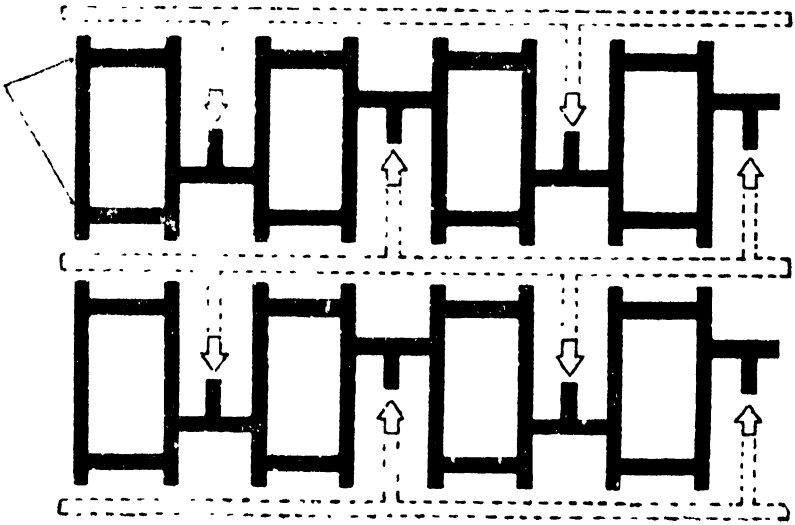
उनमें अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं भी–जैसे प्रसाधन अथवा मनोरंजन, की जानी चाहिये। बहरहाल लोगोंका यह याद रखनाही चाहिये कि उनका शोरगुल या उनके अन्य कोई कार्य शत्रुके ध्यानको किसी भी प्रकारसे आकर्षित न कर सके।

यह श्रेयस्कर है कि प्रत्येक व्यक्तिको अपने साथ अपना गैस–त्राण (Gas Mask) और शिरस्त्राण (Helmet) ले जाना चाहिये क्योंकि वहां भीतर किसी न किसी प्रकार हवामें सांस तो लेना पड़ेगा। आपका गैस–त्राण (Gas Mask) आपके लिए एक परिसम्पत्ति होगा। मलवापाताके विरोधमें आपका शिरस्त्राण बड़ा सहायक होगा। संवातनकी व्यवस्था इस प्रकारसे की जानी चाहिये कि सम्भावित दुर्घटनाओंकी स्थितिमें गैस या रेडियो सक्रिय धूलिका प्रभाव शून्यही हो जाय। खाईमें समुचित प्रकाश–व्यवस्था भी की जानी चाहिये।

जैसा कि चित्र सं. ७ के आरेखमें दिखाया गया है लंदनमें ऋजु, वक्राकार, बन्द सर्पिल (Close Zigzag) और मुक्त टेढी मेढी (Open Zigzag) प्रणालीकी खाइयां भी बनायी गयी थीं। इस आरेखमें यह दिखानेका भी एक प्रयास किया गया है कि प्रत्येक प्रकारकी खाईपर एक बमका प्रभाव क्या हो सकता है।

यह परामर्श्य है कि एक बमके विस्फोटके द्वारा व्युत्पन्न–प्रभावको स्थानीय बनानेके विचारसे खाइयों को सीधा नहीं बनाना चाहिय।

जैसा आगे के आरेख सं. ८ में दिखाया गया है, लंदनमें खाइयोंका एक प्रारूपिक अभिन्यास (Typical Lay Out.) भी था :–



चित्र ८

खाइयोके प्रारूपिक अभिन्यास (Typical Layout) का आरेख।

यह आरेख स्वय-व्याख्यात्मक है ।

किसी भी स्थितिमे, यह सदैव ध्यानमे रखनेकी बात है कि प्रत्येक खाईमे दो द्वारो का होना आवश्यक है–एक प्रवेश के लिए ओर दूसरा बहिर्गमन के लिए। इन दो द्वारोमेसे प्रत्येकमे एक गैस प्रतिकक्ष भी अवश्य होना चाहिये, जो कि एक गैस या रेडियो धर्मी आक्रमणके विरोधमे पूर्ण सुरक्षा प्रदान करेगा। यह देखनेके लिए उपयुक्त सावधानी ली जानी चाहिये कि खाई कभी जलसे प्लावित न हो जाय, यद्यपि पानीकी निकासीके उपयुक्त नाली या मार्गके लिए भी व्यवस्था करनेकी बात परामर्श्य है। खाइयोकी कोई भी पंक्ति किसी भवनसे कमसेकम २० फीटकी दूरीपर होनी श्रेयस्कर है ।

खाइया भवनोके भीतरी भागमे भी बनायी जा सकती है। ऐसा विशेष रूपसे औद्योगिक प्रतिष्ठानों, व्यवसायोके मामलेमे होता है। वहा विभिन्न मशीनोके मध्य की जगहोमे, जहा पर्याप्त जगह प्राप्त हो सके, खाइया बनायी जा सकती है। उस स्थितिमे वहा कारखानेमे केवल हवाई आक्रमणके समय ही काम बन्द होगा। बहरहाल ऐसी स्थितिमे यह याद रखना चाहिये कि उस भवनकी नीव या किसी मशीनकी नीव बिलकुल प्रभावित न होने पाये।

सतह पद्धति का शरणगृह (Surface Type of Shelter)

जैसा कि गत युद्धके दौरान इग्लैण्डमे किया गया था, ऐसे शरणगृहोंको पूर्व-विनिर्मित सीमेण्ट कक्रीटके पदार्थसे बनाया जा सकता है। उस प्रयोजनके लिए वहा निम्नलिखित पदार्थोंकी सामान्य रूपसे आवश्यकता पड़ी थी :–

१४० टुकडे ९" - ९" - १८" आकारके
१० टुकडे ६" - ६" - ७" आकारके

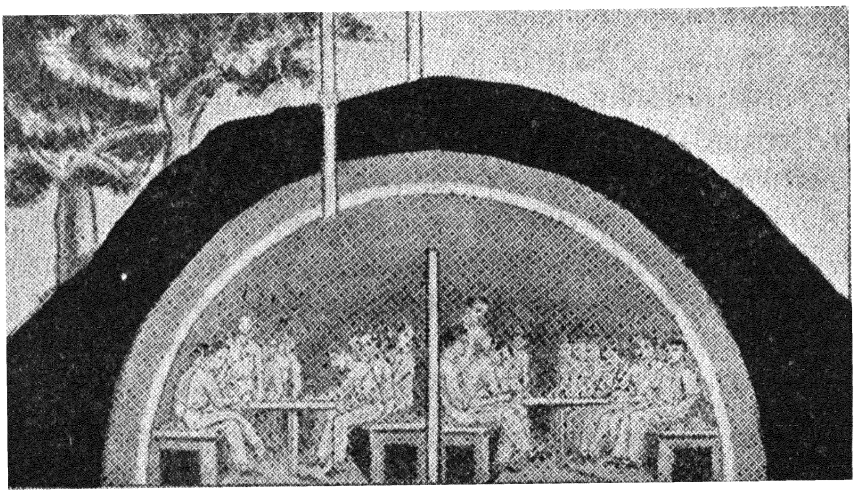
एक वर्ग गज आकारकी बाड़-चौकी या चहारदीवारी (Fence Posts) और ८ पट्टियां।

इंग्लैण्डमे उपर्युक्त सभी पदार्थ सीमेण्ट कंक्रीट पदार्थ तैयार करनेवाले लोगोके पास उपलब्ध थे।

ऐसे एक शरणगृहको पूर्ण करनेके लिए प्रवेश-द्वारको बालूके बारोंसे और शरणगृहके शेष भागको १९" गहरी मिट्टीसे ढंक दिया गया था।

चित्र सख्या ९ मे एक निदर्श-चित्र यह दिखानेके लिए दिया गया है कि एक सतह पद्धति का (गोल-झोपडीके ढंगका) शरणगृह किस प्रकारका होता था।

जैसा कि इस निदर्श-चित्रमे प्रदर्शित है, शरणगृहको सभी ओरसे मिट्टीसे ढक दिया गया था। प्रवेश द्वारपर वहा एक लकड़ीका ढाचा था, जिसपर गैसके परदेके प्रयोजनकी पूर्तिके लिए एक कबल लटकता था। यह सिफारिश की गयी थी कि इस कंबलका कमसे कम १२ इंच भाग सदैव भूमिपर घिसटता रहे।



चित्र ९
सतह पद्धत्तिका शरणगृह (गोल झोपडीके प्रकारका)

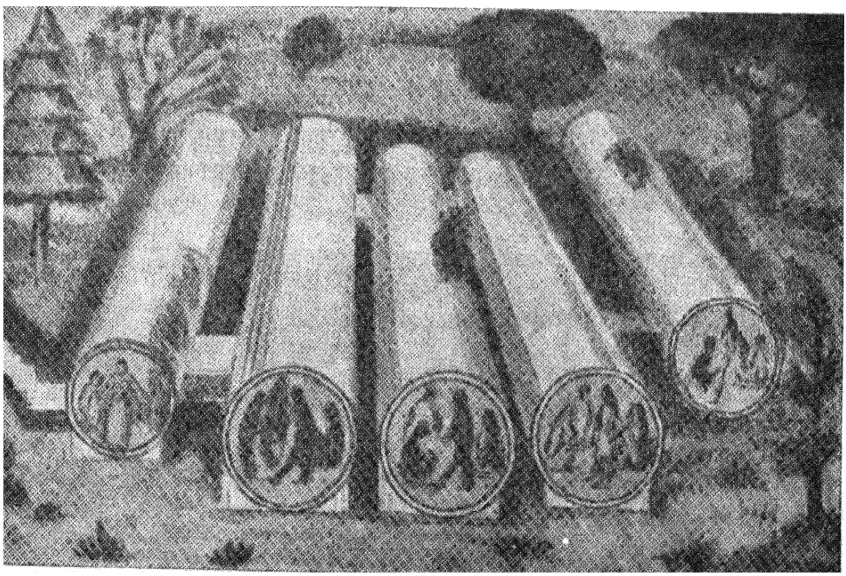
ऐसे शरणगृहोंमे मुडी हुई इस्पाती चद्दरोका या कक्रीटका प्रयोग किया गया था। भारतवर्षमें कही भी इस प्रकारके शरणगृहकी कोई उपयोगिता नही है और लेखककी सर्वोत्तम जानकारीके अनुसार एशिया के किसी भी देशने कभी भी इस प्रकारके शरणगृहका निर्माण नही किया। बहरहाल, यह ध्यान देनेकी बात है कि ऐसे शरणगृह

अत्यन्त उपयोगी हो सकते हैं, क्योंकि वे पूर्व–विनिर्मित–सीमेण्ट–कंक्रीटके पदार्थोंसे बनाये जा सकते है। संकटकालमें गतिका अधिक महत्व है, क्योंकि ऐसी अवधिमें ऐसे शरणगृह, जो बमोके उडनेवाले टुकड़ो, मलवापातो, गैस और नाभिकीय आक्रमणके विरोधमें सुरक्षा प्रदान कर सकते है, बहुत उपयोगी हो सकते है।

सुरंग शरणगृह (Tunnel Shelters)

ग्रेट ब्रिटैनमे ऐसे शरणगृह युद्धके दौरान उद्यान जैसे स्थानोमे बनाये गये थे। चित्र संख्या १० मे प्रथम सीमेण्ट कंक्रीटका बना हुआ सुरग शरणगृह दृष्टव्य है।

इस चित्रके द्वितीय चित्र न. ११ मे पाठकोको इस्पाती चद्दरोके टुकड़ोको जोडकरके बनाया गया 'लाकशीट' (Lock Sheet) पद्धतिका एक सुरंग–शरणगृह मिलेगा। यदि ऐसे शरणगृह बनाये जाते है, तो उनका शान्तिकालमे उद्यानादिमें काम करनेवाले लोगोके आवास–स्थानके रूपमें उपयोग किया जा सकता है। प्रतिदिनके जीवनमें अनवाछित पदार्थोको स्थायी रूपमे सचित करनेके लिए भी ऐसा शररगृह उपयोगमे लाया जा सकता है। शान्तिकालमे ऐसे शरणगृहमे अनावरणके लिए व्यवस्था की जा सकती है, जिसे कि संकटके क्षणोमे एक संक्षिप्त सूचना पर ही पूर्णतः सटा दिया जा सकता है।



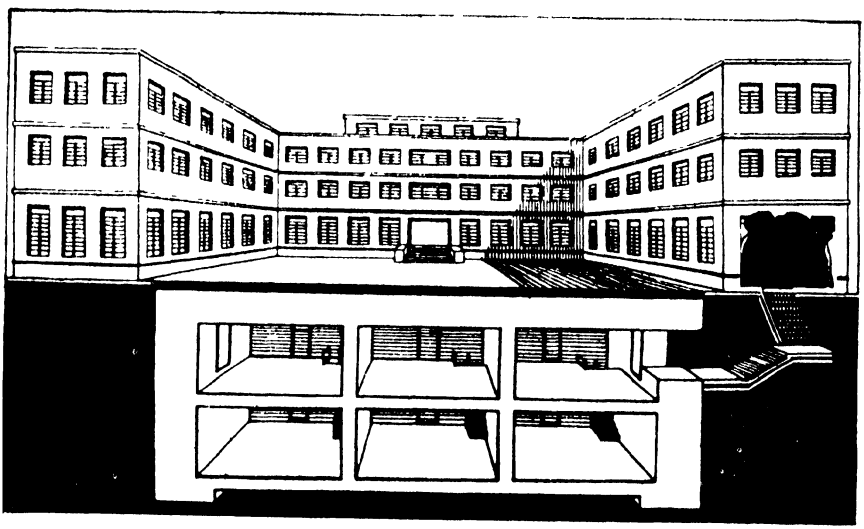
चित्र १०

सीमेण्ट कंक्रीटसे बने हुए एक सुरंग शरणगृहका चित्र।

आनेवाले चित्र स. ११ मे एक सुरंग-शरणगृह (इस्पाती लाकशीटपद्धतिका)

हो, तो इस प्रयोजनके लिए उसका उपयोग किया जा सकता है, क्योंकि सर्वोत्तम प्रकारका शरणगृह किसी पहाडीको तोडकर उसके खुले भागको सीमेण्ट कंक्रीटके द्वारा नवीभूत करके और जहां कहीं भी संभव हो सीमेन्ट कक्रीट के ढाचे अतिरिक्त शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए इस्पाती ढाचेका उपयोग करके बनाया जा सकता है।

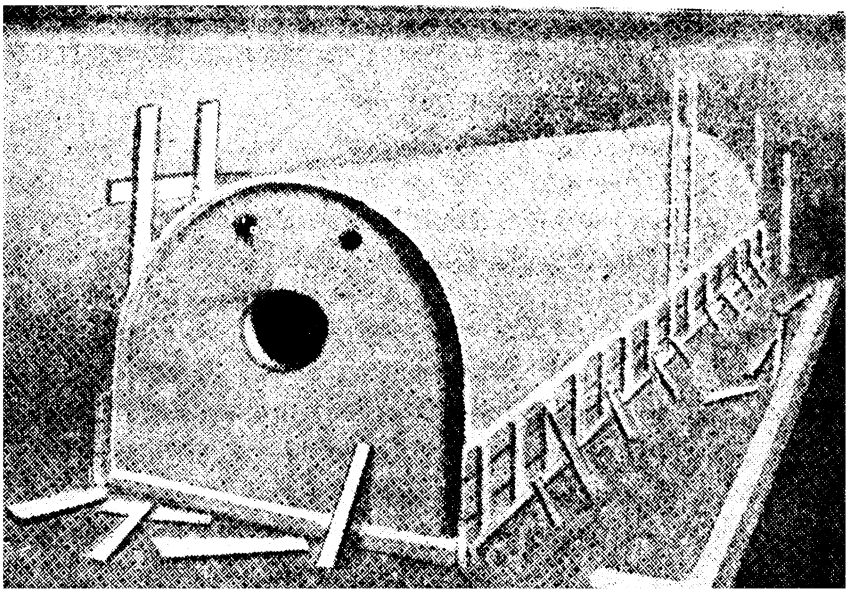
गत महायुद्धमें यूरोपमें बडे आकारके जनता–शरणगृह सिनेमा, थिएटर गृह और खुले हुए स्थानोंमें, जहा बडी सख्यामें जनता सामान्य रूपसे एकत्र हो जाया करती थी, बनाये गये थे। ऐसे शरणगृह सामान्यत. अत्यन्त साधारण प्रकारके थे। इनका निर्माण इस प्रकारसे किया गया था कि सकटके क्षणोंमें जनता की क्षतिको कम किया जा सके। यहा नीचे लोक–शरणगृहके अभिरूपको दिखानेके लिए एक रेखाचित्र दिया गया है, जिसमें कि बडी सख्यामें लोगोंको शरण दी जा सकती है।



(चित्र सख्या––१८)

एक व्यापारिक केन्द्रमें बने हुए भूमिगत लोक–शरणगृहका चित्र जो एक गोदामके कामके लिए भी उपयोगी है।

गत महायुद्धमें ग्रेट ब्रिटैनमें ऐसे शरण–गृह भी थे, जिन्हे 'पिल बाक्स'–द्वि–प्रयोजन इकाई शरणगृह कहा जाता था। युद्धके दौरान हवाई हमलेके विरोधमें और शान्तिकालमें गोडाऊन आदिके रूपमें उनका उपयोग करनेका निश्चय किया गया था। इसके अतिरिक्त गत महायुद्धमें ग्रेट–ब्रिटैनमें और यूरोपके



चित्र १५

एक शरणगृहका चित्र जिसमे उसके मिट्टीमे ढके जानेके पहले का सीमेण्ट कंक्रीटका ढाचा दिखाया गया है।

अन्य देशोमे भी और भी अनेक प्रकारके शरण–गृह बनाय गये थ। उपर का चित्र न. १५ ग्रेट ब्रिटैनमे बनाये गये एक शरणगृहका चित्र है और उसमे जिस रूपमे वह दिखाया गया है, वह सीमेण्ट कक्रीटके ढाचेका है. उसके पहले वह जब की मिट्टीमे ढका गया था।

सयोगवश, यहा यह उल्लेख करना सगत होगा कि इस ग्रन्थका लेखक गत महायुद्धमे लदनमे जहा ठहरा था, वहा एक भवनमे ठीक इसी प्रकारका एक शरणगृह था।

इस अध्यायमे दी गयी समस्त सूचनाओंके साथ यह सदैव ध्यानमे रखनेकी बात है कि द्वितीय महायुद्धकी अपेक्षा अब भूमडलीय युद्धके तरीके नितान्त भिन्न होगे। विध्वंसके लिए नाभिकीय शक्तिका विकास, परमाणु उदजन बम, प्रक्षेपास्त्र (मिसाइल्स) और राकेट आदि अस्त्रोके भी प्रयोगकी सम्भावना है और ये अस्त्र गत महायुद्धकी दुनियाको अज्ञात थे। इसलिये हमे रेडियोधर्मी आक्रमणके विरोधमे सुरक्षाके

लिए प्रत्येक प्रकारके शरणगृहमे यथासम्भव प्रत्येक प्रकारकी सावधानी लेनी पड़ेगी। सचमुच जैसा कि पहले कहा जा चुका है, किसी भयकर सहारक न्यूक्लीयर अस्त्रो और हमारे समयमे विकास प्राप्त अन्य अनेक अस्त्रोकी सीधी मारके विरोधमे किसी प्रकार की सुरक्षाकी बात सोचना भयकर भूल होगी। इसीके साथ हमे यह भी ध्यान रखना चाहिये कि सीधी मारकी अपेक्षा न्यूक्लीअर आक्रमण और रेडियोधर्मी आक्रमणके द्वारा और बहुत अधिक लोग मरेगे और ऐसी स्थितिमे उनके विरोधमे आवश्यक पूर्वोपायोके महत्वको मुश्किलमे ही अधिक बलपूर्वक कहा जा सकता है।

अमरीकामे रेडियोधर्मी आक्रमणसे बचाव करनेके लिए अनेक प्रयोग और शोधकार्य किये गये है। किसी न्यू–क्लीयर आक्रमणके पश्चात् रेडियो–धर्मी धूलिकणोके बिखरनेपर पाच आदमियोके एक परिवारके बचाव के लिए उनके द्वारा केवल १००० डालरसे निर्मित होनेवाले एक नये प्रकारके कम–खर्च–परिवार–शरणगृहकी सलाह दी गयी है। ऐसे शरणगृहोके मूलमे मुख्य विचार यह है कि ये जमीनके तीन फुट नीचे परिगोपित होगा। इस शरणगृहका भीतरी आयात लम्बाईमे १० फीट, ऊचाईमे ८ फीट और चौडाईमे ५ फीट होगा। इसमे प्रवेश एक सिटकिनी और सीढीके द्वारा है। इसमे दो सप्ताहकी खाद्य–सामग्रीके सचय, एक जेनरेटर, एयर ब्लोवर, हवा–शुद्ध करनेका यन्त्र, एक रेडियो, ८० गैलन पानी, टेबुल और बेच, जो दीवालसे मुड जाने योग्य हो और स्वच्छता आदिके लिए व्यवस्था की गयी है।

इस प्रसगमे यह ध्यान देन योग्य है कि यह व्यवस्था दो सप्ताहके भोजनकी पूर्तिके लिए है। मै इस समस्या–बिन्दुपर फिलिप मिल्टन कम्पनी और वायु–सेनाके अधिकारियो जिन्होनेइस प्रकारके शरणगृहका खाका तैयार किया, के मनके यथार्थ विचारको नही जानता लेकिन, उनका यह विचार नही रहा होगा कि एक एटम या हाइड्रोजन बम के विस्फोटका रेडियोधर्मी आक्रमण दो सप्ताहोमे समाप्त होगा पर निश्चय ही उनका यह विचार होगा कि यदि परमाणु या उदजन बमोके उध्वससे लगातार आक्रमण हो तो शरणगृहमे सुरक्षाके लिये एक स्थायी और ठोस व्यवस्था अवश्य हो सके।

ब्रिटिश परमाणविक शक्तिके पोलैण्ड निवासी सदस्य प्रो राटब्लाटने अपने शोधो के पश्चात स्पष्ट रूप से यह निर्धारणा की है कि रेडिओधर्मी धुलिणो के बिरोध मे सुरक्षा हो सकती है बशर्ते कि कोई व्यक्ति दो या तीन दिनो तक शाणगृह मे रहे। इस प्रसगमे यह द्रष्टव्य है कि ऊपर जो कुछ भी कहा गया है, वह अनुमानोपर आधारित है। इस दुनियाने अभी तक विश्व-व्यापी स्तर पर नाभिकीय युद्ध नही देखा है। जापानके नागासाकी और हिरोशिमाके ही अनुभव हमारे सामने है, जहापर अमरीकी लोगोने उन स्थानो को ध्वस्त करने और खडहर बनानेके लिए परमाणु बम गिराये थे और चूकि जापानमे रेडियोधर्मी आक्रमणके विरोधमे सुरक्षाके

लिये कोई व्यवस्था नही की गयी थी और इससे भी आगे यह कि इस बमवर्षाके पश्चात जापानने आत्मसमर्पण कर दिया, अत रेडियो धर्मी आक्रमणके विरोधमे यदि सुरक्षाके किसी उपायका कोई अनुभव है, तो उसे नगण्यही समझना चाहिये।

सयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपमे की गयी शोधोके आधारपर हमे किसी भी हालतमे नाभिकीय आक्रमणके विरोधमे सुरक्षाकी आवश्यक व्यवस्था अवश्य करनी चाहिये। हमे आशा करनी चाहिये कि न्यूक्लीयर युद्धका कोई अनुभव नही होगा पर यदि ऐसा युद्ध होता है तो ऐसा नही होना चाहिये कि हम सोते मिले और तथ्यसे अनभिज्ञ ही रहे।

खाइयो और शरणगृहोका विषय इतना विस्तृत है कि और भी अनेक चीजे लिखी जा सकती है। पर मुख्य-मुख्य बाते पाठकोके मस्तिष्कमे विस्मृत न हो जाये इसलिए मै अत्यन्त सक्षेपमे लिख रहा हूँ कि कुछ व्यक्तियोके एक परिवारको लक्ष्यमे रखकर बनाये गये एक तलघरके विषयमे क्या आवश्यक है। सामान्य रूपसे जनताको क्या करना चाहिये और क्या नही करना चाहिये।

तलघर या पातालगृह

(छ व्यक्तियोकी एक छोटी रुकाईके लिए)

(१) इसे भवनसे कमसे कम २० फीटपर होना चाहिये।

(२) शरणगृहकी पेंदी भूमी-स्तरसे ६ फुट नीचे।

(३) पैंदीपर चादाई ३ फीट ६ इच और शीर्षपर ८ फुट ६ इच।

(४) यह तीन वर्गोमे विभाजित है —

(अ) एक शरणगृह - कक्ष १० फीट लम्बा, जिसमे भीतरी लोग एक ओर एक सीटपर बैठ सके।

(ब) यदि यह अतिरिक्त सावधानी आवश्यक हो, तो एक ढके हुये, प्रवेश-द्वार, जो एक लकडीके पटलके विरोधमे एक तिर्यक गैस पटल आधृत हो।

(स) एक प्रवेश-द्वार, जो [illegible] एक सीढीके द्वारा बाहरी भागसे मार्ग प्रदान करनेवाला हो। प्रवेशद्वारके ऊपर वर्षासे बचावके लिये एक लकडीका ढक्कन या जालीदार द्वार होना चाहिये। प्रवेशद्वारका फर्श शरणगृहके फर्शकी अपेक्षा कूदने के कार्यके लिए नीचे झुका होना चाहिये।

(५) शरणगृहको जस्तेकी कलई किए हुए इस्पाती चद्दर या टुकडोसे उत्तम रूपसे पक्तिबद्ध कर देना चाहिये। यदि ऐसा करना सभव न हो, तो उसपर भलीभांति सीमेण्टका पलस्तर कर देना चाहिये। फर्शकी सतह पर पलस्तर के लिए पर्याप्त कक्रीटका उपयोग करना चाहिय। और शरणगृहमे मिटटीके नीचेसे भीतर आनेवाले पानी अथवा पानीके स्तरसे बचावके लिए आवश्यक सावधानी बरतनी चाहिये।

(६) छतको जस्तेकी कलई किए हुए इस्पातकी चद्दर या पटरेसे बनाना चाहिये। आधुनिक प्रकारका पुनर्दृढीकृत सीमेण्ट कक्रीट स्तम्भ पीठ जिसमे लोहेकी छडोका उपयोग किया गया हो, बहुत ही सुन्दर है। शरणगृह और ढके हुए प्रवेश द्वारको ढकना चाहिये। ढके हुए प्रवेश द्वारका शीर्ष मिट्टी गिरने के बचाव के लिए बालू के बोरेसे ढका हुआ होना चाहिये।

(७) छतके ऊपर तथा आसपास मिट्टी फैली हुई होनी चाहिये। ढके हुए प्रवेश द्वार का शीर्ष मिट्टी गिरने के बचाव के लिए बालू के बोरो मे ढका हुआ होना चाहिये।

(८) यदि छ फीट गहराई तक पहूचनेके पहले पानी मिल जाय तो भूमिकी सतहके ऊपर मिटटीको ऊचा उठाकर अतिरिक्त आवश्यक ऊचाई प्राप्त की जा सकती है।

(९) जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि छः आदमियोके लिये १० फीट लम्बा शरण–गृह–कक्ष पर्याप्त है। प्रत्येक अतिरिक्त व्यक्तिके लिए शरणगृहकी भूमिकी लम्बाई एक फीट आठ इचके द्वारा बढा देनी चाहिये।

कर्त्तव्य

(१) शरणगृहोके निर्माणके समय जल–निर्गमके लिए नलिका–प्रणाली और जमीनसे स्रवित होनेवाले जलको दूर करनेके लिए उचित व्यवस्था कीजिये।

(२) अभग या दूर तक लगातार चले गये शरणगृहको किसी अच्छादनके द्वारा या उसकी दिशामे परिवर्तनके द्वारा ५० व्यक्तियोके दलके आश्रय हेतु विभाजित कर दीजिये।

(३) किसी ठोस और बडे आच्छादनके द्वारा अथवा किसी ठोस दीवाल या इमारतके द्वारा अपने शरणगृहके द्वारको बम–विस्फोटसे उडनेवाले टुकडोसे सरक्षित कीजिये।

(४) जहा कही भी सम्भव हो, दो प्रवेश–द्वार बनाइये अथवा एक प्रवेश–द्वार और एक सकटकालीन बहिर्गमन–द्वार, जैसे कि एक खिडकी, वे इतने अलगअलग हो, जितना कि सम्भवहो, जिससे दोनो एक ही समय अवरुद्ध न हो जाय।

(५) किसी अन्य प्रकारके प्रकाशकी व्यवस्था भी कीजिये, क्योकि बिजलीका सामान्य स्रोत क्षतिग्रस्त भी हो सकता है। छोटे शरणगृहमे टार्च, मोमबत्ती और रात्रिकालीन प्रकाशको भी स्थानापन्न प्रकाशके लिए प्रयोगमे लाया जा सकता है।

(६) यदि पानीके पदार्थ प्राप्त न हो सके, तो रासायनिक पदार्थोका उपयोग किया जा सकता है। बहरहाल आरोग्य और सफाईसे सम्बद्ध कुछ व्यवस्था भी आवश्यक है।

(७) शरणगृहमे रहनेके समय लोगोको व्यस्त रखिये। इससे हवाई आक्रमणसे होनेवाली आवाजकी ओरसे लोगोका ध्यान दूसरी ओर मोडनेमे सहायता मिलेगी और बाहर क्या हो रहा है, इस विषयमे सुस्त बैठे रहकर व्यर्थकी परिकल्पना करनेसे आप लोगोको बचा सकते है।

(८) यदि आप शरणगृहमे कोई कुत्ता ले जाय तो उसके मुँहमे मुँहबद लगा दीजिये।

(९) अपनी खाई को इस रूपमे खोदिये कि यह उन लोगोके लिए तुरन्त गम्य हो सके, जिनके लिए यह बनायी गयी है।

(१०) अपने शरणगृहको यदि सम्भव हो, तो ५० फीट की दूरी पर बनाइये। एक साथ बने बडे शरणगृहोकी अपेक्षा छोटे दूर-दूर बिखरे हुए शरणगृह अधिक अच्छे है।

(११) भयकर विध्वसक बमोके विस्फोटकी आवाजसे बचावके लिए कानमे 'प्लग' का उपयोग कीजिये।

(१२) वास्तुशिल्पी (Architects) के कार्यपर पूरी निगरानी और सावधानी रखनी चाहिये। जहा भी सम्भव हो शरणगृहके लिए सुरक्षित स्थिति के स्थानका ही चयन करना चाहिये। नये भवनोकी रूपरेखाका निर्धारण करते समय वास्तुशिल्पीको अपने मस्तिष्कमे प्रत्येक मामलेको ध्यानपूर्वक रखना चाहिये कि क्या वह स्थान किसी हवाई हमलेमे सुरक्षा हेतु मान्यता योग्य है या नही, और यदि वह स्थान सुरक्षा-प्रदान करने योग्य है, तो उस शरणगृहके भविष्यके भोक्ताकी सुरक्षाके लिए समस्याओको ध्यानमे रखते हुए उसे किस प्रकार सर्वोत्तम रूपमे प्रस्तुत किया जा सकता है।

यदि मूल नक्शेमे सम्मिलित किया जाय, तो किसी भवनके नीचेके तहखाने या शरणगृहकी सस्थापना तुलनात्मक रूपमे सरल और सस्ता उपाय है।

(१३) याद रखिये कि संकल्पित शरणगृहके वर्गका बिना ध्यान दिये कंक्रीट के द्वारा पुनर्दृढीकृत निर्माणकी अपेक्षा और कोई अधिक उपयुक्त निर्माणका माध्यम नही हो सकता।

(१४) शीघ्र निर्मित हो जानेवाले और सर्वोत्तम प्रकारके शरणगृहके निर्माणके विषयमें सोचते समय यह ध्यानमें रखना चाहिये कि ऐसे शरणगृह विस्तृत व्यासके पूर्व निक्षिप्त कंक्रीट ट्यूब डालकर बनाये जा सकते है और उसे ऊपरसे पर्याप्त मात्रामें मिट्टीकी मोटी तहसे ढक दिया जाता है। स्थानापन्न रूपमें पूर्वानिक्षिप्त पुनर्दृढीकृत कंक्रीट–भाग भी उसी प्रकारसे उपयोगमें लाये जा सकते है। दूसरी व्यवस्था धातुफलकको एकत्रित करके दो कतारोंमें रखनेकी है, उसकी अन्तवर्ती जगह कंक्रीटसे भर दी जायगी।

(१५) अपने शरणगृहकी रूपरेखा इस प्रकार कीजिये कि इसके पहले कि बम आपके शरणगृहको विदीर्ण करे बम स्वय अधिस्फोटित हो जाय अथवा आपके शरणगृहके ऊपर आरोपित तारकी जाली या झझरी अथवा तिर्यक छतसे टकराकर बम मार्ग–च्युत हो जाय। इस दूसरे उद्देशकी पूर्ति शरणगृहके ऊपर एक पुनर्दृढीकृत कंक्रीटकी अधिस्फोटक शिलापट्टक रखकर की जा सकती है और शरणगृहसे यह अधिस्फोटक शिलापट्टी बालू या मिट्टीकी उचित मोटी तहके द्वारा अलग कर दी जायगी।

सीधे बमवर्षाके मुकाबलेमें युद्धक्षेत्रोंमें गतयुद्धके दौरान हवाई हमलेसे सुरक्षाके लिए बनाये गये शरणगृह पुनर्दृढीकृत कंक्रीटकी पर्याप्त मोटी तह के उपयोगके द्वारा प्रत्यक्ष रूपमें बमवर्षाके मुकाबलेमें बचावके लिए भारतकी राजधानी में, अन्य बड़े शहरोंमें और अन्य देशोंमें भी बनाये जा सकते है।

(१६) अपना ध्यान तलघरीय ग्राउण्ड फ्लोर या उद्यान–स्थित शरणगृह (यदि कोई हो) की ओर ले जाइये यह सोचते हुए कि बम–विस्फोटसे उड़नेवाले टुकड़ोंसे सरक्षित शरणगृहका निवास प्रदान करना कितना सुन्दर है।

(१७) यदि आप एक शरणगृहके निर्माणमें अत्यन्त कम खर्च करनेके लिए बाध्य है, तो सचमुच आप ऐसा कर सकते है, पर ऐसी स्थितिमें आवश्यकता पड़नेपर आपको गैसमें सुरक्षा हेतु अपने गेस मास्कपर आश्रित रहना पड़ेगा, इस स्थितिमें आपका शरणगृह खुला हुआ और प्राकृतिक साधनोंसे सवातित हो सकता है।

(१८) हवाई हमलेसे बचाव के लिए नये निर्माणके सम्बन्धमें खिड़किया कठिनाईकी वस्तु है, जहापर कार्य सचालनकी सुनिश्चितता अथवा मूल्यवान यन्त्रोंकी सुरक्षाके लिए यह आवश्यक हो, वहापर इस्पातके बन्द होनेवाले दरवाजे (स्टील शटर्स) लगवाने चाहिये।

(१९) किसी तलघरीय शरणगृहके ऊपर तुरन्त एक महला बनवा दीजिये, हा, यह अवश्य ध्यानमें रखिये कि वह तलघरीय शरणगृह नवनिर्मित महलेके बोझको अपने ऊपर आसानीसे सहन करनेमें समर्थ है।

(२०) शरणगृहोंकी व्यवस्था इस प्रकारकी होनी चाहिये कि उनमें पाठशालाएं भलीभांति अपना काम कर सकें, और उनमें स्त्रियां अपनी गृहस्थीका काम भी करती रहें।

(२१) जब आप अपने शरणगृहमें जायं, तो अपने साथ अपना गैस-मास्क अवश्य ले जायं, यह केवल केमिकल धूम्र या वाष्पसे ही रक्षा नहीं करता, बल्कि रेडियोधर्मी धूलि या बैक्टिरिया (कीटाणु) से सांस लेनेके विरोधमें भी रक्षा करता है।

(२२) 'फैमिलीटाइप बम शरणगृह' – विशेष रूपसे बमोंके लक्ष्यवाले नगरोंमें 'डिफ्यूजन बोर्ड' को लगा देना चाहिए। यह एक गैस एरोसल-फिल्टर पदार्थ सामान्य 'वालबोर्ड' के समान दिखायी देनेवाले, पर वे ऐसे बनाए गये हों कि उनमें हवा स्वतन्त्रतापूर्वक आ-जा सके, इस 'फायरबोर्ड' में गैसको बन्द करनेकी अद्भुत क्षमता होती है। छोटे शरणगृहोंमें यह वैसे ही प्रभावपूर्वक और क्षमताके साथ कार्य करता है, जैसे कि एक कृत्रिम बताव वाला फिल्टर। यह जैविकिय तत्वोंको और परमाणविक या रेडिओधर्मी धूलिको भी परिशुद्ध करता है।

निषेध

(१) अपने शरणगृहके लिए स्थानका चुनाव करते समय यह ध्यानमें रखें कि वह किसी भवनके अधिक निकट न हो और उसे कमसे कम भवनकी आधी ऊंचाईकी दूरीपर होना चाहिए।

जहां ऐसा न पाया जा सके, वहांपर शरणगृहकी छतको भलबापातका मुकाबला करनेमें समर्थ होनेके लिए पर्याप्त मजबूत होना चाहिए।

(२) अपने शरणगृहोंमें कुछ औजारोंको रखना न भूलें जैसे कि कुदाली, खनित्र या फावड़े और कोबार्स-यदि शरणगृहमें आश्रय प्राप्त व्यक्ति उसमें फंस गये हैं, तो इनसे बाहर निकालनेके लिए रास्ता बनानेमें सहायता मिलेगी।

(३) कृपया इन्हें भी रखना न भूलें-रेडियो या ग्रामोफोन, कुछ पुस्तकें, टेबिल गेम्स और खिलौने, जहां पर बच्चे हों, शरणगृहके उपकरणोंमें ये वस्तुएं सहायक और उपयोगी सिद्ध होंगी।

(४) शरणगृहमें जानेके समय कुछ खाने और पीनेकी चीजोंको ले जाना न भूलें।

(५) शरणगृहके भीतर कोई ओजस्वी अथवा प्रबल कार्य न करें क्योंकि इससे आक्सिजन का उपयोग अधिक बढ़ जाता है और निरर्थक आर्द्रता बढ़ती है।

(६) एक शरणगृहमें ५० से अधिक व्यक्तियोंको न रखें।

(७) अपने शरणगृहमें पर्याप्त पेयजलकी पूर्तिकी बातको न भूलें। अविरत बम वर्षामें अत्यधिक प्यास बढ़ जाती है।

(८) इसे न भूलें कि भयंकर विस्फोटक बमोकी प्रत्यक्ष मारके अलावा प्रत्येक वस्तुसे व्यापक स्तरपर और अपेक्षाकृत कम खर्चपर प्रभावकारी संरक्षण प्राप्त किया जा सकता है।

(९) पानी भर जानेके प्रति अपने उत्तरदायित्वकी जरा भी उपेक्षा न करे।

(१०) जब आप गृहस्वामीके रूपमे स्वयंके लिए घरमे शरणगृह की आयोजना करे, तो अपने शरणगृहकी रूपरेखा बनाते समय युद्धकालीन बचावकार्यकी ही भाति शरणगृहके शान्तिकालीन उपयोगके विषयमे भी अधिक से अधिक ध्यान देना न भूले।

(११) इसे न भूले कि जितना ही अधिक ऊचा तापमान होगा, उतना ही अधिक आर्द्रत्व हवामे होगा, परिणामस्वरूप, वातायनके अभावमे शरणगृह की भीतरी सतह-पर द्रवीभावको अभिप्रेरित करनेके द्वारा हवाको आर्द्रताके आधिक्यको छोडने योग्य बनाना आवश्यक है और इसके प्रभावक्षेत्रकी दूरी दीवालो, फर्श और चादरछतके ताप-मानपर निर्भर करती है। इसे समतल, घना और सहजभावसे शीतल स्वभाववाला, जो कि कक्रीट शरणगृहके निर्माणके द्वारा तुरन्त प्राप्त करने योग्य है, होना चाहिये।

(१२) हवाई समलेके विरोधमे सुरक्षा–हेतु शरणगृहको सलग्न करनेके लिए भवनका चुनाव करते समय यह न भूले कि चौडी सडको मे, चौराहेपर अथवा खुली जगहके सामने वाले स्थानपर श्रेयस्कर है।

(१३) ऐसे भवनोकी जैसा कि ऊपर १२ वे विभागमे उल्लिखित है, सभी सीढ़ियो और उत्थापन स्तम्भोको बन्द करना न भूले।

(१४) जहा तक सम्भव हो, आपको एक महले वाले भवनोकी उपेक्षा ही करनी चाहिये। सामान्य रूपसे वे विशिष्ट उपयोगी नही है, खास तौरपर वे भवन जो एक कोशिका प्रकारके है, जैसे कि थिएटर, चर्च कुछ पाठशालाये और वे जो चमकीली छतवाले हो, जैसे फैक्टरिया, सुरक्षा उपयोगके लिए ये भवन उपयोगी नही है।

(१५) इसे न भूले कि भूमि स्तरके नीचे स्थित शरणगृह सर्वोत्तम है, क्योकि वे वहापर उत्स्फोट और बमोके विस्फोटसे उडनेवाले टुकडोके प्रभावसे सुरक्षित है।

(१६) इसे न भूले कि गैसलॉक्स (जिसे एयर लॉक्स भी कहा जाता है) की आवश्यकता भी हो सकती है उन्हे किसी भी प्रवेश–द्वारपर अवश्य उपयुक्त करना चाहिये, जहा गैसकी विद्यमानताकी स्थिति प्रस्तुत हो। एक गैस लाकके अन्तर्गत एक छोटी जगह प्रवेशद्वारकी तरह दो गैसटाइट द्वारके साथ एक अलिन्द आते है।

(१७) अपनी खाइयो और शरणगृहोके सिलसिलेमे 'सरकारको क्या देना चाहिय'– इसपर आश्रित न रहे। नागरिक प्रतिरक्षा नागरिकोका धर्म है।

— अध्याय २ —

तमावरण और प्रकाश-प्रतिबन्ध

दिल्ली, दिनांक २२ नवम्बर, १९६२ की एक प्रेस विज्ञप्तिमे कहा गया है कि गृहिणियोने किसी भी चीनी आक्रमणके विरोधमे एहतियात या पूर्वोपायके रूपमे कागजसे खिडकियोके कांचोको ढंक दिया था। इससे तमावरण और प्रकाश–प्रतिबन्धकी बात स्पष्ट है। किसी भी हवाई आक्रमणके विरोधमे सुरक्षाके लिए किये गये उपायोके महत्वको कोई अस्वीकार नही कर सकता और जब विगत युद्ध शुरू हुआ तो मैने ग्रेट ब्रिटनमे जो सर्वप्रथम वस्तु देखी वह थी, तमावरण और प्रकाश प्रतिबन्ध। वस्तुतः परिस्थितिके अनुसार छद्मावरण (Comouflage) से छिपानेके सिलसिलेमें आवश्यक और सम्भव पूर्वोपायकी आवश्यकताको किसीको भी नही भूलना चाहिये।

तमावरण (ब्लेक आउट) एक कष्ट या बाधा का मूल है, परन्तु वर्तमान युद्धमे यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अस्त्र है। यह हमारी राष्ट्रीय प्रतिरक्षाका एक अत्यन्त आवश्यक अग है। हमे सडक दुर्घटनाओको अवश्य ही कम करना होगा और इसके लिए चालकोको अवश्यही सडकोका सावधानीपूर्वक उपयोग करनेमे महत्वपूर्ण कार्य करना होगा। क्या आप भी ऐसा ही उत्तम प्रयत्न करेगे ?

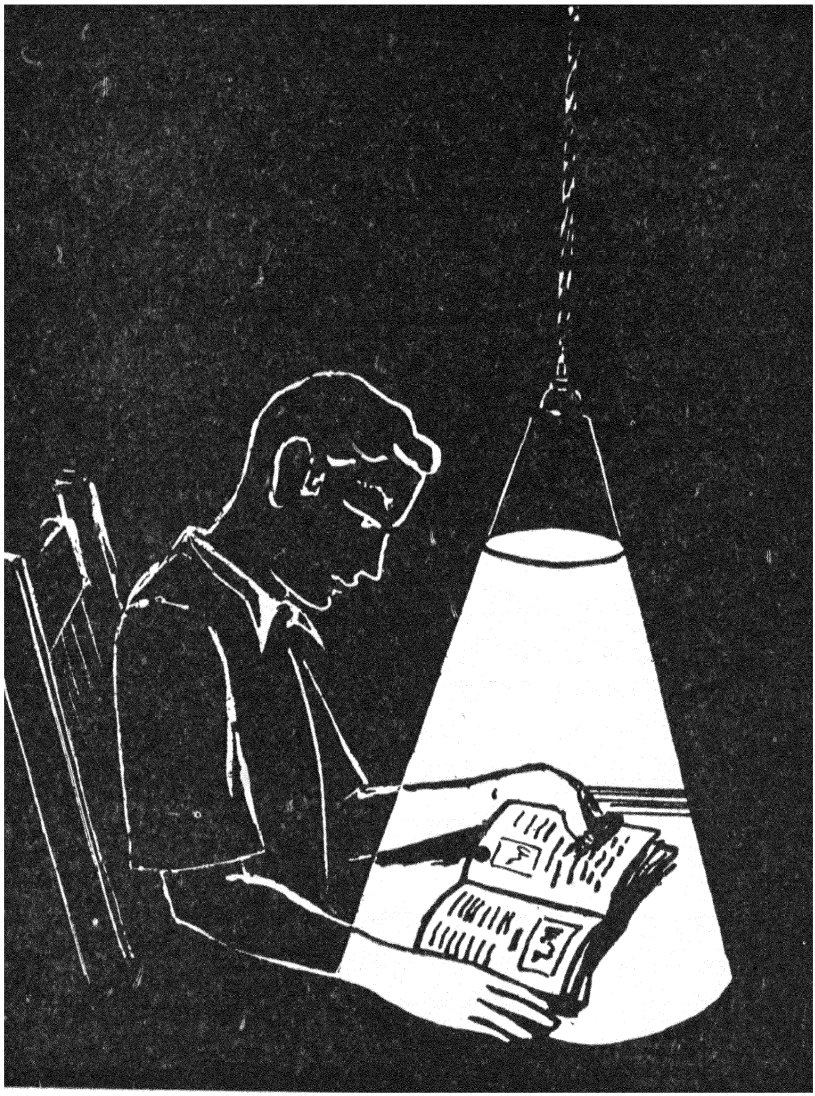
दूसरे पृष्ठपर एक निदर्श–चित्र दिया हुआ है। उसमे एक लडकेको पुस्तक पढते हुए दिखाया गया है। रोशनी केवल पुस्तकपर पड रही है और चारो ओर कही भी रोशनी नही है।

तमावरण और प्रकाश–प्रतिबन्धके सम्बन्धमे शीघ्र हवाले या आवश्यक सदर्भके लिए यहा कुछ महत्वपूर्ण बाते लिखी गयी है कि लोगोको इस सिलसिलेमे क्या करना चाहिये और क्या नही करना चाहिये .–

कर्तव्य

(१) जब आप तमावरणमे प्रथम बार बाहर आये, तो कृपया एक मिनट तक शान्त खडे रहे ताकि आपकी आखे अधियारेकी अभ्यस्त हो जाय।

(२) खडजेमे दूर जानेके लिए पहले दोनो ओर देख ले। सुनिश्चित कर ले कि वहापर कुछ आ नही रहा है।



(चित्र–संख्या–१६)

इस निदर्श-चित्रमें यह दिखाया गया है कि किस प्रकार एक लडका पुस्तक पढ़ रहा है।

(३) जहांपर यातायात बत्ती हो, सदैव वहीसे सडक पार करें।

(४) अपनी लाइट (बत्ती) का प्रकाश नीचे भूमिपर फेके।

(५) विश्वस्त हो जायें कि आपकी सतर्कता मदिराके द्वारा प्रभावित नही ह।

(६) धैर्य रखें। सड़क का उपयोग करनेवाले दूसरे लोगोकी कठिनाईकी प्रशसा करें और उनकी कठिनाईमें वृद्धि न करे।

(७) किसी हल्के रंगवाले वस्त्रको कटिप्रदेशमे या उसके नीचे पहनें या ले चले।

(८) यदि वहा कोई एक हो, तो फुटपाथ पर चलें, दूसरे राहगीराका कभी भी आगे बढ़नेके लिए पीछेसे भीड़में न ढकेले। यदि आप फुटपाथपर बायेसे चलते है तो ऐसा करने मे खतरोंकी बहुत कम सम्भावना रहती है।

(९) फुटपाथ–विहीन देहाती सड़कोपर एकदम दाहिने हाथकी ओरसे चलें, जिससे कि आप यातायातका सामना कर सके। एक साथ दोसे अधिककी सख्यामें न चले, और किसी सवारीके आने पर एक पक्ति मे खड़े हो जायं। सडकके बीचमे बनी सफेद पंक्तिपर कभी न चलें।

(१०) याद रखिये कि किसी धुँधली रोशनी युक्त सवारीके पहुचनेकी गति या उसकी दूरीका निर्णय करना नितान्त कठिन है।

उसके चालक या आरोहकके आपको देखनेसे बहुत पहले ही आप उसकी रोशनीको देख सकते है। अतः आपके लिए यह अत्यधिक आसान है कि आप उसके रास्तेसे अपनेको हटा ले अपेक्षाकृत इसके कि वह आपके रास्तेमे अपनेको अलग हटा ले। अपने ऊपर विश्वास करे, दूसरोंपर नही।

(११) सडक पार करनेके लिए एक उपयुक्त स्थान चुन लें, जहांपर पुलिस अथवा यातायात–बत्ती यातायातका नियन्त्रण करती है, अथवा वहामे जहांपर कि मध्यवर्ति (Central) आश्रय स्थान है, सडक पार करना श्रेयस्कर है। भीड अथवा आवागमनमे एक सुरक्षित अन्तर आने तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करे। लघुतम दूरीवाले मार्गसे सड़क पार करें, किसी कोणसे या तिरछे रूपमे नहीं।

(१२) यदि आप साइकिल सवार है, तो कृपया देख ले कि आपकी साइकिलकी बडी बत्ती उचित ढगसे ढकी हुई है और आपकी साइकिलकी पिछली लाल बत्ती भी उचित ढंगसे काम कर रही है।

(१३) यदि आप बाइसिकिल या कार चला रहे है, तो आपको किसी भी क्षण आकस्मिक विरामके लिए प्रस्तुत रहना चाहिये। तमावरणकी शर्तोंके अन्तर्गत पिथ-गमन या एकाएक मुड़नेके द्वारा भिड़न्तकी अवहेलना या बचावके लिए अत्यन्त कम अव-सर रहता है। अच्छे ब्रेकका रहना आवश्यक है।

(१४) मुड़ते समय साइकिल चालक या मोटर चालकको विशेष रूपसे सावधान रहना चाहिये।

(१५) साइकिल चालक या मोटरचालक को अपनी सवारी या चालनपर ही सम्पूर्ण ध्यान केन्द्रित रखना चाहिये। उन्हे अच्छी तरहसे बाई ओरसे चलाना चाहिये। उन्हे कभी भी सफेद पक्ति के मध्यमे अपनी सवारीको नही चलाना चाहिये।

(१६) मोटर साइकिलवालो और मोटर चालकोको ध्यानपूर्वक देख लेना चाहिये कि उनकी बड़ी बत्तीका आवरण माफ है और वह भलीभाति लगा हुआ है और उनकी पिछली बत्ती अच्छी तरहसे मद्धिम कर दी गयी है।

(१७) मोटर चालकोको अपनी मोटरके बपर्स (Bumpers) और रनिग बोर्डस् को सफेद रगमे रग देना चाहिये और वायु–पटको साफ रखना चाहिये।

(१८) अधियारेके समय सभी खिडकियो, रोशनदान (स्काई लाइटस्) और दरवाजोको काले प्रकाशावरोधसे अथवा परदेसे अथवा और किसी साधनोसे ढक दे, जिससे कि मकानके अन्दरकी कोई भी रोशनी बाहरसे दिखायी न दे।

(१९) लोकसेवा वाहनोमे भीतरकी बत्तियोपर आवरण चढा दे और उन्हे मद्धिम कर दे।

(२०) वाहनोके शीशोकी सतह और खिडकियोपर व्यवहारके लिए काले प्रकाशावरोध या परदेका प्रयोग करे। ऐसे पदार्थोमे अपारदर्शिता आवश्यक है और उस पदार्थका एक नमूना लेकर एक विद्युत बल्बके पास ले जाकर उसकी परीक्षा की जा सकती है। छोटे छिटके हुए प्रकाश पिनछिद्र पदार्थको उद्देश्यके लिए अनुपयुक्त नही बनाते। आवरणयुक्त पदार्थका बाहरी भाग काले रग का होना चाहिये, काला, भूरा, हरा और नीलारग इस उद्देश्यके लिए अधिक उपयुक्त है।

(२१) यदि छतपर रोशनी है, तो उस तक पहुंचने का साधन सोचिये। आवश्यक सीढिया, मच, मदगतिसे खिसकनेवाली या सरकनेवाली मेज या तख्ते आदि को भी प्राप्त होने योग्य बना लीजिये। युद्धकी अवधि तकके लिए ये सामान स्थायी रूपसे प्राप्त बनाये रखना चाहिये, क्योकि युद्धके दौरान लाइटप्रूफ स्थितिमे ही कार्य ठीक तरहसे पूर्ण होना चाहिये।

(२२) हवाई हमलेकी चेतावनीका सिगनल मिलतेही और ज्योही सभी लोग शरणगृहोमे चले जाय, सभी बत्तियो, (मद्धिम रोशनीवाले, कारखानोमे मशीनो और डायल आदिके ऊपर आवरणयुक्त बत्तियोको जो कि हवाई हमलेके समय देखी जानेकी है, के अतिरिक्त) बुझानेकी व्यवस्था कर ले।

निषेध

(१) तमावरणके समय बच्चो, बूढो और अशक्त लोगोको बाहर नही जाना चाहिये। यदि बाहर जाना अत्यन्त आवश्यक हो, तो किसीके साथ जाना चाहिये

(२) सडकके बीचमे किसी बस या रेलगाडीको रोकनेके लिए नही खडा होना चाहिये। जब तक कि बस आकर रुक न जाय आप सडकके किनारे अथवा उसके पास प्रतीक्षा करे। किसी बस या रेलगाडीके ड्राईवरको रोकने या सकेत देनेके लिए अपना रुमाल या कोई कागज हिलाये। उसकी आखोमे अपनी टार्चकी रोशनी कभी न फेकें।

(३) जब तक आपको ट्राम या बसके रुक जानेका पूर्ण विश्वास न हो जाय आप नीचे न उतरे।

(४) यदि आप साइकिल चालक है तो कृपया ध्यान रखे कि आपकी गति अधिक न होने पाये, जितनी दूरी आपके समक्ष दृष्टव्य हो, उसीके अनुसार आपकी गति होनी चाहिये। जब आप ट्रैफिक-लाइट (यातायात-बत्ती) या क्रॉसिगके पास पहुचे तो गति कम कर दे।

(५) साइकिल और मोटर चालकोको ट्रैफिकके भीतर अथवा बाहर विपथगमन या दिशा परिवर्तन नही करना चाहिये। उन्हे आगे जाने वाली सवारी के बाएँ से आगे नही बढना चाहिए।

(६) अपनी साइकिलको आश्रय या टेक देकर वहापर मत खडी करे, जहा पर पैदल चलनेवाले लोगोके उसपर गिरनेका भय हो।

(७) किसी भी बाहरी प्रकाशको दीखने योग्य न रहने दे।

(८) कोई भी ज्योतिमय या चमकदार विज्ञापन चिन्ह और सकेत न रखे। (हवाई आक्रमणसे बचाव के उद्देश्य के लिए विनियमित सकेत या चिन्ह इसमे नही आते।)

(९) कारखानेकी इमारतोसे प्रत्यक्ष अथवा प्रतिबिम्बित प्रकाशका निर्गमन न होने दे। ऐसा करनेके लिए सामान्य रूपसे सभी खिडकियो पर आवरण चढा देना चाहिये और धुँधले या अपारदर्श पदार्थसे छतकी रोशनीको अदृश्य बना देना चाहिये।

(१०) गलीमे किसी प्रकारके प्रकाशकी व्यवस्था न रहने दे।

(११) जहापर प्रकाशविरोधके लिए लगे हुए पर्देसे पूर्णत प्रकाश अवरुद्ध नही होता, वहापर प्रकाशका उद्घाटन या बहिर्गमन न होने दे। यह कार्य खिडकियोके किनारोको किसी धुँधले या अपारदर्श रगसे रग देनेसे किया जा सकता है।

(१२) इसे न भूले कि बहुत-सी इमारतोमे बधन-सामग्री, जैसे टिनकी प्लेटे, नालीदार (Corrugated) कागज, पर्ती लकडी (Plywood), चिप-बोर्ड आदि उपलब्ध होते है, और इन पदार्थोसे अपारदर्श पटल बडे ही सस्ते रूपमे बनाया जा सकता है।

(१३) जब आप प्रकाश प्रतिबन्धके उपायोंकी खोज करें तो ये न भूलें कि वैयक्तिक परिस्थितियोंके लिए अत्यन्त सन्तोषजनक मिश्रण को ही सावधानीके साथ सोचना चाहिये।

(१४) यदि शीशा फूटा हुआ है, तो प्रकाशोद्घाटन हेतु अस्थायी आवरणके रूपमें तिरपालको सुरक्षित रखना न भूलें।

(१५) दरवाजोंमें प्रकाशका बहिर्गमन न होने दें। इसके लिए एक दो दरवाजोंवाले एक दालान या ड्योढीका निर्माण एक उपयुक्त व्यवस्था होगी, ऐसा करनेमें जब एक द्वार खुलेगा, तो दूसरा द्वार बन्द रहेगा। इसके स्थान पर एक मोटे वजनी भीतरी पर्देका भी प्रयोग किया जा सकता है।

(१६) जहा तक व्यवहार्य (Practicable) हो, समस्त भीतरी प्रकाशको ढक दें। बत्तीको धुंधला करनेमें विशेष सावधानी रखनी चाहिये, जिससे कि खिड़कियोंपर सीधा प्रकाश न पड़ सके।

(१७) ये न भूलें कि सभी कमरोंको इस स्थितिमें होना चाहिये की कुछ ही घटेकी सूचनापर प्रकाश प्रतिबन्ध सुरक्षाका कार्य पूर्ण हो सके।

(१८) ये न भूलें कि पूर्ण तिमिरान्धताके लिए सुरक्षाके स्पष्ट और निश्चित निर्देश किसी भी समय तैयार किये जा सकते है और उन्हे उन लोगो तक पहुचाया जायगा, जिन्हे विविध कार्योंमें नियुक्त किया गया है।

(१९) प्रकाश प्रतिबन्धमें सवर्द्धित इस तथ्यको न भूलें कि आपका अपने पडोसी और देशवासियोंके प्रति उतना ही कर्तव्य है, जितना आपका स्वय अपने प्रति।

किसी भी देशमें प्रकाश–प्रतिबन्धको उपयुक्त समयमें उपयुक्तस्वरूप अवश्यही मिलना चाहिये और लोग जितनी जल्दी सम्भव हो उसके अभ्यस्त हो सके अवश्य हो जाय। ऐसी आदतें सहसा एक बारगी ही नही बनायी जा सकती, और लोगोंको तत्काल अभ्यस्त बनानेके पहले इसका किंचित अभ्यास आवश्यक है।

हवाई अड्डो, सरकारी भवनो, रेल्वे स्टेशनो, अस्पतालो और लोक स्मारकीय सम्पत्ति पर प्रकाश–निषेधके लिए विशेष सावधानी बरती जानी चाहिये।

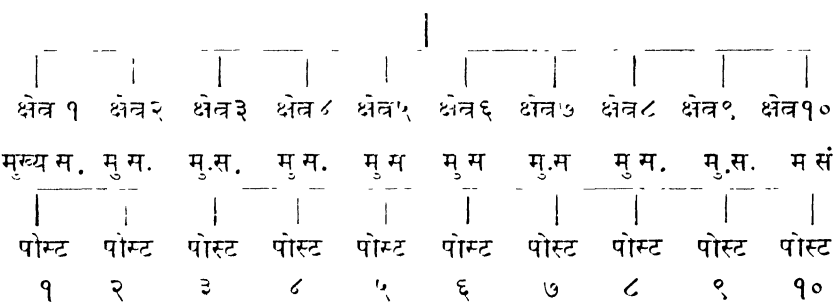
– अध्याय ३ –

संरक्षक सेवा

२२ नवम्बर १९६२ ई की एक प्रेस विज्ञप्तिमें जिसका उल्लेख पहले हो चुका है संरक्षक–सेवा, जिसने कि गत द्वितीय महायुद्धके दौरान इंग्लैंडमें हवाई हमलेसे बचावके संगठनके लिए महत्वपूर्ण आधारका निर्माण किया था, का उल्लेख नहीं था। संरक्षक एक सजीव और एक गतिशील व्यक्ति था। वह जनताका मित्र था और हवाई हमलेके विरोधमें सुरक्षासे सम्बद्ध मामलोंमें एक निर्देशक था। हवाई हमलेके दिनोंमें संरक्षकोंने ग्रेट ब्रिटेनमें आतंकको दूर करनेमें सुरक्षादल अथवा आरक्षी–सुरक्षा दलकी समुचित [illegible] पहुंचने तक तात्कालिक देखभाल और सेवाके प्रसंगमें अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया था। विगत महायुद्धमें मैंने ग्रेट ब्रिटेनमें संरक्षक सेवाके विषयमें जो कुछ भी देखा था, उसके आधार पर मैं अपने देशकी राजधानीके लिए निम्नलिखित सुझाव देना चाहता हूं और ये सुझाव कुछ आवश्यक संशोधनोंके साथ अन्य स्थानोंके लिए भी उपयोगी होंगे।

संरक्षक आरक्षी और होमगार्ड्सकी सहायता करेंगे। सभी क्षेत्र अपनी संरक्षक सेवाओंको निम्नलिखित रूपमें रख सकते हैं।

प्रमुख संरक्षक



इसी प्रकारसे प्रत्येक अंचल अथवा प्रभागमें दस चौकियां होंगी।

इस प्रकारकी व्यवस्था होनी चाहिये कि संरक्षक आरक्षी दलके साथ और दूसरी ओर होमगार्ड्स् या अन्य स्वैच्छिक संगठनोंके साथ पूर्ण सहयोगके साथ कार्य कर

सके। इस बातकी विशेष सावधानी रखी जानी चाहिये कि एक दूसरेके कार्योंके मध्य किसी प्रकारका सघर्ष न हो।

एक सरक्षक चौकीमे निम्नलिखित आवश्यक वस्तुए भेजी जानी चाहिये :–

६ बाहु बन्ध

६ लोह शिरस्त्राण (टोप)

६ जनतासेवी–श्वास–यन्त्र (Civilian Duty Respirators)

३ गैस सूट-पतले चमडे के बने हुए–जो गैसके आक्रमणसे प्रभावित न होसके।

३ रबरके जूतोंके जोडे।

३ गैसके द्वारा प्रभावित न होनेवाले दस्तानोंके जोडे।

६ गैस ढाल (शील्ड) : गैससे आखोंकी सुरक्षाके लिए।

३ गैस प्रतिरोधक पटल : गैससे सुरक्षाके लिए।

६ सरक्षकोंके निमित्त बनायी गयी एक सरक्षक चौकीके लिए निम्नलिखित पदार्थ भी प्रदेय है –

३ विद्युत टार्च

३ सीढिया

२ खडताल

१ हाथ से बजानेवाली घटी

६ जनता सेवियोंकी कार्यविधि हेतु श्वास–यन्त्र

ये सरक्षक प्रमुख सरक्षकोंके निर्देशन मे काम करेंगे और प्रमुख सरक्षक प्रधान सरक्षकके दिशा–निर्देश और आज्ञाके अनुसार काम करेगा।

सरक्षक निम्नलिखित प्रकारसे आरक्षियो और गृह–रक्षकोंकी सहायता करेंगे –

(१) वे शरण–गृहोंमे जानेके लिए लोगोंका निर्देशन करेंगे।

(२) वे सडकपर यातायातको रोकेंगे।

(३) सरकारी सवारियोंके अतिरिक्त अन्य सभी सवारियोंको रोकेंगे और उन्हे इस ढगसे खडा करदे जिससे कि फायर–ब्रिगेडके आवागमन मार्गमे कोई बाधा उपस्थित न हो।

(४) उन्हे सवारियोंको इस व्यवस्थित ढगसे खडा कराना चाहिये कि फायर-ब्रिगेड, एम्बुलेन्स और आरक्षी (Police) दलके आवागमनमे कोई बाधा उपस्थित न हो। अन्धकार हो जानेके बाद सरक्षकों को यह देखना चाहिये कि किसी भी घरसे रोशनी बाहर न आने पाये।

विगत महायुद्धके समय लदनकी तग गलियोंमे सरक्षकोंने सवारियोंके निकटकी गलीमे खडी करानेकी व्यवस्था की थी। घोडोंको बिजलीके खम्भोंसे बाध दिया गया था और निकटकी गलियोंमे उनके खडे होनेकी व्यवस्था थी।

वे ऐसे स्थानों पर खडे किये थे जो इमरतों और दीवालोंके कारण अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित थे । जैसे ही किसी विशेष सेक्टरकी गलियां और वीथियां साफ हो जाती थी, लंदन का प्रत्येक गश्तवाला सरक्षक अपनी चोकीपर पहुच जाता था अथवा किसी पूर्व निर्धारित मिलन-स्थलपर – जो स्वय सरक्षकों द्वारा सुनिश्चित किया जा चुका था – वे पहुच जाते थे ।

जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है लंदनका यह अनुभव अनुकरणके योग्य है और राजधानी दिल्लीमे तथा उसी प्रकार अन्य स्थानोंमे भी उपर्युक्त प्रक्रियाका सुपालन करना चाहिए ।

हवाई हमलेके समय संरक्षकके कर्तव्य

यदि कही समीपमे ही उग्र विस्फोटक बम या अग्निबम गिरा है, तो प्रत्येक सरक्षकका प्रथम कर्तव्य है कि वह रपट–केन्द्रके माध्यमसे तुरन्त पूर्ण विवरण प्राप्त कर ले । व्यक्तियोंकी सहायता करनेके पहले ही इस कर्तव्यका पालन होना चाहिये, भले ही बम गिर रहे हों, पर रपट प्राप्तिमे बिना देर किये यदि कोई वैयक्तिक सहायता दी जा सकती है, तो वह दी जानी चाहिये । यदि छोटे अग्निबम गिराये गये है और ऐसी स्थितिमे सम्भव है कि कोई व्यक्ति अपनी इमारतकी छत पर चढ जाय, तो ऐसे मामलोंमे सरक्षकोंको यह ध्यान रखना चाहिये कि घरके भीतर जो भी लोग है, उन्हे सावधान कर दिया जाय । नियन्त्रण कक्षको रिपोर्ट देनेकी अपेक्षा मकानमे रहनेवालोंको सावधान करनेकी बातको प्राथमिकता देनी चाहिये, लेकिन किसी भी सरक्षकको बम बुझानेमे मदद देनेमे विराम नही लेना चाहिये ।

अग्नि पतरोल (गश्त) के लिए भी एक गश्ती निगरानी रखनी चाहिये ।

इसी प्रकार जबकि प्रथमोपचार दल, बचाव दल या आरक्षी दल घटना स्थलपर पहुचते है,तो उन्हे वहा चौकी पर किसी सरक्षक को पानेकी अपेक्षा रहती है जो उन्हे निर्देशन दे और सम्पूर्ण घटनाका विवरण प्रदान करे ।

अत भलेही एक व्यक्ति क्यो न हो, पर चौकी पर हमेशा किसी न किसी सरक्षकका रहना अत्यन्त आवश्यक है । यदि सभी सरक्षक ध्वस्त गृहोंमे सहायतार्थ बिखर गये है, और वे आसपास कही दिखायी नही दे रहे है, तो विविध दलोंके सहायतार्थ आनेपर दुर्भाग्यपूर्ण विलम्ब होनेका भय रहेगा । अपेक्षित उपचार सहायताके आने तक अथवा घायल व्यक्तियोंको नजदीकके अस्पतालो तक या उपचार–चौकी तक पहुचाने के स्थान पर यह आवश्यक है कि हताहतों और क्षतिग्रस्त लोगोंकी सेवा–सुश्रुषा पर ध्यान दिया जाये ।

ध्वस्त मकानों और मलबोंके नीचे पडे हुए लोगोंकी रक्षा के लिए बचाव दलके पहुचनेकी प्रतीक्षा किये बिना ही तुरन्त राहतकार्य प्रारम्भ कर देना चाहिये और

जब रक्षा दलकी इकाई या इकाइया आ जाय, तब सरक्षकको वह काम हाथमे लेनेका अधिकार नही होगा। उनका कर्तव्य रक्षादलका मार्गदर्शन और सहायता कार्य है।

सरक्षकोका एक प्रधान कर्तव्य यह भी है कि वे यथासम्भव आतकका प्रसारण न होनेदे और भयातकित लोगोको गलियोमे भागनेसे मना करे। अपने भागके निवासियोके लिए नेता और सलाहकार होनेके लिए वह एक विश्वसनीय और उत्तरदायी सदस्य चुना गया है और यदि उसे अपने पडोसियोका विश्वास प्राप्त है, तो वह उन्हे शान्त और पुन: आश्वस्त करानेमे समर्थ होगा।

इसके अलावा एक सरक्षक चौकीको अपने हेड–क्वार्टर (प्रधान कार्यालय) और उससे सम्बन्ध अन्य स्थानोके सम्पर्कमे रहना चाहिये। यह कार्य टेलिफोनके सम्पर्कके द्वारा और सरक्षकोके आपसी मिलनके द्वारा किया जा सकता है।

हवाई आक्रमणके पश्चात् संरक्षकका कार्य

सरक्षकोको सकेतो (सिग्नल्स) का समुचित ज्ञान होना चाहिये। ज्योही 'हवाई हमला समाप्त' का सकेत दिया जाय, सरक्षकोको शरण–गृहोसे बाहर आना चाहिये और उन्हे अपघात, क्षति अथवा घायलोको ढूढना चाहिये। सरक्षकोको अपने कार्य क्षेत्रमे सहायता प्रदान करनेके पश्चात अपने प्रधान–कार्यालय मे अथवा सीनियर प्रभारी सरक्षकके पास अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करनी चाहिए। यदि दुर्भाग्यवश कुछ व्यक्ति हवाई हमलेके कारण गृहहीन हो गये हो, तो सरक्षकको तुरन्त अपने प्रधान कार्यालयमे रिपोर्ट सूचना भजनी चाहिये और ऐसे व्यक्तियोके निवासकी व्यवस्था करनी चाहिये।

यदि बम नही गिराया गया है, तो सभी सरक्षकोको चौकी बन्द करने के पहले प्रधान कार्यालयसे आनेवाले आदेश तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। यदि उस 'सेक्टर' खण्डमे बमके कारण क्षति हुई है, तो सरक्षकोको तब तक कुछ काम करना पड़ सकता है, जब तक कि समस्त घायलोको हटा नही लिया जाता और अग्नि बुझा नही दी जाती। आसपास जब तक गैस है–उन्हे किसी भी स्थितिमे प्रतीक्षा करनी ही पडेगी, जब तक कि उन्हे प्रधान कार्यालयसे छुट्टी नही दे दी जाती।

कामसे छुट्टी पानेपर प्रत्येक सरक्षकको अपने सभी सामानोको चौकीमे वापस कर देना चाहिये। यदि ब्लिस्टर गैसके कारण सरक्षक के कपड़े ख़राब हो गये है तो उसे निकटतम प्राथमिक उपचार–केन्द्रपर सफाईके लिए जाना चाहिये।

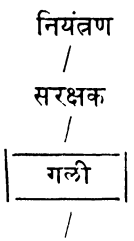
संरक्षककी स्थिति

प्रत्यक स्थानीय हवाई हमलेसे ऐहतियाती सावधानी करनेवाले सगठनमे 'हवाई हमला–सरक्षक' एक निश्चित और महत्वपूर्ण अग रूप होता है और सम्पूर्ण हवाई हमला पूर्वोपाय (Precautions) सस्था मे उसकी स्थिति नितान्त महत्वपूर्ण है।

नीचे दिया हुआ आरेख (Diagram) गत महायुद्धके दौरान मि. सी. डबल्यू. बिगऊड बी. ए., आई. सी. पी., जे. पी. के द्वारा तैयार किया गया था और उनके प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए उसे मै अपने पाठकोके लाभार्थ यहा पर उद्धृत कर रहा हूँ :–

अे. आर. पी. (हवाई हमले से बचाव) सगठनमे स्थिति ओर अधिकार

(१) फायर ब्रिग्रेड
(२) प्राथमिक सहायता और एम्बुलेन्स
(३) आरक्षी (Police)
(४) बचाव और विध्वस
(५) नगरपालिका और उपयोगी सेवाए



(१) सूचना देना
(२) गश्त लगाना
(३) रपट देना या रिपोर्ट करना।

उपर्युक्त आरेखको ध्यानपूर्वक देखनेमे स्पष्ट हो जाता है कि ग्रेट–ब्रिटेनमे सरक्षक हवाई हमले से बचाव (A. R P.) सेवा और जनता (जिसका वह प्रभारी थी) की मध्यवर्ती कड़ीके रूपमे प्रतिष्ठित था।

उपर्युक्त आरेखके नीचेवाले आयातरूपमे सरक्षकके कार्यक्षेत्रका प्रतिनिधित्व करनेवाला क्षेत्र दिखाया गया है। उसके नीचे सरक्षकके तीन अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्योको इगित किया गया है।

ग्रेट ब्रिटेनमे हवाई हमला–सरक्षक (Air Raid Warden) को एक **नियुक्ति-कार्ड** दिया गया था जिसका आशय यह था कि सरक्षक अपने कार्यके सिलसिलेमे-जब गृह–पतियो अथवा दूसरोसे मिलता है, तब वह अपने सरक्षक होनेके प्रमाणस्वरूप उसे दिखा सके। यह उसके लिए उस समयमे भी उपयोगी होता है, जबकि वह अपने वृत्तखड (Sector) से दूरपर होता है। वह जहा कही भी हो, उसको दिखानेपर सरक्षकके रूपमे अपनी सेवाए अर्पित कर सकता है। राजधानीमे अथवा भारतके

किसी अन्य भागमे अथवा किसी दूसरे देशमें जब सरक्षक–सेवा का सगठन किया जाय, तब उपर्युक्त बातोका पालन अवश्य करना चाहिये, क्योकि ग्रेट ब्रिटेनमे यह अनुभव पर्याप्त सफल सिद्ध हुआ है।

सरक्षकोका प्रशिक्षण, उनका कर्तव्य, सदेश–लिखना और भेजना, सावधानी व्यवस्थाके सम्बन्धमे उसका स्पष्ट ज्ञान और अपने वृत्तखण्डमे दूसरोको समझाना, कूट शब्द (Code Words) का प्रयोग, किसी उचित रपट–पत्रको समझना और यह जानना कि किस रुपरेखामे यह बनाया गया है, इसी प्रकारकी और भी अन्य समस्याए है, जिनको इस महत्वपूर्ण सरक्षक–सेवाके प्रसगमे सचालित करना पडता है।

मेरा सुझाव है कि राजधानी के अथवा भारतके किसी अन्य भागके अधिकारियोको आगे बढना चाहिये और ग्रेट–ब्रिटेनके लोगोके द्वारा विगत महायुद्धमे किये गये कार्योसे फायदा उठाते हुए शीघ्रातिशीघ्र सरक्षक सेवा सगठनका निर्माण पूर्ण कर लेना चाहिये।

नागरिक प्रतिरक्षाका उचित ढगसे सगठन करनेकी दिशामे किसी भी देशमे यह सगठन बहुत दूर तक सहायक हो सकता है। विगत महायुद्धके समय ग्रेट ब्रिटेनमे सरक्षक–सेवाका सगठन बडी ही सुदृढ पद्धति पर किया था और वह सबके लिए एक निर्देशक भी हो सकता है। भले ही कोई देश युद्धमे फसा हुआ हो, पर एशिया महाद्वीपके देशोको विशेष रुपसे अपने देशोमे सरक्षक–सेवा का श्रीगणेश करनेके लिये गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिये। अन्तत यह तो सत्य है कि लोगोको इस बातकी उचित सूचना नही दी जा सकती कि कब कोई युद्ध शुरू होगा और यदि उचित सावधानी और सुरक्षा व्यवस्था न की गयी, तो नाभिकीय अस्त्रो या अणुअस्त्रो से अवश्य ही सर्वनाश हो सकता है और इस प्रकारकी सावधानी बरतते समय सरक्षक सेवाए अत्यन्त महत्वपूर्ण और सहायक हो सकती है और इस प्रसगमे आवश्यक सावधानी बरतनेकी अवहेलना बडे ही दुखद परिणामकी ओर ले जा सकती है।

वर्तमान विश्वके किसी एक राज्यमे जबकि प्रत्येक व्यक्ति नाभिकीय युद्ध या आणविक युद्ध के बारे मे सोचता है, सभी स्थानोमे सरक्षक सेवाए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विशेष रूपसे यह सरक्षक ही है जो इस बातका ध्यान रखेगा कि उसके क्षेत्रमे नाभिकीय आक्रमणके समय दीवालोके पीछे अथवा शरणगृहोमे रहनेकी उचित व्यवस्था है। जहा तक नाभिकीय आक्रमण अथवा हवाई हमले का सम्बन्ध है, सरक्षक सेवाओके माध्यमसे कोई भी सरकार इस सम्बन्धमे सामान्य जनताके प्रति अपने कर्तव्यका सुपालन कर सकती है।

यह अत्यन्त आवश्यक है कि सरक्षको को प्राथमिक सहायता, अग्नि बुझानेके उपाय, बचाव कार्य, गैस आक्रमणसे सुरक्षा और विश्वमे नाभिकीय युद्ध और आक्रमणसे सुरक्षाके सम्भव उपायोका ज्ञान आदि विषयोमे पूर्णत. प्रशिक्षित होना चाहिये।

इंग्लण्डके अनुभवके आधार पर कहा जा सकता है कि वहा पर दो प्रकारके सरक्षकथे (१) वे जो वैतनिक थे और (२) वे जो अवैतनिक थे। इसी प्रक्रियाका प्रत्येक स्थानपर कुछ आवश्यक सशोधनोके साथ अनुसरण किया जा सकता है। यहां यह बात ध्यानमे रखनी चाहिये कि जब इग्लैण्डमे विगत महायुद्ध छिडनेके लगभग एक वर्ष बाद तक संरक्षकोको वस्तुत· युद्धसे सबद्ध कोई काम नही करना पडा, वे उस समय केवल दूसरोको प्रशिक्षण देनेका ही काम करते रहे। उस अवधिमे इग्लैण्ड पर हवाई हमले नही हुए, क्योकि हिटलर युरोपमे दूसरे देशोको जीतनेमे व्यस्त था, किन्तु इस समयका सभी लोगोने सदुपयोग किया। इसी अवधि का लाभ उठाकर इग्लैण्डमे सरक्षक सेवाने एक सुदृढ आधार प्राप्त कर लिया और इसी कारण लंदन, कोवेन्ट्री और इग्लैन्डके अन्य भागोपर प्रबल आक्रमणकी अवधिमे प्रत्येक सरक्षक बडी ही दक्षता और योग्यतापूर्वक अपनी सेवाए अर्पित करनेके योग्य हो गया था। मै इस बातका समर्थन नही करता कि हमारी जनता अपने इस प्रकारके सगठनको लेकर उसी गतिमे आगे बढे जिस गतिसे इग्लैण्डमे यह कार्य हुआ था, किन्तु निश्चय ही यह आवश्यक है कि इस सगठनकी एक रूपरेखा अवश्य ही पूर्ण कर ली जाय, जिससे कि सम्भाव्य दुर्घटनाके क्षणोमे आतक या अव्यवस्था न हो।

भारतवर्षमे सरक्षक सेवाओके साथ ही नागरिक प्रतिरक्षाकी अन्य महत्वपूर्ण सेवाओका प्राथमिक ज्ञान गृह-रक्षको (होम गार्डस्) और नॅशनल केडेट कोर के लोगो को विशेषत कालेजोमे—प्रदान किया जाना चाहिये। यही वे लोग है, जो धक्के का आघात सहेगे और इस प्रकार वास्तविक युद्धकी स्थितिमे प्रतिरक्षाकी द्वितीय पक्तिका निर्माण करेगे।

इसे ध्यान मे रखना चाहिये कि [illegible] सेवादलके लोग किसी भी स्थान पर आरक्षी दलके साथ पूर्ण सहयोगपूर्वक कार्य करेगे, पर निश्चय ही वे आरक्षी दलके नियन्त्रणमे नही रहेगे। इनकी अपनी अलगकी एकात्मकता होगी और वे किसी देश या स्थान विशेषकी सरकारके साथ प्रत्यक्ष रूपसे सम्बन्धित रहेगे।

सरक्षक चौकियोकी सस्थापना—के विषयमे यह अधिक सुन्दर है कि अवैतनिक नियुक्तिया की जाय। इसके अतिरिक्त सरक्षकोका एक सक्षिप्त दस्ता शान्तिकालमे काम करनेके लिए भी रखा जाना चाहिये। सक्षोभ और विप्लवके समय सकटकालीन अपरिहार्य स्थितिके अनुसार ऐसी सरक्षक चौकियोकी सख्या आवर्द्धित की जानी चाहिये और ऐसी दशामे प्रत्येक सरक्षक चौकीको पूर्णत. वैतनिक, अर्धवैतनिक और अवैतनिक सरक्षकोमे भलीभाति रक्षित रखना चाहिये। किसी भी स्थितिमे और सदैव सरक्षकोको चाहे वे वैतनिक हो या अवैतनिक, प्राथमिक सहायता (First Aid), बचाव कार्य, नाभिकीय युद्ध (Nuclear Warfare) के अधुनातन उपाय और उसके विरोधमे सुरक्षाके उपाय आदिके अतिरिक्त नागरिक प्रतिरक्षासे सम्बद्ध अन्य विषयोका पूर्ण प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये।

सामान्य समयमें एक ओर अत्यन्त सघन जनसख्यावाले नगरोंमें और दूसरी ओर देहाती ज़िलोंमें सरक्षकोंके वर्गीकरण, सरक्षक चौकियोंके स्थाननिर्धारण और सरक्षकोंकी सख्याके प्रश्न पर किसी स्थायी और सुदृढ प्रणाली पर ध्यान केन्द्रित करनेकी विशेष आवश्यकता नही है। युद्धके समय स्थानीय गैसविषयक चेतावनी देना परक्षकका कर्तव्य है। अतएव यह आवश्यक है कि शान्तिकालमें भी उनके विषयमें आवश्यक वस्तुएं अवश्य समझे।

बमों, पक्षेप्रास्त्रों और युद्ध स्थितिमें जनताको बचानेके लिए उपाय और विविध प्रकारके बमोंसे निपटने और बचावके उपाय करने आदिके विषयमें उसे पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त कर लेना चाहिये।



चित्र १७
एक सरक्षकका चित्र

युद्धके समय उनका काम बडी ही कठिनाईका है और इसी कारण जब उपयुक्त समय हो, तो उन्हे आवश्यक शिक्षा दी जाय ।

सरक्षकोकी वर्दी विभिन्न देशोकी पसन्दके अनुसार होनी चाहिये । जब तक किसी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनमे "उनकी ड्रेस ऐसी ही होनी चाहिये"—का सुनिश्चय न कर लिया जाय, तब तक कोई एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर नही हो सकता । बहरहाल, किसी भी देशमे सरक्षकोकी वर्दी सर्वत्र एक ही प्रकारकी होनी चाहिये । सरक्षक जनताकी आख और कानके सदृश है, वह उनका मित्र, चिन्तक और निर्देशक है और इसी कारण उसे वर्दी पहननी चाहिये जिससे कि वह देशके किसी भी भागमे तुरन्त पहचाना जा सके । चित्र सख्या १७ से स्पष्ट हो जायगा कि उसकी वर्दी किस प्रकारकी होनी चाहिये ।

आपद्कालमे न केवल प्रत्येक नगर, उपनगर या गावके ही लिए सरक्षक होने चाहिये, बल्कि यथासम्भव प्रत्येक महत्वपूर्ण इमारतके लिए भी एक सरक्षक होना चाहिये ।

आज हम भारतवर्षमे जिस सकटकी घडीसे गुजर रहे है, उसमे यह आवश्यक ह कि सरक्षकोका सगठन एक बडी ही सुदृढ पद्धति पर पूर्ण होना चाहिये । कोई यह कभी नही जानता कि विपत्ति कब आ सकती है और लेखकका विश्वास है कि इन बनायी गयी परिस्थितियोमे अस्थायी समझौते हमारे लिए अधिक उपयोगी नही होगे ।

यदि भारतवर्षके किसी भी भागपर होनेवाली बमवर्षाके प्रतिरोधमे हमारी सुरक्षा-हेतु प्रभावकारी हवाई छत्रीके लिए सयुक्त पश्चिमी ताकते उत्तरदायित्व ले ले, तो हमारे देशको बडी प्रसन्नता होगी, लेकिन इसके साथ ही यह भी स्पष्ट रूपसे समझ लेना चाहिये कि हमारे देशकी सीमा इतनी विशाल है कि सर्वोत्तम प्रयत्नोके बावजूद शत्रुके हवाई हमले अथवा नाभिकीय हमलेके विरोधमे पूर्ण सुरक्षाका दावा नही किया जा सकता । अन्ततोगत्वा नगरीय जन—सख्या को ही शत्रुके आक्रमणके आघात या प्रचड धक्केको सहना पडेगा । ऐसी स्थितिमे समस्त नागरिक प्रतिरक्षा सेवाए अपना-अपना योग देगी और अपनी योग्यताको प्रमाणित करेगी, लेकिन इसमे सरक्षकोकी सेवाका जो योग हो सकता है, वह अन्य किसी भी सेवासे कम महत्वपूर्ण नही है । हमे शान्ति और आपद् दोनो कालोकी सरक्षक सेवाओको अपेक्षित महत्व प्रदान करना चाहिये । युद्धके समयमे नाभिकीय आक्रमणके उध्वसक प्रभावोका सफलतापूर्वक सामना करनेके लिए अथवा शत्रुके बमवर्षाके भीषण आक्रमणका प्रतिरोध करनेके लिए शान्तिकालमे सरक्षकोंका प्रशिक्षण एक आवश्यक तैयारी है ।

– अध्याय ४ –

रोगिवाहन सेवा (Ambulance Service)

भारतवर्षकी राजधानीमे एक सहायक रोगिवाहन (अेम्बुलेन्स) सेवा स्थापित की जानी चहिए और उसका नाम 'दिल्ली सहायक एम्बुलेन्स सेवा' (Delhi Awxiliary Ambulance Service) रखा जा सकता है । जिस ढंगसे लदनमे गत महायुद्धके दौरान 'लदन आक्जिलरी अम्बुलेन्स सर्विस' ने काम किया था, उसी पद्धति पर इसका भी काम हो सकता है । इस सेवाने लदनमे नागरिक प्रतिरक्षा कार्यमे केन्द्रक (Nucleus) का गौरव प्राप्त किया था । युद्धके दौरान उस शहरके प्रत्येक भागमे रोगिवाहन (एम्बुलेन्स) केन्द्रो (Ambulance Station) का सगठन किया गया था । इन केन्द्रोमे रोगि वाहन (Ambulance) हवाई हमले से बचाव के कार्यकर्ता (A. R. P. Staff), गैसके थैले (Gas Kits), पदाधान रकाब, पिचकारी नल और सामान्य अग्निकाण्डका शमन करनेके लिए किरमिचकी नली (Hose Pipes) और हवाई हमले बचाव (A. R. P.) के लोगोको प्रशिक्षण देनेके लिए और भी बहुत सौ सुविधाकी वस्तुए (Amenities)थी । इन लोगोमे स्त्री और पुरुष–दोनो थे । उन्हे दिन अथवा रातकी पारियो (Shifts) मे प्रशिक्षित किया गया था । उन्हे नगरके किसी भी भागमे–विशेष रूपसे उस क्षेत्रमे जिसमे उनका अेम्बुलेन्स स्टेशन स्थित है, यथा सम्भव अतिशीघ्र सदैव जानेके लिये सावधान रखा जाता था । लंदन शहर और विशेष रूपसे उनके अपने आसपासकी भौगोलिक स्थिति अथवा मानचित्रका सम्पूर्ण ज्ञान उनका प्रथम और सर्वोपरि कर्तव्य था ।

उस स्टेशनके अधिकारियोको लदन काउन्ट्री काउन्सिलके विशेषज्ञो द्वारा प्रथमोपचार (प्राथमिक सहायता) के विषयमे पूर्णतः प्रशिक्षित किया गया था । इस विषयमें प्रथमोपचारकी एक परीक्षा ली गयी थी और परीक्षामे उत्तीर्ण लोगोको प्रथमोपचार (प्राथमिक सहायता) प्रमाणपत्र दिये गये थे ।

लदन आक्जिलरी अम्बुलेन्स सर्विसके अधिकारियोके लिए हर प्रकारके अभ्यास और प्रशिक्षणकी व्यवस्था करना लदन काउन्टी काउन्सिलके कार्य का एक नियमित अग था । स्टाफके प्रत्येक व्यक्तिको एक **स्टाफपत्रक कार्ड** दिया गया था, जिससे उसे जहा कही भी आवश्यकता पड़े, अपनी शनाख्त देनेमे सहायता मिलती थी । लदन आक्जिलरी सर्विसके अनुभवसे हमारी राजधानी भी फायदा उठा सकती है और वह आपद्कालमे–जैसे कि वर्तमान समयमे–एक अेम्बुलेन्स सेवाको शुरू कर सकती है । इसका नाम, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, 'दिल्ली सहायक अम्बुलेन्स सेवा'

(Delhi Auxiliary Ambulace Service) रखा जा सकता है और यह सेवा संगठन लदन आक्जिलरी अम्बुलेन्स सर्विसकी पद्धतिपर काम कर सकता है।

दिल्लीसे २२ नवम्बर १९६२ को प्रकाशित एक प्रेस विज्ञप्तिमे कहा गया है कि बन्दूक (राइफ़िल) चलाने और ट्रक चलानेके प्रशिक्षणके लिए बहुत बड़ी संख्यामें स्त्रिया आ रही है। जहा तक राजधानीकी नागरिक प्रतिरक्षाका प्रश्न है, राइफ़िल शूटिगके विचारोंके लिए मै स्वयं समाधान स्थापित नही कर सकता। हां मै यह अवश्य कह सकता हूँ कि ट्रक चलाना सीखनेके लिए दिल्ली की स्त्रियोंका बहुत बडी सख्या मे आगे आना एक बडा ही शुभ लक्षण है।

विगत महायुद्धमें स्त्रियोके द्वारा बहुत बडी सख्यामे ट्रकें और अन्य गाड़ियां चलायी गयी थी। पुरुष वर्ग युद्धके मोर्चे पर गया और स्त्रियोने लंदन आक्जिलरी अेम्बुलेन्स सर्विसके कार्योके सफलतापूर्वक सम्पादनके लिए बहुत बडे उत्तरदायित्वका निर्वाह करके अपनी योग्यताको प्रमाणित किया। उन्होने चालक (Driver) और सेवक (Attendant) दोनोंके कार्य किये और दिल्लीकी स्त्रियोंको उस उदाहरण का अवश्य अनुकरण करना चाहिये। ग्रेट ब्रिटेनकी राजधानी महानगरी की हवाई आक्रमण पूर्वोपायमे लदन आक्जिलरी अेम्बुलेन्स सर्विसने किसी भी अन्य सेवासे कम महत्वपूर्ण योग नही दिया। महायुद्ध छिडनेमे पहले अेम्बुलेन्स सेवाकी परिधिसे सबद्ध कार्योको सम्पादित करनेके लिए वहापर "लंदन अेम्बुलेन्स सर्विस" थी, लेकिन जब महायुद्ध छिड़ा तो हवाई आक्रमणोमे क्षति स्वाभाविक रूपमे परिकल्पित थी। उस समयकी आवश्यकताओको पूर्ण करनेके लिए सामान्य सेवा पर्याप्त नही थी और इसलिए किसी अन्य सहायक सेवाकी आवश्यकता थी। इसकी पूर्ति की गयी थी और लदन अेम्बुलेन्स सर्विसको आवर्द्धित करनेके लिए लंदन आक्जिलरी अेम्बुलेन्स सर्विसका उद्घाटन किया गया था।

भारतवर्षमे नयी दिल्लीमे 'रेडक्रॉस' और 'सेन्ट जान्स अेम्बुलेन्स अेसोसिएशन इन इडिया' दोनोके प्रधान कार्यालय है। इन दोनोके कार्य परस्पर सौहार्द भावसे संपादित होते है। ऐसे कार्य की महत्ताको अस्वीकार नही किया जा सकता। लेकिन सकटकालमे उसे आवर्द्धित करना आवश्यक है और इसी कारणसे जैसा कि पहले कहा गया है, मैने दिल्ली आक्जिलरी अेम्बुलेन्स सर्विसकी सस्थापनाके लिए संस्तुति की है।

अन्य देशोसे शिक्षा लेते समय हमे ध्यानमे रखना चाहिये कि आधुनिक अेम्बुलेन्स पद्धतिके प्रारम्भको अमरीका सिविलवार (अमेरिकन गृह-युद्ध) ने ही मुद्राकित किया है। उस युद्धके दौरान अस्पताल संगठनकी मुख्य विशेषता रेल्वे अस्पताल सेवा थी। मोर्चेपरसे सेनाके पीछेके औषधालय भण्डारके स्थान तक भेजनेके लिए अस्पताल ट्रेन और जहाज़ आयुर्वैज्ञानिको, नर्सों, भाण्डारो, उपकरण-यन्त्रो आदिसे सुसज्जित थे और इस प्रकार की सेवा को अन्य सेनाओ मे बारी-बारी से शुरू किया गया

था। दिल्ली इस अनुभवका फायदा उठा सकती है और वह ऐसी व्यवस्थाको प्रस्तुत रखे, जिसमे कि जब और जहा आवश्यकता पडे उसका सदुपयोग किया जा सके।

जापानी सेनामे आरोग्य रक्षक दल एक विशेष भाग था, जिसका कर्तव्य सेनाकी टुकडियोमे बीमारियोकी रोकथाम करना था। गावोके कुछ रोग जिनके युद्ध स्थलपर होनेकी सम्भावना रहती है, वे उनकी भी सूचना एकत्र करते थे जिससे कि सेना अस्वास्थ्यकर स्थानोमे दूर रहे आदि। हमारी राजधानी और अन्य स्थान भी इस आदर्शका फायदा उठा सकते है।

युद्ध क्षेत्रसे लेकर निकटतम दुर्घटना अस्पताल तक ब्रिटिश सेनामे अेम्बुलेन्स सेवाका एक अत्यन्त वैज्ञानिक एव पूर्ण सगठन सर्वत्र है। विगत महायुद्धमे उनकी 'आक्जिलरी' और नियमित–अेम्बुलेन्स सेवाओने फायर ब्रिगेड, आरक्षी, बचावदल, उच्छेदकार्य, नगरपालिका और उपयोगी सेवाए ओर अन्तिमपर अल्पपरिमाणमे सरक्षक सेवा प्रभृति अन्य सेवाओके सहयोगके साथ नागरिक प्रतिरक्षा सगठनमे प्रशसनीय कार्य किया था। हमारी राजधानी ओर दूसरे स्थान इस उदाहरणका फायदा उठा सकते है और उसीसे मिलती–जुलती पद्धतिपर वे भी अपनी अेम्बुलेन्स सेवाओका वैज्ञानिक ढगसे सगठन कर सकते है।

राजधानी और अन्य स्थानोकी अम्बुलेन्स सेवाओमे पुरुषो और स्त्रियो, लडके और लडकियोको बिना जाति और धर्मका विचार किये प्राथमिक उपचार, गृह–सेवा शिशुपालन (House Nursery) और अन्य सबद्ध विषयोके अतिरिक्त वर्तमान समयसेमे अति आवश्यक हवाई हमले से बचाव आदिका प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये।

रोगिवाहन (अेम्बुलेन्स) सेवाके कार्योके विषयमे अधिक स्पष्ट जानकारीके लिए यदि मे दो दशक पूर्व 'सेन्ट जान्स अेम्बुलेन्स एसोसिएशन' के दिल्ली के स्थित प्रधान कार्यालयसे प्रकाशित एक प्रचार–पत्रका उदाहरण दूँ तो अप्रासगिक न होगा। उसका शीर्षक था–"क्या आप प्राथमिक सहायता देनेमे योग्यता प्राप्त है ? क्या आप अस्वस्थकी सेवा कर सकते है ?" इस प्रचार–पत्रके अनेक भागोमेसे एकका शीर्षक है–"अम्बुलेन्स प्रशिक्षणका मूल्य"। यह प्रचार-पत्र इस प्रकार है :–

"यह धक्कम–धक्का : शीघ्रता उत्तेजना और गतिका युग है। हमारे शहरोमे यातायात अपेक्षाकृत अधिक तीव्र और अविरल होता जा रहा है और अत्यधिक दुर्घटनाए और वैयक्तिक आघात भी इसी कारण अधिकसे अधिक होते है।"

"चूँकि डाक्टरी सहायता सदैव प्राप्त नही हो सकती, अत: प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह उस ज्ञानको प्राप्त करे जो उसे दुर्घटना होने, गम्भीर जटिल स्थितिको दूर करने और मनुष्यके कष्टको कम करनेके योग्य बनाता है। दुर्घटना और आकस्मिक

अस्वस्थताके मामलोंमें प्रथमोपचारक डाक्टरके पहुँचने तक कुशल प्राथमिक सहायता प्रदान करता है।

जबकि दुर्घटना या आकस्मिक अस्वस्थाके कारण आपका एक साथी छटपटा रहा हो, तो उस समय आपके विचार क्या होंगे? क्या आप तटस्थ दर्शक मात्र रहेंगे? क्या आप निश्चयही दुःखी पर असहाय रहेंगे और उसके दर्दको कम करनेके लिए अथवा सम्भवतः उसके जीवनकी रक्षा के लिए आप अपनेको नितान्त अनभिज्ञ पायेंगे!"

अेम्बुलेन्समे शिक्षणका एक विषय इस प्रकार होगा:—

(१) शारिरिक अस्वस्थताके दुर्भाग्यपूर्ण क्षणोमे आपको आपके साथियो की सहायताके योग्य बनाना।

(२) यन्त्र विन्यासकी एक आश्चर्यपूर्ण वस्तु मानव—शरीरके ढाचे और उसके कार्य के विषयमे आपको अनेक अपेक्षित और ज्ञातव्य बातोकी जानकारी प्रदान करना।

(३) आपको आपकी जातिका एक अधिक सुन्दर और अधिक उपयोगी सदस्य बनाना।

मै इसमे सहमत हू कि दिल्ली सहायक रोगिवाहन (अेम्बुलन्स) सेवा १९२७ ई. मे दिये गये "सेन्ट जान अेम्बुलेन्स ब्रिगेड ओवरसीज" के सामान्य नियमोका पूरापूरा फायदा उठा सकती है। उसके अनुसार ब्रीगेड ओवरसीज के निम्नलिखित उद्देश्य है:—

(अ) जनताके लाभके लिए वैयक्तिक प्रयत्नोको एकत्र कर देनेके उद्देश्यके साथ, उपचार—अभ्यास और रोगिवाहन सेवाके लिए एक साथ मिलनेके लिए, 'सेन्ट जान अेम्बुलेन्स असोसिएशन' के प्रथमोपचार विषयमे प्रमाण—पत्र प्राप्त लोगोको अवसर प्रदान करना।

(ब) आरक्षी और अन्य अधिकारियोकी स्वीकृति प्राप्त करके जनमेलो—सभाओ आदिके अवसर पर घायलो और अस्वस्थोको प्राथमिक उपचार प्रदान करना और ऐसा करनेके लिए योग्यता प्राप्त प्रशिक्षित पुरुषो और स्त्रियोंके एक दलको सदैव प्रस्तुत रखनेका कार्य करना।

(स) देशमे या देशसे बाहर आवश्यकता पड़ने पर लोक—स्वास्थ्य सेवाके एक सहायकके रूपमे नौ, पदाति और वायुसेनाके भेजे जानेके लिए समुत्सुक, प्रथमोपचार अेम्बुलेन्स, ड्रिल अथवा उपचारके कामोमे प्रशिक्षित नागरिकोंकी भरती करना।

(द) रोगिवाहन—यातायात कार्योमे आदमियोको प्रशिक्षित करना।

(य) बीमार और घायल लोगोको सहायता प्रदान करनेके प्रत्येक साधनको विकसित और समुन्नत बनाना।

रोगिवाहन सेवक और चालक

ये लोग रोगिवाहन सेवाके मूल संचालक है। वे इस सम्पूर्ण पद्धतिकी धुरी है और उनके कार्योंकी जानकारी प्राप्त किये बिना अेम्बुलेन्स सेवाके विषयमे कोई सुस्पष्ट विचार निश्चित करना सम्भव नही होगा। मार्ग–निर्देशनके दृष्टिकोणसे मै गत महायुद्धमे लदनमे हुए कार्योको और १९४० ई,. के अन्तमे लदन छोडने तक इस सेवाके सम्बन्धमे देखे हुए कार्योको उदाहरणके लिए उपस्थित करना उत्तम समझता हूं।

लदनके अनेक भागोमे स्थापित सहायक अेम्बुलेन्स केन्द्रोपर अेम्बुलेन्स चालक और सेवक दुर्घटनाका सामना करनेके लिए स्वयको प्रस्तुत रखनेके लिए आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त करते थे। अनर्थकारी दुर्घटना और आपात और प्रबल आक्रमण के साथ आई भारी मुसीबत मे उन्होने अपनी योग्यता को प्रमाणित कर दिया। उन्होने हवाई हमला पूर्वोपायो–के सभी सुरक्षात्मक उपायोमे हाथ बटाया, उन सभी हवाई हमला–पूर्वोपायोके अभ्यासोमे भाग लिया जो अनेक विविध महानगरियो के लिए संगठित किये गये थे; इन सबसे अधिक उनके कर्तव्यके रूपमे उन्हे सहायक अेम्बुलेन्स स्टेशनो पर विशेष रूपसे उस ध्वस लीलाके समय प्रशिक्षित किया गया था। क्षति स्थानपर पहुचनेके पूर्व उनका कार्य, ठीक स्थलपर पहुचनेपर और वहासे लेकर निकटतम कैजुअल्टी क्लीरिग अस्पताल या प्रथमोपचार चौकी, रोगीके ठीक सचालन और उनकी देखभालके कार्य, तक गाडीके और रोगीके सचालन कार्योके विषयमे उन्हें प्रशिक्षित किया गया था।

स्टेशनको स्वच्छ रखनेके सम्बन्धमे, गाडीको स्वच्छ और ठीक–ठीक और चलनेके लिए प्रस्तुत रखनेके सम्बन्धमे, गाडीको ठीक क्रममे कबल या ऊनी चादर और प्रथमोपचारके भरे हुए थैले आदिके विषयमे उन्होने अपने कार्योको भलीभाति समझ लिया था। आवश्यक मामलोमे गैससे दूषित क्षेत्रमे काम करने और गैसविरोधी सूट पहननेका पूरा अभ्यास कराया गया था। प्रगतिशील पद्धतिका उनका प्रशिक्षण **सामूहिक और वैयक्तिक क्षेत्रों** दोनो प्रकार और कुछ ही महीनोकी अवधिमे ऐसे व्यक्तियोको जो सेवा (Service) मे प्रवेश पानेके पहले कुछ भी न जाननेवाले थे उस सेवाका विशेषज्ञ बना दिया गया। फ्रासके समर्पणके पश्चात उनकी कार्यपद्धतिमे अधिक चुस्ती आ गयी और अेम्बुलेन्स सेवक और चालक–दोनोने प्रत्येक सभावित घटनाके लिए स्वयको पूर्णत. तैयार रखा था। लदनकी आक्ज़िलरी अेम्बुलेन्स सर्विसने ग्रेट ब्रिटेनके समस्त भागो और साम्राज्य मे अेम्बुलेन्स सेवाके लिए प्रकाशस्तम्भका कार्य सम्पादित किया है।

नागरिक प्रतिरक्षाका संगठन, जैसा कि आजकल किया जा रहा है, मे भारतीय

राजधानी और अन्य स्थान भी उस सेवा द्वारा प्राप्त अनुभवोका पूरा पूरा लाभ उठा सकते है।

'अेम्बुलेन्स सेवक' उसी प्रकार वैसे एक नौकर नही है जिस प्रकार कि वह चालकका शिक्षक नही है । वह एक मित्र और एक चिन्तक है, अपने कधोपर उत्तरदायित्वका भार वहन करनेवाला वह सही अर्थोमे एक मनुष्य और एक निर्देशक है । उसकी भूलोसे उतनी ही अधिक जाने जा सकती है, जितनी अधिक कि उसकी सावधानीपूर्वक की गयी देखभाल और रक्षाकार्योसे सफलतापूर्वक बचायी जा सकती है। रोगिवाहन (अेम्बुलेन्स) चालक उसके काम मे एक सच्चा समभागी साझेदार है । यद्यपि सावधानीपूर्वक चालन उसका प्रथम और प्रधान कर्तव्य है, अेम्बुलेन्स सेवक और चालक दोनोके कर्तव्योकी जानकारी यहा की ही भाति सभी जगहोमे सभी अेम्बुलेन्स सेवाकी जानकारी के लिए अत्यावश्यक है।

एक अेम्बुलेन्स सेवक के कर्तव्य

पुरुष या स्त्री-जो भी कोई सेवकके रूपमे हो, अस्वस्थ व्यक्ति के उसकी अेम्बुलेन्समे रख जानेमे लेकर अस्पताल या प्रथमोपचार चौकी तक पहुचने और वहाके अधिकारियोको उसे देने तकके समय की देखरेखके लिए उत्तरदायी है । काम और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है यदि दुर्घटनास्थलसे प्रथमोपचार चौकी या हताहतो को हटाने–उपचार करने और (कैजुअल्टी क्लीअरिग) सम्भालनेके अस्पताल पर्याप्त दूरी पर हो; ऐसी अवस्था में अेम्बुलेन्स सेवकका उत्तरदायित्व अनेक रूपमे बढ जाता है।

यह ध्यान रखना चाहिये कि प्रथमोपचारक अथवा किसी अस्पताल या किसी चौकी-पर सहायक परिचार अधिकारी और रोगिवाहन सेवकका कार्य अपेक्षाकृत अधिक भिन्न प्रकारका है ।उसके कर्तव्योमे एक प्रमुख कार्य यह भी है कि स्टेशनसे बाहर जाते समय उसे ऊनी चादरोको प्रस्तुत करना और उन्हे स्ट्रेचरोपर रखना और उनका ठीक–ठीक हिसाब रखना। यदि मिल सके तो पेय और गर्म पानीके बोतलोको भी तैयार रखना उनके कार्योमे सम्मिलित है। दुर्घटनास्थल पर पहुचनेपर उससे अपेक्षा नही की जाती की वह हताहतो (Casualties) को अेम्बुलेन्समे रखे। यह कार्य स्ट्रेचर दलके लोगोका है और यदि आवश्यकता आ पड़े तो उससे वह काम भी करनेकी अपेक्षा की जा सकती है और जहा तक सहायता देनेका प्रश्न है उसे उस कामके लिए सदा प्रस्तुत रहना चाहिये । सामान्य रूपसे दुर्घटनास्थलपर पहुचनेपर उसका काम अेम्बुलेन्सको पार्क करना और अस्वस्थ व्यक्तिके आनेकी प्रतीक्षा करना है। दुर्घटनाके ग्रस्त रोगियोकी व्यवस्थाके विषयमे वह उत्तरदायी नही है । यह मामला प्रथमोपचार दलके नेता या डाक्टर (जो घटनास्थल पर उपस्थित है) का है, लेकिन वह दलके नेता अथवा अन्य आदमियोसे संक्षेपमे अवश्य ही विनिश्चय कर सकता है और उसे

स्वय विशेष रूपसे जानना चाहिये कि अस्वस्थ व्यक्ति को किस प्रकारका आघात लगा है ताकि यात्राके मध्य किन–किन अव्यवस्थाओंका सामना करना पड सकता है उसे मालूम हो। अेम्बुलेन्सके दुर्घटना–स्थलको छोडनेके पहले सेवकको स्ट्रेचरमे जुडे हुए सुरक्षात्मक पट्टेकी जाच कर लेनी चाहिये। यदि सेवक अस्वस्थ, घायल व्यक्ति के बारेमे एक संक्षिप्त विवरण बना ले और उसे उससे सलग्न कर दे, तो यह अस्पताल या चौकीके मेडिकल अधिकारियोके लिए एक बड़ी सहायताकी वस्तु होगी। विवरण मे (यदि ज्ञात हो तो) नाम और पता और आघातके रूप आदि समाहित है।

उसका शान्त और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण अत्यन्त आवश्यक है। अस्वस्थ व्यक्ति के शालीन ढंगसे संचालनसे आघात, धक्केका खतरा बहुत कम हो जाता है। ग्राम्यता–उदाहरणके रूपमे–स्ट्रेचरको खटखटाना अनावश्यक अस्वस्थताका कारण है। पुन., अस्वस्थ रुपमे– व्यक्ति को गर्म रखना, आरामदायक रखना, शान्त, सुखद और पुन समाश्वासित रखना, अम्बुलेन्स यात्रामे आधेसे अधिक युद्ध जीत लेनेके बराबर है। वस्तुत अधिकाश स्ट्रेचरोको सीधा रखा जाता है, पर कुछ अस्वस्थोको सिर या कधेका तकिया लगाकर थोड़ा ऊचा उठा देनेसे अधिक आराम मिलता है और कुछ जैसे कि जब्राड़ेमे मोच खाये हुए लोग भी विशेष सावधानी की अपेक्षा रखतेहै। सामान्य रूपसे पेय लाभकारी है, पर उन्हे अल्प प्रमाण मात्रामे दिया जाना चाहिए। उन्हे किसी मूर्च्छित व्यक्ति को अथवा अन्तःव्रणवाले व्यक्तिको नही देना चाहिये यद्यपि ऐसे मामलोमे उनके मुखोको तरल रखना चाहिये। किसी अस्वस्थ व्यक्तिसे बात करना सदैव सुखकारी है, लेकिन सेवकोको ऐसा करते समय अत्यन्त सावधान रहना चाहिये। उसे न तो उदास रहना चाहिये और न मूर्खतापूर्ण ढगसे प्रसन्न और न उसे बार–बार अस्वस्थ व्यक्ति मे बात ही करनी चाहिये।

यात्राके दौरान बिना उत्तेजना या क्रोधके उसे अस्वस्थ व्यक्ति के चेहरेके रगको लगातार शान्तिपूर्वक देखते रहना चाहिये, अस्वस्थ व्यक्तिके लिपस्टिक लगाये रहने अथवा उसी प्रकारकी कोई अन्य बनावटी वस्तुके लगाये रहने अथवा मद्धिम प्रकाश रहनेकी स्थितिमे यह उतना आसान नही है। उसे समय समय पर, बार–बार नही, उसकी नाड़ीकी गतिको को भी देखना चाहिये। अच्छी गतिवाली नाड़ीका अर्थ है कि प्रत्येक वस्तु ठीक चल रही है। सर्दी लगने, दर्द, मतली, मूर्च्छा आदि शिकायतोका ध्यान रखना चाहिये और रक्त–स्रावकी घटनाके मामलेकी ठीकमठीक देखभाल करनी चाहिअे। किसी पट्टी बध से रक्तस्राव असामान्य नही है और ऐसी स्थितिमे आवश्यक है कि एक और पट्टी बंध और उनके पैढको बाध दे। भयकर रक्तस्रावको यो ही नही छोड देना चाहिये। एक साभान्य नियमके रुपमे अेम्बुलेन्समे घावपर लगी खपच्ची अथवा रक्तस्राव बन्द (टूर्निके) नामक यन्त्र के साथ छेडछाड़ करनेकी कभी सलाह नही दी जा

सकती। परिस्थितिवश यदि यात्रामे सामान्य रूपसे १५ मिनटसे अधिकका समय लग जाय, तो रक्त- स्राव बन्द करनेका यन्त्र ढीला किया जा सकता है। किभी भी भाग के गतिहीन हो जानेके खतरेको दूर करनेके लिए ऐसा करना अत्यन्त आवश्यक है। मूर्च्छित घायलोको विशेष देखभालकी आवश्यकता है जिससे कि कही ऐसा न हो कि ऐसे व्यक्ति की चेतना के लौटनेके साथही किसी अप्रत्याशित स्पन्दन और दुर्भाग्यपूर्ण परिणामका साथ हो जाय।

किसी गैस से आच्छादित व्यक्तिकी देखभाल करते समय सेवकको अपनी रक्षाके लिए पर्याप्त यत्न करना चाहिये। उसे फेफडोके उदघाटन और विषके कारण उनके पूर्णतः शान्त पड जानेके मामलोको अत्यन्त प्रतीतिपूर्वक देख लेना चाहिये और उसे अस्पताल या उपचार चौकीपर उस स्थितिके विषयमे सूचित करना चाहिये कि कब ऐसा हुआ, किस प्रकारकी गैसका प्रयोग हुआ था, उद्भासनकी अवधि कितनी रही आदि। एक नियमके रूपमें किसी ऐसे रोगीके ऊपरी वस्त्रोको जो कि गैसके कारण विदूषित हो गये हो– अेम्बुलेन्समे चढानेके पहले ही उतार देना चाहिये, लेकिन अन्तः वस्त्रोका उतारना स्वय अेम्बुलेन्समें ही सम्भव हो सकता है।

अेम्बुलेन्स सेवक के ये कुछ सामान्य कर्तव्य है। इनके सपादनमे उसे प्रत्येक बात के पूर्ण विवरणके विषयमे पूर्णतः सावधान और सूक्ष्म दृष्टिवाला होना चाहिये। उसके सम्पादनके लिए कुछ और विशिष्ट कार्य है। घायल व्यक्तिके परिवहनमे उठनेवाली सभवित जटिल स्थितिके विषयमे उसे स्पष्ट जानकारी रखनी चाहिये। जैसा कि मि. ई. डी. इरविन, मेडिकल आफिसर, शिप्ले, यौर्कने गत युद्धमे लिखे गये अपने एक लेखमे लिखा है कि प्रमुख जटिल समस्याओमे आघात, उल्टी, रक्तस्राव, प्रतिक्रियात्मक रक्तस्राव, जीभके उलट जानेसे उत्पन्न घुटन, रोगिवाहन मे होनेवाली क्षति, मस्तिष्कीय उत्तेजना और प्रमाद सम्मिलित है।

आघात या धक्केके मामलेमे यह याद रखना चाहिये कि अस्वस्थ व्यक्ति आघात लगनेके बहुत समय पहलेसे अनाच्छादित या अपमोचित पडा है, तो द्वितीय आघातके स्वय लगनेकी प्रकट सम्भावना है। यदि निषिद्ध न हो तो उष्णता, पुनः समाश्वासन और गर्मपेय उसके लिए उपचार है। विशेष रूपसे ऐसे बीमार व्यक्तिके लिए, जिसने कि रक्त निगल लिया है, अथवा जिसके सिरपर चोट लगी है अथवा जिसे गहरा धक्का लगा है, पुनः उल्टी आ सकती है। आहत मरीज़के सिरको नीचे झुकाकर या उसे एक ओरको नीचे करके उसकी सहायता करना आवश्यक ह।

विशेष रूपसे मूर्च्छित व्यक्तिके मामलेमे जो उल्टी कर सकता हो अथवा घुटन महसूस कर सकता हो आवश्यक प्रथमोपचार साधनके रूपमे हाथके द्वारा गलेसे उल्टीके पदार्थोको निकाल देना आवश्यक है। हड्डीके टूट जाने (Fractured Jaw) के मामलेमे आवश्यक देखभालकी आवश्यकता है, क्योंकि पट्टी बधन उल्टी के पदार्थको

स्पष्ट रूपसे रोक देता है, अतः पट्टी बंधनको आहिस्तेसे ढीला कर देना चाहिये और मुखसे उसे धीरेसे अलग कर देना चाहिये।

रक्तबंध (Tournique) 'टूरनिके' के फिसलनेके कारण रक्तस्राव नितान्त असम्भव है। मामलेके अनुरूप पुन. लगाना या कसकर बाध देना उपचार हो सकता है। प्रतिक्रियात्मक रक्तस्राव सामान्य स्थितिमे सुधारके परिणामस्वरूप होता है, जोकि रक्तचापके कारणसे रक्तवाहिका नाडियोसे आतच या चकत्तेके द्वारा निषूचितसे नही होता।

सामान्य रक्तस्रावके लिए उपचार स्वरूप पुलिन्दा और पट्टी बध आदिका प्रयोग किया जा सकता है।

मुखकी हड्डी टूटे व्यक्ति या मूर्च्छित व्यक्तिमे जीभके उलट जानेके द्वारा होनेवाली घुटनको तुरन्त लक्षित करना चाहिये। एक मामलेमे मुखके कोठेके नीचे ऊगलीके द्वारा दबाकर मुखकी हड्डीको अपने आगेकी ओर करना चाहिये और दूसरी ओर प्रथमोपचारके पट्टी बधनको खोलकर सहारा देना चाहिये और यदि सम्भव हो तो सिरको नीचे झुका देना चाहिये। आहिस्तेसे जीभको आगेकी ओर उलटाकर ठीक रूपमे कर देना स्वयमे आवश्यक होगा।

स्वय अेम्बुलेन्समे भी आघात लग सकता है और ऐसी स्थितिमे आघातके अनुरुप ही उपचार किया जा सकता है। उस सम्बन्धमे अेम्बुलेन्स सेवकको झकझोरने या झटका देनेवाली गतिको कम करनेके लिए विशेष सावधानी लेनेकी बातपर ध्यान देना चाहिये और जिस गतिपर गाडी चले वह मरीजकी सुरक्षाके लिए बहुत ज्यादा नही होनी चाहिये। ऐसी स्थितिमे चालक आदेश प्राप्त करता है, पर किसी स्थितिमे यदि सेवक चालकको सीमासे ऊपर गतिपर गाडी चलाते हुए पाये, तो वह उसे धीमी गतिसे चलानेके लिए कह सकता है।

मस्तिष्काघात और मस्तिष्क उत्तेजना जो गम्भीर सक्षोभ या धक्केके परिणामस्वरूप होता है, का सामना किया जा सकता है, यह हो सकता है कि बचाव कार्यके कार्यान्वित होनेके अनेक घटे पहले ही से कुछ मरीज घायल हो।

इस स्थितिमे मरीज संवेदनाशील, उत्तेजित और बेचैन हो जाता है। अेम्बुलेन्स सेवकको मरीजको आशु क्षुब्ध होनेसे रोकनेका प्रयत्न करना चाहिये और यदि आवश्यकता हो, तो वह चालकसे भी सहायता ले सकता है। गाडी मे प्रमाद भी प्रकट हो सकता है। ऐसे मामलोमे सुदृढ और सहानुभूत्यात्मक व्यवहार अत्यावश्यक है।

रोगिवाहन (अेम्बुलेन्स) चालक के कर्तव्य

अेम्बुलेन्स चालक और सेवकके अनेक कर्तव्य एकसे ही होते है। दूसरे (सेवक) की ही भाति चालकसे भी प्रथमोपचारके ज्ञानकी अपेक्षा की जाती है और मरीजके

प्रति अपने कर्तव्योका पालन सफलतापूर्वक संपादन करनेमे उसे सेवककी सहायता करनी चाहिये। उसके लिए शान्त, विश्वासपूर्ण और सहानुभूतिपूर्ण ढंग और भलमनसाहत उसी प्रकार आवश्यक है, जिस प्रकार कि एक अच्छी नर्स या सेवक के लिए।

गैससे विदूषित हताहत व्यक्ति के सिलसिलेमे अेम्बुलेन्सको ऐसे स्थानपर खड़ा करना चाहिये जहासे उसपर अत्यल्प प्रभाव पडे। ऐसे मामलेमे जबकि उसे गैससे विषाक्त क्षेत्रमेंसे होकर जाना हो, तो उसे अपना गैसमास्क पहन लेना चाहिये और उसे उसकी फिटिंगकी भी जांच कर लेनी चाहिये। उसे अपना एन्टी–गैस सूट भी पहन लेना चाहिये, उसे स्वय सावधानी रखनी चाहिये और सेवककी भी आवश्यक सावधानी रखनेमे सहायता करनी चाहिये जिससे कि अेम्बुलेन्सका भीतरी भाग यथासम्भव अत्यल्प प्रभावित हो।

चालकको अत्यन्त सावधान और जाग्रत रहना चाहिये और उसे विशेषत: गाडी को पार्क करने और मरीज़ को बाहर और भीतर लाने–ले जानेके सम्बन्धमें सेवकके निर्देशपर सहकारीके रूपमे काम करना चाहिये। ये उसके कुछ सामान्य कर्तव्य है, यद्यपि उसका प्रमुख कर्तव्य अेम्बुलेन्सके चालकसे ही सम्बन्ध है।

उसे चलानेमे विशेषज्ञ होना चाहिये और स्ट्रीट लाइट और सिगनलका उसे पूरा ज्ञान होना चाहिये। गति उसका मुख्य प्रश्न है। समय-समय पर और स्थान–स्थान पर चालनसे सम्बद्ध प्रकाशित सम्पूर्ण नियमोको उसे अच्छी तरह जानना चाहिये। सेवकके द्वारा गतिको धीमी करनेके लिए कहे जाने पर उसे तुरन्त ऐसा करना चाहिये। उसे झटका देनेवाली गतिकी अवहेलना करनी चाहिये। उसे विशेष सावधानी रखनी चाहिये। गाडी को पीछे या अगल–बगलसे कोई क्षति न होने पाये।

चालकको तमावरण की स्थितिमे गाडी चलानेका अच्छी तरह अभ्यास होना चाहिये। जब तक कि वह चालक–चालिका रातमे चलानेकी परीक्षा उत्तीर्ण नही कर लेता लदनमे कोई भी चालक योग्य नही माना जाता। ये परीक्षाये लंदन काउन्टी काउन्सिलकी ओरसे ली जाती थी और प्राय: इन्हे उत्तीर्ण करना कठिन होता था। मैने देखा है कि परीक्षक चालकको बात करते हुए भ्रममे डालनेका प्रयत्न करते है।

उसके कर्तव्योमे उसका अनुभव भी आता है, उसे सर्विस–श्वास–यन्त्र लगाकर गाडी चलाने और पर्याप्त नर्सिग और मेडिकल अनुभव भी होना चाहिये जिससे कि वह मेडिकल कापर्सके लोगोके साथ हवाई हमलेके शिकार लोगोकी मदद करनेके योग्य हो सके। जिस शहर या नगरमे वह काम कर रहा हो, उस नगर या शहरका अच्छा ज्ञान अेम्बुलेन्स चालकको अवश्य होना चाहिये। अपने ज्ञानको अधिक उपयुक्त बनानेके लिए उसे अेम्बुलेन्सको समय–समयपर अभ्यासके लिए ले जाना चाहिये। उसे अस्पताल और प्रथमोपचार चौकियोकी स्थिति के विषयमे

स्पष्ट ज्ञान और विचार बनाये रखना चाहिये। उसे अपनी अेम्बुलेन्स गाडीकी मशीन को पूर्णत. सुस्थिर रखना चाहिये और यदि कोई भी ख़राबी हो, तो उसे उसकी तुरन्त सूचना देनी चाहिये। उसे एक्शन सूचना (Action waring) मिलनेके तीन मिनटके अन्दरही अेम्बुलेन्सको बाहर निकालनेके लिए प्रस्तुत रहना चाहिये।

संक्षेपमे हम कह सकते है कि जैसे अेम्बुलेन्स सेवकका कर्तव्य मरीजके प्रति है ठीक वैसे ही अेम्बुलेन्स चालकका कर्तव्य गाडीके प्रति है।

हवाई हमलेसे पूर्वोपायके अभ्यास

हमारी राजधानीके विविध भागो और अन्य स्थानोमे समय–समयपर हवाई हमलेसे सावधानीके लिए अभ्यास होना चाहिये औरस्वयसेवकोको जब ऐसा करनेके लिए बुलाया जाय, तो उन्हे इस प्रकारके प्रत्येक प्रयत्नमे उपस्थित रहना चाहिये। ऐसी उपस्थितिके द्वारा वे युद्धकालीन स्थितिका बहुत ही उपयोगी अनुभव प्राप्त करेगे। ऐसे अभ्यासोमे सभी अधिकारियो (आफिसर्स) और स्वयसेवकोको सहयोग देना चाहिये। अपने स्वयके छोटे अभ्यासोको संगठित करनेके लिए विशिष्ट स्टेशनो (चौकियो) पर नियुक्त स्वयसेवको को भी सुविधाए प्रदान की जानी चाहिये।

उस स्थिति मे यह याद रखना चाहिये कि प्राप्य गाडियोकी सख्या सीमित हो सकती है और ऐसा होने पर वे स्वयसेवक जो ऐसा कर सकनेमे समर्थ है अपनी स्वयकी मोटर गाडी का यथासम्भव उपयोग कर सकते है।

लदनमे किसी स्वयसेवकको अपनी कारका प्रयोग करनेके पहले यह आवश्यक था ––

(१) कि इन्श्योरेन्स पालिसी इन्श्योरेन्स कम्पनीके द्वारा यह प्रमाणित करते हुए कि इस कार्यके लिए प्रयोगमे लाते समय गाडी ढकी हुई थी––पृष्ठाकित थी और

(२) देने योग्य विशेष विवरण यथा हार्सपावर, पजीयन सख्या, इन्श्योरेन्स कम्पनीका नाम और पालिसी सख्या–प्रमुख कार्यालय, लदन अेम्बुलेन्स सर्विस, काऊटी हाल, साउथ ईस्ट लदन–१ को भेज दिये गये थे।

जैसा कि पहले कहा गया है कि हमारी राजधानी और अन्यस्थान भी लदनकी इस प्रक्रियाका अनुवर्तन कर सकते है।

इसके अतिरिक्त लदनकी स्थितिके ही समान भारतीय राजधानी और अन्य स्थानोमे नकली हवाई हमले के अभ्यास हो सकते है। इन मे लन्दन के समान स्वयसेवक दबे हुए हताहतो की देख भाल, सम्भाल करने को ऐसा ही ज्ञानदायक पायगे जैसा कि वह दिलचस्प बात है। उस दिन प्रथमोपचार

प्रशिक्षण, गैस आक्रमणके विरोधमे रक्षा पर व्याख्यान अथवा हवाई हमलेसे सावधानी कार्यका सगठन आदिके सम्बन्धमे प्राप्त समस्त जानकारीका पूर्ण उपयोग करना चाहिये।

सैन्य – संचालन

इस शब्दसे हमारा आशय चालक और सेवकके साथ रोगिवाहन (अेम्बुलेन्स) का रोगिवाहन केन्द्र (अेम्बुलेन्स स्टेशन) से दुर्घटना–स्थल तक और वहासे प्रथमोपचार चौकी तक हताहतोके (कैज्युअल्टी) अस्पताल तक और पुन. अेम्बुलेन्स स्टेशनपर वापस आने तकके गमनागमनसे है।

जैसा कि ग्रेट ब्रिटैनमे गत महायुद्धके दौरान समझा गया था–विशेष रूपसे इस गमनागमनसे सम्बन्धित समस्याए सैन्य सचालनके परिसरमे आती है। इसमे अनेक प्रकारकी कठिनाइया आयी, क्योकि अनेक अज्ञात अगो ओर तथ्यो के साथ निपटना पडता था।

हमारी राजधानीकी तरह हमारे देशके शेष भागको सैन्य सचालनकी समस्याओका आभ्यासिक अनुभव नही है। गत दो महायुद्धोके दौरान हमारे देशने अपने ढगसे अपना योग दिया, पर सौभाग्यसे युद्ध हमारी भूमिपर नही हुआ। इसीलिए इस सम्बन्धमे हमे दूसरोके अनुभव पर आश्रित रहना है। ग्रेट ब्रिटेनमे क्या घटनाए घटी, इसका लेखकको वैयक्तिक अनुभव है और इसी कारण वह इस समस्यापर लिखते समय उसको आधारके रूपमे गृहीत करता है। यहा प्रसगत. इतना और जोडना आवश्यक है कि चूंकि प्रथम महायुद्धमे हवाई शक्तिका इतना अधिक विकास नही हुआ था, इग्लैण्डने जो अनुभव द्वितीय महायुद्धमे प्राप्त किया, जबकि हवाई युद्ध उस समयका क्रम हो गया था, वह ही एक मात्र अनुभव है जो हमारी राजधानी और अन्य स्थानोका मार्गदर्शन कर सकता है। यहा यह स्पष्ट कर देना चाहिये कि इस बात की सम्भावना हो सकती है कि हमारे समयका कोई भी युद्ध नाभिकीय युद्ध की ओर ले जा सकता है और वह भी मुझे समस्यामूलक लगता है कि हमारी भारतकी उत्तरी सीमा पर ऐसा हो सकता है। परम्परासे आगत पद्धतिकी हवाई बमवर्षाको असगत नही कहा जा सकता और यह वही अग है, जिसकी राजधानी या अन्य स्थानो पर नागरिक प्रतिरक्षाका सगठन करते समय विशेष सावधानी अवश्य रखनी पडेगी।

लदनमे विगत महायुद्धके दौरान सैन्य–सचालन (Mobilisation) ने अनेक कठिनाईयोको उपस्थित किया था, क्योकि अनेक अज्ञात उपादान अवयवो के साथ व्यवहार करना पडता था। इसे न केवल प्रधान महत्वका अग समझा जाता था, बल्कि इसे पूणत. आवश्यक समझा जाता था और प्रत्येक व्यक्तिको आफिसर द्वारा प्रदत्त आदेशोका अविलम्ब पालन करना पडता था। दिल्ली और उसीकी तरह हमारे

देशके शेष भागको भी इस संचालनकी समस्याके सम्बन्धमें उसीका पालन करना है। साज–सामानों, श्वासयन्त्र, और पारीके परिवर्तन और काम पर आनेके समय आदिके विषयमें लदनमें स्वयंसेवकोंको आवश्यक आदेश दिये गये थे। अर्द्ध–वैतनिक और अवैतनिक स्वयसेवकोंके लिए भी वहा आदेश दिये गये थे। जब वे आ सकते थे, उपस्थित हुए और उन्हे उस समयके अेम्बुलेन्स स्टेशन आफिसर, स्थानीय आक्जिलरी सब–आफिसरको आपद्कालमें उपस्थित होनेके योग्य हो सके–सूचित करनेको कहा गया था।

लदन आक्जिलरी अेम्बुलेन्स सर्विसमें छ. स्ट्रेचर, एक प्रथमोपचार थैला, आठ कम्बल, और अन्य आवश्यक साधन, गैसके विरोधमें बचावके लिए पहननेके दो सूट, प्रत्येक अेम्बुलेन्स में और प्रत्येक कारमें एक सूट आवश्यक गमबूटके साथ रखे गये थे। यह कपड़े स्वयसेवको द्वारा कार्यके समय पहने जाते थे, जब तक कि अन्यथा आदेश न मिला हो, पर स्टेशन छोड़नेके बाद स्वयसेवक इन्हे नही पहनता था। प्रत्येक गाडीके सदस्यो के सम्बन्धमें न कि वैयक्तिक स्वयसेवकोंके सम्बन्धमें ये कपड़े प्रदान किये गये थे। यही स्थिति झिलमटोप और गैस मास्क के सम्बध में नही थी क्यो कि वह व्यक्तिगत स्वयमेवकको दिये गये थे।

अेम्बुलेन्समें परिवहनके मध्य घायल व्यक्तिको किसी प्रकारकी आवश्यक सावधानी प्रदान करनेमें अेम्बुलेन्स सेवकके प्रयोगके लिए प्रत्येक आक्जिलरी एम्बुलेन्स के लिए प्रथमोपचारके साधनोंसे भरा हुआ एक थैला अेम्बुलेन्स पर ले जाया जाता था।

प्रत्येक थैले (Satchel) की अन्तर्वस्तु निम्नलिखित प्रकार की थी :–

त्रिकोणात्मक पट्टीबधन (Triangular Bandages)	: ६
पट्टियां, ढीली बुनी हुई (open weave)	६
Minesdiessing (मध्यम साइजका)	: १२
काटन ऊन, १ औसका पैकेट	: ६
काटन लीननकी नरमपट्टी (cotton lint) · १ औसका पैकेट	: १
टूरनिके (Tourniqnet) (St. John)	: १
कैचिया ५" (तेज धारवाली)	: १
कैचिया ५"(ठूटल) (Blunt Point)	: १
सेफ्टीपिन (Safety Pins,) Cards of 6	। ३

प्रथमोपचारके साधनोंको रखनेके लिए थैलेमें उपर्युक्त वस्तुओंके अतिरिक्त जो अेम्बुलेन्समें ले जाये जाते है, एक अेम्बुलेन्स स्टेशनको लदन में निम्नलिखित साधन प्रदान किया था :–

काष्ठखण्डके साथ जुडनारो, बोल्टो, स्कूओ (Screws) वाशर और एन्गिल आयरनके साथ बीस स्ट्रेचर सेट ।

स्ट्रेचरको जोड़नेके लिए निम्नलिखित औजार (Tools) आवश्यक थे :–

१ – आरी (Wood Saw)

१ – तीन अतिरिक्त ब्लेडवाली आरी (Hacksaw with 3 extra Blades)

४ – पाने (Spanners)

२ – गिलटिया या बरमी (Gimlets)

२ – हथौड़े (Hammers)

२ – स्क्रू ड्राइव्हर (Screw Drivers)

आक्जिलरी अेम्बुलेन्स स्टेशनपर पहुचने के तुरन्त बाद स्ट्रेचर को बनाने वाले सब भाग जुडनार एकत्र कर लिये जाते थे ओर सहायक एम्बुलेन्स मे लगाकर स्ट्रेचर तैयार रख दिये जाते थे इस पद्धति या उपाय (Method) के विषय में प्रदत्त शिक्षा उनके प्रशिक्षणकी एक अग थी ।

१ विरंजन चूर्ण (पीपा) Cwt. bleach Powder (drum)

१ फिलिप्स के लदन का २" मानचित्र (Phillips 2" map of London)

१ एटलस निर्देशक (Atlas guide)

लंदन मे हथियार बनानेवाली जगहो का ६" साइज का नक्शा (Ordnance survey of London) (6") यदि प्राप्त हो सके (if available)

घटनापुस्तिका (Occurrance book)

स्टेशनरी की पूर्ति

गैस से बचाव के कपडे (Protective clothing)

गमबूट (Gumboots)

इस्पाती क्रिलमटोप (Steel Helmets)

अधियाचन पुस्तिका (Requisition book)

उपस्थिति पुस्तिका (Attendance Book)

टायरका दबाव देखनेवाला यत्र (Tyre Pressur Gauge)

लेबिल (अेम्बुलेन्स), वार्निश और ब्रुश जो आक्जिलरी अेम्बुलेन्स स्टेशनकी निर्धारित गाडियोके लिए पर्याप्त है । ये गाड़ियोके पीछे/सामने या बगलमे बाध दिये जाते थे और कारोके आगे या पीछे, या और अच्छी तरहमे बाधने करनेके बाद उनपर वार्निस लगा दिया जाता था ।

प्रत्यक स्वयसेवक (जैसेकि प्रत्येक व्यक्ति वैतनिक या अवैतनिक रूपमे काम करते हुए जाने जाते थे) को जबकि वह किसी आक्जिलरी अम्बुलेन्स स्टेशन पर जाता था एक कार्यावधि श्वास यन्त्र बाध दिया जाता था और जब उसकी कार्यावधि समाप्त हो जाती थी, तब वह उसे वही छोड़ देता था । स्वयसेवकोके नाम अलग–

अलग स्थानो पर लिख दिये गये थे और उनके श्वास–यन्त्र उन्ही उचित स्थानोंपर लटकते रहते थे।

युद्धके प्रारम्भिक चरणोमे ही यह इगित किया गया था कि काऊंसिलके द्वारा वितरित– नागरिक कार्यविधि श्वास यत्र (Civilian Duty Respirator) सरकार द्वारा वितरित नागरिक श्वास यन्त्रका मुकाबला नही कर सकते थे, और यदि कोई स्वय सेवक इनमेसे एकको अपने स्थानीय अधिकारीसे प्राप्त नही कर लेता था, उसे उसके लिए तुरन्त आवेदन करना आवश्यक था।

लदनमे सभी स्वयसेवक जब किसी विशिष्ट युद्ध–कालीन अेम्बुलेन्स टेस्शन पर नियुक्त किये जाते थे, तो सर्वप्रथम ही उन्हें उनके कार्यके घंटो, जितनी देर उन्हें कार्य करना था है, को सूचित कर दिया जाता था। वे उस अनिर्धारित काल तक काम करनेके लिये बाध्य नही थे और उनके लिए उतनी अभ्यासके योग्य जितनी जल्दी हो सके सप्ताहमे एक दिनकी पाली बदलनेके लिए प्रबन्ध किये गये थे ओर यह भी कि यदि सम्भव हो, तो सात दिनोमे एक दिनका आराम भी ले सके। उस समयसे लेकर फ्रास के हारने के समय तक स्वयंसेवकोने आठ घटेकी पालीमे काम किया पर उसके कुछ समयके बाद यह काम करनेकी अवधि चार घटे और बढा दी गयी थी और इस प्रकार बारह घटेकी पालीकी पद्धतिका प्रारम्भ हुआ । तीन पाली–पद्धतिमे समय इस प्रकार था :–

७–३० बजे सुबह	३–३० बजे दिन
१०–३० बजे रात	७–३० बजे सुबह
३–३० बजे दिन	१०–३० बजे रात

दो–पालीवाली पद्धतिका समय इस प्रकार रहता था– (अ) ८ बजे सुबहसे ८ बजे रात तक तथा (ब) ८ बजे रातमे ८ बजे सुबह तक।

अेम्बुलेन्स स्टेशन आफिसर और लोकल आक्जिलरी आफिसर तथा लोकल आक्जिलरी सब–आफिसर द्वारा आवश्यकतानुसार परिस्थितिको मद्दे नज़र रखते हुए अेम्बुलेन्स ड्राइवरो तथा कार्यकर्ताओ को एक पालीसे दूसरी पालीमे स्थानान्तरित किया गया। यह परिवर्तन प्राय तभी किये गये जब विभिन्न पाल्यियोमे पूरे समय तक काम करनेवाले स्वयसेवकोकी सख्याए असमान थी।

थोडे समय तक काम करनवाले स्वयसेवक तभी तक काम करते थे जब तक वे कर सकते थे तथा ऐसी हालतमे उन्हे अेम्बुलेन्स स्टेशन आफिसर, लोकल अक्जिलरी आफिसर या लोकल आक्जिलरी सब–आफिसरको सूचित करना पडता था कि उनके लिए सकटकालमे कौन–सा समय उपयुक्त हो सकेगा।

स्वयसेवको द्वारा उपस्थिति पजिका मे अपने नामके साथ–साथ काम पर आनेका समयका भी उल्लेख करना पडता था। कौसिलकी परम्परा यह थी कि यदि कोई स्वय-

सेवकको सिर्फ ५ मिनटकी देर होती तो कोई बात नही थी लेकिन पाच १० मिनट तक देर होनेपर उसे हस्ताक्षर करनेके लिए स्टेशन आफिसर की अनुमति लेनी पडती थी और यदि उसेदस मिनटसे भी अधिक देर होती तो उसका नाम उच्चतर अधिकारियो के पास भेज दिया जाता था तथा सम्बन्धित व्यक्तिसे देरसे आनेके लिए जवाब तलब किया जाता था ।

निर्धारित गाडियोके सगठन के बारेमे लदन काउन्टी काउसिल द्वारा आदेश निकाले जाते थे तथा यह बताया जाता था कि सुपरिटेण्डेट अेम्बुलेन्स स्टेशन आफिससे लोकल आफिजलियरी सब–आफिसर्सके नियन्त्रणमे जो गाडिया अेम्बुलेन्स स्टेशनोमे होगी उनकी लिस्ट प्रस्तुत की जायेगी । उक्त लिस्टमे सम्बन्धित गाडियोके रजिस्टर्ड नम्बर, मालिको के नाम एव पता, साधारणतया जहा गाडिया रखी जाती है वहाका पता भी होता था तथा उसमे यह भी उल्लेख होता था कि सकटकालीन स्थितिमे गाडियो के मालिक अपनी गाडी अेम्बुलेन्स स्टेशनपर पहुचा सकेगे अथवा नही ।

उक्त अधिकारियोकी यह जिम्मेदारी होती थी कि वे अपने अेम्बुलेन्स स्टेशनासे उन सम्बन्धित गाडियोको स्वयसेवक भेजकर मगा लिया करे, जो पहुचायी नही जा सकी हो तथा गाडी लेते समय गाडीके मालिकोको पावती (रसीद) दे दी जाती थी ।

परिवहन

काम करनेवाले जो स्वयसेवक स्टेशनके नजदीक नही रहते थे, उनके आनेजानेके लिए काउसिल द्वारा प्रबन्ध किया जाता था । उसके लिए विभिन्न पालियोमे सुविधानुसार यथासमय कारस (मोटरे) एव गाडियोका प्रबन्ध सम्बन्धित स्टेशनोपर कर दिया जाता था । इस प्रकार दूर रहनेवाले स्वयसेवको को सुविधा प्रदान की जाती थी । अेसी सुविधाए उन लोगोके लिए होती थी, जो विशेषतया वेस्ट एण्डमे तो रहते थे तथा लन्दनके पूर्व मे काम करते थे ।

सुरक्षा

कुछ अेसी सुविधाए व्यावहारिक ढगसे सभी अेम्बुलेन्स स्टेशनोपर सुलभ थी, जैसे हवाई हमला होते समय कार्यकर्ताओके लिए सुरक्षित स्थानकी व्यवस्था थी । साथही बालूकी बोरिया और ककर सुलभ रहते थे । बोरियोको बालूसे भरना बहुत ही कठिन कार्य होता था । अत अेसे काममे हट्टे–कट्टे स्वयसेवकोकी सहायता ली जाती थी ।

कार्यरत गाडियोंकी सूचना

अम्बुलेन्स स्टेशनसे सूचना टेलिफोन द्वारा उस अेम्बुलेन्स आफिसर तक पहुचा दी जाती थी, जो उपयुक्त कट्रोल तथा रिपोर्ट सेण्टरमे आयुक्त था जैसे अेम्बुलेन्स स्टेशन

न. २३, बुलविच रोड, एस. ई. १० से अेम्बुलेन्स स्टेशन ब. ४८, शूटर्स हिल रोड, वुलविच, लंदन एस . ई. १८। सूचना इस रूपमे दी जाती थी।

सेवामें,

अेम्बुलेन्स आफिसर, ए. आर. पी. कंट्रोल डिपो
अेम्बुलेन्स स्टेशन न. २३ की ओरसे
सदेश भेजनेका समय–२.३२

कार्यरत

८ अेम्बुलेन्स
५ कार्स

श्रीमती ए. बटलर
लोकल आक्जिलियरी सब–आफिसर
(या डिपुटी)

ऊपरके उदाहरणसे जाहिर है कि २४ घटोके हिसाबसे उक्त समय अर्ध रात्रिसे संकेत किया जाता था। इस प्रकार ११.१५ का अर्थ था, सुबहके ११ बजकर १५ मिनट तथा ३.३२ बजे दिन १५.३२ है। अत सुबह या शाम बतानेकी कोई जरूरत नही थी।

गाड़ियोंके अधिकारी एवं मार्गदर्शक

प्रत्येक अेम्बुलेन्समे एक अेम्बुलेन्स ड्राइवर तथा एक कार्यकर्ता होते थे और प्रत्येक कारमे केवल एक ड्राइवर होता था। जब पर्याप्त सख्यामे ड्राइवर रहते तो अन्य ड्राइवर कार्यकर्ताका काम कर लेते थे।

अनेकानेक टैक्सी ड्राइवरोको नियुक्त कर लिया जाता था तथा उन्हे सहायक एम्बुलेन्स स्टेशनो पर तैनात किया जाता था। वे मार्गदर्शकके रूपमे काम करते थे तथा उनके द्वारा अेम्बुलेन्स ड्राइवरोको अवरुद्ध सडको आदिके बारेमे मार्गदर्शनमें सहायता मिलती थी। जब ये मार्गदर्शक सुरक्षा टोलीके साथ अग्रसर होते तो ये सबसे आगेकी गाडीका सचालन किया करते थे। युद्धकी प्रगति होनेपर इन मार्गदर्शकोकी आवश्यकता उतनी अधिक नही रह गयी, क्योकि प्रत्येक ड्राइवर और कार्यकर्ता अपने सम्बन्धित क्षेत्रसे पूर्णतया परिचित होते गये। इतना ही नही उन्हे और भी क्षेत्रोके बारेमे काफी जानकारी होती गयी।

सूचना विवरण पुस्तिका (पंजी)

प्रत्येक अेम्बुलेन्स स्टेशनमे एक सूचना–पुस्तिका रहती थी, जिसमे निम्नाकित विवरणका उल्लेख किया जाता था :–

(१) निर्धारित स्टेशनमे आनेका समय तथा कंट्रोल और रिपोर्ट सेटरमे भेजी गयी सूचनाका समय ।

(२) कार्यरत गाडियोकी सख्या

(३) बाहरसे आनेवाले या बाहर भेजेजानेवाले सभी टेलिफोन संदेशोंका विवरण। उक्त सदेशोका निश्चित समय और सदेशो के भेजनेवाले और प्राप्त करनेवालेका नाम।

(४) प्रत्येक पृष्ठपर दिनाक रहता था

संदेश (सूचना)

जब कोई सदेश किसी अेम्बुलेन्स स्टेशन पर भेजा जाता था, वह इस रूपमें होता था--

सेवामें, अेम्बुलेन्स स्टेशन न. (४२)
३ अेम्बुलेन्स और २ कार स्ट्रेन्ड जक्शन
या देडफोर्ड स्ट्रीटमे भेज दे
हवाई हमला पूर्वोपाय नियन्त्रण (ए. आर. पी. कट्रोल), वेस्ट मिनिस्टर की ओरसे
समय : १४.४७

सूचना विवरण पुस्तिकामे यह सदेश लिखा हुआ था जब उक्त सदेशकी अनेकानेक प्रतिया कार्यकर्ताके विशेष पैडपर कर ली गयी तथा प्रत्येक भेजी गयी गाड़ीके ड्राइवर या कार्यकर्ताओको एक-एक प्रति थमा दी गयी। सदेशसे सम्बन्धित अेम्बुलेन्स यथोचित सख्यामे निर्दिष्ट स्थान पर शीघ्र भेज दी गई और जब अेम्बुलेन्स घायलोसे लद जाते थे तो उन्हे निकटतम अस्पतालमे रख छोडते थे तथा जिन्हें थोड़ा बहुत जख्म होता उन्हें कारमे बैठाकर निकटतम फर्स्ट एड पोस्टमे छोड दिया जाता था।

सीधे तौरपर हताहतोको अस्पताल या फर्स्ट-एड पोस्ट (प्राथमिक उपचार केन्द्र) मे पहुचाकर अेम्बुलेन्स और कार शीघ्र वापस चले जाते थे तथा फिरसे अन्य हताहतोको लानेके लिए तत्पर रहे। यह सेवा दुर्घटना क्षेत्रसे अस्पताल या प्राथमिक उपचार केन्द्र तक तब तक चालू रहता था, जब तक

(१) कोई और हताहत नही रह जाता था।

(२) बाकी हताहतो को सभालने के लिए पर्याप्त रोगि-वाहन (Ambulance) तथा कारे उपलब्ध थी।

रोगी–वाहन तथा कारो को जितना शीघ्र सभव हो रोगी–वाहन केन्द्रो को वापस भेज दीया जाना था, जिससे उनके अन्य स्थानो से बुलावे पर वे उपलब्ध हो सके।

बुलावेके स्थानपर पहुंचनेके बाद की कार्य प्रणाली

बुलावे के स्थान पर पहुचने पर सहायक तुरन्त गाडी से उतरता तथा जब उसे आवश्यक जानकारी मिल जाती, वह रोगिवाहन मे लौटता तथा ड्राइवर को आवश्यकता के स्थानपर रोगिवाहन खडा करने का निर्देश देता।

यदि एक ही स्थान पर अनेक रोगिवाहन तथा कारे बुलाई जाती तो वे दुर्घटना स्थल से कुछ दूर ही रूक जाती तथा वे लोग एक–एक या दो–दो की संख्या मे वास्तविक स्थल पर जाते, जिससे कि जहा तक संभव हो वहा भीड–भाड न हो।

चढ़ाना तथा उतारना

जब एक रोगिवाहन मरीज़ो को चढ़ाने के स्थल पर पहुच जाती तो सहायक तथा ड्राइवर दोनो रोगिवाहन से उतर जाते तथा पीछे जाकर पिछला दरवाजा खोल देते और खाली स्ट्रेचरो तथा कम्बलो को निकालकर स्ट्रेचर दलो को उन स्ट्रेचरो व कबलो के स्थान पर देते जो कि मरीजो के साथ रक्खे गये थे। रोगी–वाहन पर मरीज चढ़ाने का काम स्ट्रेचर दलो का है, परन्तु यह याद रखना चाहिये कि सहायक (Auxiliary) रोगिवाहन मे (जिसमे सामान्यतया चार स्ट्रेचरो को ले जाते है) तीन व्यक्तियो के बगैर मरीज नही चढ़ाना चाहिये–दो व्यक्ति स्ट्रेचर के सिरहाने की ओर तथा एक व्यक्ति पायताने की ओर–क्यो कि पहले मरीज का सिरहाना रोगिवाहन मे रक्खा जाता है। केवल रीढ़ की हड्डी अथवा निचले अगो के टूटने पर मरीज को पैरो की ओर से रोगिवाहन मे चढाया जाता। यदि केवल दो व्यक्ति स्ट्रेचर लेकर रोगिवाहन के पास आए तो ड्राइवर तथा / अथवा सहायक को मरीज चढाते समय स्ट्रेचर का पायताना पकडकर सहायता करनी होगी।

लन्दन काउन्टी कौंसिल द्वारा जारी निर्देशो के अनुसार एक सहायक (Auxiliary) रोगिवाहन पर मरीज चढाते समय यह आवश्यक था कि :–

(१) स्ट्रेचर को समतल रक्खा जाय।
(२) स्ट्रेचर तथा स्ट्रेचर वाहक समानान्तर होने चाहिये।
(३) मरीज़को हल्के से तथा बिना झटका लगे उठाना आवश्यक था।

जब रोगिवाहन को लादा जाता था, तो उसे अनावश्यक हिचकोलो से बचाते हुए जितना शीघ्र सभव होता निकटतम हताहतो के अस्पताल ले जाते थे, लेकिन यदि अस्पताल में पलंग खाली नही होते तो वह अगले निकटतम अस्पताल के लिए बढ़ जाती थी।

अस्पताल मे वहा विशेषतया नियुक्त कर्मचारियो द्वारा रोगि–वाहन को खाली किया जाता था तथा स्ट्रेचर व कम्बल (प्रति स्ट्रेचर दो कम्बल) लिये जाते थे। प्रत्येक रोगि–वाहन को यह निर्देश था कि वह बदले मे पूरे स्ट्रेचर तथा कम्बल लिये बगैर अस्पताल मे न जाये।

"बैठने योग्य" मरीजो के लिए जब कोई कार बुलावे के स्थान पर पहुचती तो ड्राइवर को दुर्घटना स्थल से कुछ पहिले ही उतर जाने का आदेश था। उसका कर्तव्य यह भी पता लगाने का था कि किस स्थान पर कार को लाने की आवश्यकता है और जब वह कार मे लौटकर उसे आवश्यकता के स्थानपर ले आता तो वहादरवाजा खोलकर मरीजो को कार मे बैठने मे सहायता करता था।

रोगि–वाहन केंद्र पर वापस होने पर सूचना देना

रोगि–वाहनो तथा कारो के सीधे रोगि–वाहन केन्द्र को लौटने पर सहायक का यह कर्तव्य था कि वह अधीक्षक अधिकारी (Officer In-charge) को सूचना दे, जिसका कर्तव्य था कि वह नियन्त्रक रोगि–वाहन अधिकारी तथा सूचना केन्द्र को तुरन्त सदेश दे कि रोगि–वाहन तथा कारे वापस आ गई।

ड्राइवर का यह कर्तव्य था कि वह देखे कि वाहन के अन्दरी भाग के अतिरिक्त सब कुछ पूर्णतया ठीक है और यदि कोई गडबडी हो तो, जैसा भी मामला हो, आवश्यकतानुसार रोगि–वाहन केन्द्र अधिकारी, स्थानीय सहायक अधिकारी अथवा स्थानीय सहायक उपअधिकारी को सूचित करे।

हमारा उपर्युक्त व्योरा लन्दन काउन्टी कौसिल द्वारा जारी निर्देशो पर आधारित है। इसके अतिरिक्त कौसिलने इजिनके धुए, अहाते की रासायनिक शुद्धि, स्थानीय सहायक उप अधिकारीके सहकारी, टेलिफोन, केन्द्र की सफाई, स्वयसेवको के भुगतान भोजन का प्रबन्ध (प्रत्येक समय का भोजन कौसिल प्रदान करती है) तथा पैट्रोल, तेल इत्यादि सम्बन्ध मे भी निर्देश जारी किये।

युद्ध की एकदम प्रारभिक अवस्था मे ही इगलैण्ड मे पेट्रोल की राशनिग हो गई थी। इसका प्रभाव स्वाभाविक रूपसे रोगि–वाहन सेवा पर भी पडा। इसके सबध मे बहुत सतर्कता रक्खी जाती थी तथा किसी प्रकार इसको बेकार व्यय नही किया जा सकता था। एक बार एक कर्मचारी ने अवैधानिक तरीके से कुछ पेट्रोल प्राप्त कर लिया जो कि वस्तुत: चोरी करने के बराबर समझा गया। जैसे ही यह तथ्य अधिकारियो की जानकारी मे आया उन्होने उसे तुरन्त निकाल दिया। कौसिल द्वारा सभी रोगि–वाहन केन्द्रो मे पर्चे जारी करके सबको उस घटना से परिचित करा दिया गया और वह सज्जन सबकी आखो के सामने आगये।

प्रत्येक सहायक रोगिवाहन केन्द्र में प्रतिदिन और इसके अतिरिक्त विशेषकर किसी भी लम्बी यात्रा के बाद पेट्रोल तथा तेल की मात्रा की जाच की जाती थी। रोगि–वाहनोको पेट्रोल कुछ नियत केन्द्रो मे ही प्राप्त करना पडता था और बहुत से रोगि वाहनो के एक साथ आवश्यक कार्य पर प्रस्थान के समय उसका व्यौरा पहिले ही प्राप्त हो जाता था तथा प्रत्येक रोगि–वाहन दिन मे एक बार नियत केन्द्र पर पेट्रोल डलवाने जाती थी। अधिक मात्रा मे पेट्रोल व्यय होने पर रोगि वाहन एक से अधिक बार पेट्रोल लेने जा सकती थी ।

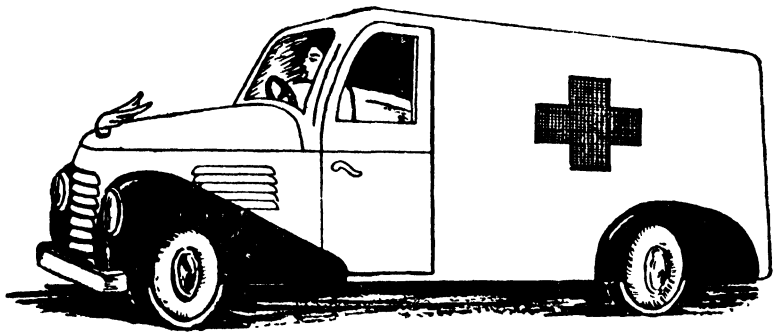
कौमिल ने लुब्रीकेटिग तेल, टायरो मे हवा का दबाव तथा नये टायरों के बारे मे भी निर्देश जारी किये थे ।

स्वयसेवको को भाषणो, उपपादक प्रदर्शनो तथा प्रायोगिक अभ्यासो से प्राथमिक चिकित्सा मे प्रशिक्षण, इन्स्ट्रक्टरो की शिक्षा, तथा गैस कक्षो मे अभ्यास द्वारा गैसो मे प्रशिक्षण तथा किसी भी समय बाहर भेज कर व्यावहारिक कुशलता मे प्रशिक्षण भी किसी प्रकार से कम महत्वपूर्ण नही होता था। स्वयंसेवक का दुर्घटना केन्द्रो मे प्रशिक्षण भी बहुत महत्वपूर्ण होता था, क्यो कि वहा की जानकारी के कारण वह लन्दन के किसी केन्द्र के स्वय सेवको के साथ लन्दन के विभिन्न भागो मे प्रशिक्षण के लिये जा सकता था।

अन्त मे यदि हम लन्दन की सहायक रोगि–वाहन सेवा के कार्य सचालन के बारे मे विचार करे तो हम पाते हे कि उसके तीन विशिष्ट चरण थे। प्रथम चरण फ्रास के समर्पण तक, दूसरा चरण इस समय से अगस्त १९४० मे "ब्लिटज्" तक तथा तीसरा चरण इसके बाद और युद्ध के अन्त तक कहा जा सकता है। प्रथम चरण के अधिकाश को निष्फल निष्क्रियता की अवधि कहा जा सकता है, क्योकि इस दौरान रोगिवाहन सेवाको सिवाय प्रतीक्षा के कुछ भी नही कहना पडा। वस्तुतः यह अवधि बहुत महत्वपूर्ण थी, क्यो कि इस दौरान सभी सहायक (Auxiliary) केन्द्रो को पूर्णतया सज्जित किया जा सका तथा सभी स्वयसेवको को पूर्ण प्रशिक्षण दिया जा सका। लोगो को आठ घण्टे काम करना होता था, लेकिन दूसरे चरण मे विभिन्न अज्ञात कारणो से, लेकिन विशेषकर इसलिये कि युद्ध की गभीरता अनुभव की जाने लगी थी, इसे बढ़ाकर १२ घण्टे कर दिया गया। तीसरे चरण मे धमासान बमवर्षा (Blitzkrieg) का साहस के साथ, धैर्य और स्थिर चित्त से, मुकाबिला किया गया, ब्रिटेन का युद्ध लडा और जीता गया, शाही वायुसेना की श्रेष्ठता स्वीकार की गई तथा कुछ पहलुवो मे प्रतिरक्षा सेवाओ की असफलताओ के, जो कि एकदम सामान्य थी, बावजूद भी लन्दन सहायक रोगि–वाहन सेवा ने अपनी उपादेयता सिद्ध कर दी तथा ब्रिटिश राजस्व कोष से उस पर किये गये सम्पूर्ण व्यय का औचित्य प्रमाणित कर दिया गया। सर्वदा की भाति

दबाव और उपद्रव के इस समय मे भी रोगि–वाहन सेवा ग्रेट ब्रिटेन तथा सम्पूर्ण साम्राज्य की रोगि–वाहन सेवाओ के लिए प्रकाश की किरण सिद्ध हुई ।

हमारी राजधानी भी ग्रेट ब्रिटेन की राजधानी के उदाहरण का अनुकरण कर सकती है तथा यह अनुभव कर सकती है कि यद्यपि फ्रास के समर्पण से प्रथम चरण के दौरान इन सेवाओ को प्रतीक्षा के अतिरिक्त स्पष्टतया कुछ नही करना पडा, फिर भी वह अवधि बहुत उपयोगी सिद्ध हुई, क्योकि इस दौरान प्रशिक्षण तथा उचित संगठन सभव हो सका । चीनी हमले से पूर्व जब लोग हवाई हमले से सतर्कता की बात करते थे, तो लोग कहते कि उससे युद्ध की भावना पैदा होती है । ऐसी भावना आजके भारत



चित्र १८

एक रोगि–वाहन का चित्र

से निकल जानी चाहिये । हमे अब किसी भी सयोग का सामना करने के लिए अपने को पूर्णतया तैयार रखना है । आधुनिक युद्ध प्रणाली अन्तत घर–घर मे युद्ध का रूप धारण कर सकती है और यह आवश्यक नही कि वह रणक्षेत्र मे ही हो । इसलिए, क्या हम इस प्रकार का खतरा उठा सकते है ? क्या हम कभी यह पसन्द करेगे कि कठिनाई के समय हम तन्द्रा मे लीन पाये जाय ? क्या हमे तैयारी नही करनी चाहिये, जब कि ऐसा करने के लिए ठीक समय हो ? भारत मे किसी अन्य स्थान से अधिक, हमारी राजधानी को किसी भी सभवित घटना का सामना करने के लिए अपने को हर प्रकार से पूर्णतया तैयार रखना चाहिये । दिल्ली सल्तनतो की कब्र के रूपमे विख्यात है, इसलिए हम इस तथ्य को नही भूल सकते कि ठीक समय पर कमर कस लेना बहुत आवश्यक है ।

– अध्याय ९ –

प्रक्षेपास्त्र, परमाणु बम और उदजन बम

(Missiles, Atom Bombs and Hydrogen Bombs)

गत महायुद्धमे जर्मनीने अग्निदाहक बमो और भयकर विस्फोटक बमोका उपयोग किया था। उनके बमवर्षकोके लिए फ्रान्स, इग्लेण्ड और अन्य स्थानोमे, जो जर्मनीके प्रचण्ड अभियानके शिकार हो गये थे, इन बमोका गिराना अत्यन्त सामान्य बात हो गयी थी। किन्तु रूसी कला के निपुण व्यवहार ने परिस्थितिमे परिवर्तन ला दिया और यह परिवर्तन उस समयमे अन्यतम था। रूसियोने एक विशेष प्रकार के बमका निर्माण किया–जो इग्लैण्डमे 'मोलोटोव्ह ब्रेड बास्केट' नाम से जाना जाता था। इस प्रकारका बम 'किलो एलेक्ट्रोन बम'–जो 'किलो मॅग्नेशियम .एलेक्ट्रान. इन्सेण्डियरी (अग्निबम) बम के नाम से भी जाना जाता है––की अपेक्षा अधिक खतरनाक था। मोलोटोव्ह ब्रेडबास्केट' बम की योजना इस प्रकार की थी कि अग्निदाहक बम और भयकर विस्फोटक बम दोनो एक साथ ही गिराये जा सकते थे। इस बिन्दुको और अधिक स्पष्ट करनेके लिए हम कह सकते है कि रूसियोने एक भयकर विस्फोटक बममे एक 'सिलेडर' (धातुका बेलन) की योजना कर दी थी और उसमे दर्जनो 'इमेण्डियरी' –अग्निदाहक या अग्नि बमों को रख दिया गया था,–भयकर विस्फोटक बमके लक्ष्य तह पहुचनेके ठीक पूर्व ही वह अग्नि बम गिर जाते थे। इसका परिणाम यह होता था कि अग्निदाहक बमोंके द्वारा भयकर विस्फोटक आघातके साथ ही अग्निदाह भी उपस्थित कर दिया जाता था।

प्रक्षेपास्त्रोके उपयोग की नवीनतम योजना अत्यन्त खराब है। जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि किसी अग्निदाहक बमकी अपेक्षा एक प्रक्षेपास्त्र अधिक बडा होता है और इसकी तीक्ष्ण भेदनशीलता इसकी अग्निदाहकताके प्रभावके अलावा अत्यन्त भयकर है। इसकी गति अत्यन्त भयकर होती है और प्रक्षेपास्त्रके उपयोगसे देखते देखते––कुछ ही क्षणोमे––पूरा नगरका नगर बरबाद किया जा सकता है। प्रक्षेपास्त्र किसी पूर्व निश्चित लक्ष्यको पूर्ण यथार्थताके साथ प्रहार कर सकता है। जब शत्रु द्वारा प्रक्षेपास्त्रका प्रयोग किया जाता है, तो उसका दुतरफा प्रभाव होता है–अर्थात उसके अत्यन्त सशक्त और विध्वसक प्रहारके परिणाम स्वरूप लक्ष्यको ध्वस्त करके टुकड़े–टुकड़े के रूपमे विनिष्ट किया जा सकता है, भवनो या भवनोके ढाचोको खण्ड–

खण्ड किया जा सकता है और उसी समय उससे अग्निदाह भी हो जाता है। कम से कम हानि होने देने और अग्नि को स्थान–विशेषमे सीमित रखनेके लिए सुरक्षात्मक उपाय के रूपमें उस समय जो कार्य तुरन्त करना चाहिये–वह है–उस क्षेत्रकी हदबन्दी।

यदि कोई प्रक्षेपास्त्रके प्रयोगका आभ्यासिक प्रदर्शन देखनेमे अभिरुचि रखता हो, तो उसे मै "**दि लास्ट वार**" नामक जापानी फिल्म देखनेकी सलाह दूगा। इसमे कोई भी व्यक्ति देख सकता है कि प्रक्षेपास्त्रके प्रयोगसे किस प्रकार गगनचुम्बी भवन ताशके महलके समान गिर पडते है और किस प्रकार अग्निदहक उठती है--जो उस फिल्मके कथा लेखककी कल्पनामे एक ओर टोकियो और दूसरी ओर न्यूयार्क और अन्ततोगत्वा सम्पूर्ण निवास योग्य भूमण्डलको निमग्न कर जाती है। प्रक्षेपास्त्रोके प्रयोगके द्वारा उस फिल्ममें प्रदर्शित सत्रासेसे यह सिद्ध हो जाता है कि सबके लिए अंतिम उद्देश्य शांति है, युद्धके समय दोनों ओर से ऐसे भयकर सहारक अस्त्रोके प्रयोगके पश्चात स्वयं मानवजातिके समुच्छेदन या सर्वनाशके अतिरिक्त और कुछ शेष नही रह सकता।

"कोई भी देश जो नवीनतम प्रकारके प्रक्षेपास्त्र रख सकता है–बड़ा ही आनन्दित हो सकता है।" इस तथ्य की कल्पना ३ जनवरी १९६३ ई. मे 'टाईम्स आफ इण्डिया' मे प्रकाशित 'प्रेस विज्ञप्ति' पढनेपर ही की जा सकती है– उसे यहां हम अपने विज्ञ पाठको के लिए आवश्यक उदाहरणके रूपमे ज्यो का त्यो प्रस्तुत कर रहे है :–

हवाना, २ जनवरी १९६३

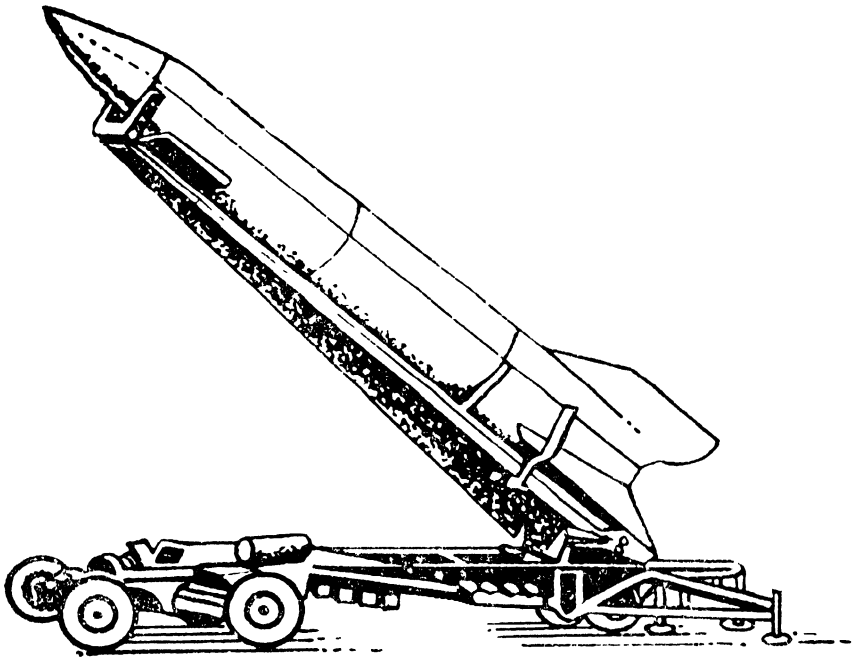
क्युबाके पास नये प्रक्षेपास्त्र

डा. फाइडेल कैस्ट्रोकी सशस्त्र सेनाने आज अभिनव प्राप्त भूमि, आकाश और तटीय (कौस्टल) प्रतिरक्षा प्रदान करनेवाले विशिष्ट प्रकारके प्रक्षेपास्त्रो का अनावरण किया है। अभी तक क्यूबाके पास ऐसे विशिष्ट प्रक्षेपास्त्र नही थे।

सोवियत रूसमे विनिर्मित इन प्रक्षेपास्त्रोको ट्रकोमे रखकर ले जाया गया। उस अवसर पर लगभग एक घण्टे तक फौजी साधनो–सामानोका बड़ा ही प्रभावकारी प्रदर्शन हुआ। कुछ प्रक्षेपास्त्रोको जब आगे चेलित किया गया, तो परेड देखने वालो की भीड़ आश्चर्यचकित हो गयी।

बड़े ही हुलसित भावसे महिला–उद्घोषिकाने भाषणके रूपमे कहा– "ये अत्याधुनिक शस्त्र है, जो दुश्मनके किसी भी हवाई जहाज़को नीचे गिरा सकते है।" ए. पी.।

आधुनिक कालके युद्धमे इसे मान लेना चाहिये कि निश्चय ही प्रक्षेपास्त्र बड़ा महत्वपूर्ण कार्य करेगे। प्रक्षेपास्त्रोके प्रयोगसे जो विध्वंसात्मक अग्निकांड होगा उससे दिल्ली जैसे किसी शहरमे एक क्षेत्रको दूसरे क्षेत्रसे अलग रखनेके द्वारा, जहां बड़ा अग्निकांड



चित्र १९

एक रॉकेट का चित्र

हो, वहापर फायर–ब्रिगेडकी सेवाओंकी अत्यन्त शीघ्र उपलब्धिके लिए व्यवस्था करनेके द्वारा, जहा यह बढती हुई अग्नि वैयक्तिक गृहोंको प्रभावित करे, वहा पर 'स्टिरप–पंपो के उपयोग द्वारा, बालू के उपयोग द्वारा, रासायनिक शमको के उपयोग के द्वारा और अन्य चीजो की अपेक्षा अपने सामान्य ज्ञानके उपयोगके द्वारा निपटा जा सकता है। यह ठीक है कि प्रक्षेपास्त्रोके प्रयोगसे एक 'हौवा (Havoc) पैदा हो जाता है, क्योंकि वे केवल अग्निकाड ही नही उपस्थित करते, बल्कि उनका भेदकारी प्रभाव भी बडा विध्वसक है। जो कुछ भी हो, जनताका यह कर्तव्य है कि वह अपना धीरज न खोये और अपने क्षेत्रमे सर्वोत्तम प्राप्त साधन स्रोतोके साथ परिस्थितिका सामना करे। जनताको नागरिक प्रतिरक्षाकी प्राप्त समस्त सेवाओ का तुरन्त उपयोग करना चाहिये, उन्हें अपनी स्थितिके अनुसार अपने और अन्य सम्बद्ध लोगोके कल्याणके लिए कार्य करना चाहिए।

वर्तमान युगकी नाभिकीयशक्ति (न्यूक्लीयरशक्ति) मनुष्यके भयका सबसे बड़ा कारण है, यद्यपि इसके शान्तिकालीन उपयोगकी महत्तासे इनकार नही किया जा सकता। इस तथ्यके द्वारा यह आसानीसे समझा जा सकता है कि एक दो फीट लंबा एक बाक्स और उसमे तीन क्यूबिक फीट 'प्लूटोनियम' भरने की आवश्यकता है और इसका वज़न डेढ़ टन होगा और यदि उसका उपयोग किया जाय, तो यह सिद्धान्तः ५ मिलियन टन कोयलेका काम कर सकता है, पर यह दुर्भाग्य है कि विध्वस और अवज्ञा घृणाने आजके मनुष्यके मनको अधिकृत कर लिया है, और हम सब एक ऐसी दुनियामे रहते है, जिसमें मानव जातिका भाग्य अंधेरेमें लटक रहा है। हम प्रायः परमाणु बम और उद्जन बमके भयातक की बात किया करते है और ऐसा अनेक बार सोचते है कि सपूर्ण राष्ट्र साफ कर दिया जा सकता है और उन्हें सांस लेने तक का भी समय नही मिलेगा। आजका युद्ध केवल मैदानो में ही नही लडा जाता, यह तो अब घरमें भी लड़ा जाता है, केवल घरमें ही आजका युद्ध नही लडा जाता बल्कि गलियो मे और हमारे जीवनके प्रत्येक भागमे लडा जाता है—वस्तुतः आधुनिक युद्ध जीवनके प्रत्येक पद पर लड़ा जाता है। अतएव, नागरिक प्रतिरक्षाका महत्व भीषण रूपमे बढ गया है और वस्तुतः आज यह अत्यन्त आवश्यक हो गया है कि हमारे बुद्धिजीवी वर्गको न्यूक्लीयर अथवा अन्य किसी प्रकारके युद्ध के विरोधमे सुरक्षाके प्राथमिक उपायो मे अवगत बना दिया जाय।

जहा तक नाभिकीय (न्यूक्लीयर) युद्धका संबध है, यूरोपको गत युद्धमें लगभग कोई अनुभव प्राप्त नही हुआ। परमाणु शक्ति का विकास प्राय· अमेरिकामे ही हुआ है और जहा तक हमे ज्ञात है कि इस ज्ञानपर केवल उसी शक्तिका एकाधिकार रहा है। इसके प्रदर्शनका ज्ञान दुनियाको जापानके नागासाकी और हिरोशिमा पर हुए आक्रमणके समय हुआ जबकि विध्वसक और परमाणु बमो को इन दो स्थानों पर गिराया गया था, उसका वहा आशाकृत प्रभाव भी पडा था और अमेरिकनो को उस देशमे सफलता भी मिली थी। मीलो तक महा विप्लव और विध्वसकी लीला हुई थी। उसके प्रभाव स्वरूप लोग मरे थे। असख्य भवन बमो के छोटे–छोटे उडनेवाले टुकडोके अबारके कारण उलट–पुलट कर ध्वस्त हो गये थे। वहां चारों ओर केवल मलवेका अबार ही अंबार द्रष्टव्य था। उपयुक्त दो लक्ष्यो पर परमाणु बमके आघातके कारण असख्य बीमारिया पैदा हुई और लोग हज़ारो और इससे भी अधिक सख्यामे मरे थे। यह सर्वनाश और विध्वस इतना पूर्ण था कि जापान का संपूर्ण जीवन ही पंगु हो गया था और वह देश उस अनुभव को कभी नही भूल सकता। परमाणु बमो के गिराये जाने के कारण होनेवाले महाविप्लव और विध्वसका अनुभव करनेके बाद जापानी लोगो के पास भयातकता और विचलितता की स्थितिमे लगभग तुरन्त आत्मसमर्पण करने के और कोई चारा नही रह गया था। कोई व्यक्ति केवल कल्पना कर सकता है कि यदि

उस क्षेत्रमें बडी सेनाएं एकत्रीभूत होकर आक्रमण करती, तो भी इतना भयंकर विनाशकारी प्रभाव न होता, जितना कि जापान के उन दो महत्वपूर्ण स्थानो पर दो परमाणु बमो से हुआ।

गत महायुद्धमें जर्मनी, रूस, इग्लैण्ड और फ्रान्समें से किसी ने भी परमाणु बम का प्रयोग नही किया था। वस्तुत: गत महायुद्धमे युद्धकी इस दिशामे इनमे से किसी भी देशने पारमाणविक विकास नही किया था। यह तथ्य कि प्रतिकूलता की परिसमाप्तिके बाद संयुक्त राज्य अमेरिका और युनायटेड किगडमके बीच संबंध पारमाणविक रहस्योंके उद्घाटनके प्रश्नको लेकर दुर्बल होने लगे थे, सयुक्त राज्य अमेरिकाके द्वारा यूनायटेड किगडमको पारमाणविक रहस्योके उद्घाटनके प्रश्नसे यह स्पष्ट है कि ये शक्तियां कितनी अभिरुचिके साथ नाभिकीय न्यूक्लीयर शक्तिके विकासके लिए प्रयत्नशील थी। इंग्लैण्ड और रूस की यह अनुभूति थी कि यदि उन्हे एक महत्वपूर्ण शक्तिके रूपमे जीवित रहना है, तो उनके लिए यह आवश्यक था कि वे नाभिकीय शक्तिका विकास करे। अन्य शक्तियोमे भी कुछ इसी प्रकारकी भावना उत्पन्न हुई। इग्लैण्डने लगभग स्वतत्र रुपमे एक दशकके भीतर परमाणु शक्तिका विकास कर लिया। रूसने भी लगभग उतने ही समयमे काफी अधिक मात्रामे पारमाणविक विकास किया है—इन तथ्यो से यह स्पष्ट रूपसे ज्ञात होता है कि उन्होने यह अनुभूति की कि शत्रुसे लडनेके लिए विशाल सेनाको एकत्र करनेपर किया जानेवाला खर्च विशेष महत्वपूर्ण नही है—वही कार्य पारमाणविक शक्तिके विकास के द्वारा काफी कम खर्चमे किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त उन्होने यह भी स्पष्ट रूपमे अनुभव किया कि यदि वे आधुनिक युद्धके अधुनातम तरीकों के सबंध मे नयी पद्धतियो और नय उपायो के पार्श्वगामी नही होते, तो उनका जीते रहना भी विपत्तिकी वस्तु है। उसी समय इस बात की भी अनुभूति की गयी कि उस समय जबकि सारी दुनिया युद्धमे आगे बढेगी और जब कि नाभिकीय (न्यूक्लीयर) अस्त्र-शस्त्रो का प्रतिदिनका विध्वसक क्रम बन जायगा, तो एसी स्थितिमे शेष दुनियासे अलग उनका अकेले रहना असभव हो जायगा। अन्य अनेकके अतिरिक्त ये सभी उपादान नाभिकीय (न्यूक्लीयर) शक्तिके विकासकी ओर ले गये यद्यपि उसी शक्तिका शान्तिकालीन उपयोग भी स्वाभाविक रूपमे सामने आया और इसकी महत्ता को कम नही किया जा सकता। पर निश्चय ही उन देशो मे — जिन्होने उसका उत्पादन किया—न्यूक्लीयर शक्तिका विकास मुख्यत: विध्वसात्मक अस्त्रो के निर्माणके विचारसे ही हुआ था, जिसने युद्धके आधुनिक विचारोको जन्म दिया है।

सर विन्स्टन चर्चिलको उद्धृत करते हुए कहा जा सकता है कि 'हाउस आफ कामन्स' के प्रख्यात प्रेषणमजूषा (डिस्पेच-बाक्स) मे जितना भरा जा सके उसकी अपेक्षा कम 'प्लूटोनियम' उतने अस्त्रो के उत्पादन के लिए पर्याप्त है जितने से निर्विवाद रूप से विश्वकी प्रभुता किसी भी बड़ी शक्तिको जिसके पास यह है-प्राप्त हो सकती है।

वस्तुतः अन्तिम परिणाम यह है कि आज यथार्थ रूपसे एक ओर मानव युद्ध चल रहा है और दूसरी ओर नाभिकीय (न्यूक्लीयर) शक्तिके मध्य युद्ध चल रहा है। आज हमारे सामने ज्वलन्त प्रश्न है कि या तो मानव जातिको हमेशा के लिए इस शक्तिको नष्ट कर देना चाहिये या फिर यह शक्ति हमेशा के लिए मानव जातिको ही नष्ट कर देगी। भगवान शकराचार्यके दर्शन और अन्य सिद्धान्त वाक्यो मे स्पष्ट है कि इतिहासमे एक चक्रवत गति होती है, अन्तमे मनुष्य जातिके ध्वंस या सर्वनाशकी ही कल्पना की जा सकती है। लेकिन कब ? यही प्रश्न है ? किसी भी स्थितिमे सभी संबद्ध व्यक्तियोका कर्तव्य है कि वे अविरत रूपमे प्रमाणित प्रयत्न करे और सुरक्षाके उपायों को जाने और जहा कोई व्यवहार्य हल न मिले वहा अपनी बुद्धिका उपयोग करे।

यथार्थ स्थिति यह है कि वास्तविक अनुभवके आधारपर निश्चयात्मक रूपसे यह कहनेके लिए कोई पक्की बात नही है कि नाभिकीय (न्यूक्लीयर) युद्धके विरोधमे सुरक्षाके उपाय एसे–एसे हो सकते है। यूरोपमे ऐसे युद्ध का कोई अनुभव नही है और ऐसी स्थितिमे हम लोगो तक इस विषयमे उनकी कोई विचारावली अनुभवके रूपमे नही आ सकती। अमेरिकाने गत महायुद्धके बीच ही नाभिकीय (न्यूक्लीयर) शक्तिका विकास कर लिया था, किन्तु उसकी भूमिपर कोई नाभिकीय (न्यूक्लीयर) आक्रमण नही हुआ था। अत. वहा अनुभवपर आधारित कोई मुक्तिका उपाय नही था, जिससे कि उस श्रोतेसे नाभिकीय (न्यूक्लीयर) आक्रमणके विरोधमे सुरक्षा के लिए उपायोके विषय मे दूसरोका मार्गदर्शन किया जा सके।

इसके साथ ही इस विषयपर सामान्य निष्कर्ष यह है कि गत महायुद्धके दौरान स्वीकृत किय गये सुरक्षाके सामान्य उपाय अत्यन्त प्रभावकारी है, बशर्ते कि उनका उपयोग व्यावहारिक ज्ञानको लगाकर किया जाय, और यदि आवश्यक हो तो किसी विशेष अवसर या परिस्थितिमे उन उपायोमे कुछ सशोधन भी कर लिया जाय। बहरहाल हिरोशिमा और नागासाकीके ध्वसको मास्तिष्कमे रखा जा सकता है, और हमने उससे जो कुछ भी सीखा है, वह सुरक्षाके उपायोके सबधमे हमारा मार्गदर्शन कर सकता है। वस्तुतः नागासाकी और हिरोशिमापर बमोके गिराये जानेके बाद जापानने आत्मसमर्पण कर दिया और इसीलिए नाभिकीय (न्यूक्लीयर) युद्धके विरोधमे सुरक्षा के उपायोकी प्रकल्पनाके प्रश्नको लेकर जापानने कोई प्रयत्न नही किया। ऐसी स्थितिमे जहा तक उस देशमे सुरक्षाके दृष्टिकोणका सबध है, यदि कोई वहा अनुभव हो भी, तो उन्हे अत्यन्त नगण्य ही मानना चाहिए।

इस सिलसिलेमे विशेषज्ञोके अनुभव और कल्पनापर आधारित उपायोके अतिरिक्त लेखकके पास कोई स्थानापन्न उपाय नही है। इस प्रकारका एक अनुभव लदनके सेण्ट बारथोलोम्यू अस्पतालके प्रो. जोसफ रोटब्लैट–जो ब्रिटिश सरकारके युद्धकालीन परमाणु–शक्ति लास आलमासके आयुद्य –दलके सदस्य थे–के वक्तव्यसे हमे

ज्ञात होता है। इन महोदयका कहना है कि यदि लंदनपर एक उदजन बम ध्वस्त हो और उस समय यदि दक्षिणी–पूर्वी हवा बह रही हो, तो बर्मिघम और कोवेण्ट्री जैसे नगरोमें रेडियोधर्मी धूलिकणोकी वर्षा होगी, और इन कणोके गिरानेके समयसे लेकर ढाई घण्टेमे ही उसका प्राणघाती प्रभाव होगा। इस अनुभवी प्राध्यापककी कल्पना इस सिलसिलेमे हमारा मार्गदर्शन करती है कि यदि मथुरामे एक उदजन बम गिरे तो हमारी राजधानी दिल्लीके भाग्यका क्या होगा ?

जैसा कि इस पुस्तकका लेखक समझता है उपर्युक्त प्रो. राटब्लैटने अपने वक्तव्यमे यह भी प्रयुक्त कर लिया है कि लदनपर फूटनेवाले उदजन बमकी कल्पनाके प्रसगमे जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, उसके मष्तिष्कमे निर्माणात्मक पहलू भी है और वह प्रशान्त महा-सागरमे गुब्बारो (बैलूनो,) हवाई जहाजो और नौकाओ द्वारा एकत्र किये गये अको–तथ्यो के प्रभावको स्पष्ट करनेमे सहायक था। उसने और लिखा है कि लिवरपूल और मैनचैस्टरमे वहाके लगभग १० प्रतिशत लोग जो ३६ घण्टे या इससे अधिक बाहर खुलेमे रहेगे, वे भी मर सकते है। जैसा कि ऊपर कहा गया है कि यदि मथुरामे एक उदजनबमका विस्फोट हो, तो उस प्रसगमे यह तथ्य हमारा मार्गदर्शक हो सकता है। बहरहाल, प्रो, राटब्लैटने बलपूर्वक जोर देकर कहा है कि यह गणना उन लोगो से सम्बद्ध है जो शरणगृहोमे आश्रय नही लेते। उसके अनुसार किसी सामान्य भवनकी दीवाल लगभग आधी विकिरण सतह तक फटकर गिर जायगी और एक तलधरीय शरणगृहमे जो दो फीट मिट्टीसे ढका हुआ है और जहा लोग एक या कई दिनो के लिए आश्रय लिए हुए है–वहा उनपर विकिकरणके प्रभावका लगभग सौवा भाग ही शायद प्रभावकारी हो। उसने उसी समय यह भी लिखा है कि उनके लिए और उन्हीके समान अन्य लोगोके लिए जो वहा है–बाहरके लोगोकी अपेक्षा सदैव बाह्य विकिरणसे सशयाक्रान्त रहेगे। दूषित पदार्थोके खण्ड सासके साथ शरीरमे प्रविष्ट होगे अथवा पेटमे या शरीरमे पहुँचेगे और उनमे से कुछ अपरिहार्य रूपसे शरीरके अगोमे विशेषरूपसे वन–ग्रन्थि या हड्डियोमे केन्द्रितहो जायेगे और वहा हो सकता है कि वे दीर्घकाल तक रहेगे। इस प्राध्यापकने यह कहते हुए आगे इगित किया है कि हजारो वर्गमील क्षेत्रके प्रत्येक स्थान के ऊपर रेडियोधर्मी राखकी पतली तह ढक जायगी। इस प्राध्यापक– : जो कि जन्मत. पोलैण्डका था और जिसका लदनमे प्राप्त अनुभव अनुकरणीय है : की उपर्युक्त कल्पना सुरक्षाके उपायोकेदृष्टिकोणसे हमारी राजधानी और भारतके दूसरे भागो के लोगो के लिए मार्गदर्शक हो सकती है। यहा यह दृष्टव्य है कि इस प्राध्यापकके अनुसार यदि लोग दीवालोके भीतर ठहरनेकी आवश्यक सावधानी रखे और यदि सभव हो, तो मिट्टीसे ढके हुए शरणगृहमे रहें तो उनकी सुरक्षा हो सकनी है।

यह द्रष्टव्य है कि इस प्राध्यापक के अनुसार सुरक्षाका एक उपाय है, बशर्ते कि लोग दीवालोके भीतर ठहरनेकी आवश्यक सावधानी रखे और यदि संभव हो, तो मिट्टीसे ढंके

हुए तलघरीय शरणगृहोमें एक, दो या जितने भी दिन आवश्यक हो, उतने दिनो तक रहें, तो वे सुरक्षित रह सकते है। यह सही है कि कि ऐसा करनेमें धीरज रखना पडेगा और यह धीरज बड़ा कडुवा होगा, लेकिन जीवन ससारको बचानेके लिए सुरक्षाके सभी उपायोको अवश्य ही प्रयोगमे लाना चाहिये। उपर्युक्त परिणामके संबधमे यह भी ज्ञात है कि दूषित भोजनको स्पर्श भी न किया जाय और एतद्विषयक आवश्यक सावधानी बरती जाय। खानेके पदार्थोको टिनके बन्द डिब्बोमे और बन्द पात्रोमे रखना चाहिये। ऐसे अवसरोंपर पानी के भी दूषित हो जानेकी संभावना रहती है और उसे ऐसे अवसरोंपर नही पीना चाहिये; उसकी अवहेलना आवश्यक है। बहरहाल जैसा कि ऊपर कहा गया है कि अनुभवके अभावमे कौन–कौन सी विशेष सावधानी बरती जाय, यह बहुत स्पष्ट नही है। लेकिन उसके साथ ही यह भी समझा जा सकता है कि प्रत्यक आवश्यक सावधानी बरतनी चाहिये जो व्यवहार बुद्धिके द्वारा निश्चित सुरक्षाके लिए उपयोगी हो सके, और ऐसे सकटके क्षणोमे, अधिक अनुभवी लोगोको मार्गदर्शन करना चाहिये।

यह द्रष्टव्य है कि हमारे समयकी रणनीतिको युद्धके अस्त्रके रूपमे उदजन बमके प्रयोगने बदल लिया है। आज तक मैदानी सेनाए कभी भी इस प्रकार हरायी नही जाती थी अथवा उन्हे अभी तक कभी भी ऐसे भयकर उध्वस्तक अस्त्रो का सामना नही करना पडा था। इसे सशस्त्र सेनाके ब्रिगेडके विरोधमे ही नही बल्कि डिवीजनो और सेना के दस्तोके विरोधमे समीकृत करना चाहिये। प्राणघाती दूषितता की दूरीको रोकनेके लिए समन्वेषणसम्बन्धी गतिविधि आवश्यकताके लिए क्या शत्रु और क्या मित्र–सबके लिए–युद्धके व्यापक क्षेत्र और हजारो वर्गमील दूर तक के क्षेत्र थोडे समय तक के लिए पगु हो जायेगे।

तथापि जब हम इसके गृहाधारोके विरोधमे प्रतिशोधपूर्ण या उपभ्रामक के रूपमे इसके उपयोगके साथ युद्धकी गतिविधिपर इसके प्रभावकी तुलना करते है, तो स्पष्ट हो जाता है कि युद्धकी गतिविधिका प्रभाव कम प्रभावकारी होता है।

बहरहाल, यह याद रखना चाहिये कि जहा और जब हमारी सीमापर भारी जमाव होगा, वहा और तब परमाणु आयुधोका प्रयोग सर्वोत्तम उत्तर होगा। उदाहरणके लिए–चीन जो कि भारी सैनाको जमा कर सकता है–के साथ युद्धमे सहजतम उत्तर नाभिकीय शक्तिका उपयोग ही है। हमारे देशके पास परमाणविक अभिक्रियक (रिएक्टर) है और हम उनका उपयोग शान्तिकालीन प्रगतिके लिए कर रहे है, परन्तु अब चीनकी ओर से अत्यन्त दुःखद अनुभव प्राप्त कर लेनेके बाद हमे उन्हे सीधे प्रतिरक्षात्मक उत्पादनोकी ओर घुमा देना है–दूसरे शब्दोमे हमे अपने पारमाणविक अभिक्रियको (रिएक्टरो) का उपयोग नाभिकीय (न्यूक्लीयर) आयुधोके उत्पादनके लिए करना चाहिय–और केवल वे ही हमारे देश को सुरक्षा प्रदान कर सकते है। अब हम अपने ढग पर ज्यादा समय तक जीवित नही रह सकते, अन्य राष्ट्रोने विश्वमे अपनी महत्ताकी स्थिति

बनाये रखनेके लिए जो किया है–हमें उसका अनुकरण करना है। हमें अन्यथा करनेका प्रयत्न नही करना चाहिये, हमे अवश्य याद रखना चाहिये कि कोई भी गलत धारणा हम लोगोको परमाणविक अस्त्रों अथवा समस्त सेनाओकी अपेक्षा अधिकनुकसान पहुँचा सकती है।

जितने कम दिनोमे और शीघ्र संभव हो, २० किलो टन क्षेत्रमे–जैसा कि नागासाकी और हिरोशिमापर परमाणु बम गिराया गया था– अस्त्रो से होनेवाले संभावित आक्रमणके विरोधमें व्यवस्था करनी चाहिये। उन दो बमों के प्रभावोंकी व्यापक पत्रकारिता हो चुकी है।

संयुक्त राज्य अमरीका, ग्रेट ब्रिटैन और सोवियत रूस द्वारा इसके पश्चात मेगाटन क्षेत्रके अस्त्र विकसित किय गय। नागासाकी और हिरोशिमा मे हुए विध्वंसकी अपेक्षा इन देशोके इन अस्त्रोके परीक्षात्मक आयोजनमे पर्याप्त अधिक मात्रामे विध्वंस सामने आये।

सयुक्त राज्य अमेरीकाके परमाणु शक्ति आयोगके अध्यक्ष जान ए. मकोनने लिखा है कि जब ५ मेगाटन अस्त्रका विस्फोट होता है, तब लगभग २.५ मीलके व्यास का एक अपेक्षाकृत अधिक घना और चमकीला अग्नि कन्दुक आकार ग्रहण करता और बढ़ता है। इसका आरंभिक प्रभाव तापीय-दीप्ति-प्रसारण, विस्फोट और शीघ्रगामी नाभिकीय विकिकरण होता है। ये सभी प्रभाव आकस्मिक दुर्घटनाके जनक होते है।

मि. जान ए. मकोनने आगे और लिखा है कि यह तापीय-दीप्ति–प्रसारण या ताप उत्सर्जन कुछ ही सैकण्डोमे ५ मेगाटन भूमि तलीय विस्फोटके द्वारा तृतीय जलन धाव (Burns) विस्फोटकके स्थानसे ९ मील तक और द्वितीय अवस्था के जलन धाव छालो सहित ग्यारह मील तक हो सकते है और ऐसा होना लगभग ३८० वर्गमील क्षेत्रको ढक लेता है। निकटवर्ती क्षेत्रोमे अग्निदाह प्रारभ हो जाता है। एक हवाई विस्फोटके साथ, हम तृतीय अवस्था के जलन धाव १५ मील तक और द्वितीय अवस्था के जलन धाव १७ मील तक हागे-की आशा कर सकते है।

मि. जान ए. मकोनने आगे और लिखा है कि नाभिकीय अस्त्रोका अत्यन्न विध्वसक प्रभाव विस्फोटसे आता है।

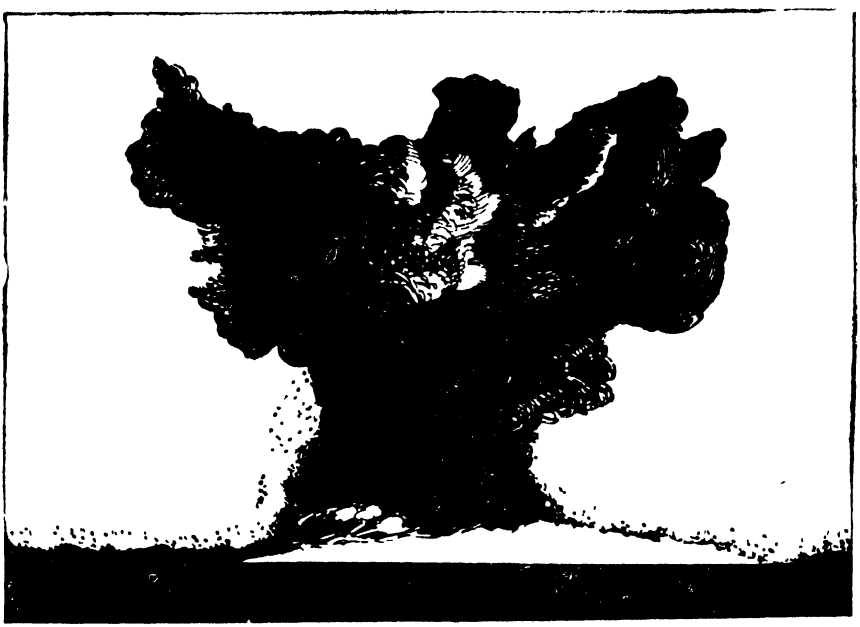
अग्नि–गेदसे सभी दिशाओमे लगभग ध्वनिकीगतिसे एक दबाववाली तरग गतिमान हो उठती है। पाच मेगाटनके सतह–विस्फोटसे लगभग पाच मील की दूरी तक के विशिष्ट मकानोका विध्वस हो जायगा और दस मील की दूरी तक के मकान गंभीर रूपसे क्षतिग्रस्त हो जायेगे।स्टोवको उलट देनेके द्वारा, विद्युत आवर्त चक्रको ध्वस्त करदेनेके द्वारा, और ढाचोंको क्षतिग्रस्त करनेके द्वारा–– जिससे कि जलाने योग्य भागो मे अग्नि लग जाय––और इस प्रकार विस्फोट अग्निसंकट भी प्रदान करता है।

सयुक्त राज्य अमेरिकाके परमाणविक शक्ति–आयोगके इस सर्वश्रेष्ट अधिकारीने आगे और लिखा है कि उनके विरोधमे भवनोके सामानो–पदार्थो के खण्डोको उड़ानेके द्वारा, भवनोकी संरचनाके गिर जानेके द्वारा और व्यक्तियो को स्वय स्थान–च्युतकरनेके द्वारा विस्फोट भी कार्यकर्ता वर्गके मध्य आहतता की स्थिति पैदा कर देता है।

उसी महत्वपूर्ण अमरीकी अधिकारीने लिखा है कि तीसरा प्रभाव, प्राथमिक या शीघ्र विकिरण धरतीसे तीन मील की अपेक्षा कुछ कम–एक सीमित क्षेत्र को प्रभावित करता है, और सुविधाके लिए कहा गया है कि विकिरण दीप्ति का संप्रसार विस्फोटके एक मिनटके अदरही हो जाता है।

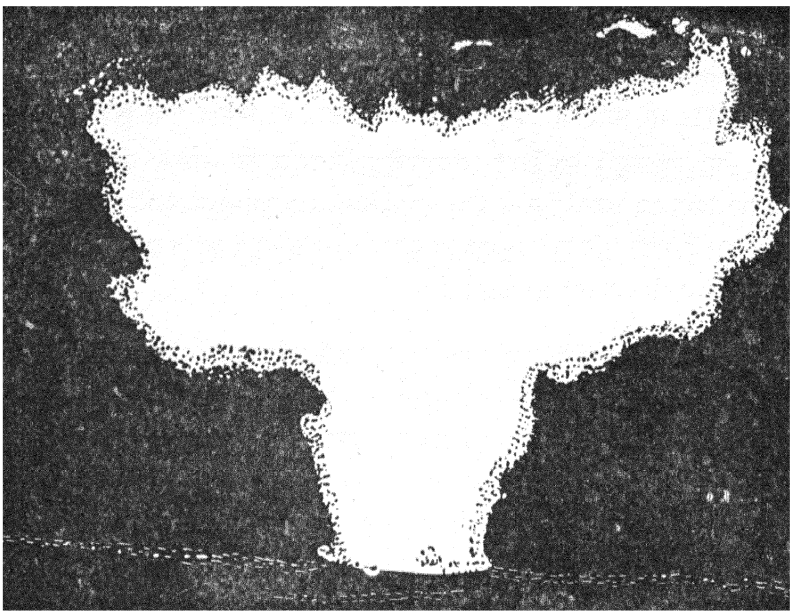
तापीय–दीप्ति-सप्रसारणके कारण असरक्षित अधिकारी वर्गके लोग जो विस्फोट-स्थानसे ५ से ७ मील तक के अन्तर्गत होगे, वे मर जायेगे, वे अधिकारी जो विस्फोट–स्थानसे ३ से ४ मील तक की दूरी के भवनोमे होग, वे शायद विस्फोटके द्वारा मार दिये जायगे। हम लोगोका केवल [illegible] विकिरण से सबंद्ध है, क्योकि यह विस्फोट–निरोधक शरणगृहोको भी सकटग्रस्त कर सकता है।

सयुक्त राज्य अमेरिकाके पारमाणविक आयोगके अध्यक्ष–जान ए. मकोन और युद्धकालीन ब्रिटिश पारमाणविक अस्त्र दल के एक सदस्य प्रोफसर राटब्लैट––जैसे

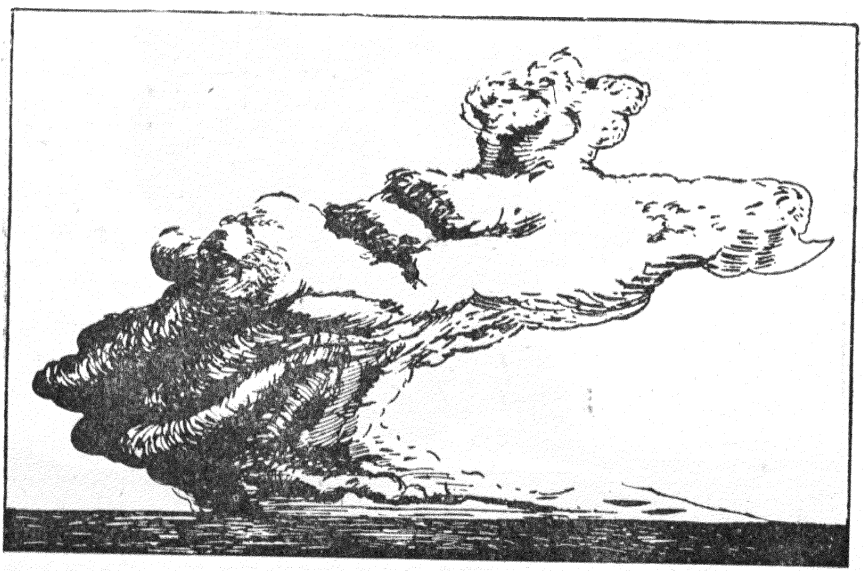


चित्र २०

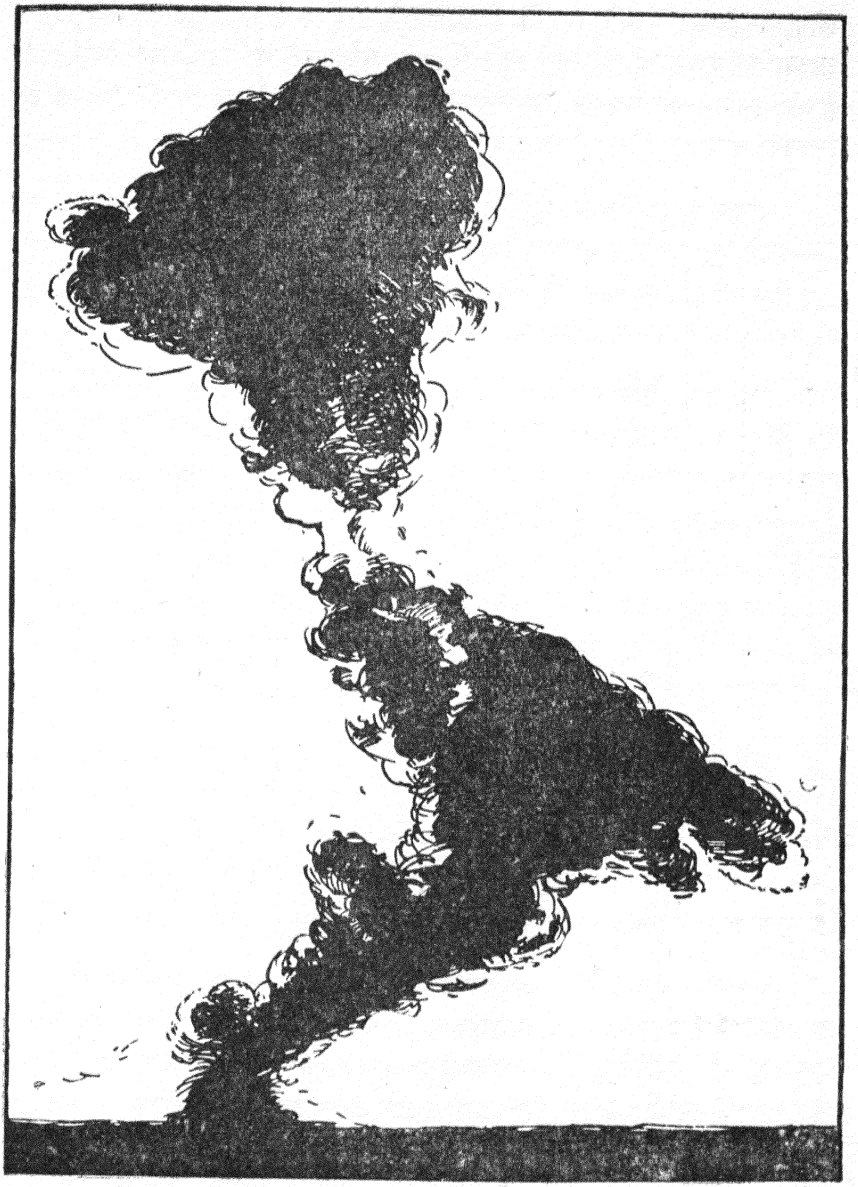
एक परमाणविक अस्त्रके विस्फोटको दिखानेवाला प्रथम चित्र



चित्र २१
परमाणविक अस्त्रके विस्फोट को दिखानेवाला द्वितीय निदर्श चित्र



चित्र २२
एक परमाणु बमके विस्फोटके द्वारा उत्पन्न बादल



चित्र २३

एक परमाणु बमके विस्फोटमे उत्पन्न बादल—मुख्य रूपसे स्थानीय आर्द्रताकी कमीके कारण अपेक्षाकृत अधिक छोटे बादल ।

लोगों के विचार आजके विश्वके लिए जिसके पास नाभिकीय युद्धका अत्यन्त अल्प आभ्यासिक अनुभव है बड़े मार्ग दर्शक है। ये व्यक्ति अत्यन्त उत्तरदायी पदोपर रहे है और उनके अनुभवोको तब तक समादर मिलना ही चाहिये जब तक कि विश्वमे इस विषयपर सुन्दरतर और अधिक सुदृढ सिद्धान्त उद्‌भूत नही हो जाता ।

पाठकोकी समझमे बात शीघ्र आ जाय, इसलिए ऊपर कुछ रेखाचित्र दिये गये है—इनमे पारमाणविक अस्त्रोके विस्फोटको दिखाने वाले दो चित्र सख्या २० और २१ दिये गये है और इनमे परमाणु बमके विस्फोटसे उत्पन्न उदभूत बादलोंको भी दो चित्रो अथवा सख्या न २२ और २३ द्वारा दिखाया गया है।

बहरहाल, यहा पर यह ध्यान देनेकी बात है कि उपर्युक्त निदर्शचित्र सख्या २० और चित्र सख्या २१ का निदर्णचित्र—दोनो पारमाणविक विस्फोट के प्रकारो के दृष्टिकोणोको उपस्थित करनेके लिए दिये गये है। वे अनेक तथ्योंपर आधारित है—जैसे बमका आकार, ऊचाई—जहा से यह गिराया गया है, जमीनका प्रकार जिस पर यह गिराया गया है और इसी प्रकार की और अन्य बाते ।

इन सबके साथ ही ये निदर्श चित्र— जो किसी भी प्रकारसे अधिकारिक नही है—किसी पारमाणविक आयुधके विस्फोटकी रूपरेखाका विचार प्रदान करनेमे उपयोगी हो सकते है।

इसी प्रकारसे, पूर्ववती दो चित्रोमे यह दिखानेका प्रयत्न किया गया है कि एक परमाणु बमके विस्फोटसे किस प्रकारके बादल अन्त्यन्त हो सकते है। प्रथम चित्रमे चित्र सख्या २२ : वे बादल दिखाये गये है—जहा पर कि स्थानीय आर्द्रता पर्याप्त अच्छे अशो मे विद्यमान है जबकि द्वितीय चित्रमे : चित्र सख्या २३ : मे पाठक देखेगे कि मुख्य रूपसे स्थानीय आर्द्रताकी कमीके कारण अपेक्षाकृत अधिक छोटे बादल है।

बहरहाल, इतना और कहा जा सकता है कि यद्यपि एक सामान्य अणु बम छः वर्गमीलके शहरको बरबाद कर सकता है, एक उदजनबम —जो कि एक घातक आयुध है, और अपेक्षाकृत अधिक क्षतिकारक आयुध है—के द्वारा शत्रुके तटको छोड़नेसे पहले ही उसे सपूर्णतः विनष्ट किया जा सकता है— उद्‌जन बम गिरकर तुरन्त एक ऐसा सागर निर्मित कर देता है— जिसे पार करना असभव है। परमाणु या उदजन बमके उपयोगके सबधमे हमे यह सोचना चाहिए कि किन सर्वोत्तम उपायो के द्वारा उसे अपनी भूमिपर गिरनेसे रोका जा सकता है। यह स्पष्ट है कि नाभिकीय आयुधोके प्रयोगके विषयमे सोचते समय हमे जर्मनीके द्वारा प्रयोगमे लाये गये देशी बैटरी द्वारा ठीक किय गये खोलोके प्रकारके साथ ही गत महायुद्धमे ग्रेट ब्रिटैन द्वारा प्रयोगित युद्धक हवाई जहाज—विरोधी बन्दूकोके प्रकार कुछ थोड़े ही उपयोगी हो सकते है। इस समस्याका एकमात्र समाधान निर्देशित प्रक्षेपास्त्रोमे है, जो परमाणु बम या उदजन

बमके प्रयोगके विरोधमें सुनिश्चित सुरक्षा प्रदान करती है। एक निर्देशित प्रक्षेपास्त्रके (Guided Missile) के उपयोगके द्वारा परमाणु या उदजन बमको ले जानेवाले किसी बमवर्षकको शूट किया जा सकता है और उसे नीचे जमीनपर उतारा जा सकता है।

अतएव, यह अभिप्राय निकलता है कि हमे सामरिक महत्वके इस तथ्यपर निर्देशित प्रक्षेपास्त्रके विषयमे आवश्यक व्यवस्था करनीही होगी जिसमे कि जैसा ऊपर कहा गया है कि यदि कोई बमवर्षक परमाणु या उदजन बम राजधानीपर या भारतमे किसी सामरिक महत्वके स्थलपर गिराना चाहे, तो उसे रोका जा सके। अधिकारी जो हमारी राजधानीमे या विश्वमे एसे ही महत्वपूर्ण किसी स्थानमे प्रक्षेपास्त्रोका नियत्रण अवश्य करेगे, भले ही ऐसी व्यवस्थामे प्रतिषेधात्मक खर्च लगे।

हमने अमरीकियो द्वारा प्रशान्त महासागरमे, अग्रजो द्वारा आस्ट्रेलियामे, और रूसियो द्वारा साइबेरियामे किये गये अनेक परीक्षणोके विषयमे पढा है और इन समस्त पारमाणविक परीक्षणोके परिमाणोसे स्पष्ट हो जाता है कि इनकी प्रत्यक्ष मारके विरोधमे सुरक्षाका कोई उपाय नही है, यद्यपि रेडियोधर्मी राख या रेडियोधर्मी धूलिकणोमे सुरक्षाका एक तत्व विद्यमान है। इस बातको और अधिक स्पष्ट करनेके लिए हम कह सकते है कि इस विस्फोटका प्रभाव इतना अधिक है कि धूलि–जिसे हम सब–– पुरुष, स्त्रिया, बच्चे, जानवर, कीडे, पछी आदि सासके द्वारा प्रतिक्षण भीतर शरीरमे खीचते है–– रेडियोधर्मी सक्रिय प्रभाव के कारण भयकर गतिसे गतिमान हो उठती है और इसी प्रभावके कारण विस्फोट से पैदा होनेवाली धूलिको रेडियोधर्मी धूलिके नामसे पुकारा जाता है। यह आसानीसे समझने योग्य बात है कि ऐसी धूलिका प्रभाव निश्चित रूपसे [illegible] होगा। यदि कोई व्यक्ति ऐसे मनोवैज्ञानिक क्षणोमे खुली जगहोमे रहेगा, तो निश्चय ही विध्वसात्मक रूपसे उसका अन्त होगा। इसका सरल कारण यह है कि मानव या अन्य किसीके शरीरकी सरचना–जैसी की प्रकृतिने की है––इस प्रकार की है कि वह सास लेनेके समय हवाके सामान्य दबावको ही सहन कर सकती है। हम लोगोमे से अनेक उस स्थितिकी कल्पना कर सकते है। एक परमाणु बमके बारे मे हम लोगोमे से अनेक उस स्थितिकी कल्पना कर सकते है जबकि कोई वात्याचक्र या तूफान आता है और हम उसमेसे गुजरते है। एक परमाणु बमके विस्फोटका प्रभाव हम लोगो द्वारा देखे गये वात्याचक्र या तूफानकी अपेक्षा बहुत अधिक भयकर होता है। तूफानो और वात्याचक्रकोमे हमने पेडोको उखड़ते, घरोको गिरते, खुलेमे रहनेके कारण अनेक लोगोको जान गंवाते देखा है और ऐसे समयमे हम सब अपने घरोमे जानेका प्रयत्न करते है। किसी परमाणु बमके विस्फोट का प्रभाव असीम रूपसे अधिक बडा होता है। इस कारण–लोगोको तुरन्त : जैसा कि इस अध्यायमे पहले ही बताया गया है : शरणगृहोमे आश्रय लेना चाहिये। यह वैज्ञानिक दृष्य–वस्तु: समझनेमे इतनी

कठिन है कि लोगोके लिए हजारों पृष्ठ लेख पर्याप्त नही होगे, लेकिन सामान्य लोगों --जिनके लिए यह लेख लिखा गया है--को समझनेके लिए ऊपर कही गयी मोटी-मोटी बाते पर्याप्त होगी।

नाभिकीय आयुधके विस्फोट या रेडियोधर्मी धूलि कणोकी समस्यापर एक और समस्त-जिन लोगोने शोध की है--वे सब इस बातमे सहमत है और दृढ निश्चयपूर्वक कहते है कि शरणगृहोकी व्यवस्थाके माध्यमसे विकिकरण-सकट की मृत्यु और बीमारीके क्षणोमे आहतोकी सख्यामे भारी कमी करते हुए हम अपने लोगोको बचा सकते है। विकिरणकी महत्वपूर्ण समस्या है। मि. जान ए. मकोन(Mr John A Mecone) ने इसके विषयमे लिखा है कि यह विस्फोटके समयसे एक मिनटके बाद ही विकीर्णित या उत्सर्जित हो जाती है।

एक अमेरिकी ५ मेगाटन, ५० प्रतिशत फिशन बमका यदि जमीनपर प्रस्फोट किया जाय, तो इससे बडा ज्वालामुखी विनिर्मित हो जायगा, इससे हजारो टन मिट्टी ऊपर फूट निकलेगी, बमके रेडियोधर्मी विखण्डन तत्वोसे वह मिट्टी संपूरित हो उठेगी और जैसा कि मिस्टर मकौनने लिखा है कि वह विस्फोटके क्षणो बाद लगभग २५० मिलियन टन रेडियम से अधिक रेडियो सक्रियतामे बराबर होगी। यह मिट्टी के टुकडोकी मिलावट और विखण्डन उत्पादन हवाके द्वारा दूर-दूर तक पहुचायी जाती है और हवाके ही माध्यमसे यह जमीनपर गिरती है। यह द्रष्टव्य है कि जब किसी परमाणु परीक्षणकी योजना की जाती है, तो लोगोको सुदीर्घ काल तक हवाके अनुकूल होनेकी प्रतीक्षा करनी पड सकती है। हवाकी दिशा और द्रुत गतिका रेडियो सक्रिय धूलिके प्रभावसे बडा घना सबध है। बहरहाल, प्रत्येक व्यक्तिको यह सदा याद रखना चाहिये कि विकिरणघात की मात्रा विकिरणकी खुराकपर निर्भर है, किसी भी प्रकारके घरके तहखानेमे रहनेसे तात्विक रूपसे विकिरणका प्रभाव कम हो जाता है और ५०० से १००० तक की रगटनकिरण (Roentgen or unit of measurement of x-rays or gamma rays) की खुराकके भावका अर्थ जीवन और मृत्युके बीचकी दूरी भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त विकिकरणका घनत्व समयके साथ कम होता जाता है-पहले तेजीके साथ और उसके बाद अधिक धीमी गतिके साथ।

यह बात अवश्य ध्यान देने योग्य है कि किसी (नाभिकीय) न्यूक्लीयर आक्रमणके द्वारा भोजन वितरित करने और प्रदान करनेके सामान्य साधन प्रचण्ड भावसे अपाच्छेदित हो जायगे। अतएव सब लोगोके लिए विकिरणसे बचनेके लिए जिस प्रकारसे शरणगृह की व्यवस्था आवश्यक है, उसी प्रकार से सामानोको एकत्र करना भी अत्यन्तआवश्यक है। बहरहाल हमे अत्यन्त सावधान रहना चाहिए और न तो दूषित भोजन करना चाहिए और न दूषित पानी ही पीना चाहिए। सर्वोत्तम तरीका टिनके डिब्बोमे बन्द पदार्थोका उपयोग करना है और उपायोके पहले हमे टिनोके डिब्बोको साफ कर लेना चाहिए। किसी रेडियोधर्मी आक्रमणके पश्चात कुछ महीनो तक -यदि

गाये जीवित बच भी गयी हो, तो निश्चय ही समस्त दूरधपूर्ति अत्यत उच्च रूपसे रेडियो सक्रिय होगी।

जल–पूर्तिके साधन–स्रोतोमे भी रेडियो दूषितता रहेगी। बहरहाल, यदि प्रभाव-युक्त हो, तो वर्तमान जलोपचार प्रक्रियाओमे खतरेको दूर करनेमे सहायता मिलेगी।

भूमि और फसले दशको तक दूपित रह सकती है। कोई भी व्यक्ति जमीनको खोदने और उसके दूपित भागको उलटने या दूर करनेका प्रयत्न कर सकता है। पर मिट्टीको दूर हटानेकी एक बडी समस्या है, यह भी बडी समस्या है कि दूपित मिट्टीको किस स्थानपर फैका जाय। नकद फसले–जैसे गेहूके स्थानपर कपास, जौ या धान आदिको पैदा करनेकी स्थानापन्न योजना बनायी जा सकती है। किसी विशिष्ठ मामलेकी प्रकृति और स्थिति की अपरिहार्यताके अनुसार किसी भी स्थितिमे ऐसी समस्याओका समाधान करना ही पडेगा। इस विषयमे कोई भी सुनिश्चित नियम नही बनाये जा सकते।

संक्षेपमे हम कह सकते है कि रेडियोधर्मी युद्ध रेडियो–सक्रिय–माध्यमो के द्वारा लोगो के ऊपर आक्रमण है। नाभिकीय (न्यूक्लीयर) आयुधके विस्फोट द्वारा हुए अभिपातका यह कारण हो सकता है––अथवा रेडियो–सक्रिय पदार्थोके वितरण और अन्य साधनो के द्वारा–जैसे वायुयानो या प्रक्षेपास्त्रोमे गिराये गये छोटे–छोटे बमके द्वारा––यह परिणाम हो सकता है। दूसरी पद्धतिके साथ उपस्थित सुविधाओका ध्वस बहुत कम या नही होगा।

इस प्रकारके युद्धके साथ, कोई शत्रु एक लम्बे क्षेत्रको, जहाके लोग दूपित साधनो या पदार्थोपर आश्रित रहेगे, कम या अधिक समय तक दूपित बनाये रखनेका कारण बन सकता है और उन क्षेत्रोमे जनसख्याके सबधमे–चाहे केवल मारकर या असमर्थ बनाकर–भी इसी प्रकारका नियत्रण स्थापित किया जा सकता है।

किसी रेडियोधर्मी आक्रमणसे सुरक्षाकी बात तीन भागोमे बाटी जा सकती है वैयक्तिक, पारिवारिक और सामूहिक।

वैयक्तिक सुरक्षाका प्राथमिक साधन 'मास्क' है––जो अत्यन्त कम खर्चवाला जेबमे रखे जा सकनेवाले आकारका पदार्थ है। यह केवल रासायनिक वाष्पके विरोधमे ही सुरक्षा प्रदान नही करता, बल्कि कीटाणुमिश्रित दूपित वायुमे या रेडियधर्मी धूलिमे सास लेनेवाले व्यक्तिकी भी रक्षा करता है। और यदि वह सभव नही है, तो रेडियोधर्मी आक्रमण, गैस आक्रमण या कीटाणु आक्रमणके समय अपने ही घरमे दीवालके पीछे अथवा शरणगृहमे जाते समय 'मास्क' का ले जाना परामर्श्य है। बहरहाल यह याद रखनेकी बात है कि सभी अवसरोपर 'मास्क' उपयोगी नही है।

कुछ माध्यम शरीरमें चर्मके माध्यमसे आक्रमण करते है। अतएव यह आवश्यक है कि व्यक्तिगत सुरक्षाके लिए --विशेष रूपसे उन लोगोकी जो दूषित क्षेत्रोमें कार्य सम्पादनके लिए जाते है--अभेद्य वस्त्रो की पूर्ति की व्यवस्था होनी चाहिय।

पारिवारिक सुरक्षाके लिए सयुक्त राज्य अमेरिकाकी सेनाके रासायनिक विभागके विभागाध्यक्ष अधिकारी मेजर विलियम एम. क्रीजीने एक 'डिफ्यूजन बोर्ड' (Diffusion Board) –एक 'गैसारोसक्त फिल्टर' पदार्थ–जो एक सामान्य 'वाल बोर्ड' के सामने हो, पर ऐसा बना हो कि उसमे से स्वतन्त्रता पूर्वक हवाका बहिर्गमन हो सके–की सिफारिश की है। इस अमरीकी अधिकारी के अनुसार इस 'फाइबर–बोर्ड' मे गैसावरोधनकी अद्भूत क्षमता होती है, यह जीवविज्ञानीय (बायोलाजिकल) माध्यमो, पारमाणविक या रेडियोधर्मी धूलिको भी परिशुद्ध करता है। उसके अनुसार-विशेष रूपसे आक्रमणके लक्ष्यवाले शहरोमे 'फैमिली टाइप बम शरणगृह' मे इसका उपयोग करना चाहिये।

किसी वर्गके लिए तीसरे प्रकारकी सुरक्षा–अर्थात् सामूहिक सुरक्षा--का सबध मुख्यत. जनता शरणगृहोसे है। उनकी क्रियान्विनताका आधारभूत सिद्धान्त वैसा ही है जैसा कि सुरक्षात्मक 'मास्क' का। इनमे अतर इतना ही है कि मोटरके द्वारा शुद्धको (या फिल्टरो) के माध्यममे हवाको दबाया जाता है।

जो कुछ इस अध्यायमे दिया गया है, उसे दुबारा कहते हुए हम कह सकते है कि यह स्पष्ट है कि द्वितीय महायुद्धमे या उसके पहले हुए युद्धोमे स्वीकृत या अपनाये गये उपायोमे आज पूर्ण परिवर्तन हो गया है, यहा एक ज्वलत प्रश्न है कि आज या कल यदि न्यूक्लीयर युद्ध छिडा, तो क्या स्थिति होगी ?

अग्नि बमो, भयकर विस्फोटक बमो, ग्रेनेड्स, मशीनगनोके फायर, बन्दूकोकी गोलिया, बन्दूके, टैक, पैदल सैनिक अथवा नौ–युद्ध आदि के उपयोग पर शायद अधिक बल नही दिया जा सकता। यह सभव है कि यदि नाभिकीय (न्यूक्लीयर) युद्धकी स्थिति उत्पन्न होती है, तो बडी सेनाओको जुटानेके कार्यका पूर्ण रूपमे निवृत्त कर दिया जायगा। बहरहाल, यह ध्यान देनेकी बात है कि ऐसी सभवनीयता अभ्यास रूपमे १०० प्रतिशत नही हो सकती। जब हम किसी शत्रुको पराजित करते है, तो उस स्थितिमे बहुत–सी बाते सोचने और करने योग्य होती है, अनेक बार तो हम महत्वपूर्ण लक्ष्यको अछूता ही छोडना उचित समझते है और बिना उसे ध्वस्त किये ही हम शत्रुको जीतते है, जिससे कि विजयके पश्चात हम उसका सदुपयोग कर सके। यह भी सभव है कि नाभिकीय युद्धके साथ ही गैसका भी प्रयोग हो, यह भी हो सकता है कि उसके साथ ही कीटाणु–युद्ध भी हो– रेडियो सक्रिय आक्रमण के विरोधमे ली गयी सावधानी के अतिरिक्त इन सबके विरोधमे भी हमे सावधानी बरतनी पड़ेगी। सारी

चीजे अत्यन्त गडबड स्थितिमे है, आज या भविष्यमे यदि भूमण्डलीय युद्ध छिड़ता है, तो उस स्थितिमे किस प्रकारका युद्ध होगा इस प्रश्नपर दृष्टिपात करनेके पहले अनेक बातोके विषयमे हमे सोचना होगा। मेरे लिए यह स्पष्ट है कि यदि युद्धकी प्रचण्ड ज्वाला उठी, तो नाभिकीय (न्यूक्लीयर) युद्ध सर्वप्रधानताका कार्य करेगा, यद्यपि अग्निस्फोटक बमो, भयकर विस्फोटक बमो और इस प्रकारके अन्य अस्त्रोके जिनका गत युद्धमे उपयोग हुआ था—प्रयोगकी भी पर्याप्त सभावना है और इनका प्रयोग एकदम समाप्त नही किया जा सकता। इन सबके लिए सुरक्षाके बनाये गये उपायोका अवश्य उपयोग होनाचाहिये और उचित समयमे अपेक्षित सावधानी भी अवश्य ले लेनी चाहिये। इस अग्नि-परीक्षाके पहले ही प्राप्त साधनोका सर्वोत्तम उपयोग करनेमे यदि हम असफल रहे, तो निश्चय ही स्थिति विषम हो जायगी।

– अध्याय ६ –

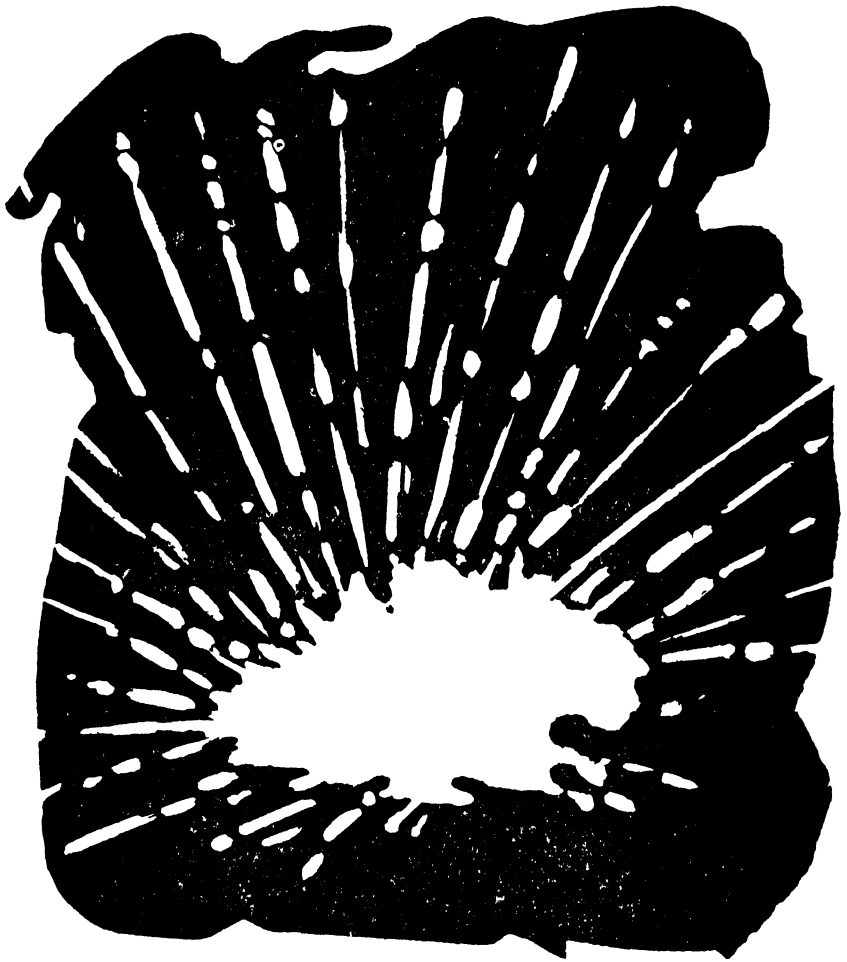
अग्नि बम और अग्निसे सावधानी

आधुनिक युग नाभिकीय ऊर्जाका है। इस युगमे वे ही शक्तिया अपनी स्थितिको बनाये रख सकती है जिनके पास [illegible] मात्रामे नाभिकीय आयुध होगे। गत महायुद्धकी समाप्तिके पहले ही सयुक्त राज्य अमेरिकाने नौ पारमाणविक अभिक्रियको (रिएक्टरो) की स्थापना द्वारा विश्वमे सर्वप्रथम नाभिकीय शक्ति का विकास किया–साथ ही उसने विश्वमे नाभिकीय अस्त्रोके क्षेत्रमे सर्वप्रथम अपनी शक्ति को सुदृढ बनाया। द्वितीय विश्व–शक्ति जिसने इस शक्तिका विकास किया वह सोवियत रूस है। द्वितीय महायुद्ध की समाप्तिके पश्चात ग्रेट ब्रिटेन और अन्य शक्तियोंने भी नाभिकीय शक्तिका विकास किया। समय–समयपर विश्व–निरस्त्रीकरण–सम्मेलनोमे किये गये प्रयत्नोके बावजूद इसके विकासमे होनेवाली दौड भयकर गतिसे बढती जा रही है। यह एक तथ्य है कि यदि विश्वमे युद्ध की प्रचण्ड ज्वाला भडकी, तो उस स्थितिमे नाभिकीय अस्त्रोके प्रयोग अवश्य होगे. लेकिन अग्निदाहक बमो और भयकर विस्फोटक बमोके प्रयोगकी सभावनाको मिटाया नही जा सकता–विशेष रूपसे एशिया महाद्वीपके देशोमे जहापर नाभिकीय शक्तिका विकास उतना नही हुआ है जितना अधिक सयुक्त राज्य अमेरिकामे, रूसमे और यूरोपके देशोमे। यह लगभग सुनिश्चित ही है कि यदि कभी दो राष्ट्रोमे युद्ध छिडा, तो युद्धका श्रीगणेश उस प्रकारके बमोसे होगा––जो गत महायुद्धमे प्रयुक्त हुए थे। उस युद्धमे आधुनिक युगके अन्य अनेक युद्धोमे किसी विशिष्ट स्थितिमे परिस्थितियो से बाध्य होने के कारण अनेक प्रकारके अग्निदाहक बमोका प्रयोग किया गया था––अनेक प्रयोगमे छोटे–बडे पैमानेपर अग्निकाण्ड भी हुए थे। पर उस सबके प्रयोगका उद्देश्य अग्निकाण्ड उपस्थित करना था। अगले पृष्ठपर चित्र सख्या २८ का उद्देश्य पाठकोको इसी विषयकी जानकारी प्रदान करना है।

पाठकोको ज्ञात होगा कि अग्निदाह आघातके स्थानमे ही पैदा होता है, और उसके उडनेवाले स्फुल्लिगोके कारण अग्नि चारो ओर सक्रमित होती है और इसका परिणाम यह होता है कि इसके क्षेत्रमे जो भी पदार्थ आता है–उसमे आग लग जाती है। यदि ऐसे पदार्थ दहनीय हुए, तो उनमे और जल्दी आग लग जाती है।

अग्नि बमोके अनेक प्रकारोमे–जिनका गत युद्धमे प्रयोग हुआ था––जर्मनीमे प्रख्यात 'किलो एलेक्ट्रान बम' भी एक प्रमुख बम है। इसे ही 'किलो मेगनेशियम

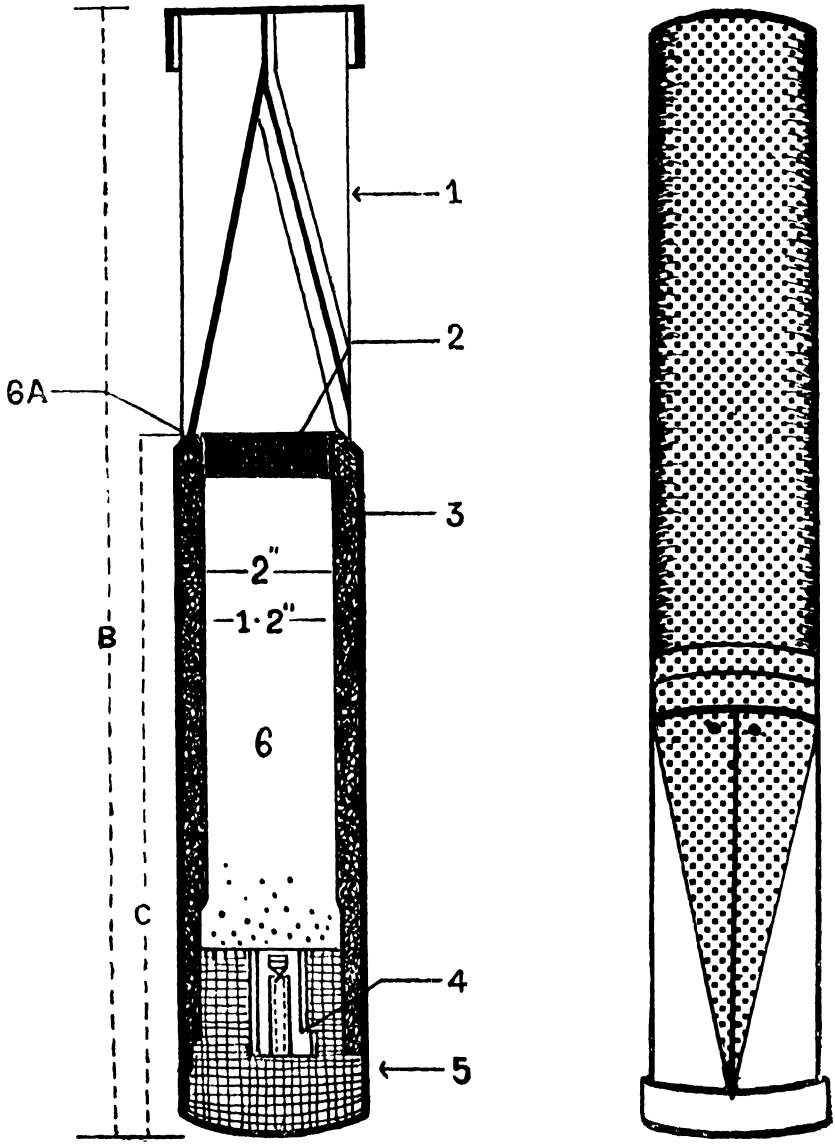
: एलेक्ट्रान : अग्निदाहक (आग लगाऊ या अग्नि) बम' नामसे भी जाना जाता है। उसका एक चित्र गत युद्धके बीच लदन स्थित 'होम आफिस' के द्वारा प्रकाशित किया गया था। अगले पृष्ठपर हम आभार-पूर्वक उनके उस चित्रको, चित्र सख्या २५ मे प्रकाशित कर रहे हैं।



चित्र २४

प्रभाव एक अग्निदाहक बमका . छोटे और बड़े पैमानेपर अग्नि–दाह हेतु ।

चित्र सख्या २५ के विवरणसे 'किलो एलेक्ट्रान बम' के विषयमे कुछ विचार प्राप्त किए जा सकते है। इस बमका वजन दो पोण्ड से लेकर दो ओम तक होता था। कुछ बहुत छोटे भाग को छोड़कर इस बम के ज्यादातर भाग मे अग्नि और उत्तापके पदार्थ भर दिये जाते थे। उस भागमे उसका उपयोग अग्नि पैदा करने के लिए किया जाता है। इग्लैण्डमे इसे प्रज्वालक–यत्र कहा जाता है, उसमे एक सुई भी होती थी।



चित्र २५
किलो एलेक्ट्रान बम

इसके अतिरिक्त उसमे एक छोटी टोपी भी रहती थी। प्रहारके समयमे यह मुई टोपीमे धस जाती थी, जिसके परिणामस्वरूप संपूर्ण बममे आग लग जाती थी। ऊपरके चित्रमे दिखाया गया है कि एक बममें आग कैसे पैदा की जाती है। इस बममे एक नौ

इच लम्बी और दो इच चौड़ी नली होती थी। गिरानेके समयमे बमको इसकी वास्तविक स्थितिमे रखनेके लिए उसमे एक ५ इच लम्बी पूछ होती थी। ऊचाईसे गिराये जानेके बाद प्रज्वालक या दाहक पदार्थ—जिससे सम्पूर्ण नली पूर्णत भरी रहती है—सक्रिय हो उठता था। यह बम भयकर विस्फोटक बमोकी तरह नही फटता और न उनकी तरह धसता या भेदता ही है। यह केवल सामान्य छतोको भेद देता है और किसी भवनके ऊपरी भागको जलाने लगता है। यह इतना भी इसलिए घस जाता है, क्योकि यह पाच हजार फीट या इससे भी अधिक ऊचाई से गिराया जाता है। यदि किसी भवनमे सीमेण्ट कक्रीट या जस्तेकी कलई किये हुए लोहेकी चादर की छत है और उसके ऊपर बालू भी बिखेर दिया गया है, तो इस प्रकारके बम छतको बिलकुल भेद नही सकेग और यदि दहनीय पदार्थ चारो ओर नही पडे है, तो इसकी दाहकता या प्रज्वलताके प्रकारसे भी सुरक्षा हो सकती है। जिन गोदामो या औद्योगिक इकाइयोमे दहनीय पदार्थ एकत्र किय जाते है या पैदा किये जाते है—उनके लिए ऐसे बम बडे ही खतरनाक है।

'किलो एलेक्ट्रान' नामसे प्रसिद्ध इस अग्नि बमसे भी निकृष्टतम प्रकारका बम 'मोलोटोव्स ब्रेडबास्केट' था, जो गत युद्धमे रूसी लोगो द्वारा विनिर्मित किया गया था। इस साधनके द्वारा भयकर विस्फोटक और अग्नि बम एक साथ गिराये गये थे। यह जिसे 'ब्रड बास्केट' कहा जाता है—सामान्य रूपमे आठ फीट लम्बा और तीन फीट चौड़ा होता है। भयकर विस्फोटक बमके मुँहनाल वाले भागमे रूसी एक खाली धातुका बना हुआ बेलन रखते थे—जो अनेक अग्निबमोसे भरा रहता था। जब वायुयानके द्वारा ऊचाई से आघातके स्थलपर इसे गिराया जाता था, तो गिरनेके पूर्व यह मुहनाली वाला भाग खुल जाता था और जैसा कि ऊपर कहा गया है कि धातुके खाली बैलनमे अनेक अग्निदाहक बम भर दिये जाते थे—सो सभी भरे हुए बम गिर पडते थे और अग्निकाण्ड पैदा कर देते थे। ऐसी स्थितिमे आघातके स्थलपर उसके परिणाम-स्वरूप भयकर विस्फोटक आघातके साथ ही अग्नि बमोके गिराये जानेके कारण अग्निज्वाला भी पैदा हो जाती थी। यह द्रष्टव्य है कि ऐसी परिस्थिति अधिक खतरनाक है और ऐसे समयमे कार्यसचालन भी कठिन है।

जहा तक हमारे देशका प्रश्न है, हमे अग्नि बमोका थोडा—सा अनुभव है और जैसा कि लेखक जानता है, इस प्रकारका अनुभव हमे तब हुआ था, जब नवम्बर और दिसम्बर १९६२ मे चीनियोने हमारी भूमिपर आक्रमण किया था। पर जैसा कि सामान्य रूपमे समझा गया है इसका प्रयोग इतना अपर्याप्त था कि बहुतसे लोग तो वस्तुत कभी-यह जान भी नही पाये कि इस प्रकारका बम गिराया भी गया था। इसके साथ ही यह भी निश्चित नही है कि उनके द्वारा किस प्रकारके बमो का उपयोग किया गया था। अतएव इस भूमिके इन भागोमे हमारे अनुभवमे विशेष सहायता नही मिलती। हमे यह भी सुनिश्चित रूपमे ज्ञात नही है कि यदि हमारे देशमे कभी अग्निदाहक बम गिराये जाते

है तो वे किस प्रकारके होंगे। बहरहाल, प्रक्षेपास्त्रों या अग्निबमोंके प्रयोगके विरोधमे आवश्यक सावधानी तो बरतनी ही पड़ेगी, क्योंकि इस देशके किसी भागमे या किसी शहरपर कब ऐसी विपत्ति आ पड़ेगी--इसे कोई नहीं जानता।

इस सबधमे सब लोगोंको याद रखना चाहिये कि जब किसी स्थानपर कोई अग्नि-दाहक बम गिराया जाता है, तब तुरन्त इसका दहनशील तत्व प्रज्वलित हो उठता है और प्रथम ५० सैकेण्ड तक अग्निकी गर्मी २५००० डिग्री सेण्टीग्रेड तक रहती है, स्पष्ट है कि यह उष्णता इस्पातको पिघलानेके के लिए आवश्यक उष्णतासे ८००० डिग्री अधिक है। यह २५००० डिग्री सेण्टीग्रेडकी उष्णता १३००० डिग्री सेण्टीग्रेड तक शान्त-शीतल हो जाती है और उसके पश्चात बम सामान्यरूपसे २५ मिनट तक जलता रह सकता है। यह भी ध्यान देनेकी बात है कि जब कोई बमवर्षक किसी जिलेके ऊपर उड रहा है, तब वह सामान्य रूपसे १०० गजके मध्य १०-१५ स्थानोंपर बम गिरा सकता है, जहापर कि इसकी चौडाई सामान्य रूपमे ८०० फीट तक हो सकती है। ऐसे भयकर अग्निदाहक बमोंके द्वारा उत्पन्न अग्निकाडो की सख्या बमवर्षककी गतिपर, भूमिसे उसकी ऊंचाईपर और गिराये गये बमके वजनपर निर्भर है। बहरहाल, आगे यह भी याद रखने योग्य है कि उपर्युक्त अनुमान बमवर्षककी सामान्य गतिपर आधारित है, और दूसरा बमवर्षक भिन्न गतिके साथ १०० गजकी दूरीमे १०-१५ की अपेक्षा निश्चय ही अधिक बम गिरा सकता है और इस प्रकार सामान्य गतिपर उडनेवाले बमवर्षकद्वारा उत्पन्न अग्निकाण्डकी अपेक्षा अधिक भयकर अग्निकाण्ड उपस्थित कर सकता है। इस व्याख्यासे अग्निदाहक बमो द्वारा उत्पन्न विध्वसका ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसके पहले ही इस बातका उल्लेख किया जा चुका है कि अग्नि बमोंके द्वारा उत्पन्न विध्वसकी अपेक्षा प्रेक्षपास्त्रोंके द्वारा उत्पन्न विध्वस बहुत ही अधिक है। अतएव, इन तथ्योंके प्रकाशमे हमे अग्निकाण्डसे बचनेके लिए सावधानियोंके विषयमे सोचना पडेगा।

किसी भवनपर गिरनेपर एक अग्निदाहक बमका क्या प्रभाव पड़ता है?

यह प्रभाव मुख्यत. भवनके प्रकार, गिरनेवाले बमपर, उस बमके प्रकार पर और उसके वजनपर भी आधारित है। बहरहाल, उदाहरणके लिए हम 'किलो एलेक्ट्रान' नामक बम और बबई, कलकत्ता या दिल्लीके अनेक महले वाले भवनोंको ले ले। एक अग्नि बम साधारण कोटिकी छतमे धस सकता है, पर ऐसा लगता है कि उसके निर्माण मे इस्पाती चद्दरोवाली छत अथवा सीमेण्ट कक्रीटकी मजबूत छतको भेदनेकी शक्ति नही है। ऐसा बम ऊपरवाले महलेकी छतपर आकर रुक जाता है और वहीपर अग्नि-काण्ड उपस्थित करता है। वहापर अग्निको बुझाना सामान्य रूपमे कठिन है, क्योंकि ऐसे स्थानोंपर पहुच पाना अधिक आसान नही है।

यदि छतके नीचेकी चादर छत लकड़ीके पटरोसे बनायी गयी है—जैसा कि दिल्लीके अनेक घरोकी चादर छतें इसी प्रकार है तो बहुत संभव है कि अग्नि बम इस प्रकारकी छतको भेद न सके, पर यह निश्चित है कि यह बम उस छतको जला देगा और छतके नीचे भी पहुंचेगा। इसका प्रभाव यह होगा कि सपूर्ण छतपर आग लग जायगी और चूँकि अग्नि छतोके फर्शोमे हुई दरारोके माध्यमसे गुजरेगी, अतः जली हुई छतका निचला भाग दूसरी छतको भी प्रभावित करेगा। इसके साथ ही यदि छतके नीचे चादर छतमे पलस्तर (प्लास्टर) है, तो निश्चय ही बम उसके माध्यमसे नीचे जा सकता है। भले ही वह उसे भेद न सके—पर उसे कुछ ही सैकण्डोमे जला तो अवश्य देगा, चादर छतको फाड़कर वह नीचे कमरे मे भी अग्निदाह शुरू कर देगा और इसके परिणामस्वरूप नीचेकी सपूर्ण छतमे आग लग जायगी। चादर छतका लकडी और लकड़ीके फलकोका ढाचा भले ही वे दो या तीन फीटकी दूरीपर हो—तो वे एक अग्नि बमके द्वारा उत्पन्न उष्ण गैसकी चिनगारियों और फेलनेवाली उष्णताके द्वारा जलकर राख हो जायगा। छोटा—या बडा जो भी अग्निदाह शुरू होगा—उसका आकार इसबात पर निर्भर है कि किसी मामलेमे दुर्घटना स्थलपर कितना लकड़ीका बना हुआ या दहनीय पदार्थ विद्यमान है और एक बम को किसी चादर छतको पार करने और जलानेमे कितना अधिक समय लगता है।

गत युद्धके दोरान एक अग्नि बमको प्रहारके पश्चात किसी चादर छतको पार करनेके विषयमे अनेक शोध की गयी थी। उसके प्रहारके विरोधमे ग्रेट ब्रिटैनमे सुरक्षा हेतु निम्नलिखित बातोकी सिफारिश की गयी थी :—

१ — पाच इच की मोटी इस्पाती चादर।

२ — बालूके बोरोकी एक तह : जितना अधिक संभव हो यह बोरे एक दूसरे के निकट हो ·

३ — साढे तीन इचसे चार इच मोटी सीमेण्ट कन्क्रीट।

४ — दो इच मोटा सूखा बालू।

५ — दो इच मोटा फेनिल धातुमल।

६ — अढाई इच मोटी घरकी राख।

७ — दो इंच मोटी मिट्टी—जिसमे घास इत्यादि न हो।

८ — लगभग एक इचके तीन चौथाई भागकी मोटाईके बराबर चट्टानों की पथरीली मिट्टी द्वारा विनिर्मित प्लास्टर जैसा पदार्थ।

९ — एक इचके तीन चौथाई भागके बराबर मोटा डामर या तारकोल और रेतका मिश्रण—इस एस्फाल्ट या धुम्रजतुका . डामर का प्रयोग प्राचीन-कालमें सीमेण्टके स्थानपर किया जाता था। इसका अभी भी हम लोग

प्रयोग करते हैं। इंग्लैण्डमे आज भी विशेष रूपसे इसका उपयोग पानीके नलो और घोडोंके लिए पानीकी टकियों के निर्माणके सिलसिलेमे किया जाता है।

किसी किलो एलेक्ट्रान जातिके अग्निबमके गिरनेपर हमारा क्या कर्तव्य है?

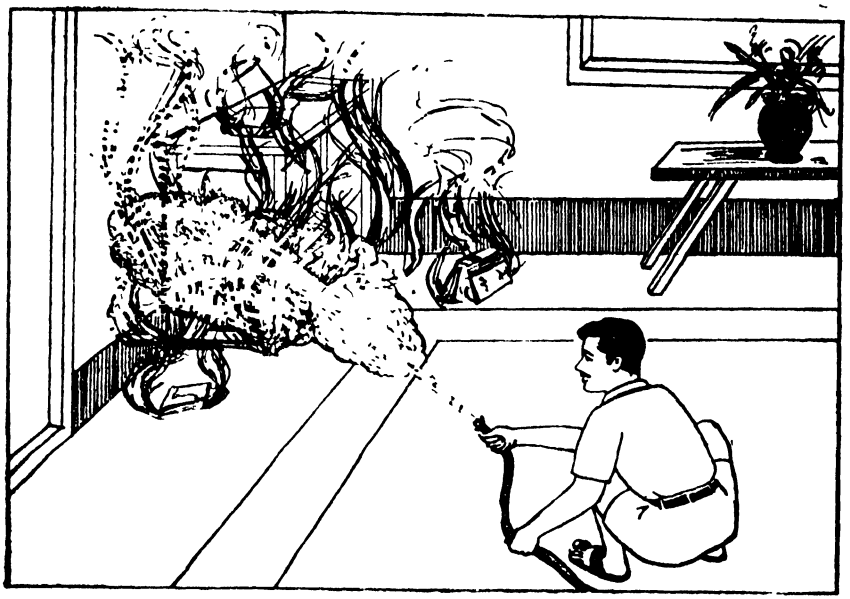
पहला कार्य जो लोगोके लिए करणीय है, वह है : 'अग्निको फैलनेसे रोकना। यदि कही आग लग गयी हो तो लोगोको यथासम्भव सर्वोत्तम प्रयत्न करके यथाशीघ्र उसे बुझा देना चाहिए। इस प्रयोजनके लिए पानी और बालू—दोनो का प्रयोग करना चाहिये। एक 'स्टिरप पप' की सहायतासे बमके ऊपर पानी छिडकनेके द्वारा बम की प्रचण्डता कम की जा सकती है। इस पम्प के प्रयोग के द्वारा अग्नि बुझाते समय दो बाते विशष रूपसे ध्यान देने योग्य है :—

१ — यदि किसी लकडीके पदार्थोमे या किसी अन्य दहनीय पदार्थमे आग लग गयी है, तो हमे पानीके जोरदार छिडकावके द्वारा आगको बुझाने का प्रयत्न करना चाहिये—इस तरीकेको 'जेट' नाममे पुकारा जाता है।

२ — यदि आपको अग्निदाहक बमकी अग्निकी प्रचण्डताको कम करना है, तो आप कभी भी जोरदार ढगसे पानीका छिडकाव न करे। दूसरे शब्दो मे 'जेट' का प्रयोग खतरनाक है। उस स्थितिमे आपको फोव्वारेका प्रयोग करना चाहिये 'जेट' का नही और आपको अपने 'स्टिरप पप' से छोटे फुहारेके रूपमे पानी की बूँदोको छिडकना चाहिये और इस क्रियाके द्वारा आपको बमकी उष्णताकी प्रचण्डताको नियन्त्रणमे लानेका प्रयत्न करना चाहिये। ऐसे पानीके छिडकावका यह परिणाम होगा कि अग्निदाहक बमका मैग्नीशियम . (Magnesium) सामान्यरूप से दसमे पन्द्रह मिनटका समय लेनेके स्थानपर एक या दो मिनटमे ही जल जायगा और इस प्रकार आप अग्नि फैलनेके खतरेको दूर कर सकते है।

इस प्रसगमे यह भी ध्यान देने योग्य है कि टिन कटेनर या बाल्टी के द्वारा बमके ऊपर पानी फैकना खतरनाक है। एक अग्निदाहक बमको नियत्रणमे लानेके लिए आपको मोटे रूपसे लगभग छ गेलन पानीकी आवश्यकता है। इस कार्यके लिए किसी रासायनिक शमनका प्रयोग भी खतरनाक है, यद्यपि वे अग्नि बमके कारण लगी सामान्य आगको बुझानेके लिए अत्यन्त अच्छे है।

चित्रोकी सहायतासे उपर्युक्त बातको पाठकोको आसानीमे समझनेके लिए स्पष्ट और सादा चित्र देना मैने अधिक सगत समझा है। चित्र सख्या २६ : मे अगले पृष्ठ पर दिखाया गया है कि जेट के प्रयोगके द्वारा किस प्रकार आगको नियंत्रणमें लाया जाता है।

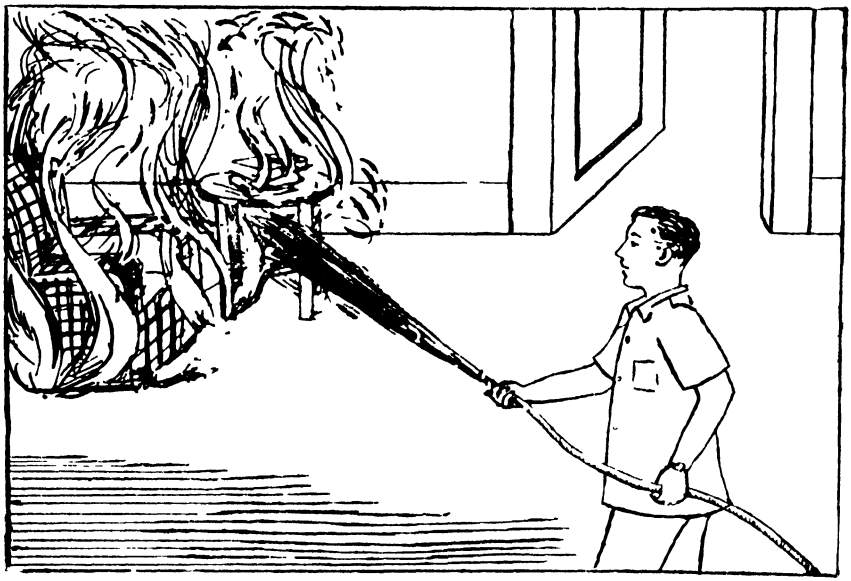


चित्र २६

एक 'स्टिरप पंप' के माध्यमसे 'जेट' के प्रयोग द्वारा आगको नियत्रणमे लाते हुए।

आगे वाले पृष्ठ पर दिये गये द्वितीय चित्र चित्र सख्या . २७ : मे दिखाया गया है कि एक 'स्टिरप पप' के माध्यममे किसी जलते हुए अग्निदाहक बमके ऊपर किस प्रकारसे पानीका छिड़काव किया जाता है।

ऊपरके प्रसगमे यह ध्यान रखने योग्य है कि हम पहले बमको नियत्रणमे लाये या अग्निको इस विषय मे कोई निश्चित नियम नही ह। यह बात उत्पन्न अग्निकी प्रकृति-पर निर्भर है। पर एक चीज़ अत्यन्त आवश्यक है और वह यह कि आगको नियत्रणसे बाहर नही जाने देना चाहिय। इसीके साथ हमे यथासभव अति शीघ्र बमके ऊपर भी पानीका छिड़काव करना चाहिए, जिसमे कि बमकी धातु न जल सके, और वह छतके नीचे जाकर नीचेके कमरेमे भी अग्नि उत्पन्न न कर सके। कभी–कभी 'जेट' के प्रयोगके द्वारा आगको नियत्रणमें लाना ओर चारो ओर की उष्णताको कम करना भी आवश्यक है, उसी समय बमके ऊपर पानी छिड़ककर उसकी भी अग्निको बुझा देना चाहिए, अन्तमें कल्याण हेतु जेटके प्रयोगके द्वारा अग्निको बुझा देना चाहिए। बहरहाल, हमे हर समयके लिए यह याद रखना चाहिए कि जब 'मेगनेशियम' अर्थात मुख्य तत्व दहकरहा हो, तब किसी अग्निदाहक बम के पास जाना अत्यन्त ख़तरनाक है।

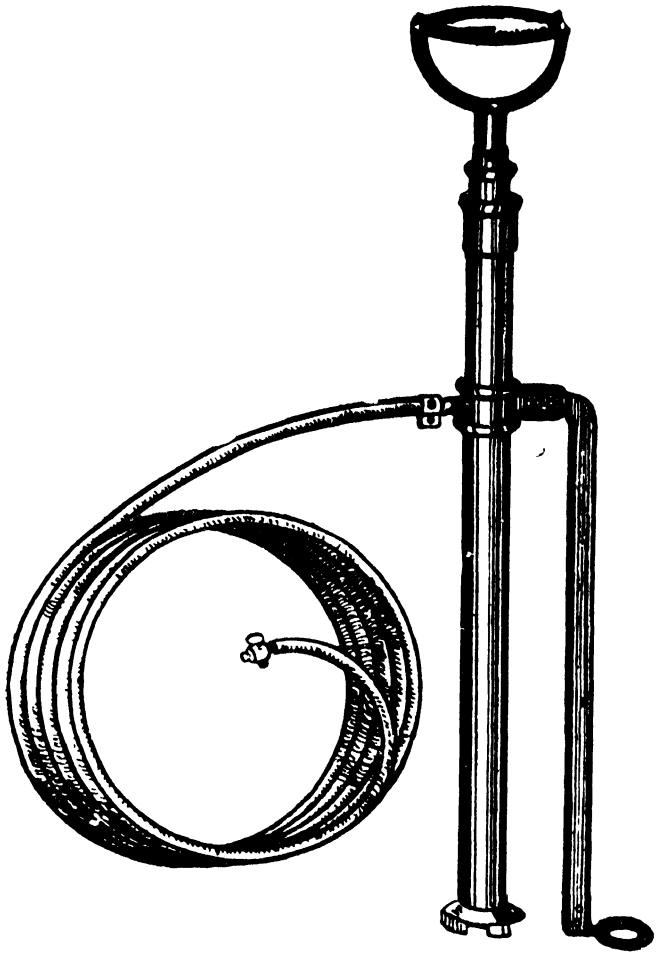


चित्र २७
एक जलते हुए अग्नि बमपर 'स्टिरप पप' के द्वारा पानी छिड़कना।

अगले पृष्ठपर एक स्टिरप पपका चित्र दिया गया है।

किसी 'स्टिरप पप' को सचालित करनेके लिए यदि तीन व्यक्ति हो, तो अधिक अच्छा रहता है। एक व्यक्ति नलिकाकी मुँहनाल या टोटी पकडेगा, दूसरा व्यक्ति पपका कार्य करेगा और तीसरा व्यक्ति पानी लाने का कार्य करता है। पर यदि तीन से कम व्यक्ति हो, तो दो व्यक्तियो के द्वारा भी पंपको सचालित किया जा सकता है। किसी सकटके क्षणमे एक–अकेले–व्यक्तिको भी पप सचालन करते हुए इन सब कार्योंको करने का प्रयत्न करना चाहिये।

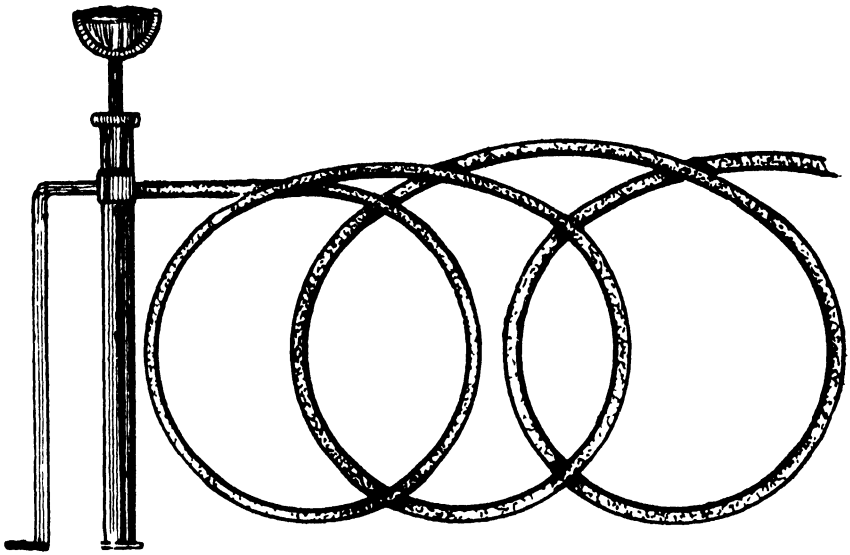
किसी विशिष्ट आवश्यकताके अनुसार 'स्टिरप पप' की नलिका को हम पर्याप्त लम्बी रख सकते है। उदाहरणके लिए–यह और कहा जा सकता है कि गत युद्धमे होम अफिस लन्दनने आधा इच व्यासके साथ इसकी लबाई ३० फीट के लिये शिफारिश की थी। यह लबाई किसी भी व्यक्तिको धुए से दूर रखनेके लिए पर्याप्त ह। यहा यह ध्यान देने की बात है कि 'स्टिरप पप' केवल युद्धकालमे ही उपयोगी नही है। यह शान्तिकालमे भी अत्यन्त उपयोगी है, क्योकि उसका प्रतिदिन के अनगिनती कार्योंमे उपयोग किया जा सकता है। कोई उसका बगीचेके काममे उपयोग कर सकता है, कारो को साफ करनेमे भी इसका उपयोग किया जा सकता है, घर की फर्शको साफ करनेमे भी यह उपयोगमे आ सकता है।



चित्र २८

स्टिरप पंप

'स्टिरप पंप' की उचित व्यवस्था अत्यन्त आवश्यक है। उसकी नलिका और मुंहनालीको सदैव साफ रखना चाहिये और जैसा कि नीचे चित्र सख्या २९ मे दिखाया गया है उसकी नलिकाको प्रयोगके बाद उचित ढगसे रख देना चाहिए।



चित्र २९
प्रयोगके पश्चात उचित ढंगसे एक 'स्टिरप पंप' को रखनेका तरीका

बाल्टीके प्रयोगके पश्चात उसे सदैव भर देना चाहिए जिससे आवश्यकता पड़नेपर उसका उपयोग तुरन्त किया जा सके। जहां तक सभव हो पानीके लिए पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए। कमसे कम दो या तीन बाल्टियोकी स्थायी व्यवस्था होनी चाहिये। यह हमेशा ध्यान रखनेकी बात है कि किसी साधारण आगको बुझाने या किसी अग्निदाहक बमको नियत्रणमे लानेके लिए आपको पाचसे छः गैलन तक पानीकी आवश्यकता है। हमारे देशमे प्रयोगमे आनेवाली सामान्य आकारकी कुछ बाल्टियोमे इतने पानीको आसानीसे रख सकते है। 'स्टिरप पप' के अतिरिक्त यह परामर्श है कि एक 'हरीकेन लालटेन' और एक कुल्हाड़ीकी व्यवस्थाका होनी भी आवश्यक है क्योकि सकटके क्षणोमे ये दो वस्तुए सामान्य रूपसे ज़रूरी होती है।

बालूका प्रयोग

किसी बमकी उष्णताको फैलनेसे रोकनेके लिए बालूका धुवाधार प्रयोग किया जा सकता है।

यह ध्यान देनेकी बात है कि आप बालू के प्रयोग के द्वारा किसी बमको नहीं बुझा सकते आपके प्रयत्नका प्रभाव यह होना चाहिये कि हवाके

आने जानेका स्वतन्त्र रास्ता बन्द हो जाय, इसके परिणामस्वरूप बम तो जलता है, पर उसकी ज्वाला और उष्णता कम हो जाती है। ऐसी परिस्थितिमे किसी 'रेड हिल कटेनर', 'स्कूप अथवा 'रेक' से उसे काफी सुरक्षित दूरीपर फेक देना चाहिये। इस उद्देश्यके लिए निम्नलिखित सावधानी बरतनी चाहिये :–

१ – आपको अपनी आंखोकी सुरक्षाके लिए काले चश्मोका उपयोग करना चाहिये। आपको एक हाथमे 'स्कूप' और दूसरेमे 'एसबस्टसढाल' रखना चाहिये।

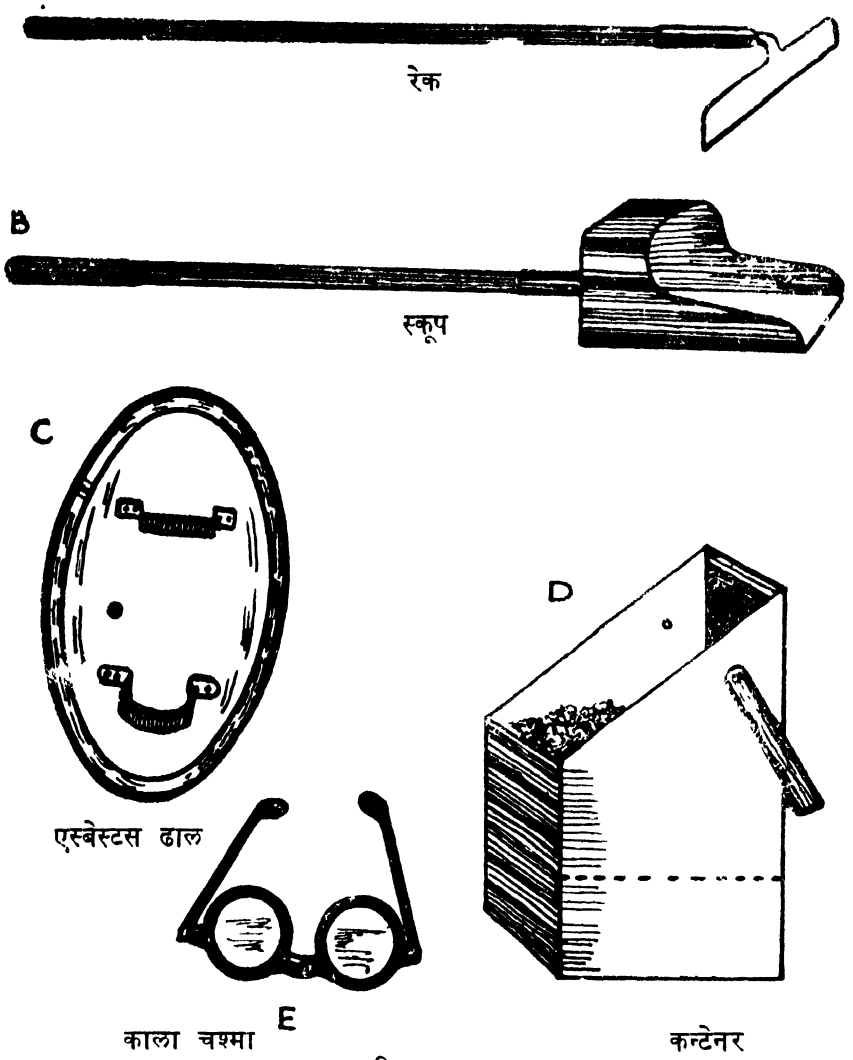
२ – जहापर वास्तविक रूपमे बम जल रहा हो, आपको उस स्थानसे कुछ दूरीपर खडा होना चाहिये। यदि आपको उसके निकट जाना ही पड़े, तो आपको इतना अधिक झुकना चाहिये जिससे आपका मुख भूमिकी सतहसे सटा रहे और तब आपको अत्यन्त धीमी गतिके साथ बमकी दिशामे सरकना चाहिये।

३ – 'कटेनर' मे जितना बालू हो, उसका तीन चौथाई भाग आप थोडी दूरपर फेक दे, उसमे एक चौथाई बालू रहने दे। तब जमीन पर पडे हुए बालूको बमपर फेकना चाहिये जिससे वह बम बालूसे ढक जाय। उसे तब एक 'रेक' की सहायतासे दूर हटाया जा सकता है। इसके पश्चात बमको उसी कटेनरमे–जिसकी पेंदीमे पहलेसेही एक चौथाई बालू है––रखा जा सकता है। 'कटेनर' मे रखनेके पश्चात उसे बालूसे ढक देना चाहिए, और उसे किसी ऐसे स्थानपर फेक देना चाहिये जहापर किसी प्रकारकी क्षति या ख़तरेकी सभावना न हो और जहापर बम अच्छी तरह जलकर बुझ जाय।

अगले १२६ पृष्ठपर हमने एक चित्र दिया है, इसमे बालूसे एक अग्निदाहक बम को बुझानेके लिए आवश्यक पदार्थोको दिखाया गया है।

यदि सम्पूर्ण पदार्थ उपलब्ध न हो, तो एक बाल्टी बालू और एक बेलचा या फावड़े (शावेल Shovel) का प्रयोग किया जा सकता है। पर यह ध्यान रखना चाहिये कि शावेलसे आपको बमके अत्यन्त निकट तक जाना होगा और यदि बाल्टीका प्रयोग करना ही है, तो कमसे कम उसकी पेंदीमे चार इंच मोटी बालूकी तहका होना जरूरी है। ऐसा करते समय आवश्यक सावधानी बरतनी चाहिये जिससे उस स्थितिमे बमका 'मेगनेशियम' बाल्टीकी पेंदीको ही न जला डाले। कभी–कभी बम एक ऐसे स्थानपर पडा रहता है जहा वह जल रहा है – ऐसी स्थितिमे उसे स्वयं जलकर बुझ जाने देना चाहिये। ऐसा कार्य वहीपर परामर्श्य है जहा बमके पास कोई दहनीय पदार्थ नही है और जब वह विशेष रूपसे खुली जगहमे पडा हो।

पाठकोंकी सूचनाके लिए यहा इतना और कहा जा सकता है कि किसी अग्नि बमसे जलते हुए "मेगशियम" को बुझानेके लिए और भी अनेक वस्तुओंका प्रयोग किया जा सकता है। चूकि उसका व्यय अधिक है, अतः उनके उल्लेख मे कोई विशेष फायदा नही है। इसके साथ ही यह और कहा जा सकता है कि 'क्लोराइड' और 'सोडियम क्लोराइड' का घोल अत्यन्त उपयोगी है।



चित्र ३०

बालूकी सहायतासे किसी अग्नि बमको बुझानेके लिए आवश्यक पदार्थ

यह भी ध्यान देने कि बात है कि उपर्युक्त "एलेक्ट्रान बम" जिसका गत युद्धमें मुख्य रूपसे इग्लेण्डपर प्रयोग हुआ था– के अतिरिक्त कुछ वृहदाकार -- भारी-- अग्नि बम भी थे। ये मुख्यत. उन स्थानोपर प्रयोगमे लाये गये, जिन्हे शत्रु पूर्णतः ध्वस्त और मूलोच्छदित करना चाहता था। ऐसे बमोके अनेक प्रकारके प्रभाव थे। इनमे से कुछ बम तो पूर्णतः थर्माइट (Thermite) से भरे हुए थे। ऐसे बमोंको भी "स्टिरप पंप"

की सहायतासे नियन्त्रणमे लाया जा सकता है । होम आफिस, लदनने उपर्युक्त "किलो एलेक्ट्रान बम" के लिए बताये गये उपायोकी ऐसे बमोके लिए सिफारिश की थी ।

जहा तक पेट्रोल और केरोसीन तेलका सम्बन्ध है-- यह ध्यान देने की बात है । कि ये पदार्थ छोटे बमोके लिए भी अच्छे नही है, "किलो एलेक्ट्रान बम" के मैगनेशियम के जलनेसे उत्पन्न ज्वाला उन बमोके जलनेसे उत्पन्न उष्णतासे दुगुनी होती है । जिन बमोमे पेट्रोल और केरोसीन आयल जैसे पदार्थ अनुस्यूत रहते है– उनके साथ यह कठिनाई है कि तुलनात्मक रूपमे ऐसे बमोंका वजन अत्यन्त कम रहता है और ऐसे बमोके प्रयोग मे यह आवश्यक है कि उनके साथ किसी वजनी पदार्थोको सलग्न कर दिया जाय, जिससे उस बमको निर्देशित लक्ष्यपर और ठीक प्रकारसे गिरानेमे सहायता मिल सके । ऐसे वजनी पदार्थको सलग्न करके प्रयोगमे लानेकी बातको सहृदयतापूर्वक नही सोचा जाता ।

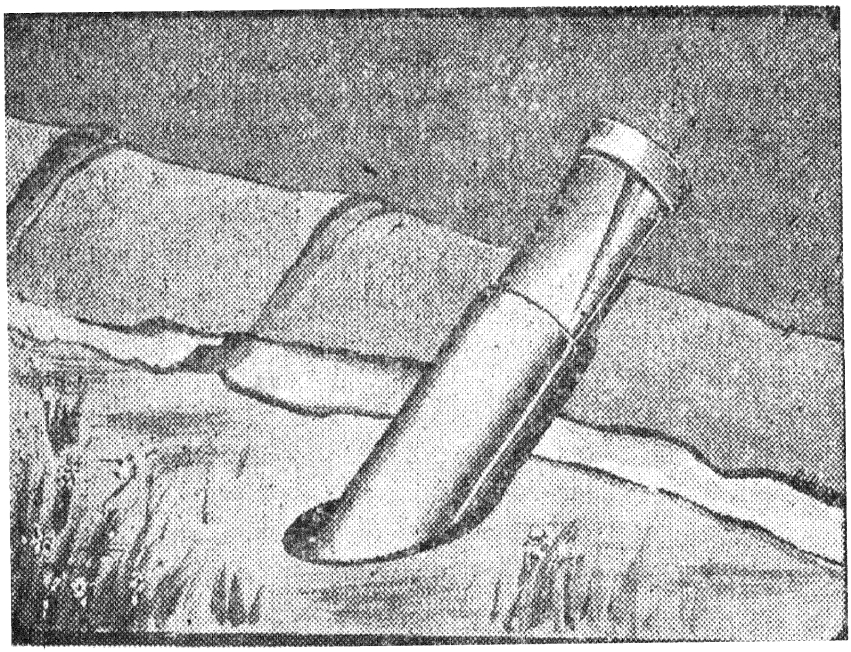
यह भी ध्यान देनेकी बात है कि जब ऐसे बमोका पेट्रोल जलता है, तो इसका प्रभाव मुख्य रूपसे ऊपरकी ओर होता है और प्राय यह उस फर्श या महले को जलाएगा जिसपर कि यह गिराया जायगा । जब ऐसे बमका कोई प्रयोग होता है, तो सभी स्थानोंको पानीसे गीला कर देना काफी सहायक होता है । जब पेट्रोल जल जाय, तब बालूके उपयोग द्वारा ऐसे बमको नियत्रणमे लाया जा सकता है । "फास्फोरस" से भरे हुए बमोको पानीके उपयोगके द्वारा नियत्रणमे लाया जा सकता है । पर यह आवश्यक है कि समस्त दहनीय पदार्थोको-- जिन्हे नही हटाया जा सकता-- पूर्णत: गीला रखा जाय ।

अग्नि बमोमे "सोडियम" और "सोडियम पोटेशियम-एलोय्स" के भी प्रयोग किये जाते है । ये वस्तुए विशेष रूपसे उस समय प्रयोगमे लायी जाती है, जबकि शत्रु दृश्य-व्यवस्थाको व्यर्थ बना देना चाहता है अथवा वह चाहता है कि लोग गलत ढगसे काम करे । यदि इस बमको बुझानेके विचार से पानीका प्रयोग किया जाता है, तो विस्फोट पैदा होता है । अतएव उसके विषयमे लोगोको अत्यन्त सावधान रहना पड़ेगा । ऐसे बमोको बालूके उपयोगसे नियत्रणमे लाया जा सकता है ।

गत युद्धमे जर्मनीने एक और चालाकीका सहारा लिया था । वह ऐसे विशेष प्रकारके बमसे सबधित थी–जो बिना विस्फोटक और अग्नि पैदा किये पडा रहता था, और गत युद्धमे ऐसे बमको कोई विशेष नाम नही दिया गया था, और ऐसे बमको हम अपनी जानकारीके लिए एक प्रकार का अग्नि बम कह सकते है । जब इन पक्तियोका लेखक १९४० मे लन्दनमे था, तब 'इनकारपोरेटेड असोसिएशन आफ असिस्टेण्ट मास्टर्स'– जिसका प्रस्तुत लेखक सदस्य था–लदनके कार्यालयके समीप 'गॉर्डन स्क्वायर' (Gordon Square) मे ऐसा बम पाया गया था । ऐसे बमोके प्रयोगके कारण उस महत्वपूर्ण सघके भवनका एक भाग वस्तुत: बरबाद ही हो गया था और विशेष रूपसे ऐसे

बमोंके लगातार प्रयोगके ही कारण उस संघके लिए लन्दनमें अन्यत्र अपने कार्यालय को स्थानान्तरित करना आवश्यक हो गया। गत युद्धमें ऐसे बमोंको अनेक स्थानों पर पाया गया था। ऐसे बमोंके साथ निपटते समय प्रत्येक व्यक्तिको अत्यन्त सावधान रहना चाहिये। उसे 'स्कूप', रेक और 'टिन-कंटेनर' की सहायतासे हटाना और दूर फेकना चाहिए। ऐसा करते समय बालू का प्रयोग आवश्यक है। यदि ऐसे बमोंको अच्छी तरह से नहीं हटाया गया और लोग उसको हलके रूपमें समझे, तो यह ध्यान रखना चाहिये कि ऐसे बमोंसे अपार क्षति हो सकती है।

गत युद्धके दौरान इंग्लैण्डके एक अख़बारने ऐसे एक बमका चित्र प्रकाशित किया था, जिसे हम चित्र सख्या ३१ में अपने पाठकोंके लाभार्थ निम्नलिखित रेखांकन प्रस्तुत कर रहें है।



चित्र ३१

अग्नि बम-जो बिना विस्फोटके और बिना अग्नि पैदा किये पडा रह गया था।

यह याद रखनेकी बात है कि किसी अग्नि बम या प्रेक्षपास्त्रसे उत्पन्न हुई अग्नि स्वयं उस बम या प्रेक्षपास्त्रसे अधिक खतरनाक होती है। उसके साथ हमें सावधानी, साहस, सहिष्णुता, चतुरता और पौरुषके साथ निपटना चाहिये। उस संबंधमें कुछ बातोको याद रखना चाहिये।

दरवाज़ोंको बन्द रखना

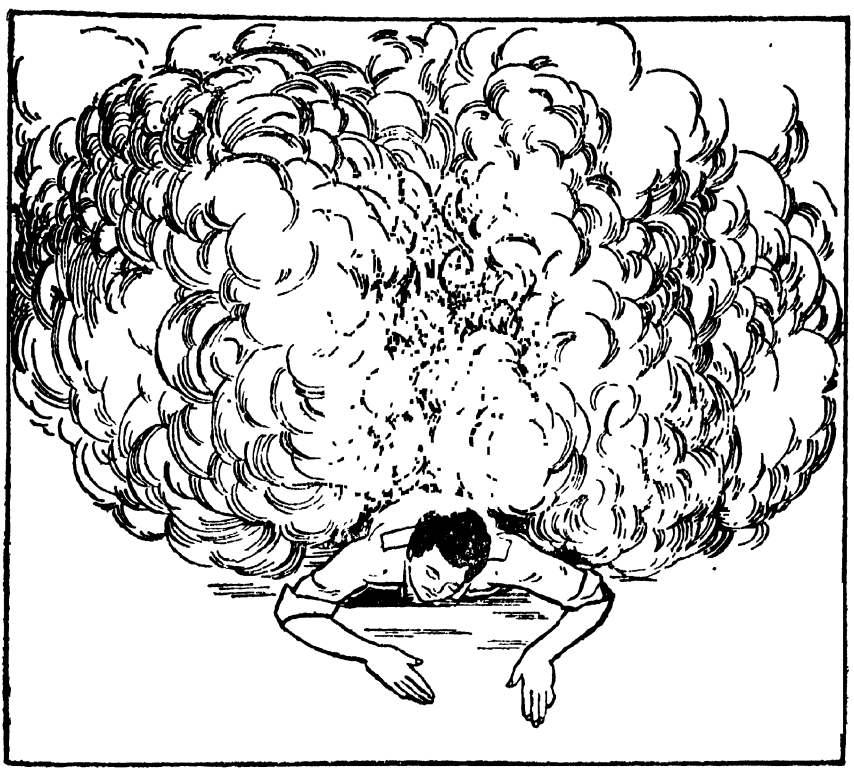
ऐसा करनेसे बाहरकी ओरसे भीतर हवा नही आयगी और ऐसा होनेपर अग्नि वर्द्धित होनेकी अपेक्षा सीमित और नियंत्रित रहेगी। यदि किसी कमरेका दरवाज़ा—

जिसमें आग लग जाती है—खुला रखा गया है, तो केवल अग्नि ही नहीं बढ़ेगी बल्कि वस्तुतः सीढ़ियां और अन्य खुली जगहें चिमनीकी तरह कार्य करेंगी। उस स्थितिमें अग्नि सहसा बढ़ जायगी और संपूर्ण भवनको अपनी लपेटमें ले लेगी।

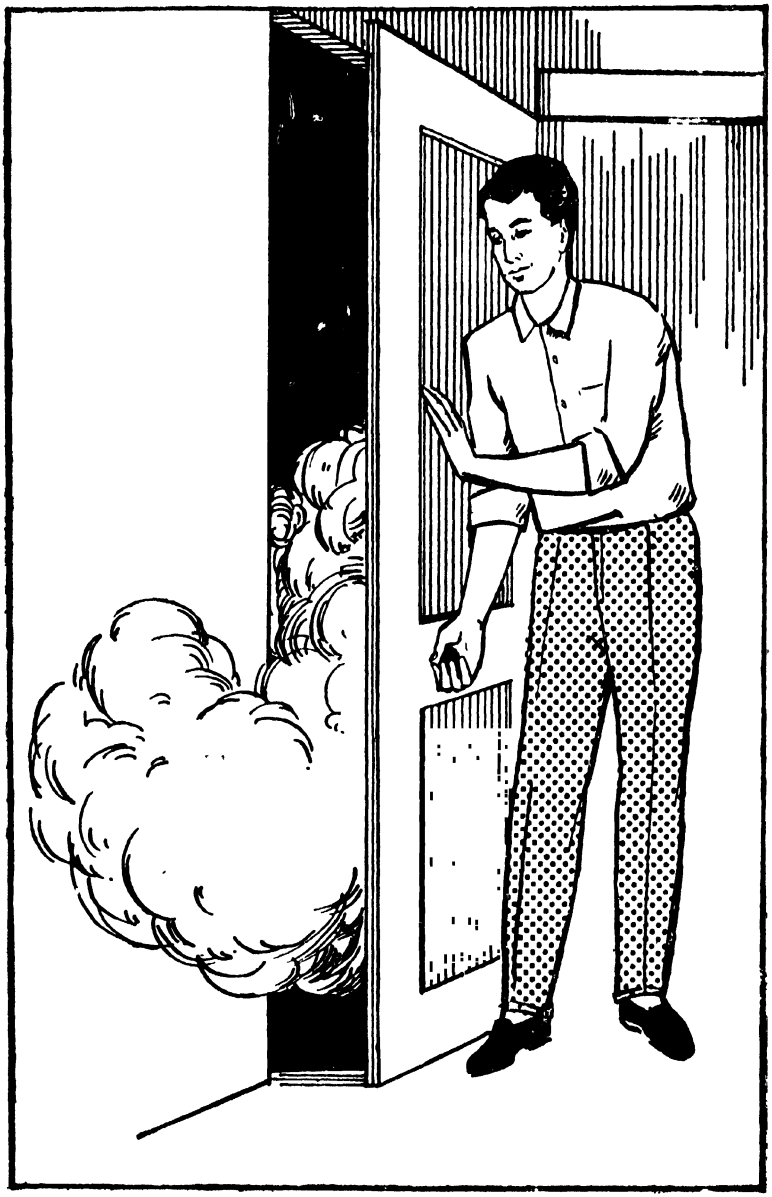
लोगोंको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि यदि किसी भवनमें अग्निअधिक मात्रामें भड़क उठे, और ऐसा लगे कि सुरक्षा असंभव है तो लोगोंके लिए यह परामर्श्य है कि वे उसी भवनमें भीतर रहें जिसमें वे है और उन लोगोंकी सहायताकी प्रतीक्षा करें, जो ऐसी स्थितियों में आकर सहायता करनेवाले है। जब तक आप दूसरोंसे सहायता नहीं पा जाते, तब तक सीढ़िया और अन्य स्थानोंकी ओर दौड़नेकी अपेक्षा घरमें रहना अधिक सुन्दर और अधिक सुरक्षादायक है।

किसी घरकी खोज करना

यदि आपको किसी घरकी खोज करनी हो, तो आपको यह कार्य ऊपरसे शुरू करना चाहिये, फिर आप नीचे आ सकते है और अधिक सुरक्षाप्रद स्थानपर रुकिये।



चित्र ३२
धुएंके साथ सरकना



चित्र ३३

धुएंसे भरे किसी कमरेके दरवाज़ेको खोलनेका सही तरीका ।

गति

यदि आपको एक महला पार करना है अथवा अग्निके कारण कमज़ोर बनी हुई सीढ़ीपर से गुजरना है तब आपको सदा दीवाल के नज़दीक रहने का प्रयत्न करना चाहिए और फिर सीढ़ियोसे बहुत धीमी गतिसे नीचे आना चाहिए।

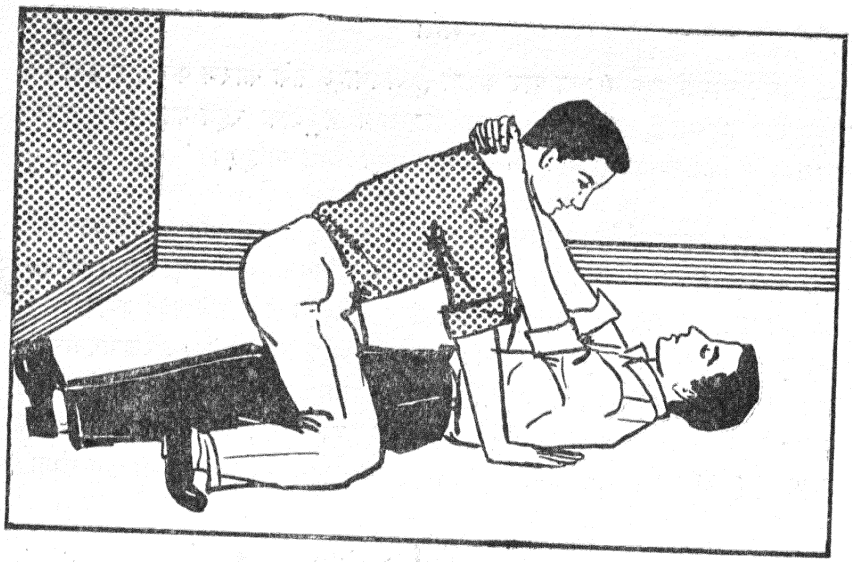
प्रत्येक प्रकारकी अग्निके साथ धुवां रहता ही है, यह अवश्य है कि अग्निके आकारके अनुकूल वह कम या अधिक होता है। फर्शके अत्यन्त निकट हवामें धुएंका तत्व अपेक्षाकृत कम होता है और वह हवा कुछ थोड़ी ठंडी भी होती है। यदि कोई कमरा धुएंसे भरा हो, तो यह परामर्श्य है कि आप अपने सिरको फर्शके अत्यन्त निकट रखकर सरकें। चित्र संख्या ३२ पृष्ठ १२९ मे इस प्रक्रियाको दिखाया गया है। ऐसी स्थितिमें किसी व्यक्तिको धीरे–धीरे सरकना चाहिए। वहां हवा साफ होगी, आप अपेक्षाकृत अधिक अच्छी तरह देख सकेगे और किसी भी वस्तुसे टकराकर गिरनेका ख़तरा भी कम रहेगा।

दरवाज़ोंको खोलना

जबकि अग्नि दूसरी ओर हो और यदि आपको कोई दरवाज़ा खोलना हो और दरवाज़ा आपकी ओर खुलता हो, तो आपको दरवाज़ा खोलते समय दरवाज़ेकी धारके खुलनेकी जगहसे तीन इंच दूरीपर अपने पैरोंकों रखना चाहिए। दरवाज़ा कुछ इंच खुल जानेके बाद, अपने आप रुक जायगा। यह दरवाज़ा स्वयं आपको सुरक्षा प्रदान करेगा और यदि आप आवश्यक समझे, तो आप द्वारको बन्द भी कर सकते है। दरवाज़ेके पीछेका कमरा अग्नि दाहके कारण गर्म गैससे भरा है और ऐसा होनेके कारण दरवाज़ेपर भारी दबाव है। यदि दरवाज़ा बन्द नही होता है, तो वह सहसा खुल जायगा ओर सहसा आपके अपने कमरेमे अग्निका झोंका, धुआँ और गर्म हवा सभी प्रवेश करेगे। अतः आपको सावधानी रखनी पड़ेगी। चित्र ३३ इसी उद्देश्यको प्रदर्शित करनेके लिए दिया गया है कि किस प्रकार सही ढंगसे दरवाजे को खोलना चाहिए।

किसी मुर्छित व्यक्तिको कैसे बचाया जाय ?

आपसे अधिक वजनके व्यक्ति को उठाना आसान काम नही है। लेकिन जैसा कि चित्र संख्या ३४ मे प्रदर्शित है, आप इस कठिन कार्यको भी आसानीसे कर सकते है। उसे फर्शपर पीठके बल लिटा दीजिये और उसकी दोनों कलाइयोको बडे रूमाल, तौलिया या जो कुछ प्राप्त हो सके––उससे––बाध दीजिये और बांधनेके बाद जो गाठ आप बनायें––अपनी गरदनके चारो ओर उसे रख लें और तब आप अपने घुटनेके बलपर रेंग या सरक सकते है, और उसके और आपके हाथ चित्र संख्या ३४ में प्रदर्शित विधिके अनुसार रहेगे। कोई चिताकी बात नही कि आप जिस व्यक्तिको घसीट रहें है––यह आपसे वज़नमे अधिक है।



चित्र ३४

इस चित्रमें यह प्रदर्शित है कि किसी मूर्च्छित व्यक्तिको कैसे बचाया जाय।

नीचे सीढियोंपर किसी मूर्च्छित व्यक्तिको किस प्रकार घसीटा जाय ?

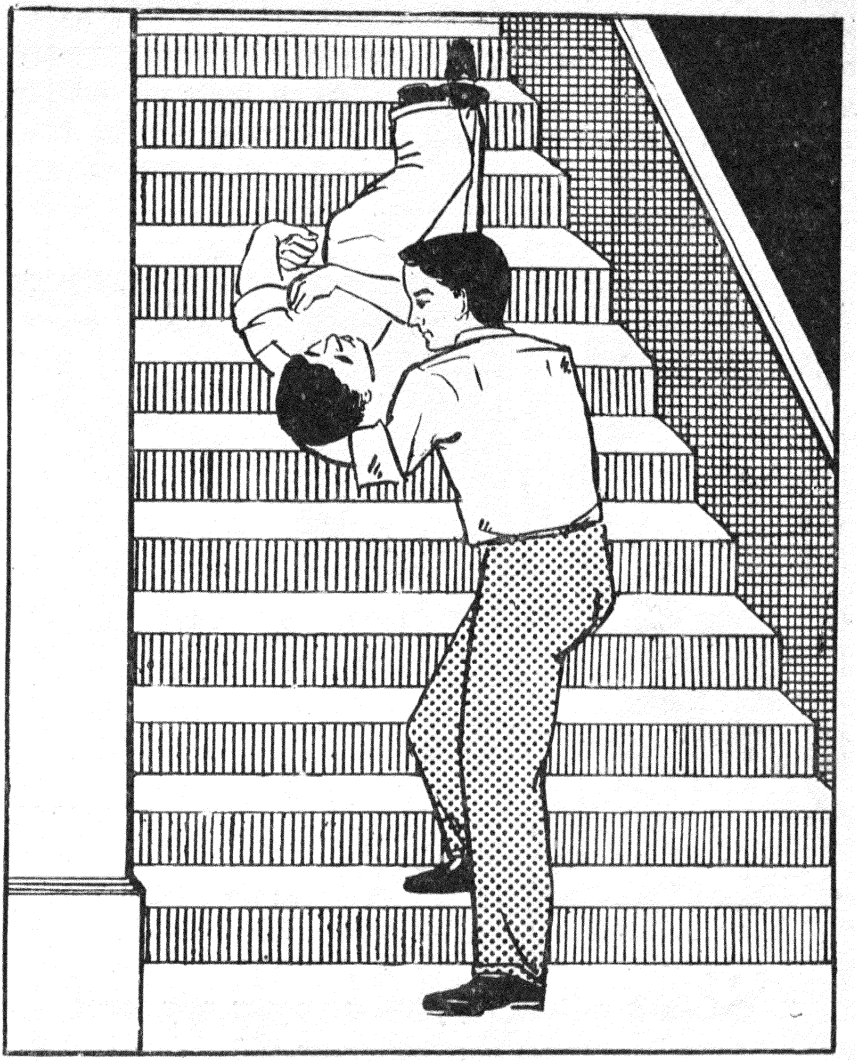
जैसा कि १३३ पृष्ठपर चित्रसंख्या ३५ में दिखाया गया है, उसे पीठके बल लिटा दें। उसका सिर नीचेकी ओर होगा। अपनी भुजाओं को उसी स्थितिमें रखें जैसा कि उस चित्र मे दिखाया गया है जिससे कि उसका सिर ठीक स्थितिमे रहे और तब उसे धीरे–धीरे नीचेकी ओर घसीटिए।

यदि किसी व्यक्तिको आग पकड़ ले, तो क्या करना चाहिये ?

ऐसे व्यक्तिको खडा न रहने दें। मुँह या सिर जल जानेपर भी अनेक मौतें हो जाती है। यदि ऐसा व्यक्ति दौड़ना शुरू करता है, तो आप उसे अडंगी मारकर गिरा भी सकते है, जिससे कि वह नीचे लेट जाय। तब आप उसे बेलनेकी भांति फर्शपर ऊपर और नीचे घुमाइए।

आप किस प्रकार खिड़की से बाहर निकलें और स्वयंको बचायें ?

यदि किसी परिस्थितिमे आपको अपनी सुरक्षा हेतु खिडकी से बाहर निकलना पडे, तो आपको इस कामके लिए एक रस्सी या कपड़ेका अवश्य प्रयोग करना चाहिए।

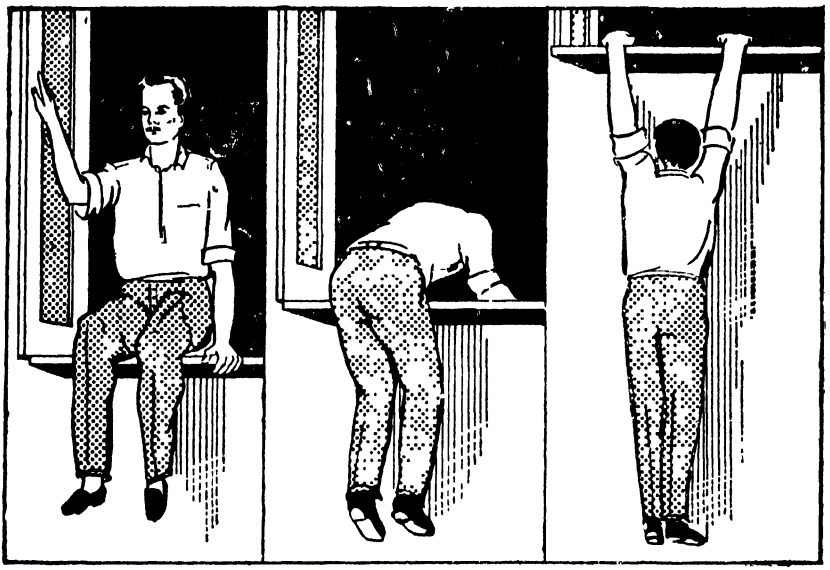


चित्र ३५

इस चित्रमे दिखाया गया है कि सीढियोसे नीचे किसी मूर्च्छित व्यक्तिको कैसे घसीटा जाय। ऐसे व्यक्तिको एक कम्बल मे या उसके स्थानपर किसी के कोटमे लपेटकर ऐसा करना अधिक सुन्दर होता है।

यदि वह संभव न हो सके, तो आपको चित्र सख्या ३६ मे प्रदर्शित तरीकोका उपयोग करना चाहिए। सर्वप्रथम अपने मुखको बाहरकी ओर करके आपको खिड़कीके निचले

अन्तिम हिस्सेपर बैठना चाहिए-जैसा कि नीचे के चित्रके प्रथम भागमें दिखाया गया है। इसके पश्चात आप अपने मुख को घुमाइये, पश्चात खिड़कीके अन्तिम निचले भागको पकड़कर नीचेकी ओर उतर जाइए—इस प्रक्रियाको आप इस चित्रके दूसरे भागमे देख सकते हैं। तृतीय चरणमें, जब आप अपने पूरे शरीरको नीचेकी ओर झुका देते हैं, तब आप नीचे कूद सकते हैं। इस तरीकेके द्वारा कूदनेकी ऊंचाई कमसे कम आपके शरीरकी लम्बाईके बराबर कम हो जाती है।



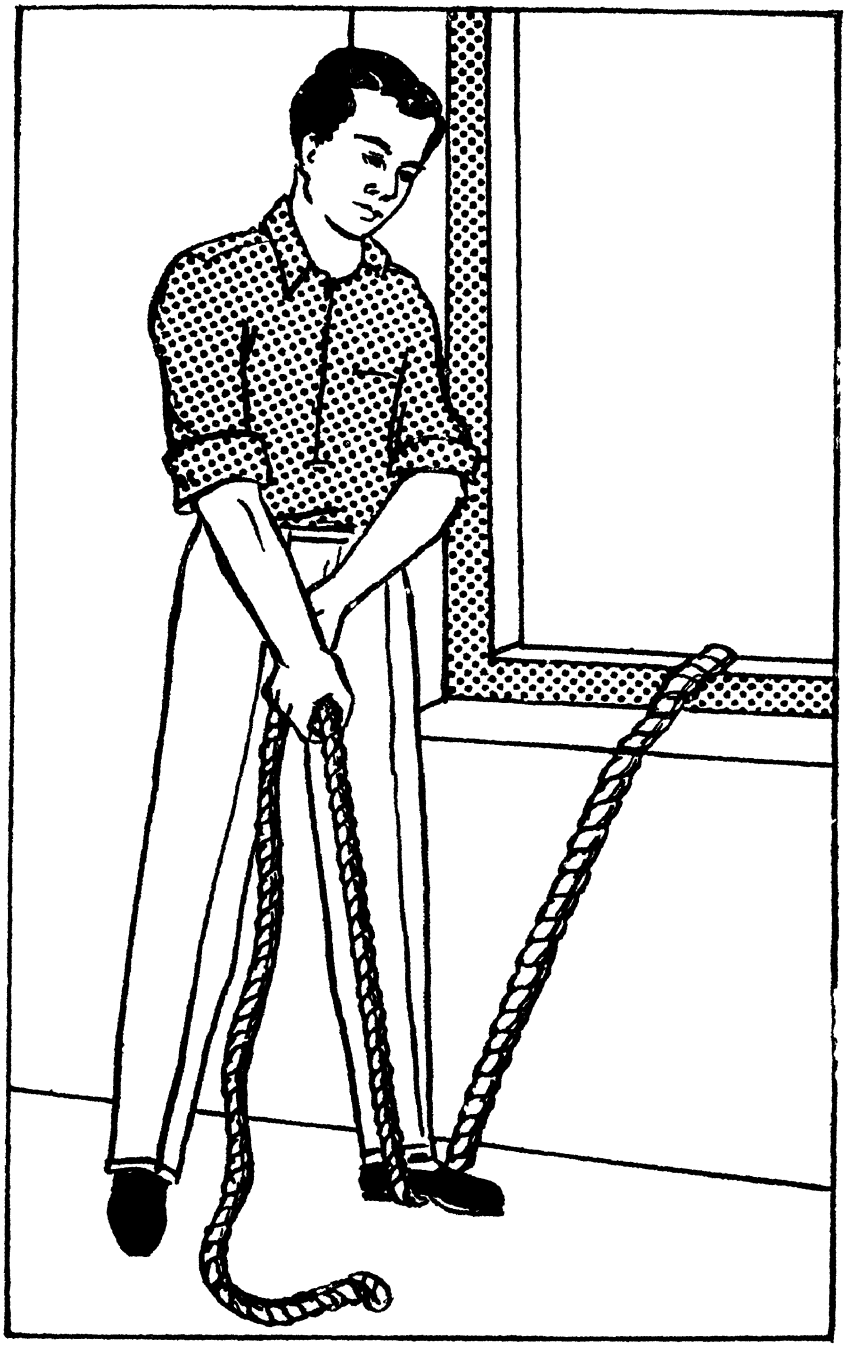
चित्र ३६

किसी खिडकीसे कूदते समयके प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरणोंको प्रदर्शित करनेवाला चित्र

कैसे किसी व्यक्तिको खिड़कीसे सुरक्षापूर्वक नीचे उतरने (जाने) दिया जा सकता है ?

जैसा कि पृष्ठ १३५ पर दिये गये चित्रमें दिखाया गया है, रस्सी को अपने पैरोके नीचे कसकर बांध लीजिए। इस तरीकेके अनुसार काम करते समय अधिकसे अधिक वज़नका व्यक्ति भी सुरक्षापूर्वक नीचे उतर सकता है।

ऐसा करते समय अभ्यासके लिए आप किसी भारी वजनी पदार्थ या भारी वज़नका भी उपयोग कर सकते है। बहरहाल, यह सदा ध्यानमें रखने की बात है कि आप खिड़कीके बाहर सुरक्षाके लिए केवल उसी समय जायं जबकि आपको बाहर जाना अत्यन्त आवश्यक हो और आपके लिए अन्य कोई विकल्प शेष न रह जाय।



चित्र ३७

इस चित्रमें दिखाया गया है कि किस प्रकार किसी व्यक्तिको खिड़कीमे से बाहर नीचे उतारा जा सकता है।

अग्निको नियंत्रणमे लाना

अग्निको नियन्त्रणमे लानेके लिए प्रयत्न करते समय प्रथम बात जो अवश्य याद रखनी चाहिए—वह यह है कि आपको उस स्थानके यथासम्भव अत्यन्त निकट रहना चाहिए जहांसे अग्नि शुरू हो रही है और जहा तक सम्भव हो आपको उसी स्थानसे अग्निको बुझानेका प्रयत्न करना चाहिए। यदि किसी कमरेको आगने पकड लिया है, तो उस स्थितिमे आपको तब तक उसमे प्रवेश नही करना चाहिए जब तक कि आगको बुझाने या नियन्त्रणमे लानेवाली सभी वस्तुए उपस्थित न हो। इसे स्पष्ट रूपमे समझ रखना चाहिए कि अग्नि केवल फर्शके माध्यमसे ही फैल सकती है और अनेक बार ऐसा होता है कि जब आप एक स्थानपर अग्नि बुझाते है, तब वह दूसरे स्थानपर पुनः जलना शुरू कर देती है। अग्निके अनेक स्वरूप है। अग्निको एक दृष्टिकोणसे बुझाना कठिन हो सकता है, जबकि दूसरे दृष्टिकोणसे उसे बुझाना आसान भी हो सकता है।

बहरहाल, सुरक्षाके उपयुक्त उपायोंके साथ हमेशा ही यह याद रखना चाहिए कि बडी अग्नि केवल 'फायर ब्रिगेड' के द्वारा ही नियन्त्रणमे लायी जाती है। किसी भी व्यक्तिको उसके वास्तविक स्थानका —न केवल अपने आसपासके स्थानोका, बल्कि बाहरके स्थानोका भी—पूरा ज्ञान होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्तिको यह अवश्य जानना चाहिए कि 'फायर ब्रिगेड' को बुलानेके लिए किस प्रकार टेलिफोन करना चाहिए। इसके साथ ही यह भी जानना जरूरी है कि जब एक 'फायर ब्रिगेड' आ जाता है तब लोगो को केवल सबद्ध बाते ही करनी चाहिए। आपको दमकल (फायर ब्रिगेड) के अधिकारीको आवश्यक सूचनाए प्रदान करनी चाहिए, जैसे कि — कैसे अग्नि लगी, व्यक्ति जो अग्निमे फस गये है, आसपासमे गैस, बिजली आदिकी उपस्थिति, और अन्य किसी चीज़से अधिक आपको दमकल (फायर ब्रिगेड) के अधिकारीको यदि आसपास कहीपर दमकल बम्बा (फायर हाइड्रण्ट) हो, तो उसके विषयमे अवश्य बताना चाहिए। यदि ऐसा नही है, तो उसका ध्यान स्थानापन्न पानीकी पूर्तिके स्रोतकी ओर आकर्षित करना चाहिए और इस सबधमे उसे हर प्रकारकी अपेक्षित सहायता अवश्य देनी चाहिए। यदि दमकल (फायर ब्रिगेड) के लोगोको किसी भवनके ऊपर चढ़ना है, तो उन्हे हर प्रकारकी अपेक्षित सहायता दी जानी चाहिए। लोगोको दमकल (फायर ब्रिगेड) के व्यक्तियोको बिना किसी बाधाके काम करने देना चाहिए और अधिक सख्यामे घटना —स्थलपर एकत्र होकर उनके कार्य मे बाधक नही बनना चाहिए। दूसरे भवनो में आगको फैलनेसे रोकनेके लिए हर सभव प्रयत्न करना चाहिए। किसी भी दशामे दमकल (फायर ब्रिगेड) के लोगोका समय अनावश्यक बातोमे बरबाद नही करना चाहिए। उनसे आशा की जाती है कि वे अपना कर्तव्य भली भाति जानते है।

भारतवर्षमे दमकल (फायर ब्रिगेड) सेवाका प्रारम्भ बहुत पुराना नही है। उदाहरणार्थ १९४२ मे दिल्ली दमकल सेवा 'फायर सर्विस' का नाम संस्कार किया

गया था, जबकि दिल्लीके सम्पूर्ण क्षेत्रोंको सेवा प्रदान करनेके लिए दिल्ली और नई दिल्लीकी दो भिन्न 'फायर ब्रिगेड' सेवाओंको एकमें मिला दिया गया था। वहांपर 'फायर ब्रिगेड' का सेवाका आधुनिकीकरण १९५२ में प्रारम्भ हुआ जबकि उस साल आधुनिक पद्धतिपर कनाट प्लेस स्थित दिल्ली फायर सर्विस–स्टेशन का पुनर्निर्माण किया गया था। वहांपर आधुनिक फायर–यन्त्र और साज–सज्जा या साधन, जैसे––ब्लोवर, इक्जास्टर, आक्सीजन और एसिटिलीन कटिंग सेटस्, श्वास–यन्त्रके सेट और अन्य विविध वस्तुएं प्राप्त की गयी थी।

दिल्लीमें पानीकी कमी के कारण–– विशेष रूपसे गर्मीके महीनोंमें –अग्नि–शमन कार्यके लिए पर्याप्त पूर्ति और दबावको सुनिश्चित बनानेके लिए एक अलग 'जल–विभाग' की स्थापना की गयी थी। उस शहरके विविध क्षेत्रोंमें लगभग ५००० दमकल बम्बा (हाइड्रण्टस्) और २५००० गैलन पानीकी शक्तिवाले ४० भूमिगत 'स्टेटिककुए'–– की व्यवस्था की गयी थी।

१९५४ में इस सेवाके अन्तर्गत एक रेडियो –टेलिफान सदेश वहन–पद्धति का भी श्रीगणेश हुआ और लेखकको १९६० ई तक प्राप्त सूचनाके अनुसार उसे 'स्ट्रीट फायर–एलार्मस्' की सस्थापनाके द्वारा समृद्ध किया जानेवाला था। १९६०–६२ में फायर–स्टेशनोंकी सख्यामें ७ की वृद्धि की जानेवाली थी। १९६० में अग्नि–बुझानेके लिए आवश्यक ४३ यन्त्र और एसिलियरी साधना के लिए विदेशोंमें आर्डर दिये गये। एक प्रशिक्षण स्कूलकी स्थापना भी की गयी, अध्यापन–कक्ष, पुस्तकालय और सिनेमाहाल इस आधुनिकी – प्रशिक्षण–स्कूलके कुछ अग हैं। इन नये दमकल (फायर) स्टेशनोंके लिए विदेशोंमें जिन अग्नि बुझानमें उपयोगी यन्त्रों और साधनोंके लिए आदेश–पत्र भेजे गये थे––उनमें १०० फीटकी ऊचाईपर पहुचनेके लिए दो गोल घूमनेवाली सीढ़िया––उन्हें द्रवोंस अथवा यत्रोंसे सचालित किया जा सकता है। लेखकके ज्ञानके अनुसार यह इकाई दूरभाषिक सवाद–वहन क्षमता योग्य भी बनायी जानेवाली थी। दूरभाषिक (टेलिफोनिक) सवध सीढ़ीके सिरेसे लेकर नीचे ... ... नियत्रण तक था।

भारतवर्षके अन्य भागोंमें भी इसी प्रकार फायर सेवाका विकास हुआ है और वह एक अत्यावश्यक शक्ति दल है। आधुनिक साधनोंकी कमीके बावजूद इस सेवा दलने अपना कार्य बड़ी ही प्रभावशीलता और क्षमताके साथ किया है। बहरहाल, जैसा कि नागरिक प्रतिरक्षाके लिए अग्नि बुझानेके साधनोंको खरीदनेके प्रश्नपर 'टाइम्स आफ इण्डिया' में ८ जनवरी १९६३ को एक प्रेस विज्ञप्तिके द्वारा यह इगित किया गया था कि इस विषयमें बगालमें उठा विवाद कुछ हद तक बड़ा दुखावह रहा। कुछ हद तक यह बड़ी विचित्र बात रही कि चीनी आक्रमणके प्रसगमें अपनी सुरक्षात्मक तैयारीके विषयमें हमें जो सबक मिले उनके बावजूद ऐसा लगता है कि हम अभी भी ऐसी

बातोंको बड़े हल्के ढगसे लेते है । उसी दैनिक पत्रके दिनांक १० जनवरी १९६३ के सपादकीयका एक उद्धरण देना यहां समीचीन ज्ञात होता है-- "इस तथ्य द्वारा वर्तमान परिस्थिति अधिक स्पष्ट हो जाती है कि सीमापर की अभी-अभीकी प्रगतिके विषयमे सरकार बिलकुल अप्रस्तुत थी और अधिकारी तथा अनाधिकारी लोग भी योजनाओं और विचारोके लिए जनताके देश प्रेमके पक्षके लिए एक निर्गम-स्थलके रूपमे-स्वतंत्र छोड दिये गये थे। आने-जानेके प्रयोजनपर वहां अप्राकृतिक रूपसे किसी निश्चित मात्रामे धावन-पथ-उत्साह और कार्य संचालन भी नही था। उसी सपादकीयमे आगे और लिखा गया है --"हवाई हमलेसे सुरक्षाके लिए कौनसी सावधानी आवश्यक और सम्भव है तथा कुछ विशिष्ट चुने हुए क्षेत्रोमे वहाकी स्थानीय जातियोमे किन सूचनाओ और जानकारियोंका प्रसार आवश्यक है" --इस विषय मे सरकारको अवश्य सोचना चाहिए जिससे कि जनता अपने कर्तव्योको जाने और यह भी जाने कि यदि कभी आवश्यकता आ पडे, तो सुरक्षा के लिए क्या करना चाहिए। किसी दूसरे समय मानसिक रूपसे अप्रस्तुतर हनेका कोई बहाना दूसरी बार नही हो सकता है।

गत दिनों सम्पूर्ण भारतवर्षमे मनाये गये 'अग्नि-सुरक्षा सप्ताह मे' फायर ऐडवाइज़री कमेटी' : अग्नि-सलाहकार-समिति : के अध्यक्ष कमाण्डेण्ट जनरल एम. जे. बी. मानेकजीने कहा था कि "समय आ गया है जबकि संपूर्ण देशमे अग्निसे होनेवाली क्षतिसे बचावके लिए प्रभावकारी कदम उठाये जाय । यदि सुरक्षात्मक उपायोको नही अपनाया गया, तो राष्ट्रकी प्रगति और उत्पादनकी योजनाए गभीर रूपसे प्रभावित होगी।" जैसी कि कमाण्डेण्ट जनरलने टिप्पणि की थी- 'कामगारोंके लिए 'अग्नि-सुरक्षा-प्रशिक्षण, अग्निके कारण उत्पन्न सकट और उससे लोगोको बचानेके लिए किये जानेवाले कार्य आदि की बातें किसी नियुक्त व्यक्तिके लिए उतनी ही आवश्यक है जितनी कि उस कामगारोके लिए उसके व्यवसायका चातुर्य और ज्ञान।

कमाण्डेण्ट जनरल मानेकजीने उसी 'अग्नि-सुरक्षा-सप्ताह' मे यह भी कहा था कि कोई भी स्थाई 'अग्नि-सुरक्षा-दल' सेवा बिना नागरिकोकी सक्रिय सहायता और सहकारिताके अपने उद्देश्य-प्राप्तिकी आशा नही कर सकती।

अनेक राज्योमे स्थापित 'आक्ज़िलरी फायर-सर्विस' मे प्रवेश प्राप्त करके और लोक-सेवाके इस अत्यन्त उपयोगी पक्षका प्रशिक्षण प्राप्त करके वे सहायक हो सकते। उन्होंने इस देशमे और बाह्य देशोमे गत युद्धके दौरान 'नागरिक अग्नि-सेवको के द्वारा संपादित अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्योका मर्मस्पर्शी उदाहरण दिया था। वे अत्यन्त सही रूपमे स्वीकार करते है कि अग्निके बचाव और नियंत्रणके तरीकोंके विषयमे हमारे नवयुवकोका प्रशिक्षण एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है और इसे स्कूलोमे शैक्षमिक पाठ्यक्रमका एक अनिवार्य प्रशिक्षण विषय बना देनेके लिए कदम उठाये जाने चाहिए क्योकि यह आवश्यक है कि अत्यन्त

छोटी अवस्थासे ही लड़के और लडकियां अग्नि चेतक' हो जाते है। कतिपय पाश्चात्य देशोंमें ऐसे शैक्षणिक तरीके शिक्षाके अग बन गये है। शिक्षाविदों और शिक्षाधिकारियोंको हमारे नवयुवकोमे जागृति पैदा करनेके लिए इन उपायोको अवश्य समाविष्ट करना चाहिए।

एक अत्यन्त दिलचस्प बात गत दिनो महाराष्ट्रमे 'अग्नि–सुरक्षा–सप्ताह'–में प्रदर्शित हुई थी–जबकि बर्मा–शेल आयल–रिफायनरी कंपनी का एक सदस्य अग्निनिरोधक सूट पहनकर उस कंपनीके अग्नि बुझानेवालोके द्वारा अतिम रूपसे उसके बुझाये जानेके पहले ही तेल–अग्नि ज्वालाके मध्य से गुजरा। अग्नि बुझानेवाले लोगोंको यथासभव सर्वोत्तम रूपसे ऐसे अग्निनिरोधक पदार्थो या साधनोसे फायदा उठाना चाहिए।

यह अध्याय पर्याप्त लम्बा होता जा रहा है और इसी कारण लेखक यहा नीचे लिख रहा है कि किसी अग्नि बमके प्रयोगके विरोधमे लोगोको क्या करना चाहिये और क्या नही करना चाहिये।

कर्तव्य

१ – छतसे समस्त ज्वालाग्रही पदार्थोको हटा दीजिये।

२ – प्रकोष्ठ तक पहुचनेके लिए पूरी व्यवस्था रखिए।

३ – सभी बडेरो (Beams) को अग्नि–निरोधक–पदार्थोसे रग दीजिए।

४ – २१ पौड बुझा हुआ चूना, १ औस नमक, १ औस पानी मिला दीजिए और तीन बार रग दीजिये।

५ – अग्नि–नियंत्रणके लिए पानी और बालूका उपयोग कीजिए।

६ – पानीको छिडकनेके लिए 'स्टिरप–पप' का उपयोग कीजिए।
: बमको शीतल करने और नियत्रणमे लानेके लिए पानीके छिड़काव का कार्य और 'जेट' का प्रयोग अग्निको विशेष स्थानपर स्थिर करनेके लिए:

७ – फैलनेसे पहले ही अग्निको बुझा दीजिए।

८ – अग्नि बुझानेके कार्यमे लगे लोगोको पूर्ण प्रशिक्षण – प्राप्त और आवश्यक साधनोसे युक्त होना चाहिए।

९ – भागनेके निम्नलिखित उपायोको जानिए और उनका उपयोग कीजिए :–
: क : दरवाजोको बन्द करना।
: ख : किसी घरकी खोज करना।
: ग : अग्नि लगनेपर चलते रहना।
: घ : धुएके बीचमे से रेंगना या घिसटना।
: च : दरवाजोको खोलना।

:छ: मूर्च्छित व्यक्तिको बचाना।

·ज· किसी मूर्च्छित व्यक्तिको सीढ़ियोंसे नीचे खींचकर या घसीटकर ले आना।

झ. यदि किसी व्यक्तिको आग पकड़ ले, तो क्या करना चाहिय।

:ट: किसी खिड़कीसे कूदकर बाहर जाना।

.ठ. खिड़कीसे किसी आदमीको बचाना।

१० – आपकी छतको किसी बम द्वारा भेदनेसे रोकनेके लिए निम्नलिखित सावधानी बरतनी पड़ेगी :–

लोहे की चादर १। ८ इंच मोटी,

बालूके बोरे की एक तह

पुनर्दृढ़ीकृत कंक्रीट ३ १। २ से ८ इंच मोटी।

२ इंच सूखा बालू

२ १। २ इंच घरकी राख

२ इंच मोटी बारहसिंगोंकी झाग (फेनिल धातुमल Foamed Stag)

२ इंच मोटी मिट्टी

लगभग ३। ८ इंच मोटाईके बराबर चट्टानों की पथरीली मिट्टी मोटी

लगभग ३। ४ इंच मोटा तारकोल और रेत का मिश्रण

११ – बमको हटाने या रखनेके लिए एक उपयुक्त स्थलका चयन कीजिए।

१२ – फर्नीचरकी उपयुक्त व्यवस्था पर भी ध्यान दीजिए।

१३ – बिखरे हुए कागजों और लकड़ी के छोटे छोटे टुकड़ों को ठीक से रखिये।

१४ – अपने 'स्टिरप–पंप' को सदा काम योग्य बनाये रखें।

उसके लिए––

.क· सप्ताहमें एक बार पंपके पिस्टनपर मोटा तेल या ग्रीसको लगाइए।

.ख 'ब्रास ग्लैंड नट' को कसकर रखें।

:ग: प्रयोगके पश्चात पंप और होज पाइपसे पानीको बाहर निकाल दें।

·घ· प्रयोगके पश्चात होज पाइपको लपेट Coil: कर रखें।

च: 'जेट–स्प्रे' की मुँहनालीके छेदको बाह्य पदार्थोंसे मुक्त रखें।

.छ. जब गंदे पानीका उपयोग करें, तो कभी–कभी 'फूट स्ट्रेनर' अथवा पैरों वाले फिल्टर को साफ कर लिया करें।

१५ – किसी अग्निदाहक बमको बुझानेके लिए :–

·क आक्सीजनको राखके ढेरमें दबा दीजिए।

:ख: इसे दहनीय बिन्दुके नीचे तक शीतल कर दीजिए।

१६ – चूँकि भयंकर विस्फोटके आघातकी स्थिति निरंतर परिवर्तन करती रहती है, इसीलिए विस्फोटके निश्चित समयको निर्धारित नहीं किया जा सकता, पर वर्तमानके लिए, यदि बम प्रज्वलन के ५–६ मिनटके अंदर विस्फोट नही करता, तो सुरक्षापूर्वक यह सोचा जा सकता है कि यह बम अविस्फोटक है।

१७ – प्रारभमे प्रत्येक अग्नि बमको भयकर विस्फोटक मानना चाहिए, यद्यपि वस्तुतः दसमे एक इस प्रकारका होता है।

१८ – उद्यानो या खुली जगहोमे गिरे हुए अग्निबमके ऊपर सूखे बालू या मिट्टीके बोरेका प्रयोग करे। उनके साथ जितनी जल्दी संभव हो उतनी जल्दी निपटिए : याद राखिए कि किसी घरमे भी अग्नि हो सकती है .। वहापर अपने बालूके बोरेके साथ पहुचनेपर अपनी आखो और चेहरेकी रक्षाके लिए प्रत्येक प्रकारकी सावधानी रखे। जितनी जल्दी संभव हो, उतनी जल्दी केवल अपने बालूके बोरोको बमके आर–पार आड़े रूपमे रख दे और उसे छोडकर हट जाय।

निषेध

१ – विचलित मत हो।

२ – आपातिकके घरमे आप आग पकड़ने योग्य पदार्थोको मत रखे।

३ – अग्निको नियत्रणसे बाहर न जाने दे।

४ – कुएसे पानी लानेके लिए या खीचनेके द्वारा अपने पड़ोसीकी सहायता करनेमे सकोचका अनुभव न करे।

५ – अपने 'स्टिरप पप' का भद्दे ढगमे प्रयोग न करे।

६ – दमकल (फायर–ब्रिगेड) के मार्गको कभी भी और किसी भी प्रकारसे न रोके।

७ – जहा कही भी किसी बम पर पानी न फेंके। शायद यह विस्फोट करे और आपको बुरी तरह जला दे।

८ – किसी बम की अग्नि को रोकने के लिये किसी रासायनिक पदार्थ का उपयोग न करे।

९ – किसी अविस्फोटित अग्नि बमका स्पर्श मत करे।
किसी विशेषज्ञकी सहायता ले।

१० – आग लगनेकी स्थितिमे किसी मकानमे नीचेसे खोज न करे।

११ – अग्निको आग बढने और फैलनेसे रोके।

१२ – 'फायर पेट्रोल' : दमकल – गश्त : की क्रियाओ अथवा उनके मार्गको बाधित न करे।

१३ – यह न भूले कि किसी विशेष परिस्थितिमें आपको और आपके परिवारको मकान खाली करना पड़ सकता है । अतः पहलेसे ही आवश्यक सावधानी बरते ।

१४ – किसीके जीवनको बचानेके प्रयोजनके अतिरिक्त किसी भवनमे पुनः प्रवेश न करे। ऐसा उन्हे ही करना चाहिए, जो पूर्णतः प्रशिक्षित है।

१५ – किसी बमपर कुदालीसे प्रहार न करे। लोगोने ऐसा किया है और उसे दूर भी किया है, पर यह बडा ख़तरनाक है।

– अध्याय ७ –

भयंकर विस्फोटक बम

आधुनिक युगमे नाभिकीय (Nuclear) आयुधोके विकासने भयकर विस्फोटक बमोकी स्थितिको बहुत प्रभावित किया है। कोई भी व्यक्ति कल्पना कर सकता है कि आधुनिक ढगके युद्धमे केवल नाभिकीय आयुधही प्रयुक्त होगे, लेकिन भयकर विस्फोटक बमोके भी प्रयोगकी सम्भावनाको मिटाया नही जा सकता। इसका कारण यह है कि गत युद्धके बाद अनेक राष्ट्रोने बडी सख्यामे इन बमोका निर्माण किया है। उनके प्रयोग अवश्य होगे, क्योकि सामान्य रूपसे कोई भी व्यक्ति उन्हे बरबाद नही करना चाहेगा। तब फिर यह कारण ठीक नही जचता कि एक तो नाभिकीय आयुधो की उन्नति और स्वामित्वपर कुछ सीमित राष्ट्रोका ही एकाधिकार होनेके कारण प्रत्येक राष्ट्रको उन्हे रखनेका अधिकार नही है और दूसरे यदि किसी राष्ट्रके पास ऐसे बम है, तो भीवे उनका प्रयोग अनेक राजनीतिक, सामाजिक और सामरिक विचारोके पश्चात् ही करेगे। यह बात अवश्य याद रखने योग्य है कि परमाणु या उदजन बम आधार केन्द्रको भी प्रभावित करता है और यह भी अनेक कारणोमे से एक है कि क्या प्रत्येक व्यक्ति उनका प्रयोग करना नही चाहेगा। इसके अतिरिक्त यह भी एक प्रश्न है कि लोग पराभूत राष्ट्रका सम्पूर्ण विध्वस नही चाह सकते, क्योकि ऐसी स्थितिमे अतमे विजयके समस्त फायदे कम हो जायेगे।

कुछ भागोमे कभी–कभी यह आशका प्रकट की जाती है कि आठ करोड लोग एक उदजन बमके प्रयोग के पश्चात कुछ ही मिनटोमे मर सकते है। जब ऐसी बात है, तो ऐसे लोग यह भी आशका प्रकट करते है कि 'फिर नागरिक प्रतिरक्षाके विचारोका क्या अर्थ है? आपको शरणगृह या अन्य आश्रय नही बचा सकते!' एसे विचार अथवा अदेश पूर्णतः एकागी है। पहली बात तो यह कि हमारे देशकी विशालताके कारण व्यवहारतः इस अक–अनुमानकी आशका भी ठीक नही है। ऐसे लोगो द्वारा दिया गया यह अक अत्यन्त घने आबाद स्थानो–लन्दन या न्यूयार्क–पर ही लागू हो सकता है। लेकिन वही वक्तव्य भारतवर्ष या किसी दूसरे देशके लिए, जहा इतनी अधिक केन्द्रित कोई घनी बस्ती नही है–सत्य नही है। यह एक तथ्य है कि रेडियो–सक्रिय–राख लोगोको बहुत बड़ी सख्यामे प्रभावित करेगी। लेकिन यह भी एक तथ्य है कि यदि लोग कुछ दिनो तक उत्तम रूपसे शरणगृहोमे या दीवालके भीतर रहते है, तो वह रेडियो–सक्रियताके विरोधमे निश्चय ही बहुत बडी सख्यामे स्वयकी रक्षा कर सकते है। इन्ही और इन जैसी अन्य

अनेक पद्धतियों पर यह तथ्य आधारित है कि नागरिक प्रतिरक्षाकी महत्ताको अवश्य ही अनुभूत किया जाय और जो यह कह सकते है कि 'नागरिक प्रतिरक्षाकी कोई विशेष उपयोगिता नही है– वे एक अत्यन्त गलत विचार को बढ़ावा देते है और गत चीनी आक्रमणसे प्राप्त अनुभवो और शेष विश्वके प्रयासोको दृष्टिपथमे रखते हुए ऐसे विचारोंको अवश्यही अपमानित और उपेक्षित करना चाहिए।

भयंकर विस्फोटक बमोके प्रयोगकी चर्चा करते समय मै अपने पाठकोका ध्यान इस बातकी ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि १९४८ मे मैने अपनी जर्मनी, इग्लैण्ड फ्रान्स, बैल्जियम, हालैण्ड, टर्की, मिस्र और अन्य अनेक देशोकी यात्राके सिलसिलेमे क्या देखा। यहा पर मै केवल जर्मनीकी ही स्थितिका उल्लेख करता हूं। हेम्बर्ग, ब्रैमन, फ्रैंकफर्ट और बर्लिनमे मैने देखा कि अगणित भवनोके शीर्ष भाग समाप्त हो गये थे। अनेक भवन अर्द्ध–ध्वस्त रूपमे खड़े थे। मैने बर्लिनमे अनेक स्थानोपर देखा कि रेलकी पटरिया न केवल ध्वस्त हो गयी थी, बल्कि कही–कही तो वे लम्बात्मक रूपमे किसी पेड़की ऊचाई तक चली गयी थी। यहा तक कि बर्लिनका राइस्टाग (Reichstag) भी एक ध्वस्त स्थान बन गया था। बर्लिनको पुनः नये रूपमे बनाया और बसाया जा रहा था और इसका प्रधान कारण भयकर विस्फोटक बमोका प्रयोग ही था। इसी प्रयोगके कारण भवन, राजमार्ग और उद्यान कुचलकर चूर–चूर हो गये थे। जहापर हिटलरके आत्महत्या करनेकी सभावना की जाती है, उस भवनको भी मैने देखा, मुझे वहा केवल मलबो ओर बमोके फटनेसे उड़नेवाले टुकड़ोका ही अम्बार मिला। सक्षेपमे हम जर्मनी, पोलैण्ड, रूस, फ्रान्स और इग्लैण्डमे भयकर विस्फोटक बमोके प्रयोगके द्वारा उत्पन्न आतककी विशेषरूपसे केवल कल्पना ही कर सकते है–जहा पर युद्धके अनन्तर इन देशोके सामने विशेष रूपसे मास्को, इसके उपनगरो और अन्य अनेक स्थानोमे तथा पोलैण्डमे पूर्णतः सविरचित सामग्रीके साथ नितान्त नये उपनगरोके निर्माणके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नही था।

हम निश्चयात्मक ओर वास्तविक रूपमे कल्पना–केवल कल्पना ही कर सकते है कि तीसरे सासरिक युद्ध (Third World War) मे केवल नामिकीय आयुधो का ही प्रयोग होगा। सच बात है कि भयकर विस्फोटक और अग्निदाहक बमोके प्रयोग समाप्त नही हो सकते। हमे उनके विषयमें और साथ ही उनके प्रयोगके विरुद्ध सुरक्षाके उपायोके विषयमें पूर्ण जानकारी रखनी होगी। इसी प्रकार वैयक्तिक और सामूहिक रूपमे प्रत्येक व्यक्तिको ली जानेवाली सावधानी की पूर्ण जानकारी होनी चाहिये। हमे ब्रिटेनके युद्ध, अमेरिकाके बमोंके शिकार, जर्मनीपर मित्र–राष्ट्रो के आक्रमण, मास्कोमे लडा गया भयानक युद्ध आदिसे जो शिक्षा प्राप्त हुई है–वह भुलायी नही जा सकती। यदि हम अब तक प्राप्त सभी अनुभवोको यो ही धो–बहा देनेका प्रयत्न करे, तो यह सहज ही एक भारी भूल होगी। निश्चयही

सभी स्थानोपर और सभी समयोमे केवल सैन्य–शक्तिका ही प्रयोग नही किया जा सकता। नाभिकीय ऊर्जाकी प्रगति और ममावेशके द्वारा वैज्ञानिकोने मानवके विध्वसका एक और मार्ग प्रशस्त कर दिया है। बन्दूको और मशीनगनोकी गोलिया भी अपने स्थानपर उपयोगी है। मैने बर्लिनमे देखा कि वहापर युद्धके पश्चात अगणित भवनोकी दीवालोंपर निशान शेष रह गये थे–उनसे यह स्पष्ट मुखरित था कि युद्धके अतिम चरणमे मशीनगनोसे कितना भयकर युद्ध हुआ होगा। तब पुन: हमे टैंको, अन्य आयुधो और युद्धके अन्य अनेक उपायोके विषयमे सोचना ही पडता है। अत: हमे यथार्थवादी होना ही पडेगा। हमे अपनी दृष्टिको अस्पष्ट नही रहने देना चाहिये साथ ही हमे नाभिकीय युद्धके प्रश्नपर अपनी कल्पनाको भी उपहास–योग्य नही होने देना चाहिये।

भयकर विस्फोटक बमोके कार्यके ढग, उनसे होनेवाली क्षति और साथ ही उनसे सम्बद्ध अपेक्षित सावधानीको समझनेके पूर्व निम्नलिखित बातोके विषयमे जानकारी प्राप्त करना पर्याप्त श्रेयस्कर है –

: १ : विस्फोटक किन–किन पदार्थोसे बनत है ? . २ किसी विस्फोटकी प्रकृति क्या होती है ? ओर . ३ . विस्फोटकोके उपयोग क्या–क्या है ?

विस्फोटक किन–किन पदार्थोंसे बनते हैं ?

चूँकि विस्फोटक तुरन्त प्रज्ज्वलनके द्वारा प्रभूत परिणाममे गैस उत्पन्न करता है, इसीलिए यह स्पष्ट है कि उनमे वे सभी तत्व विद्यमान हो, जो आवश्यक आक्सिजन उत्पन्न करते है और जिसके बिना कोई भी वस्तु जल नही सकती और उनमे उन तत्वो की विद्यमानता भी आवश्यक है जो आक्सीजनके साथ जुडते हे। उदाहरणके लिए हम बारूद (गन पावडर) को ले सकत हे; यह पाउडर पोटाशियम नाइट्रेट . साल्टपेट्रे चारकोल और सल्फरका सम्मिलित रूप है, ओर यह जब जलता है, तो यह अपने वाल्यूममे लगभग ४००० गुनी अधिक गैस उत्पन्न करता है। साल्टपेट्रे द्वारा छोडी गयी आक्सिजनमे चारकोल और सल्फर जलते है और यह कार्य बडी तीव्र गतिसे होता है। एक ओर अधिक शक्तिशाली विस्फोटक––शतघ्नी–तूल : गनकाटन : है–इसका अविष्कार जर्मन वैज्ञानिक क्रिस्चियन स्कानबीन द्वारा १८४६ ई मे किया गया था। शतघ्नी–तूल : काटन फाइबर : के साथ सशक्त नाइट्रिक और सल्फ्युरिक एसिडको मिलाकर यह बनाया जाता है। यदि जला दिया जाय तो अग्नि की एक छोटी–सी चिनगारी इसे बडी क्षिप्र गतिसे, पर सुरक्षित रूपमे जला सकती है। बहरहाल, यदि इसे आघात लग जाय, तो यह बडी प्रचण्डताके साथ विस्फोट करेगा। इस तथ्यमे हमे ज्ञात होता है कि भयकर विस्फोटक बम किस प्रकार कार्य करते है।

विस्फोट का स्वरूप

विस्फोटका सिद्धान्त आकस्मिक ओर नाटकीय प्रसरणपर आधारित है। विस्फोटक ऐसे सारतत्त्व है जो अपने वातावरणपर सार तत्त्वके उष्ण गैसमे शीघ्र

परिवर्तनके परिणामस्वरूप आकस्मिक दबाव डालनेमें समर्थ है। ये गैसें वस्तुतः वही स्थान छेकती है जिसे सार तत्त्व विस्फोटके क्षणोमे छेकता है, लेकिन विस्फोटकी गर्मी उनके प्रसारका कारण बनती है। गैसावरोधक भाण्डके लिए यह दबाव अत्यन्त अधिक हो जाता है और इसी कारण विस्फोट होता है। हम क्यो विशेष विस्फोटकोका प्रयोग करते है? आघात पहुचानेवाली किसी दूसरी वस्तुका हम प्रयोग क्यो नही करते? विस्फोटकोके विषयमे तथ्य यह है कि वे अद्‌भूत भयंकर गतिसे जलते है और जब वे किसी निषिद्ध खुली जगह में दृढबद्ध रूपमें ससीमित कर दिये जाते है—जैसी स्थिति भयंकर विस्फोटक बमो की है, तो जलनेसे उत्पन्न गैस ध्वंसके कार्यके लिए स्वतंत्र रहती है। विस्फोटकोके निम्नलिखित दो अत्यन्त महत्वपूर्ण गुण है :—

: १ : उनमे सारतत्त्व अथवा सार तत्त्वोंके मिश्रण, अवश्य होते है, जो सामान्य स्थितियोके अतर्गत अपरिवर्तित रहते है, लेकिन जब इनके साथ अपेक्षित वस्तु संलग्न हो जाती है, तो उनमे तीव्र रासायनिक परिवर्तन उत्पन्न हो जाता है।

: २ : इस परिवर्तनसे गैसे अवश्य उत्पन्न होती है जिनकी मात्रा विस्फोटके परिणाम स्वरूप उच्च तापमानमे मूल तत्त्वसारकी अपेक्षा अधिक व्यापक होती है। इससे भी भयकर विस्फोटक बमोकी प्रक्रियाकी जानकारी प्राप्त होती है।

यदि हम उपर्युक्त दोनो सिद्धातो को अंको द्वारा स्पष्ट करना चाहें, तो हमें विस्फोटोकी विस्तृति गतिके विषयमे कुछ भाव प्राप्त हो जायगे। जब विस्फोटक दहता है, तो इससे पैदा हुई गैसें ११००० फार्नहाइट तापमान पर पहुच जाती है, यह इस्पात पिघलानेवाले तापमानसे लगभग पाच गुना अधिक ऊचा है। अतएव, वे भयंकर गतिसे संप्रसारित होते है। वे स्वयं अपनी मात्राको लगभग १०००० गुना तक बढा सकते है। इससे भी भयकर विस्फोटक बमकी क्रियाका स्पष्टीकरण होता है। साथ ही इस बातका भी ज्ञान होता है कि उसके प्रयोगके कारण क्यो अपार क्षति होती है। यहा इतना और कहा जा सकता है कि जब विस्फोटको का प्राणोदक (Propellants) के रूपमे प्रयोग होता है, तो यह खोल या प्रेक्षपास्त्र ही है जो सामने या ऊपरकी ओर घूमनेके द्वारा अर्थात् 'फायर्ड' होने के द्वारा—मार्ग प्रदान करता है। इससे किसी प्रेक्षपास्त्र या राकेटकी क्रियाका स्पष्टीकरण होता है।

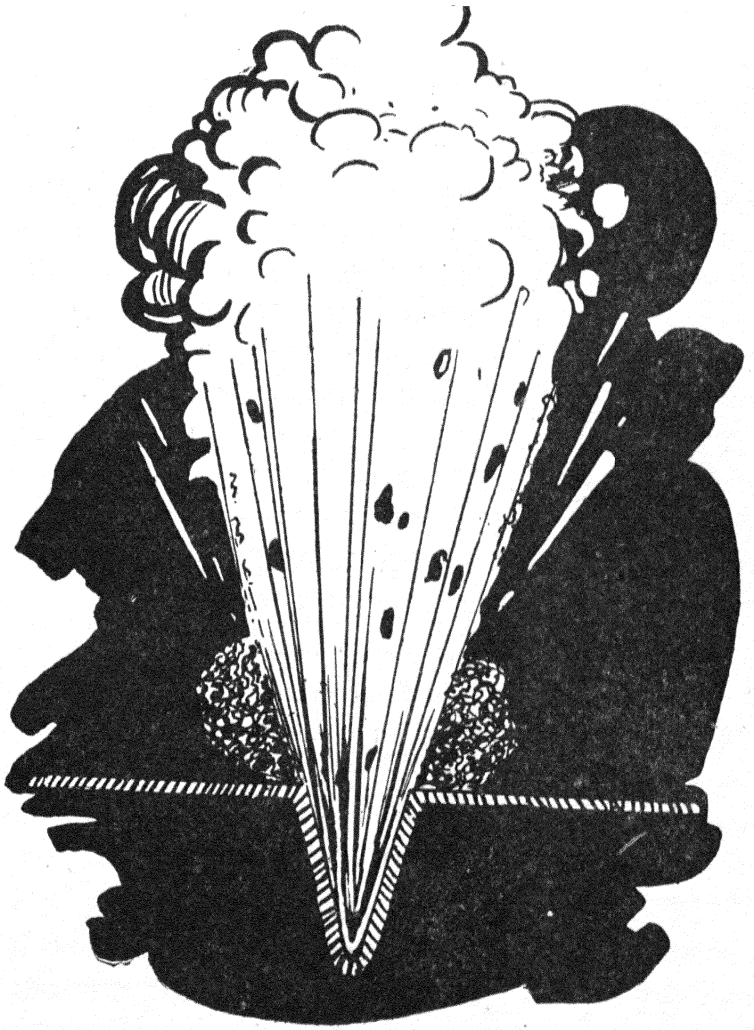
विस्फोटकों के प्रयोग

इनके प्रयोग केवल भयंकर विस्फोटक बमो, प्रेक्षपास्त्रो, राकेटो और अन्य भयंकर आयुधोको बनानेके लिए ही नही किये जाते, बल्कि इनके प्रयोग मानव की महान सेवाओ के लिए भी किये जाते है। वे कोयला और अन्य खनिजोके लिए भूमिमे नीचे छेद बनानेमे मनुष्यकी सहायता करते है। उनके बिना खानकी खुदाई या उत्खनन अपार श्रमके काम हो जायगे। बडी ही मनोरजक बात होगी यदि मै इस प्रसंगमें इतना कहूं कि विस्फोटको—जो अन्य तत्त्वसारोंकी अपेक्षा अधिक अग्नि उत्पन्न करते है—को

तुलकूपों (Oil Wells) में लगी आगको बुझानेके लिए भी प्रयोगमें लाया जाता है। विस्फोटकोंके स्फोटसे अग्निको शान्त करनेके द्वारा यह कार्य किया जाता है।

भयंकर विस्फोटक बमों के प्रयोग

भयंकर विध्वंसक बमोंका प्रयोग भवनों, चलते हुए कारखानों, विद्युत–संस्थानों पुलों, पानीके तड़ागों और अन्य दूसरी चीज़ों या स्थानों—जो मुख्य रूपसे रहने अथवा



चित्र ३८

लोह – बर्म – बेधक बम का चित्र

जनताके प्रति दिनके जीवनके कार्योंसे संबंधित है—को ध्वस्त करनेके लिए किया जाता है। ये बम लोगोंमे आतक पैदा करनेके लिए भी प्रयोगमे लाये जाते है। किसी भयंकर विस्फोटक बमके द्वारा होनेवाली क्षति बमके आकार, बमके प्रकार, भूमि—जहा पर वह गिराया गया है—का प्रकार आदि पर निर्भर है।

सामान्य परिस्थितिमे किसी भयंकर विस्फोटक बमके प्रत्यक्ष प्रहारके विरोधमे सुरक्षाका उपाय नही है, यदि है तो वह नही के बराबर। युद्ध—क्षेत्रोंमे इन बमोके प्रत्यक्ष प्रहारके भी विरोधमे लोगोको बचानेके लिए विशेष रूपसे शरणगृहोके निर्माण किये जाते है। लेकिन सामान्य जनताके लिए इन शरणगृहोके निर्माणका व्यय इतना निषेधात्मक है कि सर्वसाधारण जनताके यथार्थ उपायोगके लिए वे बहुत बडी सख्यामे नही बनवाये जा सकते।

इस पुस्तक के लेखककी सर्वोत्तम जानकारीके अनुसार गत द्वितीय विश्व-युद्धमे प्रयुक्त भयंकर विध्वंसक बमोका आकार २५ सेर और २५ मन : उस समयमे प्रचलित प्राचीन भारतीय वजन : के मध्य था। यहा यह भी विदित है कि ५८ मन वजनके भी एक भयकर विस्फोटक बमको तैयार किया गया था। बहरहाल, ऐसे बम उस समयमे प्रचलित प्राचीन भारतीय वज़नमे सामान्यतः लगभग १५० सेरके थे। उनसे अपार क्षति होती थी, पर इतना होने पर भी उनसे सुरक्षाका एक अवसर था। इस सुरक्षाके सबंद्धमे पाठकोको इस पुस्तकका 'शरणगृह और खाइया' शीर्षक अध्याय पढनेकी सलाह दी जाती है। यद्यपि प्रत्यक्ष आघातके विरोधमे बचावकी अत्यन्त कम सम्भावना है, लेकिन—बम— विस्फोटके कारण उड़नेवाले टुकड़ो, बारूद या भभक, आचूषण और मलबापातके विरोधमे सुरक्षा अवश्य प्रदान की जा सकती है। आकस्मिक सक्षोभ अत्यन्त भयानक वस्तु है, लेकिन यदि आवश्यक सावधानी ली जाय और जनताको उचित शिक्षा दी जाय, तो उसे कम किया जा सकता है।

किसी भयकर विस्फोटक बमके द्वारा भूमि तलपर विनिर्मित होनेवाला ज्वालामुखी, बमके आकार और उसके साथ ही जहापर वह गिराया गया है, उस भूमि—दोनो के ऊपर निर्भर है। गत युद्धमे दोनो प्रकारके बमोके प्रयोग किये गये थे। एक तो वे जो विस्फोटकके पूर्व धरतीमे धस जाते थे जिन्हे लोह—वर्म—वेधक बम : (Armour Piercing Bombs) : कहा जाता था, और दूसरे वे जो भूमिको बिना बेधे ही विस्फोटित होते थे। पिछले पृष्ठपर ३८ वें चित्रमें एक 'लोह—वर्म—वेधक—बम' का चित्र दिया गया है।

यदि ठोस भूमिपर लगभग इस प्रकार साढे सात मन वज़नका बम गिराया जाय, तो इससे ९ फीट ६ इंच गहरा और ३१ फीट २ इंच परिधिवाला एक ज्वालामुखी बन जाएगा।

सामान्य रूपसे गत द्वितीय युद्धमे मध्यम वज़नके बमोके ही प्रयोग हुए थे। सामान्यतः बमवर्षक तीन टन तक के बमो को ही ले जा सकते थे, लेकिन उस समय

ऐसे भी बमवर्षक थे जो उससे अधिक वजन ले जा सकते थ. यद्यपि ऐसे बमवर्षकोंकी संख्या अत्यल्प थी।

गत युद्धके दौरान विलंबसे फटनेवाले बम 'डीलेड एक्शन बाम्ब्स' के भी प्रयोग हुए थे। उनके गिराये जानेके कई घण्टों के पश्चात ऐसे बमोंका प्रभाव दृष्टिगोचर होता था। बहरहाल, ऐसे बमोंका अक्सर उपयोग नहीं किया गया था।

किसी बमका प्रभाव उस भवनके प्रकार पर भी निर्भर है जिसपर वह गिराया जाता है। यदि दीवालें ईंटोंसे बनी हैं, तो वे एक साथ ही ध्वस्त होकर ढह जायगी। इसके विपरीत यदि भवनका निर्माण सीमेण्ट कंक्रीटसे हुआ है, और यदि उसमें इस्पाती ढाचा भी है, तो किसी भयंकर विस्फोटक बमका असर उतना अधिक नहीं होगा। यह याद रखने योग्य है कि यदि कोई घर ईंटोंसे बना हुआ है, तो उसकी चादर छत या चादर-छतें तुरन्त भूमिसात हो जायगी, बगलकी दीवालें भी गिर जायगी, लेकिन यदि किसी भवनमें स्पातीढाचा प्रयुक्त है और वह भवन सीमेंट कंक्रीटसे निर्नामित है, तो किसी एक दीवालके गिरनेसे चादरछत नहीं गिरेगी। अपने आकार और ऊंचाई जहांसे वे गिराये जाते हैं के अनुसार लोह-बम-वेधक बम एक या दो छतोंको पार कर सकते हैं और तब वे नीचे फर्श तक जा सकते हैं और तब विस्फोटित होंगे। इसका प्रभाव केवल इतना ही नहीं होगा कि फर्श और आसपासके पदार्थ पूर्णत. ध्वस्त हो जायंगे बल्कि चादरछत और बगलकी दीवाल--दोनों भूमिसात हो सकती हैं। इसका कारण यह है कि बम अपने प्रत्यक्ष प्रहारके द्वारा केवल क्षतिका ही कारण नहीं बनता, बल्कि उसके उडनेवाले टुकड, उत्स्फोट, मलबापात आदि-उस विशिष्ट भूमिपर जहांपर बम गिराये गये हैं, बमका आकार, वह कोण जिसमें वह गिराया गया है और इसी प्रकार की अन्य बातोंके अनुसार क्षति पहुचाता और प्रभाव डालता है।

भयंकर विस्फोटक बमोंके संबंधमें उन बमोंके उडनेवाले टुकडों, भभक या उत्स्फोट, आचूषण, आकस्मिक संक्षोभ और मलबापातकी परिभाषाओंको जानना आवश्यक है। इन्हें पाठकोंके लाभार्थ यहां नीचे दिया जा रहा है :-

बम के उडनेवाले टुकडे (Splinters)

बम के विस्फोट में उसका खोल फूट जाता है। उसके बाद उसके छोटे छोटे टुकडे हो जाते हैं। यह टुकडे गेहूं के दाने के आकार के बराबर होते हैं। इन बम के उडनेवाले टुकडोंको अंग्रेजीमें 'स्प्लिण्टर्स' कहते हैं। वे बडी तीव्र गतिमें उडते हैं और कई सौ गज दूर तक के आदमियोंको मार सकते हैं। इसके अतिरिक्त यदि बम किसी घरके ऊपर या पक्की गलीमें फूटता है, तो पत्थर या ईंटोंके टुकडे और बमोंके धात्विक टुकडे आसपास भी तीव्र गतिसे उडते हैं। बमों के कुछ धात्विक टुकडे ६ इंची ईंटोंकी दीवालके पार भी चले जा सकते हैं। इनमें से बहुतसे टुकडे साढे १२ इंच मोटी दीवाल के पार जा सकते हैं।

विस्फोट

किसी बमकी उष्ण गैसोंसे केवल उसका खोल ही नही फूटता बल्कि अनुमानित घावन गति और प्रवेग : ४०००० मील प्रति घण्टा अर्थात् अत्यन्त तीव्र चक्रवातसे २० या और कई गुनी–शक्ति से आसपासकी प्रत्येक वस्तु पीछे ढकेल उठती है । कोई ईटोंकी बनी दीवाल ढह ही नही जाती, बल्कि वह टुकड़े–टुकड़े होकर बिखर जाती है और ये टुकड़े स्वय घातक प्रेक्षपास्त्रके रूपमे कार्य करते है ।

किसी बमके उत्स्फोटकी गति प्रबल प्रभंजन–सदृश होती है कि जो कई हज़ार मील प्रति घण्टे की गतिसे धावमान होती है, पर यह एक सैकण्डसे भी कम समयमे समाप्त भी हो जाती है । यह विस्फोट चौथाई मील या इसी प्रकारकी दूरी तक की खिड़कियोंको भी फोड सकता है । यह इसकी ध्वनिकी अपेक्षा अधिक गभीर है, क्योंकि यदि आसपासमे इसके गैसका प्रहार हुआ है, तो वह पहले से ही सुरक्षित घरोंमे भी घस जायगा ।

आचूषण (Suction)

दबाववालीतरंगो–जो किसी भी स्थानपर लगभग एक सैकेण्डके हजारवे हिस्से के बराबर दिखती है–का स्थान विपरीत नाड़ी दाबअतर के द्वारा तरंगे ग्रहण कर लेती है । यह पानीकी किसी भारी लहर या बाढ़के पश्चात कि रिक्तताके सदृश है । किसी गलीमें बम विस्फोटसे केवल आचूषण द्वारा खिड़कियोंके धात्विक शटर्स : दरवाजे : गलीकी ओर या सामने की ओर झुक जायगे । चौथाई टनके बमके उत्स्फोट या आचृषणमें २५ गज़ दूर का साधारण घर गिर जायगा– १ टन के बमसे ५० गज दूरका मकान भी गिर जायगा ।

आकस्मिक संक्षोभ (Shock)

विस्फोट हवाकी ही भाति भूमिमे या अन्य ठोस स्थानोपर भारी दबाव वाली तरंगोको पैदा करता है । विस्फोटके पूर्व बम भूमिमे जितनी ही अधिक गहराई तक जायगा, उतनाही अधिक बड़ा उसका आकस्मिक सक्षोभ होगा और उतना ही अधिक कम उसके स्फोटित टुकडोका प्रभाव भी होगा ।

मलवापात (Falling Debris)

भारतीय जनपदीय बोलियोमे इसे 'मलवा' नामसे जाना जाता है । यदि कही दो मंज़िली इमारत है और यदि प्रहारके आघातसे ऊपरी मज़िल निचली मजिलपर गिर गयी है, तो ऊपरी मज़िलके गिरनेको मलवापात कहा जायगा । निचली मजिल ऊपरी मज़िल के भारको सभालनेमे सक्षम होनी चाहिये । इसीलिए ऊपरी मजिलकी छतको काष्ठफलकोया अन्य उपायोंसे–जो किसी स्थानपर अधिक उपयुक्त हो–सुदृढ बनानेकी महत्ता मान्य है ।

भयंकर विस्फोटक बमोके प्रयोगकी स्थितिमे कर्तव्याकर्तव्य विषयक बातोको मै यहा नीचे संक्षेपमे प्रस्तुत कर रहा हू :–

कर्तव्य

१ – हवाई हमले के समय शरणगृहोमे जाइए।

२ – यदि कोई उपयुक्त आच्छादन मिलने योग्य न हो, तो श्रेयस्कर रूपमे किसी ठोस ढांचेके समीप जमीनपर स्वीकृत अधोमुख–स्थितिमे लेट जानेवाले तरीके को अपनानेके द्वारा भयंकर विस्फोटकोके फेफडोपर पडनेवाले प्रभावको कम किया जा सकता है।

३ – 'आप कैसे अपने शरण–गृहका चयन करे ?'––इसे सीख ले।

४ – अपने शरणगृहको ऐसे ढगसे व्यवस्थित करे कि काममे कम से कम बाधा पड़े।

५ – आकस्मिक सक्षोभको कम करनेके लिए रबरके काग, रुई, ऊन या यदि कुछ न मिले, तो अपनी ऊगलीके छोरका उपयोग करे।

६ – यदि आपका घर ईटोसे बना हो, तो साढे १३ इंच चौडी दीवाले बनवाए और यदि सशोधित कक्रीटका बना हो, तो १२ इंच चौडी दीवाले बनवा ले।

७ – उत्स्फोटकके प्रभावको कम करनेके लिए अपने घरकी खिडकियो को खुला रखे। उत्स्फोटकी तरग खुली खिडकीसे भीतर और बाहर गुज़र सकती है।

उत्स्फोटसे बन्द खिडकियोकी घज्जियां उड़ जाती है। खिडकियोको अवरोधको या भारी परदोसे ढककर रखे, पर बहुधा उनसे दूर ही रखे, तो उत्तम होगा।

८ – यदि मलवापातके वजनको सम्हालनेमे आपके भवनकी चादरछतें पर्याप्त सुदृढ और सक्षम नही है, तो चादरछतोको अधिक सुदृढ बनानेके लिए मंच–सामग्री का उपयोग करे।

९ – अपने घरके प्रागणमे तहखाना या खातने तैयार कर ले। यदि आपका परिवार छोटा हो, तो आप इसकी एक छोटी–सी इकाई तैयार कर सकते है। यदि अधिक सख्यामे लोगोके लिए खाइयोकी आवश्यकता हो तो खुले 'जिगजैग' खाईयोका निर्माण सर्वोत्तम है।

१० – अपने शरणगृहमे रोशनीकी उचित व्यवस्था करे।

११ – यदि आप किसी बम-विस्फोटके समीप है, तो आप ठोस ढाचे, जिस ढाचेमे उत्स्फोटकी तरंग व्याकुचित हो––के पास या पीछे शरण ले।

१२ – आपको अनेक गहरे घावोको देखने लिए प्रस्तुत रहना होगा, अत आपको सलाह दी जाती है कि साफ रूमाल या छोटा तौलिया ले जाए, जिससे कि वह पट्टी–बधके रूपमें काम आ सके।

१३ – किसी विस्फोटक बमके बुझानेका कुछ माध्यम भी रखना आवश्यक है, अधिस्फोटन या धड़ाकोको कम करनेके लिए हलका ल्युब्रिकेटिंग तेल अथवा मिट्टी के तेल का उपयोग करे।

१४ – किसी अविस्फोटित बम, विशेष रूपसे 'टाइम बम' को हटाने के लिए सर्व-प्रथम बमके आसपास खुदाई कर दे, तब उसे पृथक करनेका प्रयत्न करे अथवा उसके अधिस्फोटित साधनको व्यर्थ ही बना दे।

१५ – विध्वंस–हेतु बमको ले जानेके लिए केवल एक आदमीके ही दल वाली एक विशिष्ट ट्रकका उपयोग करे।

१६ – किसी भयकर विस्फोटक बमको २०,००० फीटकी ऊचाई से गिरानेमे ३५ सैकण्ड लगते है। आवाजके साथ एक भयकर चीत्कार-सी ध्वनि उस समयके तृतीयाशमे सुन सकते है। तुरन्त किसी शरणगृह या घरमे चले जाय।

१७ – यदि आप घरमे है, तो फर्शपर लेटनेकी अपेक्षा किसी कुर्सीपर बैठना अधिक श्रेयस्कर है क्योकि गतिशील पदार्थो को उत्स्फोट तरगोसे क्षतिकी कम सभावना रहती है।

यदि आपके पास उद्यान शरणगृह या तलघरीय शरणगृह नही है, तो आपके घरमे सुरक्षिततम स्थान प्रथम महलेके स्नानागार के ठीक नीचेका कमरा होता है। इसका कारण यह है कि सामान्यत: जलप्रणाली एक सीधी रेखाके रूपमे रहती है और स्नानागारके स्थान वाला महला विशेष रूपमे विनिर्मित रहता है।

१८ – अपना मुँह खुला रखे। भयकर विस्फोटक बमकी ध्वनि आपको मार सकती है, लेकिन यदि आप रबर, पेन्सिल अथवा कोई मिठाई या टाफी चूसते हुए अपना मुँह खुला रखते है, तो आप अपने कर्ण–पटहोकी सुरक्षा करते है। यह प्रत्येक व्यक्तिके विश्य मे लागू है।

निषेध

१ – इसे मत भूलिए कि चीत्कार करनेवाले बमोका प्रयोग आतक पैदा करने के लिए किया जा सकता है। अत उनके कोलाहलमे घबराइये नही।

२ – बहुत बडी आबादीकी आदतोको दीर्घ मध्यान्तरमे अनिश्चित असमजस-कालमे अव्यवस्थित न होने दे।

३ – इसे मत भूलिए कि बाहर गलीमे रहनेकी अपेक्षा आपका घर अधिक सुन्दर शरणस्थल है।

४ – आक्रमणकी सूचना सुननेके पश्चात इधर–उधर मत घूमे।

५ – पुस्तकोमे उल्लेखित विविध शरणगृहोके विषयमे चिन्ता न करे। आपका तलघर–यदि कोई हो, अथवा आपका खाई–शरणगृह उत्स्फोट और बमोके उड़नेवाले टुकड़ो के विरोधमे पूर्णत: उत्तम है।

६ – अपने घरोके ऊपर अनावश्यक भारी पदार्थ न रखे, क्योंकि उत्स्फोट से वे अस्तव्यस्त हो जायेगे और उनके गिरनेसे आकस्मिक आघात भी लग सकते है।

७ – अपने शरणगृहोमे उपयुक्त वायुसचारकी व्यवस्था करना न भले। उसकी व्यवस्था इस प्रकार की जानी चाहिए कि उनमे रेडियो सक्रिय धूलिसे पूर्ण सुरक्षा रहे।

८ – शरणगृहोमे जानेके समय भाज्य पदार्थोको रखना न भूले। इस प्रयोजन के लिए अनेक भागोमे चनेका एकत्रीकरण प्रशसनीय है।

९ – अपने मवेशियो और कुत्तोको बाहर खुलेमे न रहने दे।

१० – किसी अविस्फोटित भयकर विस्फोटक बमको बरबाद करने या उसे खोलनेके लिए उसे पानीमे न डुबाये।

११ – किसी अविस्फोटित बमके भीतरी भागकी विशेष खोज–बीन करने और उसे खोलनेका कार्य कृपया आप स्वय न ले।

१२ – अपने दरवाजो और खिडकियोको असावधानीपूर्वक खुला न रखे। अपनी खिड़कियोंपर मोटा भूरा कागज या रबर वार्निश लगा दे जिससे कि आमपास बमोके उड़नेवाले टुकड़े रुक सके अथवा खिडकियोमे कपडेका प्रयोग करे।

१३ – आवश्यक पदार्थोको एकत्र करना न भूले–साथ ही अपने परिवारके सदस्योको आवश्यक सूचना देना भी न भूले।

१४ – किसी हवाई हमलेके पश्चात बाहर खुलेमे क्षतिके दृश्य को देखने मत जाइए।

१५ – गति आवश्यक है, पर इतने लबे–लब डग देकर आगे न बढे कि आप घटनास्थलपर आध्मात–हाफते हुए–पहुचे और अपनी पूरी सहायता देनेमे असमर्थ हो जायं।

१६ – यदि आपको विलबित विस्फोटक बम 'डिलेड एक्शन बाम्बस्' के कारण घर छोड़नेका आदेश दिया जाय, तो बुरा न माने और न बडबड़ाये। ऐसे अवसरपर अपने मूल्यवान सामानोकी खोज करना न शुरू करें क्योंकि ऐसे बमके कारण तुरत आपके जीवनके लिए खतरा उत्पन्न हो सकता है।

१७ – यदि कोई आच्छादन न मिल सके, तो बिलकुल चित्त न लेटे। भूमिमे आकस्मिक सक्षोभके कारण आपके फेफडोपर आघात पहुंच सकता है और इस प्रकारसे मृत्यु भी हो सकती है। अतः नीचेकी ओर मुख करके लेटे, लेकिन अपने घुटनोके बल झुक करके अपनी छातीको दूर रखे।

१८ – अपने शरणगृहो और फर्शोमे व्यर्थ ईट, पत्थर प्रभृति पदार्थोका उपयोग न करे, ईटोकी अपेक्षा उत्स्फोटके लिए लकड़ी अधिक प्रतिरोधात्मक महत्वकी वस्तु है।

– अध्याय ८ –

रासायनिक, कीटाणु–सम्बन्धी और विकिरण–विज्ञान सम्बन्धी युद्ध

प्रथम विश्व–युद्धमे गैसका उपयोग किया गया था। १९१५ मे जर्मनी ने पश्चिमी मोर्चेपर इस अत्यन्त निन्ध(obnoxious) बेहूदा युद्ध प्रणालीको शुरू किया था। जर्मनोंने फासजीन (Phosgene) एक विषैली वायु (गंस) जिसे भासाज भी कहते है, क्लोरिन (Chlorine) सांस अवरोध करने वाली भारी दुर्गन्धयुक्त गैस और मस्टर्ड (Mustard) अथवा सर्सोसे बनाई गई गैसोका प्रयोग किया था।

उदाहरणके लिए युद्धमे सयुक्त राज्यके हताहतोंकी सख्यासे स्पष्ट है कि गैसके द्वारा घायल व्यक्ति के उड़नेवाले सीसे या रागे (Lead) या इस्पातके द्वारा आहत व्यक्ति की अपेक्षा जीनेका चौदह गुना अधिक अवसर रहता है। कोई आक्रामक भलीभाति जान सकता है कि इसके कारण जनशक्ति प्रारक्षित पदार्थोमे रिक्तता होती है, इसलिए स्वाथ्यान्मुखता की अवधिमे एक अघातक दुर्घटनावाले (Nonfatal) हताहत व्यक्तिकी देखभालके लिए अन्य पाच–छह व्यक्तियोकी आवश्यकता होती है, जबकि एक मृत व्यक्तिका ऐसा कोई दायित्व नही है। १९२५ में, प्रथम विश्वयुद्धके पश्चात् जेनेवा नयाचार या सधि–पत्रपर हस्ताक्षर किये गये थे और उसके अनुसार गैस और जीवाणु–सम्बन्धी युद्ध दोनोपर नियन्त्रण लगा दिया गया था। जर्मनीने स्वय उस संधिपर हस्ताक्षार किये थे और उसने निरुपाधि आश्वासन दिया था कि वह ऐसे युद्धका आश्रय नही लेगा। लेखककी सर्वोत्तम जानकारीके अनुसार उस देशने, वस्तुतः अपने वादेका पूरा निर्वाह किया था, लेकिन गत युद्ध के अन्त मे गैसके प्रयोगका प्रयत्न किया था लेकिन ऐसा करनेमे वह सफल नही हुआ। बहरहाल इटलीके मुसोलिनीने ऊपर वर्णित जेनेवा सधि–पत्रके बावजूद गैसका प्रयोग किया था।

प्रथम विश्वयुद्धमें फ्रांसमे गैसके महासचालक सर हेनरी शिलरने गैस और दूसरा युद्ध शीर्षक एक ग्रन्थ लिखा है। उसमें उन्होने लिखा है कि बहुत–सी प्राचीन कथाएं केवल अव्यवहार्य ही नही है, वरन वे पूर्णतः गलत भी है। उन्होंने अपने ग्रन्थमे स्पष्ट कर दिया है कि अन्य चीज़ोंकी अपेक्षा यदि गैस बमोके प्रभावको सही अर्थोमे चाहा गया, तो उसे छोटेसे क्षेत्रमे बहुत बड़ी सख्यामे प्रयोगमे लाना पड़ेगा। १९१७ मे जर्मनी केम्ब्राइमे २० वर्ग मीलके एक छोटेसे क्षेत्रमे एक वास्तविक भय पैदा करनेमे सफल हो गया था, लेकिन ऐसा करनेके लिये उसके पास एक लाख पचास हजार

से अधिक बमोंका प्रयोग करनेके अतिरिक्त और कोई स्थानापन्न उपाय नही था। आधुनिक युद्ध प्रणालीमे जहा हवामार तोपो और राकेटोके प्रयोगमे इतनी अधिक प्रगति हो गयी है यह सम्भवत आसान नही है कि किसी शत्रु को इतनी पहुंच हो सकती है कि वह बहुत बम डाल सके सिवाय उस देशमे जहाँ कि बचावका कोई साधन ही न हो और जहाँ कोई भी बिना रोक टोक के आ जा सके।

भारतवर्षमें गैस–युद्ध प्रणालीके अवसर प्राय: विप्रकृष्ट है, क्योकि यहाके अधिकाश लोग गावोके बिखरे हुए क्षेत्रोमे रहते है, और यहाका जलवायु गर्म है। गर्मदेशोमे और धूपीय मौसम (Sunny Weather) मे गैस–आक्रमण अधिक उपयोगी नही होता, क्योंकि ऐसे देश और एसे मौसममें गैस बिखर जायगी और ऊपर उड जायगी और भूमितलपर उसका अधिक प्रभाव नही पड़ेगा। इस देश मे कीटाणु युद्धकी भी सम्भावना अत्यन्त कम है। बहरहाल कीटाणुओके प्रयोगके द्वारा पानीके तालाबो, कुण्डों (Pools), जलागारों आदिके विदूषित हो जानेकी सम्भावनाकी अहवेलना तो नही की जा सकती। बहरहाल, ऐसी स्थितिमे लोगोको अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि पानीके तालाबो और अन्य स्थानोको जहांपर कि जलको सचित किया गया है, यदि रचमात्र भी उनके विदूषित होनेकी सभावना हो, तो उन्हे–क्लोरिन (Chlorine) के द्वारा साफ कर देना चाहिए। यदि ऐसे पूर्वोपायोंका आश्रय नही लिया गया तो जो लोग ऐसे जलको पियेगे वे बीमार पड जायंगे।

बहरहाल, यह याद रखना चाहिए कि गैसका प्रयोग आतंक पैदा करनेके लिए भी किया जा सकता है। अज्ञातका भय सदैव बहुत बड़ा होता है अतएव लोगो को उस ख़तरे के विरोध मे सदैव सावधान रहना चाहिए।

वस्तुत आधुनिक युद्धके क्षणोमे युद्ध प्रणालीके सामान्य उपाय नाभिकीय आयुधो, परम्परागत एव अन्य आयुधो जो कि गत युद्धमे प्रयुक्त हुए थे, यू–बोट्स, एक अन्य चौम्बिक सुरगो, टारपीडो आदिके माध्यमसे होगे, लेकिन एक सशक्त शत्रुके द्वारा एक अन्य स्थानापन्न उपायका भी प्रयोग रासायनिक कीटाणु सम्बन्धी और विकिरण–विज्ञान सम्बन्धी अभिकर्ताओके द्वारा भी किया जा सकता है जो स्वयके द्वारा एक विध्वसात्मक शक्ति प्रदान करते है। यह एक विवादास्पद प्रश्न है कि जब हमारे समयके नाभिकीय आयुध ऐसी व्यापक विध्वसात्मक शक्तिको प्राप्त कर सकते है, तो फिर कोई ऐसी (रासायनिक, कीटाणु सम्बन्धी और विकिरण–विज्ञान सम्बन्धी) युद्ध प्रणालीके प्रयोगके विषयमे क्यों सोचेगा। अन्य बहुतोमे से निम्नलिखित से ही इसका उत्तर प्राप्त हो जायगा .–

(१) प्रथम प्रश्न सुविधाओके विषयमे है जो शत्रुके अग्रधर्षण या आक्रमण (Aggression) के सामान्य लक्ष्य है। नाभिकीय आयुधो के प्रयोगसे ये सुविधाए

असदिग्ध रूपमे ध्वस्त हो जायगी अथवा वे सुविधाये परवर्ती युद्धके उपयोगके लिए व्यर्थ बना दी जायगी। रासायनिक, कीटाणु सम्बन्धी और विकिरण विज्ञान सम्बन्धी युद्ध प्रणालीके द्वारा इन उच्च रूपसे स्पृहणीय उत्पादक सुविधाओ को युक्तिसगत रुपमे युद्धके अन्तमे अक्षत रहना होगा। इससे स्पष्ट होगा कि रासायनिक, कीटाणु सम्बन्धी आयुध किसी आक्रामक को क्यो अपील कर सकते है। उनके प्रयोगके द्वारा केवल जनताके ऊपर आक्रामकके द्वारा आक्रमण होगा अन्यथा उन सुविधाओके ऊपर सामान्य रूपमे आक्रमण नही किया जा सकेगा।

(२) मनुष्यके लिए दूसरी विचारणा–युद्ध बन्दी–श्रम (Captive Labour) के विषयमे होगी। आक्रामक अविकृत रूपमे कारखानोको लूटना चाहेगे। नाभिकीय संगरोपकरण (Nuclear Munitions) बहुत बडी सख्यामे लोगोको मार डालेगे या विवलाग बना देगे और ऐसा करके वे उन्हे युद्धकी परवर्ती अर्थ-व्यवस्थाके लिए अत्यन्त कम उपयोग वाला बना देग। उस स्थितिमे शत्रु औद्योगिक कार्यकर्ताओको इतना अस्वस्थ बना देनेका प्रयत्न कर सकता है कि युद्धकी अवधिमे वे मध्यान्तर काल तक काम न कर सकेगे, लेकिन बादमे जन–शक्ति–पूर्तिके रूपमे छोड़ सकता है। नाभिकीय आयुधोके प्रयोगके द्वारा विवेकशून्य रूपमे होनेवाले सहारकी भाति इस युद्ध प्रणालीमे जनताका सहार नही होगा। इसके बदलेमे इन सुविधाओका सचालन करनेवाले लोगोपर आक्रमण किया जायगा और इस प्रकार आक्रमणका उद्देश्य पूरा हो जायगा। इस प्रसगमे यह भी याद रखने योग्य है कि रासायनिक, कीटाणु-सम्बन्धी ओर विकिरण–विज्ञान–सम्बन्धी आयुधोके प्रभावके अशको नियन्त्रित किया जा सकता है। निश्चयही यदि नाभिकीय आयुधोके प्रयोग होगे, तो ऐसी स्थिति नही होगी।

(३) जैसा कि इस अध्यायके प्रारम्भमे ही वर्णित है तीसरी विचारणा यह है कि सीसे या रागे (Lead) या इस्पातके द्वारा घायल व्यक्तिकी अपेक्षागैसमे घायल व्यक्तिके जीवित रहनेके अधिक अच्छे अवसर रहते है। एक अघातक दुर्घटनामे (Non-fatal) हताहत व्यक्तिकी देखरेखके लिए अनेक व्यक्तियोकी आवश्यकता पडेगी. जबकि एक मृतक व्यक्तिके लिए ऐसे किसी दायित्वकी बात नही रहती। उसका स्वाभाविक रूपमे अर्थ होगा–जनशक्तिके आरक्षणकी मोरी।

(४) रासायनिक, कीटाणु–सम्बन्धी और विकिरण –विज्ञान सम्बन्धी युद्ध प्रणालीके प्रयोगमे चौथा फायदा जिसके विषयमे एक आक्रामक जो सोच सकता है, वह कमसे कम प्रयत्नसे विशाल क्षेत्रको इससे प्रभावित बनानेके लिए इस क्षेत्रमे इसके विविध अभिकर्ताओके उपयोगसे सम्बन्धित है। इसका अर्थ है कि औद्योगिक साधन–स्रोतो और पदार्थोके अर्थव्ययमे व्यापक कमी।

रासायनिक, कीटाणु सम्बन्धी ओर विकिरण विज्ञान सम्बन्धी (C. B. R.) अभिकर्ताओके अनेक प्रकार है, जिनका किसी संभाव्य शत्रुके (Potential Enemy)

द्वारा प्रयोग किया जा सकता है। आधुनिक युगमे मिलनेवाले रासायनिक आयुधो-पर (बादमे विकसित होनेवाले आयुधोको हम यहा विचारणाके लिए नहीं ले रहें हैं) एक दृष्टि डालनेसे इस सम्बन्धमे स्थिति स्पष्ट हो जायगी।

युद्ध गैसें (War Gases)

दमघोटक (Strangling) और कष्टोत्पादक युद्ध गैसोको दो भागोमे विभाजित किया जा सकता है यथा

(१) आग्रही और (२) अनाग्रही

आग्रही गैसे वे है जो गिराये जानेवाले स्थानपर अधिवासित हो जाती है और उनका प्रभाव कई दिनो तक आवकल (Intact) रहता है। ये गैसे तरल रूपमे गिरायी जाती है और इस तरल पदार्थोको छूना भी अत्यन्त खतरनाक है। सामान्य रूपसे इन आग्रही गैसोको उद्वाष्पी नही देखेगे, हालांकि वे अनाग्रही गैसोकी भाति वाष्प छोडती है और वे हवाके साथ चारो ओर उड़ती है।

अनाग्रही गैसे वे है जो कि हवामे फैल जाती है। धुअेके भाति वे उड़ती है, बाष्प छोड़ती है अथवा पानीके साथ मिल जाती है। उनका प्रभाव अत्यन्त अल्पकालिक होता है। किसी विशेष समयमे जबकि वहा बिलकुल हवा नही है, तो इन गैसोका प्रभाव अधिक होता है और उनका प्रभाव काफी समय तक बना रहता है। इन अनाग्रही गैसोमेसे कुछ अपने उपयोगके स्थानपर देखी जा सकती है, पर ऐसा उसी स्थितिमे होता है जबकि ऐसी गैसे बहुत बड़ी मात्रामे प्रयुक्त होती है।

शरीर पर युद्ध गैसों का प्रभाव

जहा तक शरीरपर उनके प्रभावका सम्बन्ध है, ऐसी गैसे दो भागोमे बाटी जा सकती है।

(१) अ–स्फोटक प्रकार की. जो कि किसी प्रकारका छाला या फफोला का कारण नही बनती और

(२) स्फोटक पद्धतिकी : इनके प्रयोगमे शरीरपर फफोले पड जाते है।

अ-स्फोटक पद्धतिकी गैसोको निम्नलिखित भागोमे विभाजित किया जाता है :–

फेफणों में क्षोभ पैदा करनेवाली गैसें (श्वासरोधक गैसें)
Lung Irritants (Choking Gases)

यदि फेफड़ोमे क्षोभ पैदा करनेवाली गैसका बहुत बड़ी मात्रामे प्रयोग किया गया है, तो उसके प्रयोगका स्थान अत्यन्त भयावह हो जाता है। इसके प्रभावसे आखोसे पानी बहने लगता है, गलेमे श्वासरोध शुरू हो जाता है, लोग खासना शुरू कर देते है और छातीमे एक प्रकारका दम घोटनेवाला उद्वेग पैदा हो जाता है। आकस्मिक रूपमे चेहरे और छातियोकी नाड़ियोका फूलना शूरू हो जाता है और इसके परिणामस्वरूप चेहरेपर नीलिमा छा जाती है और सास तेज़ हो जाता है। यदि ऐसी गैस बहुत बड़ी

मात्रामे शरीरमें प्रविष्ट हो जाय, तो हताहत व्यक्तिके मर जानेकी अधिक सम्भावना होती है। ऐसी गैसोमे फांसजीनका प्रयोग केवल बहुत खतरनाक ही नहीं है, बल्कि उसे तयार करनेमें प्रयुक्त अन्य उपादानोके (Ingredients) साथ मृत्युकारक भी है। फेफडोमे क्षोभ पैदा करनेवाली ये गैसें सामान्य रूपमे वाष्पन प्रकारकी होती है।

नासा-क्षोभक (निपीड़न गैसें) Nose Irritants (Squeezing Gases)

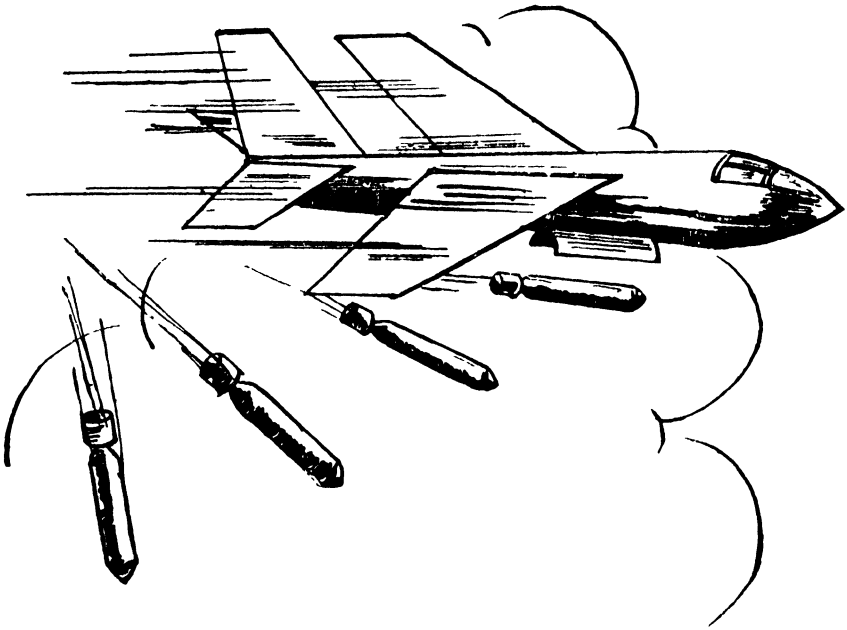
ये वाष्पन प्रकारकी गैसे है और इनमे ठोस घातक रसायन रहते है, जो कि धूलियां धुएके समान छोटे अवयवोके रूपमे छोड़े जाते है। प्रयोगके स्थान के अतिरिक्त अन्य स्थानोपर ये गैसें सामान्य रूपसे दिखायी नही देती और उनमे कोई गध भी नही होती। ऐसी गैसोका प्रभाव अत्यन्त विभीषिकापूर्ण होता है और उनके प्रयोगसे मृत्यु भी होती है। ये गैसे नासिका, मुख, गला और छातीके गम्भीर क्षोभन और जलनका उद्वेग पैदा कर देती है और इसके साथ ही छीक और सिरदर्द भी होने लगता है। किसीको भी एक विलक्षण प्रकारका उद्वेग होने लगता है जिसके कारण कभी-कभी वस्तुतः उल्टी भी होने लगती है।

इन गैसोका अपना प्रभाव थोड़े समयके पश्चात् भी पड़ सकता है और कभी-कभी मस्तिष्कपर उनका बड़ा बुरा प्रभाव भी पड़ता है। कभी-कभी आप श्वास-यन्त्रका प्रयोग करनेके बाद भी स्वयंको आराम योग्य महसूस नही करते, आप सोचना शुरू करते है की वह ठीकसे कार्य नही कर रहा था। इस कारणसे और इस गैसके प्रयोगके कारण अेक विलक्षण प्रकारका उद्वेग होता है और आप श्वास-यन्त्रको बिलकुल दूर ही कर देना चाहते है लेकिन, आपको ऐसा कभी नही करना चाहिये। इस गैसके प्रभावके प्रसारके तुरन्त बाद यदि श्वास-यन्त्रका प्रयोग किया जाय और उसे लगा लिया जाय, तो इस गैसका प्रभाव थोड़े ही समयमे दूर हो जाता है। ऐसी गैस स्थायी विपत्तिका कारण नही बनती।

उत्स्फोटीय गैसें (BLISTER GASES)

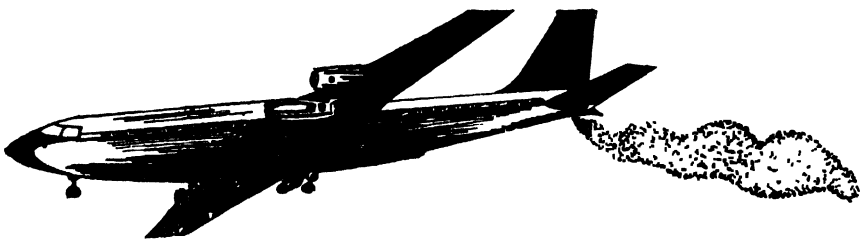
ऐसी गैसोका प्रभाव, चाहें वे ठोस या तरल रूपमे छोड़ी जाय, यह है कि कोई भी व्यक्ति अपने शरीरके चमड़ेपर जलनकी तीव्र अनुभूति करने लगता है और उसपर फफोले उभर आते है। शरीरके किसी भी भागमे कष्ट हो सकता है और उसके निरोग होनेमें पर्याप्त समय लग सकता है। चाहे वे ठोस रूपमे छोड़ी जाय या तरल रूपमे ये गैसे किसी व्यक्तिके कपड़ोंमें भी प्रवेश कर जाती है। जब तक ये गैसे ठोस रूपमे विद्यमान है, तब तक उससे एक ख़तरनाक वाष्प निकलता रहता है। इस प्रकारका वाष्प या भाप, जिसे हम इस गैससे निकलनेवाली या 'वाष्पन' कह सकते है, आखोको बड़ी हानि पहुंचा सकती है और यदि यह गैस स्वयं आखमे गिर पड़े, तो व्यक्ति पूर्णत: अन्धा हो सकता है। यदि सास या विदूषित भोजनके साथ यह गैस शरीरके भीतर चली जाती है, तो शरीरके आन्तरिक भागमें कोई अत्यन्त भयावह कष्ट प्रारम्भ हो सकता है।

इसके साथ ही यह बात भी याद रखने योग्य है कि उत्स्फोटीय गैसोंका प्रभाव दीर्घकाल तक नही रहता अतः यदि कोई व्यक्ति गैसके छोडे जानेवाले स्थानपर थोडे समय तक रह ले तो इस गैस के प्रभावके अधिक भयावह होनेकी आशा नही की जा सकती।



(चित्र सख्या–३९)

प्रस्तुत निदर्श-चित्रमें यह दिखाया गया है कि हवाई जहाजने कैसे गैस बमोंको गिराया जा सकता है।



(चित्र सख्या ४०)

इस चित्रमे दिखाया गया है कि हवाई जहाज़से गैस स्प्रे द्वारा कैसे छोड़ा जा सकता है।

उत्स्फोटीय गैसें मुख्यतः दो प्रकार की होती है। यथा––

(१) मस्टर्ड और (२) ल्यूसाइट– एक प्रकारकी विषैली गैस (Lowisite)। ये गैसें विशेष रूपमें हवाई जहाज़के द्वारा गिरायी जाती है और उन्हे

बम अथवा छिडकाव (Spray) के रूपमे छोडा जाता है। चित्र संख्या ३९ और ४० निदर्श–चित्रों दिखाया गया है कि किसी हवाई जहाजसे कैसे गैस बम गिराये जाते हैं और एक बमवर्षकके द्वारा कैसे गैसका छिडकाव किया जाता है ।

उत्स्फोटीय गैसोंका प्रभाव गिराये गये बमोकी सख्या अथवा छिडकावके माध्यमसे छोडी गयी गैसके परिमाणपर निर्भर है। यह हवाई जहाजकी धरतीसे ऊचाईपर भी निर्भर है, इसी प्रकार गैस छोडे जानेके समयकी जलवायुपर भी यह निर्भर है। यदि किसी स्थितिमे जोरोकी बारिश हो रही हो, तो धरतीपर पडी हुई समस्त गैस धुल जायगी और गैसका प्रभाव अत्यन्त कम होगा। यदि बडी तेज गर्मी है, तो गैस बहुत बडे अंशोमे बाष्पित हो जायगी और गर्मीमे पिघल जायगी। यदि हवा तेज है, तो इसका प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक दूरीतक पड सकता है, लेकिन सकेन्द्रणके अभावके कारण आक्रान्ताके द्वारा इच्छित अनुमानित अधिक प्रभाव नही हो सकता।

(अ) मस्टर्ड गैस (MUSTARD GAS)

मस्टर्ड गैस उत्स्फोटक या फफोले उठानेवाली एक गैस है और फासजीन फेफडोमे क्षोभ या श्वासावरोध पैदा करती है। शरीरके जिस किसी अवयवके सपर्कमे यह गैस आती है, वह अग निश्चयही प्रभावित होता है। हम आसानीमे इसकी महकके द्वारा बाह्य चिन्होके द्वारा और विशेष रूपसे विशिष्ट रासायनिक परिचायको द्वारा जान सकते है कि मस्टर्ड गैसका प्रयोग किया गया है। इसकी गन्ध हलकी होती है और प्याज, लहसुन (Garlic) लाल मूली (Reddish) और सरसो गन्धके साथ काफी बडे रूपमे मिलती–जुलती विशेष प्रकारकी होती है। जहा तक इसके सुदृश्य सकेतोंका सम्बन्ध है, यह गैस भूरे (Fawn) रगकी होती है और यह किसी भारी प्रकारके तेलके समान होती है। भलीभातिसे इस गैसका पता लगानेके लिए विशेष रासायनिक परिचायकोंका अवश्य प्रयोग करना चाहिए और यदि आवश्यक और सम्भव हो, तो शासकीय रसायन–विभागके विशेषज्ञोका भी उपयोग करना चाहिए।

(ब) ल्यूइसाइट (LEWISTE)

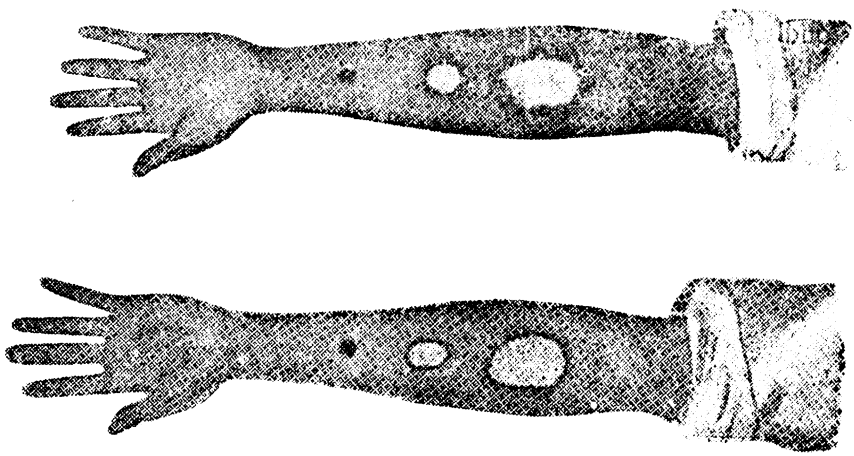
यह एक दूसरे प्रकारकी गैस है, जो शरीरपर फफोले पैदा करती है। जब यह कच्चे रूपमें होती है, इसका रंग भूरा होता है। लेकिन, अपने अन्तिम रूपमे यह रगहीन होती है। इसमे और मस्टर्ड गैसमे पर्याप्त समानता होती है । यह केवल निम्नलिखित रूप मे उससे भिन्न है :–

मस्टर्ड गैस	ल्यूसाइट गैस
(१) प्याजकी हलकी गंध	: कषायमूल (Geraniums) की तीव्र गंध

(२) उग्र और सघन रूपमें जिस स्थान-पर यह गिरायी जाती है, उसके अतिरिक्त अन्य स्थानोपर इसका अधिक विषाक्त प्रभाव नही पडता।		इसका तुरन्त प्रभाव पडता है और यदि इस गैसकी एक बूंद भी गिरायी जाय, तो इसका विषाक्त प्रभाव भयकर रूपमे फलता है।
(३) यह पर्याप्त लम्बे काल तक ठह-रती है, लेकिन गर्म जलके प्रयो-गसे इसका प्रभाव समाप्त हो जाता है।	: यह लम्बे समय तक नही ठहरती : और इसका प्रभाव किसी भी : अशमे पानीके प्रयोगसे समाप्त नही होता।	

उत्स्फोटीय गैसोका प्रभाव विशाल क्षेत्रपर पडता है। वे किसी भी छोटे सूराखमे प्रविष्ट हो जाती है और इस प्रकारसे उनको छूना भी भयावह है। जब तक कि इन गैसो का पूरा प्रभाव समाप्त नही हो जाता, तब तक ये गैसे विषाक्त वाष्प छोडती है। कोई भी व्यक्ति जो किसी विदूषित पदार्थका स्पर्श करेगा या जहापर ये गैसे गिरायी है वहापर चलेगा, तो केवल वही व्यक्ति स्वय प्रभावित नही होगा बल्कि वह जहा भी जायगा उस स्थानको भी विदूषित करेगा। इसी प्रकार इन गैसोका प्रभाव पशुओमे रेलगाड़ी या बसके यात्रियोमे एक-दूसरेके स्पर्शसे फैलेगा।

चित्र सख्या ८१ मे दिये गये निदर्श-चित्रमे यह दिखाया गया है कि मस्टर्ड और ल्यूसाइट गैसे शरीरपर फफोले उठा देती है।



(चित्र सख्या : ८१)
मस्टर्ड और ल्यूइसाइट गैसोके द्वारा उत्पन्न फफोले।

युद्ध गैसोका दो प्रकारसे प्रयोग होता है :-

(१) किसी विमानसे गैस गिरानेके द्वारा और

(२) किसी विमानसे गैसका छिड़काव करनेके द्वारा।

ये बम ८.६७ किलोग्राम (अर्थात् पुराना ५ सेर) से लेकर १.८७ क्विंटल (अर्थात् पुराना ५ मन) तक वजनके होते है। जब उनका विस्फोट होता है, तो दो प्रकारकी गैसे पैदा होती है। (१) जो कुछ समय तक ठहरती है और (२) जो बाष्पन करती है। एक गैस बमके विस्फोटसे उत्पन्न ध्वनि उसी वजनके उग्र विस्फोटक बमके द्वारा उत्पन्न ध्वनि की अपेक्षा अत्यन्त कम होती है।

वे गैसे जो कुछ समय तक ठहरती है, किसी विमानसे छिड़कावके माध्यमसे गिरायी जा सकती है। ऐसा करनेमे तरल गैस छोटी-छोटी बूँदोके रूपमे विशाल क्षेत्रपर गिरायी जाती है। ये बूँदे अत्यन्त ख़तरनाक होती है, क्योकि लोगोके खुले अगोपर अप्रत्याशित रूपमे ये गिरा दी जाती है। यदि गैसके छिड़कावके समय विमान अत्यन्त नीचे उड़ रहा है, तो गैसका प्रभाव अधिक ऊंचाईपर उड़ानके समयके छिड़कावकी अपेक्षा अधिक होगा। बहरहाल, छिड़कावके समय जहा लोगोके ऊपर यह सीधी गिरायी जाती है उस स्थानको छोड़कर अन्यत्र इसका प्रभाव कम होगा।

यह बात याद रखने योग्य है कि चाहे बमके रूपमे हो या छिड़कावके रूपमे गैसके प्रयोगके साथ हवाकी गतिका बड़ा महत्व है। चित्र सख्या ४२ मे तीन निदर्श—चित्र दिये गये है, उनसे स्पष्ट है कि हवा न चलनेकी स्थितिमे क्या प्रभाव पड़ेगा, हवाकी धीमी गतिके समय इन गैसोका क्या प्रभाव पड़ेगा और हवा की तीव्र गतिके समय इनका क्या प्रभाव पड़ेगा।



चित्र ४२

(१) हवा न चलनेके समयगैसके प्रभाव का निदर्श चित्र

(२) हवाकी धीमी गतिके समय गैस के प्रभाव का निदर्श चित्र

(३) तीव्र हवाके समय गैस के प्रभाव का निदर्श—चित्र।

यहा पर यह भी ध्यान रखने योग्य है कि गैसोका प्रयोग भयकर विस्फोटक बमोके साथ भी किया जा सकता है। बहरहाल, लेखककी जानकारीके अनुसार गत युद्धमे इस प्रकारका कोई अनुभव नही हुआ है।

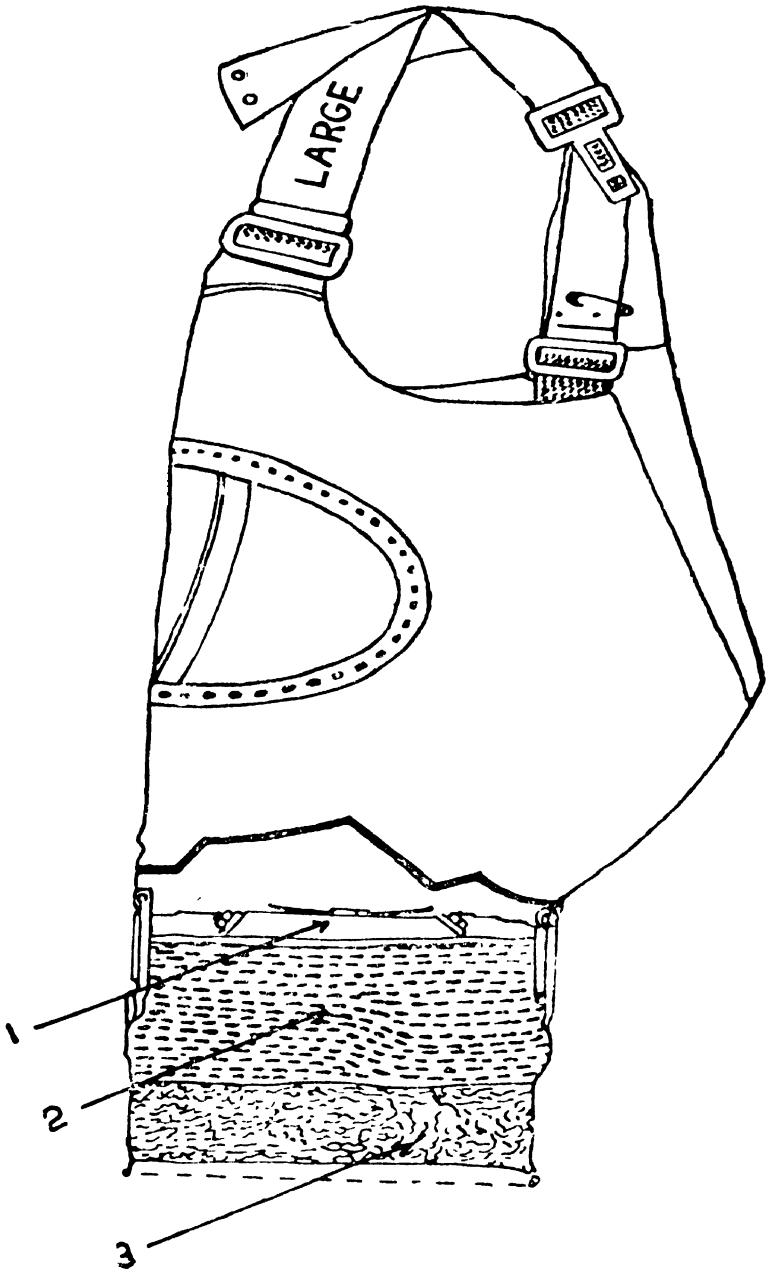
गैसका प्रभाव स्थान ओर समयपर जहा ओर जब इसका प्रयोग किया जाता है बहुत अधिक निर्भर है। यह प्रयोगके समयके मौसम पर भी निर्भर है, साथ ही उस ऊचाईपर भी यह निर्भर है, जहा से गैस बम गिराया गया है अथवा उसका छिड-काव किया गया है। गैसके प्रयोगको वायु, गर्मी और वर्षा भी प्रभावित करते है। गैसके साथ हवा चलती है और इसके परिणामस्वरूप गैसके अपेक्षाकृत अधिक व्यापक क्षत्रमे फैलनेमे सहायता मिलती है। सामान्यरूपसे टिकाऊ गैसोके विषयमे यह ध्यान रखना चाहिए कि उनसे एक खतरनाक वाष्प निकलती है। यदि हवा नही चल रही है, तो ऐसी टिकाऊ गैसका प्रभाव अधिक होता है। जहा चारो ओर इमारते होती है, वहा हवाकी गति कम होती है और इसके परिणामस्वरूप ऐसे स्थानोमे गैस अन्य स्थानोकी अपेक्षा और अधिक समय तक ठहरती है।

गैसके प्रयोगमे मौसमकी स्थिति का भी प्रभाव पडता है। गर्मीके मौसममे गैस–वाष्प अत्यन्त भयावह होता है। दूसरी ओर अत्यन्त सर्द मौसममे तरल गैस जमा हो जायगी और ठोस पुंजके रूपमे बदल जायगी। ऐसे विशिष्ट समयमे इसके वाष्पनमे कोई खतरा नही रहेगा। लेकिन, यहा एक बात अवश्य ही याद रखनी चाहिए और वह यह कि अत्यधिक शीतके कारण ठोस बनी हुई उत्स्फोटीय गैसका स्पर्श निश्चयही शरीरपर फफोले पैदा करनेका कारण बन जायगा।

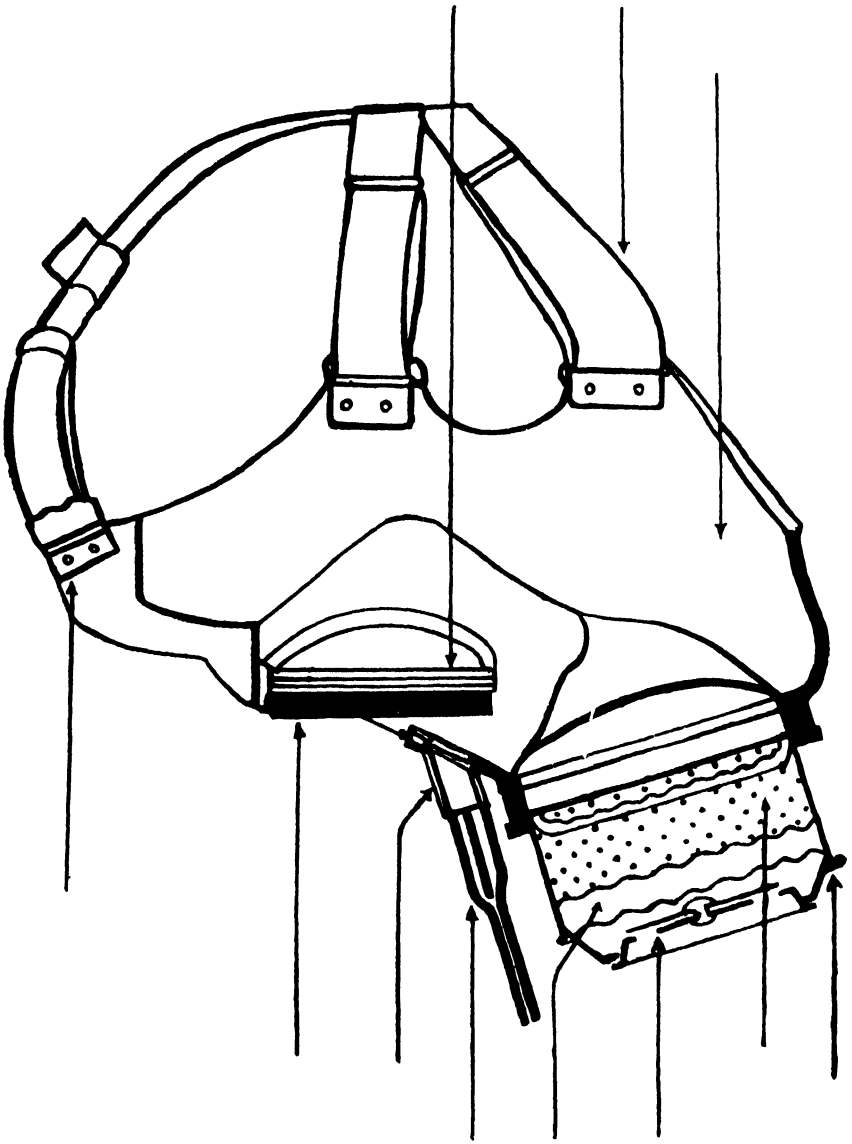
अत्यन्त छोटी वर्षाकी बूंदे गैसपर अधिक प्रभाव नही डाल सकती, लेकिन भारी वर्षा इसे धोकर दूर बहा देगी।

शान्त और गर्म मौसममे उद्वाष्पी (Evaporating) प्रकारकी गैस अधिक खतरनाक होती है। जबकि तापमान बहुत ऊचा हो और उसके साथ ही जब कि हवा न चल रही हो अथवा हवा अत्यन्त कम हो, तब ऐसी स्थितिमे सामान्य रूपमे ऐसी गैस अपेक्षाकृत अधिक खतरनाक होती है। इसके साथ ही जब चारो ओर बहुतसी इमारते हो, तो इन दोनो प्रकारकी गैसोका खतरा बढ जाता है।

यदि हवा तीव्र गतिसे चल रही है, तो खुले हुए स्थानोमे लोगोको विशेष रूपसे इस बातकी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए कि हवाका रुख किधर है और यदि गैस बम गिराये गये है, अथवा गैसका छिडकाव किया गया है, तो उन्हे उस दिशा की ओर जानेका अवश्य प्रयत्न करना चाहिए जहा गैसका प्रभाव नही है और लोगोको उस दिशाकी ओर नही जाना चाहिए, जिधरसे हवा आ रही है और अपने साथ गैस भी ला रही है। लोगोको उस स्थानपर कदापि नही जाना चाहिए जहापर वस्तुत: गैस गिरायी गयी है क्योकि उस स्थलपर साद्रता (Concentration) सर्वाधिक होगी।



चित्र ४३
सामान्य नागरिक श्वास–यंत्र
(GENERAL CIVILIAN RESPIRATOR)

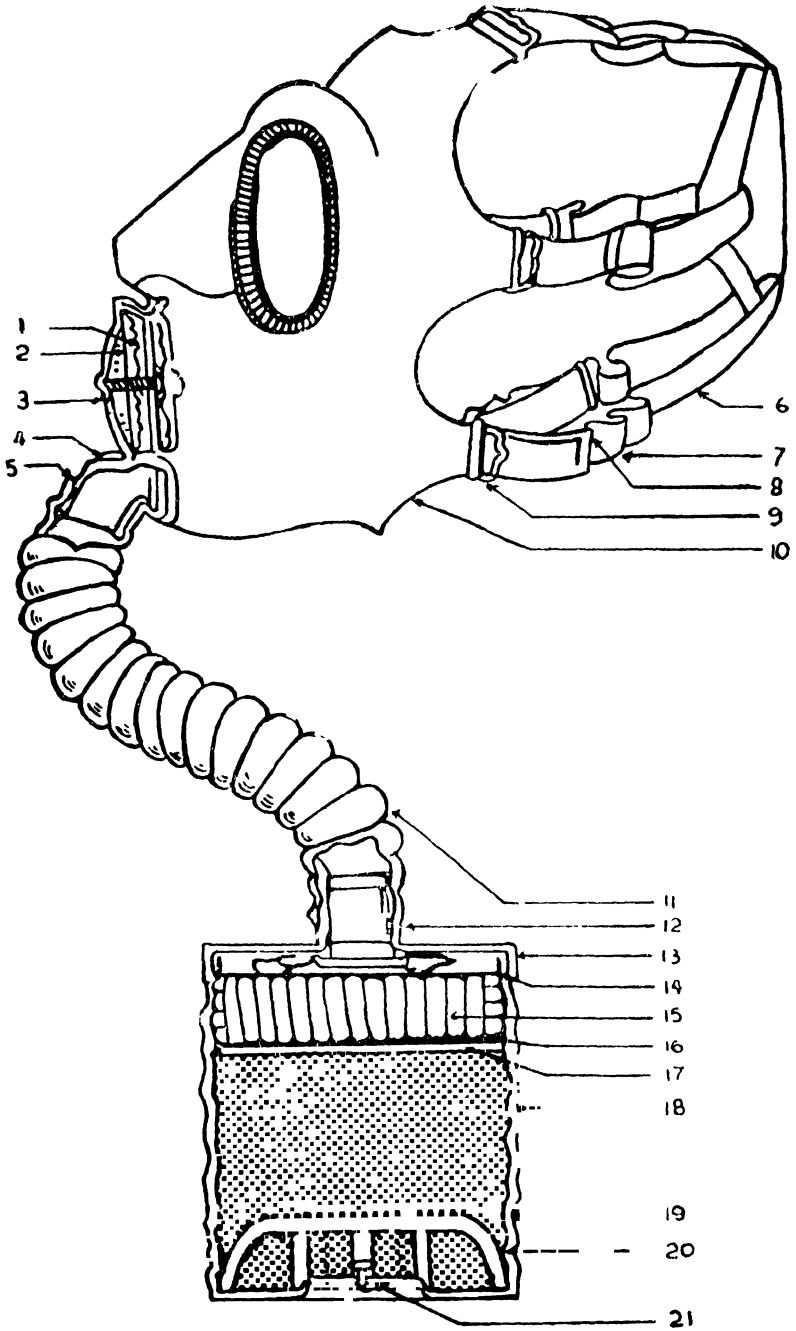


चित्र सख्या ४८

'सिविलियन कार्यविधि श्वास-यत्र'

(CIVILIAN DUTY RESPIRATOR)

रासायनिक युद्ध-प्रणालीके क्षेत्रमे अनेक प्रकारकी सतर्जनाओंपर विचार करना पडता है। तांत्रिक गैसे (Nerve Gases) व्यवस्थित विषोमे नवीनतम है। वे रंगहीन, गधहीन और अब तककी अन्य आदर्श गैसो (Perfect Gas) से अधिक



चित्र संख्या ८५

सामान्य सेवा श्वास–यन्त्र (GENERAL SERVICE RESPIRATOR)

घातक (Lethal) है। संशोधित कीटघ्नों (Improved insectisides) के विकासके सिलसिलेमे की गयी शोधोके दौरान गत द्वितीय विश्व-युद्धमे इन गैसोंको जर्मनोने खोज निकाला था। 'वेहरमाच्ट' (Wehrmacht) मे बहुत बड़ी मात्रामे तत्रिका गैसोको सचित किया गया था और युद्धमे प्रयोगके लिए तैयार रखा था। सचमुच जब आज हम विज्ञान–जगतकी प्रगतिके विषयमे सोचते है, तो इस निष्कर्षपर पहुचते है कि विज्ञानकी कथाओमे जो तत्रिका गैस, पगु बनानेवाली गैस और मनुष्यके मस्तिष्कपर प्रभाव डालनेवाली कथाओके जो वर्णन मिलते है, अब गल्प की अपेक्षा तथ्यके निकट आते जा रहे है।

गैस त्राण GAS MASK

किसी गैस–आक्रमणके विरोधमे सुरक्षाके लिए गैस–त्राण एक अत्यन्त महत्व-पूर्ण मद (item) है। गत युद्धमे ग्रेट ब्रिटनमे अपनाये गये सुरक्षाके साधनोमे प्रथम साधन था नागरिक जन–सख्यामे गैस–त्राणका वितरण। ऐसे गैस–त्राणोको सामान्य नागरिक–श्वास–यन्त्र (General Civilian Respirator) के नामसे भी जाना जाता था। ऐसे एक गैस त्राणका चित्र–सख्या ४३ मे दिया गया है, उसमें इसके अत्यन्त महत्वपूर्ण अगोको दिखाया गया है।

सामान्य नागरिक श्वास-यंत्र

सामान्य रूपमे जनसख्याके लिए बनाये सामान्य नागरिक श्वास–यन्त्रके अतिरिक्त एक भिन्न प्रकारका 'सिविलियन कार्यावधि श्वास–यन्त्र' (Civilian Duty Respirator) भी था, यह उन लोगोके लिए बनाया गया था, जो कि इंग्लैण्डमे हवाई हमलेसे सुरक्षाके लिए एहतियाती विभागोमे सम्बन्धित थे। चित्र–सख्या ४४ मे उसका एक चित्र दिया गया है।

यद्यपि नागरिक प्रतिरक्षाके प्रश्नसे यह अधिक सम्बन्धित नही है, तो भी हम अपने पाठकोका ध्यान इस तथ्यकी ओर आकर्षित करना चाहते है कि ग्रेट ब्रिटनमे एक तृतीय प्रकारका भी श्वास–यन्त्र था, जो कि प्रतिरक्षा–सेवाके कार्यकर्ताओके लिए बनाया गया था। चित्र–सख्या ४५ मे दिये गये चित्र से यह स्पष्ट हो जायेगा कि इस प्रकारके श्वास–यन्त्रमे अनेक अग है।

भारतवर्षके लोगोको उन श्वास–यन्त्रोके विषयमे अधिक ज्ञात नही है, लेकिन यह ध्यान रखनेकी बात है कि वे किसी गैस-आक्रमण या रेडियोधर्मी-आक्रमणके विरोध-मे अत्यन्त आवश्यक है। गैस–त्राणमे सम्बन्धित आवश्यक पूर्वोपायोका आश्रय ग्रहण करनेसे असख्य जाने बचायी जा सकती है और यदि हम इस मामलेको सहज रूपमे यो ही लेगे, तो हमे अपनी भूलके लिए बहुत ही भारी कीमत चुकानी पड सकती है।

उत्स्फोटीय गैसों (Blister Gases) के विरोधमें शरीरकी सुरक्षा

जब ऐसी किसी गैसका प्रयोग हो, तो जब तक "सब ठीक है" का सकेत न मिल जाय, हमे अपने शरणगृहोमे बाहर नही निकलना चाहिए। लोगोको 'मस्टर्ड' और

'ल्यूसाइट' गैसोंके विषयमें पूर्ण जानकारी प्राप्त करनेका प्रयत्न करना चाहिए और उन्हें इतना योग्य होना ही चाहिए कि वे स्पष्ट रूपसे यह जान सके कि किसी विशिष्ट समय और स्थानपर किस प्रकारकी गैसका प्रयोग किया गया है। आपका गैस–त्राण निश्चय ही आपके चेहरेकी रक्षा कर सकता है, लेकिन शेष शरीरके विषयमें क्या होगा ?

इंग्लैण्डके विविध भागोमे जो दिखावटी अभ्यास आयोजित किये गये थे, उनमे सिविलयन कार्यकर्ताओने गैस, वस्त्र, गम–बूटके साथ ही गैस–त्राण और झिलम–टोपके प्रयोग किये थे। लेकिन, इस प्रकारका कोई प्रायोगिक अनुभव नही हुआ, क्योंकि लेखककी जानकारीके अनुसार जर्मनोने गैस–आक्रमणका आश्रय नही लिया था। इन सभी अनुभवोके बावजूद सभी देशोमे ऐसा प्रावधान होना ही चाहिए। वही गैस–वस्त्र रेडियो–धर्मी–धूलिके विरोधमे उपयोगी हो सकता है। गत युद्धमे रेडियो–धर्मी आक्रमण सिवाय हिरोशमा और नागासकी के दो बमो (Atom Bombs) के अतिरिक्त कही नही हुआ था। अब किसी भी विश्वयुद्धमें शायद यह प्रमुख प्रकारकी युद्ध प्रणाली होगी और विश्वके प्रत्येक भागके लोगोंको उसके लिए पूर्णतः प्रस्तुत रहना चाहिए। प्रस्तुत और अप्रस्तुत स्थितिके अन्तरका एक अनुमान इतनेसे ही लगाया जा सकता है कि रेडियो-धर्मी आक्रमणके समय खुलेमे अप्रस्तुत स्थितिमें दस लाख व्यक्ति मरने वाले है, तो केवल एकलाख लोग ही मरेगे, बशर्ते की वे दीवालो के पीछ शरणगृहोमे चले जायं और गैस–त्राण और सरक्षक वस्त्रोके लिए आवश्यक पूर्वोपायोका आश्रय लें।

यदि रेडियोधर्मी आक्रमण या गैस–आक्रमणके समय किसी भी स्थितिमें आपके पास कोई संरक्षक वस्त्र नही है, तो उस समय आपके सामान्य वस्त्र भी आपके लिए अत्यन्त सहायक होगे। बहरहाल, किसी गैस–आक्रमणके पश्चात ऐसे वस्त्रोको अवश्य ही उतार देना चाहिए। आपको गर्म पानी और अच्छे साबुनसे स्नान करना चाहिए और ऐसा करनेके द्वारा यदि गैसका कुछ भी प्रभाव रह गया है, तो उसे दूर किया जा सकता है। बहरहाल रेडियो–धर्मी–आक्रमणकी स्थितिमे ऐसे वस्त्रोंको उतारना ही नही चाहिए, बल्कि उन्हे जला देना चाहिए और उनके स्थानपर नये कपडोंको पहनना चाहिए।

ऊपरकी बाते उस समयके लिए है, जबकि लोग अपने घरोके निकट है, लेकिन यदि वे किसी स्थितिमे अपने घरोसे दूर है और यदि उनका वस्त्र गैसके द्वारा विदूषित हो जाय तो उन्हें तुरन्त अपने वस्त्रोको निकाल देना चाहिए और उन्हें तुरन्त किसी प्राथमिक उपचार चौकीकी ओर अथवा किसी निकटवर्ती हताहतोके अस्पतालकी ओर तेजीमे जाना चाहिए। वहां वे अपना शरीर साफ कर सकते है और स्वच्छ वस्त्रोको पहन सकते है और उनकी विशिष्ट स्थितिमे जैसा भी आवश्यक होगा, वे प्राथमिक सहायता प्राप्त कर सकते है। वे जो अपना उपचार अपने ही घरोमें करना चाहते है, वे अवश्य ही ऐसा कर सकते

हैं। घरमें प्रवेश करनेके पहले पहने हुए वस्त्रों और जूतोको उतार दीजिये। इन पूर्वोपायमे घरके अन्य लोगो और पदार्थोको विदूषित होनेसे बचाया जा सकता है। और इस प्रकारसे होनेवाली अपार क्षतिको भी बचाया जा सकता है। ऐसे कपडो या जूतोको घरके बाहर कूडेकी टोकरीमें फेंक देना चाहिए और किसी विशिष्ट उपस्थानकी स्थिति के अनुसार उस कूडेकी टोकरीको हटानेके लिए आवश्यक व्यवस्था भी की जानी चाहिए।

प्रदर्शनो ओर छोटी–छोटी पुस्तिकाओके प्रकाशनके द्वारा यहा तक कि बच्चोको भी गैस–त्राण और सरक्षी झिलमटोप लगानेकी विधिको समझाना चाहिए। यह याद रखना चाहिए कि जैसा कि पहले ही इस अध्यायमे वर्णित है कि विशेष रूपसे १९२५ के जेनेवा सधिपत्रके कारण मुसोलिनीके द्वारा इथियोपिया मे गैस छोडे जानेके अतिरिक्त गत युद्धमे गैसका और कही प्रयोग नही किया गया था। इस सदर्भमे कोई भी व्यक्ति प्रथम विश्व युद्धकी शिक्षाको नही भूल सकता। बुद्धिमान लोगोको किसी भी सभावित आक्रमणके विरोधमे प्रस्तुत रहना चाहिए, क्योकि जब यह जीवनका प्रश्न बन जाता है, तो किसीको भी जीवनसे खेलनेका अवसर नही देखना चाहिए। हमारे समयमे, पहले ही एहतियाती कार्यवाही करना और उसे भी उपयुक्त समयपर सभावित रेडियो धर्मी आक्रमण के विरुद्ध विशेष रूपसे महत्वपूर्ण हो जाता है, गैस आक्रमणके विरोधमे किये जानेवाले पूर्वोपायोकी ही भाति अनेक प्रकारके अन्य पूर्वोपाय रेडियो धर्मी आक्रमण के समय भी आवश्यक है।

कीटाणु युद्ध (BIOLOGICAL WARFARE)

रासायनिक युद्ध प्रणाली की स्थितिकी ही भाति कीटाणु ओर विकिरण – विज्ञान सम्बन्धी आक्रमणोकी भी स्थिति है। कीटाणु सम्बन्धी अभिकर्ताओका प्रयोग मनुष्योमे, पशुओमे अथवा उगनेवाले पौधोमे मृत्यु, बीमारी या दौर्बल्य, (Debility) पैदा करनेके लिए किया जा सकता है। ऐसे अभिकर्ताओको तीन वर्गोमे विभाजित किया जा सकता है, यथा––

(अ) जीवित आर्गेनिजम (Living Organisms)

(ब) जीव–विष, (Toxins) जो कि जीवित अगोसे निकाले गये विषाक्त पदार्थ है और

(स) फसल अभिकर्ता, (Crop Agents) जिसमे रसायन भी सम्मिलित है और जिनका प्रयोग फसलोको विषाक्त बनानेके लिए किया जा सकता है।

क्षति पहुचानेवाले **जीवीत आर्गेनिजम** प्रकारोमे बेक्टारिया (Bacteria) और विषाणु (Viruses) भी शामिल हैं। यह मनुष्यो, जानवरो ओर पौदो के खिलाफ बहुत प्रकार से प्रयोग मे लाये जा सकते है।

विभिन्न जीवित 'आर्गेनिज़म' (Living organisms) की जीवन प्रक्रियाओंके द्वारा विनिर्मित '**टाक्सिन**' (Toxin) अथवाजीव–विष सशक्त विष है। डिप्थीरिया (Diptheria) की भांति कतिपय अणु–जीव (Micro Organisms) शिकार (Victim) अथवा मेजवान (Host) के शरीरमें जीव–विष पैदा करते है। इनका अन्य विषों पर्यावरणों (Environment) में भी प्रजनन किया जा सकता है और जैसा कि भोजन–विषके मामलेमें होता है इसे भी शरीरमे प्रविष्ट कराया जा सकता है।

शस्य अभिकर्ता (Crop Agents) या तो पेड़–पौदो या हरियाली (Vegetation) पर आक्रमण करने वाले अणु–जीव (Micro-Organisms) होते है अथवा पौदोकी बढ़वारको बन्द करने या उनके जीवनको बरबाद करनेवाले रसायन होते है। यद्यपि रसायनोके ऐसे प्रयोगोंको रासायनिक युद्ध–प्रणालीके अन्तर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है, तथापि इसके कार्य की प्रकृति और इसके प्रयोगोने इसे कीटाणु–सम्बन्धी युद्ध क्षेत्रके अन्तर्गत रख दिया है।

कीटाणु सम्बन्धी युद्ध–प्रणालीमे प्रत्येक बात इस पर निर्भर करती है कि आक्रान्ता क्या करना चाहता है। यदि वह विशाल सख्यामे लोगोको मारना चाहता है तो उसे पर्याप्त संख्यामे रोग–जनकोंको (Pathogen) रखना पडेगा, जिससे वह चयन कर सकेगा। लेकिन मारनेकी अपेक्षा वह विशाल सख्यामे लोगोंको बीमार बनाना चाहेगा और इसके लिए उसे अन्य अभिकर्ताओका उपयोग करना पडेगा।

कीटाणु सम्बन्धी अभिकर्ताओंका प्रयोग पशुओंके ऊपर जिनपर लोग भोजन और वस्त्रके लिए निर्भर रहते है–भी किया जा सकता है। आदमियो के भोजन या वस्त्रो-पर आक्रमण करनेके लिए अनेक प्रकारकी पौदोकी बीमारियोको पैदा करनेवाले अभि-कर्ताओका प्रयोग किया जा सकता है। ये बीमारियां अनाज, फल और हरी तरकारि-योंको क्षति पहुंचा सकती है।

कीटाणु–सम्बन्धी युद्ध प्रणालीका स्वरूप किसी आक्रान्ता राष्ट्रको वितरण (Delivery) के तरीकोमे बहुत बड़ा लचीला रूप (Flexibility) प्रदान करता है। प्रभावकारी प्रयोग से चुने गये संस्थापनों (Installations) को आंतर्ध्वसकों (Saboteurs) के उपयोग से लगाकर सामूहिक वितरण के लिए हवाई जहाजो, पनडुब्बियो (Submarines) और प्रक्षेपास्त्रों द्वारा अंतर्ध्वस करना संभव है।

रासायनिक कीटाणु–सम्बन्धी और विकिरण विज्ञान सम्बन्धी युद्ध-प्रणालीमे विकिरण–विज्ञान संबधी आक्रमण या उसकी धमकीका स्थान तीसरा है। पर इसका महत्त्व अन्य किसीसे ज़रा भी कम नही है।

रेडियो–धर्मी अभिकर्ताओके माध्यमसे कार्मिकोका आक्रमण विकिरण–विज्ञान सम्बन्धी युद्ध प्रणाली है। यह किसी नाभिकीय आयुधके विस्फोट से व्युत्पन्न विकिरणका

परिणाम हो सकता है। अथवा यह अन्य माध्यमो-यथा–हवाई जहाजो या मिसाइलोसे गिराये गये छोटे बमोंके द्वारा रेडियो धर्मी पदार्थोंके वितरणके परिणामस्वरूप भी यह सम्भव है। इस विषयका "मिसाइल परमाणु बम और उद्जन बम" शीर्षक पांचवे अध्यायमें सविस्तार विवेचन किया गया है और पाठकोको उस अध्यायके पढनेकी सलाह दी जाती है।

प्रतिरक्षाके उपाय और तकनीक

(Defence Methods And Techniques)

रासायनिक कीटाणु सम्बन्धी और विकिरण–विज्ञान सम्बन्धी माध्यमोके द्वारा आक्रमणके विरोधमें प्रतिरक्षाके तकनीकके उपायोके सम्बन्धमे विश्वके विभिन्न भागोमें पर्याप्त मात्रामें प्रगति हुई है और भी प्रगति होती ही जा रही है। रासायनिक, कीटाणु–सम्बन्धी और विकिरण–विज्ञान सम्बन्धी अस्त्रोके विरोधमे प्रतिरक्षाके लिए पर्याप्त संरक्षक साज–सामानोंकी प्रगति की जा चुकी है।

किसी भी स्थानकी प्रथम समस्या यह होगी कि हम यह जाने कि क्या शत्रुने रासायनिक अथवा कीटाणु सम्बन्धी आक्रमण किया है। यह सामान्य बात नही है, क्योकि मानव इन्द्रियोके द्वारा रासायनिक, कीटाणु–सम्बन्धी और विकिरण–विज्ञान अथवा जीव–विष सम्बन्धी अभिकर्ताओ (Toxicological Agents) को जानना आसान नही है। रासायनिक आक्रमणके लिए धमकीके स्थानोमे स्वयचालित संकट घटी (Alarm) होनी चाहिए, जिसे हवामे अभिकर्ताओकी थोडी सी संख्या को यन्त्र–सज्जित दल (Mechanism) के पता लगाते ही सुदृश्य (Visible) या श्रव्य (Audible) सकेत (Signal) देना चाहिए। प्रयुक्त अभिकर्ताके प्रकारकी शिनाख्तके लिए विशिष्ट स्थानमे शिनाख्त 'सेट' (Identification sets) का होना आवश्यक है, जो कि सबसे कम विशेष प्रशिक्षण प्राप्त कार्यकर्ताओके द्वारा सहज रूपमे चालित किये जा सके। कीटाणु–सम्बन्धी आक्रमणका पता लगानेके लिए विशिष्ट स्थानोमे साधनोपायो (Devices) जो कि सूक्ष्मदर्शीय (Microscopic) वायु-वाहितन-मीके कणोको (Air borne moisture particles) कीटाणु अथवा धूलिको आश्चर्यजनक गतिसे गिन सके। हवामे अनवाछित वाह्य–विदेशी पदार्थोकी विशाल मात्राके दबावका अभिनिर्धारण (Identifying) करनेके द्वारा वे नगरको सावधान कर सकता है कि हमला होने ही वाला है, अभिनिर्धारण करनेके द्रुत (Rapid) माध्यमोको भी प्राप्य बनाना चाहिए।

विकिरण–विज्ञान सम्बन्धी क्षेत्रमे आक्रमणित (Attacked) स्थलमे एक ऊष्म–विसर्जन मापी (Dosimeter) को भी नियुक्त कर के रखना चाहिए जो कि विकिरणकी मात्राका मापन या पहचान कर सके।

ऊपर कुछ उपाय बताये गये है, जिनका पता लगानेके और चेतावनी देनेके लिए शहरके निवासी प्रयोग कर सकते है कि किसी शत्रुने उनपर रासायनिक कीटाणु–सम्बन्धी और विकिरण–विज्ञान सम्बन्धी आक्रमण किया है। इसे स्पष्ट रूपसे समझ लेना चाहिए कि ऊपर वर्णित उपाय प्रमुख रूपमे अमरीकनोके द्वारा बनायी गयी अभिव्यक्तियोंपर आधारित है। चूँकि इस प्रकारकी युद्धप्रणालीका गत युद्धके दौरान बडा ही सीमित अनुभव था और चूकि द्वितीय युद्धकी भाति प्रथम विश्वयुद्धमे विषैली गैसोंका विकास इतना अधिक नही था और आधुनिक कालमें यह विकास जिस सीमा तक पहुंच गया है, इसीलिए यह निश्चय ही एक समस्यामूलक बात हो गयी है, क्योकि यदि किसी स्थितिमें एक विशिष्ट प्रकार की गैसका सहसा प्रयोग होगा तो किस प्रकारके विशिष्ट माध्यमोकी आवश्यकत हो साकती है। बहरहाल, ऊपर उद्धृत अमरीकी सलाह निश्चय ही लाभदायक हो सकेगी और सभी देशोको यह सलाह दी जाती है कि वे अपने विशेषज्ञोके निर्देशन, अनुभव और रायके अनुसार आवश्यक संशोधनके साथ उन्हीका उपयोग करे। प्रतिरक्षाके तरीको और तकनीकोके सम्बन्धमे यह ध्यानमे रखना चाहिए कि सरक्षाके (Protection) माध्यमोके अभावमे पता लगाना या परिचयन और पहचान या अभिनिर्धारण (Identification) बहुत ही कम उपयोगी होगे। सामुदायिक सरक्षाके तीन वर्ग है ––

(१) वैयक्तिक
(२) पारिवारिक और
(३) सामूहिक

(१) वैयक्तिक संरक्षा (INDIVIDUAL PROTECTION)

गैस-त्राण या मुखावरण वैयक्तिक सरक्षाका प्राथमिक माध्यम है, इस अध्याय मे ऊपर इसका एक चित्र दिया जा चुका है। वजनमे हलके जेबी आकारके गैस–त्राणो या मुखावरणोका विकास हो चुका है–जो कि केवल रासायनिक बाष्पोसे ही संरक्षा नही प्रदान करता, बल्कि कीटाणुवाली या विकिरण सम्बन्धी धूलिके विरोधमे सास लेनेवाले व्यक्तिको भी सरक्षा प्रदान करता है। ऐसा मुखावरण विदूषित वायुमे सास लेनेके विरोध मे भी सरक्षा प्रदान करता है। लेकिन चूकि कुछ अभिकर्ता शरीरमे चर्म प्रत्येक स्थान या विशेष रूपसे महत्वपूर्ण स्थानोके माध्यमसे आक्रमण कर सकते है, इसलिए विदूषित क्षेत्रोमे सेवा करनेवाले व्यक्तियोंके पास संरक्षाके लिए अपारगम्य (Impermeable) वस्त्रोकी पूरी व्यवस्था होनी ही चाहिए।

वैयक्तिक सरक्षाके सम्बन्धमे यह आवश्यक समझा गया है कि हम आधुनिक युद्ध प्रणालीकी सामान्य गैसो और उनके सम्बन्धमे प्रदान किये जानेवाले प्राथमिक उपचारोके विषयमे सक्षेपमे विहंगावलोकन करे। जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है ये रासायनिक (Substances) निम्नलिखित है :–

(१) फेफड़ोमे क्षोभ पैदा करनेवाली या श्वास–रोधक गैसें (LUNG IRRITANT) Choking Gases

(२) आख, नाक और गलेमे क्षोभ पैदा करनेवाली–जैसे मस्टर्ड, ल्यूइसाइट गैसें।

इनके विरोधमे प्रथमोपचार निम्नलिखित रूपमे हो सकता है–

फेफडों में शोभ पैदा करने वाली गैसों के लिए प्रथमोपचार

(१) रोगीको तुरन्त ताज़ी हवामे ले जाइये।

(२) उसे टहलने या चलनेकी आज्ञा न दें। उसे बैठाये रखिये।

(३) उसके शरीरपरके भारी साज–सामानोको उतार दीजिये।

(४) बटनोको खोल दे या सभी कसे हुए वस्त्रोको ढीला कर दे। जिसमे वह आसानीसे सांस ले सके।

(५) उसे गर्म रखे।

(६) उसे अधिक मात्रामे तरल पदार्थो (Fluids) को यथा चाय या काफी पीनेके लिए दे।

(७) उसे उत्तेजक पदार्थो (Stimulants) को न दे।

(८) जितना अधिक वह कर सके, खांसनेके द्वारा फेफड़ोको खाली करनेके लिए उसे साहस प्रदान करे।

(९) उसे यथासम्भव अत्यन्त शीघ्र किसी मेडिकल डाक्टरको दिखलाइये।

(१०) गम्भीर रोगियोके मामलोमे कृत्रिम श्वसनकी आवश्यकता हो सकती है जबकि डाक्टरी सलाह बिलकुल प्राप्त न हो और जब तक ऐसा करना नितान्त आवश्यक न हो जाय, इसे किसी डाक्टरकी सलाहपर ही दिया जा सकता है।

आंख, नाक और गलेके शोभकका प्रथमोपचार अर्थात अश्रुगैस क्लोरीन और फास्जीन

(१) रोगीको तुरन्त ताजी हवामे ले जाइये।

(२) आखोको न मले।

(३) यदि अभी तक आपने ऐसा न किया हो, तो तुरन्त अपना श्वास–यन्त्र लगा ले और यह देख लें कि वह अच्छी तरहसे लगा लिया गया है। ऐसा करने समय यहा तक कि यदि गहरा दर्द है, तो वह दर्द और बेचैनी दोनो कुछ ही घटोमे दूर हो जायगे।

(४) साफ पानीमें थोड़ासा नमक या सोडा बाइकोर्बोनेट मिलाकर थोड़ी–थोड़ी देर बाद नाकको साफ करें और मुखसे गरारे करे।

(५) इन गैसोंके प्रयोगके समय जो व्यक्ति खुले हुए में रहते हैं, वे संविषादित (Depressed) हो जाते है और ऐसे व्यक्तियोको अकेले नही छोड़ना चाहिए। आपको उन्हें पुनः आश्वासन देना चाहिए कि वे शीघ्र बिलकुल अच्छे हो जायंगे।

(६) आतंकको बढ़ाते हुए वैयक्तिक (आखो आदिकी स्थायी क्षतिका) भय दूसरोमें भी फैल जाता है। यह जो कि गैस आक्रमणका अत्यंत गम्भीर ख़तरा है, हताहतोंको तुरन्त पुनः आश्वासन देनेके द्वारा आसानीसे दूर किया जा सकता है।

चमड़ेपर फफोले पैदा करनेवाली गैसों यथा मस्टर्ड गैस और लुईवसाइटक लिए प्रथमोपचार

(१) विदूषित वस्त्रोको अलग कर दीजिये और उनका पुनः उपयोग न करे।

(२) यदि चमड़ेपर तरल पदार्थ है, तो चमड़ेके घायल भागपर विरजन मलहम (Bleaching ointment) का लेप (Paste) लगा दीजिये और उसे तुरन्त दो मिनटमे साफ कर दीजिये। साबुन और पानी भी समान रूपसे क्षम है और सुरक्षापूर्वक गर्म पानीमे साबुनके साथ स्नान भी कराया जा सकता है।

(३) आंखोंमें तरल गैस

यदि आपकी आखोमे तरल गैस पड़ गयी है, तो तुरन्त साफ पानीसे अपनी प्रत्येक आखको धो दे। यह सफाई चलनेवाले पानीसे की जानी चाहिए। ऐसा करते समय पलकोको उलट देना चाहिए, जिससे कि प्रत्येक आखकी पूरी--पूरी सफाई हो जाय। नाकके पास प्रत्येक आंखके किनारोमे पानी ऊडेलिये। इस प्रकारसे आपको एक आखसे दूसरी आंखमे पानी जानेकी अवहेलना करनी चाहिए। यह उस स्थितिमें विशेष रूपसे महत्वपूर्ण है जबकि केवल एक आख प्रभावित हुई हो।

रोगीको पुनः आश्वासन दे कि आंखोंकी इस तात्कालिक सफाईसे उसकी आखोंकी रोशनीको कोई ख़तरा नही है, यद्यपि उसकी आख बहुत लाल और सूजी हुई दिख सकती है।

आंखोको न मलें।

आखोके ऊपर पट्टी न रखे। यदि अधिक चकाचौध हो, तो किसी वस्तुके द्वारा जो उसे छूती न हो, आखोपर छाया कर दें।

(४) यदि आपकी आंखोंमें वाष्प हो--

जब कभी यह ज्ञात हो कि आंखोमे गैसकी वाष्प है, तो ऊपर वर्णित नियमके अनुसार आखोको भलीभांति साफ कर दे। यदि मिल सके तो उन्हे नमक और पानी (गरम गनगुने पानीमे चायके एक चम्मचके बराबर नमक मिलाकर) से साफ कर दे।

(५) चमड़ेके उपर वाष्प होनेपर --

ऊपरी कपड़ोपर तरल गैस की बूँदोसे यदि किसी व्यक्तिके शरीरपर वाष्प हो, तो शरीरके चमड़पर बादमें पड़नेवाले फफोलों या किसी प्रकारकी ललाईसे सुरक्षाके लिए साबुन और पानीके साथ पूर्ण स्नान और सफाई (जिसमे कांखों और मध्यटेककी सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए) आवश्यक रूपसे की जानी चाहिए। किसी फुहारेके नीचे सफाई सर्वोत्तम उपाय है।

जब गैसके परवर्ती प्रभाव शरीरपर विद्यमान हो और किसी व्यक्तिके गलेमे जलन, खांसी और उल्टी हो, तो निम्नलिखित रूपसे प्रथमोपचार प्रदान करना चाहिए।

(१) उस व्यक्तिको चलनेकी आज्ञा न दें।

(२) उसके पहने हुए भारी साजको उतार दे और कसे हुए वस्त्रोको ढीला कर दें।

(३) उसे गर्म रखे।

(४) उसे प्रसन्न रखें।

(५) उसे यथासम्भव शीघ्र ही किसी मेडिकल अधिकारीको दिखा दे। (एक कप पानीमें चायके एक चम्मचके बराबर) सोडा बाइकार्बोनेट पाउडरको पर्याप्त पानीमें मिलाकर देनेसे उल्टी हो सकती है।

(६) आपका श्वास–यन्त्र आपकी आखोके लिए पूर्ण सरक्षा प्रदायक है और उन्हें किसी प्रकारकी क्षति से उनकी रक्षा करता है। उसका उपयोग तुरन्त करे।

(७) तरल गैसके विरोधमे विशेष संरक्षक वस्त्र (आयल चर्म और रबरके बूट) पर्याप्त सुरक्षा प्रदायक है और शरीरके अन्य भागोको बचानेके लिए उनका तुरन्त प्रयोग करना चाहिए।

कीटाणु और रेडियो धर्मी आक्रमणके विरोधमे सुरक्षाके लिए संरक्षा और तकनीकोंके सम्बन्धमें प्रत्येक व्यक्तिको निम्नलिखित बातोमे सावधान रहना चाहिए।

(१) पीनेका पानी–– इसे पहले उबालना चाहिए और फिर पीना चाहिए।

(२) खानेकी शाकभाजी–– यदि आपको जरा भी सन्देह हो कि वह विदूषित है, तो उसकी अवहेलना करनी चाहिए।

(३) जहां तक सम्भव हो, डिब्बा बन्द फलोको लें।

(४) किसी भी रूपसे विदूषित हुए भोजन और पानीकी अवहेलना करे।

(५) जहां तक सम्भव हो, लोगोंको भीतर ही रहना चाहिए। जब तक कि अत्यन्त आवश्यक न हो और जब तक कि कीटाणु आक्रमणका ख़तरा समाप्त न हो

जाय, लोगोंको बाहर नहीं जाना चाहिए। बहरहाल, जबभी वे बाहर जायं, तो उन्हें बाहर कुछ भी न खानेकी सावधानी बरतनी चाहिए।

(६) जहा तक रेडियो–धर्मी आक्रमणके विरोधमे संरक्षा से संबंध है, आपको तब तक भीतर रहना चाहिए, जब तक कि "सब कुछ ठीक है" का सकेत नहीं मिल जाता।

(७) जहां तक सम्भव हो, आपको अपने शरणगृहोके भीतर रहना चाहिए। इन्हें ऐसा बनाना चाहिए कि रेडियो–धर्मी धूलिके प्रभावको दूर किया जा सके। इस सम्बन्धमे "शरणगृह और खाइया" शीर्षक प्रथम अध्याय पढ़िये।

(८) शरणगृहोमे पर्याप्त दिनोके लिए लेकिन कममे कम दो या तीन दिनोके लिए भोजनकी आवश्यक व्यवस्था की जानी चाहिए।

(९) किसी रेडियो–धर्मी आक्रमणके समय प्रत्येक व्यक्तिको अपने श्वास–यत्रका उपयोग करना चाहिए और यहा तक कि जब आप अपने शरणगृहमे जाय अथवा शरणगृहके अभावमे एक घरमे या अन्य किसी स्थानपर रहे, तोभी आपको अपने श्वासयन्त्रका उपयोग करना चाहिए।

(१०) जहा कही सम्भव हो रेडियो धर्मी आक्रमणके क्षणोमे सरक्षक वस्त्रोंका प्रयोग करना चाहिए।

पारिवारिक संरक्षा

(अ) पारिवारिक सरक्षाके लिए विसरण–फलक (Diffusion Bord) एक गैस वायुधुन्धु (Aerosol), निस्पदक (Filter) पदार्थ जो कि सामान्य दीवाल फलक (Walboard) के समान ही होता है, पर इसे इस प्रकारसे बनाना चाहिए कि इसमे होकर हवा स्वतन्त्र रूपसे जा सके, अत्यन्त सहायक होगा। इस फाइबरफलक (Fiber Board) मे उत्तम रूपसे गैसको पकड रखनेके पदार्थ रहते हैं। छोटे शरणगृहोमे यह बलात्–बहाव प्रणालीके निस्यदक (फिल्टर) की ही भांति प्रभावकारी ढंगसे और कुशलता पूर्वक कार्य करता है। यह कीटाणु–सम्बन्धी अभिकर्ताओं और परमाणविक या रेडियोधर्मी धूलिको भी बाहर ही छान देता है। लक्ष्यके शहरोमे पारिवारिक पद्धतिके बम शरणगृहोको इसके साथ आरेखित करना चाहिए।

(ब) भोजन और पानीके लिए "वैयक्तिक सरक्षा" सम्बन्धमे ऊपर वर्णित बातोका अनुसरण करना चाहिए।

(स) आने जानेपर अवश्य ही नियन्त्रण होना चाहिए और "वैयक्तिक संरक्षा" के सम्बन्धमे ऊपर दिये गये अनुदेशोंका पालन करना चाहिये।

(द) गैस–त्राण और सरक्षक वस्त्रोका प्रयोग (वैयक्तिक सरक्षाके सम्बन्धमे ऊपर वर्णित ढंगसे) करना चाहिए।

(३) सामूहिक संरक्षा

जनता बम शरणगृहोंकी योजनाके अन्तर्गत विशाल यांत्रिक (Mechanical) सामूहिक संरक्षकोकी शरणगृहोंमे व्यवस्था होनी चाहिए। इसे भलीभाति वायुरुद्ध (Airtight) होना चाहिए। उनके सचालनका बुनियादी सिद्धान्त सरक्षक–मुखावरणकी ही भाति होगा। सिवाय इसके कि मोटरके द्वारा हवा फिल्टरके माध्यमसे बलात बाहर की जाती है।

शिशुसरक्षको (Infant Protectors) पूर्तिकी भी पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए। ये सरक्षक–आयताकार (Rectangular) बक्सोके रूपमे होगे, इनमे वायुधुन्धु निस्पदक (Aerosol filter) पदार्थके साथ ही देखनेके लिए अर्द्ध–प्लास्टिक और शिशुको सहारा देनेके लिए एक सुदृढ पेदी भी होनी चाहिए। तन्त्रिका (Nerve) गैसके शिकार हुए लोगोके लिए किसी शहर या अन्य किसी स्थानमे एट्रोपीन सीरेट्स (Atropine Syrettes) की व्यवस्था होनी चाहिए और इसके बचावके कार्यकर्ताओको कृत्रिम श्वसनके बेक–प्रेशर–आर्मलिफ्ट उपायमे प्रशिक्षित होना चाहिए। लक्षण (Sysmptoms) दीखनेके पश्चात् ३० सैकण्डके भीतर गैसके शिकार हुए व्यक्तिको एट्रोपीन' की सूई लगायी जा सके तो इससे गैसके विरोधमे काफी सहायता मिलेगी। जनताको जीवोपचार क्षेत्रमे असख्य महत्वपूर्ण वृद्धिके फायदे दिये जाने चाहिए। इनमे अन्यो उपचारो के साथ ही रोगो की रोकथाम के टीके (vaccines) और विविध बीमारियो के लिए कई 'शॉट' देने के पुराने तरीके के स्थान पर एक सूई के द्वारा बहु-प्रतिरक्षणीय माध्यमो को प्रदान करना भी सम्मिलित है।

इन और इन्ही के समान अन्य उपायो के विनियोजन के द्वारा हताहतो की सख्या मे बहुत बडी कमी हो सकती है। यह सदैव ध्यानमे रखना ही चहिए कि शत्रु अकेले नाभिकीय आयुधो का प्रयोग ही नही बल्की एकसाथ रासायनिक, कीटाणु–सबधी और विकिरण–विज्ञान सबधी आक्रमण भी मिलाकर कर सकता है। इस प्रकार प्रतिरक्षा के उपाय–जो कि इन अभिकर्त्ताओ के विरोध मे नियोजित किए जा सकते है जैसा कि इस अध्याय मे वर्णित है नाभिकीय आयुधो के विकिरण संबंधी प्रभावो ओर स्फोट–तप (Blast - Thermal) के विरोध मे सुरक्षा के लिए खाई खोदकर बैठना जैसे उपायो मे भी किये जा सकते है।

– अध्याय ९ –

संरचनात्मक प्रतिरक्षा

संरचनात्सक प्रतिरक्षा (Structural Defence) का तात्पर्य वर्तमान इमारतोंको रेतके बोरों, मिट्टी या रेतसे भरे हुए सन्दूकों इत्यादिके समान काम चलाऊ उपायोंके द्वारा सुरक्षित करना है। पिछले महायुद्धमे यह एक सामान्य प्रयोग था और यहा एक केवल एक ही उदाहरणका उल्लेख पर्याप्त होगा कि बहुतसे स्थानोमें लन्दन एक रेतकी नगरीके रूपमे प्रसिद्ध था।

यह स्मरण रखना चाहिए कि इमारतकी सुरक्षाके सम्बन्धमे महत्वपूर्ण विचारणीय प्रश्न यह है कि भयंकर विस्फोटक बमोसे एक विशिष्ट भवनको किस प्रकार बचाया जा सकता है। वैसे, यह एक कठिन प्रश्न है और इस दिशामे हमें विशेषज्ञोका निर्देशन प्राप्त करना चाहिए। फिर भी अपनी स्वयंकी रचिति या इमारतकी सुरक्षाका प्रश्न हमारे लिए उतना महत्वपूर्ण नही होना चाहिये जितना कि सम्पूर्ण नगरकी सुरक्षाका। ऐसा करते समय हमे अपनी खिडकियोको बचाना है, दरवाजोकी रक्षा करनी है तथा तलघरको इतना मजबूत बनाना है कि यदि उसका ऊपरी ढांचा गिर भी पडे तो वह उसका वजन सह सके और टुकडोमे विभाजित या विशीर्ण न हो सके।

जैसा कि 'शरणगृहो और खाइया" (Shelters and Trenches) नामक प्रथम अध्यायमे समझाया जा चुका है, सामान्यत: ऐसे आश्रय गृहोको बनाना (जो कि सीधे वारसे (Direct hit) हमे बचा सके प्राय: असम्भव है। ऐसे आश्रय स्थान केवल सुरक्षा मुख्यालयों, नागरिक सुरक्षा मुख्यालयो, टेलिफोन (दूरभाष) केन्द्रो और बैंकके तहख़ानो इत्यादिके लिए बनाये जा सकते है, जहा कि हवाई आक्रमणके समय भी कार्य चलता रहना चाहिये, परन्तु इनके बनानेका व्यय इतना अधिक होता है कि सामान्यत: ऐसे आश्रम स्थानोको बनाना सम्भव नही है। किन्तु एक उच्च विस्फोटक बमसे निकलनेवाले टुकडो (Splinters) और धमाकोसे निश्चय ही सुरक्षा हो सकती है और इसी विचारधाराको ध्यानमे रखते हुए आश्रय स्थान या शरणगृह बनाये जाते है।

भयकर विस्फोटक बमोका वजन २५ से लेकर तीन हजार पौण्ड तक हो सकता है, परन्तु पिछले महायुद्धमे सामान्यत: जिन बमोका उपयोग किया गया था तथा जिनका उपयोग किसी भी सम्भवित घटनामें किया जा सकता है, उनका वज़न सामान्यत:

पांच सौ पौण्ड होगा। ऐसे बम भूमिसे ५००० से लेकर २०,००० फीटकी ऊंचाईसे गिराये जा सकते है और ये बम किस कोण (Angle) पर गिरेगे, यह बमवर्षक, वायुयानकी ऊंचाई, उसकी गति तथा गिराये जानेवाले बमके वजनपर निर्भर होगा। पांच सौ पौण्ड वज़नके बमको भूमिमें प्रवेश करनेसे रोकनेके लिए आपको कमसे कम पांच फीट दृढ बजरी (कांक्रीट) की आवश्यकता होगी। इसके पश्चात जब बम फटेगा तो उसके परिणामोसे बचनेके लिए दस फीट सीमेण्ट बजरी (कांक्रीट) की आवश्यकता होगी। ज़रा कल्पना कीजिये कि यदि पन्द्रह हजार फीटकी ऊंचाईसे एक बम गिराया जाय तो उसका क्या परिणाम होगा? यह निश्चित है कि यदि एक मकानकी छत पत्थरके टुकड़ोसे भी बनायी जाय तो ऐसे बमका सीधा वार वह नही सहन कर सकेगी।

बमके धमाके अथवा उड़नेवाले टुकडोके द्वारा होनेवाले अन्य परिणामो की चर्चा करते समय हमें यह याद रखना चाहिये कि उड़नेवाले टुकडोकी गति बडी तीव्र होती है। फिर भी आप इनसे अपना बचाव कर सकते है। आप जिस शरणगृह या आश्रय स्थानके भीतर है, उसकी दीवालें यदि इंटकी है, तो साढ़े तेरह इंच मोटी हों और यदि सीमेण्ट बजरी (कांक्रीट) की बनी हों तो १२ इच मोटी हो।

जब हम इस तथ्यपर विचार करते है कि पांच सौ पौण्ड वजनका एक भीषण विस्फोटक बम पचास फीटकी दूरीपर फूटता है और उसके टुकड़े चारों ओर उड़ते है, तब हमे उपर्युक्त मत निरुपित करना पड़ता है। यदि एक इमारत काफी मजबूत है और यदि एक बम गिरकर उसके निकट ही फूट भी जाता है तो भी उससे बहुत कम क्षति पहुचेगी, लेकिन यदि बम उसपर सीधा गिरता है तो वह नष्ट भी हो सकती है। इसके बावजूद भी यह तथ्य ध्यानमें रखना चाहिए कि एक ऐसी इमारतको, जो सीमेण्ट कांक्रीटकी है, जिसका ढांचा इस्पातका है और जिसकी दीवाले अधिक मोटी नही है, उतनी अधिक क्षति नही पहुंचेगी कि जितनी ऐसी इमारत को पहूँचेगी जो इटसे बनी हुई हो, जिसकी दीवाले मोटी हो और जिसकी सारी सामग्री वजनी हो।

यदि आप मोटी दीवालोंके पीछे हो, तो बमके टुकडो और धमाकोसे आप अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित है। किन्तु जब हम इमारतोंपर धमाकोके प्रभावके बारेमे सोचते है, तब हमें यह तथ्य स्मरण रखना चाहिए कि इसका प्रभाव उस इमारतपर कम पड़ता है, जो कि इस्पातके ढांचेपर बनी है, तथा जिसकी दीवाले पतली है। ऐसे मामलोमे धमाकोसे बचतकी अपेक्षाकृत अधिक सम्भावना है और यदि इमारतका एक अश भी गिर पडता है, तो भी इस्पात का ढांचा होनेके कारण जो कि बचे हुए भागसे लटकता रहेगा, उक्त इमारतका शेष भाग खड़ा रह जायगा।

महायुद्ध तथा अन्य महायुद्धोंका अनुभव यह प्रदर्शित करता है कि धमाको और उडते हुए टुकडोकी अपेक्षा बमोके सीधे वारसे अपेक्षाकृत कम क्षति होती है। युद्धोने विशेषकर स्पेन तथा चीनमे, यह तथ्य उद्घाटित किया है कि यदि धमाको और उड़ते

हुए टुकड़ोंसे बचनेके लिए उचित प्रबन्ध किये गये होते, तो अगणित मनुष्य बचाये जा सकते थे। तो अनेक बातोके साथ ही यह तथ्य पाठकको धमाको तथा उड़ते हुए टुकड़ोसे बचनेके लिए सक्रिय कदम उठानेके महत्वसे निश्चय ही प्रभावित करेगा।

बमके टुकडों, धमाको या उत्स्फोट और गिरते हुए मलबेसे बचाव।

यदि इमारतमे तलघर हो, तो उसे यथासम्भव अधिकसे अधिक मज़बूत करना चाहिए। ऐसा करनेसे यदि इमारतका ऊपरी हिस्सा गिर भी पड़ता है, तो भी तलघरकी छतको बचाया जा सकता है। ऐसी आकस्मिक घटनासे बचनेके लिए पूर्व उपायोके रूपमे दरवाजोको अधिकमे अधिक मज़बूत बनाना चाहिए। किन्तु यह यत्नपूर्वक स्मरण रखना चाहिए कि निकास–मार्ग कभी न बन्द किया जाय। जहां तक सम्भव हो, प्रत्येक तलघरमे निकास तथा प्रवेश मार्ग अलग–अलग हों। यदि आपका शरणदायक कमरा, जहा अपने बचावके लिए आपको जाना है, पहली मंजिल या उसके ऊपर है, तो बमके धमाके और टुकडोसे बचानेके लिए उसे और भी मजबूत बनाना पड़ेगा। उसका फर्श इतना मजबूत होना चाहिए कि वह बचावके लिए उपयोगमे लायी जानेवाली रेतकी बोरियों जैसी किसी भी सामग्रीका वजन सह सके।

चित्र ४६

(दीवाल या दरवाजाके बचानेके उपायको दर्शानेवाला चित्र)

दरवाजों तथा खिडकियों और इनके साथ ही ऐसी दीवालोंको भी जो साढ़े तेरह इंचसे कम मोटी है, मजबूत करना चाहिए। इस हेतु रेतके बोरे श्रेष्ठ माध्यम सिद्ध हुए है, किन्तु मिट्टी या रेतसे भरी हुई सन्दूकोंका भी उपयोग किया जा सकता है। रेतके बोरों या सन्दूकोंकी तह लगाकर दीवालोको पाच या छह फीट की ऊचाई तक मजबूत बनाया जा सकता है। जिस प्रकार दीवालको बनाते समय ईटकी एक तरह आडी रखी जाती है और दूसरी तह खडी रखी जाती है, उसी प्रकार रेतके बोरोको भी एकके ऊपर एक करकेरखा जा सकता है। (चित्र संख्या ४६ यह दर्शित करता है कि किस प्रकार रेतके बोरोको एकके ऊपर एक तिरछे ढंगमे रखा जाय। इनकी सबसे नीचे चौड़ाई चार फीट है और सबसे ऊपर दो फीट।

रेतके बोरों या मिट्टीसे भरी सन्दूकोकी दीवालके अभावमे खिड़कीमे लगे काचके टुकडोंको टूटनेसे बचा सकना बहुत कठिन है। यदि बम कुछ दूरपर भी फूटता है, तो भी उसे बचा सकना एक प्रकारसे असम्भव ही है। फिर भी एक बात सम्भव है यदि खिड़कीमे लगे काचके टुकडे टूट भी जाय, तो उन्हें कमरेके भीतर जानेसे रोका जाय। हम सम पारदर्शक तथा 'अग्निके प्रभावसे परे कागज' से परिचित है। इसका उपयोग लपेटनेके लिए किया जाता है। यदि यह कागज खिडकीमे लगे काचके टुकडेके बाहर तथा भीतर—दोनो ओर, चिपका दिया जाता है, तो उससे टूटे हुए टुकडे कमरेके भीतरनही घुस सकेगे और इस प्रकार उस कमरेमे रहनेवालोका बचाव हो सकेगा। किन्तुउपयोगमें लाया जानेवाला कागज़ मोटा और कड़ा हो ताकि सरलतासे वह टूट न सके। इसे चिपकानेके लिए सूक्ष्मछिद्रपूर्ण सेलोलोज वारनिश श्रेष्ठ सामग्री है, किन्तु यदि यह न मिल सके तो साधारण गोदसे काम चल सकता है। इसके साथ ही जब आवश्यक समझा जाय, तब प्राय कागजको बदल देना चाहिए। इस प्रसंगमे यह भी स्मरण रखने योग्य बात है कि यदि ऐसा पारदर्शक कागज प्राप्त न हो सके तो इसके स्थानपर पुरानी तकियोके कपडो, मच्छरदानीके टुकडो अथवा किसी भी मजबूत कागजको खिडकीमें लगे काचके टुकडोके भीतरी हिस्सेमें चिपकानेके कामभे लाया जा सकता है। किन्तु, इनके उपयोग करनेसे कमरेके भीतर आनेवाला प्रकाश अवरुद्ध हो जायगा, जिसके फलस्वरूप भीतर रहनेवालोको असुविधा होगी। इस कष्टसे बचनेके लिए एक और उपयोगी विधि है— खिड़कीमे लगे काचके टुकडोके आकारके बराबर किसी भी धातुका ढाचा (फ्रेम) तैयार करके अथवा तारोकी जाली बुनकर कांचके टुकडोपर लगा देना है। यदि एक भयंकर विस्फोटक बमके टुकडो या धमाकोसे काचके टुकडे टूट भी जाते है, तो भी इस उपायके फलस्वरूप कमरेके भीतर उड़कर टुकडोका आना रुक जायगा।

इस प्रसंगमें यह पर्याप्त अशोमे सत्य माना जा सकता है कि पूर्वलिखित विचार नाभिकीय ऊर्जाके विकासके द्वितीय महायुद्धमे बहुत उपयोगी सिद्ध हुए थे, किन्तु

आजके युगमें जबकि स्थितिमें महत्वपूर्ण परिवर्तन हो चुका है, ऐसा हो सकना शायद सम्भव न हों। इस बातको और स्पष्ट करनेके लिए ऐसे व्यक्ति यह कह सकते है कि नाभिकीय ऊर्जा (Nuclear Energy) के आक्रमण उसके विस्फोट अथवा रेडियो सक्रिय (Radio active) धूलि या राख, जो भी कहा जाय, के द्वारा क्रियान्वित होगा। तब पूर्वोल्लिखित उपायके अनुसार खिडकियोंकी रक्षा करनेका क्या उपयोग है ? इस प्रसंगमें यह तथ्य ध्यानमें रखनेके योग्य है कि आगामी युद्धके स्वरूपके बारेमे अभी भी विश्वको बहुत कुछ जानना है किन्तु लेखकको यह निश्चित प्रतीत होता है कि यद्यपि नाभिकीय ऊर्जा (Nuclear Energy) के किसी भी रूपमें उपयोगमें लाये जानेकी सम्भावनाएं अधिक है दूसरे किन्तु महायुद्ध अथवा पूर्वके अनेक महायुद्धमें भयंकर विस्फोटक बमोंका जिस प्रकारसे उपयोग किया गया था, उसी प्रकारके उपयोगकी सम्भावनाको अस्वीकार नही किया जा सकता। इसलिए खिड़कीमें लगे कांचके टुकडों या दरवाजोंके लिए मिश्रित व्यवस्था अपनायी जानी चाहिए। इसके अनुसार पूर्व–वर्णित व्यवस्था की जा सकती है ताकि यदि ये टूट भी जायं तो उनके बचाव हो सके और इसके साथ ही ऐसा आवश्यक प्रबन्ध करना चाहिए कि जिससे दरवाजों तथा खिड़कियोसे वायुका प्रवेश न हो सके ताकि आक्रमणकी स्थितिमें रेडियो सक्रिय (Radio active) धूलि कमरेमे घुसकर उसके निवासियोंको प्रभावित न कर सके।

कभी–कभी एक और बात ऐसे व्यक्तियोके द्वारा जो कि आकस्मिक ढगसे किसी निष्कर्षपर पहुंच जाते है, कही जाती है कि जब उग्र विस्फोटक बमके सीधे वारसे या नाभिकीय अस्त्रके विस्फोटसे कोई बचाव नही है, तब इमारतोके बचावकी बात करनेका क्या महत्व है ? ये एकपक्षीय तथा अविवेकतापूर्ण तर्क है। केवल उग्र विस्फोटक बमोंके बारेमें ही यह स्मरण रखना चाहिए कि वे चार प्रकारसे प्रभाव डालते है। यह सत्य है कि सीधे वारसे वचाव कर सकना बहुत कठिन है। यद्यपि यह भी असम्भव नही है। किन्तु, कमसे कम तीन अन्य प्रकारके प्रभाव (१) उच्च विस्फोटक बमके धमाके (२) उसके उडते हुए टुकडों और (३) गिरते हुए ममल्बेके द्वारा होते है। यदि पहले ही आवश्यक उपाय किये जाते है और इमारतें काफी मजबूत बनायी जाती हैं, तथा उन्हें और अधिक मजबूत बनाकर सुरक्षित किया जाता है, तो निश्चयही एक हद तक सुरक्षा हो सकती है। स्पेनके बारसेलोना नामक स्थानमे घटित परिणामोके अनुभव इस तथ्यको स्पष्ट रूपसे प्रमाणित करते है। उग्र विस्फोटक बमोके उपयोगके फलस्वरूप प्रति टनके अनुपातसे हताहतोंकी संख्या जब आवश्यक पूर्व उपाय किये गये बहुत ही कम थी किन्तु इसकी तुलनामें जब कोई आवश्यक पूर्व उपाय नही किये गये तब हताहतोंकी संख्या बहुत ही अधिक थी।

जहां तक नाभिकीय ऊर्जा (Nuclear Energy) के उपयोगका सवाल

है, चाहे वह बमदांके रूपमें हो या अन्य किसी रूपमें हो, स्थिति यह होगी कि यदि इस बातके लिए पहले ही आवश्यक उपाय किये जायं कि आपके कमरेमें रेडियोसक्रिय धूलका प्रवेश न हो और इसके साथ ही नाभिकीय आक्रमणके पश्चात् जब तक सब ठीक है का संकेत न मिल जाय, तब तक आप भीतर ही रहते है तो हताहतोंकी संख्यामें बहुत कुछ कमी की जा सकती है। वास्तवमें नाभिकीय आक्रमणके समय यदि खुले स्थानमें रहनेवाले दस लाख व्यक्ति मरते है, किन्तु यदि जब सब ठीक है का संकेत मिलने तक लोग भीतर और विशेषकर आश्रय स्थानोंमे रहते है, तो केवल .एक लाख व्यक्तियोंकी ही मृत्यु हो सकती है। इससे कितना भारी अन्तर हो जाता है। इसीलिए अपनी इमारतोंमें पूर्व उपाय करने तथा पूर्ववर्णित उपायोंके अनुसार उच्च विस्फोटक बमोंके प्रभावके विपरीत उन्हें और अधिक मजबूत बनानेके साथ ही आक्रमण (Fall out) के फलस्वरूप उत्पन्न स्थितिसे उन्हे पूर्ण रूपसे सुरक्षित रखनेकी आवश्यकताका विशेष महत्व है। यह भी स्पष्ट रूपसे स्मरण रखना चाहिए कि आणविक अस्त्रके विस्फोटसे हताहतोकी संख्या अपेक्षाकृत उतनी अधिक नही होगी कि जो मीलों दूर उसके प्रभावके कारण होगी। यदि आप एक ऐसे उचित आश्रय स्थानकी व्यवस्था नही कर सकते है कि जहां आक्रमणकी स्थितिमे बिना चिन्तित हुए आप कुछ दिन काट सके तो भी यदि आप अपने घरमें एक कमरेकी भी व्यवस्था कर सके और केवल आवश्यक पूर्व उपायकरे तो आप इससे भी निश्चय ही अपनेको बचा सकते हैं।

यह प्रत्येक व्यक्तिको स्मरण रखना चाहिए कि एक ओर उग्र विस्फोटक बमके फूटड़ोसे उत्पन्न धमाकों, उडनेवाले टुकडो और गिरते हुए मलबसे और दूसरी ओर रेडियो सक्रिय धूल तथा नाभिकीय अस्त्रोके आक्रमणसे उत्पन्न प्रभावोसे बचनेके लिए नई इमारतोमे आवश्यक प्रबन्ध किये जा सकते है और यह सब अधिक अतिरिक्त व्यय के बिनाकिया जा सकता है। यह शान्तिकालमें इमारतके उपयोगमें कोई व्यवसान नही उत्पन्न करेगा, फिर भी संकटकालमें इसके उपयोगकी व्यवस्था आप कर सकेंगे।

नई इमारतका निर्माण इस प्रकार हो कि नीचेके हिस्सेमे कोई गड़बडी पैदा न करते हुए तथा उसे कोई क्षति न पहुंचाते हुए ऊपरी हिस्सा वज़नदार बनाया जाय, जिसपर कि बजरीकी एक मोटी फर्श बनायी जा सके। इसका फल यह हो सकता है कि बमके इमारतपर गिरनेकी स्थितिमे पूरी इमारत बचायी जा सकती है, क्योकि इस बातकी अधिक सम्भावना है कि वह मजबूत सीमेण्ट बजरीके फर्शपर धडकेकी ध्वनि करते हुए फूट जायगा तथा इमारतमें भेद कर प्रवेश नहीं कर सकेगा बशर्ते कि वह बहुत मजबूत लोह–वर्म–भेदक (Armour piercing) बम न हो। इस प्रकार यह देखा जायगा कि इस प्रकारकी पूर्वसावधानी अपनानेसे हानि बहुत कम होगी, अतएव नये निर्माण करते समय पूर्व उपायोंकी व्यवस्थाका महत्व आप ही आप स्पष्ट है।

शरणगृह या आश्रय स्थल निर्माणके अवसरपर विचारणीय तथ्य

जहा तक सम्भव हो, आश्रय स्थानका निर्माण भूमिकी सतहके नीचे करना चाहिए, क्योकि ऐसा स्थान धमाके तथा बमके टुकडोसे पूर्णतः सुरक्षित है और यदि आवश्यक सावधानी बरती जाय, तो गैस तथा रेडियो सक्रिय (Radio active) के आक्रमणके विरुद्ध काफी हद तक बचाव हो सकता है। मकानके निचले हिस्सेकी छत इतनी मजबूत होनी चाहिए कि यदि उसके ऊपरवाला अंश उसपर गिर भी पडे तो वह उसके वजन को सह सके। यह वज़न साधारण तोलमे प्रति घनफुट २०० से लेकर ३५० पौण्डसे भी अधिक हो सकता है। छतको मज़बूत बनानेमे अधिक व्यय नही होगा। इसके साथ ही इमारतके तलघरको गैस या रेडियो–सक्रिय (Radio active) के आक्रमणसे बचानेके लिए भी आवश्यक सावधानी बरतनी चाहिए। एक प्रवेश और दूसरा बहिर्गमनके लिए–इस प्रकार दो द्वार होने चाहिए। यदि खिडकिया हो तो ऐसी हो कि उनमे गैस या रेडियो सक्रिय धूल प्रवेश न कर सके। दरवाजोसे हवा प्रवेश न कर सके, इसके लिए अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए ताकि गैस या रेडियो–सक्रिय धूलके भीतर प्रवेश करनेकी सम्भावना ही न रह जाय। नीचेके अशमे बना हुआ आपका आश्रय–स्थान ऐसा न हो कि वह पानीसे भर जाय। इसके साथ ही इमारतसे वहा तक पहुचना भी सरल होना चाहिए।

यद्यपि स्वीडन तथा विश्वके अन्य स्थानोमे बडे समूहोके लिए आश्रय स्थल बनाये गये है, किन्तु विगत महायुद्धमे ग्रेट ब्रिटनमे यह अनुभव किया गया कि आश्रय स्थल पचाससे अधिक व्यक्तियोके लिए न बनाया जाय। इसके पीछे मुख्य विचार यह था कि आकस्मिक घटनाके फलस्वरूप एक ही समयमे अधिक सख्यामे लोगोकी मृत्यु न हो। इस सम्बन्धमे परस्पर विरोधी मत हो सकते है। और मै सोचता हू कि इस तथ्यके निर्णयका अन्तिम रूप स्थितिकी आवश्यकताओ के अनुसार ही निर्धारित करनेपर छोड देना चाहिए। उदाहरणार्थ, यदि एक आश्रय–स्थल पहाडीमे विस्फोट करके बनाया जाता है तो वह बडी सख्यामे व्यक्तियोकी सुरक्षाके लिए निश्चय ही बनाया जा सकता है, क्योकि उसकी स्वाभाविक शक्तिके कारण तुलनात्मक ढगसे उसमे सुरक्षा करनेकी क्षमता अधिक है। दूसरी ओर यदि कामचलाऊ सामग्रीसे एक आश्रय स्थल बनाया जाता है, तो उसे एक समयमें अधिकसे अधिक पचास व्यक्तियोके लिए स्थान सुलभ करनेवाले आश्रय स्थलके रूपमे बनाना अधिक उपयुक्त होगा। फिर भी यह स्मरण रखना चाहिए कि यथासम्भव वायु प्रवेश करनेके मार्गो तथा खिडकियोका निर्माण नही करना चाहिए, जिससे कि गैस या रेडियो–सक्रिय (Radio active) धूलके भीतर प्रवेश करनेकी सम्भावना न रहे। किन्तु शरणगृहमे वायुको स्वच्छ करने तथा कृत्रिम प्रकाश रखनेकी व्यवस्था होनी चाहिए। यह स्मरण रखना चाहिए कि यदि सिफारशके

अनुसार वायु प्रवेश करनेके मार्गोंसे बचना है तो ऐसे आश्रय स्थलोमे विगत महायुद्धमे प्रति व्यक्तिके लिए जितने स्थानकी आवश्यकता हुआ करती थी (और जब नाभिकीय युद्धकी सम्भावनासे मानव मन आजकी भांति संतप्त नही था) उसकी तुलनामे लोगोंकी संख्याको घटाना आवश्यक है। एसी स्थितियोमे दीवालोकी ऊचाई, छत और फर्श आदिको ध्यानमें रखते हुए प्रत्येक व्यक्तिके लिए ७५ घनफीट स्थान काफी होगा। आश्रय स्थलमे हवादान होनेकी स्थितिमे विगत महायुद्धमे इंग्लैण्डमे प्रत्येक व्यक्तिके लिए ६ घनफीट फर्शका स्थान काफी माना गया था।

इमारतोंकी अवरोधक शक्ति

इस सम्बन्धमे यह प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि इमारत किस प्रकार की है ? अभी तक प्राप्त अनुभवके आधारसे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि लोहे के ढाचे (फ्रेम) और तारके उपयोगसे बने हुए ऐसे परिपुष्टित काक्रीटके (भवन) जिनकी दीवाले अधिक मोटी नही है, अधिकतर श्रेष्ठ माने गये है। यदि ऐसे भवनपर या उसके बाहर बम गिरे तो वह उसका कुछ अश भले नष्ट कर सके, किन्तु शेष अश फिर भी खडा रहेगा। पुरानी इमारतोंमें हमे प्राय: मोटी दीवालें मिलती है। ऐसी इमारतोमे यदि बम कुछ दूरीपर गिरे तो निश्चयही बचाव की सम्भावना है, पर यदि बम सीधे इमारतपर या गिरे हुए स्थानकी ऊपरी सतहके निकट गिरता है तो सम्पूर्ण ऊपरी ढांचेको नीचे ढाचेपर गिर पडेगा। फलस्वरूप वहा सब कुछ नष्ट हो जायगा।

इस दिशामे मै विशेषज्ञोके मतका समर्थन करते हुए कहना चाहता हूँ कि सीमेन्ट काक्रीटकी इमारतमे तलघर सबसे अच्छा है। शान्तिकालमे उसका उपयोग स्टोर (Store) के रूपमे, ग्रीष्मऋतुमे एक सुन्दर ठंडे कमरेमेके रूपमे और अन्य कई उपयोगी उद्देशोके लिए किया जा सकता है और युद्धकालमे उसका उपयोग एक बहुत अच्छे आश्रय स्थलके रूपमें हो सकता है। इसके लिए केवल छत ओर दीवालोको अतिरिक्त मजबूती प्रदान करना तथा अन्य अपेक्षित परिवर्तन करना ही आवश्यक होगा।

रेतकें बोरोंकी दीवाले

सेनामे एक रेतका बोरा साधारणत. बीस इच लम्बा, दस इच चौडा तथा पाच इंच मोटा होता है। रेतके बोरोको मिट्टी या रेतसे पूरा नही बल्कि केवल तीन चौथाई भरना चाहिए और इसके पश्चात् उसे फावडे (Shovel) से पीटकर पूरी तरहसे आयातकार बना लेना चाहिए। कडी मिट्टी, काक्रीट अथवा पत्थरके छोटे–छोटे टुकडोका भी इसके लिए उपयोग किया जा सकता है, किन्तु इनको अच्छी तरहसे कूटकर बिलकुल छोटा बना लेना चाहिए ताकि बोरा जब भरा जाय, तो वह इस प्रकार लचीला हो कि जब रेतके बोरे एकके ऊपर एक रखे जायं तो वह आवश्यकतानुसार दबाया जा सके।

रेतके बोरोकी दीवालमे बमके टुकडोंका प्रवेश रोकनेके लिए यह आवश्यक है कि वह तीन फीट चौड़ी हो। एक आठ फीटकी दीवालके लिये रेतके बोरोकी दीवाल नीचे ४ फीट और सबसे ऊपर दो फीट चौडी होनी चाहिए। रेत के बोरोकी इस प्रकारसे रखना चाहिए कि नीचेसे ऊपर तक ढाल हो। सुरक्षित होनेवाली इमारतकी दीवाल और रेतके बोरोंकी दीवालके बीच कुछ इंचोंकी दूरी रखना उपयुक्त होगा। प्रसंगके तौरपर यहा यह भी उल्लेखनीय है कि पूर्ववर्णित आठ फीट रेतके बोरोंकी दीवाल बनाते समय प्रति फुट चालिससे लेकर पचास बोरी तकका उपयोग करना पड़ेगा।

रेतके बोरोके स्थानपर, जहा सम्भव हो, अन्नसे भरे बोरोका उपयोग किया जा सकता है। किन्तु यदि वे बहुत बडे आकारके है, तो उन्हे आधेसे अधिक नही भरना चाहिए अन्यथा उन्हें इधर–उधर हटाना कठिन होगा। सन्दूकोका भी उपयोग किया जा सकता है, किन्तु उनकी गहराई ढाई फीटसे कम नही होनी चाहिए। इन सन्दूकोंमे अच्छी तरहसे दबा–दबाकर मिट्टी ऊपर तक भरनी चाहिए। बोरे भरने और दीवाल बनानेके कार्यमें यह अच्छा होगा कि लोगोंको छोटे छोटे दलोंमे बाटकर कार्य सम्पन्न किया जाय। ऐसे प्रत्येक दलमे तीन व्यक्तियोको होना चाहिए–दो बोरे पकड़ने और बांधनेके लिए और तीसरा उसे फावड़ेसे भरनेके लिए। दीवाल बनानेके लिए तैयार रेतके बोरोंको हटानेके लिए एक अलग दल होना चाहिए। पूर्ववर्णित तीन व्यक्तियोंका प्रथम दल एक घंटमे साठ बोरे भर सकता है और दो व्यक्ति उन्हे दीवाल बनानेके लिए एकत्रित कर सकते है। पूर्ववर्णित रीतिसे बोरोंको हटानेके लिए दूसरा दल इतना बडा होना चाहिए कि जैसे ही बोरे भरकर तैयार हो, वैसेही उन्हे हटानेमे कोई विलम्ब न हो।

जब तक खिड़कियोके सामने रेतके बोरोकी दीवाल नही होती, तब तक उन्हे बमके धमाके या टुकड़ोंसे बचाना बहुत कठिन है। इसी प्रकार दरवाजोके सामने भी रेतके बोरों की दीवाल बनाकर उन्हे बचाना चाहिए। दरवाजेके सामने की रेतके बोरेकी दीवालकी ऊंचाई दरवाजेकी ऊचाईसे अधिक होनी चाहिए और दरवाजे तथा दीवालके बीच कुछ स्थान छोड़ना चाहिए।

अन्य स्थानोकी भान्ति लदनमे भी जैसे ही युद्ध प्रारम्भ हुआ था, प्राय: सभी मुख्य भवनोके दरवाजोको रेतके बोरोकी दीवालोसे सुरक्षित कर दिया गया था। हमे दरवाजों और खिड़कियो को भी इस प्रकार बनाना है कि उनमे गैस या रेडियो सक्रिय धूलि प्रविष्ट न हो सके और जहा कही दरारे दिखायी पडती है, विशेषकर दरवाजेके निचले हिस्सेमे, वहा उन्हें कागज या नमदे (felt) से बन्द कर देना चाहिए। इस सम्बन्धमे सबसे बडी कठिनाई दरवाजेके खुलने और बन्द होनेकी है अतएव जब हम

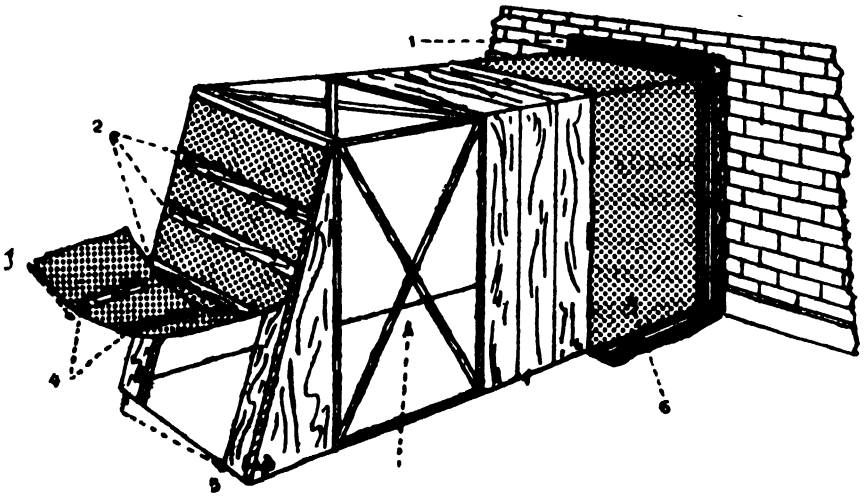
गैस या रेडियो सक्रिय आक्रमणसे उसकी रक्षाकी व्यवस्था करते है, तो हमे उपर्युक्त बात ध्यानमे रखनी होगी। इस सम्बन्धमे निम्नलिखित उपायका अनुकरण किया जा सकता है :–

एक लकडीका टुकड़ा जमीनपर इस प्रकार ठोकिये कि जब जब दरवाजा खुले या बन्द हो तब उससे टकराकर आवाज करे। लकडीके टुकडोको जमीनमे ठोकते समय यह ध्यानमे रखा जाय कि वह गलत स्थानपर न लग जाय, क्योकि इससे दरवाजा खुल नही सकेगा। इसी प्रकार वायुको रोकनेके लिए नमदेको (Felt) विशेषकर दरवाजोके भीतरी भागमे कीलोसे ठोकना चाहिए। यदि दरवाजा भीतरकी ओर खुलता है, तो उसके बाहरी हिस्सेमे एक कम्बल बाधा जाय और यदि दरवाजा बाहरकी ओर खुलता है तो उसके भीतरी हिस्सेमे यह कम्बल कसकर बाधा जाय। कम्बलको लकडीके टुकडोकी सहायतासे कसकर लगाना चाहिए। कम्बलका ऊपरी हिस्सा सम्बन्धित दरवाजेकी चौखटके ऊपरी हिस्सेमे ठीक तरहसे लगाना चाहिए। कम्बलसे चौखटकी लम्बाई पूरी तरहसे ढक जानी चाहिए। कम्बल ठीक तरहसे कसकर बाधना चाहिए और उसी तरफ लगाना चाहिए कि जिस तरफ दरवाजेमे चूले लगी हुई हो और ऐसा करते समय लकडीके टुकडोको चौखटमे ठोका जा सकता है। कम्बल इस प्रकार लगाया जाय कि दरवाजेके खुलने और बन्द होनेमे अड़चन न हो। इसके साथ ही कम्बलको दरवाजेके नीचे बारह इच लम्बाई तक जमीनपर झूलता रहना चाहिए ताकि गैस या रेडियो सक्रिय धूलिसे मिली हुई वायु दरवाजेके भीतर प्रविष्ट न हो सके। इस प्रसगमे पाठक इसी अध्यायमे जिसमे कि दरवाजे या दीवालकी सुरक्षाका उपाय दर्शाया गया है, चित्र सख्या ४६ को देख सकते है।

तालोमे भी चाबियोके लिए छिद्र होते है। उन्हे भी कागज, नमदा (Felt) या इसी प्रकारके किसी उपर्युक्त पदार्थसे बन्द कर देना चाहिए। इसके साथ ही पानीके निकासके लिए पाइप (Pipe) भी होते है। इन्हे बन्द कर देना चाहिए जिससे कि गैस या रेडियो सक्रिय धूलि उसमे न जा सके। यदि घरोमे आपको कोई दरारे दिखायी दे तो उन्हे भी बन्द कर दे। खिडकियो और हवादानोके लिए ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि जिसमे गैस या रेडियो–सक्रिय धूलि कमरेमे न जा सके।

आगे दिये गये चित्र–सख्या ४७ के अनुसार वायु निरोधको (Air - Locks) की व्यवस्था द्वारा गैस या रेडियो सक्रिय धूलिसे कमरोंको और भी सुरक्षित किया जा सकता है।

पाठकोको यह अवश्य जानना चाहिए कि वायु निरोधक (Air - Lock) किस प्रकार तयार किया जाता है। लकडी अथवा अन्य किसी पदार्थसे एक ऐसा कमरा तैयार किया जाता है। ऐसा कमरा तैयार करिये कि



चित्र ४७

एक वायु निरोधक (Air-Lock) का चित्र

जिसकी ऊचाई मनुष्यकी ऊंचाईसे अधिक हो। यह कमरा इस प्रकार बनाया जाय कि उसका आधा भाग दरवाज़के बाहर और आधा दरवाजेके भीतर रहे। वह ऐसी सावधानीसे बनाया जाय कि जहा वह घरके दरवाज़ेसे मिलता है, उस स्थानसे वायु प्रवेश न कर सके। वायु निरोधक (Felt) मे एक दूसरेकी विरुद्ध दिशामे दो खुले द्वार होने चाहिए। इन खुले द्वारोको परदोसे ढक देना चाहिए ताकि उनसे हवाका प्रवेश न हो सके। इन परदोकी चौडाई वायुनिरोधक (Air-Lock) की चौड़ाईसे अधिक होनी चाहिए। परदोके भीतरी तथा बाहरी हिस्सोमे लकडीकी [illegible]। इस प्रकार उपयोग किया जाय कि वे एकके बाद एक हो। ऊपर चित्र सख्या ४७ के अनुसार जब गैस या रेडियो सक्रिय धूलके आक्रमणका भय न हो तब परदेको ऊपर उठाया जा सकता है। गैस या रेडियो सक्रिय धूलिसे समुचित बचावके लिए परदेको गीला रखना चाहिए। इसके लिए विरजन चूर्ण (Bleaching Powder) को पानीमे घोलकर रखना चाहिए। वायु निरोधक (Air-Lock) दरवाज़ और परदोके बीच की दूरी मोटे तौरपर लगभग चार फीट होनी चाहिए। किन्तु यदि इसके भीतरसे स्ट्रेचर ले जाना आवश्यक हो तो यह दूरी दस फीट होनी चाहिए। वायु निरोधक (Air-Locks) को सदैव यथासम्भव लम्बा बनाना अच्छा है। वायु निरोधक (Air-Locks) का उपयोग करते समय यह स्मरण रखना चाहिए कि एक ही समयमे दोनो दरवाज़े कभी भी न खोले जाय। एक दरवाज़ा धीरेसे खोलिये और जब वह ठीक ढगसेबन्द हो जाय, तब दूसरा दरवाज़ा खोलिये। इसके विपरीत यदि दरवाज़ा या परदा असावधानीके साथ खोला गया, तो उसके भीतर गैस या रेडियो सक्रिय धूलिके प्रविष्ट होनेकी अधिक सम्भावना रहती है।

इस बातपर एकसे अधिक बार बल दिया जा चुका है कि सामान्य स्थितियोमे सीधे वारसे बहुत कम बचाव होता है, किन्तु यदि उचित सावधानी बरती जाय, तो धमाके, आचूषण (Suction), बमके टुकडो और मलवे (Debris) से निश्चय ही सुरक्षा होती है। अपनेको इन सबसे बचाना हमारा कर्तव्य है। इस अध्यायके पूर्ववर्ती कंडिका पैराग्राफमे सुझाये गये मार्गो द्वारा दरवाजो, खिडकियो और दीवालोको बचाया जा सकता है। यदि इमारते सीमेण्ट कान्क्रीट की बनायी गयी है और उनमे इस्पाती चादरो और ढाचोका भी प्रयोग किया गया है, तो वे निश्चय ही श्रेष्ठ प्रमाणित होगी, किन्तु इसी समय यह भी स्मरण रखना चाहिए कि केवल आपकी इमारतसे ही नही बल्कि पडोसकी इमारतोसे भी आपकी सुरक्षा सम्बन्धित है। यदि आपके पडोसके गृह मजबूत है, तो जहा तक एक बमके धमाके और टुकडोमे सुरक्षाका प्रश्न है, वे निश्चय ही उपयोगी हो सकते है।

विगत महायुद्धके स्वय अर्जित अनुभवके बलपर मै कह सकता हूं कि जैसा कि इस अध्यायमे पहले बताया जा चुका है, रेतके उपयोगमे लदन तथा इग्लैण्ड के अनेक स्थान ऐसे दिखायी देते थे कि मानो वे रेतके नगर हो। यही स्थिति युरोपके अन्य स्थानोकी भी थी और इस तथ्यसे यह सिद्ध होता है कि अन्य किसी भी महायुद्धका स्थानीय युद्धमे अपनी इमारतोको बचानेके लिए लोगोको इसी प्रकारके उपायोको अपनाना पडेगा। जब विगत महायुद्ध प्रारम्भ हुआ था तब इमारतोको बचानेका कार्य बडी तीव्र गतिके साथ किया गया था और अब इस विश्वमे जब कोई ऐसी दुर्घटना होगी तो यह कार्य और अधिक तीव्र गतिसे करना पडेगा, क्योकि आज मारात्मक शस्त्रास्त्रोकी गति और शक्तिमे भयकर वृद्धि हो चुकी है और जहा तक अपनी सुरक्षाका प्रश्न है, लोग कोई खतरा नही उठा सकते। इस प्रसगमे यह उल्लेखनीय है कि यद्यपि विगत महायुद्ध अनेक वर्षो तक चलता रहा, किन्तु प्राय सभी स्थानोमे महायुद्ध आरम्भ होनेके एक वर्ष बाद फ्रासके पतनके पूर्वही प्राय सभी स्थानोमे इमारतोकी बचावकी तैयारी पूरी कर ली गयी थी। एक वर्षकी इस अवधिमे इग्लैण्डकी भूमिपर बमबारीका प्रभाव प्राय: नगण्य ही था फिर भी उस देशके लोगोने अपनी सुरक्षाकी सारी व्यवस्था कर ली थी। इससे भारत तथा विश्वके अन्य देशोके निवासियोको सबक लेना चाहिए।

हमे उस समय अपनी तैयारी नही शुरू करनी चाहिए जबकि सकट हमारे सिरपर आ जाय। इस स्थितिके आनेके बहुत पूर्वसे ही हमे तैयारी करनी चाहिए। यह स्मरण रखना चाहिए कि आधुनिक युद्धकालमे समयका बहुत बडा महत्व है। अतएव, यथा-सम्भव शीघ्रातिशीघ्र अपनी इमारतोके बचावकी तैयारी पूरी कर लेनी चाहिए। यदि सकट आगमनकी बेलामे हम तन्द्रिल रहे, तो भगवान ही हमारी सहायता कर सकता है।

हमारा देश जिस वर्तमान युगसे गुजर रहा है, वह बहुत बडे दबाव बलाघात और अनिश्चयका युग है। यह एक ऐसा युग है कि जिसमे चारो ओर यह अनुभव किया जा रहा है कि हम अपने को पूरी तरहसे तैयार रखे ताकि किसी भी आकस्मिक घटनाका हम दृढतापूर्वक सामना कर सके। यह हो सकता है कि कुछ थोडी सी परिवर्तित स्थिति, जोकि स्थायी नही है, के कारण इस अध्यायमे दिये गये सुझावके अनुसार अपनी इमारतोंकी सुरक्षाके उपाय हम एकदम से न अपनाये, किन्तु कमसे कम हमे इस बातका पूरा ज्ञान रहना चाहिए कि ऐसा समय आनेपर हमे क्या करना चाहिए। प्रत्येक देशकी भाति इस देशके बौद्धिक वर्गको भी स्पष्टत: इस बदली हुई दुनियामे आधुनिक नागरिक सुरक्षाके उपायोंका पूरा ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि इस दुनियाका प्रत्येक निवासी यह जानता है कि रणक्षेत्रमे नही बल्कि उसके घरमे भावी युद्धोका निर्णय किया जायगा।

– अध्याय १० –

प्रथमोपचार

प्रथमोपचार–विज्ञान युद्ध और शान्ति–दोनो कालोमे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विज्ञान है। यह प्रशिक्षित व्यक्तियोको इस योग्य बनाता है कि वे डाक्टरी सहायता पहुचने तक जीवनको पूर्ववत् रखने, आरोग्यलाभ या रोगमुक्तिके कार्यको आगे बढाने, आघात या स्थितिकी अपवृद्धिको प्रतिबन्धित करनेमे कुशल सहायता प्रदान कर सके अतएव प्राथमिक उपचारका क्षेत्र सकटके क्षणोमे सहायता प्रदान करने तक ही सीमित है। प्रथमोपचारका उत्तरदायित्व डाक्टरी सहायताके प्राप्त होते ही समाप्त हो जाता है। प्रथमोपचारक (स्त्री या पुरुष) को उस रोगी (स्त्री या पुरुष) के विषयमे डाक्टरको विवरण देनेके पश्चात वहा प्रतीक्षा करनी चाहिए–सभव है वह इस मामलेमे और उपयोगी और सहायक हो सके।

प्रथमोपचारके उद्देश्यो अर्थात्–१–जीवन रक्षा करना २– कष्ट दूर करनेका प्रयत्न करना ३– घटनास्थलपर उपचारके द्वारा घावोको अधिक ख़राब होने से रोकनेके लिए प्रयत्न करना–की प्राप्तिके लिए प्रथमोपचारकमे निम्नलिखित गुणोका होना आवश्यक है :–

(१) **सावधानी** (अर्थात् घावके कारणो और चिन्होको लिखना।)

(२) **चातुर्य** (अर्थात् बिना अधिक खलबली उत्पन्न किये ही किसी मामलेके निदान और इतिहासकी जानकारी प्राप्त करना और घटनास्थलपर विद्यमान अन्य लोगो और घायल व्यक्तियोमे विश्वास पैदा करना।)

(३) **साधनसम्पन्नता**–(आगे और होनेवाली क्षतिको बाधित करनेके लिए और उस समय तक हो चुकी क्षतिको पुनः ठीक करनेके लिये प्रकृतिके प्रयत्नोमे सहायता प्रदान करना।)

(४) **निपुणता**– (अर्थात् सदैव हाथोको स्वच्छ रखना चाहिए, दूसरे शब्दोमे प्रथमोपचारक (स्त्री या पुरुष) को अस्वस्थ व्यक्तिकी सुश्रूषा इस प्रकार करनी चाहिए कि उसे आवश्यक कष्ट न होने पाये और उसे साधनोका स्वच्छता और कुशलता के साथ प्रयोग करना चाहिए।)

(५) **सुस्पष्टता–** (अर्थात् स्पष्टतापूर्वक कथन, निश्चितता, स्पष्टवादिता– दूसरे शब्दोमें प्रथमोपचारक घटनास्थलपर अस्वस्थ व्यक्तियो और अन्य लोगोको स्पष्ट निर्देश दे सकता है।)

(६) **विवेकशीलता–** (अर्थात् प्रथमोपचारकको अपनी विवेक–बुद्धिसे इस बातका निश्चय तुरन्त कर लेना चाहिए कि अनेक घावोमे से सर्वप्रथम किसका उपचार करना चाहिए।)

(७) **प्रसक्ति या लगनशीलता –** (अर्थात् दृढता–प्रथमोपचारकको बाधाओके बावजूद अपने प्रयत्नको चालू रखना चाहिए ।) और

(८) **सहानुभूत्यात्मक–** (अर्थात् प्रथमोपचारक (स्त्री या पुरुष) को घायल या अस्वस्थ व्यक्तिको वास्तविक आराम देने और उसमे साहसका सचार करने या दृढता लानेके लिए सहानुभूत्यात्मक शब्दोका प्रयोग करना चाहिए।

उपर्युक्त आठ गुण 'सेण्ट जान एम्बुलेन्स एसोसिएशन' के कुलचिन्हमे सम्मिलित है और इसे ही अष्ट–बिन्दु मूलक स्वस्तिक (Eight pointed Ambulance Cross) भी कहा जाता है।

प्राथमिक उपचारके सिद्धान्त

निम्नलिखित सिद्धान्त ममस्त प्राथमिक उपचारोके मूलाधार है :–

(१) **यदि जीवनके लक्षणोंका अभाव हो, तो भी मृत्युकी परिकल्पना नहीं करनी चाहिये**–प्रथमोपचारके द्वारा किसी जीवित व्यक्तिको मरनेमे बचा लेना किसी मृतक शरीरकी देखभाल करनेमे अधिक अच्छा है। वस्तुत यह हो सकता है कि डाक्टर भी निश्चयात्मक रूपमे यह बतानेमे असमर्थ हो जाय कि अमुक घायल या अस्वस्थ व्यक्ति जीवित है अथवा मर गया है।

(२) जहा कही भी सभव हो, **घाव या खतरेके कारणको दूर कर दीजिए** अथवा मरीज व्यक्तिको उस कारणसे दूर रखिये।

(३) **अन्य घावोंकी अपेक्षा गंभीर रक्तस्रावकी ओर तुरन्त ध्यान देना चाहिए।**

(४) **सांस लेना**–मरीजको इस स्थितिमे रखना चाहिए कि वह भली भाति सास ले सके। वायु आनेके मार्गोकी प्रत्येक बाधाको ही अवश्य दूर कर देना चाहिए। यदि सांस बन्द हो जाय, तो कृत्रिम श्वासनोपायके द्वारा सासकी व्यवस्था करनी चाहिए।

(५) **गर्मी**–मरीज या घायल व्यक्तिको गरम रखिए और इस प्रकार तापमान को गिरनेसे रोकिए और आघातको कम कीजिए।

(६) **आराम**–शरीरकी आरामपूर्ण स्थिति जीवन–रक्षक कार्योमे सहायक होती है। मरीज या घायल व्यक्तिकी पहलेसे ग्रहण की गयी स्थितिको बिना बिचारे ही परिवर्तित नही करना चाहिए। तकियेका प्रयोग इस संबंधमे अत्यन्त उपयोगी है।

(७) **व्रण या घावों** पर साफ पट्टी बाध देनी चाहिए । यदि पट्टी बांधनेके साधन उपलब्ध न हो, तो किसी रूमाल या तोलिएका भीतरी हिस्सा इस कामके लिए उपयोगी हो सकता है ।

(८) **किसी हड्डीके टूटने पर** जब तक कि हड्डीको कसकर बाध दिया जाय और जब तक कि उस व्यक्तिका जीवन किसी अन्य कारणसे खतरेमे न हो, मरीज़को मत हटाइए ।

(९) **विष**–विषसे छुटकारा पाइए अथवा यदि यह सभव न हो, तो उसे निष्प्रभ बना दीजिए ।

(१०) **आवागमन**–आवागमनके सर्वोत्तम साधनोका प्रयोग करना चाहिए और प्रथमोपचारकको इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि झटका देनेवाली गतिकी अवहेलना की जाय और यात्राके मध्य मरीज़की उपयुक्त देखभाल की जाय ।

(११) **कपडोंको निकालना**–अस्वस्थ व्यक्तिके कपडोको जितना कम निकाला जाय उतना ही अच्छा है क्योकि अनावरणसे आक्षोभ या आघात बढता है ।

(१२) **उत्तेजक औषधि**–मरीजको शक्कर मिश्रित कडी चाय और काफी जितना गर्म वह पी सके उतनी गर्म–दी जानी चाहिए। पानीमे एक छोटा चम्मच नमक मिलाकर भी दिया जा सकता है । नाकके पास सूँघानेके लिए महकनेवाले नमक को भी रखा जा सकता है । मुखपर ठण्डे और गर्म पानीके छीटे–क्रमश. देना नाभि और फेफडोके ऊपर और उसके आसपासके स्थानोको गर्म रखना और शरीरके अगो को ऊपरकी ओर तेजीसे रगडना भी अन्य सहज उपाय है ।

बिना डाक्टरकी आज्ञाके शराब नही देनी चाहिए ।

(१३) **प्रथमोपचारकको किसी भी स्थितिमें डाक्टरके दायित्व और कर्तव्यको अपने ऊपर नहीं लेना चाहिए ।**

जबकि प्राथमिक उपचार किया जा रहा हो, तब डाक्टरी सहायताकी भी शीघ्रव्यवस्था की जानी चाहिए ।

इन सिद्धान्तोको अच्छी तरहमे जबानी याद कर लेना चाहिए क्योकि सभी प्रकारके संकट–जैसे व्रण, घाव, जलना, अस्थि–भग, प्लावन या जलमे डूबना, विष आदिके क्षणोके लिए प्रथमोपचार इन्ही सिद्धान्तो पर आधारित है ।

प्राथमिक उपचार प्रदान करनेके पश्चात यह निश्चय करनेके लिए कि किसी मरीज़को डाक्टरके पास भेजनेकी सलाह दी जाय या नही अथवा किसी डाक्टरको बुलानेके लिए किसीको भेजने अथवा मरीज़ या घायलको स्वयं डाक्टरके पास या अस्पतालमे ले जाने आदिके लिए प्रथमोपचारकको कुछ विवेकबुद्धिसे भी काम करना चाहिए ।

सक्षेपमे आकस्मिक आघात और रक्तस्रावके लिए घटनास्थल पर ही तात्कालिक उपचार और तदनतर डाक्टरी सहायताकी शीघ्र व्यवस्था प्राथमिक उपचारके आवश्यक अगके रूपमे स्वीकृत है।

हवाई हमलेके पश्चात् प्रथमोपचार

कुछ ही मिनटोमे घायलोके पास प्राथमिक उपचार करने वाले दल पहुच जायेगे इस प्रसगमे अल्प समयका भी महत्व होता है। दुर्घटना–स्थलपर विद्यमान पुरुष अथवा स्त्री तात्कालिक और उपयुक्त कार्यके द्वारा जीवनकी रक्षा कर सकते है।

गभीर घावोको देखनेके लिए स्वयको प्रस्तुत रखिए। साहसी बनिए। अपने मस्तिष्कको शान्त रखिए। अपने घायल साथीके प्रति कर्तव्यका निर्वाह करनेमे ही अपने मनको केन्द्रित रखिए। सकटके क्षणोमे प्रत्येक व्यक्तिको अनेक रूमाल अथवा छोटे तौलिए लेकर चलना चाहिए। उनको पट्टी बाधनेके लिए प्रयोगमे लाया जा सकता है, खुले हुए घावोपर प्रथम पट्टी बधके लिए उनका भीतरी हिस्सा अत्यन्त उपयुक्त है।

जब तक कि कोई मरीज या घायल व्यक्ति किसी अत्यन्त खतरनाक स्थान पर न हो, आपको उसका उपचार उसके ही स्थान पर करना चाहिए। घायल व्यक्तिको उठाने या घसीटनेमे गभीर क्षति हो सकती है। सामान्य नियम यह है कि हिलाने–डुलाने–स्थानातरित करने और दूसरे स्थान पर भेजनेका कार्य प्रशिक्षित दलपर ही छोड दिया जाना चाहिए।

हताहत व्यक्तिके पास सर्वप्रथम पहुचनेवाले जनपदसेवी या असैनिक सहायक (Civilian helper) का प्रथम और अत्यन्त महत्वपूर्ण कर्तव्य रक्तस्रावको बन्द करना है।

जब आप एक अगूठा काटे, तो आप अपने दूसरे हाथकी ऊगलीसे स्वाभाविक रूपसे कसकर पकडे। सभी प्रकारके ऐसे मामलोमे बहते हुए घावको दबाना एक सही उपाय है।

आघात या आक्षोभ

किसी दुर्घटना या आकस्मिक अस्वस्थताके पश्चात होनेवाले नाडी मडल के आकस्मिक अवपातकी स्थिति आघात है। मूर्च्छितावस्थाकी हल्की और अस्थायी भाव–स्थितिसे आपतनकी स्थिति तक इसमे हेरफेर हो सकता है, जिसमे शरीरका महत्वपूर्ण प्राण–स्पन्दन कार्य आकस्मिक रूपसे समाप्तप्राय हो जाय और उसका अन्त मृत्यु–रूपमे हो।

घावकी या घायल व्यक्तिकी सुश्रूषा करते समय गर्मी और आराम प्रदान करनेके द्वारा अनेक मामलोमे आघात पर विजय प्राप्त की जा सकती है। बहरहाल गभीर

और बडे घावो जैसे—सिरके घाव, उदरीय घाव, जलन आदि अनेक ऐसे मामले है जिनमे आघात तीव्र और गभीर होते है और जो जीवनके लिए भारी खतरा पैदा कर सकते है। अतएव ऐसे मामलोमे, सबसे पहले आघातका उपचार करना चाहिए।

माथेपर पसीनेकी बूँदोके साथ ही होठो और चेहरेकी निष्प्रभताकेद्वारा आघातका निर्धारण या अभिसपात होता है। चमडा शीतल और लिज-लिज हो जाता है, नाडी तीव्र और दुर्बल हो जाती है और यह भी सभव है कि कलाईमे नाडी अदृश्य हो जाय, साम उत्तल हो जाती है और शरीरका तापमान गिर जाता है। ऐसा अस्वस्थ व्यक्ति मूर्च्छा आने और प्यास लगनेकी शिकायत कर सकता है—वह उल्टी भी कर सकता है। यदि आघात और बढता है, तो वह प्रमादी, निरपेक्ष और मूर्च्छित भी हो सकता है।

आघातका उपचार

(अ) तात्कालिक

(१) यदि रक्तस्राव हो रहा हो, तो उसका निरोध कीजिए, क्योकि रक्तस्रावसे आघात अत्यन्त खतरनाक हो जाता है।

(२) अस्वस्थ व्यक्तिको किसी गर्म कबल या ऊनी वस्त्र पर लिटा दे। उसका सिर कुछ नीचे और एक ओरको घूमा हुआ होना चाहिए।

(३) यदि कसे हो, तो गले और छातीके पासके कपडोको ढीला कर दे, जिससे ताजी हवाका स्वच्छन्द आवागमन सुनिश्चित हो जाय।

(४) ऊनी वस्त्र अथवा कबल आदि गर्म कपडोसे उसे ढक दे।

(५) होठोसे लेकर सिर और मस्तिष्क तक रक्तके स्वाभाविक प्रवाहको प्रवहमान बनानेके लिए निचले होठको ऊपर उठा दीजिए।

(६) साहस प्रदान करनेवाले शब्दोके प्रयोग द्वारा अस्वस्थ व्यक्तिको प्रसन्न रखिए। उसे आश्वस्त कीजिए कि अनावश्यक उत्तेजना, चिन्ता अथवा भयका उसके लिए कोई कारण नही है।

(७) आक्षोभित व्यक्तियोको कोलाहल—क्रिया अथवा आक्रमण—क्रिया बडे ही जोरशोरकी ज्ञात होती है, अत यदि बन्दूको या तोपोकी गोलिया चल रही हो अथवा गिरनेवाले बमोकी सीटीके शब्द—चीत्कार गूँज उठते हो, तो आप अस्वस्थ व्यक्तिके कानोमे रुईकी स्तम्भिनी डाल दे अथवा उसे पट्टीके द्वारा ढक दे।

(ब) किसी शरणगृहमें पहुँचनेपर

(१) अस्वस्थ व्यक्तिको भली भाति कंबल ओढाये। गर्म पानीसे भरी बोतलो को विशेष रूपसे निचले होठ पर रखे।

(२) यदि वह (स्त्री या पुरुष) निगल सके, तो (उस) रोगी को गर्म–कडी–मीठी चाय या काफी दीजिए। गर्म पेय श्रेयस्कर है और इन सबोमे सर्वोत्तम है अत्यन्त मीठी गर्म चाय। किसी भी रूपमे शराबका प्रयोग न करे।

(३) उपयुक्त मरहमपट्टी और पट्टीबधनके द्वारा सभी प्रकारके घावोका सावधानीके साथ उपयुक्त उपचार करे।

(४) उसके दर्दको दूर कीजिए, यदि आवश्यक समझे तो 'मार्फिया' की एक सूई भी दे दें।

(५) यदि अस्वस्थ व्यक्ति धूम्रपान कर सके, तो उसे करने दे। आघात या आक्षोभके लिए प्राथमिक उपचारका क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है।

याद रखिए कि प्रत्येक घायल व्यक्ति किसी–न–किसी अश तक आक्षोभसे पीडित हो सकता है और जब आप किसी ऐसे मामलेमे उपचार कर रहे हो, तो प्राथमिक सहायता प्रदान करनेके अतिरिक्त जिस किसी घावके कारण आक्षोभ हुआ हो, आपको आक्षोभ रोकने या उसका उपचार करनेके लिए ये सभी बाते याद रखनी ही पडेगी। आपको उस अवसर पर अपने निर्णयके द्वारा ही यह निश्चित करना चाहिए कि यदि आपको अस्वस्थ या घायल व्यक्तिको अकेले छोडकर कबल, पेय आदि लाने जाना पडे, तो आपको क्या करना चाहिए, स्पष्ट है कि आप सर्वप्रथम उसके घावोकी मरहमपट्टी करेगे और प्रयत्न करेगे कि रक्त–स्राव बन्द हो जाय।

रक्त स्राव

'हैमरेज' का अर्थ शरीरकी किसी रक्तवाहिनी नाडीसे रक्त–स्राव है। **हृदय**, जो कि छातीकी हड्डी और छातीके वाम पार्श्वकी पसलियो (Ribs) के पीछे स्थित है, एक मज़बूत स्वयचलित पैशिक पप है। इस पपके द्वारा **रक्त** नलिकाओमे प्रवाहित होता है–इन्हे **रक्तवाहिनी धमनियां** कहा जाता है। ये नलिकाए शरीरके अन्दरके प्रत्येक अगमे, मासके प्रत्येक टुकड़ेमे और हड्डियोमे पोषित करने और सारे शरीरको गर्मी देनेके लिए रक्तको ले जाती है। इन रक्त–वाहिनी नाड़ियोको **धमनी** कहते है और वे नाड़िया जो हृदय तक रक्त ले आती है **शिराएं** कहलाती है। धमनियोसे शिराओ मे जातेसमय रक्तको **केशिका** नामक जालीदार बारीक केशके आकारवाली रक्तवाहिनी नाड़ीसे होकर गुजरना पड़ता है। ये केशिकाए शरीरके प्रत्येक भागमे पायी जाती है, इन्ही नाडियोके सूक्ष्म रेशोके माध्यमसे शरीरके प्रत्येक अगको रक्तकी पौष्टिकता मिलती है। उसके साथ ही व्यक्ति तत्वोको इन्ही अगोसे गृहीत करके ये नाड़ियां रक्तमे मिला देती है।

सामान्य रूपमे हृदयसे रक्त ले जानेवाली प्रत्येक धमनीके अतिरिक्त एक विशेष नाड़ी भी होती है, जो विरोधी दिशामे हृदयमे रक्त वापस ले आती है। वापस आये हुए

अशुद्ध रक्तको हृदय तुरन्त अपने पपके द्वारा फेफड़ोमे भज देता है, जहा पर अशुद्ध रक्त को शुद्ध करनेकी क्रिया मपादित होती है। तब पुन. रक्त हृदयमे आता है जो कि उस शुद्ध रक्तको धमनियोंमे प्रवाहित करके शरीरके प्रत्येक भागमे भेजता है।

रक्त-स्राव तीन प्रकारका होता है और यह कटी हुई रक्त-नलिकाके प्रकार पर आधारित होता है।

(१) **केशिका रक्त-स्राव** · हल्की-छोटी खरोच जैसा कि दाढी बनाते समय लग जाती है और जिसमे बहुत ही हल्का रक्तस्राव होता है और एक अत्यत धीमी गतिमे बहि स्पदित होता है। इस प्रकारके रक्त-स्रावको किसी प्रकारके प्राथमिक उपचारकी विशेष आवश्यकता नही होती, क्योकि जमे हुए रक्तके पपडी (Congealed Blood) निर्माणके द्वारा यह तुरन्त बन्द हो जाता है।

(२) **छोटी रक्त वाहिनी नाड़ियोंसे रक्त-स्राव**–रक्त एक धीमी और स्थिर धाराके रूपमे बहता है, वह घावके छेदमे भर जाता है और उसके किनारेपर बहता रहता है। यह अति-रक्त-वर्ण (Dark red) का होता है।

(३) **मुख्य धमनीसे रक्त-स्राव** घावसे रक्त धारा प्रवाहित हो उठती है और तीव्र गतिसे भरे हुए सोतेके समान दौड़ पड़ती है। यह चमकीले लाल रगका होता है।

रक्त-स्राव आघातका कारण है। यदि रक्त-स्राव जारी है, तो घाव अत्यन्त खराब हो जाता है। इसलिए जैसा कि पहले ही उल्लेखित है, रक्त-स्राव को तुरन्त बन्द कर देना चाहिए, अन्यथा आघात या घाव अत्यन्त खराब रूप धारण कर लेगा। रक्तकी क्षतिके साथ युग्मित रूपमे यह साघातिक भी हो सकता है।

प्राथमोपचार

(अ) अपेक्षाकृत अधिक छोटी नलिकाओंसे रक्त-स्रावके मामलेमें :

(अत्यन्त सामान्य प्रकारके मामलोमे) :–

(१) **आदमीको चित्त लिटा दिजिए।**

(२) **जिस अंगसे रक्त-स्राव हो रहा हो, उसे ऊपर उठा दिजिए।** ऐसा करनेसे रक्तका निकलना कठिन हो जाता है क्योंकि अब रक्तको हृदयमे पपित होकर ऊपरकी ओर जाना पड़ेगा। ऊपरकी ओर उठाये जाने योग्य शरीरके अग केवल हाथ और पैर है। यदि कोई अस्थि-भगका मामला हो, तो आघातित अगको टूटी हड्डीके जुड़ जाने तक ऊपर नही उठाना चाहिए।

(३) **रक्त-स्रावके स्थानको वस्त्रहीन कर दीजिए**–ऐसा करनेके लिए वस्त्रोको निकाल दीजिए या काट दीजिए। आवश्यकतासे अधिक कपड़ोको दूर मत कीजिए।

(४) **मोटे सूखे नर्म तल्प या पुलिंदेसे रक्त-स्रावके स्थानको पूर्ण रूपसे ढंक दीजिए।** उपर्युक्त रूपमे इस पुलिंदे या तल्पके ऊपर कसकर पट्टी बाध दीजिए।

(५) **आक्षोभका उपचार कीजिए।** रोगीको नीचे लिटानेके तुरन्त बाद यह उपचार आरम्भ हो जाना चाहिए और आप उसे जारी रखिए। इस प्रसगमे आप कसे हुए कपडोको ढीला करना, रोगीको गर्म रखना, उसे पेय देना और प्रसन्न रखना न भूले।

यदि उपर्युक्त उपचारकी पाच सावधानियो और उपायोंके बावजूद रक्त-स्राव न रुके, तो पहले तल्पबधके ऊपर कसकर **दूसरा तल्प** (या पुलिंदा) और पट्टी बाध दे।

यदि इसके बावजूद अभी भी रक्त-स्राव नही रुकता, तो आपके लिए रक्त-स्राव बंध (Tourniquet) रखनेके अतिरिक्त और कोई स्थानापन्न उपाय नही है।

(ब) प्रमुख धमनीसे रक्त-स्रावके मामलेमें

पैर या हाथकी प्रमुख धमनीके कट जाने पर रक्तके प्रवाहको रोकनेके लिए यदि तुरन्त कोई उपचार नही किया गया, तो रक्तकी अपार क्षतिके कारण एक या दो मिनटमे ही रोगी मर सकता है। प्राथमिक उपचारमे यह एक ऐसी क्रिया है, जिसमे रोगीका जीवन पूर्णत. आपके हाथमे है।

आपके लिए पैर या हाथमे रक्त-चापीय बिन्दु और उसपर रक्त-स्राव बन्ध रखनेका ढग आवश्यक रूपमे ज्ञातव्य है (इनका इसी अध्यायमे अलगसे वर्णन किया गया है)।

(१) रक्त-चापीय-बिन्दु पर तुरन्त दबाव डालिए। 'आप इस कार्यको ठीक ढगसे कर रहे है' इसका ज्ञान आपको रक्त-स्राव बन्द होते ही हो जायगा।

(२) रक्त-स्राव-बन्धका उपयोग कीजिए। सहायताके लिए जोरसे आवाज़ दीजिए। जब आप रक्त-चापीय बिन्दुको कसकर दबाए हो, तो दूसरे व्यक्तिको ही रक्त-स्राव-बन्धको रखना चाहिए।

(३) घावको मोटे सूखे तल्प या पुलिंदेसे ढक दीजिए। ठीक तरहसे इस तल्प-पर पट्टी बाध दीजिए।

(४) आक्षोभके लिए उपचार कीजिए।

दाब बिन्दु (या रक्त चापीय बिन्दु) (Presser points)

'रक्त-चापीय-बिन्दु' ऐसा स्थल है जहा पर किसी अस्थिके ऊपर अपनी ऊगलियो के द्वारा इस प्रकारसे दबावसे अस्थि एव ऊगलीके मध्य स्थित धमनी चौड़ी हो जाती है

और धमनीमे रक्तका प्रवाह बन्द हो जाता है। और यही रक्त घावोमे प्रवेश करके शरीरके नीचेके अगोमे चला जाता है।

भुजामे रक्त–चापीय बिन्दु मास–पेशियोके भीतरी भागमे जुडनेवाली कुहनी ग्रोव (Grove) मे रहता है।

अपनी शक्तिका प्रदर्शन करते समय आप अपनी मासपेशिको आसानीसे पहचान सकते है। पैरमे रक्त–चापीय बिन्दु उरुमूल के मध्य भागमे दाहिनी ओर रहता है।

रक्त–स्राव–बन्ध

अप्रशस्त और मजबूत पदार्थका कोई लबा टुकडा जो रक्त–स्रावको बन्द करनेके लिए पैर और भुजाके चारो ओर कसकर बाधा जा सके— 'रक्त–स्राव–बन्ध' (Tourniquet) कहलाता है। निम्नलिखितमे से किसी एकका प्रयोग रक्त–स्राव–बन्ध' के लिए किया जा सकता है –

(अ) तग मुडा हुआ त्रिकोणात्मक पट्टी बन्ध।
(ब) अग्रेजी के आई अक्षरके समान तग मुडा हुआ मजबूत रूमाल।
(स) कपडेका कोई अन्य मजबूत पट्टा–जैसे नेकटाई, पेटी अथवा बन्धनीका जोडा (Pair of Braces)।
(द) रस्सी अथवा सूत्र।
(य) रबर नलिका एक टुकडा।

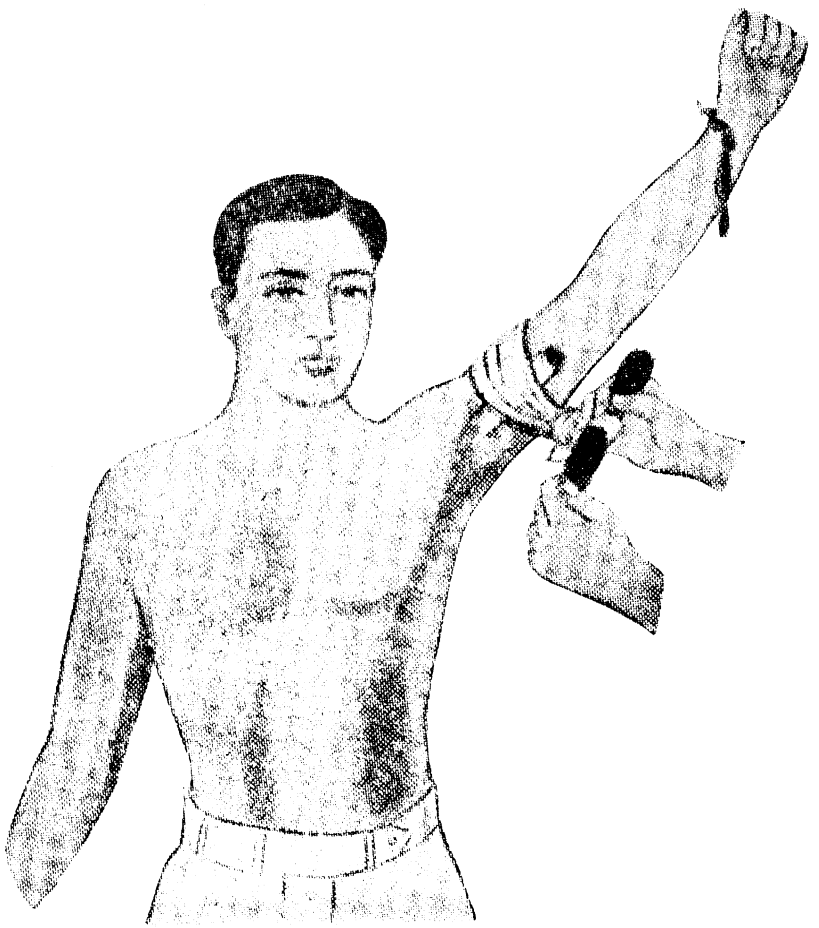
रक्त स्राव बंधके प्रयोगका तरीका

घावके ठीक ऊपर और यथासम्भव अत्यन्त निकट शरीरके अग अर्थात् बाह या जाघके चारो ओर पट्टी बध या पट्टा या सूत्र लपेट दीजिए। पट्टी बधपर इस प्रकार करकेगाठ बाध दीजिए जिसमे कि वह अग शिथिल रूपमे बध जाय।

उसमे एक लकडी डाल दीजिए और उसे तब तक ऐठिए जब तक कि शरीरके उस अगके चारो ओर वह पट्टी कस न जाय और रक्तका बहना बन्द न हो जाय। ऐसे समय यह ध्यान रखिये कि चमडेको कोई क्षति न हो।

इसे याद रखना महत्वपूर्ण है कि आप को रक्त–स्राव बन्धको प्रत्येक आधे घण्टे के बाद लगभग आधे मिनट के लिए शिथिल कर देना चाहिए। जिसके अगपर आपने रक्त स्राव बन्धको बान्धा है, उस आदमीके पास सम्भव है कि आप अधिक समय तक ठहर न सके, अत: **उसके कपडोंपर एक एक नामपत्र (लेबिल) लगा दें, जिसमे रक्त–स्राव–बन्ध लगानेका समय अंकित हो।** इससे अन्य व्यक्तिका ध्यान इस ओर आकर्षित होगा। इससे इस तथ्यकी ओर भी ध्यान आकर्षित होता है कि इस हताहत

व्यक्तिके अग पर रक्त–स्राव–बन्ध रखा गया है और शीघ्र ही उसे किसी डाक्टर को दिखाना चाहिए। इस प्रसगमे आपको स्पष्ट रूपसे याद रखना चाहिए कि शरीरके प्रत्येक अगको जीवित रहनेके लिए रक्तकी आवश्यकता होती है और कोई अग ताजे रक्तके बिना लगभग आधे घण्टे तक ही जीवित रह सकता है। यदि आप एक प्रभावकारी रक्त–स्राव–बन्ध लगभग एक या दो घण्टे तक लगाये रखे, तो बाहु या पैर मृत हो जायेंगे। वे विगलित और कोथित (सडे हुए) हो जायगे और बादमे उन्हे काटना पडेगा। अनेक अगोको काटकर बाहर निकालना पडा है, क्योकि रक्त–स्राव–बन्धको बहुत देर तक बधा ही रहने दिया गया था। अतएव, यह आवश्यक है कि रक्त–स्राव–बन्धको बहुत आवश्यकतासे अधिक एक क्षण भी बधा नही रहने देना चाहिए।



चित्र ४८

कलाईमे रक्त–स्राव बन्द करनेके लिए बाहुमे रक्त–स्राव–बन्ध लगानेका चित्र

एक रक्त–स्राव–बन्धको आधे घण्टे तक बाधे रखनेके पश्चात यह देखनेके लिए कि क्या रक्त–स्राव बन्द हो गया है––शिथिल कर देना चाहिए। यदि रक्त–स्राव बन्द न हुआ हो, तो एक बार फिरसे रक्त–स्राव–बन्धको कस देना चाहिए और उसे उसी प्रकार अगले आधे घण्टे तक बंधा हुआ रखना चाहिए। तब पुन. यह देखनेके लिए जाच कीजिये कि रक्त–स्राव बन्द हो गया है या नही।

यह स्मरणीय है कि यदि रक्त–स्राव–बन्धसे रक्त–स्राव बन्द नही होता, तो आप उसे अलग निकाल दे, अन्यथा लाभके स्थानपर इससे अधिक क्षति हो सकती है।

कलाईसे रक्तस्राव बंद करनेके लिए बाहुमें रक्त–स्राव बंध

जैसा कि चित्र सख्या ४८ मे पिछले पृष्ठ पर दिखाया गया है, रक्त–स्राव–बन्ध किसी तल्प या पुलिदे, रूमाल अथवा पर्याप्त बडे सुदृढ रूपसे बेल्लित बेलन–पट्टीसे तुरन्त विनिर्मित हो सकता है। इसे ठीक ठीक रूपसे रक्त बहनेवाले अग पर रखना चाहिए और ठीक स्थितिमे जमा करके उसके ऊपर कस कर पट्टी बाध देनी चाहिए। यदि रक्त–स्राव बन्द नही हो तो पट्टी बधमे एक मजबूत पेसिल या लकडीका छोटा टुकडा सरका देनेमे दाब (Pressure) को ओर अधिक बढाया जा सकता है।

जांघ (Thigh) से रक्तस्राव बंद करनेके लिए रक्तस्राव बंद

(१) रोगीको नीचे लिटा दीजिए।

(२) रक्त बहनेवाले स्थानपर अपना अगूठा रख दीजिए और स्तरसे ऊपर की ओर उस अगको उठा दीजिए।

(३) जिस नाड़ीमे रक्त बह रहा हो उस पर एक तल्प या पुलिदा रख दे और उसपर खूब कसकर पट्टी बाध दे। यदि रक्तका बहना बन्द नही होता, तो ऐसा जैसा कि आगेके पृष्ठ पर चित्र सख्या ४९ मे दिखाया गया है, रक्त बहनेवाले स्थानकी रक्त–नाडीपर एक रक्त–स्राव बन्ध लगा दीजिए। इस मामलेमे भी दबावको एक मजबूत पेसिल या लकड़ीके टुकडेको बधमे सरका देनेमे अधिक बढाया जा सकता।

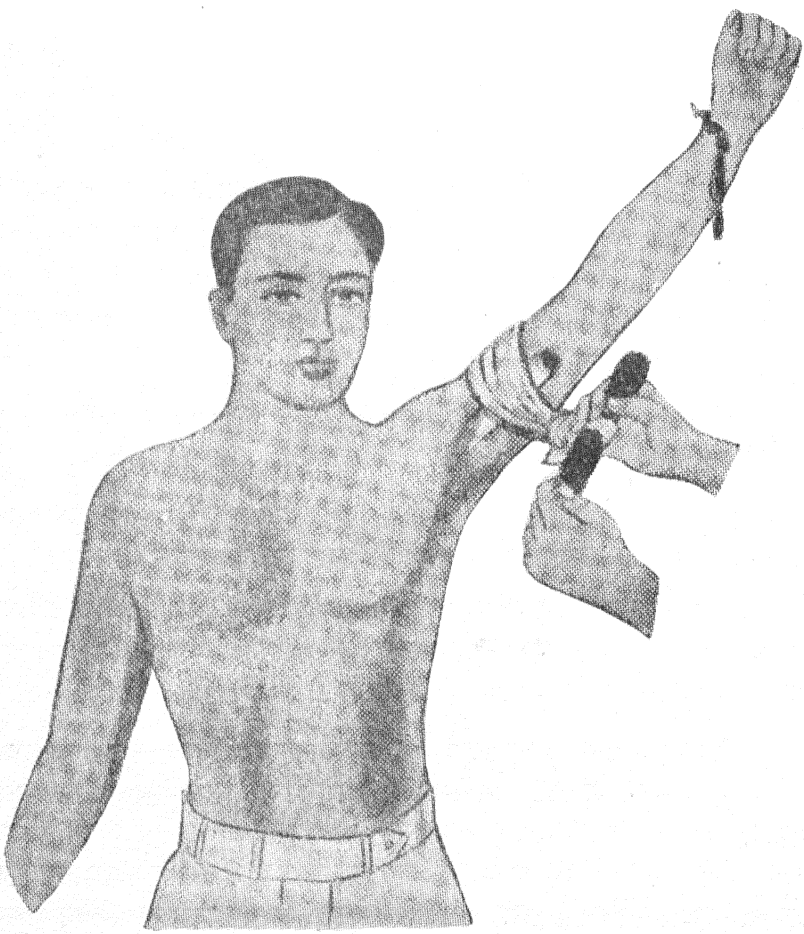
शिरोवल्कसे रक्त–स्रावको रोकनेके लिये सिरके चारों ओर कसकर पट्टी बांधना

सिरकी प्रमुख रक्त–नलिकाओमे से रक्त–स्रावके मामलेमे .–

(१) तुरन्त रक्त–स्रावके स्थानपर खूब कसकर एक तल्प या पुलिदा रख दे।

(२) जब सभव हो, इस पुलिदे पर पट्टी बाध दे। यदि रक्त–स्राव पुलिदेसे या पट्टीसे बन्द नही होता, तो जैसा कि आगे चित्र–सख्या ५० मे दिखाया गया है, सिरपर रक्तस्राव बन्ध रखकर उसके चारो ओर कसकर पट्टी बाध दे।

व्यक्तिके अंग पर रक्त–स्राव–बंध रखा गया है और शीघ्र ही उसे किसी डाक्टर को दिखाना चाहिए। इस प्रसगमें आपको स्पष्ट रूपसे याद रखना चाहिए कि शरीरके प्रत्येक अंगको जीवित रहनेके लिए रक्तकी आवश्यकता होती है और कोई अग ताजे रक्तके बिना लगभग आधे घण्टे तक ही जीवित रह सकता है। यदि आप एक प्रभावकारी रक्त–स्राव–बन्ध लगभग एक या दो घण्टे तक लगाये रखें, तो बाहु या पैर मृत हो जायेंगे। वे विगलित और कोथित (सडे हुए) हो जायंगे और बादमें उन्हें काटना पडेगा। अनेक अंगोंको काटकर बाहर निकालना पडा है, क्योंकि रक्त–स्राव–बन्धको बहुत देर तक बंधा ही रहने दिया गया था। अतएव, यह आवश्यक है कि रक्त–स्राव–बन्धको बहुत आवश्यकतासे अधिक एक क्षण भी बंधा नहीं रहने देना चाहिए।



चित्र ४८

कलाई से रक्त–स्राव बन्द करनेके लिए बाहुमें रक्त–स्राव–बन्ध लगानेका चित्र

एक रक्त–स्राव–बन्धको आधे घण्टे तक बांधे रखनेके पश्चात यह देखनेके लिए कि क्या रक्त–स्राव बन्द हो गया है––शिथिल कर देना चाहिए। यदि रक्त–स्राव बन्द न हुआ हो, तो एक बार फिरसे रक्त–स्राव–बन्धको कस देना चाहिए और उसे उसी प्रकार अगले आधे घण्टे तक बंधा हुआ रखना चाहिए। तब पुनः यह देखनेके लिए जांच कीजिये कि रक्त–स्राव बन्द हो गया है या नही।

यह स्मरणीय है कि यदि रक्त–स्राव–बन्धसे रक्त–स्राव बन्द नही होता, तो आप उसे अलग निकाल दे, अन्यथा लाभके स्थानपर इससे अधिक क्षति हो सकती है।

कलाईसे रक्तस्राव बंद करनेके लिए बाहुमें रक्त–स्राव बंध

जैसा कि चित्र सख्या ४८ मे पिछले पृष्ठ पर दिखाया गया है, रक्त–स्राव–बन्ध किसी तल्प या पुलिदे, रूमाल अथवा पर्याप्त बड़े सुदृढ़ रूपसे बेल्लित बेलन–पट्टीसे तुरन्त विनिर्मित हो सकता है। इसे ठीक ठीक रूपसे रक्त बहनेवाले अंग पर रखना चाहिए और ठीक स्थितिमे जमा करके उसके ऊपर कस कर पट्टी बांध देनी चाहिए। यदि रक्त–स्राव बन्द नही हो तो पट्टी बधमे एक मजबूत पेंसिल या लकड़ीका छोटा टुकडा सरका देनेसे दाब (Pressure) को ओर अधिक बढाया जा सकता है।

जांघ (Thigh) से रक्तस्राव बंद करनेके लिए रक्तस्राव बंद

(१) रोगीको नीचे लिटा दीजिए।

(२) रक्त बहनेवाले स्थानपर अपना अगूठा रख दीजिए और स्तरसे ऊपर की ओर उस अगको उठा दीजिए।

(३) जिस नाड़ीमे रक्त बह रहा हो उस पर एक तल्प या पुलिदा रख दें और उसपर खूब कसकर पट्टी बाध दे। यदि रक्तका बहना बन्द नही होता, तो ऐसा जैसा कि आगेके पृष्ठ पर चित्र सख्या ४९ मे दिखाया गया है, रक्त बहनेवाले स्थानकी रक्त–नाड़ीपर एक रक्त–स्राव बन्ध लगा दीजिए। इस मामलेमे भी दबावको एक मजबूत पेसिल या लकडीके टुकड़ेको बंधमे सरका देनेसे अधिक बढ़ाया जा सकता।

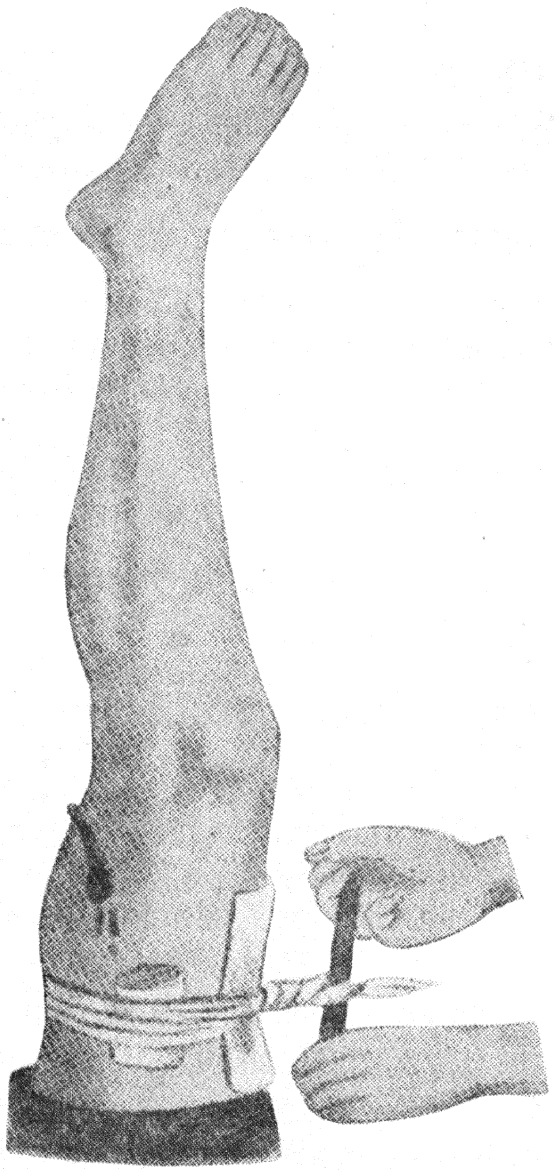
शिरोवल्कसे रक्त–स्रावको रोकनेके लिये सिरके चारों ओर कसकर पट्टी बांधना

सिरकी प्रमुख रक्त–नलिकाओमे से रक्त–स्रावके मामलेमें :–

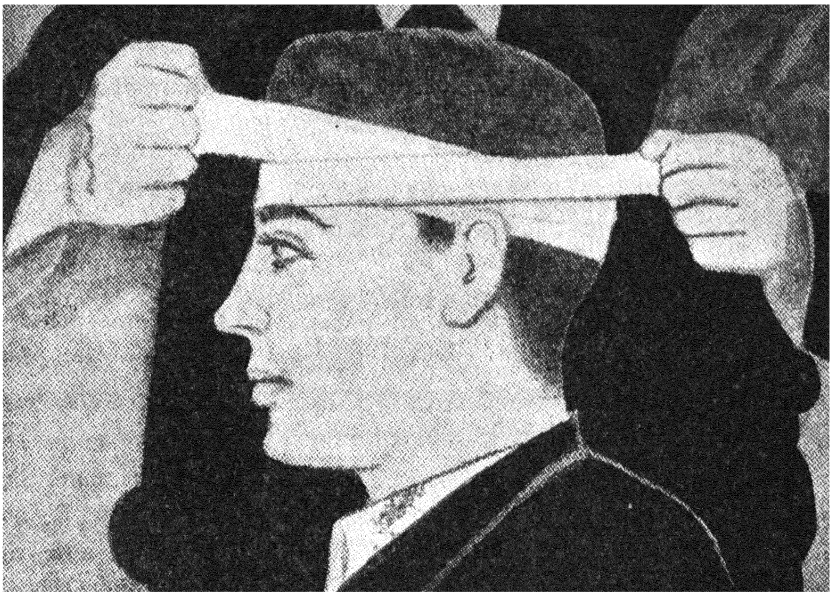
(१) तुरन्त रक्त–स्रावके स्थानपर खूब कसकर एक तल्प या पुलिदा रख दें।

(२) जब सभव हो, इस पुलिदे पर पट्टी बाध दे। यदि रक्त–स्राव पुलिदेसे या पट्टीसे बन्द नही होता, तो जैसा कि आगे चित्र–संख्या ५० मे दिखाया गया है, सिरपर रक्तस्राव बन्ध रखकर उसके चारो ओर कसकर पट्टी बांध दे।

अनेक मामलोमे इससे रक्त–स्राव बन्द हो जायगा, लेकिन आपको रक्त–स्राव–बन्धके नियमोको याद रखना चाहिए और उनका यहां उपयोग करना चाहिए और



चित्र ४९
जांघसे रक्त–स्रावके लिए रक्त–स्राव–बन्ध



चित्र ५०

शिरोवल्कसे रक्त–स्राव बन्द करनेके लिए सिरके चारो ओर कसकर पट्टी बाधना।

यदि रक्त–स्राव बन्द नही होता, तो उसे दूर कर दीजिए और उसका आधे घण्टे बाद परीक्षण करे।

हथेलीमें प्रमुख रुधिर वाहिनी नाडीसे रक्त-स्राव

(१) हाथमे एक गेंदके आकारका बड़ा पुलिदा रख दे।

(२) उस व्यक्तिसे उसे पकड़े रहनेके लिये कहें।

(३) उस व्यक्तिको ख़ब कसकर पट्टी बांध दे, जिससे कि यह एक मुक्केबाजी के अभ्यास जैसा लगे।

(४) हाथ और भूजाको गोफन (स्लिग) रूपमे ऊपर उठा दीजिए।

आन्तरिक रक्त-स्राव (Internal Bleeding)

ऐसा तब होता है कि जबकि कठिनाईसे ही बाह्यतः रक्तका कोई चिन्ह दिखायी पड़ता है। इस प्रकारका रक्त–स्राव छाती और पैटकी रुधिर–वाहिनी नलिकासे होता है, जो दुर्घटनाके कारण क्षत हो गयी है और जिसमें शरीर कुचल उठा है। युद्धके समयमे ये

आन्तरिक रुधिर–वाहिनिया गोली और धातुके उड़नेवाले छोटे टुकड़ों, जो कि शरीरमें गहरे प्रवेश कर जाते हैं जबकि वे चमडेमें एक छोटा–साही घाव करते हैं, के द्वारा कुचली जा सकती है। इस प्रकार पानीमे विस्फोट होनेके परिणामस्वरूप (जैसा कि गहराईमें गिरनेसे) उसमे तैरनेवाले मनुष्योमें भी ऐसा हो सकता है।

किसी आदमीके आतरिक रक्त–स्रावको जाननेके लिए बिना कही रक्त संधान किये ही आप गंभीर रक्त–स्रावके सामान्य प्रभावोसे ही उसे जान जायंगे। :–

सामान्य प्रभाव–जैसे–

(अ) वह आक्षोभ या आघातसे पीडित है।

(ब) श्वास–गति तीव्र हो उठती है, सास लेनेमे श्रम करना पडता है, वह बेचैन हो जाता है और वह निरुद्देश्य रूपमे अपना हाथ और पैर घुमाता है।

ऐसे मामलोमे प्रथमोपचार इस प्रकार है :–

(१) आक्षोभ का उपचार कीजिये, पर रोगीके वक्षस्थल या पेटके पास गर्म पानीकी बोतले न रखे।

(२) रोगीको कोई तरल पदार्थ पीनेके लिए मत दे।

यदि इस प्रकारका रक्त–स्राव स्वाभाविक उपायोसे बन्द नही होता, तब यह रक्त–स्राव केवल एक शल्य–चिकित्सककी शल्य क्रिया से ही बन्द किया जा सकता है, उसे एक कठिन शल्य–क्रिया करना पड़ेगी, पर तब तकके लिए आप किसी उपयुक्त व्यक्तिसे 'मर्फिया' की सुई देनेके लिए कह सकते है, क्योकि यह सुई हमेशा रक्त–स्राव रोकनेमे सहायता प्रदान करती है।

रुधिरकी उल्टी होनेपर प्राथमिक उपचार

गले या मुखके घाव अथवा पेटकी किसी क्षतिके परिणामस्वरूप निगल लिया गया रक्त ही उल्टी किया हुआ रक्त हो सकता है। यह उल्टीकृत रक्त पेटके किसी गंभीर घावके परिणामस्वरूप होनेके अतिरिक्त जीवनके लिए सामान्यतः ख़तरनाक नही है।

(१) इसका उपचार आतरिक रक्त–स्रावके रूपमे करे।

(२) रोगीको कुछ बर्फके छोट टुकड़े चूसनेके लिए दीजिए, पर और कुछ भी मत दीजिए।

आक्षोभके लिए अपने उपचारके एक अंग रूपमे रोगीको पुनः आश्वस्त करनेकी बात याद रखे कि इस प्रकारका रक्त–स्राव खतरनाक नही होता और यह शीघ्र बन्द हो जायगा।

खांसीके साथ होनेवाले रक्त-स्रावका प्राथमिक उपचार

खांसीसे निकला हुआ रक्त गलेके किसी घाव अथवा फेफड़ेके किसी रूपमे विक्षत हो जानेके परिणामस्वरूप श्वास-नलिकासे बाहर नीचे स्रवित हो सकता है।

छातीके गंभीर घावके परिणामके अतिरिक्त यह सामान्यतया जीवनके लिए ख़तरनाक नही है। आंतरिक रक्त-स्रावके अन्य मामलोंकी ही भाति रोगीको वही उपचार देना चाहिए।

नाकसे रक्त-स्राव होनेपर प्राथमिक उपचार

यदि इसका कारण नाक पर हुआ आघात या धक्का है, तो नाककी छोटी हड्डियोका भग या टूटना हो सकता है और नही भी हो सकता। इन दोनो प्रकारके (अस्थि-भगो अथवा अस्थि-भग न होनेवाले) मामलोंमे प्रथमोपचार एक-सा है :-

(१) रोगीको एक बेच पर बैठा दीजिए, उसे नीचे लेटने मत दीजिए।

(२) उससे कहिये कि वह मुखमे सास ले ओर नाकमे फूँक मारना या सास लेना बन्द कर दे।

(३) रोगीकी नाक पर और गलेके पृष्ठ पर ठण्डे पानीमे भिगायी हुई कपडेकी गद्दी रखे।

सामान्य सिद्धान्त है कि भगित नाकसे बुरी तरह से रक्त बहेगा।

यदि रक्त-स्रावका कारण धक्का या आघात नही है, और रक्त-स्राव बिना किसी स्पष्ट कारणके ही शुरू हो गया है, तो नासिका-रन्ध्रोको दबाने और मुखसे सास लेनेसे उस आदमीके द्वारा यह नियंत्रित किया जा सकता है और इसे बद भी किया जा सकता है।

सावधानी-यदि किसी रोगीके पेटमे घाव हो गया हो तो उसे कोई तरल पदार्थ न दे। जिन रोगियोके पेटमे घाव हो गया हो, उन्हे मुखसे खाने या पीनेकी कोई वस्तु नही दी जानी चाहिए। उनके लिए घूँट-घूँटकर पानी पीना या पानीकी चुसकी लेना भी वर्जित है। हां, मुखको भली भाति पानीसे धो देना चाहिए।

हवाई हमलेके पश्चात् संक्षेपमें प्राथमिक उपचार

प्राथमोपचार दलोको घायलोके पास कुछ ही मिनटोमे पहुंच जाना चाहिए। ऐसे समयमे अत्यन्त कम समयका भी बड़ा मूल्य होता है। तात्कालिक और उपयुक्त क्रियाके द्वारा उस स्थल पर उपस्थित स्त्री या पुरुष जीवन रक्षा कर सकते है।

गंभीर घावोंको देखनेके लिए प्रस्तुत रहिये। साहसी बनिये। अपनेमस्तिष्क को शान्त रखे। अपने घायल साथीकी सेवाके प्रति अपने कर्तव्य-पालन पर ध्यान केन्द्रित,

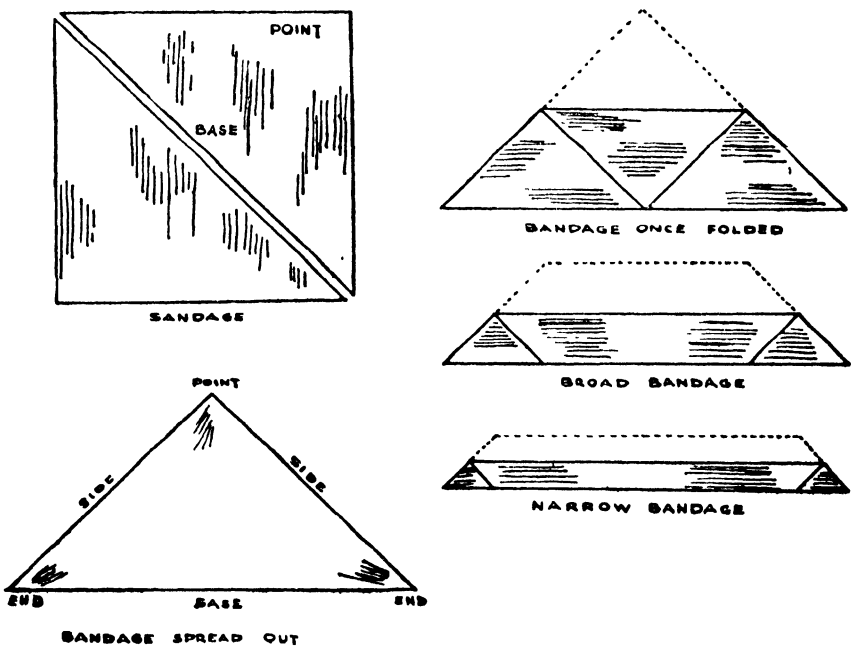
रखें। ख़तरेके दिनोंमे प्रत्येक व्यक्तिको अनेक स्वच्छ रूमाल या तौलिए लेकर चलना चाहिए। उनका पट्टीबधके रूपमे उपयोग हो सकता है और उनका भीतरी भाग खुले घाव पर प्रथम पट्टी बांधनेके लिए उपयुक्त है।

जब तक कि कोई रोगी अत्यन्त भयानक और सकटपूर्ण स्थान पर न हो, आपको उसका वहां पर उपचार करना चाहिए। घायल व्यक्तिको उठाने या घसीटनेसे गभीर क्षति हो सकती है। सामान्य नियम यह है कि हिलाने–डुलाने या हटाने और परिवहनके कामको प्रशिक्षित व्यक्तियोंके लिए छोड़ देना चाहिए।

जनपदीय या असैनिक सहायक (Civil helper) जो सर्वप्रथम हताहत व्यक्तिके पास पहुचता है– का सर्वप्रथम और अत्यन्त महत्वपूर्ण कर्तव्य रक्त–स्रावको बन्द करना है।

जब आप अंगूठेको काटे, तो दूसरे हाथकी ऊंगलीसे उसे खूब कसकर पकड़े रहें। सभी मामलोमे रक्त बहनेवाले घावके ऊपर 'दाब' (Pressure) उपयुक्त वस्तु है।

पट्टी बन्धन (Bandags)



चित्र ५१

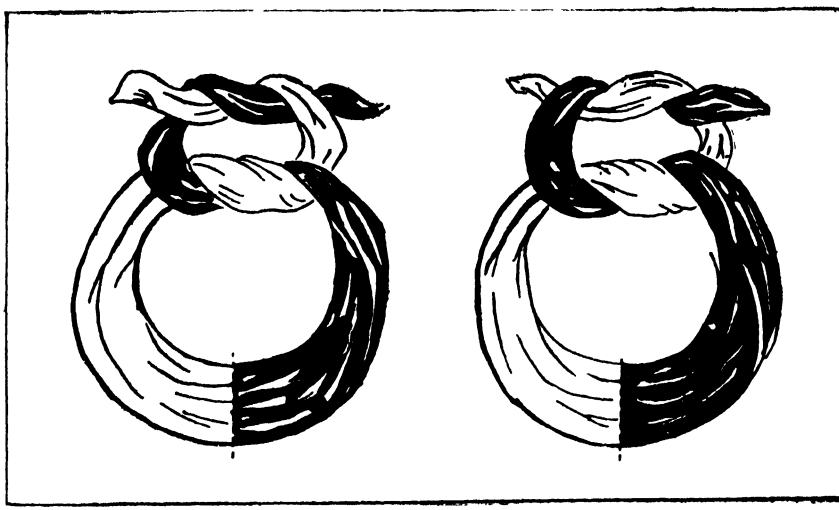
(अ) बाहर फैली हुई पट्टी (ब) एक बार मोड़ी हुई पट्टी
(स) चौडी पट्टी (द) तग पट्टी

प्राथमिक सहायता और उपचारमे पट्टीबंध अत्यन्त महत्वपूर्ण अग माना जाता है। त्रिकोणात्मक पट्टीबंध अत्यन्त उपयोगी है। इनके प्रयोग और लगानेका पूर्ण ज्ञान आवश्यक है। लिननेके ४० वर्ग इंचके टुकड़ोंको काट कर इसे इस प्रकारसे बनाया जाता है कि दो त्रिकोण बन जाते है। प्रत्येक त्रिकोणात्मक पट्टीबंधमे एक बिन्दु, एक आधार और दो किनारे होते है। इसके दो छोर होते है।

चित्र संख्या ५१ से पाठकोको विविध प्रकारके पट्टीबन्धो और उनके विवरणो की जानकारी प्राप्त होगी :–

पृष्ठ २०६ पर चित्र–संख्या ५१ को देखनेसे अर्थ स्वयं स्पष्ट हो जाता है।

नीचेका चित्र ५२ से पाठकोको दोहरी गांठ (Reef Knot) (बाये) ओर ग्रैनी नाट (Granny Knot) (दाए) की जानकारी प्राप्त होगी।



चित्र ५२

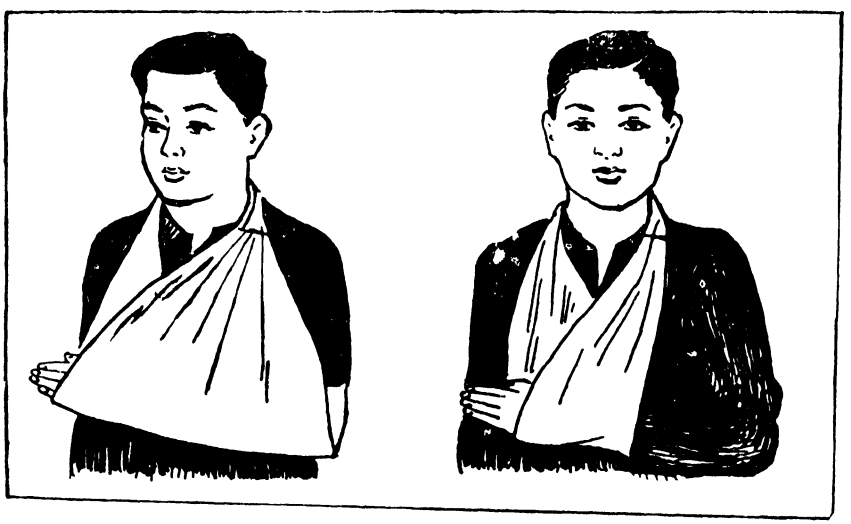
'दोहरी गाठ' और 'ग्रैनी गांठ'

सामान्य नियमके रूपमे पट्टियां दोहरी गाठ (Reef Knots) के द्वारा बाधी जानी चाहिए। 'ग्रैनी गाठों' के प्रयोगकी अवहेलना करनी चाहिए क्योकि उनके खिसक जाने या शिथिल हो जाने का भय रहता है। दोहरी गांठ बाधते समय हाथमे पट्टीका एक सिरा पकड़ रखे, दूसरा सिरा दाहिने हाथमे पकड़े और गाठ बाध-

नेके सामान्य रूपसे प्रचलित तरीकेसे एक सिरेके चारो ओर दूसरे को घुमाकर गाठ पूरी तरह बांध दे। दोहरी गाठ पूर्ण होनेके पश्चात पट्टीके सिरोको टाक देना चाहिए।

पट्टियां कामचलाऊ या आशु-रचित हो सकती हैं :– रूमालो, कमर–पट्टियो, पट्टो, बधनियो (Braces), दाइयो अथवा लिननेके टुकडो, फीता या दीर्घ पट्ट, सूत्र, जो भी उपस्थित हो–उनमे काम चलाऊ रूपमे पट्टिया बनायी जा सकती है। माथेकी पट्टी, आख पट्टी, सपूर्ण सिरपर लगायी जानेवाली सिरकी पट्टी, ठोडी की पट्टी, सिरके पिछले भागमें लगाने योग्य चार छोरोवाली पट्टी, लबी बाहु गोफन–पट्टिया, स्कन्धोके लिये पट्टी – जिसमे छोटी भुजा गोफन पट्टियां हो, छोटी भुजा गोफन पट्टिका, कुहनीकी पट्टी, फैली हुई हथेली बांधनेकी पट्टी, नितंब–पट्टी, घुटनो–पैरो और पिण्डली की पट्टी, छातीके दोनो ओर–आगे और पीछे–बाधनेकी पट्टी आदि आपके पास रहनी चाहिए। अभ्याससे इन समस्त प्रकारकी पट्टियोके बाधनेमे किसी भी व्यक्तिको कुशलता प्राप्त हो जायगी। यह आवश्यक है कि प्रथमोपचारक को अपने कार्यका पूर्ण ज्ञान होना चाहिए और उसे पूर्ण सफलताके साथ इनमेसे किसी भी गांठको बाधनेमे दक्ष होना चाहिए। पट्टियोको बांधना उसके प्रमुख कर्तव्योंमे से एक है। उसके लिए अन्य चीजोकी अपेक्षा बड़ी और छोटी भुजा गोफन पट्टी (गलपट्टियो) के विषय मे स्पष्ट जानकारी अत्यन्त आवश्यक है।

नीचे चित्र सख्या ५३ मे दो प्रकारकी भुजा–गल पट्टियोके चित्र दिये गये है :–



चित्र ५३

'बडी भुजा गल–पट्टी' और 'छोटी भुजा गल–पट्टी'

बड़ी –भुजा–गल–पट्टी (Large Arm Sling):– यह अग्र बाहु और हाथको सहारा देती है। किसी त्रिकोणात्मक पट्टीको फैला दीजिए, कन्धे के ऊपर उसके सुदृढ भाग पर पट्टीका एक छोर रखिये, गलेके ऊपर गोलाईमे उसे खीच ले, जिससे कि यह आघातित भागके कन्धेकी ओर स्पष्ट रूपसे दिखायी दे और शेष छोरोमे से किसी एकको हाथमे डालकर छातीके सामने कर दे। घायल अगके घुटनेके पीछे तक उसे ले आये, पट्टीके मध्य भागके ऊपर अग्रहस्तको रख दे, दूसरे सिरेको प्रथम सिरे तक ले जायें और दोनोंको बाध दे। पट्टी बधके बिन्दुको सामने लाये और पट्टीके अगले भागमे दो आलपिन लगाकर उसे सुरक्षित कर दे।

छोटी–भुजा–गल–पट्टी–यह कलाई और हाथको सहारा देती है, पर कुहनी को खुला लटकनेके लिए छोड देती है। कधेके मजबूत भाग पर चौडी पट्टीके एक सिरेको रख दे, उसे गलेके ऊपर गोलाईमे खीच ले, जिससे कि ऐसा लगे कि यह घायल अंगके कन्धेके ऊपर है, पट्टीके मध्य भाग पर कलाई को रख दे, जिससे कि सामनेका सिरा कानी ऊगलीके मूलको भी ढक ले, तब दूसरा सिरा प्रथममे लाइये और उन्हे बाध दीजिए।

वेलन पट्टी

वेलन–पट्टी सामान्य रूपमे १ से ४ इच तक चौडी और ६ गज तक लबी हो सकती है। अपेक्षाकृत अधिक तग ऊगलिया और अगूठे बाधनेके लिए अधिक उपयोगी होती है और अपेक्षाकृत अधिक चौडी पट्टी सिर, पाद और स्कन्ध–पर पट्टी बाधनेके लिए उपयुक्त है। जब पट्टीको उसके स्वतत्र सिरे तक वेल्लित कर दिया जाता है, तब उस सिरेको 'टेल' (अतिम सिरा या पूंछ) और वेल्लित भागको शीर्ष (HEAD) कहते है। भीतरी और बाहरी–वेलन पट्टीके दो पृष्ठ भाग होते है। इस पट्टीमे किसी भाग पर सुदृढ और एक जैसा–दाव भली भाति डाला जा सकता है, क्योंकि यह त्रिकोणात्मक पट्टीकी अपेक्षा अधिक निकट रूपमे लगायी जाती है और ऐसा होनेके कारण ही यह किसी अगमे रक्त–स्राव रोकनेमे अधिक उपयोगी है, उसी प्रकार किसी दग्ध अगको निश्चित रूपमे आराम प्रदान करनेमे समर्थ है।

वेलन–पट्टीके प्रयोगमें लागू होने योग्य सामान्य नियम

१ – प्रयोगके पहले पट्टीको कसकर वेल्लित कर ले।

२ – सिरे (या पूँछ) के बाह्य भागको चमडे पर रखे।

३ – पाद या अगोके चारो ओर दो बार घुमाकर पट्टीको कस दे, हा, ये दोनों घुमाव एक–दसरोके परस्परव्यापी हो।

४ – एक बारमे पट्टीका ४ से ६ इंच तक भाग खोले।

५ – किसी पैरके मामलेमे नीचेमे ऊपरकी ओर और भीतरसे बाहरकी ओर अग्र भागके ऊपर से पट्टी ले जाइए।

६ – सभी घुमावोंमे समान दाब रखे और प्रत्येक घुमावको उसके पहलेके घुमावका परस्परव्यापी बनाते हुए कमसे कम दो तिहाई भाग दबाते चले।

७ – प्रत्येक घुमावका हाशिया दूसरेके समानान्तर होना चाहिए और सभी क्रासिंग और विपरीत दिशाकी ओर घुमाव आदि को एक पादके बाहरके ऊपरी भाग पर होना चाहिए।

८ – पट्टीके सिरेको या तो सुरक्षापिनके द्वारा या तो उसके सिरेको बीचोबीच दो भागोंमे चीर कर पट्टीबंधित भागकी परिधिके अनुसार स्पष्ट रूपसे उसे लबा कर ले। तब उसे दोहरी गाठ देकर बाध दे।

बेलन पट्टीका प्रयोग तीन प्रकारसे होता है :–

(१) सर्पिल (The Spiral)

(२) विपरित (The Reverse)

(३) अग्रेजी संख्या 8 (The figure of 8 in English)

सर्पिल ढंगकी पट्टीका तब प्रयोग किया जाता है जबकि भाग बेलानाकार है, जैसा कि ऊपरी बाहु या अग्र हस्तके निचले भागके मामलोंमे इसी प्रकारकी पट्टीका प्रयोग किया जाता है। विपरीतका प्रयोग पाद–प्रदेशके शुण्डाकार होने पर किया जाता है अर्थात् जहासे पैर अपेक्षाकृत अधिक बड़ा या अधिक छोटा होनेकी ओर प्रवृत्त होता है। अग्रेजीकी सख्या (8) के ढगकी पट्टी सामान्यत. अगोंके जोडो (सन्धियो) पर जैसे कि घुटने, कुहनी और गुल्फ या टखने (Ankle) पर लगायी जाती है।

जब प्रयोगमें न हो :– पट्टियोंको भली भाति चौपत या मोडकर रखना चाहिए और प्रयोग हेतु तैयारीकी स्थितिमे रखना चाहिए। त्रिकोणात्मक पट्टीको तग रूपमे मोड़ना चाहिए, दोनो सिरोंको केन्द्रमे मोड़ देना चाहिए और तब पट्टीको लगभग ६.१।२ इचx३.१।२ इच के चार भागोंमे मोड़ित कर देना चाहिए। बेलन पट्टियोंको वेल्लित करके छोटे–छोटे बेलनोंके रूपमे रखना चाहिए।

अस्थि भंग

'अस्थि–भग' शब्दका प्रयोग किसी हड्डीके टूटनेपर किया जाता है। अस्थि–भगके निम्नलिखित कारण है :–

(१) **प्रत्यक्ष हिंसा** अर्थात् जब वह हड्डीपर प्रत्यक्ष धक्का, मार या आघात के कारण होता है, जैसे गोलीका आघात या पहियेसे कुचलना आदि।

(२) **अप्रत्यक्ष हिंसा** अर्थात् जब कि हड्डी उस स्थानसे कुछ दूरी पर टूटती है जहा पर की बल प्रयोग किया गया है और

(३) **पेशिया क्रिया** अर्थात् जिसमे मासपेशियोके ऊपर आकस्मिक हिसा और प्रतिताड़नाके कारण उससे सलग्न हड्डी टूट जाती है, जैसे–जानुफलक (Knee Cap) या हाथकी हड्डी।

अस्थि–भंगके विविध प्रकार (Varicties of Fractures) :–

अस्थि–भगका दो प्रकारसे वर्गीकरण किया जाता है :–

(अ) हड्डीसे सलग्न ऊतकों (Tissues) की स्थितिके अनुसार :–

(१) **साधारण** (Simple) अर्थात् –जब परिऊतकों को हलके आघात लगनेके साथ ही हड्डी टूट जाती है।

(२) **मिश्रित** (Compound) अर्थात्–जब हड्डी टूट जाती है और चमडा और ऊतक विद्धित (या छिद्रित) होते अथवा फट जाते है।

(३) **जटिल** (Complicated) अर्थात् जब हड्डी टूट जाती है और उसके साथ ही भीतरी अगोमें अथवा किसी महत्वपूर्ण रक्तवाहिनी नलिका या नाडीमें कोई घाव या आघात भी हो जाता है।

(ब) स्वयं हड्डीके आघात या घावके अनुसार .–

(१) **चूर्णीकृत अस्थिभंग** (Comminuted) अर्थात् जबकि हड्डी अनेक टुकडो मे टूट जाती है।

(२) **हड्डी का मुड़ना** (Greenstick) अर्थात् जब अस्थि ऊतकोकी कोमल स्थितिके कारण कोई हड्डी पूर्णतः आरपार भग हुए बिना ही मुड़ या फट सकती है। सामान्यतः ऐसा बच्चोके मामले में होता है।

(३) **संघठित** (Impacted) अर्थात् जब भंग हूई अस्थियों के सिरे आघात के कारण एक–दूसरेमे घंस जाते है।

वर्तमान युग के डाक्टरी विज्ञान मे अस्थिभगो का वर्गीकरण अधिक सहजतर रूपमे किया जाता है। उसके अनुसार ये दो प्रकार के हैं :–

(१) **संवृत अस्थिभंग** (Closed Fracture)

(२) **खुले अस्थिभंग** (Open Fracture)

सवृत अस्थिभंग के अतर्गत चर्म में बिना घाव हुए हड्डी टूट जाने के मामले आते है। खुला अस्थिभग–भग हूई अस्थि का वह मामला–जिसमें चमड़ेमें उसके पास या ऊपर एक घाव हो जाता है।

अस्थिभंग से क्षत व्यक्तिमें निम्नलिखित लक्षण और चिन्ह मिलते है :—

(१) आक्षोभ (Shock)

(२) दर्द

(३) शरीर के किसी भी अवयव में शक्ति का ह्रास

(४) अंगोकी विकृति (Deformity of the limb)

(५) टुटी हुई अस्थिकी असंबद्धता

(६) सूजन

(७) अस्वाभाविक गतिशीलता (Unnatural mobility)

(८) जब भंगित सिरे एक–दूसरेके ऊपर घूमते या हिलते–डुलते हुए आते है, तब टूटी हुई हड्डीकी आवाज सुनी या महसूस की जा सकती है।

अस्थि–भंगके लिये प्रथमोपचार

(अ) जैसा कि पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है आक्षोभ का उपचार कीजिए।

(ब) अस्थिभंगको संवृत रखे।

(स) अग्निदाह अथवा बमवर्षा आदि के मामलो, (जिनमे स्पष्ट कारणो से दुर्घटना स्थल मे रोगीको तुरन्त हटाना ही पड़ता है) के अतिरिक्त जब तक कि आपने कमाची (Splints) नही लगा दी है, उस व्यक्ति को वही पडा रहने दे जहाँ वह पहले से है, क्योकि घायल व्यक्तियोका सर्वोत्तम उपचार वही होता है जहां वे गिरते है।

(द) यदि खुला हुआ अस्थिभग हो, तो घावको ढंक दे या उसके ऊपर पट्टी बाध दे और यदि रक्त बह रहा हो, तो उसे बन्द कर दे। बाहर निकली हुई अस्थिको वापस उसके स्थानपर लानेका प्रयत्न न करे।

(य) टुटी हुई अस्थि को सहारा दीजिए और उसे पट्टी, काष्ठखण्ड या कमाची और स्लिग और पट्टी या गोफन के द्वारा शान्त बनाये रखिये।

(फ) किसी अस्थिभग को ठीक करनेका प्रयत्न न करे। यह कार्य डाक्टरका है। आपको टुटी हुई अस्थिको उसी स्थितिमे–जिसमे आप पाये—कसकर जमा देना अथवा बाध देना चाहिए। अस्थि–भ्रंश के लिए प्रथमोपचार अस्थिभगके ही सिद्धान्तोपर आधारित है।

चमती या कमांची (Splints)

अस्थिभगके सबंध मे कमाची और उसका उपयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अस्थि-भंगमे कमांची के प्रयोगका उद्देश्य क्षत अंगको उपयुक्त स्थितिमे और आरामपूर्वक रखनेके लिए होता है। कमांचीके अनेक प्रकारों में से आवश्यक आकारके लकड़ीके

चिकने कटे हुए टुकडोको उल्लेखित किया जा सकता है। इनका प्रयोग टुटी हुई अस्थि के साथ पट्टी के साथ बाध देनेसे टुटी हुई अस्थि ठीक स्थिति मे रहती है। लकडीके इन टुकडोंको पर्याप्त रूपमे लंबा होना चाहिए, इतना ही लंबा नही कि वे भंगित अस्थिको ही ढंक सकें, बल्कि भगित अस्थि के एक जोड़ ऊपर और एक जोड नीचे तकको भी ढंक सकें। यदि बनी-बनाई कमाची उपलब्ध न हो, तो उपलब्ध किमी भी उपयुक्त पदार्थ से काम चलाने के लिए तुरन्त बनायी जा सकती है। वस्तुत. उदाहरण के लिए एक सुदृढ पैरको भी पैरके अस्थिभंगके लिए खमाची के रूपमें प्रयोगमे लाया जा सकता है। छड़ियां, छाते, बन्दूके अथवा किन्ही विशेष पदार्थो या किन्ही अन्य साधनोको कमाचियोके रूपमे प्रयोगमे लाया जा सकता है। बहरहाल, सभी कमांचियोके साथ फलालेनके कपडे, कोमल रुई आदिके पुलिन्दे या तल्पका होना आवश्यक है। कमाचियोके ऊपर पट्टी बाधकर उन्हें सुरक्षित रूपमे कसकर बाध देना चाहिए। सभी पट्टियोके सिरोको दोहरी गाठोमे बाध देना चाहिए –इन गाठोको शरीरके अगो पर नही, बल्कि कमाचियोके ऊपर बाधना चाहिए।

अस्थिभंग कई प्रकारके है–जैसे .–

(१) अग्रहस्तका अस्थिभग (Fracture of the fore-arm)
(२) ऊपरी भुजाका अस्थिभंग (Fracture of Upper-arm)
(३) ग्रीवास्थिका अस्थिभग (Fracture of one Collar Bone)
(४) दोनो ग्रीवास्थियो का अस्थिभग (Fracture of the Collar Bones)
(५) जाघका अस्थिभग (Fracture of Thigh Bone)
(६) जानुफलकका अस्थिभग (Fracture of Patella)
(७) पसलीकी हड्डीका अस्थिभग (Fracture of Ribs)
(८) निचले जबडे का अस्थिभग (Fracture of Lower Jaw)

ये अत्यन्त सामान्य अस्थिभगो मे आते है, प्रथमोपचारकको इनके समस्त प्रकारो और उनके उपचारों का आवश्यक ज्ञान अवश्य होना चाहिए। उन्हे अस्थि–भ्रंशो (Dislocation) और जोडो की मोचो (Sprains of Joints) के विषय मे भी आवश्यक जानकारी होनी चाहिए।

किसी जोड़ के निर्माण मे संयुक्त एक या अधिक हड्डिया जब अपने सामान्य स्थान से हट जाती है, तब अस्थिभ्रश होना कहा जा सकता है। कन्धे के जोड़ो का अस्थिभ्रश अत्यन्त सामान्य है।

अस्थिभ्रंशका उपचार डाक्टरके लिए छोड देना चाहिए, पर प्रथमोपचार एक गोफन (Sling) के द्वारा भी आरामदेह रूपमे कोटकी बाहोको पिन करके उसके नीचे के अगको आराम देनेका अच्छा कार्य कर सकता है। रोगीको नीचे लिटा देना

परामर्श्य है और जब तक कि डाक्टरी सहायता नही मिलती, तब तक आरामदायक रूपमें तकिया रखकर क्षत अंगको सहारा दे।

जहा तक जोडों की मोचका सबध है यह स्मरणीय है कि संबंधित जोड मे अत्यधिक दर्द और सूजन हो जाती है। उग्र खेलो मे कलाई और टखनेमे मोच आना सामान्य बात है। फुटबाल या रग्बी खेलते समय अक्सर ऐसा होता है। पैरको ऊपर उठानेके साथ मोचित अगको आरामदायक स्थितिमे रखना चाहिए। यदि मोच दुर्घटनाके तुरन्त बाद ज्ञात हो जाय, तो शीतल जलसे कपडेको भिगोकर पट्टी बांध देना सुखकर है, ऐसा करनेसे अत्यन्त आराम मिलता है और यह सूजनको भी कम करता है। पर यदि आघात लगनेके पश्चात् पर्याप्त अधिक समय व्यतीत हो गया है और उसमे दर्द और सूजन है, तो गर्म–सेक अत्यन्त आराम प्रदान करता है।

घाव, विस्फोटजन्य आघात, जलन या छाला पड़ना

(अ) घाव :

घावोके चार प्रकार है :–

(१) कटा हुआ घाव (Incised Wound)

यह कट जाना या चमड़ेका और उसके नीचे मासका विदीर्ण हो जाना है। ऐसे घाव अक्सर किसी टूटे शीशे या चाकू जैसे किसी तीखे औजार के कारण हो जाते है। इसका महत्व अधिक मात्रा मे रक्तस्रावपर निर्भर है, जो किसी रक्त–वाहिनी–नलिकाके कट जानेके कारण भी हो सकता है।

(२) विदीर्णित घाव (Lacerated Wound)

इस घावमे चीरित रूपमे फटे किनारे होते है। ऐसे घाव यत्रोके चलने अथवा बम–विस्फोटसे उड़नेवाले टुकडोके कारण हो जाते है। ये घाव कटे फटे घावोकी अपेक्षा सामान्यतः कम रक्त बहनेवाले होते है। बहरहाल, ये अधिक आघातके कारण होते है और उसी प्रकार इनमे अधिक मास क्षत होता है या फटकर अलग हो जाता है।

(३) मर्दित घाव (Contused Wound) **या छिल्लित घाव**

इस प्रकारके घाव स्वयं मे ख़तरनाक नही होते, लेकिन जब ऐसे घाव सिर, छाती या पेट पर देखे, तो आप शरीरके भीतरी अंगों अथवा मस्तिष्कके गंभीर आघात (या क्षति) की संभावना कर सकते है।

(४) विद्धित या छिद्रित घाव (Punctured Wound) **या छुरा मारनेपर हुआ घाव**

इस घाव मे एक छोटा–सा सूराख हो जाता है, लेकिन यह बडा गहरा भी हो सकता है। यह अक्सर किसी तीक्ष्ण शकु (Spike) के ऊपर गिर जाने से किसी संगीन या किरिच (Bayonet) के आघातके कारण अथवा किसी लबे तीखे चाकूके

कारण भी हो जाता है। इससे अधिक रक्त–स्राव नही हो सकता, पर भीतरी अग बुरी तरह क्षत हो जाता है।

युद्ध के समय निम्नलिखित कारणोसे बड़ी सख्यामे हुए घावोसे किसी का भी साबिका पड सकता है। :–

बम और खोल (Shell) के विस्फोटके प्रत्यक्ष आघात या समीपमें चूकके परिणामस्वरूप उसके उडनेवाले अनेक आकारके तीखे टुकड़े और धातुएं चारों ओर तीव्र गतिसे घावमान होगी, उन उडनेवाले टुकडोके किनारे अनियमित (Irregular) और तिरछे–बाके (Jagged) होगे, वे शरीरपर आघात पहुंचायेगे, उनके कारण शरीर विदीर्ण हो जायगा और शरीरके भीतरी भागोमे भी घाव हो जायेगे। जब वे शरीरपर आघात करते है, तो अपेक्षाकृत अधिक बडे टुकडोके फूटनेसे ऐसी दमक या कौध उद्दीप्त होती है, जैसे–किसी गडढेमे एक बहुत बडा पत्थर फेक देने पर गहराईसे कीचड़ उत्स्फुरित होती है। इस प्रकार बडे विदीर्णित घाव होते है, ये बडे गहरे और खतरनाक भी हो सकते है। आघातित अग सपूर्णतः फट जायगा अथवा बड़ी मात्रामे मास फट जायगा। अधिक छोटे टुकड़े चर्मको कम क्षति पहुचाते है, परन्तु वे शरीरमे अधिक गहराई तक धसकर आन्तरिक क्षति पहुँचा सकते है। विस्फोटकी दमकके कारण जैसे घाव हो जाते है, वैसे ही बमोके विस्फोट के परिणामस्वरूप अनेक छाले पड जाते है और अग भी जल जाते है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, धातुओंके टुकडे तिरछे-बाके होते हैं किन्तु गोलियां असम नही, बल्कि सम होती है। उनमे बम–विस्फोटमे उडनेवाले टुकडोंकी अपेक्षा कम क्षति होती है। उनसे शरीरमे एक साफ छिद्र बन जाता है और उनसे व्युत्पन्न घावोसे कम रक्त बहता है। वे घाव पेन्सिल भोकनेसे हुए घावसे सामान्यतः बडे नही होते। उनकी आसानीसे उपेक्षा की जा सकती है।

अधिक बडे घाव डुम डुम (Dum-Dum) और विस्फोटक गोलियो और निकटकी दूरीसे छोडी गयी गोलियो के कारण होते है। बमोके खोलोके, सुरंगो : Mines : के और तारपीडोके हिसक विस्फोटोके परिणाम स्वरूप मर्दित घाव हो जाते है। आप इसे कभी स्वीकार न करे कि आपने पहले जो घाव देखा है, केवल वही घाव विद्यमान है। बमविस्फोटोके कारण आकस्मिक रूपसे घायलोको अनेक घावोका लगना विशेषत सहज–सी बात है। ऐसे मामलोमें आपको अन्य सभी चीज़ोके पहले सबसे खराब रक्त–स्रावको बन्द करना चाहिए और तब अन्य रक्त–स्रावोको बन्द कीजिये। तदनतर आक्षोभके लिए प्राथमिक सहायता प्रदान करे।

घाव ख़तरनाक क्यों होते हैं ?

घावोसे निम्नलिखित तात्कालिक खतरे है :–

: अ : रक्त–स्राव (Bleeding)

: ब : आक्षोभ (Shock)

: स : विषाक्त होना (Blood Poisoning or Sepsis)

इसका अर्थ है घावमे कीटाणुओका प्रवेश। कीटाणु : इन्हें कभी–कभी बैक्टीरिया कहा जाता है : सदैव हवा और पानीमे विद्यमान रहते है। वे प्रत्येक पदार्थमे विद्यमान रहते है, वे आपके शरीरके चर्म और केशमे रहते है, वे आपके कपड़ोमे रहते है और प्रत्येक व्यक्तिके शरीरमे हज़ारोंकी सख्यामे पाये जाते है। वस्तुतः अधिक कम सख्यामे कीटाणु प्रत्येक घावमे प्रवेश करते है। सौभाग्यवश विष सदैव प्रभावकारी नही होता, क्योकि आदमीके लिए अनेक कीटाणु अनपकारके होते है, इसके साथ ही रक्तमे छोटे–छोटे जीवित जीव : श्वेताणु : रहते है, जो कीटाणुओपर आक्रमण करते है और कोई हानि पहुचानेके पूर्वही अक्सर उन्हे नष्ट कर देते है। बहरहाल, यदि प्रतिरक्षा करनेवाले सफ़ेद रक्ताणुओको अपेक्षा आक्रामक कीटाणुओकी सेना बलवत्तर है, तो उस स्थितिमे विषका प्रभाव होता है।

घावों के प्रथमोपचारकी क्रियात्मक विधि

: १ : रक्त–स्राव रोकिये।

: २ : आक्षोभके प्रभावको कम कीजिए।

: ३ : जहापर आकस्मिक रूपसे व्यक्तिको आघात लगा हो, उसी दुर्घटना स्थल पर तत्क्षण प्रथमोपचारके द्वारा घावमे कीटाणुओको प्रविष्ट होनेसे रोकिए।

रक्त–स्राव रोकनेके लिए इस अध्यायमे पूर्व निर्दिष्ट उपायोका अनुसरण करे।

घावको सदैव किसी स्वच्छ–सूखे तल्प या गद्दी (पुलिदे) के द्वारा ढककर रखे।

आक्षोभके प्रभावको कम करनेके लिए आपको घावको तल्प और पट्टीबध से ढककर रखना चाहिए, क्योकि ऐसा करनेसे दर्द कम होता है।

घावमे कीटाणुओके प्रवेशको रोकनेके लिए भी आपको इसे तल्प और पट्टीसे ढंक कर रखना चाहिए।

शेष उपचार इसके अनन्तर डाक्टरके द्वारा किये जायेगे और प्रथमोपचारक का कर्तव्य घावको किसी स्वच्छ सूखे 'तल्प' (पैड) के द्वारा ढंकने और पट्टी बांधने तथा आक्षोभके लिए उपचार करने तक सीमित है।

निम्नलिखित सावधानियोको दृष्टि मे रखना परामर्श्य है :–

: अ : सामान्य जलसे घावको धोनेका कभी प्रयत्न न करें।

: ब : प्रथमोपचारमे सामान्य जलके साथ किसी घावपर कभी भीगा रोगाणु–रोधक · Antiseptics · न रखे।

. स : कभी भी अपनी उगली या अन्य किसी वस्तुसे घावको स्पर्श न करे।

: द : कभी भी घावको यो ही खुला हुआ न छोडे।

यदि आप इनमेसे किसी भी एकको करते है, तो आपके इस कार्यसे घावमे और अधिक कीटाणु प्रवेश करेगे और प्रकृति द्वारा उनके नष्ट करनेके कार्यमे व्यतिक्रम पैदा करेगे।

रोगीको कबल अथवा कोटके द्वारा सदैव गर्म रखना चाहिए। कोई भी प्रथमोपचार जो आदमीको अधिक ठण्डा बनाये–उपचार या सहायता नही है। घावमे आबद्ध किसी चीजको आप न खीचे, और वस्तुओकी खोजमे व्यर्थ समय बरबाद न करे, क्योकि आप जिस वस्तुको केवल सोचते है, सभव है कि वह वस्तु वहा विद्यमान न हो। आपको सदा याद रखना चाहिए कि यदि आपको अधिक बडे घावोमे सामान्यत. प्रयोगमे आनेवाली बडी पट्टी नही मिल पाती, तो आप आसपास जो **स्वच्छतम सूखी** वस्तु पा सके, उसका ही प्रयोग करें। (Lint, a triangular Bandage) मुलायम लिनन, मोडित त्रिकोणात्मक पट्टी, स्वच्छ रूमाल–सभी उपयुक्त है। यह आवश्यक है कि घटनास्थल पर प्राप्त होनेवाले किसी भी पदार्थों के टुकडेसे घावको तुरन्त ही ढंक देना चाहिए। घावको यो ही हवामे कभी खुला नही छोडना चाहिए।

कतिपय विशेष प्रकारके घावोंके लिए अतिरिक्त प्रथमोपचार

: अ . **पेट** (Belly) **के घावोंके मामलेमें :-**

. १ . आदमीको पीठके बल रखिये, उसके घुटनाके नीचे तकिए रखकर उन्हे ऊपर उठा दीजिए, उसके सिर और कन्धोको सहारा दीजिए, जिससे वह लगभग बैठा–सा हो जाय।

: २ · एक बडी पट्टीसे घाव और अगोको ढक दीजिए, पट्टी–बध अच्छी स्थितिमे रखनेके लिए पट्टीको ढीला बाधे।

: ३ : आक्षोभके लिए उपचार करे और उसे कुछ पीनेके लिए न दे।

: ब : **छाती के किसी घावके मामलेमें :-**

आपको अवश्य और सदैव याद रखना चाहिए कि छातीके कष्टकारक घावोंके लिए यह अपेक्षित है कि उन्हे तुरन्त बन्द कर दिया जाय, जिससे कि छातीमे हवाको दूषित होनेसे रोका जा सके। निम्नलिखित कार्योको तुरन्त करना चाहिए।

: १ : घावके किनारोंको ढकती हुई मरहम पट्टी लगायें, इसे कसकर अच्छी तरह बाध दे।

: २ : मरहम पट्टी के ऊपर एक चौडी पट्टी छातीके चारो ओर घुमाकर बाध दे।

प्रथमोपचारकको अवश्य याद रखना चाहिए कि पेट और छातीके घावो के लिए अत्यावश्यक रूपमे तुरन्त शल्य-चिकित्सा (S c : Attention) आवश्यक है। डाक्टरको यह बताना आवश्यक है कि आपने शरीरके उन अगोके ऊपर मरहमपट्टीके अंतर्गत कौन-सी वस्तुए रखी है। घायल आदमीके साथ एक नामपत्र संलग्न कर दे।

: स : सिर के घाव

सिर पर सभी प्रकारके घाव हो सकते है और उनके लिए वे ही प्रथमोपचार परामर्श्य है, जो अन्य घावोके लिए बताये गये है। बहरहाल, यह अवश्य याद रखने योग्य है कि जिस किसी भी कारणसे सिरमे चोट लगने पर मस्तिष्क अपने अस्थिवत् बाक्सके भीतर विचलित हो सकता है, इस आकस्मिक चोट से हुए वे घावसे मस्तिष्क-का घात भी हो सकता है। अतएव, ऐसे मामलेमे प्रथमोपचारकको आकस्मिक मस्तिष्क का घातके लिए अवश्य उपचार करना चाहिए। आघातके लिए इस अध्यायमे ऊपर जो कुछ कहा गया है-उसमे-उसका उपचार एक जैसा है।

: द : विस्फोटजन्य आघात

बमके विस्फोट होने पर सदैव हवामे एक तीव्र हिसात्मक और आकस्मिक विक्षोभ उत्पन्न हो जाता है। सर्वप्रथम हवामे एक सशक्त तरग या विस्फोट होता है, जो बाहरकी ओर किरणे विकीर्ण करता है। उसके अनन्तर बमविस्फोट-स्थलकी ओर हवा बडी तीव्र गतिसे दौड़ पड़ती है। इस पुस्तकमे बहुत पहले ही दिखाया जा चुका है कि हवाके विस्फोटकी प्रचण्डता केवल आदमी को ही नीचे प्रक्षिप्त नही करती, बल्कि भवनोके ढाचोको भी भूमिसात कर देती है और इस कारण बहुत-से लोग आकस्मिक रूपसे घायल हो जाते है। हवाका विस्फोट स्वय इतनी प्रचण्ड शक्तिसे शरीरसे टकराता है कि इससे गभीर और प्राणघातक आघात भी लगते है। बम-विस्फोटोके समीप हवाकी तीव्र हिसात्मक गतिके कारण होनेवाले ये आघात विस्फोट आघात कहलाते है। खुले हुए स्थलोकी अपेक्षा बन्द स्थानोमे विस्फोटका प्रभाव सदैव अधिक होता है। उदाहरणके लिए, जहा अधिक भवन है, वहा पर इसका प्रभाव खुले मैदानकी अपेक्षा अधिक होता है।

फेफड़ों का विस्फोटजन्य आघात

जब बमविस्फोट होता है, तो उससे आनेवाला हवाका झोका छातीमे टकराता है, अथवा वह छाती पर तीव्र दबाव डालता है, वह क्षति पहुचाता है और फेफड़ोकी सूक्ष्म नलिका : Capillaries : को फाड कर खोल देता है और इससे फेफड़ोसे रक्त–स्राव होने लगता है। इसके कारण गंभीर आघात लगता है। आधुनिक युगमे युद्धोमे अकेले हवाके प्रचण्ड झौकोने ही अनेक व्यक्तियो को बिना उन्हे घायल किये ही मार डाला है।

प्रथमोपचार

: १ . व्यक्तिको तुरन्त खुली हवामे ले जाये।

: २ : उसे नीचे लिटा दे। उसका सिर ऊपर उठा दे।

: ३ : उसे गर्म रखे।

: ४ : कसे हुए कपडोको ढीला कर दे।

: ५ डाक्टरी सहायताकी व्यवस्था करे।

पूर्ण विश्राम प्रदान करनेके द्वारा फेफड़ोके भीतरी रक्त–स्रावको बन्द करनेके लिए आप अपने कर्तव्यका सपादन करे। इसके बाद यदि रोगीको सास लेनेमे कष्ट होता है या उसकी सास बन्द हो जाती है, तो आप और कुछ नही कर सकते। उस स्थितिमे केवल डाक्टर ही जीवनदायक उपचार कर सकता है।

पानीमे विस्फोट होनेके कारण विस्फोटजन्य आघात

ये पानीमे विस्फोटके परिणामस्वरूप हो सकते है। ऐसे विस्फोट जलगर्भमे पनडुब्बियो (Sub-marines) के विरोधमे किये गये गहरे आघातके परिणामस्वरूप होते है। जहाजोको डुबानेके लिए प्रयुक्त 'तारपीडो' (Tarpedoes) के कारण भी ऐसे विस्फोट होते है। ऐसे विस्फोटोमे बहुतसे व्यक्ति मर जाते है। उनके पैरो या शरीरके अगोकी शक्ति एक क्षणके लिए शिथिल हो जाती है और इस कारण वे नीचे गिर जाते है। उनके पेटोकी अतवस्तुए भी क्षत हो जाती है और इस कारण अन्त: रक्त-स्राव हो सकता है। जब आपको ऐसे जीवितोके रक्षा कार्यमे सलग्न होना पडे तो आप जितनी सहायता सामान्य रूपमे प्रदानकरते उसकी अपेक्षा अधिक से अधिक सहायता प्रदान करनेके लिए प्रस्तुत रहे, क्योकि ऐसे व्यक्ति विस्फोटके झौकेसे प्रभावित होनेके कारण अपने पैरोकी भी शक्ति खो चुके हो सकते है। उनके फेफड़ोमे विस्फोटके कारण घाव हो सकते है और उनके शरीरमे अन्त: रक्त–स्राव भी हो सकता है।

पारमाणविक आयुधके विस्फोटके कारण स्फोटजन्य आघात

आघात या आक्रमण या विस्फोट (Explosion) के स्थान पर पारमाणविक आयुधके विस्फोटके परिणामस्वरूप इतना प्रबल धमाका होता है कि विस्फोटका जाका सैकड़ो और हजारोकी सख्यामे आदमियोको मार सकता है । यदि पाठक प्रक्षेपास्त्र 'परमाणु बम और उद्जन बम' और 'रासायनिक, (Chemical,) कीटाणु सम्बन्धी (Biological) रेडियोधर्मी (R . . . . ') युद्धके अध्यायोको पढ़ेगे, तो उन्हे उत्स्फोटके झोकोकी भयकर शक्ति और प्रबल प्रकारका सविस्तार ज्ञान प्राप्त हो जायगा । इस स्थल पर यह याद रखना चाहिए कि किसी पारमाणविक आयुधके विस्फोटके पश्चात् अत्यन्त भयकर गतिसे धावमान होनेवाली रेडियोसक्रिय धूली मीलो तक के क्षेत्रको प्रभावित करती है, लेकिन उन मनोवैज्ञानिक क्षणोमे उसके प्रभाव क्षेत्र और हवाकी गतिके साथ उसकी गति कम हो ही जाती है । यह जानते ही कि बम विस्फोट हो गया है, प्रथमोपचारकको अपने सर्वोत्तम साधन—स्रोतो, बुद्धिमानी ओर कुशल उपायोका प्रयोग करना चाहिए, उसे प्रयत्न करना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति शरणगृहमे या कमसे कम दीवालके पीछे चला जाय । इस विस्फोटसे बचावके लिए विशिष्ट उपाय आधुनिक विज्ञानसे इस सबधमे अभी तक नही खोजा जा सका है, क्योकि अभी तक अमेरिकी या रूसी जमीन पर इस प्रकारका कोई अनुभव नही हुआ है । यूरोप और एशियामे अथवा भूमण्डलके किसी भी भागमे इस विषयका कोई अनुभव प्राप्त नही हुआ है । के . . . . . नागासाकी नामक स्थानो पर पारमाणविक आयुधोके प्रयोग हुए थे, और जापानमे भी यह अनुभव नगण्य रहा । क्योकि जापानने इस आक्रमणके पश्चात तुरन्त आत्मसमर्पण कर दिया और उसके पश्चात सुरक्षाका कोई उपाय नही खोजा जा सका । बहरहाल, अमेरिका इगलैण्ड और कुछ अन्य देशोमे इस विषयपर आधुनिक शोधे की गयी है और निश्चयपूर्वक यह सिद्ध कर दिया गया है कि सिद्धान्तत. कुछ सोपानो तक एक पारमाणविक आयुध के विस्फोट के विरोधमे सुरक्षा प्राप्त की जा सकती है ।

यदि लोग दरवाजोके भीतर और श्रेयस्कर रूपमे शरणगृहोमे रहे, जहापर कि रेडियोसक्रिय धूलिकणोका कोई प्रभाव न पडे, रेडियोसक्रिय धूलिकणोकि प्रचण्ड अभियानका सफलतापूर्वक सामना भी किया जा सकता है । प्रथमोपचारक अपने शरीरकी अपेक्षित सुरक्षाका ध्यान रखते हुए खुले स्थानोके लोगो को शरणगृहो अथवा दीवाल के पीछे जानेका निवेदन करनेकी अपेक्षा कुछ अधिक नही कर सकता इसके अतिरिक्त यदि आकस्मिक रूपमे कोई अस्वस्थ हो जाय, तो उसे उसका उपचार करना चाहिए । उसे उस आकस्मिक अस्वस्थ

व्यक्तियोके आक्षोभ : फेफडोके आघातका उपचार करना चाहिए और अत्यन्त शीघ्र उसे डाक्टरी देखभालके सुपुर्द कर देना चाहिए।

भयंकर विस्फोटक बमोंके विस्फोटके कारण स्फोटजन्य आघात

इस विषयका वर्णन इस ग्रन्थ के भयकर विस्फोटक बम (High Explosive Bombs) शीर्षकवाले अध्यायमे किया गया है। भयकर विस्फोटक बम प्रधानत. बम विस्फोटसे उड़नेवाले टुकडो, मलवापात, झोको और आचूषणके माध्यमसे प्रभाव डालते है। इन अन्य तीन माध्यमोकी अपेक्षा उद्दाम तूफानी झोका 'Blast' जरा भी कम भयानक नही होता। एक भयंकर विस्फोटक बमके झकोरेके कारण पूरे भवनका ढांचा भूमिसात हो सकता है। पेड भी समूल उखड सकते है, इनके विषयमे एक धारणा बनानेके लिए, पाठक किसी भयकर गतिसे चलनेवाले वात्याचक्रकी कल्पना कर सकते है। लेकिन अब तक के चले हुए किसी भी वात्याचक्रकी अपेक्षा भयकर विस्फोटक बमोके झोके अधिक भयकर और तीव्रतर गतिसे धावमान होते है। आदमीका सारा शरीर इससे प्रभावित हो सकता है। पर इसका सर्वाधिक प्रभाव छाती और फेफडोपर पडता है। सर्वप्रथम विशेषत: आतरिक रक्त–स्रावकी तुरन्त जाच कीजिए और इस अध्यायमे रक्त–स्रावके विषयमे उल्लेखित ढगके अनुसार उसका उपचार कीजिए। रोगीको किसी सुरक्षित स्थानमे ले जाइए, उसे गर्म रखिए और उसे पुन आश्वासन दीजिए। अनेक व्यक्ति बिना किसी बाह्य आघातके ही मर सकते है। अतएव, प्रथमोपचारकको रोगीके प्रति सावधानी और सहानुभूतिके साथ बरतने और उपचार करनेका कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

मस्तिष्क पर प्रभाव डालने वाले विस्फोटाघात

बम–विस्फोटके साथ ही प्रचण्ड हिंसात्मक प्रभजनकी गति अस्थिवत् मजूषा अर्थात खोपडी के भीतर मस्तिष्क के कोमल ततुओ को भी विचलित कर सकती है, इससे मानसिक आघात या आक्षोभ होनेके अतिरिक्त उसे इसके कारण क्षति भी पहुच सकती है। इसके प्रभावसे अविभूतव्यक्ति व्यग्र दिखायी देता है, स्थिर हो जाता है और किसी भी एच्छिक गति मे लगभग अक्षम हो जाता है। ऐसे मामलोमे प्राथमिक सहायता 'उस व्यक्तिको सुरक्षा–स्थानमे ले जाना और उसे उसके कर्तव्यका निर्देश करना है। वह एक बच्चेकी भाति मूक भावसे सहायता स्वीकार करता है।

छाले (Burns)

बम–विस्फोटों, उबलते हुए तरल पदार्थो, बाष्प, विद्युत और अग्निके कारण छाले पड जाते है। खोल–स्फोटकी अपेक्षा बम–विस्फोटकी दमक के परिणामस्वरूप

बहुतसे छाले पड़ जाते है। युद्धोके दौरान, बम–विस्फोटोके झौको के कारण बहुत बडी संख्यामे छाले पड़ते है।

समस्त व्यावहारिक प्रयोजनोकी ही भाति प्रथमोपचार प्रदान करनेके दृष्टिकोणसे भी छालोंको तीन भागोमे बाटा जा सकता है –

प्रथम अवस्था के–– चर्मको स्रवर्ण करना (Reddening of skin)

द्वितीय अवस्थाके फफोले (Blisters) पडनेके साथ ही चर्मका स्रवण होना।

तृतीय अवस्थाके फफोले–मास और उसके नीचे हड्डीके साथ झुलस जाना और उन सबकी बर्बादी करना।

इन सभी छालो या दाहोके साथ **गंभीर आक्षोभ** या आघात होता है। और वह निर्जलीकरण . द्रववस्तुकी क्षति . के साथ होता है।

छालों से सुरक्षा–क्रिया की विधी

बम–विस्फोटकी दमक, जिसके कारण सर्वाधिक छाले पड जाते है, अत्यन्त तीव्र ऊष्ममय होती है, लेकिन सौभाग्यवश यह क्षण भरकी अवधिके लिए ही रहती है। शरीरके केवल खुले हुए अग–सिर, मुख, गर्दन, हाथ, और गुल्फ–सधि ही जलते है। युद्ध कार्यमे लगे हुए व्यक्तियोको जो दमक–विरोधी साज–साधन प्रदान किये जाते है, उनमे झिलमटोप, मास्क, नेत्र–रक्षक (Eye-shield) और हस्तत्राण (लोहेके दस्ताने) (Gauntlets) : होते है। ये शरीरके खुले हुए अगोकी सुरक्षा करते है और छालोकी सभावनाओको कम करते है। उष्णवलय ('Tropics) मे 'वाष्पित –सूट' (Boiler suit) पहना जाता है।

प्राथमिक उपचार

: १ : आक्षोभ का उपचार कीजिए, प्राथमिक उपचारका यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष है। सामान्य उपचार अवश्य प्रदान किया जाना चाहिए। इसके साथ ही यदि प्राप्त हो सके, तो 'मौरफिया' की एक सुई भी लगा देनी चाहिए।

: २ : जलन–विरोधी सपाक (Anti-burn preparation) जैसे 'बर्नाल' आदिका प्रयोग करके घावपर पट्टी बाध दीजिए।

: ३ . यदि प्राप्त हो सके, तो प्रयोगके लिए 'टैनिक–अम्ल अवहेल' : (Tannic Acid Jellies) जैसी वस्तुए जो किसी रासायनिक केमिस्टकी दूकान पर नलिकाओमे खरीदी जा सकती है, सर्वोत्तम है। 'कोल्ड टी' ठण्डी चाय के साथ भिगोयी हुई (Dressing moistened) पट्टियोको तह–तह करके बाधना एक अति सुन्दर स्थानापन्न उपाय है।

सावधानी

:अ: छालेके ऊपर कपड़ा कसकर बाधा जा सकता है पर उसे खीचकर निकालनेका प्रयत्न नही करना चाहिए।

:ब: छालेके ऊपरी भागको कभी स्पर्श न करे। गर्द या मलवे, (कचरे) को साफ करनेका प्रयत्न न करे।

(स) छाले या फफोले (Blisters) को कभी न फोडे।

(द) तैलीय पट्टियो (Oily Dressings) का प्रयोग कभी न करे और किसी प्रकारके तैलको न लगाए।

यदि आप इन आदेशोंका अतिक्रमण करते हैं, तो आप भारी क्षति पहुंचा सकते हैं। अन्य सभी उपचारोंको डाक्टरके लिए छोड़ दें। जीवन जोखिममें हैं। सुरक्षाके लिए जी-जानसे प्रयत्न कीजिए।

दमघुटी (Suffocation) स्वासावरोध (Asphyria) और कृत्रिम श्वसन (Artificial Respiration)

जब फेफड़ोको पर्याप्त मात्रामे शुद्ध हवा नही मिलती, तो वे रक्त-शुद्ध करने का कार्य नही कर सकते। ऐसी स्थितिमे अशुद्ध अथवा 'अनाक्सीजनीकृत' (Unoxygeneted Blood) रक्त शरीरमे सचारण करता है। इसे श्वासावरोध या दमघुटी कहते है।

दमघुटीके कारण

(१) सास लेनेके लिए हवाका अभाव :--

(अ) निमज्जन-डूबना (Drowning)

(ब) विषाक्त गैस व धुएवाले स्थान पर सास लेना (Breathing poisonous gases and fumes)

(स) शून्य स्थान या अन्तराल-प्रसर (Space) मे जहा पर अत्यन्त कम प्राणवायु (Oxygen) है, साँस लेना।

(२) सास लेनेमे असमर्थता --

(अ) वैद्युत-आक्षोभ (Electric shock)

(ब) छाती और पेटपर दाव यथा-ध्वसोमे कुचल जाने पर।

(स) शान्त करना (Smothering), गला दबाने (Throttling) पर अथवा श्वास नलिकामे बाह्य वस्तुके चले जाने पर।

पूर्ण दमघुटीमे व्यक्ति मूच्छित हो जाता है, उसका साँस रुक जाता है और वह स्पष्टत: **बेज़ार** दिखायी पड़ता है।

यहा पर यह याद रखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि हो सकता है कि उसका साँस रुक गया हो, पर उसका हृदय धड़क रहा हो। **यदि जीवनके चिन्ह न हों, तो भी मृत्युकी परिकल्पना न करें।** ये ऐसे मामले है जिनमें तत्काल प्रथमोपचार के रूपमे कृत्रिम–श्वसनकी आवश्यकता रहती है। अत्यन्त शीघ्रता और कुशलतापूर्वक यदि यह कार्य न किया गया, तो इसकी असफलताके परिणामस्वरूप अनेक मौते हो सकती है। कृत्रिम श्वसनमे किसी भी उपायका प्रयोग करनेके पहले आपको रोगीके मुख और गले को एक रूमाल या कपडेके टुकडेके द्वारा अवश्य साफ कर लेना चाहिए। जहा तक सम्भव हो श्लेष्मामल (Mucus) और गले या मुखमे गोपित अन्य वस्तुओ या बाह्य जीवोको बाहर निकाल देना चाहिए।

कृत्रिम श्वसनकी विधियाँ

(१) शेफरका नियम (Schafer's Method)
(२) मुखसे मुख–विधि (Month to Month Method)
(३) सिल्वेस्टरकी विधि (Sylvester's Method)

शेफरका नियम

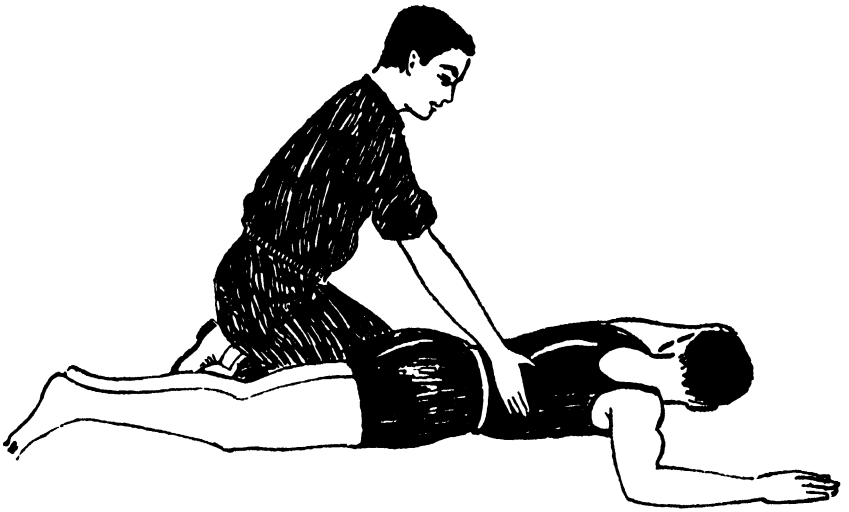
रोगीकी स्थिति–रोगीको अधोमुख स्थितिमे लिटा दीजिए (अर्थात् ऊपरकी ओर पीठ करके लिटाइए), उसके हाथ सिरके ऊपरकी ओर फैले हो, उसका सिर एक ओर घुमा हुआ होना चाहिए––ऐसे तरीके से कि जिससे उसका मुख और उसकी नाक भूमिमे दूर रहे। (दृष्टव्य, चित्र सख्या ५३ अ, शेफरका उपाय सख्या १)।

कपड़ोको ढीला करनेमे समयका अपव्यय नही करना चाहिए। रोगीके नीचे पुलिन्दा या गद्दा नही रखना चाहिए।

रोगीके सिरकी ओर घुटनेके बल बैठ जाइए, कटिके सबसे निचले भाग (अन्तिम हड्डीके पास) के ऊपर अपने हाथोको रखिए, आपका एक–एक हाथ उसकी कटिके एक–एक ओर रहे, और शनै–शनै. अपने शरीरका भार उसके ऊपर हड्डियो पर डालिए, जिससे कि छाती पर सुदृढ (पर हिसात्मक नही) दाब पैदा किया जा सके। इस साधन या उपायके द्वारा फेफडोसे हवा और पानी बाहर निकाला जा सकता है।

५४ संख्यावाले चित्रसे स्पष्ट है कि रोगीके उदर–प्रदेश पर किस प्रकार दाब (Pressure) दिया जाता है।

जैसा कि ५४ वे चित्रमे प्रदर्शित है– **बहिःश्वसनके** द्वारा फेफडोके बाहर हवाके साथ ही पानी और श्लेष्मामल (Mucus) जो हवामें विद्यमान हो सकते है ––को भी बाहर निकाला जाता है।



चित्र ५३
कृत्रिम श्वसन (शेफर विधि) १



चित्र ५४
कृत्रिम श्वसन (शेफर –विधि–२)

अभिप्रेरित प्रश्वास जैसा कि चित्र संख्या ५३ अ में प्रदर्शित है आप अपने शरीरको धीरे–धीरे पीछे पीठकी ओर झुलाते हुए घुमाया (Swing) करे, और इस प्रकार हाथसे पडनेवाले वज़नको दूर करें और उदर प्रदेश पर दाबको विश्रामद बनाएं।

इसकी एक स्थानापन्न विधि भी है। घुटनेके बल पर अपने शरीरको आगे और पीछेकी ओर लयात्मक रूपमे इस गतिको परिवर्तित करें। यह क्रिया एक मिनटमें १२ बार होनी चाहिए।

कृत्रिम श्वसन क्रियाको अध्यवसायपूर्वक श्वसनके पुनरगामन तक अथवा डाक्टर द्वारा जीवनके विलुप्त हो जानेकी बात औपचारिक ढंगसे बताने तक **चालू रखना चाहिऐ**।

शेफर विधिका सामान्य रूपमे निमज्जन अर्थात् **डूब जाने पर** नियोजन किया जाता है। यह विधी सभी विधियोंमे सुरक्षिततम मानी जाती है। इसका नियोजन और संपादन भी सरलतम और अत्यन्त प्रभावकारी है। इस क्रियाका केवल एक व्यक्तिद्वारा (भले ही बाह्य सहायता न मिले) ही सपादन भी हो सकता है।

मुखसे मुख विधि (Mouth-to-mouth Method)

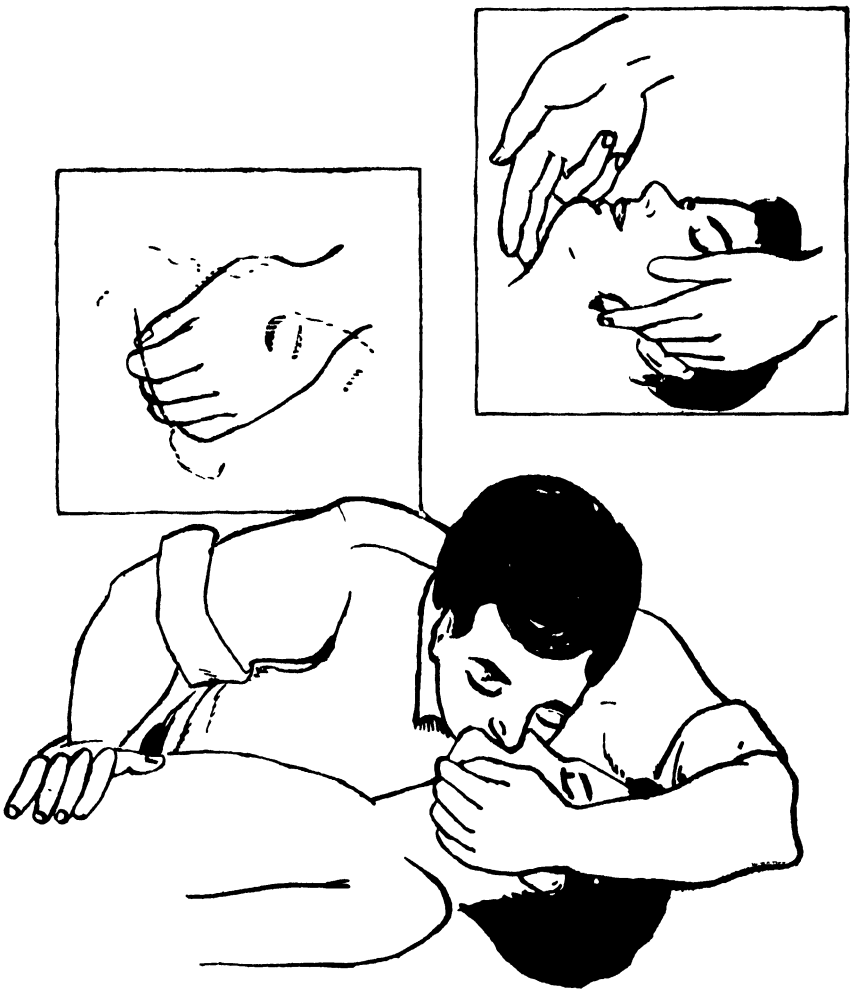
अमरीकामे यह विशेष रूपमे कहा जाता है कि 'मुख–पर मुख' प्रणाली द्वारा पुनर्जीवनके लिए प्रयत्न करना हस्त–संबंधी समस्त प्रणालियोंकी अपेक्षा सभी उम्रवालोके लिए श्रेष्ठतर विधि है। इसके विषयमे ऐसी सूचना मिली है कि यही एक मात्र ऐसा उपाय है जो सभी मामलोमे पर्याप्त वायुसंचारण करता है। इस प्रणालीका परिपालन करते समय रोगीको ऊर्ध्वमुख–स्थितिमे सिरको फैलाकर लिटा देना चाहिए, बचानेवालेको उसके सिरके पासमें बैठ जाना चाहिए। बचाने वालेको रोगीके निचले जबाडे (Jaw) को अपने अंगूठे तर्जनी (Index finger) के मध्य पकड़ना चाहिए और उसे शीर्ष स्थान अर्थात् ऊपरकी ओर उठाना चाहिए। दूसरे अंगूठे और तर्जनी (Index finger) का प्रयोग नथुनो (Nostrils) को दबाने (Clamp) मे किया जाता है। इसके पश्चात् बचानेवाला अपना मुख रोगीके मुख पर रखता है और सामान्य निःश्वास की दुगनी मात्रामे वायु–मार्ग या नासा–रध्र (Nostrils) मे निःश्वास छोडता है (द्रष्टव्य चित्र संख्या ५५)। बचानेवालेके ही द्वारा अपेक्षित मात्रा और दाबका आसानीसे निर्णय किया जा सकता है। वह रोगीके फेफड़ों और वक्षको और वक्षके स्फीतीकरण (Expansion of chest) को ध्यानपूर्वक देखता है। इसके पश्चात् बचानेवाला रोगीके मुखके ऊपरसे अपना मुख हटा लेता है, जिससे कि रोगी उच्छ्वास छोड सके। यह क्रिया प्रत्येक मिनटमें १२ से २० बार तक पूरी की जानी चाहिए।

सज्ञा–हीनता (Anaesthesia) मुखच्छद (Face mask), 'आर्फेन्जीयल एयरवे' (Oropharyngeal Airway) या (Endotracheal tube) नलीके प्रयोग द्वारा तथा अधिक आसान और प्रभावकारी बनानेके लिए इस प्रकारके निरसन (Resuscitation) में सुधार लाया गया है।

कृत्रिम श्वसनकी सिल्वेटर विधी

(Sylvester's Method of Arfiticial Respiration)

फांसी या लटकन (Sylvester's Method) मे सिल्वेस्टरकी विधि अत्यन्त



चित्र ५५
मुख से मुख विधी

उपयोगी है। कोई शरीर लटकता हुआ मिले, तो आपको अपने बायें कन्धे और बाई भुजासे उसे सहारा देना चाहिए जिससे रस्सी शिथिल हो जाय। रस्सीके शिथिल होते ही अपने दाहिने हाथसे गलेसे उसे काट दीजिए। तब यदि संभव हो, तो उत्तान रूपमे उस शरीरको अपनी पीठ पर रख लीजिए–उस शरीरका सिर अधिक ऊपरकी ओर और पैर नीचेकी ओर रखना चाहिए। गले छाती और कटि तकके सभी कसे हुए कपड़ोंको निकाल दीजिए। मुख और नथुनेको साथ कर दीजिए। उसका मुख खोलिए, जीभको सामनेकी ओर खीचिए और किसी सहायकसे उसे उसी स्थितिमें पकड़े रहनेको कहिए। अपनेको रोगीके सिरके ऊपर रखिए, उसकी भुजाओंको पकड़िए और उन्हें सिरके बगलसे ऊपरकी ओर उठाइए, दो सैकण्ड तकके लिए ऊपरकी ओर उन्हें धीरेसे खीचिए या उठाइए। यह गति श्वसनको अभिप्रेरित करती है।

रोगीकी भुजाओंको नीचे घुमा दीजिए और अगले दो सैकण्ड तकके लिए उन्हे उसकी छातीकी विरुद्ध दिशामे धीरेसे दबाइए। यह गति श्वसनको अभिप्रेरित करती है विकल्पत. इस उपायको दुहराते रहिए, जब तक कि साँसका आना जाना शुरू न हो जाय–यह क्रिया एक मिनटमे १५ बार पूरी की जानी चाहिए।

शेफर–पद्धतिकी भारतवर्षमे अधिक सस्तुति की गयी है। मुखसे–मुख पद्धति भी हमारे यहाके लिए अत्यन्त उपयोगी है यद्यपि इसका हमारे देशमे अधिक अभ्यास नही किया गया है। किसी भी स्थितिमे कृत्रिम श्वसनसे अनेक जानें बचायी जा सकती हैं बशर्ते कि इस क्रियाको तुरन्त कुशलतापूर्वक और लगनके साथ अमलमे लाया जाय।

कोई व्यक्ति या प्रथमोपचारक–जो कृत्रिम श्वसनके उपायोंसे सुपरिचित नहीं है– देख सकता है कि बिना किसी उपयोगके व्यक्तिकी जान चली जा रही है। वह केवल उस अभागे व्यक्तिको मरते हुए हाथ पर हाथ धरे देख सकता है।

विषैली गैले (POISONOUS GASES)

'रासायनिक' जीव–विज्ञानीय और विकिरण–विज्ञानीय युद्ध' शीर्षक परिच्छेदके अन्तर्गत इस विषयका पहले ही विवेचन किया जा चुका है। बहरहाल, पाठकोके लाभार्थ यहापर निम्नलिखित उपयोगी तथ्य् दिये जा रहे है :–

विषैली गैसे प्राय: गैसके रूपमे (Gaseous) अथवा तरल रूपमे रासायनिक पदार्थ या द्रव्य (Chemical substances) है। मानव जीवनमे घातक प्रभाव उत्पन्न करनेके लिए आधुनिक युद्धमे इनका उपयोग किया जाता है।

१ – अश्रु–गैसे (अर्थात् क्लोराइन और फासजीन)
२ – नासिका गैसें (अर्थात् Nitrous Fumes)
३ – श्वास–रोधन गैसें (Choking Gases) ब्रोमो–एसीटोन (Bromo-acetone)

इनका प्रयोग गोले बरसानेके खोल (Shells) और गोले (Grenades) के रूपमें किया जाता है और ये फेफडोके लिए बडी संतापक (Irritant) होती है।

४ – व्रणकारक गैस (Blister gases) जैसे–'मस्टर्ड गैस' (Mustard Gas) । ये खोलों (Shells) में भरकर प्रयोगमें लायी जानेवाली तैलीय गैस है। युद्धमे प्रयोगमे लायी जानेवाली गैसोमें ये अत्यन्त स्थायी (Persistent) और भयावह होती है।

५ – नत्र वायु सम्बन्धी तीव्र गन्ध (Nitrous Fumes)

६ – कार्बन मोनो–आक्साइड (Carbon Monoxide) अथवा आलात द्रव्य से तैयार की गई गैस ।

प्रथमोपचार .–

(अ) उस व्यक्तिको भयावह क्षेत्रसे दूर खुली जगहमे ले जाइए ।

(ब) उसे नीचे लिटा दीजिए।

(स) कमे हुए वस्त्रोको ढीला कर दीजिए।

(द) उसे गर्म रखिये।

(ई) कृत्रिम श्वसन–कार्यका सपादन करें।

(फ) चेतना लौटतेही उसे गर्म चाय या गर्म पेय दे।

(ज) फफोलेवाली गैसो (ब्लिस्टर गैसो) के विरजक मरहम (Bleaching Ointment) या लेप लगाए और प्रति दो मिनटमे उसे साफ भी करते जाये।

आतपाघात (SUNSTROKE)

यह कटिबन्धो (Tropics) मे सूर्य–किरणोके आत्यान्तिक उद्भासन (Exposure) विशेष रूपसे सिर और पीठ पर के कारण होता है।

उस व्यक्तिको बडी बुरी तरहसे सिरदर्द होता है। वह बेसुध–सा महसूस करता है, उसे ऐसा लगता है मानो अभी चक्कर आ जाएगा, उमे कमजोरी महसूस होती है और वह सामान्य रूपमे उल्टी भी करता है।

प्रथमोपचार —

(अ) उस व्यक्तिको किसी छायेदार स्थानमे ले जाये।

(ब) उसे नीचे लिटा दीजिए।

(स) उसका सिर थोडा ऊचा रखिए।

(द) कसे वस्त्रोको ढीला कर दीजिए।

(य) ठण्डे पानी (यदि संभव हो, तो बर्फके पानी) से उसके सिरका 'स्पंज' कीजिए।

तुषार-घात या तुषार-दंशन (FROST BITE)

भयंकर शीतकालमे खुलावके कारण स्वरूप शरीरके अग-विशेषत: ऊंगलियो, कान, नाक और अगूठोंकी संवेदनशीलता खतम हो जाती है और वे नीले अथवा जामुनी (Purple) और बादमे श्वेत वर्ण के हो जाते है । शरीरके इन छोरोमें अत्यन्त धीमे रक्त-संचारके कारण ऐसा होता है । मासकी नमी बर्फमे परिवर्तित हो सकती है । यदि यह अतिशीतलता क्रिया या जमाव जारी रही, तो रक्त-संचार एकदम बन्द हो सकता है और वह अंग शून्य भी पड सकता है । वह काला और कोथमय (Gangrene) अथवा बिल्कुल मरा हुआ हो जाता है ।

तुषार-दशित आदमीको दर्द बिल्कुल नही होता ।

सन १९६२ के चीनके साथ हुए युद्धमे हमारी सेनाके बहुतसे जवान तुषार-घातके शिकार हुए थे क्योंकि उन्हे **लद्दाख** और **नेफामें** पहाडोकी दशक सर्दीमे अत्यन्त ऊची पर्वत-श्रेणियोपर लडना पडा था ।

प्रथमोपचार

ऊगलियों अथवा अगूठोको शीतल जलमे रखिए अथवा प्रभावित अगको धीरे-धीरे रगडिए जिसमे कि तुषार-दशित भागको थोडी गर्मी दी जा सके । गर्मी पहुंचानेकी क्रिया धीमी होनी चाहिए । सद्रावित होने पर चमडा मुलायम और पाटल-वर्णी हो जाता है । जब तक कि ऐसा न हो जाय, उस व्यक्तिको किसी गर्म कक्षमे मत ले जाइए ।

खाईमें रहनेके कारण पैर का गलना या सूजना (Trench Foot)

सर्दीके मोसममे पानीमे भरी खाइमे रहनेवाले सैनिकोके पैरोमे ऐसा हो जाता है । अतएव आर्द्र सर्दी (Wet Cold) इसका मुख्य कारण है । बहरहाल, वस्त्र-सकुचन और शारीरिक थकान के द्वारा यह और अधिक खराब हो सकता है । पैर स्तब्ध या शून्य, सूजा हुआ, कष्टयुक्त और रगहीन हो जाता है ।

निमज्जन-पद डूबनेपर पैरका सड़ना या गलना (Immersion Foot)

१५ सेण्टीग्रेडके नीचे पानीमे लम्बे अरसे तक जहाजोमे काम करनेवाले जिन लोगोंके पैर डूबे रहते है, उनमे यह बीमारी हो जाती है । पैर गतिहीन, सूजनयुक्त, रगहीन, व्रणयुक्त और यहा तक कि कोथमय हो जाता है । यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है कि तुषार-दशन, खाईमे दीर्घकाल तक रहनेमे पैर सड़ना अथवा निमज्जन-पद-रोगोके सिलसिलेमे तेज या सक्रिय मालिश (Rapid Warming) की अवहेलना की जानी चाहिए । पैरके अग्रभाग (Foot Head) के सीधे उपयोगके द्वारा तुरन्त गर्मी प्रदान करना अत्यन्त हानिकारक है ।

प्रथमोपचार

(१) शरीरको कबलसे ढक दीजिए।
(२) पैरको ठण्डा और उठा हुआ रखिए।
(३) तुषार–दंशनके उपचारकी भांति इसका भी उपचार कीजिए।

घायल व्यक्तिको ले जाना

आधुनिक युद्धका यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पहलू है। घायल व्यक्तिको एक स्थानसे दूसरे स्थान तक ले जानेके लिए प्रमुख चार उपाय है :–

(१) रोगीको सहारा देने (Supporting) के द्वारा
(२) रोगीको उठाकर ले जानेके द्वारा
(३) रोगीको 'स्ट्रेचर' पर ले जानेके द्वारा
(४) रोगीको किसी वाहन पर ले जानेके द्वारा

(१) रोगीको सहारा देनेके द्वारा (By Supporting the Patient)

सामान्यत: इसका उपयोग तभी किया जाता है जबकि रोगी चल सके। घायल व्यक्ति सहारा देनेवाले व्यक्तिके गलेमे, अथवा उस समय जो भी सुविधाजनक हो अपनी एक बाह डाल देता है और सहारा देनेवालेके साथ–साथ बगलमे गतव्य तक चलता है।

(२) **रोगीको उठाकर ले जानेके द्वारा**–इस उपायका तब प्रयोग किया जाता है, जबकि रोगी असमर्थ हो और जहा विशेष प्रकारके रोगीके अनुसार जैसी आवश्यकता हो, दो हाथवाली सीट, तीन हाथवाली सीट अथवा चार हाथ वाली सीट––बनाकर दो व्यक्ति रोगीको उठाकर ले जाय।

चार हाथोवाली सीटमे रोगीको उठाकर ले जानेवाले व्यक्ति एक दूसरेकी ओर मुख करके–आमने–सामने–खडे हो जाते है और रोगी उन दोनोके बीचमे चार हाथोवाली सीट पर बैठ जाता है, रोगीकी बाहोको कन्धोपर रखवा लिया जाता है और तब उसे ले लाया जाता है। ऊपरके उपायके अतिरिक्त रोगीको ले जानेके लिए 'फोर और एफ्ट–विधि' का भी पालन किया जाता है। इस स्थितिमे ले जानेवाले दो व्यक्ति एक दूसरेके पीछे खड़े होते है और रोगीको आगे और पीछे को ले जानेवालोके मध्य उठाकर ले जाया जाता है। एक व्यक्ति रोगीकी छातीके पास कांखमे हाथ डाल कर उठाता है और आगे ले जानेवाला व्यक्ति रोगीके घुटनोके नीचे हाथ डालकर पैर उठाता है। ये दोनों ले जानेवाले व्यक्ति रोगीको उठाकर ले जाते है और उसे गंतव्य तक पहुचाते है।

(३) **स्ट्रेचर द्वारा लेजाना**–इस उपायका वहा प्रयोग किया जाता है जहापर अधिक सावधानी आवश्यक होती है और जहापर की भूल कोई रोगीकी मृत्युमे परिवर्तित हो सकती है। स्ट्रेचरपर केवल अत्यन्त नाजुक स्थिति वाले रोगीही

ले जाये जाते है। यह विषय अत्यन्त महत्वपूर्ण है और किसी भी प्रथमोपचारकके लिए उसका पूर्ण ज्ञान आवश्यक है। यहांपर मै अपने पाठकोंके लाभार्थ निम्न-लिखित चार प्रकारके चित्र उपस्थित कर रहा हू :—

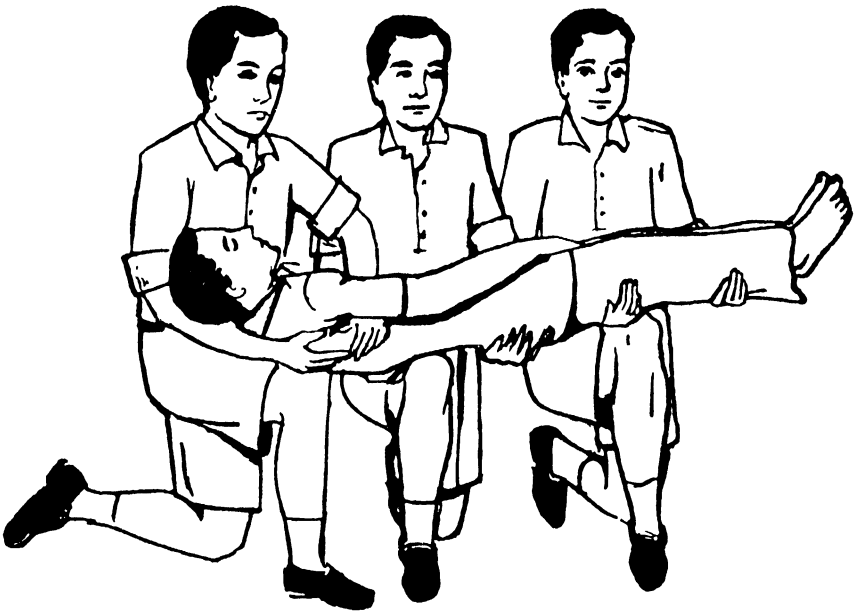
ये चित्र स्वत: पर्याप्त अभिव्यक्तिपूर्ण हैं, अत: इनके स्पष्टीकरणकी कोई आवश्यकता नही हैं। प्रथमोपचारकको ध्यान रखना चाहिए कि उसके लिए यह देखना एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कर्तव्य है कि जब किसी रोगीको स्ट्रेचर पर ले जाया जाय, तो किसी भी प्रकारसे रोगीको झटका नही लगना चाहिए। उसे यह भी अवश्य देखना चाहिए कि स्ट्रेचर ढ़ोनेवाले परस्परपूर्ण सामज्जस्यपूर्ण अपना कार्य संपादन कर रहे है।

(४) वाहनके द्वारा रोगीको ले जाना

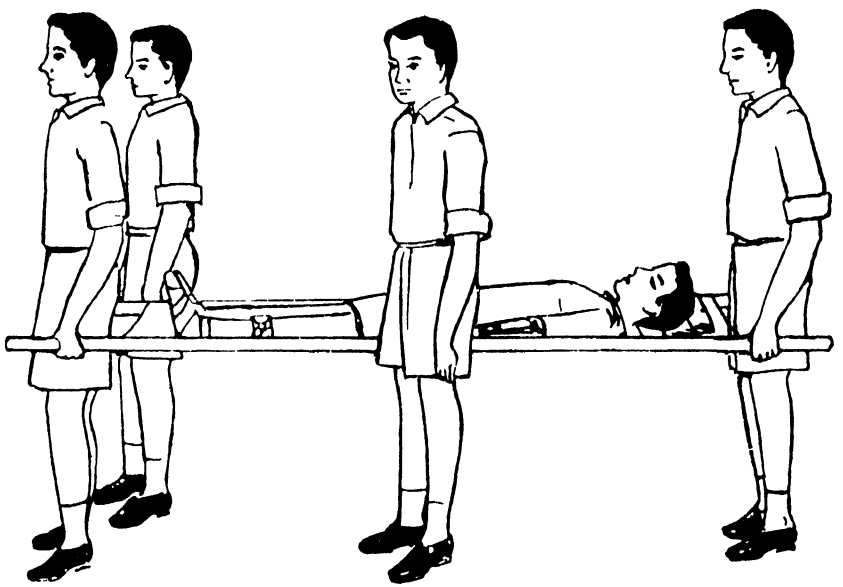
इस प्रसगमे पाठकोका ध्यान इस पुस्तकके 'रोगिवाहन सेवा' :(Ambulence Servics) शीर्षक अध्यायकी ओर आकर्षित किया जाता है। आवश्यक सावधानीका विवरण उस अध्यायमे दिया गया है। प्रथमोपचारकके तात्कालिक सदर्भ हेतु यह ध्यान देने योग्य है कि यह आवश्यक है कि ले जाते समय झटका देने वाली समस्त गतियोंकी अवहेलना की जानी चाहिए और जैसा कि इस अध्यायमे उल्लेखित है विशिष्ट रूपमे आवश्यक सावधानी बरती जानी चाहिए।



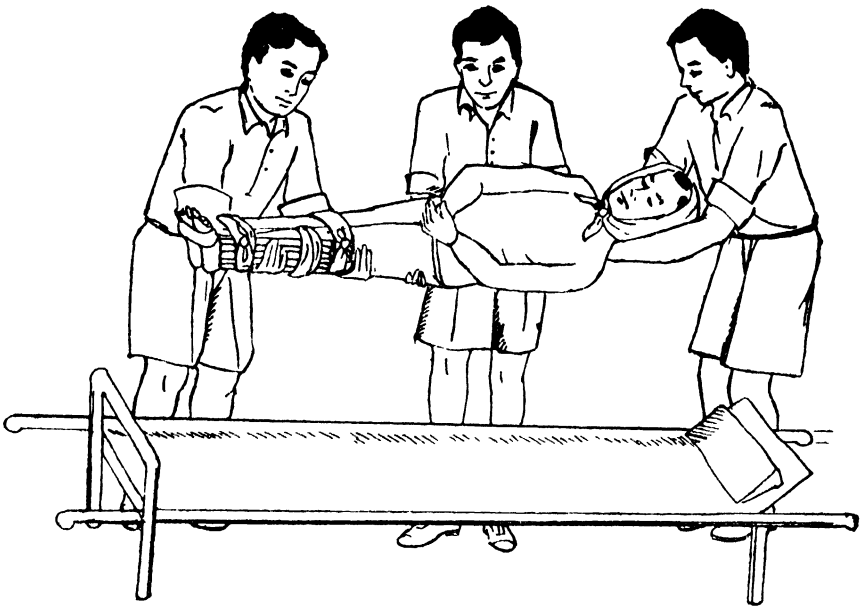
चित्र सख्या ५६
रोगीको उठानेके लिए तैयार



चित्र सख्या ५७
रोगीको उठाते हुए



चित्र संख्या ५८
स्ट्रेचरपर रोगीको रखकर आगे बढनेका दृश्य



चित्र संख्या ५१
रोगीको नीचे रखते हुए

प्रथमोपचारकको इस अध्यायमे वर्णित बातोके अतिरिक्त और भी बहुतसी बातोका अध्ययन करना चाहिए और जिन्हें स्थानाभावके कारण यहां नही दिया जा रहा है। लेकिन यह अवश्य ध्यान देने योग्य बात है कि उसे हर समय अपने मस्तिष्कको शात बनाए रखना चाहिए। उसे रोगीके प्रति सहानुभूत्यात्मक दृष्टिकोण अवश्य रखना चाहिए और उसे प्रत्येक क्षण इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि उसे वास्तविक अर्थोमे मानवताकी सेवाका सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। चूँकि इस अध्यायके अंतर्गत अनेक बातोकी चर्चा हो चुकी है और प्रथमोपचारके संदर्भमे सभी तथ्योका स्पष्ट स्मरण अत्यावश्यक है, इसलिए यहा नीचे 'कर्तव्य' और 'निषेध' शीर्षकके अन्तर्गत क्या करना चाहिए और क्या नही करना चाहिए को उपस्थित करना मै श्रेयस्कर समझता हूं :—

क र्त व्य

१ – मृत्यु–निवारण हेतु पूरा ध्यान रखे। आपका कर्तव्य डाक्टर के कर्तव्य प्रारम्भ होनेपर समाप्त होता है।

२ – प्रथमोपचारके द्वारा किसी जीवित व्यक्तिको बचा लेना किसी मृतक व्यक्तिकी देखभाल करनेसे अधिक अच्छा है।

३ – जब कभी सभव हो खतरे या घावके कारणको दूर कर दीजिए अथवा जब अधिक सुविधाजनक हो, तब रोगीको उस कारणमे दूर कर दीजिए।

४ – प्रत्येक दुर्घटनाके पश्चात् रोगीको गर्म रखें।

५ – जब चमड़ा फट जाय, तो उस घावको तुरन्त शीघ्रतापूर्वक ढक दीजिए।

६ – निगले जा चुके विषसे छुटकारा दिलाइए अथवा जब सुविधाजनक हो, तब उसका प्रतिपालन कर दीजिए।

७ – रोगीको ले जानेके लिए परिवहन (Transport) के सर्वोत्तम साधन का अध्ययन कीजिए।

८ – रोगीको–जितना अधिक गर्म वह पी सके और जब वह उन्हे निगलनेमे समर्थ है, तब कडी चाय या काफी, मास द्वारा बना हुआ कोई तरल पदार्थ या दूध दीजिए।

९ – आप रोगीकी नासिकाके पास महकनेवाले नमकको भी पकडे रह सकते है, लेकिन उसकी शक्तिका पहले परीक्षण कर लेना चाहिए।

१० – बारी–बारीसे क्रमशः (Alternately) रोगीके मुखपर ठण्डे और गर्म जलका छीटा दीजिए। पेटके गर्त या नाभिको भी गर्मी प्रदान कीजिए, ऊपरके अगो पर और हृदयके ऊपरी भागको भी गर्मी प्रदान कीजिए–इस प्रकार प्रदान की गयी गर्मीका स्फूर्तिप्रद प्रभाव होता है।

११ – यदि घायल व्यक्ति जाने योग्य हो, तो उसे निकटतम प्रथमोपचार केन्द्रमे भेज दीजिए।

१२ – प्रथमोपचार दलको अधिक गंभीर रूपमे घायलोको पहले सहायता प्रदान करने दीजिए। उसके पश्चात् आप उनको प्रथमोपचार केन्द्र या अस्पतालमे भेजनेकी व्यवस्था कीजिए।

१३ – यदि आप क्षति–स्थल पर विद्यमान है, तो प्रशिक्षित दलोके आगमन तक आप घायलोकी मदद कीजिए।

१४ – 'सेण्ट जान एम्बुलेन्स असोसिएशन के 'फर्स्ट एड टु दी इजर्ड' 'घायलोका प्रथमोपचार' का अध्ययन कीजिए और सभी प्रकारके उपचारोके लिए उनके आदेशोका सावधानीके साथ पालन कीजिए।

१५ – : अ : सामान्य जलन (Minor Burns) के मामलोमे घावके ऊपरी भागको साबुन और पानीसे साफ कर दीजिए ब · हाथ या मुखके मामलोमे निष्कीटित वैसलीन (Sterlised Vaseline) से अन्त.भरित 'गाज' या 'लिन्ट' लगाइए। : स : शरीरके अन्य अगोके मामलोमे 'टैनिक' एसिड जैली और जेन्टेन वायोलेट जेली १ प्रतिशत (Gentain Violet Jelly 1%) का प्रयोग कीजिए।

१६ – गभीर रूपसे जलनेके मामलोमे जिनमे अस्पतालमे ले जानेकी आवश्यकता हो––: १ : निष्कीटित गाज या लिन्टसे जले हुए स्थानको ढक दीजिए। : २ : आघातका जी–जानसे उपचार कीजिए।

१७ – फास्फोरसजन्य छाले : (Phosphorus Burus)
के उपचारमे : १ : २० प्रतिशत गंधकीय घोल 'कापर सल्फेट साल्यूशन' अथवा ५ प्रतिशत सोडा बाईकार्बोनेट : सोडा कार्बन क्षार घोल : साल्यूशनका प्रयोग कीजिए। . २ : उपर्युक्त घोलो (Solution) के अभावमे प्रभावित अगको पानीमे डुबा दीजिए। अथवा मोटे पुलिन्दे जैसी पट्टीको पानीमे खूब भिगोकर लगा दीजिए।

१८ – आकस्मिक रूपसे हताहतोको चिन्हित कीजिए, यथा–'टी' "T" 'टार्निक्वे' के लिए, 'एच' "H", हैमरेज रक्तस्राव के लिए, एम "M" 'मार्फिया' के लिए 'एक्स' "X" वक्ष या उदरके घावके लिए और 'जी' "G" गैस–सदूषण (Gas Contamination) के लिए।

१९ – कृत्रिम श्वसनके सिलसिलेमे आपका सुरक्षा कार्य निम्नलिखित होगा .–

१. रोगीके मुखको नीचेकी ओर रखिये।

: २ : भुजाओको आगे की ओर खीचिए ।

: ३ : घुटनेके बल रोगीके बगलमे झुककर बैठ जाइए–आपका मुख रोगीके सिरकी ओर होना चाहिए।

: ४. पीठकी सबसे निचली हड्डीके पासको जोड़ते हुए और उंगलियोको निचली पसली (Lower ribs) पर फैलाते हुए हाथोको रखिए।

घुटनोसे आगेकी ओर और पीछेकी ओर घूमिए।

२० – कृत्रिम श्वसनका दूसरा अधिक सहज उपाय 'माउथ–टू–माउथ' : अर्थात् मुख–से–मुख' विधि है। सिरको पीछेकी ओर करते हुए रोगीको ऊर्ध्वमुख लिटा दीजिए। उसका गला इस प्रकार दीवालकी ओर तना रहेगा, उसके जबड़े उन्नत ऊपर उठे हुए रहेगे। रोगीके सिरके बगलमे बैठिए, उसके निचले जबड़े (JAW) को अगूठे और तर्जनी उंगलीके बीचमे पकड़िए, उसके नासिका रध्रोको बन्द कर दीजिए। अपने मुखको रोगीके मुख पर रखिए और उसके मुखमे साँस छोड़िए। रोगीके मुखसे अपना मुख हटा लीजिए और उसे साँस लेनेको कहिए अथवा उसे साँस छोड़नेका अवसर दीजिए। इस क्रियाको प्रत्येक मिनटमे पद्रहसे बीस बार तक दुहराइए।

२१ – प्रथमोपचारके अध्ययनमे आप निम्नलिखित बातो पर अधिक बल दे सकते है :– : १ प्रथमोपचारका अर्थ, शरीरकी बनावट और रक्त-स्राव : २ : अस्थिभग, घाव, जलन, आक्षोभ और निमज्जन डूबने के मामलोमे उपचार : ३ : मूर्च्छितता, (Unconsciousness), सघटन (Concussion), दाब (Compression), प्रमाद (Hysteria), पक्षाघात (Apoplexy), और मिरगी या अपस्मार रोग (Epilepsy) : ४ : पट्टियां, रक्त-बध (Tourniquets) 'इसप्लिन्ट्स (Splints), कृत्रिम श्वसन, स्ट्रेचर ड्रिल आदि और अंतर वर्ग, अन्तर दल अथवा अन्तर –स्कूल प्रतियोगिताए।

२२ – प्रथमोपचार सीखते समय आप अविष्कृत शब्दों या सांकेतिक भाषाका प्रयोग कर सकते है।

निषेध

१ – यदि जीवनके चिन्होंका अभाव हो, तो मृत्युकी परिकल्पना न करे।

२ – इसे कभी मत भूले कि गभीर रक्त–स्रावके मामले पर सर्वप्रथम ध्यान देना चाहिए, कोई विशेष बात नही यदि दूसरे घाव भी है।

३ – इसे न भूले कि हवा के आने–जानेके मार्गोमे कोई भी बाधा नही रहनी चहिए, यदि साँस रुक गयी है, तो अविलम्ब उसके प्रत्यावर्तन या उसे पुनः प्राप्त करने के लिए कृत्रिम–श्वसनके उपायोका प्रयोग करना चाहिए।

४ – रोगीके द्वारा गृहीत–स्थितिको अविचारित रूपसे परिवर्तित न कीजिए।

५ – अनावश्यक रूपमे कपडोको न निकालिए।

लेकिन जब आवश्यक हो, तब उन्हे पहले स्वस्थ अगकी ओरमे निकालिए ओर यदि आवश्यकता हो, तो उन्हे काटकर निकाल दीजिए।

६ – किसी दुर्घटना के पश्चात् रोगीको पुन. चैतन्य बनानेके लिए–सुराका उपयोग न करे।

७ – आप अपने ऊपर डाक्टरके उत्तरदायित्व और कर्तव्योका भार न ले।

८ – जले हुए स्थानो या छालो पर तेल, ग्रीस गेहूँ का आटा आदिका प्रयोग न करे। जले हुए स्थानोके ऊपरसे कपड़ोको दूर न करे। फफोलोको मत फोडिए।

९ – किसी कामको अति रूप मे न करे।

१० – छालेका उपचार करते समय :–

:१: जले हुए भागके ऊपर किसी भी प्रकारकी पट्टी मत बाधिए और :२: जब तक कि वह जम नही जाता और सूख नही जाता, तब तक जले हुए भागके सपर्कम वस्त्रोको न आने दे।

११ – गभीर रूपमे जल जाने पर और फफोले पड जाने पर और यदि आपको उसे अस्पतालमे भेजनेकी आवश्यकता महसूस हो, तो यथासम्भव अत्यन्त शीघ्र किसी निकटके अस्पतालमे भेजनेकी आवश्यकता जानते हुए आपको उसके वस्त्रोको नही निकालना चाहिए।

१२ – रक्त–बध (Tourniquet) का अक्सर उपयोग न करे। जहा तक सभव हो, रक्त–स्राव रोकनेके अन्य उपायों पर भरोसा रखिए।

१३ – लबी अवधि तक कृत्रिम श्वसन प्रदान करते समय व्याकुल न हो। मुझे ऐसे एक मामलेका वैयक्तिक अनुभव है, जब मै द्वितीय महा युद्धके दौरान लन्दनमे

था, तो मैने देखा था कि एक व्यक्तिको मृत परिकल्पित कर लिया गया था, पर लगातार छः घण्टो तक कृत्रिम श्वसनके द्वारा उसमे जीवनका संचार किया गया और वह जी उठा।

१४ – जिस व्यक्तिके पेटमे कोई घाव लग गया हो अथवा जो मूर्च्छित हो–उसे मुखसे खाने या पीनेकी कोई वस्तु न दें।

१५ – अविवेकी ढंगसे रक्त–बध (Tourniquet) का प्रयोग न करे। इसका तभी प्रयोग करना चाहिए जबकि रक्त–स्राव रोकनेके अन्य सभी उपाय असफल हो जाय।

१६ – माध्यमिक आक्षोभोको रोकिए।

१७ – डाक्टरकी प्रत्यक्ष आज्ञाके अतिरिक्त किसी भी प्रकारके घावसे पीडित मरीज़को सुरा न दें। प्रथमोपचारमें इसका अविवेकतापूर्ण प्रयोग भयावह हो सकता है।

१८ – इसे न भूले कि जो व्यक्ति मलवेके नीचे दफन हो गया है या दब गया है– उसके गंभीरतम रूपसे कुचलने और घायल होनेकी परिकल्पनाके आधार पर ही उपचार करना चाहिए। इनमे जाघ, श्रोणि जिसे वस्ति प्रदेश भी कहते है (Pelvis) ओर मेरुदण्ड (Spine) के अस्थि–भग भी आते है।

१९ – ध्यान रखे कि गहरी ठड आपको अभिभूत न कर पाये। इसे कभी न भूले कि आपको सर्वाधिक सावधानी और भद्रताके साथ आकस्मिक रूपमे घायल व्यक्तिको सभालना और ले जाना है।

२० – जहरीले साप के दश (Bite of Venomous Snake) के मामलेमे क्षारक (Caustic) का प्रयोग न करे। घाव या दंशित स्थानको गोलाईमे पर्याप्त गहराई तक छील दे और उसमे पोटाशका चूर्णित परमेगनेट (Powder of Potassium Permanganate) रगड दे।

२१ – दशन (Frost-bite), निमज्जन–पद अथवा खाइके जलमे अधिक समय तक रहनेके कारण पैर गलनेके मामलोमे रोगीको तुरन्त किसी गर्म कक्षमे न ले जाइए। इसे तब तक विलबित रखिए जब तक कि धीमे–घर्षण : (Mild Friction) और सूखी, मन्द गर्मी प्रदान करनेके द्वारा रोगीके प्रभावित अगोमे सवेदन नही आता और रक्त–संचार नही होने लगता।

– अध्याय ११ –

निष्क्रमण (EVACUATION)

अग्रेजी भाषामे 'इवेकुएशन' . निष्क्रमण . सज्ञा 'इवेकुएट' : निष्क्रमण करना · नामक क्रियासे व्युत्पन्न है। इस क्रियाका अर्थ है—खाली करना, साफ करना, हट जाना। पाठकको इससे ज्ञात हो जायगा कि संकटके समयमे इस शब्दका क्या आशय होगा ? शरणगृहोकी व्यवस्था तथा जनसंख्याके विस्थापन या निष्क्रमणका प्रबन्ध—ये दोनो आक्रमणके पूर्व किये जानेवाले अत्यन्त महत्वपूर्ण उपाय है। ऐसे कार्यक्रममे जहा तक शरणगृहोका सम्बन्ध है, भारी वित्तीय व्यय सभव है। सभावित लक्ष्य क्षेत्रोके केन्द्रोसे निष्क्रमणकी नीतिके साथ ही शेष स्थानोमे, जिनमे आक्रमणके खतरेके कारण पूरे देशको सम्मिलित करना चाहिए, शरणगृहोकी व्यवस्था पर ऐसा कार्यक्रम साधारणतः आधारित रहता है।

इसके साथ ही अन्य दूसरे प्रबन्ध भी महत्वपूर्ण है—यथा, उद्योगोका विखण्डन या विस्थापन, अति महत्वपूर्ण अभिलेखोकी प्रतिलिपि तैयार करना और उनका स्थानान्तरण, मानव जीवनके लिए आवश्यक वस्तुओका सग्रहण तथा ऐसे अन्य उपाय कि जिनका उद्देश्य राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाको पूरी तरह भग होनेसे रोकना है। जब विगत महायुद्ध आरम्भ हुआ तो मैने स्वय इग्लैण्डमे यह देखा कि सबसे पहले जो उपाय अपनाया गया, वह था सघन जनसख्यावाले स्थानो के बालको तथा महिलाओका दूरस्थ स्थानोको निष्क्रमण। उदाहरणार्थ, लन्दन, लिवरपूल, मैनचैस्टर तथा लीड्स, वैल्स, एब्रिस्टविथ नामक स्थानोमे बडी सख्यामे लोग भेजे गये थे। वस्तुतः अधिकाश मूल्यवान वस्तुओ और मूल्याकित अभिलेखो को वेल्स विश्वविद्यालयके एब्रिस्टवित पुस्तकालयमे रखा गया था। यह वक्तव्य मेरे व्यक्तिगत ज्ञान पर आधारित है क्योकि जब युध्द आरभ हुआ, तब मै उस समय एब्रिस्टविथमे था और लन्दन आने तथा हवाई आक्रमणसे सावधानीके लिए लन्दन काउण्टी कौन्सिलकी सेवामे प्रविष्ट होनेके पूर्व अध्ययनके लिए मै वहां था। लन्दन विश्वविद्यालयका भी एक अश एब्रीस्टविथ विश्वविद्यालय के महाविद्यालयमे, जहा युद्ध होते हुए भी विद्यार्थियोका अध्ययन पूर्ववत् सचालित था, भेज दिया गया था।

एक बड़ी सख्यामे महिलाओ ओर बालकोको आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, भारतवर्ष, वेस्ट इण्डीज और अफ्रीका जैसे उपनिवेशो तथा अन्य उन बहुतसे स्थानोमें भेज दिया

गया था, जहां कि उनके ठहरनेके लिए आवश्यक प्रबन्ध हो सकता था। यह आवश्यक था, क्योंकि सकटके समय लन्दन जैसे स्थानोंमे उनका रहना जोखिमसे खाली नही था। अतएव प्रथम उपाय जो किये गये उनमेंसे, एक जैसा कि पहले कहा जा चुका है, निष्क्रमण था।

सभी प्रकारसे नृशस आधुनिक युद्धके इस युगमे किसी भी उपायसे अत्यन्त अल्प अवधिमे दूसरे देशकी अवरोधक (Resistance) शक्ति को छिन्न-भिन्न कर देना ही आक्रान्ताका उद्देश्य होता है। इस पृष्ठभूमिमे सभी देशोंके अधिकारी इस तथ्यको मान्यता देते है कि निष्क्रमण केवल आवश्यक ही नहीं अपितु सुरक्षाके लिए अपनाया जानेवाला सबसे प्रथम उपाय है। ऐसी स्थितियो मे लोगोका कर्तव्य है कि वे स्वय अपने हितमे और इसके साथ ही सम्पूर्ण देशके बृहत्तर हितमे अधिकारियोको सहयोग दे।

सकटकालीन अवधिमे यह उचित है कि सघन जनसख्या वाले स्थानोंसे काफी दूर पहाडी भागो या पहाडी क्षेत्रोमे जहा हवाई बमबारीकी संभावना बहुत कम है, लोग चले जाय। द्वितीय विश्वयुद्ध और पहलेके युद्धोमे यह उपाय बहुतसे देशो द्वारा अपनाया गया था और अब जब पुन: ऐसा कार्य करनेका समय उपस्थित हो, तो सभी लोगोको उस अनुभवका लाभ उठाना चाहिए। सकटकालीन स्थितिमे जनसकुल और व्यस्त केन्द्रोकी अपेक्षा ऊपर बताये गये स्थान स्वाभाविक रूपसे अधिक सुरक्षित होते है और उन देशोको यथा यूरोप मे स्वीडेन ', जिनमे प्राकृतिक रूपमे ऐसे स्वाभाविक शरण-स्थल पाये जाते है, अपनी जनसख्याके निष्क्रमणकी योजना बनाते समय इन स्थलोका उपयोग करना चाहिए। एक विशिष्ट उदाहरणके रूपमे कहा जा सकता है कि जब हम स्वीडेन के कानून-स्वीडेनके नागरिक सुरक्षा उत्तरदायित्व-की बात करते है, तब हम यह पाते है कि वास्तवमे कानून सुरक्षाके उस प्रत्येक प्रकारका नियमन करता है जो प्रत्यक्ष रूपसे युद्ध सेवाओ पर आधारित नही है। सामान्य रूपसे कहा जाय, तो उससे देशमे कर्तव्यका दो मुख्य वर्गोमे विभाजन किया जा सकता है. प्रति बचाव उपाय (Prventive measures) तथा दुखपरिहारक (Relief activities) राहतकार्य। तमावरण (Black Out), सकटकी चेतावनी, निष्क्रमण, शरणगृहोका निर्माण तथा दीर्घकालीन कार्यक्रमके रूपमे अपेक्षाकृत अधिक राष्ट्रीय नगर नियोजन आदि प्रतिबन्धक उपायमे सम्मिलित है। अन्य बातोके साथ ही अग्निशमन, उद्धार (Rescue), यातायातपथोका मुक्त रखना तथा आहतो और गृहहीनोकी देखरेख आदि दुखपरिहारक (Relief) कार्यके अन्तर्गत आते है। इससे यह पता चलता है कि निष्क्रमण नागरिक सुरक्षा उत्तरदायित्वोका एक महत्वपूर्ण अग है।

निष्क्रमण तथा कल्याण सेवाए (Welfare Services) अपनी कार्यप्रणालीके एक अश के रूपमे गृहहीनो के लिए भोजन तथा निवासकी व्यवस्था करती है और साथ ही सीमित रूपमे सामाजिक सहायता सेवा संचालित करती है। स्वीडनके

नागरिक सुरक्षा प्रमुख मि. एकसन्डेलिनने कुछ वर्ष पूर्व लन्दनके नागरिक सुरक्षा (सिविल डिफेन्स.) स्टाफ महाविद्यालय मे अपने भाषणमें जो आकडे प्रस्तुत किये थे, उनसे ज्ञात हुआ था कि स्वीडेन देशने अपनी प्रणाली निष्क्रमण विचारधारा पर आधारित की थी । इस भाषणसे ज्ञात होता है कि उस देशके निवासी ऐसी योजनाओको कार्यान्वित कर रहे है कि आवश्यकता होने पर पैतीस लाख लोगोंको–जो उस देशकी लगभग आधी जनसख्या है–इधर उधर हटा सके । जैसा कि उनके द्वारा बताया गया था, युद्धके समय अनेक नगर, छोटे लक्ष्य स्थान (Target) और कुछ बडे आक्रमण क्षेत्र खाली कर दिये जायगे तथा वहाके निवासियोको देशके सुरक्षित स्थानोमे भेज दिया जायगा । स्वीडेनकी राजधानी स्टाकहोमके आठ लाख निवासियोमे से केवल पचास हजार से एक लाख तक व्यक्ति आवश्यक सेवाओको चलाने तथा अग्नि-शमन इत्यादिके लिए वहा रह जायेगे । उस देशके निवासी स्थायी निष्क्रमण–अथवा स्वीडेन की सम्पूर्ण जनताको शान्तिके स्थान पर युद्धमे प्राय: स्थायी रूपसे परिवर्तित करने के पक्षमे है ।

यूरोपके एक महत्वपूर्ण देशमे निष्क्रमणके महत्वको जो मान्यता दी गयी है उसका साधारण ज्ञान ऊपर दिये गये विवरणसे पाठकको प्राप्त हो जायगा । मै अपने स्वयके अनुभवसे यह कह सकता हू कि निष्क्रमणके अभावमें विगत युद्धमें ब्रिटेन की अनेक बहुमूल्य वस्तुए खो गयी होती । एब्रिस्टविथ (Aberystwith) पर कोई बम-बारी नही हुई थी । अतएव जहा तक लेखकको भली भाति ज्ञात है, लन्दनके ब्रिटिश म्युजियम (सग्रहालय) से जो बहुमूल्य वस्तुएं उस स्थानमे भेजी गयी थी, वे पूरी तरहसे सुरक्षित थी ।

देशके आन्तरिक क्षेत्रोमे जनसख्याको भेजनेके लिए उचित प्रबन्ध करने तथा वहा गृहोका निर्माण करने तथा भोजन और जलपूर्तिकी व्यवस्था करने की योजना सभी देशोमे होनी चाहिए और इन उद्देश्योकी पूर्तिके लिए स्वेच्छिक (Voluntary) संगठनोका अच्छेसे अच्छे ढगसे उपयोग किया जा सकता है । नाटो (उत्तर अटलान्टिक सन्धि सगठन) की नागरिक सुरक्षा समिति, जो विशेषकर महत्वपूर्ण समस्याओकी जाच करनेके लिए नियुक्त अध्ययन वर्गोके द्वारा अपना बहुत कुछ कार्य करता है, इस सबधमे भी महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है । उनके पास पहलेसे ही शरणार्थी समस्याके अध्ययनमे लगा हुआ एक विशेष वर्ग है । यह समस्या आवश्यक रूपसे केन्द्रीय यूरोपकी समस्या है । इसके साथ ही उनके पास एक वैज्ञानिक कार्यरत दल : (Scientific Working Party) है, जो नागरिक सुरक्षा सबधित तापमानक-नाभिकीय युद्ध (Thermo Nuclear War) के तकनीकी पक्ष पर सलाह देता है। अतएव यह दल, शरणार्थियोकी समस्यापर विचार करते समय निश्चय ही निष्क्रमणके

लिए एक ऐसी उपयुक्त योजना बना सकता है जो आकस्मिक आवश्यकताके समय सभी देशोके लिए आदर्श हो।

अतएव वे मुख्य तथ्य, जिन पर ध्यान आकर्षित होना चाहिए, निम्नलिखित है :–

१ – जब आक्रान्ताकी बढ़ती हुई सेना किसी स्थान पर अधिकार स्थापित कर लेनेको हो और जब किसी विशिष्ट स्थान पर आक्रमण होनेको हो या जिसके शीघ्र ही शत्रुके हाथोमे चले जानेका भय हो, उस समय निष्क्रमण एक मुख्य अंग है। उदाहरणार्थ हम पुर्तगालका उदाहरण ले सकते हैं जहा भारतीय सेना द्वारा कब्जा करनेके एक सप्ताह पूर्व ही स्त्रियो और बच्चोको निष्क्रमित कर दिया गया था।

२ – केन्द्रीय क्षेत्रकी पाठशालाओसे पाठशाला जानेवाले बालकोका आन्तरिक क्षेत्रोकी पाठशालाओमे योजनाबद्ध रूपमे निष्क्रमण। उदाहरणार्थ विगत युद्धके समय लन्दनमे [illegible] आन्तरिक क्षेत्रोको हटा दी गयी थी जहा कि वे अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित थी।

३ – औद्योगिक प्रतिष्ठानोको अन्य स्थानोमे विस्थापित करना जैसा कि द्वितीय विश्वयुद्धमे और उसके बाद भी, रूस द्वारा किया गया था।

४ – निष्क्रमण योजनाके एक अंशके रूपमे विशेष स्थानोमे सेनाओको एकत्र तथा केन्द्रित करनेसे बचना चाहिए और यथासम्भव जनसख्याको छोटे–छोटे खण्डोमे विभाजित करना चाहिए। इस प्रसगमे यह स्मरण रखना चाहिए कि सेनाके वृहद् समूहोको नष्ट करनेके लिए नाभिकीय (Nuclear) अस्त्र सबसे सस्ता उपाय है, क्योकि इस प्रकार एक परमाणु (Atom) या उद्जन बम (Hydrogen Bomb) के उपयोगसे बडी पैदल सैनिकोकी टुकडियो (Battalions) को इधर–उधर ले जाने, उनके लिए आवश्यक साज–सज्जोकी पूर्ति तथा उनके उपयोगकेलिए शस्त्रास्त्रोकी व्यवस्थामे बचा जा सकता है। अतएव सभी सेनाओको विशेष स्थानों पर केन्द्रीकरण करनेसे बचना एक महत्वपूर्ण उपाय माना जा सकता है और यह तथ्य नागरिक प्रतिरक्षाके सबधमे भी महत्वपूर्ण सिद्ध होगा क्योकि स्पष्टत· यदि आक्रान्ता को सेनाओके वृहद् जमावका पता न लगे, तो वह सभवत. नाभिकीय अस्त्रोका प्रयोग न करे क्योकि इन अस्त्रोका आक्रमण सेनाओ और नागरिक जनसंख्याको समानरूपमे प्रभावित करता है।

पाठकको निष्क्रमणका महत्व समझानेके लिए यहा मै बताना चाहता हू कि इस प्रसंगमे रूस और पोलैण्डने क्या किया था। एक वर्ष पूर्व (अथवा १९६२) मे मै वारसा तथा मास्को गया था और मैने वहा देखा कि इन शहरोके बाहरी क्षेत्रोमे नई शहरी बस्तिया उभर उठी है। मास्कोके आसपासके क्षेत्रोमे शहरसे लगभग बीससे तीस मील दूर तक अस्पतालो, पाठशालाओ इत्यादिसे युक्त सभी तरहसे पूर्ण शहरी बस्तियोका निर्माण हो गया है।

मास्कोसे एक सौ से दो सौ मील दूर तक के स्थानोंमें अनेकों कारख़ाने हटा दिये गये है। विकेन्द्रीकरण या विभाजनका विचार एक स्थान पर केन्द्रीकरणके विचारसे–जो आधुनिक युद्धमे अत्यन्त खतरनाक चिन्ह है–सर्वथा भिन्न है। यह सब कुछ एक प्रकारसे निष्क्रमण जो विभाजनी पक्षमें है, की समस्याके समान ही है। मूल विचार यह है कि दुर्घटनाके समय शहरसे जो हिस्से दूर है, वे अपेक्षाकृत सुरक्षित हो सकते है और प्रत्येक स्थानमे आयोजनके एक अंशके रूपमे इस बातको मान्यता प्राप्त है कि इस विचारधाराके अनुकूल होनेके लिए नई बस्तियोको आन्तरिक क्षेत्रो (Country Side) मे बसाना चाहिए। फ्रास, इंग्लैण्ड, स्वीडेन, अमेरिका तथा अन्य कई देशोमे जनसख्याको यथासम्भव वृहत् क्षेत्रोमे विभाजित करनेसे संबंधित मूलभूत विचारधारा पर ही यह योजना केन्द्रित है। वस्तुतः कुछ स्थानोमे उचित समझा गया है कि बडे–बडे निवास स्थानो, महत्वपूर्ण कारखानो तथा मुख्यालयोकी व्यवस्था भूमि तलके नीचे की जाये जिससे बमबारी होते समय भी सामान्य कार्य अबाध रूपसे चलते रहे। यद्यपि यह 'निष्क्रमण' शब्दका बिलकुल अर्थ ठीक नही है, परन्तु अन्ततः विचारधारा वही है।

निष्क्रमणका कृत्रिम अभ्यास इस योजनाका एक आवश्यक अग है और इस प्रणालीसे ही प्रत्येक देशकी जनताको इसकी जानकारी देनी चाहिए तथा अभ्यास भी कराना चाहिए। प्रत्येक देशको एक विशिष्ट क्षेत्रमे प्राप्त अनुरूप स्थितियोके अनुसार समय-समय पर इस प्रकारके अभ्यासका आयोजन करना चाहिए। उदाहरणार्थ, अमेरिका द्वारा निष्क्रमणके अनेक कृत्रिम अभ्यास आयोजित किये गये थे। इनमे से एक अभ्यास कुछ ही वर्षोंके पूर्व आयोजित किया गया था। विश्वस्त सूत्रोंसे प्राप्त इस लेखककी जानकारीके अनुसार इस अभ्यासमे लगभग एक घण्टेकी या ऐसी ही अल्प अवधिके अन्तर्गत एक शहरकी जनसख्याको अधिकाश आन्तरिक क्षेत्रो और पहाडी भागोमे हटा दिया गया था। यह जनसख्या एक सौ मीलकी या इससे अधिक उच्च गतिसे चलनेवाली मोटरो के द्वारा भेजी गयी थी। सम्पूर्ण स्थितिका प्रसारण रेडियो तथा टेलिविजनके एक बिछे हुए जाल द्वारा किया गया था तथा अधिकारियो द्वारा दिये गये आदेशोका पालन वहाके समस्त जनो द्वारा अत्यन्त सन्तोपजनक ढग से किया गया था।

सोवियत नागरिक प्रतिरक्षा पर दृष्टिपात करते हुए लेखकका अनुमान है कि १९५८ मे सोवियत रूसके नागरिक प्रतिरक्षा अधिकारियोने शहरी निष्क्रमणमे रुचि प्रदर्शित करना प्रारम्भ किया था। पिछले वर्ष अथवा विगत दो वर्षोमे इससे सबधित योजनाका विकास किया जा चुका है और नागरिक प्रतिरक्षा परिवहन तथा अन्य सेवाओंके सहयोगसे संसद क्षेत्रो (Boroughs) तथा नगर निष्क्रमण समितियो द्वारा इसका पर्यवेक्षण किया जाता है। यदि आसन्न सकट–सूचक ख़तरेकी घण्टी बजायी जाती है तो शासन शहरी निवासियोको पहाडी तथा चट्टानी क्षेत्रो तथा अन्य स्थानोमे जो आकस्मिक घटनाके अवसर पर अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित

हैं, हटाने का विचार रखता है। जैसा कि मैं समझता हूं जिन्हें स्थान छोडनेका आदेश दिया जायगा वे कुछ ही घण्टोमे पूर्व निश्चित स्थानों पर एकत्रित हो जायंगे तथा परिवहन सुविधाके सभी संभव साधनो द्वारा पहले प्रथम चरणके प्रारंभिक स्थानो और इसके पश्चात् शहरोसे दूर अधिक सुरक्षित स्थानोमे और यदि प्रबंध हुआ तो छोटे शहरो और ग्रामीण क्षेत्रोके स्थायी निवास स्थानोमे उन्हे भेज दिया जायगा। मै समझता हू कि इस प्रकारके निष्क्रमणका कार्य प्रारम्भमे लेकर अन्त तक के सभी स्तरो पर उच्च रूपमे नियत्रित होगा।

उपर्युक्त विवरण उन देशोका पथ–प्रदर्शन कर सकता है जो इस प्रकारकी योजनाए तैयार रखना चाहते हो क्योकि अन्तत. जब सकटका समय उपस्थित हो जाता है तब समुचितरूपमे योजना तैयार करना बहुत कठिन हो जाता है तथा मनोवैज्ञानिक क्षणोमे अधिकारियोका ध्यान अनेक प्रकारकी बहुमुखी समस्याओमे व्यस्त हो जाता है। ऐसी योजना तैयार करनेमे किसी भी देशके शासन को, नगर सेना, एन सी. सी. (National Cadet Corps), सहायक सेना (Auxiliary Corps), रेडक्रास, सेण्ट जान्स एसोसिएशन, राष्ट्रीय सेवक संघ और इस प्रकारके अन्य अर्धशासकीय और स्वेच्छिक सगठनो का अधिकतम उपयोग करना चाहिए, किन्तु सम्बन्धित शासनको परिवहन तथा सचार साधनोकी व्यवस्था और इसके साथ ही निष्क्रमणार्थियोको बसानेके लिए स्थान निश्चित करनेके उत्तरदायित्वका अधिकाश स्वय अपने ऊपर लेना चाहिए। यह सभव है कि चुने गये स्थानमे निवास स्थानकी समुचित सुविधाए न हो। इसलिए शासनको समुचित सख्यामे तम्बुओकी व्यवस्थाके लिए आवश्यक प्रबन्ध करना चाहिए ताकि यदि जनसख्याको विशेषकर पहाडी या चट्टानी स्थानोमे, या अन्य उस स्थानमे, जहा तम्बुओके लगानेकी आवश्यकता हो, भेजना हो, तो इन तम्बुओका उपयोग हो सके। जहा तक परिवहनका सम्बन्ध है, इसके लिए सभी प्राप्त साधनोको उपयोगमे लाना चाहिए और शासनको इस हेतु सुलभ समस्त व्यक्तिगत मोटरो और सार्वजनिक वाहनोको अधिकारपूर्वक प्राप्त करनमे भी नही हिचकिचाना चाहिए। यह सब कुछ बिना बिचारा हुआ मामला न होकर एक सम्पूर्ण योजनाके रूपमे होना चाहिए। मुझे स्मरण है कि विगत महायुद्धमे एक नगर (कलकत्ता) पर केवल कुछ ही बमोके गिरनेके फलस्वरूप लोगोमे इतना आतक व्याप्त हो गया था कि कष्टोकी कोई सीमा नही थी।

इस प्रकारके समस्त अनुभवोकी पृष्ठभूमिमे यह बिलकुल साधारणसी बात है कि विशिष्ट क्षेत्रोमे पायी जानेवाली स्थितियोके अनुसार मजबूत तौरपर समुचित आयोजन आवश्यक है। मेरे मतानुसार बालको, महिलाओ, वृद्ध पुरुषो और शसक्तो को अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित स्थानपर निष्क्रमित करनेके लिए उचित समयपर योजना तैयार करना जितना महत्वपूर्ण है उतना और कुछ महत्वपूर्ण नही है। योजना इस प्रकार बनानी चाहिए जिससे केन्द्रित सघन जनसंख्यावाले और

ख़तरनाक स्थानोंसे सुरक्षाके स्थानोंमे लोगोको कुछही घटो में निष्क्रमित किया जा सके। बालकोंके लिए भोजन और शरणगृहकी उचित पूर्तिके साथ ही उनकी शिक्षाका भी प्रबध करना चाहिए। वस्तुत. मै इस बातपर भी जोर देना चाहता हू कि प्रसूतिके मामलोकी व्यवस्थाका प्रबन्ध भी होना चाहिए और निष्क्रमणार्थियोको उचित चिकित्सा सहायता भी पहुचायी जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त कुछ शिक्षाप्रद साहित्यकी भी व्यवस्था होनी चाहिए। किसी विशिष्ट स्थानके सम्पूर्ण अथवा अशिक निष्क्रमणका प्रश्न शासनको सेनाके अधिकारियोंकी सलाह लेकर करना चाहिए, परन्तु यह आवश्यक है कि समयपर उचित ढगसे आयोजन पूरा कर लिया जाय। इसके सबधमे प्रसंगत. यह भी बता दिया जाय कि अत्यधिक संख्यामे लोगोके निष्क्रमणमे सामूहिक आयोजनाके विकासमे सहायता मिलेगी। उपस्थित स्थितिको ध्यानमे रखते हुए तथा आवश्यकतासे विवश होकर लोग यह सीख लेगे कि किस प्रकार एक दूसरेको सहयोग देकर जीवनयापन किया जाता है। वे सार्वजनिक सुविधाओ, योजनाबद्ध शिक्षण तथा आपसमे एक दूसरेकी भावनाओंको उचित और अच्छे ढगसे जाननेकी आवश्यकताके महत्वको समझेगे। इस प्रकारके प्रसगमे यह कहावत "पानी स्वयं अपनी सतह ढूंढ लेता है" अच्छी तरह चरितार्थ होती है। भारतीय भूमिपर चीनी आक्रमणकेकारण उत्पन्न सकटकालमे यह सचमुच ही उत्साहवर्धक था कि उत्तर दक्षिण, पूर्व और पश्चिम इस प्रकार सारे भारतवर्षके लोग ऐसे उभर पडे थे कि जैसे उन सबमे एक ही रक्त हो और उन्होने शासन और सेनाओंको अपनी सपूर्ण शक्ति के साथ दृढ समर्थन प्रदान किया। निश्चय ही यह एक ऐसा स्वस्थ चिन्ह था जिसमे यह प्रदर्शित हुआ कि आवश्यकताके समय हम सदैव एकताके सूत्रमें आबद्ध हो सकते है। यदि यह प्राप्त किया जा सकता है तो यह स्पष्ट है कि यदि कभी निष्क्रमण आयोजित किया गया, तो उसमे निश्चय ही श्रेष्ठ सामूहिक योजनाओंको प्रथम श्रेणीका प्रशिक्षण प्राप्त हो सकेगा।

इस अध्यायमे यह पहले ही बताया जा चुका है कि लन्दनसे कोष, मूल्यवान वस्तुएं और अमूल्य अभिलेखोको एबिस्टविथ (Aberystwith) भेजनेमे तथा शहरोसे देहाती क्षेत्रोमे जनसख्याको हटानेमे इग्लैण्डमे जो योजनाबद्ध कार्यवाही की गयी थी, वह उस देशके लिए अत्यन्त सहायक सिद्ध हुई। अपनी सेनाओंको डकिर्क (Dunkirk) से हटाने तथा उचित समय पर उन्हे इंग्लैण्डको समुचित रीतिसे निष्क्रमित करनेमे सर विन्स्टन चर्चिलने जो सामायिक कार्यवाही की थी, उसकी ओर भी मै पाठकोका ध्यान आकर्षित करना चाहूगा। मै यह निश्चित रूपसे कह सकता हू कि निष्क्रमणके महत्वके सम्बन्धमे लोगोकी आखे खोलनेके लिए यह अच्छा उदाहरण है, क्योंकि अब यह एक तथ्यके रूपमे प्रमाणित हो चुका है कियदि चर्चिल अपनी सेनाओंको १९४० की मईके अन्त तक इग्लैण्ड वापस न लाये होते, तो उस देशकी सुरक्षा खतरेमे पड़ गयी होती और संभवत: द्वितीय विश्वयुद्धका रूप कुछ दूसरा हो गया होता। इस संबंधमे यह

स्मरण रखनेके योग्य है कि चर्चिलने यह आदेश दिया था कि सभी उपलब्ध जहाज़ या नौका डंकिर्क (Dunkirk) को जायें जिससे उस स्थानसे सेनाओ को निष्क्रमित करनेमें उनका उपयोग किया जा सके ।

डंकिर्क (Dunkirk) और उसके आसपास से, ऊपर वर्णित तीव्र गतिसे तथा उचित उपायसे, दो लाख चौबीस हज़ारसे अधिक अधिकारी तथा सैनिक इंग्लैण्ड वापस आये। फिर भी इस प्रसंगमे यह स्मरणीय है कि एयर चीफ मार्शल सर हफ डाउडिगने जर्मन आक्रमणके विरुद्ध वायुयानो द्वारा सुरक्षाके सक्रिय ढगसे आयोजन के द्वारा जो योगदान किया था, वह प्रशंसनीय था। इससे दो लाख चौबीस हजार व्यक्तियोको बिना एक भी प्राण गंवाये अपने घरोको सुरक्षित लौट जानेमे सहायता मिली थी। उपर्युक्त योगदानके अभावमे यह सभव नही था।

ब्रिटिश सेनाका यह सुमन जिस भाति बच सका था और उसकी इस युक्ति की घोषणा सर विन्स्टन चर्चिल द्वारा जिन सदैव स्मरणीय तथा हृदयद्रावक शब्दोमे की गयी थी उन्होने ब्रिटिश द्वीप निवासियोको देश पर आसन्न संकटके ज्ञानके प्रति तथा अपनी समस्त शक्ति द्वारा उस सकटको हटानेके लिए सकल्प लेनेके प्रति जागरूक कर दिया था। नेपोलियनके समयके बाद इस भातिका अन्य कोई उदाहरण नही-मिलता। पोलैण्ड, डेनमार्क, नारवे, हालैण्ड, बेल्जियम और फ्रान्समे जर्मन सफलताके बाद सयुक्त राज्य (United Kingdom) का भी दुर्भाग्य स्पष्ट प्रतीत होता था। उसे टाल सकना भले ही असभव प्रतीत हो, किन्तु निष्क्रमण की इस सामयिक कार्यवाही और उसके पश्चात् निर्मित उत्साह इग्लैण्ड द्वारा प्राप्त सफलताके लिए बहुत कुछ उत्तरदायी था। इस संबधमे लार्ड बीव्हर ब्रुक का उल्लेख उचित ही माना जायेगा। उन्होने लोगोमे ऐसा उत्साह प्रेरित किया था जो तत्कालीन उत्पादन–अभियानके लिए बहुत कुछ उत्तरदायी था।

निष्क्रमणके सबधमे यह अब और अधिक बतानेकी आवश्यकता नही है कि विश्वमे दूरी भी राष्ट्रकी भाग्य निर्णायक तथ्य सिद्ध हुई है। रूसकी विशालता और शीत ऋतुमे वहा बर्फ और तुषारके कारण ही विश्वका सर्वश्रेष्ठ सेनापति नेपोलियन युद्धमे हार गया था। यदि रूस से भिडकर वह पूरी तरहसे युद्धमे निमग्न न होता तो हिटलरको उस दुर्भाग्यका सामना न करना पडता कि जो उसके भाग्यमे लिखा हुआ था क्योकि उसके लिए वहाकी विशाल दूरीपर विजय पाना सम्भव नही था और वहाकी जलवायुने उसकी सेनाओको पूरी तरहसे गतिहीन कर दिया था। अतएव इन सब तथा अन्य अनेक कारणोसे स्पष्ट है कि विशालता अजेय है। अतएव स्पष्ट रूपसे कहा जा सकता है कि निष्क्रमण की समस्याके महत्वको अत्यधिक बल देनेकी कदाचित ही आवश्यकता है।

निष्क्रमणके सबधमे यहा यह भी बता दू कि ब्रिटिश अधिकारियोने अपने देशपर १९४० मे आक्रमण होनेसे दस वर्ष पूर्व क्या किया था। १९३१ मे ही इग्लैण्डमे एक समि-

तिने लन्दनके एक विशेष क्षेत्रसे पैतीस लाख निवासियो को निष्क्रमित करनेकी समस्या-पर गंभीरतापूर्वक विचार करना प्रारम्भ कर दिया था । लन्दनकी भूमिगत रेल सुरंग (Tubes) के प्रयोगपर चर्चा करते समय निष्क्रमण समस्याके विभिन्न पहलुओपर प्रकाश डाला जा चुका था किन्तु १९३२ के शरद काल तक प्रमुख आयोजक लन्दनसे यथासम्भव अधिकसे अधिक व्यक्तियो को निष्क्रमित करनेकी नीतिमें चले आये विश्वास तथा एक उपसमितिको पुन. बुलाकर विस्तृत योजना तैयार करनेकी इच्छा प्रदर्शित करनेके अतिरिक्त अन्य कोई भी प्रतिवेदन प्रस्तुत करनेमे असमर्थ रहे थे। लन्दनसे देहाती क्षेत्रोमे पूरी तरह से निष्क्रमणके प्रश्नके साथ ही १९३४–३५ मे हवाई आक्रमणके समय अपनाये जानेवाले प्रतिबाधक उपायोकी जाचके क्षेत्र और अधिक बढानेके तथा यथासमय गुप्त आयोजन के स्तरसे उसे राष्ट्रव्यापी सगठनका रूप देनेके लिए उक्त उपसमितिने तीन वर्ष पश्चात अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किये थे। उचित समयपर राजधानीमे अपने निवासियो को ममदीय क्षेत्रो (Boroughs) को हटाकर इग्लैण्ड समयकी कसौटीपर खरा उतर चुका है और यह दिनके प्रकाशकी भाति स्वत. ही स्पष्ट है कि ऐसी स्थिति आनेपर अन्य राष्ट्रोको इस उदाहरणका अनुसरण करना चाहिए।

इस तथ्यको ओर अधिक स्पष्ट करनेके लिए यह उल्लेखनीय है कि अनेक कठिनाइयोके बावजूद भी इंग्लैण्डमे शासन तक के निष्क्रमणके लिए समुचित योजना तैयार की गयी थी । इस बातपर यहा पुन. जोर देना आवश्यक है कि समाज तथा उद्योगोको अपने स्थानसे हटाने, नैतिक करना और मनोबलमे सम्बन्ध, शासकीय पेचीलापन तथा शासकीय व्यय मे अपनी क्षमताओ के सबध मे उस देश मे सुरक्षा के लिए निष्क्रमण तथा शरणगृह व्यवस्था—ये दो शक्तिशाली उपाय थे । उस देशके निवासियोके चार प्रमुख वर्गोको एक योजना या ऐतिहासिक घटनाके रूपमे निष्क्रमणमे प्रभावित किया था –

१ – लन्दन तथा अन्य शहरोके निवासी बालक, माताए तथा अशक्तोकी चालीस लाख जनसख्या जिसे उसकी इच्छानुसार शासनने अपने व्ययसे अधिक सुरक्षित स्थानोमें हटानेका प्रबन्ध किया था।

२ – अन्य दूसरे व्यक्ति जो स्वय अपनी व्यवस्था द्वारा स्थान त्यागना चाहते थे।

३ – व्यापारिक सस्थाए, पाठशालाए तथा अन्य व्यक्तिगत सगठन और

४ – शासन या मत्रिगण, ससद–सदस्य तथा समस्त नागरिक कर्मचारी।

लगभग १५ लाख शासकीय निष्क्रमणार्थियोका एक और तीन सितम्बर १९३९ के बीच नाटकीय बहिर्गमन, निवास हेतु निश्चित केन्द्रोमे उनके पश्चात् कालीन अनुभव तथा अपने गृहोकी ओर उनका शीघ्र गतिसे लौटना ये सब इगलैण्डके लिए इतने सहायक सिद्ध हुए थे कि ये स्वय एक इतिहासका रूप ले चुके है। इग्लैण्डके निष्क्रमणमे

स्थितिकी मौलिकताका स्पष्टीकरण इस तथ्यसे हो जाता है कि जब तक शासनको इस बातका वास्तविक ज्ञान हुआ कि उसने चालीस लाख नही बल्कि उसमे भी आधी संख्यासे कम व्यक्तियोंको निष्क्रमित किया है तब तक कुछ समय व्यतीत हो चुका था। यह तथ्य महत्वपूर्ण तथा ध्यानमे रखने योग्य है कि शासकीय बहिर्गमन एक भी दुर्घटना अथवा मृत्युके बिना सुनियोजित ढंगसे आयोजित हुआ था। यहां यह भी स्मरण रखने योग्य है कि अशासकीय बहिर्गमन किसी अवरोध तथा आतकके बिना लगातार अनेक सप्ताहों तक होता रहा था। किन्तु यहां यह भी स्मरणीय है कि १९४२ मे कलकत्ता तथा बम्बई मे जो अत्यन्त नाटकीय ढगसे इसके विपरीत हुआ था। अतएव यह आवश्यक है कि अधिकारियोको, चाहे वे कोई क्यो न हों, निष्क्रमण जैसी महत्वपूर्ण समस्यापर समुचित रूपसे विचार करना चाहिए।

यहा यह भी ध्यानमे रखना रुचिकर होगा कि १२ जून १९४४ से लेकर २९ मार्च १९४५ तक हुए उडन बमो (Flying Bombs) के आक्रमण की अवधिमे ब्रिटेनमे क्या हुआ था। इस अवधिमे बहुतमे यह बम फ्रांसके तटपर स्थित डकिर्क (Dunkirk) और एट्रेटाट (Etretat) के बीच के स्थानोंमे छोडे गये थे। ये लम्बी मार-वाले प्रक्षेपास्त्र आक्रमण (Rocket attacks) निष्क्रमणके बारेमे उत्साहपूर्वक आयोजनके लिए उत्तरदायी थे। हिटलरके अत्यन्त आतकपूर्ण तथा अत्यधिक आधुनिक अस्त्रोके संभावित प्रभावो के सम्बन्धमे अपनी योजना तैयार करते समय शास-नको उन व्यक्तियोको जिन्हे लन्दनमे रहकर काम करना था, अपने स्थानपर डटे रहनेके लिए प्रोत्साहित करने तथा उसी समय कुछ अंशों तक होनेवाले असगठित बहिर्गमनका विरोध करने के बीच अब अपना अरुचिकर मार्ग बनाकर बढना था। प्रधानमंत्री सर विन्स्टन चर्चिलने इस बातके लिए लोगोंको प्रोत्साहित किया कि लन्दनमे ठहरने-वाले व्यक्तियोके विश्वासको क्षति पहुचनेके पहले ही उन सब व्यक्तियोको जिनके पास कोई निश्चित कार्य नही है, स्थान छोड़ देना चाहिए। प्रति व्यक्ति के हिसाबसे पाच शिलिगके कूपन मुफ्त रूपसे वितरित किये गये थे और निष्क्रमण करनेवाले व्यक्ति इनकी सहायतासे अपनी रेलकी टिकट खरीद सकते थे। प्राथमिकताके आधारपर चुने गये वर्गोके निष्क्रमणका आयोजन करते समय कुछ नागरिक कर्मचारियो और आधारभूत उद्योगोमे कार्यरत व्यक्तियो को भेजनेके प्रबन्धोमे समन्वय करना आव-श्यक था। लन्दनके अस्पतालोसे रोगियोका निष्क्रमण भी तुरन्त ही आरम्भ कर दिया गया था और अत्यन्त अल्प समयमे १५७३४ रोगी तथा कर्मचारी निष्क्रमित कर दिये गये थे तथा २८२४९ शय्याएं, : बिस्तर : राकेटके आक्रमणसे आहतो के लिए खाली रखी गयी थी। इसके साथ ही कुछ ही घण्टोंकी सूचनापर रोगियोको अपने गृहोमे जाने के हेतु युक्तकर ८१७९ अतिरिक्त शय्याएं : बिस्तर : सुलभ की जा सकती थी।

उपरोक्त समस्त विवरण यह दर्शित करता है कि निष्क्रमणके संबंधमे यह कितनी

सुन्दर तथा सन्तोषजनक कार्यप्रणाली थी। अपने समयके दुर्भाग्यके रूपमे किसी भी युद्धकी अवधिमें अथवा उसके पूर्व किसी भी समय आवश्यक आयोजन के हेतु हम सबके लिए यह मार्गदर्शन कर सकता है। पाठकके लाभके लिए कुछ महत्वपूर्ण तथ्य–कर्तव्य और निषेध–के रूपमे नीचे वर्णित किये जाते है :–

कर्तव्य

१ – शासकीय अधिकारियो द्वारा निष्क्रमणसे संबधित तैयार की गयी योजनाके बारेमें दिये गये आदेशका पालन करिए।

२ – समस्त नागरिक समितियोको निष्क्रमणकी किसी भी योजनामे पूरा सहयोग देना चाहिए।

३ – बालको, महिलाओ, अशक्त तथा वृद्ध लोगोको निष्क्रमणमे प्राथमिकता दीजिये।

४ – निष्क्रमणकी किसी भी योजनामे गर्भवती महिलाओ तथा प्रसूतिके मामलोका समुचित ध्यान देना चाहिए।

५ – यह देखिये कि जिन स्थानोमे बालक निष्क्रमित किये गये है, वहा भी उनकी शिक्षाका प्रबन्ध है।

६ – निष्क्रमित बालकोको शिक्षा देनेके लिए अग्रगठित (Prefabricated) भवन तैयार किये जा सकते है। रूसने मास्को और अन्य नगरोके आसपासके क्षेत्रोमे अग्रगठित (Prefabricated) टुकडोसे अनेको पाठशालाओका निर्माण किया है। अन्य देशोके द्वारा इस उदाहरणका अनुसरण किया जा सकता है।

७ – समाजकी भलाईके लिए तथा किसी भी आकस्मिक घटनाके अवसरपर आनेवाली स्थितिका सामना करनेके लिए समस्त स्वैच्छिक सगठनोको अधिकसे अधिक योगदान देना चाहिए।

८ – यदि अत्यन्त आवश्यक हो तो आप अपने आभूषण तथा अपनी बहुमूल्य वस्तुए साथमे ले जा सकते है किन्तु यदि आप प्रबन्ध कर सकते हो तो जहा तक बने अपने साथ बहुमूल्य वस्तुएं ले जानेमे बचिये।

९ – स्मरण रखिये कि कममे कम सामानके साथ यात्रा करना श्रेयस्कर तथा सुरक्षापूर्ण है।

१० – जब आप निष्क्रमित किये जाय तब भारतमे सामुदायिक योजनाओंके लिए समर्पित उपायोका अनुसरण करिये।

११ – जब निष्क्रमित किये जाये तब कुछ दिनोके लिए आवश्यक सामग्रीकी व्यवस्था अवश्य करें।

१२ – नागरिक सुरक्षा कार्यक्रमके अनुसार पाठशालाके निष्क्रमणकी योजना तैयार कर विद्यार्थियो, अभिभावको और जनसमूहको इसकी सूचना दे।

१३ – निष्क्रमणार्थियोके लिए कुछ मनोरजनकी व्यवस्था कीजिये। रेडियो से लग हुए लाउड स्पीकर इसके लिए अधिक उपयुक्त है।

१४ – स्मरण रखिये कि आक्रमणके पूर्वकी अवधिमे निष्क्रमण एक आवश्यक प्राथमिकता है।

१५ – नाटो (NATO) की नागरिक सुरक्षा समितियोको ठोस आधार-पर निष्क्रमण आयोजित करनेके लिए उपयुक्त योजनाओ के सम्बन्धमे अपने सदस्य देशोका मार्गदर्शन करना चाहिए। नाटो सगठनके जो देश सदस्य नही है, वे इन योजनाओका अध्ययन कर के इनमे लाभ उठा सकते है।

निषेध

१ – यदि आपको किसी विशिष्ट स्थानको निष्क्रमित होनेके लिये कहा जाता है तो आप अधिकारियोसे कभी तर्क न करे।

२ – जब तक विकट सगठनकी स्थिति न आ जाये तब तक जनसख्याके आवश्यक भाग को निष्क्रमित न करे। आवश्यक सेवाओको चलानेके लिए इनकी आवश्यकता रहती है।

३ – एक पूर्व निश्चित स्थानपर एकत्र होनेके लिए आदेश मिलनेपर देरी न करे। स्मरण रखे कि आप अपनी सुरक्षाके लिए ही ऐसा कर रहे है।

४ – अपने साथियोके प्रति कर्तव्यपालनमे मत चूकिये। अन्य किसी समय की अपेक्षा जब वे निष्क्रमित किये जाते है, तब आपकी सहायताकी उन्हे अधिक आवश्यकता है।

५ – यह मत भूलिये कि निष्क्रमणकी किसी भी योजनाके लिए समुचित आयोजन आवश्यक है।

६ – तम्बुओकी व्यवस्था करना मत भूलिये। गृह सम्बन्धी समुचित सुविधाओके अभावमे ये बहुत आवश्यक है।

७ – निष्क्रमणके लिए अधिकृत रूपमे मागनेपर अपनी मोटर या अपने अन्य वाहन देनेमे मत हिचकिचाइये।

८ – निष्क्रमण क्रमानुसार प्राथमिकताओको न भूले। प्रथम क्रम बालको तथा महिलाओका है, इसके पश्चात् निर्बल और अशक्त तथा तृतीय चरणमे वृद्ध व्यक्तियोका क्रम है।

९ – आतंक अथवा आतंकको प्रेरित करनेवाली स्थितिसे बचिये।

१० – निष्क्रमणार्थियोंसे वस्तुओंके मनमाने मूल्य मत लीजिए। जो ऐसा करते हैं उन्हें असामाजिक तत्व मानना चाहिए।

११ – असावधानीसे अनुत्तरदायित्वपूर्ण बात न करे। शत्रुके जासूस आपके आसपास हो सकते हैं।

१२ – यह मत भूलिये कि नाभिकीय (Nuclear) अथवा गैस द्वारा आक्रमण की स्थितिमे आपका मूलभूत कर्तव्य शरणगृहमें रहना है अथवा यदि यह करने योग्य या संभव न हो तो अपने गृहके दरवाजे और खिड़कियों को बन्द कर ले ताकि रेडियो धूलि या गैसका प्रवेश न हो सके और दीवालो के पीछे रहे। यह मत भूलिये कि धूलि या गैस के पतनका प्रभाव बहुत दूर तक होता है और निष्क्रमित होनेपर मी अपने बचावके लिए भीतर रहनेकी सावधानी बरतना आवश्यक है।

१३ – निष्क्रमित हो जानेके पश्चात् भी प्राथमिक उपचारका आवश्यक प्रबन्ध करना मत भूलिए।

१४ – यदि आप तकनीकी दृष्टिसे ऐसे कार्योंको करनेकी योग्यता रखते है जो कि आपके साथियोंके लिए उपयोगी है, तो ऐसे कार्योंके लिए स्वेच्छासे अपनी सेवाए देनेमे मत हिचकिचाइये।

१५ – नागरिक प्रतिरक्षाको उचित रूपसे समझनेमे सहायक साहित्यकी व्यवस्था करना मत भूलिये।

– अध्याय १२ –

हवाई आक्रमण का स्वरूप, बमवर्षकों के प्रकार, बमवर्षक किस प्रकार सही रूपमे लक्ष्य वेध करता है और हवाई आक्रमणसे क्षति

हवाई आक्रमण का स्वरूप :–यह अत्यन्त तकनीका विषय है, किन्तु साधारण रुपसे इसे समझनेके लिए यह जान लेना अधिक अच्छा है कि जब द्वीतिय महा युद्ध प्रारम्भ हुआ था, तब इंग्लैण्डमे क्या किया गया था और उक्त गम्भीर समयके कुछ वर्षोंके अनुभवके फलस्वरूप किस प्रकार बमबारीकी प्रक्रियाका विकास और उसका पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया गया था। इसका अर्थ यह है कि सन् १९३८ मे वायुयान–कर्मचारियोकी कठिनाईयोका विवरण एक ज्ञापनमे प्रस्तुत किया गया था, जिसमे कि प्रथम–ठीक–ठीक तथा असदिग्ध लक्ष्य और द्वितीय लक्ष्य समूह–ये दो प्रकारके कार्य स्पष्ट रूपमे बताये गये थे। तबसे इस प्रक्रियाका विकास उस स्तर तक किया गया था कि सन् १९४४–४५ तथा उसके बादके वर्षोमे ब्रिटिश बमवर्षकोने रात्रिमे लक्ष्यपर बमबारी करनेमे परिशुद्धता प्राप्त कर ली थी।

१९३८ के ज्ञापनमे तीन प्रकारके आक्रमणका उल्लेख किया गया था :–

(१) **उच्चस्तर**– जहा छोटे लक्ष्य पर बम गिराना उद्देश्य था। उस समय यह प्रश्न प्रस्तुत हुआ था कि लक्ष्यके समीप गति धीमी कर, गिरते हुए बमको देखनेकी और अधिक क्षमता प्रदान कर अथवा लक्ष्यको चिन्हित करनेके लिए विशेष रूपसे प्रशिक्षित कर्मचारियोकी व्यवस्था कर क्या बमबारी का एक ऐसा स्वरूप नही निश्चित किया जा सकता कि जिसमे स्थितिमे सुधार हो सके। उस समय निश्चित लक्ष्योपर रात्रिकी बमबारी अधिक उपयोगी नही मानी जाती थी और उपयुक्त ज्ञापनमें स्पष्ट रूपसे इसका उल्लेख कर दिया गया था कि यदि उक्त उद्देश्यके लिए कर्मचारियोको प्रशिक्षित करनेका प्रयास न किया जाय, तो समयकी बहुत बचत हो सकती है।

(२) **निम्नस्तर** (Low–level) : जिसमे कि साधारणत: अपेक्षाकृत कम भूले होगी। किन्तु उपयुक्त ज्ञापनमें यह भी बताया गया था कि इसमे भयानक कठिनाइया थी–यथा, गुब्बारोका जाल (Barrage Balloon) तथा इंजिनोकी आवश्यकता, जिनके द्वारा उच्चस्तरकी भाति निम्नस्तर (Low–level) पर भी उतने ही अच्छे ढगमे कार्य किया जा सकता है। फिर भी कभी–कभी दृष्यता

कुछ ऐसी भी होगी कि केवल निम्नस्तरसे ही (Low-level) कुछ दिखायी दे ।

(३) **उच्च तथा निम्न गोतामार बमबारी** (High and Low Dive Bombing): आधुनिक विमान द्वारा उच्चस्तरसे गोता मारना प्रायः असम्भव माना जाता था किन्तु किसी प्रकारकी उथली बमबारी (Shallow Bombing) को उपयोगमें लाया जा सकता था। यदि निम्नस्तर (Low level) से बमवारी की जा सके, तो उसके द्वारा निश्चित लक्ष्यको बेधनेकी अधिक सम्भावना रहती है। गुब्बारोके जाल (Barrage Balloon) की भयंकर कठिनाईके अतिरिक्त हवामार गोलों या विमान विरोधी गोलों (Anti-air-craft-fire) के प्रभावको भी ठीक ठीक नही मापा जा सकता था। निम्नस्तर आक्रमणपर १९३८ मे चर्चा हुई थी और इस बातको प्रायः सभीने स्वीकार किया था कि यद्यपि लक्ष्यको निश्चित रूपसे जाननेमे कठिनाई आ सकती है, किन्तु चांदनी रातोमें यह सम्भव है। जहां तक गोतामार बम- बारीका सम्बन्ध है, यह सोचा गया था कि ऐसी बमबारी के योग्य बनानेके लिए आधुनिक विमानमें कुछ संशोधन, यथा हवाई ब्रेककी व्यवस्था की जा सकती है। उथली गोतामार बमबारी (Shallow Dive Bombing) का परीक्षण नही किया गया था। ऐसी बमबारी कुछ समयके लिए इंग्लैण्डके कार्यक्रममें रखी गयी थी, किन्तु उसके लिए अभी तक कोई विमान सुलभ नही हो सका है।

विमानमें अनेक प्रकारके कार्य करनेकी उपयुक्तता, बमबारीके दाव पेच तथा बमबारीकी परीशुध्दताकी जाच, बमबारीके नये तरीकोंका विकास, सहायक साज–सज्जा–युद्ध सामग्री, सकेत सूचको–हवाई मार्ग, निर्देशन तथा रात्रि उड़ानकी जाच तथा उनका विकास और कार्यक्षेत्र–सीमा निश्चित करनेके लिए सघन उड़ान परीक्षण तथा सहनशीलता परीक्षण आदि उन विषयोमेसे थे, जिनकी जांच की आवश्यकता इग्लैण्डमे युद्ध प्रारम्भ होनेपर समझी गयी थी।

अन्योंके साथ वायु–पथ अपराधका वैज्ञानिक सर्वेक्षण करनेके लिए निर्मित समितिने भी अपना पर्याप्त ध्यान इस प्रश्नपर विचार करनेमे लगा दिया था कि किस प्रकार बम ठीक–ठीक निश्चित लक्ष्यपर गिराया जाय। बमका निशाना लेनेके प्रश्नपर भी बहुत अधिक विचारविनिमय हुआ था और इसके फलस्वरूप उसका अंशतः सुधार और सरलीकरण भी किया गया था और अधिक जटिल उपकरणो या यन्त्रोके प्रयोगोको त्याग दिया गया था।

लक्ष्यका ऐसा विवरण प्राप्त करना कि जिससे स्क्वाड्रन (Squadrons) उसे पहचान सकें और उसे नष्ट करने या क्षति पहुंचानेमें प्राप्त सफलता या विफलताके

बारेमें जान सकें अथवा रात्रिमें लक्ष्यको प्रकाशित करनेकी समस्या जैसे महत्वपूर्ण प्रश्नों-पर बहुत समय तक विचार किया गया था और अन्ततः एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी था कि लक्ष्यपर बमका क्या प्रभाव पडेगा। स्पष्टतः विभिन्न लक्ष्योंके लिए विभिन्न प्रकारके बमोंकी आवश्यकता है, क्योंकि बमोमें उपयोगमें लाये गये बारूद, बेलिस्टिक्स (Ballistics) तथा पलीतों (Fusing) के कारण उनके द्वारा उत्पन्न प्रभावोंमें काफी अन्तर हो सकता है।

जब १९३९ मे युद्ध आरम्भ हुआ था, तब इग्लैण्डका बमवर्षक कमान (Bomber Command) रात्रिमे लक्ष्यपर बमबारीकी बात तो दूर रही, दिनमे भी शत्रु क्षेत्रमें प्रविष्ट होने या अपने लक्ष्य क्षत्रोंको खोज लेनेके लिए प्रशिक्षित या सज्जित नहीं था। इनके विमान और इनकी बन्दूके इस प्रकारकी थी कि चाहे इनका श्रेष्ठ कर्मचारी वर्ग कितना भी चतुर और बहादुर क्यो न हो फिर भी दिनके समय अपने शत्रु जर्मनमे उनके क्षेत्रमें सामना कर सकना असम्भव था।

फिर भी केवल कठिन परिश्रम द्वारा जो अनुभव प्राप्त हुआ उससे तथा इग्लैण्ड निवासियोके व्यक्तिगत गुणोके कारण १९४४–४५ तक स्थितिमे परिवर्तन हो गया था। बमवर्षक बेडेकी अपेक्षाकृत अधिक मारक–शक्तिका प्रश्न केवल विमानकी संख्या अथवा उसके गुणोका ही नही था। यह अपेक्षाकृत ओर अधिक क्षमताका भी प्रतीक था। फिर नये तकनीकी सहायक तथ्योका समावेश किया गया था, पुरानोको सुधारा गया और उनका उपयोग और अधिक व्यापक तथा विभिन्न कार्योके लिये किया गया। विभिन्न प्रकारके लक्ष्योको चिन्हित करने तथा उनपर बमवर्षा करनेकी कार्य प्रणालीमे महत्वपूर्ण विकास किये गये ओर कुछ मामलोमे तो ओर अधिक शक्तिशाली तथा प्रभावशील बमोकी व्यवस्था भी की गयी थी। इस प्रकार इग्लेण्डका हवाई–बेड़ा और अधिक शक्तिशाली, परिशुद्ध तथा गतिशील बनाया गया था।

अब सदैव यह अनिवार्य नहीं था कि क्षेत्रीय बमबारीके लिए रात्रिमे हवाई बेड़ेके अधिकाश भागका उपयोग किया जाय और पहले जिन बडे उद्देश्योकी प्राप्तिके लिए मोर्चेकी सम्पूर्ण प्रथम पक्तिको अधिकतम प्रयास करना पडता था, अब वे वायुसेनाके एक अश द्वारा ही प्राप्त किये जा सकते है। अब एक ही समयमे अनेको भिन्न–भिन्न लक्ष्योपर वायुसेनाकेवल निश्चित आक्रमण ही नही कर सकती बल्कि यह भी देखा गया है कि केवल एक दल द्वारा ही जर्मनीके बडे नगरमे काफी बडे क्षेत्रोमे प्रभावोत्पादक आक्रमण किया जा सकता है।

हवाई आक्रमणकी रूपरेखाके सबधमे इग्लेण्डपर जर्मनीके द्वारा किये गये लम्बी मारवाले राकेटोके आक्रमण (Long Rocket Attacks) का भी ज्ञान

पाठकोंको होना चाहिए। यह इंग्लैण्डके विरुद्ध जर्मनो द्वारा प्रयुक्त चालकहीन अस्त्र था, जिसने कि उस देशमे (इंग्लैण्डमें) तहलका मचा दिया था। किन्तु इस शताब्दिके सत्तरवे वर्षोमे आज ये राकेट जितने परिपूर्ण बनाये जा चुके है, उतने उस समय नहीं थे। पोलैण्ड स्थित अभिकर्ताओ (Agents) स्वीडनमे आकस्मिक रूपसे गिरे राकेटके प्रतिवेदन और युद्धबन्दियोके द्वारा ही सन् १९४४ में प्रथम बार इंग्लैण्डको राकेटके भार, उसके संचालनकी रीति तथा उसके कार्यान्वयनको नियन्त्रित करनेके लिए आवश्यक संगठनके बारेमे अधिक विश्वसनीय प्रमाण प्राप्त होने लगे थे।

युद्धके आरम्भमे असदिग्ध लक्ष्य इंग्लैण्डके लिए कठिनतम कार्य था, किन्तु उस देशके लोगोंके द्वारा जो अनुभव प्राप्त किया गया था, उसके बलपर इस कठिनाईपर काफी सफलता प्राप्त हो गयी थी। जर्मनके विरुद्ध ब्रिटेनकी विजयका मूलभूत कारण तो मानवीय तथ्य था। यन्त्रोके गुण तथ्य उनकी संख्याका यद्यपि महत्व था, किन्तु मानवीय गुण ने असिल मे स्थितिमें परिवर्तन किया। ब्रिटेनके वायु सैनिक महत्वपूर्ण भागपर अधिक समय तक अधिकृत करने तथा अधिक शीघ्रताके साथ कार्य करनेमे सक्षम थे। जर्मनों द्वारा इस प्रकारका अवसर प्राप्त करना ब्रिटिश हवाई बेडेके जमावकी स्थितिको जानने तथा इसके साथ ही अधिक लाभदायक स्थानोमे अपनी वायुसेनाको केन्द्रित करनेपर निर्भर था। ऐसा करनेके लिए उन्होने रेडार प्रथा (Radar-system) का उपयोग किया था। जर्मनीके युवा चालक अपने कर्तव्यमे पूर्ण सक्षम थे और युद्धके प्रारम्भमे अन्य सबकी तुलनामे उनकी श्रेष्ठता स्पष्टत: दिखायी देती थी। युद्धमे आगे चलकर यह स्थिति उत्पन्न हुई थी, जिसमे कि उन्हें अपनेसे काफी बडी संख्याका अनेक मोर्चेपर सामना करना पडा था कि जिसके कारण वे हारने लगे थे।

हवाई आक्रमणके प्रकारकी चर्चा करते समय ब्रिटिश लडाकू विमानो तथा जर्मनीके हेंकिल्स (Heinkels), डारनियर्स (Dorneirs) तथा मेसरस्मिट्स (Messesschmitts) के बीच वायुपथपर हुए द्वन्द्व युद्धोंको स्मरण रखना चाहिए। केन्ट, ससेक्स, हेम्पशायर, डारसेट, इसेम्म तथा स्वय लदनके ऊपर वायुपथमे हुए द्वन्द्व युद्धोके बारेमे मालाकार श्वेत वाष्प ही अवशेप वस्तु दृष्टिगत थी। पारस्परिक शत्रुताके फलस्वरूप दो विमान लगभग पाच या छह मीलकी ऊंचाईपर प्रतिघण्टा छह सौ मील की सयुक्त गतिमे जिस प्रकार एक दूसरेकी ओर बढ़ते थे और उस समय प्राणोंके स्पन्दनको भी रोक देनेवाला जो युद्ध होता था, उसका वास्तविक अंकन किसी एक चित्रमे नही हो सकता था।

जर्मन बमवर्पकोंको लन्दनपर उड़ते समय जिस एक बहुत बडी कठिनाईका सामना करना पड़ता था, वह गुब्बारोके बिछे हुए जाल (Barrage Balloons) की थी। अपने जोशमे जर्मनीके मेसरस्मिट्स (Messerschmitts) नामक

लड़ाकू विमान मज़बूतीके साथ कार्य करते हुए गुब्बारोंके जाल (Barrage Balloons) पर आक्रमण करते थे। इंग्लैण्डके दक्षिणपूर्व तटपर इनमेसे कुछ ज्वालाओंके रूपमें गिरते भी थे, परन्तु उनके ये प्रयास जरा भी उपयोगी नहीं थे और १९४० में हुए तड़ित गति (Blitz) आक्रमणके पश्चात् जैसे-जैसे युद्धकी स्थिति आगे बढती गयी वैसे-वैमे प्रति दिन जर्मन विमानोंकी दैनिक क्षतिमे भी वृद्धि होती गयी।

१९४१ मे जर्मन मास्कोके प्रवेश द्वारपर थे किन्तु वहां उन्हें अत्यन्त कडे सघर्ष पूर्ण विरोधका सामना करना पड़ा। उस देशके लोगोंको प्रदत्त वैज्ञानिक प्रशिक्षणके साथ ही उसकी विशालता एक बड़ी निधि प्रमाणित हुई और यद्यपि उस स्थानपर बहुत ही तीव्र हवाई आक्रमण किया गया था, किन्तु यह आक्रमण वहाके लोगोके, अन्य तथ्योके अतिरिक्त अपनी रक्षा करनेके उत्साहपर विजय नही पा सका था। नेपोलियनकी भाति हिटलरने भी अपना दुर्भाग्यपूर्ण अन्त रूसमे देखा। इसके अतिरिक्त, मित्रराष्ट्रोके बमवर्षक दलोने हेमबर्ग, बर्लिन तथा जर्मनीके अन्य नगरोपर इतनी तीव्रतासे बमबारी की थी कि जर्मनीकी शक्तिकी पूरी रीढ़ खण्ड-खण्डमे टूट-फूट गयी थी।

यह सब कुछ तब हुआ जब गुब्बारोके बाध (Barrage Balloon), लड़ाकू विमान, खोजबत्ती और इन सबके ऊपर हवा मार तोपे (Anti-air Craft guns) आदि पहलेसे सचेत कर देनेवाले साधनोंका वहापर आवश्यक प्रबन्ध था। तब, उन देशोका क्या हाल होगा, जहा कि इस प्रकारकी व्यवस्था सुलभ नही है ? क्या ऐसे देश सुरक्षाके इस प्रकारके उपायोकी व्यवस्था न कर जोखिम उठाये ? क्या वे शेष विश्वसे अलग रह सकते है ? ऐसे प्रश्न मेरे मस्तिष्कको विचलित कर देते है, विशेषकर उस समय जबकि मै उन देशोके बारेमे सोचता हू, जहां अधिक सूचनाके बिना किसी भी क्षण हवाई बमबारीका कष्ट सम्भव है। जब तेलके क्षेत्रो, बाधो, पुलो, औद्योगिक स्थानो और बड़ी इमारतोपर बमबारी हो, तो कोई भी व्यक्ति कल्पना कर सकता है कि ऐसे मामलोमे क्या हालत होगी।

जब हवाई आक्रमणके विषयमे बात कहते है तब हमे प्रतीत होता है कि हमारे युगकी सबसे बुरी भयानक वस्तु नाभिकीय आक्रमण है। इसके अमिसंपातकी तीव्रता आक्रमणके प्रकारपर निर्भर रहती है।

उक्त प्रकारके युद्ध अमिसपात (Fall-out) के सम्बन्धमे अभी तक बहुतसे वज्ञानिक तथ्य निश्चित नही हो सके है। इस विषयपर वर्तमान विश्वास रेतीले मरुस्थल और कड़ी चट्टानवाले समुद्री किनारेपर प्रयोगात्मक विस्फोटोसे प्राप्त परिणामोंपर आधारित है। हिरोशिमा या नागासाकीमे प्रायः कोई अधिसंपातत (Fall-out) नही हुआ था, क्योकि दोनोंमे बम उन्नतांशसे गिराये गये थे। इस बातका कोई प्रत्यक्ष ज्ञान नही है कि किसी शहरपर व्यापक स्तरपर इस प्रकारके

सतहपर होनेवाला विस्फोट किस प्रकारका होगा? अभी तक जिन लक्षणोका अध्ययन किया गया है, सम्भवत: वह उनसे भिन्न ही निकले। यूनाइटेड स्टेटस्के अणुशक्ति आयोगके डाक्टर जोशुआहालेण्डने चेतावनी देते हुए कहा है कि 'हमारे अनुमान तीन या चार गुना अधिक बड़े या अधिक छोटे निकल सकते है।'

बहुतसे लोग भूमिकी सतहपर पांच मेगाटन बमके फूटनेके प्रभावोंपर ही अपना ध्यान केन्द्रित करते है। अपेक्षाकृत बडे प्रकारके बमोंकी तुलनामें वे इस 'मानक–व्यास' (Standard Caliber) बमको अधिक सक्षम अस्त्र समझते है। भूमिकी सतहपर उसके उपयोगमे लानेपर युद्धकालमे शरणस्थलोसे बचाव **हो सकता है**। परन्तु यदि यही या इससे बड़ा बम ऊचाईपर हवामे फूटे तो यद्यपि टूटने–फूटने और जलाने से सम्बन्धित प्रभावोंमे वृद्धि हो जायगी किन्तु 'फालआउट' प्राय: नही के बराबर होगा।

यदि शत्रु एकसे अधिक बमसे आक्रमण करे तो एकके ऊपर दूसरे अभिसपात (Fall–out) के आकारोके फलस्वरूप स्थितिमे पूरा परिवर्तन हो जायगा और इस बातका कोई भरोसा नही है कि प्रथम आक्रमण ही अन्तिम होगा। आगे किसी भी समय और आघात या प्रहार किये जा सकते हैं।

प्रश्न यह है कि स्वय बमके अभिसपात या गिराये जानेके बारेमें ही क्या ज्ञात है? इसका निर्माण उस समय होता है जबकि एक बमका शक्तिशाली अग्नि–गेद (जिसका व्यास एकसे दस मील तकका हो सकता है) पृथ्वीकी सतहको स्पर्श करता है। अनको लाख अशाका उसका तापमान इमारतो, सड़को, लोगो और एक हज़ार फीट या उससे भी अधिक चौड़े और सहस्रो फीट गहरे ज्वालामुखोके मुखको जलानेके लिए आवश्यक चट्टाना और मिट्टी आदि प्रत्यक वस्तु जिस वह स्पर्श करता है, बाष्प बन जाती है। जैस जैसे यह आग्न गद ऊपर उठता ह वस वैस विस्फोटककी निकटतासे रेडियो सक्रिय बन जानेके कारण उसक पदार्थका भार गर्म या ठण्डा होता जाता है। बिन्दु–बिन्दु विभाजन प्रक्रियासे प्राप्त रेडियो सक्रिय तत्वोके सयोजनसे पदार्थके बाष्पीकृत कण पुन: ठोस रूप लेने लगते है। यह प्रभाव प्रथम धातुओपर और इसके पश्चात् भूमिकणा तथा अन्य वस्तुओपर होता है। ये जमे हुए कण १५ से ३० मिनटोके भीतर गिरते हुए उस भयकर वर्षाका रूप धारण कर लेत है कि जिससे बचनेके लिए शरण स्थल बनाये जाते है।

बारूदसे उड़नेके क्षेत्रके बाहर तथा विस्फोटसे हवाके नीचे बहावकी और यह वर्षा बड़े कणोके रूपमे नीचे की ओर हो सकती है। ये कण सम्भवत: १।१६ इचके आकारके गोलियो जितने बड़े तथा देखनेमे काचके समान चमकदार और पीलेसे लेकर काले रंग तकके हो सकते है। परन्तु हवाके नीचे बहावकी दिशामे काफी मीलो की दूरी तक इतने छोटे–छोटे कणोंके कि जो दिखायी न दे सके, बादल अनेको घटोके पश्चात् स्थिर होना प्रारम्भ हो जायगे। ये वज़नमे हल्के होंगे तथा प्राय: आड़े रूपमे

लड़ाकू विमान मज़बूतीके साथ कार्य करते हुए गुब्बारोंके जाल (Barrage Balloons) पर आक्रमण करते थे। इंग्लैण्डके दक्षिणपूर्व तटपर इनमेसे कुछ ज्वालाओंके रूपमें गिरते भी थे, परन्तु उनके ये प्रयास जरा भी उपयोगी नही थे और १९४० में हुए तड़ित गति (Blitz) आक्रमणके पश्चात् जैसे-जैसे युद्धकी स्थिति आगे बढती गयी वैसे-वैमे प्रति दिन जर्मन विमानोंकी दैनिक क्षतिमें भी वृद्धि होती गयी।

१९४१ मे जर्मन मास्कोके प्रवेश द्वारपर थे किन्तु वहा उन्हे अत्यन्त कडे सघर्ष पूर्ण विरोधका सामना करना पड़ा। उस देशके लोगोंको प्रदत्त वैज्ञानिक प्रशिक्षणके साथ ही उसकी विशालता एक बड़ी निधि प्रमाणित हुई और यद्यपि उस स्थानपर बहुत ही तीव्र हवाई आक्रमण किया गया था, किन्तु यह आक्रमण वहाके लोगोके, अन्य तथ्योके अतिरिक्त अपनी रक्षा करनेके उत्साहपर विजय नही पा सका था। नेपोलियनकी भाति हिटलरने भी अपना दुर्भाग्यपूर्ण अन्त रूसमे देखा। इसके अतिरिक्त, मित्रराष्ट्रोके बमवर्षक दलोने हेमबर्ग, बर्लिन तथा जर्मनीके अन्य नगरोपर इतनी तीव्रतासे बमबारी की थी कि जर्मनीकी शक्तिकी पूरी रीढ़ खण्ड-खण्डमे टूट-फूट गयी थी।

यह सब कुछ तब हुआ जब गुब्बारोके बाध (Barrage Balloon), लडाकू विमान, खोजबत्ती और इन सबके ऊपर हवा मार तोपे (Anti-air Craft guns) आदि पहलेसे सचेत कर देनेवाले साधनोंका वहांपर आवश्यक प्रबन्ध था। तब, उन देशोका क्या हाल होगा, जहा कि इस प्रकारकी व्यवस्था सुलभ नही है ? क्या ऐसे देश सुरक्षाके इस प्रकारके उपायोकी व्यवस्था न कर जोखिम उठाये ? क्या वे शेष विश्वसे अलग रह सकते है ? ऐमे प्रश्न मेरे मस्तिष्कको विचलित कर देते है, विशेषकर उस समय जबकि मै उन देशोके बारेमे सोचता हू, जहां अधिक सूचनाके बिना किसी भी क्षण हवाई बमबारीका कष्ट सम्भव है। जब तेलके क्षेत्रो, बाधो, पुलो, औद्योगिक स्थानों और बड़ी इमारतोपर बमबारी हो, तो कोई भी व्यक्ति कल्पना कर सकता है कि ऐसे मामलोमे क्या हालत होगी।

जब हवाई आक्रमणके विषयमे बात कहते है तब हमे प्रतीत होता है कि हमारे युगकी सबसे बुरी भयानक वस्तु नाभिकीय आक्रमण है। इसके अमिसंपातकी तीव्रता आक्रमणके प्रकारपर निर्भर रहती है।

उक्त प्रकारके युद्ध अमिसपात (Fall-out) के सम्बन्धमे अभी तक बहुतसे वज्ञानिक तथ्य निश्चित नही हो सके है। इस विषयपर वर्तमान विश्वास रेतीले मरुस्थल और कड़ी चट्टानवाले समुद्री किनारेपर प्रयोगात्मक विस्फोटोसे प्राप्त परिणामोंपर आधारित है। हिरोशिमा या नागासाकीमे प्रायः कोई अधिसंपातत (Fall-out) नही हुआ था, क्योंकि दोनोंमें बम उन्नतांशसे गिराये गये थे। इस बातका कोई प्रत्यक्ष ज्ञान नही है कि किसी शहरपर व्यापक स्तरपर इस प्रकारके

सतहपर होनेवाला विस्फोट किस प्रकारका होगा? अभी तक जिन लक्षणोका अध्ययन किया गया है, सम्भवतः वह उनसे भिन्न ही निकले। यूनाइटेड स्टेटस्के अणुशक्ति आयोगके डाक्टर जोशुआहालेण्डने चेतावनी देते हुए कहा है कि 'हमारे अनुमान तीन या चार गुना अधिक बड़े या अधिक छोटे निकल सकते है।'

बहुतसे लोग भूमिकी सतहपर पांच मेगाटन बमके फूटनेके प्रभावोपर ही अपना ध्यान केन्द्रित करते है। अपेक्षाकृत बडे प्रकारके बमोकी तुलनामे वे इस 'मानक–व्यास' (Standard Caliber) बमको अधिक सक्षम अस्त्र समझते है। भूमिकी सतहपर उसके उपयोगमे लानेपर युद्धकालमे शरणस्थलोसे बचाव **हो सकता है**। परन्तु यदि यही या इससे बड़ा बम ऊंचाईपर हवामे फूटे तो यद्यपि टूटने–फूटने और जलाने से सम्बन्धित प्रभावोंमे वृद्धि हो जायगी किन्तु 'फालआउट' प्रायः नही के बराबर होगा।

यदि शत्रु एकसे अधिक बमसे आक्रमण करे तो एकके ऊपर दूसरे अभिसपात (Fall–out) के आकारोके फलस्वरूप स्थितिमे पूरा परिवर्तन हो जायगा और इस बातका कोई भरोसा नहो है कि प्रथम आक्रमण हो अन्तिम होगा। आगे किसी भी समय और आघात या प्रहार किये जा सकते है।

प्रश्न यह है कि स्वय बमके अभिसपात या गिराये जानेके बारेमे ही क्या ज्ञात है? इसका निर्माण उस समय होता है जबकि एक बमका शक्तिशाली अग्नि–गेद (जिसका व्यास एकसे दस मील तकका हो सकता है) पृथ्वीकी सतहको स्पर्श करता है। अनको लाख अशाका उसका तापमान इमारतो, सड़को, लोगो और एक हज़ार फोट या उससे भी अधिक चौड़ और सहस्रो फोट गहरे ज्वालामुखीके मुखको जलानेके लिए आवश्यक चट्टानो और मिट्टी आदि प्रत्यक वस्तु जिस वह स्पर्श करता है, बाष्प बन जातो है। जैस जैसे यह आग्न गद ऊपर उठता ह वस वैस विस्फोटककी निकटतासे रेडियो सक्रिय बन जानेके कारण उसक पदार्थका भार गर्म या ठण्डा होता जाता है। बिन्दु–बिन्दु विभाजन प्रक्रियासे प्राप्त रेडियो सक्रिय तत्वोके सयोजनस पदार्थके बाष्पीकृत कण पुनः ठोस रूप लेन लगते है। यह प्रभाव प्रथम धातुआपर और इसके पश्चात् भूमिकणो तथा अन्य वस्तुओपर हाता है। ये जमे हुए कण १५ से ३० मिनटोके भीतर गिरते हुए उस भयकर वर्षाका रूप धारण कर लेत है कि जिससे बचनेके लिए शरण स्थल बनाये जाते है।

बारूदसे उड़नेके क्षेत्रके बाहर तथा विस्फोटसे हवाके नीचे बहावकी और यह वर्षा बड़े कणोंके रूपमे नीचे की ओर हो सकती है। ये कण सम्भवतः १।१६ इचके आकारके गोलियो जितने बड़े तथा देखनेमें काचके समान चमकदार और पीलेसे लेकर काले रंग तकके हो सकते है। परन्तु हवाके नीचे बहावकी दिशामे काफी मीलो की दूरी तक इतने छोटे–छोटे कणोंके कि जो दिखायी न दे सके, बादल अनेको घटोके पश्चात् स्थिर होना प्रारम्भ हो जायगे। ये वज़नमे हल्के होगे तथा प्रायः आड़े रूपमें

बहेगे तथा इमारतोकी दूसरी ओर की अपेक्षा एक ओर एकत्रित होकर वायुवेगसे प्रेरित बर्फकी तरह वात–रोक (Wind Breaks) के पास गिरेगे। इस प्रकार वे ऐसे तप्तस्थानोंका निर्माण करेगे, जहां औसतसे पांच या दस गुना अधिक किरणोका जमाव होगा। चाहे आकारमें छोटा क्यो नही, प्रत्येक गिरे हुए कणसे एक छोटे एक्सरे यन्त्रकी भांति ही किरणें निकलती है। जब तक कि काफी मोटी वस्तुसे रोकी न जायं ये किरणे कणों से निकलकर प्रत्येक दिशामे सीधे तीरकी भाति जाती है। इन किरणोसे बचावके लिए ही शरण–दीवालोंकी व्यवस्था की जाती है।

ऊपरके कुछ अनुच्छेदोसे पाठककोंको हवाई आक्रमणके स्वरूपका कुछ परिचय प्राप्त हो जायगा। चाहे यह आक्रमण आग लगानेवाले बमों, उग्र विस्फोटक बमों, गैस बमो या गैस छिडकनेवाले बमोसे हो अथवा वह नाभिकीय आक्रमण हो। नामिकीय आक्रमण बहुत ही खतरनाक होता है। प्रायः प्रत्येक मामलेमें मानव जीवनकी स्थितिके लिए यह चुनौती होता है। इसके लिए बचावके साधन अवश्य है, परन्तु लोगोको कमसे कम अपना साहस नही खोना चाहिए। उन्हें भयंकर बाधाओका सामना करनेको तैयार रहना चाहिए। उन्हे धैर्यवान होना चाहिए तथा अपनेको बचा सकनेकी योग्यतापर विश्वास होना चाहिए। अन्य किसी वस्तुकी अपेक्षा मानवीय तत्व ही सभी प्रकारके हवाई आक्रमणोसे सुरक्षाकी श्रेष्ठ व्यवस्था करता है।

बमवर्षकोंके प्रकार

विश्वके विभिन्न भागोमे अनेक प्रकारके बमवर्षक तैयार किये गये है, परन्तु साधारणतः वे तीन प्रकारके है :– हल्के, मध्यम तथा भारी। इनमेसे भारी बम-वर्षक सबसे अधिक ख़तरनाक है, क्योकि वे वजनी बम लेकर उड़ सकते है तथा अपेक्षाकृत अधिक मजबूत होते है। विगत युद्धमे बम वर्षक सामान्यतः तीन सौ मील प्रतिघण्टा की गतिसे उड़ा करते थे। यह सत्य है कि १९५० से लेकर अभी तकके वर्षोमे अर्थात् हमारे समयमें इस गतिमे अत्यन्त महत्वपूर्ण वृद्धि हो चुकी है, किन्तु चूकि पिछले बीस वर्षोमे कोई बड़ा युद्ध नही हुआ है, अतएव यह निश्चित रूपसे नही बताया जा सकता कि अब ये बमवर्षक कितनी गतिसे उडेगे। किन्तु यह निश्चित है कि यह गति उससे कहीं बहुत अधिक होगी कि जो विगत युद्धमे थी तथा शत्रुके लक्ष्योको नष्ट करनेका उनका कार्य उस समयकी अपेक्षा बहुत ही तेजीके साथ होगा।

पिछले युद्धमे ईधन भरनेके पश्चात् (After Fueling) एक बमवर्षक का क्षेत्र २५०० मील निर्धारित किया गया था। फिर भी दूर तक प्रहार करनेवाले बमवर्षक अधिक उन्नत माने जाते थे। आजकल 'आटोमेटिक पायलट (Automatic Pilot) रिट्रेक्टेबल अन्डर कैरिज (Retractable under Carriage), अस्थिर पिच प्रापेलर (Pitch Propeller) और ऐरो–ऐजिन (Aero–engines) की भांति नये साधनोंने हमारे समयके बमवर्षको और लडाकू विमानोंका अत्यधिक तीव्र गतिसे विकास किया है।

कुछ बमवर्षकोंका निर्माण इस प्रकार किया जाता है कि वे भूमि तथा समुद्र दोनोंपर कार्य कर सकते है। यह तथ्य ऐसे बमवर्षकोंको निश्चित ही श्रेष्ठता प्रदान करता है, क्योंकि अनेकों बार बमवर्षकोंको तटवर्ती स्थानोंपर कार्य करना पड़ता है और उनके लिए समुद्रमें उतरनेके सिवाय और कोई उपाय नही रहता। तो भी कुछ बमवर्षक ऐसे होते हैं कि उन्हें आकाशमे उड़नेके पूर्व भूमिपर नही दौड़ना पड़ता। जहाज़के डेक (Deck) से भी इनसे कार्य लिया जा सकता है। युद्धके समय ऐसे विमान बडे सहायक होते है।

बमवर्षकोके प्रकारका प्रश्न गति, दूरी, शस्त्रास्त्र, बमका, वज़न तीव्रता, शीघ्रता तथा उत्पादनकी सरलताके लाभोसे सम्बन्धित है। भिन्न–भिन्न देश भिन्न–भिन्न प्रकारके नाम रखते है। विगत युद्धमें इंग्लैण्डके द्वारा प्रयुक्त बमवर्षकों के नाम इस प्रकार है :–

(१) व्हिटले	Whitley
(२) वेलिंगटन	Wellingtons
(३) ब्लेनहीम्स	Blenheims
(४) स्ना	Skna
(५) सन्डर लेण्ड	Sunder Land
(६) टारपिडोकेरियर्स	Tarpedo Carriers
(७) स्पिट फायर्स	Spit Fires
(८) हरीकेन	Hurricane
(९) स्टर्लिग	Stirling
(१०) हेलिफेक्स	Halifax और
(११) एव्रो लंकेस्टर बोम्बर्स	Avro Lancaster Bombers

विगत युद्धमे स्टर्लिग, हेलिफेक्स तथा एव्रो लकेस्टर बोम्बर्स भीमकाय वाहनोंके रूपमें प्रख्यात थे तथा गति, दूरी और वज़नी बमोंको वहन करनेमे एक समान थे। न्यायके पक्षका औचित्य सिद्ध करनेके साधनके रूपमे ये विमान वैमानिक विकासमे एक निर्णयात्मक स्थितिका प्रतिनिधित्व करते थे और ब्रिटेन तथा समुद्र पारके देशोंमें बडे पैमानेपर इनका उत्पादन किया गया था। बाल्टिक समुद्रके तटपर जहाज़ मार्ग तथा पनडुब्बीके चत्वरोके सहस्र बमवर्षकोके आक्रमणोमें जिनके द्वारा जर्मनसे न्यायपूर्ण बदला लिया जा सका था, लंकेस्टर बमवर्षकोने अपना स्थायी प्रभाव निरूपित किया था।

जब बमवर्षक शत्रु–प्रदेशमे जाते है, तब साधारणत: वे अंग्रेजीके 'व्ही' ("V") के आकारमे उड़ते है। विगत युद्धका अनुभव यह बताता है कि वे बमवर्षक, जिन्होने सबसे पहले वार किया था, लाभदायक स्थितिमें थे।

यहां यह स्मरण रखने योग्य है कि एक बमवर्षक की देखभालके लिए जितने लोगोकी आवश्यकता पडती है वह उक्त बमवर्षकके साथ जानेवाले लोगोसे बहुत अधिक होती है। एक 'स्टर्लिग' प्रकारके विमानके कर्मचारियोंकी संख्या ५६ थी। इस प्रकारके भारी बमवर्षक को उड़ानेके लिए तथा उसकी देखभालके लिए आवश्यक कर्मचारी वर्गमे निम्नलिखित का समावेश था :—

(१) विमान के कर्मचारी जिनमे कप्तान, द्वितीय विमान चालक, एयर गनर (वैमानिक बन्दूक चलानेवाला), बमका निशाना साधनेवाला, फ्लाइट इंजीनियर, ऑबज़रव्हर (अवलोकनकर्ता-नभ-पथनिर्देशक), वायरलेस आपरेटर (बेतारके तारका सचालक) और दो एयर गनर (वैमानिक बन्दूक चलानेवाले) सम्मिलित हैं।

(२) मीटिरियलाजिकल अधिकारी (Meteorological Officer)

(३) डब्लु.अे.अे.अेफ. पेराशूट पेकर (Parachute Packer)

(४) उड्डयन नियत्रण अधिकारी (Flying Control Officer)

(५) उड्डयन अनुरक्षण–१२ (Flight Maintenance–12)

(६) भूमिगत देखभाल–१८

(७) बमवर्षक दल–११

(८) बमवर्षकका ट्रेक्टर चालक (Bomber Tractor Driver)

(९) स्टार्टर बेट्री जिसका कार्य उड़ान–व्यवस्था कर्मचारी वर्ग द्वारा किया जाता है।

(१०) ऑइल बाउज़र चालक (Oil Bowzer Driver)

(११) पेट्रोल बाउज़र चालक (कारपोरल) एक ए. सी. के साथ इस प्रकार दो।

इस युगमे रूस और अमरीकाने विज्ञानमे इतनी उन्नति दर्शित की है कि उनके राकेटोने दूरोको बिलकुल समाप्त कर दिया है। मानवकी यह विजय सुननेमे अवश्य अच्छी लगती है, किन्तु यथार्थमे यह मानवताके लिए भारी ख़तरेका चिन्ह है। जैसा कि प्रेसिडेन्ट केनेडीने अपनी एक वार्तामे उल्लेख किया था कि प्रक्षेपास्त्रोको आक्रमणके उत्तरके रूपमे वार करनेके लिए भेजनेका निर्णय करनेके लिए उन्हे तीन या चार मिनटसे अधिक समय नही मिल पायेगा। यद्यपि सोवियत सघ काफी दूरी पर है, फिर भी इतनी अल्प अवधिका ही अनुमान लगाया जा सकता है। इससे इस बातकी झलक मिल जायगी कि आधुनिक राकेट या प्रक्षेपास्त्र कितनी भयंकर गतिसे उड़ सकते है। उनके द्वारा होनेवाले विनाशके स्वरूपका अनुमान केवल इसी तथ्यसे लगाया जा सकता है कि यदि एक प्रक्षेपास्त्र किसी देशपर वार करता है तो बदलेमें प्रेषित दूसरे प्रक्षेपास्त्रसे उस देशका कि जिसने पहला प्रक्षेपास्त्र भेजा था, भारी विनाश हो सकता था। **इस प्रकारके आधुनिक विकासके फलस्वरूप स्वयं सस्पूर्ण मानव जातिकी समाप्तिकी कल्पना की जा सकती है।**

बमवर्षक किस प्रकार लक्ष्यपर ठीक वार करता है

नागरिक सुरक्षामे लगे हुए व्यक्तियोको यह जानना रुचिकर तथा उपयोगी होगा कि बम किस प्रकार गिराना चाहिए तथा बमवर्षक किस प्रकार लक्ष्यपर ठीक रीतिसे वार करता है।

इस अध्यायमें पहले ही हम आक्रमणके प्रकारकी, यथा उच्चस्तरीय, निम्नस्तरीय, तथा उच्च और निम्न गोतामार बमवर्षाकी, चर्चा कर चुके है।

इस सम्बन्धमे पाठकका ध्यान उन विषयोकी ओर आकर्षित किया जाता है, जिनकी जाचकी आवश्यकता गत युद्धके आरम्भ होनेपर इग्लैण्डमे हुई थी और जिनका विस्तृत विवरण इसी अध्यायमे पहले दिया जा चुका है।

वह समस्या कि जिसके बारेमे सर्वप्रथम चर्चा करना यहा प्रस्तावित है, यह है कि किस प्रकार ठीक तथा असदिग्ध रूपसे लक्ष्यपर बम गिराया जाना चाहिए।

इस सम्बन्धमे बमको देखनेकी शक्तिमे सुधार बहुत महत्वपूर्ण है। यह उस प्रश्नके अतिरिक्त है, कि जिसके अनुसार लक्ष्यका ऐसा विवरण प्राप्त करना चाहिए कि जिससे सम्बन्धित 'स्क्वाड्रन्स' (Squadrons) उसे पहिचान सकनेमे समर्थ हो सकें तथा उसपर वार करने या उसे नष्ट करनेमे प्राप्त सफलता या विफलताके बारेमे भी जान सके। इस सम्बन्धमे यह याद रखने योग्य है कि १९१८–१९१८ के युद्धमे छाया–चित्रण द्वारा अनुसधानके महत्वको प्रदर्शित किया जा चुका था और इग्लैण्डकी स्वतन्त्र वायु–सेनाके लिए लक्ष्यके मानचित्रोको बनाते समय इसका उपयोग किया जा चुका था। १९१८ से लेकर द्वितीय विश्वयुद्धके आरम्भ होने तक वैमानिक छाया–चित्रणकी कला का बहुत कुछ विकास हो चुका था। इंग्लैण्डमे इसका केन्द्र फार्नबरो (Farnborough) मे स्थित छाया चित्रणका स्कूल था। नील नदीकी घाटी तथा ब्रिटेन और मध्यपूर्वमे स्थित पुरातत्वके स्थलोके सर्वेक्षणने इस विषयको और रुचिकर बना दिया था। विगत युद्धके पूर्व जर्मनीसे सम्बन्धित तटवर्ती स्थानो और उत्पादन केन्द्रोके छायाचित्र ब्रिटिश तथा फ्रासीसियो द्वारा लिये गये थे और इस तथ्यसे लक्ष्योके ऊपर ठीक रीतिसे बम गिरानेमे काफी हद तक सहायता मिली थी। वैमानिक छाया–चित्रणके अतिरिक्त, रात्रिमे लक्ष्यको प्रकाशित करना भी अेक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात है। इस सम्बन्धमे रात्रिके समय लक्ष्यको निरूपित करनेके लिए सहायकके रूपमे अस्थिर प्रकाशके उपयोगका महत्व स्वत. ही स्पष्ट है। विगत युद्धके पूर्व इस सम्बन्धमे सबसे महत्वपूर्ण अनुभव जर्मनोका था कि जिन्होने स्पेनके साथ हुए युद्धमे अस्थिर प्रकाशका प्रयोग सफलतापूर्वक किया था।

उच्च स्तरसे पहिचाननेके लिए छोटे आकारके लक्ष्य ठीक तरहसे प्रकाशित नही किये जा सकने और निम्नस्तरसे अस्थिर प्रकाशका उपयोग विमानचालकके

लिए बहुत ख़तरनाक है, क्योंकि ऐसी स्थितिमे हो सकता है कि विमान भूमितल तक उतर आये। समस्त लक्ष्योंपर विचार करते समय साधारणतः नौसैनिक जहाज़ोंपर आक्रमण तथा खुले और गहरे स्थानोंमें स्थायी रेलमार्ग और बाधोंपर बमबारीपर सबसे अधिक महत्वपूर्ण विचार किया गया है। एक बमवर्षक किस प्रकार ठीक रीतिसे लक्ष्यपर वार करता है, इसके लिए ऊपर बताये गये समस्त तथ्योंके साथ ही स्थितिसे सम्बन्धित अन्य अनेक समस्याओं तथा आक्रमण करनेके लिए निश्चित विशेष लक्ष्यकी स्पष्ट जानकारी की आवश्यकता है।

अब मै दूसरे सम्बन्धित विषयपर विचार करता हूं और वह है—किस प्रकार एक बमवर्षक लक्ष्यपर ठीक ठीक वार करता है? यह तो पाठकोंको स्पष्ट रूपसे ज्ञात हो ही चुका है कि रात्रिमे ठीक—ठीक बमबारी करना कठिन समस्या है। १९४४ तक इस तथ्यको स्पष्ट रूपसे मान्यता दी जा चुकी थी कि इग्लैण्ड के बमवर्षक दलकी अपेक्षाकृत अधिक वार करनेकी शक्ति केवल विमान, सख्या तथा गुणोंके कारण ही नहो थी, बल्कि वह अपेक्षाकृत अधिक क्षमताकी भी प्रतीक थी। इस सम्बन्धमे १९४४—४५ तक इंग्लैण्ड द्वारा की गयी प्रगतिके सम्बन्ध मे इसी अध्यायमे पहले दिये गये विवरणपर ध्यान देनेकी सलाह पाठको दी जाती है।

अब मै पाठकोंको इस विशेष तथ्यसे अवगत कराना चाहता हू कि बम गिरानेके पूर्व बमवर्षक वायुयानमे क्या होता है? विमान—तोपची — बमका निशाने लगानेवाला (Air-gunner-bomb-aimer) व्यक्ति, जो बमवर्षकसे बम गिराता है, दूरभाष (टेलिफोन) के द्वारा बमवर्षक विमानके कर्मचारियोंसे सदैव सम्पर्क स्थापित किये रहता है और लक्ष्यपर ठीक रीतिमे वार करनेके लिए उन सबसे सलाह मशविरा करना उसके लिए अत्यन्त आवश्यक होता है।

इस अध्यायमे पहलेही एक भारी बमवर्षकको उड़ाने तथा उसकी देखभाल के लिए आवश्यक कर्मचारियोंका विवरण मै दे चुका हूँ। यहा यह स्मरण रखना चाहिए कि विमान तोपची बमका निशाना लगानेवाले (Air Gunner Bomb aimer) की स्थिति ऐसी होनी चाहिए कि वह प्रत्येक वस्तुको स्पष्ट रूपसे देख सके, परन्तु वह बमवर्षकमे किस प्रकार बैठेगा या लेटेगा यह बम वर्षकके विशिष्ट प्रकारकी बनावट पर ही बहुत कुछ निर्भर रहेगा। उदाहरणार्थ, वेलिंगटन प्रकारके विमानमे उसे अपना मुख नीचे की ओर कर लेटना पड़ेगा जबकि व्हिटले या हेम्पडन प्रकारके विमानोंमे उसे बिल्कुल सीधे होकर बैठना पडेगा।

बम गिरानेके पूर्व विमान चालक विमानको भूमिकी सतहके समानान्तर ले जाता है तथा विमान विरोधी बन्दूको या हवामार तोपो (Anti-aircraft-gun) की गोलियोंकी परवाह नही करता। जिस समय विमान सतहपर गतिशील रहता है, उस समय विमान तोपची बमका निशाना लेनेवाला (Air-gunner bomb aimer) बिलकुल

ठीक रीतिमे लक्ष्यकी स्थिति निश्चित कर सकता है। [illegible] खोजबत्ती या खोज-बत्तिया (सर्चलाइट या सर्चलाइटे) उसे चकाचौध कर देती है। तथा वह लक्ष्य को नही देख सकता है। ऐसी स्थितियोमे उसे पुनः विमानको सतहपर उड़ानेकी विधिको अपनाना पडता है और यदि इस प्रकार के दूसरे प्रयास के पश्चात भी उसे अपने लक्ष्यपर वार करनेका प्रयास करना पडता है और इस प्रकार अपने लक्ष्यकी स्थिति निश्चित करनेमे सफलता नही मिलती, तो सामान्य रीतिसे विमानको उड़ानेके सिवाय उसके सामने और कोई रास्ता नही रहता। यह तथ्य पाठकको इस बातसे प्रभावित करेगा कि एक विमानकी स्थिति निश्चित करने और लड़ाकू विमानो तथा हवामार तोपो (Anti Air Craft Gun) को उनके कार्यमे सहायता पहुचानेके साथ ही खोज बत्तिया (Searchlight) एक बमवर्षकको लक्ष्यपर वार करनेमे कठिनाई प्रस्तुत कर सकती है।

एक 'हेम्पडन' प्रकारके विमानमे विमान तोपची–लक्ष्य साधक को दो अति-महत्वपूर्ण कार्य करने पड़ते है। जब तक कि विमान लक्ष्य तक नही पहुचता उसका प्रथम महत्वपूर्ण कर्तव्य विमान चालकको उस स्थान तक पहुचनेमे मार्गदर्शन करना है। यह माना जाता है कि उसे अपने गन्तव्य स्थान तक पहुचनके लिए समुद्र पार या अन्य स्थानोमे लम्बी उड़ानकी तकनीकका ज्ञान होना चाहिए। जब वह वहा पहुचता है तब वह लक्ष्यके निकट किसी वस्तुको चिन्हित करता है। इसका ज्ञान उसे पहलेसे ही होना चाहिए और यह लक्ष्यकी स्थितिको उचित रूपसे निश्चित करनेमे उसकी सहायता करता है। कभी–कभी वह इसे दूरसे ही देख लेता है, क्योकि उसके पहले गये हुए विमानोने वहा बम गिराये थे और इसके फलस्वरूप उत्पन्न अग्नि काफी दूरसे दिखायी देती है। इस अग्निके कारण लक्ष्यको बहुत ही स्पष्ट रूपसे देखा जा सकता है।

लक्ष्यपर पहुचनेसे पूर्व विमान तोपची लक्ष्य साधक, विमानकी ऊचाई तथा किस प्रकार गिराया जाय, इसके सम्बन्धमे विमान चालकसे सदैव विचार विमर्श करता रहता है। इसके अनुसार ही वह अपने उपकरणको समायोजित करता है, जिससे कि लक्ष्योको स्पष्ट रूपसे देख सकनेमे उसे सहायता मिलती है। बमको वास्तवमे गिराते समय गिरानेकी रीतिमे परिवर्तन होना सम्भव है, परन्तु पूर्वविवरणके अनुसार लक्ष्यको स्पष्ट रूपसे दिखानेवाले उपकरणमे कोई परिवर्तन नही होता।

अब, एक क्षणके लिए कल्पना करिये कि १० हजार फीटकी ऊचाईसे आक्रमण करनेकी एक योजना है। विमान तोपची–लक्ष्य साधक अपने उपकरणमे प्रतिपल देख रहा है तथा उसकी धूसर (Grey) किरणोसे वह लक्ष्यको जान जाता है। यह स्मरणीय है कि जब वह लक्ष्यके निकट पहुच रहा हो, तब उसके विमानमे आग लग जाय, उसे लड़ाकू विमानो या हवामार तोपों मे निकली हुई अग्नि का सामना करना

पड़े। इन सबके बावजूद वह अपने लक्ष्यके विषयमे सतर्क रहता है तथा बचावके लिए विमान चालकका मार्ग दर्शन करता है। ऐसा करते समय वह यह प्रदर्शित करते हुए कि उसका बम गिरानेका कोई विचार नही है, शत्रुको भ्रमित करनेका सदैव प्रयास करेगा। यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण क्षण होता है, जिसमे कि विमानचालक तथा विमान तोपची–लक्ष्य साधक के बीच यथासम्भव अधिकतम सहयोग और विचार–विमर्श आवश्यक है। विमानके कप्तानको शत्रुकी अग्निसे विमानको बचानेका भारी प्रयास करना चाहिए। उसे कभी उस ओर या इस ओर भी उड़ना पडेगा। यह कार्य प्रायः कठिन होता है, क्योंकि उसी समय कप्तान, विमान तोपची–लक्ष्य साधक तथा विमान चालकको यह स्मरण रखना पड़ता है कि वे लक्ष्यसे अधिक दूर न जाये और वे इस प्रकार बम न गिराये कि वे व्यर्थ हो। अन्ततः लक्ष्य तक पहुचा जाता है। ऐसे समय विमान, तोपची अथवा लक्ष्य साधकके निर्देशोके अनुसार पूर्णरूपसे आवश्यक स्तरपर उडता है। वह निर्देश देता है कि–बायी ओर, दाहिनी ओर, ठीक इसी प्रकार। यदि कारणवश लक्ष्य बांयी ओरको छूट जाता है, तो वह चिल्लाकर कहता है–– "बायी ओर–बायी ओर"।

ऐसे समयमें विमान चालक वैमानिक बन्दूक चालक और लक्ष्य साधकके निर्देशोका अक्षरशः पालन करेगा। सम्भव है कि लक्ष्य दाहिनी ओरको मुड़ जाय, तब उस दशामे विमान चालकको "दाहिनी ओर" की एक दीर्घ ध्वनि सुनायी देगी। जैसे ही लक्ष्य स्थल निश्चित करनेके हेतु प्रयुक्त विमान तोपची–लक्ष्य वेधकके उपकरणमे लक्ष्य दिखायी पड़े वैसे ही विमान चालक बहुत सावधानीसे विमानको आवश्यक स्तरपर ले जायगा। ऐसी स्थितियोमे लक्ष्य पूरी तरहसे स्पष्ट हो जाता है तथा विमान तोपची लक्ष्य साधक विमान चालकको चेतावनी देते हुए कहता है "सावधान हो, मै बम गिरा रहा हूँ।"

ये कुछ क्षण बहुत महत्वपूर्ण होते है और विमान तोपची–लक्ष्य–साधक तथा विमान चालककी सहायतासे ही कार्य पूरा होता है। ये अधिकारी लोग परस्पर इतने परिचित रहते है कि उनके स्वर के उतार–चढ़ावके अन्तरसे ही वे जो चाहते है, उसका वास्तविक अर्थ वे समझ जाते है।

तो धीरे–धीरे एक ओर लक्ष्य स्पष्ट होता जाता है, विमान चालक ठीक सीधा उडता है, किन्तु इस समय भी विमान तोपची–लक्ष्य साधक–प्रतिपल उसका मार्ग-दर्शन करता रहता है। ऐसे अवसरपर साधारणतः विमानको विमान–विरोधी अग्निका सामना करना पडता है। किन्तु विमान तोपची लक्ष्य साधक तथा विमान चालक फिर भी अपना कार्य धैर्यपूर्वक तथा कुशलतासे करते है। विमान तोपची लक्ष्य साधक अनेको बार यह देखता है कि हवामार तोपोसे उत्पन्न अग्निके कण उसपर गिर रहे हैं–मानो किसी विशिष्ट वस्तुपर वर्षाकी बूँदे गिर रही हो। बहुत सी गोलियां ऐसी तीव्र गतिसे आती है कि जैसे सर्प आता है और प्रायः ऐसा लगता है कि जैसे नभमें कोई दुर्घटना हो गयी है।

किन्तु यह सब सोचनेके लिए जरा भी समय नही रहता। ऐसी स्थितियोंमे अनेको अवसरोंपर लक्ष्यकी स्थिति मलिन हो उठती है। काले और सफेद बमोके फूटनेसे विमान हिल उठता है, परन्तु फिर भी विमान–चालक विमानको पूरी तरहसे आवश्यक स्तरपर चलाता है ताकि लक्ष्यको भेदनेका कार्य पूरा हो सके।

इसी प्रकार बेतारके तारका चालक (Wireless Operator) सब कुछ भूलकर केवल इसी बातको जाननेमे लग जाता है कि कोई शत्रु विमान निकट तो नही आरहा है। विमान–तोपची–लक्ष्य साधक–अपने मानचित्रको देखता है और प्रतिपल यह अवलोकन करता रहता है कि किस स्थानपर बम फूटा है।

विमान–तोपची–लक्ष्य साधक जो कि अपने कार्य तथा उपकरणोंमे भलीभाति परिचित है, सदैव व्यस्त रहता है और अपना ध्यान लक्ष्यपर ही केन्द्रित रखता है और उचित अवसरके प्रस्तुत होते ही वह बम या बमो के विमानमे निकलने और लक्ष्यपर गिरनेके लिए केवल बटन दबा देता है।

यह वह समय होता है कि जब विमान लक्ष्यके बिलकुल ऊपर रहता है और यह देखना है कि एक या अनेक बम कहा–कहा फूटे है, और तदनुसार बमके गिरनेके स्थानको अपने मानचित्रमे चिन्हित करना, ताकि लौटनेपर सत्य प्रतिवेदन दिया जा सके, विमानमे बैठे हुए अधिकारियोके लिए सम्भव होता है।

इस प्रसगमे यह स्मरण रखना चाहिए कि हवामार तोपोसे निकली हुई अग्निके साथ ही शत्रुदलके लड़ाकू विमानोके कारण ऐसी कठिन परिस्थितियोमे विमान चालकको जो कार्य करना पडता है, उसके लिए बहुत बडे अशमे तीक्ष्ण बुद्धि और साहसकी आवश्यकता है और वह विमान तथा वैमानिक कर्मचारियोके सर्वाधिक हितको ध्यानमे रखते हुए यह सोचता है कि अपना कार्य सम्पन्न कर अड्डेपर लौट जाने के लिए वह क्या अधिकसे अधिक अच्छा कर सकता है।

उपर्युक्त विवरण देनेका उद्देश्य पाठकोको इस बातसे आश्वस्त कर देना है कि बम गिरानेका कार्य बहुत आसान नही है और यदि किसी विशेष स्थानके नागरिक सुरक्षा कर्मचारी **शक्तिशाली खोजबत्तियों** (Searchlights), **हवामार तोपों के द्वारा प्रेरित अग्नि या अपने लड़ाकू विमानोंके सामयिक उपयोगसे विमान तोपची लक्ष्य साधकको चकाचौंध करनेमें समर्थ होते हैं** तो यह अधिक सम्भव है कि या तो विमानको गोलियोका निशाना बनना पड़े अथवा उसके लिए लक्ष्यपर वार करना असम्भव हो जाय या अपने अड्डेपर बिना कार्य पूर्ण किये वह लौट जाये। **इसीलिये आवश्यक सावधानीके उपायोंके महत्वको सरलतासे समझा जा सकता है।**

हवाई आक्रमणसे क्षति

जब हवाई आक्रमणके द्वारा हुई क्षतिके बारेमे कोई सोचता है, तो उसकी कल्पनामे एक रोमान्चकारी चित्र उभर पड़ता है। १९४८ मे युद्धके पश्चात

युरोप गया था, तब विशेषकर जर्मनीमे मैने जो दृश्य देखे थे, उन्हें मै भूल नही । जब १९३९ मे युद्ध आरम्भ हुआ था और १९४० मे भी जो अनुभव मुझे प्राप्त था, वह निश्चय ही भयकर था और डकिर्कसे श्री चर्चिल द्वारा ब्रिटिश सेनाके ा आनेके पूर्व मनकी जो अस्तव्यस्त स्थिति थी, उसे मै भूल नही सकता । उस ब्रिटेनके समस्त व्यक्ति–तथा मै भी–हम सब सोचा करते थे कि किसी भी समय पारी आनेवाली है ।

बर्लिन, हेमबर्ग, ब्रेमेन और फ्रेकफर्टकी भयकर दशा देखकर १९४८ मे ही मै ाच सका था कि हवाई आक्रमणसे कितनी क्षति होती है । इन नगरोमे मीलो क मैने गृहो तथा इमारतोको बिना छतोके देखा था । दीवाले डगमगाती हुई एक दयनोय चित्र प्रस्तुत कर रही थी । बर्लिनमे मैने देखा कि हवाई बमबारीके ारूप रीच्स्टाग (Reichstag) की इमारत पूर्णतः नष्ट हो चुकी थी । ो पाते पूर्णतः छिन्न–भिन्न दशामे थी और अनेक स्थानोमे मैने देखा कि उन ा एक सिरा यदि भूमि पर था, तो दूसरा एक वृक्षकी चोटी तक चुका था । पोलैण्डकी दशा (विशेषकर वारसाके निकट के स्थान) तो एक र्षक दृश्य (a Scene of Horror) प्रस्तुत कर रही थी । किन्तु २ मे जब मै जर्मनो तथा पोलैण्ड गया था, तब मैने देखा कि बिलकुल ाहरी बस्तियोका निर्माण हो चुका था । ऐसा लगता था कि मानो विगत युद्धके आक्रमणके पश्चात् स्थानाके पुराने नामक अतिरिक्त और कुछ भी शेष नही । इन दृश्योसे इस प्रकारके आक्रमणसे होनवाली क्षतिका अनुमान लगाया जा है । विगत वर्ष जब मै मास्को गया था तब मैने देखा कि नगरका अधिकाश मनको उपनगरोका निर्माण नये सिरेसे हो चुका है । वस्तुतः हवाई आक्रमणसे ो क्षति अत्यन्त व्यापक थी और उसका स्मरण मात्र रोमाचकारी है ।

१९४० मे इग्लैण्डमे तडित–गति (Blitz) से उत्पन्न अग्निकाण्डके समय निवासियोकी जो कठिन परीक्षा हुई थी उसके बारेमे कोई भी व्यक्ति ा कर सकता है । वह एक ऐसा दृश्य था कि दूर–दूर तक केवल चमकती हुई अग्नि ाय और कुछ नही दिखायी देता था । ऐसे दृश्यको केवल "रोमाचकारी" और शक" ही कहा जा सकता था ।

इसी प्रकार वारसामे इतनी अधिक क्षति हुई थी कि उसके एक बड़े अशको नये बनाना पडा था । ऐसा दुर्भाग्य इन देशोका रहा है, फिर भी भावी स्थितिकी अनिका अनुभव करते हुए बेलजियम जैसे कुछ देशोने आत्म समर्पण किया था और निवासियोकी तीक्ष्ण बुद्धि तथा अर्न्तदृष्टि के कारण कुछ मामलोमे इस प्रकारकी बचाव हो गया था ।

कोलोन (Cologne) तथा अन्य औद्योगिक केन्द्रोपर बमबारीके बदले ानी द्वारा १९४२ मे ब्रिटेनपर तथाकथित "बायडेकर चढाइया" (Baedekar

aids) की गयी थी। इनका स्पष्ट उद्देश्य नगरो तथा ऐतिहासिक सौन्दर्य
। इमारतोको नष्ट करना था। अपने इस उद्देश्यके परिपालनमे, विद्वेषपूर्ण क्रोध मे
जियोने यार्क, बाथ, केन्टरबरी, एक्सटर और नारविच आदि नगरोपर वार किया
। फलस्वरूप इन्हें काफी क्षति पहुची थी यद्यपि यह क्षति उतनी नही थी,
तनी कि, जर्मनी, पोलैण्ड और विशेषकर रूसके अनेक स्थानोको पहुंचायी गयी
। यार्कका गिल्ड हाल भस्म हो गया था, एक्सटरका धार्मिक स्थल क्षतिग्रस्त हो गया
, बाथकी सुन्दर गलियोमे क्षतिके चिन्हअकित थे और केन्टरबरीमे प्राचीन
लैण्डके अनेक अवशेष नष्ट कर दिये गये थे। प्रत्यक्ष रूपसे इनमेसे किसी भी इमा-
ाका सैनिक अथवा औद्योगिक महत्व नही था। तो हम जब हवाई बमबारीसे हुई
तिकी बात करते है, तब हम सबको यह तथ्य स्मरण रखना चाहिए कि प्रत्येक स्थान
ुरक्षित है, चाहे वह सैनिक लक्ष्य हो, औद्योगिक प्रतिष्ठान हो, महत्वपूर्ण इमारतोका
ान हो, धार्मिक स्थल हो, बालकाको पाठशाला हो याकि हताहतोका उपचार करने-
ला चिकित्सालय हो।

चाहे युक्तिपूर्ण बमबारी हो या किसी अन्य प्रकारकी बमबारी हमारे समयके युद्धमे
ानिक श्रष्ठता द्वारा ही सेनाओकी श्रेष्ठताको प्राप्त करनेकी ओर अग्रसर हुआ जा
ता है। इससे पाठकका हवाई बमबारीसे होनेवाली क्षतिकी एक झलक मिल जाती है
र उस यह अनुभव हो जाता है कि वह महत्वपूर्ण है। विगत युद्धमे भयकर विस्फोटक
र आग लगनवाले बमोके अतिरिक्त जर्मनी द्वारा युद्धके अन्तिम चरणोमे अविष्कृत प्रक्षे-
त्रो (Rockets) के द्वारा भी अपार क्षति हुई थी। जापानके हिरोशिमा और नागा-
कीके अतिरिक्त और कही नाभिकीय आक्रमण नही हुआ था। नाभिकीय आक्रमणके
रेमे पाठकोको इस पुस्तकके प्रक्षेपास्त्र, अणु और परमाणु बमोके अध्यायको पढ़नेका
र्देश दिया जाता है, क्योकि उसके कुछ भाग तथा विषयसे सम्बन्धित अन्य भाग यह
ात कर देते है कि ख़तरे केवल बड़ ही नही बल्कि रोमहर्षक भी है। स्पष्टत: यदि
रीकापर आक्रमण होता है, तो बदलेमे रूस भी साफ हो जायगा। यह मत प्रेसि-
ट केनेडीके विचारोके अनुकल ही है। लम्बी दूरियोके बावजूद भी जब ऐसी
ति होती है, तो उन स्थानोंकी गति क्या होगी कि जहा हवामार तोपों, लड़ाकू
मानो (Fighters), गुब्बारोके जाल, (Barrage Balloons) खोजबत्तियो
Searchlights) या आधुनिक प्रक्षेपास्त्रोकी व्यवस्था नही है और जहाके निवासी
ा कुछ केवल सयोगो तथा भगवानकी इच्छापर छोड़ देना पसन्द करते है।

यदि एक छोटा–सा बम कलकत्ता जैसे वडे नगरमे आतकका निर्माण कर सकता है
हवाई आक्रमणसे होनेवाली क्षतिकी बात मुश्किलसे ही बलपूर्वक कही जा सकती है।

सर्वसामान्य प्रकारोसे भी होनेवाली क्षतिके सम्बन्धमे मै पाठकोको इग्लैण्डमे
वेन्ट्री (Coventry) की अग्नि – परीक्षाके बारेमे बताना चाहता हू।

जब मै युरोप गया था, तब विशेषकर जर्मनीमे मैने जो दृश्य देखे थे, उन्हें मै भूल नही सकता। जब १९३९ मे युद्ध आरम्भ हुआ था और १९४० मे भी जो अनुभव मुझे प्राप्त हुआ था, वह निश्चय ही भयंकर था और डंकिर्कसे श्री चर्चिल द्वारा ब्रिटिश सेनाके वापिस आनेके पूर्व मनकी जो अस्तव्यस्त स्थिति थी, उसे मै भूल नही सकता। उस समय ब्रिटेनके समस्त व्यक्ति–तथा मै भी–हम सब सोचा करते थे कि किसी भी समय अपनी पारी आनेवाली है।

बर्लिन, हेमबर्ग, ब्रैमेन और फ्रेंकफर्टकी भयकर दशा देखकर १९४८ मे ही मै यह सोच सका था कि हवाई आक्रमणसे कितनी क्षति होती है। इन नगरोमे मीलो दूर तक मैने गृहो तथा इमारतोको बिना छतोके देखा था। दीवाले डगमगाती हुई दशामे एक दयनीय चित्र प्रस्तुत कर रही थी। बर्लिनमे मैने देखा कि हवाई बमबारीके फलस्वरूप रीच्स्टाग (Reichstag) की इमारत पूर्णतः नष्ट हो चुकी थी। ट्रामकी पाते पूर्णतः छिन्न–भिन्न दशामे थी ओर अनेक स्थानोमे मैने देखा कि उन पातोका एक सिरा यदि भूमि पर था, तो दूसरा एक वृक्षकी चोटी तक पहुच चुका था। पोलैण्डकी दशा (विशेषकर वारसाके निकट के स्थान) तो एक लोमहर्षक दृश्य (a Scene of Horror) प्रस्तुत कर रही थी। किन्तु १९६२ मे जब मै जर्मनो तथा पोलैण्ड गया था, तब मैने देखा कि बिलकुल नयी शहरी बस्तियोका निर्माण हो चुका था। ऐसा लगता था कि मानो विगत युद्धके हवाई आक्रमणके पश्चात् स्थानाके पुराने नामक अतिरिक्त और कुछ भी शेष नही रहेगा। इन दृश्योमे इस प्रकारके आक्रमणमे होनवाली क्षतिका अनुमान लगाया जा सकता है। विगत वर्ष जब मै मास्को गया था तब मैने देखा कि नगरका अधिकाश और अनको उपनगरोका निर्माण नये सिरेसे हो चुका है। वस्तुतः हवाई आक्रमणसे होनवालो क्षति अत्यन्त व्यापक थी और उसका स्मरण मात्र रोमाचकारी है।

१९४० मे इग्लैण्डमे तडित–गति (Blitz) से उत्पन्न अग्निकाण्डके समय वहाके निवासियोकी जो कठिन परीक्षा हुई थी उसके बारेमे कोई भी व्यक्ति कल्पना कर सकता है। वह एक ऐसा दृश्य था कि दूर–दूर तक केवल चमकती हुई अग्नि के सिवाय ओर कुछ नही दिखायी देता था। ऐसे दृश्यको केवल "रोमाचकारी" और "विनाशक" ही कहा जा सकता था।

इसी प्रकार वारसामे इतनी अधिक क्षति हुई थी कि उसके एक बड़े अशको नये सिरेसे बनाना पड़ा था। ऐसा दुर्भाग्य इन देशोका रहा है, फिर भी भावी स्थितिकी अनिवार्यताका अनुभव करते हुए बेलजियम जैसे कुछ देशोने आत्म समर्पण किया था और वहाके निवासियोकी तीक्ष्ण बुद्धि तथा अर्न्तदृष्टि के कारण कुछ मामलोमे इस प्रकारकी क्षतिसे बचाव हो गया था।

कोलोन (Cologne) तथा अन्य औद्योगिक केन्द्रोपर बमबारीके बदले मे जर्मनी द्वारा १९४२ मे ब्रिटेनपर तथाकथित "बायडेकर चढाइया" (Baedekar

Raids) की गयी थी। इनका स्पष्ट उद्देश्य नगरो तथा ऐतिहासिक सौन्दर्य की इमारतोको नष्ट करना था। अपने इस उद्देश्यके परिपालनमें, विद्वेषपूर्ण क्रोध मे नाजियोने यार्क, बाथ, केन्टरबरी, एक्सटर और नारविच आदि नगरोपर वार किया था। फलस्वरूप इन्हें काफी क्षति पहुची थी यद्यपि यह क्षति उतनी नही थी, जितनी कि, जर्मनी, पोलैण्ड और विशेषकर रूसके अनेक स्थानोको पहुचायी गयी थी। यार्कका गिल्ड हाल भस्म हो गया था, एक्सटरका धार्मिक स्थल क्षतिग्रस्त हो गया था, बाथकी सुन्दर गलियोमे क्षतिके चिन्हअकित थे और केन्टरबरीमे प्राचीन इग्लैण्डके अनेक अवशेष नष्ट कर दिये गये थे। प्रत्यक्ष रूपसे इनमेसे किसी भी इमारतका सैनिक अथवा औद्योगिक महत्व नही था। तो हम जब हवाई बमबारीसे हुई क्षतिकी बात करते है, तब हम सबको यह तथ्य स्मरण रखना चाहिए कि प्रत्येक स्थान असुरक्षित है, चाहे वह सैनिक लक्ष्य हो, औद्योगिक प्रतिष्ठान हो, महत्वपूर्ण इमारतोका स्थान हो, धार्मिक स्थल हो, बालकाको पाठशाला हो याकि हताहतोका उपचार करनेवाला चिकित्सालय हो।

चाहे युक्तिपूर्ण बमवारी हो या किसी अन्य प्रकारकी बमबारी हमारे समयके युद्धमे वैमानिक श्रष्ठता द्वारा ही सेनाओकी श्रेष्ठताको प्राप्त करनेकी ओर अग्रसर हुआ जा सकता है। इससे पाठकको हवाई बमबारीसे होनेवाली क्षतिकी एक झलक मिल जाती है और उस यह अनुभव हो जाता है कि वह महत्वपूर्ण है। विगत युद्धमे भयकर विस्फोटक और आग लगनवाले बमोके अतिरिक्त जर्मनी द्वारा युद्धके अन्तिम चरणोमे अविष्कृत प्रक्षेपास्त्रो (Rockets) के द्वारा भी अपार क्षति हुई थी। जापानके हिरोशिमा और नागासाकीके अतिरिक्त और कही नाभिकीय आक्रमण नही हुआ था। नाभिकीय आक्रमणके बारेमे पाठकोको इस पुस्तकके प्रक्षेपास्त्र, अणु और परमाणु बमोके अध्यायको पढ़नेका निर्देश दिया जाता है, क्योकि उसके कुछ भाग तथा विषयसे सम्बन्धित अन्य भाग यह दर्शित कर देते है कि खतरे केवल बड़ ही नही बल्कि रोमहर्षक भी है। स्पष्टत: यदि अमरीकापर आक्रमण होता है, तो बदलेमे रूस भी साफ हो जायगा। यह मत प्रेसिडेण्ट केनेडीके विचारोके अनुकल ही है। लम्बी दूरियोके बावजूद भी जब ऐसी स्थिति होती है, तो उन स्थानोकी गति क्या होगी कि जहा हवामार तोपो, लड़ाकू विमानो (Fighters), गुब्बारोके जाल, (Barrage Balloons) खोजबत्तियो (Searchlights) या आधुनिक प्रक्षेपास्त्रोकी व्यवस्था नही है और जहाके निवासी सब कुछ केवल सयोगो तथा भगवानकी इच्छापर छोड़ देना पसन्द करते है।

यदि एक छोटा–सा बम कलकत्ता जैसे बड़े नगरमे आतकका निर्माण कर सकता है तो हवाई आक्रमणसे होनेवाली क्षतिकी बात मुश्किलसे ही बलपूर्वक कही जा सकती है।

सर्वसामान्य प्रकारोमे भी होनेवाली क्षतिके सम्बन्धमे मै पाठकोको इंग्लैण्डमे कोवेन्ट्री (Coventry) की अग्नि – परीक्षाके बारेमे बताना चाहता हूं।

१९४० के १४–१५ नवम्बरकी उज्ज्वल चाँदनी रात्रिमे कोव्हेन्ट्री (Coventry) के मिडलेण्ड नगरपर जर्मन बमवर्षक तरंगोंकी भांति उडे और उन्होने ४५० टन आग लगनेवाले (Incendiary) और भयकर विस्फोटक बम गिराये थे । फलस्वरूप वहा व्यापक पैमानेपर विनाश हुआ था । पूरेके पूरे जिले खण्डहर बना दिये गये थे । दो सौ व्यक्ति मृत हुए थे, आठ सौ आहत तथा पैतीस हजार व्यक्ति गृहहीन बना दिये गये थे । चौदहवी शताब्दि का गिरजा घर भस्म हो गया था । शहरके लिए खतरा पैदा करने-वाली अग्नि केवल डायनेमाइट (Dynamite) द्वारा ही रोकी जा सकी थी। ब्रिस्टल, पोर्टस्माउथ, साउथेम्पटन, बर्मिघम, लीवरपूल्व, मैनचेस्टर तथा अन्य अनेक केन्द्रोंको हवाई आक्रमणके फलस्वरूप बहुत भारी क्षति सहनी पडी थी । दिसम्बर १९४० मे अग्निबमो (Incendiary Bombs) के द्वारा गिल्ड हालमे आग लगायी थी, तब लदन नगरके निजधरी भीमकाय (Legendary giants) पात्र–गाग तथा मेगाग –मलवेके ढेरके नीचे दब गये थे । वेस्ट मिनिस्टरको भी उतनी ही क्षति पहुची थी । लदनमे कभी जो मध्यकालका सबसे अच्छा भवन था उस डीमरी (Deamery) की जली हुई धन्निया, खिडकियोके खाली चौखटे, दग्ध तथा गढोसे पूर्ण दीवाले हवाई आक्रमणसे उस स्थानकी हुई क्षतिके पश्चात्–देखने योग्य वस्तुए थी।

इगलैण्डपर जर्मनीके मर्यादाहीन आक्रमणके जो नागरिक शिकार हुए थे, उनकी कहानी अत्यन्त दयनीय थी । व्यक्तिगत मानव जीवन एकाएक समाप्त कर दिया गया था । निर्दोष तथा कठिन परिश्रमकी स्थितिके खण्डहरोके मध्य स्तभित तथा अत्यन्त दीनकी भाति लोग शेष रह गये थे ।

जब हम हवाई आक्रमणसे क्षतिके बारेमे सोचते है, तब विगत युद्धमे १९४० की आठ अगस्तसे २१ अक्तूबर तक हुई लडाईमे इग्लैण्डपर जो कुछ हुआ था, उसे हम नही भूल सकते । दिनके प्रकाशमे ब्रिटेनपर हुए हवाई आक्रमणके प्रथम चरणमे तटवर्ती नगरोपर बमबारीसे प्रारम्भ कर यह आक्रमण लदन तथा समुद्र तटके बीचमे स्थित हवाई अड्डोपर भी किया गया था । यह आक्रमण विफल हो गया था ओर कुछ समय तक शान्ति बनी रही । २४ अगस्तसे ५ सितम्बरतक इस आक्रमणकी दिशा आन्त-रिक अचलमे स्थित हवाई अड्डो और विमान बनानेवाले कारखानोकी ओर उन्मुख की गयी थी । पुन. इस आक्रमणको पराजित कर दिया गया था । तृतीय चरणके रूपमे लदनपर सामूहिक आक्रमण हुआ था । जब यह आक्रमण हो रहा था, तब क्रमश: ब्रिटेनकी तुलनामे जर्मनोकी हानि बढती ही गयी थी । इस चरणमे जर्मनोकी सम्पूर्ण हानि ८८३ विमान थी । यद्यपि बमवर्षक द्वारा चोरीसे वारकर भाग जानेकी क्रियामे देश कभी भी पूर्णत मुक्त नही हो सका था, फिर भी जैसे–जैसे समय बीतता गया, वैसे–वैसे विमान विरोधी सुरक्षा साधनोकी आश्चर्यजनक सक्रियता तथा रात्रिकालीन लडाकू विमानोके द्वारा रात्रिमे की जानेवाली बमबारी समाप्त होती गयी थी । इग्लैण्डमे

जर्मन बमवर्षको द्वारा अत्यधिक विनाश किया गया था, किन्तु निर्भय होकर अपना कार्य करते रहनेवाले अनेको अज्ञात नागरिकोने इसे विफल कर दिया था।

यहां यह ध्यानमे रखने योग्य है कि विगत युद्धके अन्तमें यद्यपि जर्मन गैस आक्रमण करना चाहते थे, किन्तु वास्तवमें उन्होने ऐसा नही किया। फिर भी विगत युद्धमे एथियोपियामे इटलीने वास्तवमे गैसका उपयोग किया था। इस सम्बन्ध मे पाठकोको निर्देशित किया जाता है वह इस पुस्तकका "रासायनिक (Chemical), जीवाणु (Biological) और रेडियो विकिरण सम्बन्धी (Radiological) युद्ध" नामक आठवा अध्याय पढ़े। गैसको छोड़ने तथा गैस बम गिराने दोनोके उपयोगसे क्षति होती है। इस युगमे कीटाणु नाशक औषधियोमे इतना विकास किया जा चुका है कि किसी भी विशिष्ट स्थानके मानव जीवनको क्षति और कष्ट पहुचानेके साथ ही वहाकी समस्त फसल, सागसब्जी और पशुओंके चारेको नष्ट किया जा सकता है। और जब आक्रान्ता महत्वपूर्ण कारखानो और उपलब्ध श्रमिक शक्तिको नष्ट न कर केवल किसी विशिष्ट स्थानका आत्मसमर्पण चाहता है, तब रसायनिक युद्धप्रणाली (Chemical Warfare) को भी बहुत महत्व दिया जाता है।

जब जल वितरणकी प्रमुख नालियाँ तथा जलागार जीवाणुके उपयोगसे प्रभावित होते है, तब क्षति बहुत अधिक होती है। ऐसे जलके कारण जो कि राष्ट्रीय स्थितिका मरुदण्ड है सम्पूर्ण जनसख्या कष्टमे पड़ जाती है।

किन्तु नाभिकीय शक्ति द्वारा की गयी क्षति सबसे बुरी है। इस सम्बन्धमे प्रत्येक व्यक्ति केवल अनुमान ही करता रहता है कि नाभिकोय युगसे मानवता समाप्त हो जायगी या बच जायगो। विश्व के किसी माग मे भी मार करन की बात (Global Aerospace delivery system) और नाभिकीय अणुशक्ति (Nuclear fire power) ने सम्पूर्ण विश्वको एक अखाड़ेमे के रूपमे सिकोड़ दिया है। भविष्यमे मोर्चेकी पहली पक्तिम हमारे गृह मोर्चे ही होंगे, ऐसी सम्भावना है।

जब हम हवाई बमबारीसे क्षतिकी बात करते है, तब एथियोपियामे मुसोलिनीकी वायुसेना, स्पेनके गृहयुद्धमे जर्मनी की वायुसेनाशक्ति ओर चीनमे जापानियो द्वारा किये गये बमबारी प्रदर्शनोको हमे स्मरण रखना चाहिए। परन्तु हिरोशिमा और नागासाकीपर अणु बमकी वर्षाके साथ ही ब्रिटेन, जर्मनी और जापानके प्रदेशोपर बमबारीके विनाशकारी परिणामोको कभी नही भुलाया जा सकता। इनसे ही यह हुआ था कि आधुनिक अस्त्र क्या कर सकते है ? युद्धकालीन विकासको तीव्र प्रदर्शित गति प्रदान करनेके फलस्वरूप प्राप्त अन्तर्महाद्वीपीय बमवर्षकों, थरमोन्यूक्लियर बमोसे सज्जित प्रक्षेपास्त्रो और वारहेड्स (Warheads) का युद्धोन्तर कालमे जो विकास हुआ है, उसके कारण आज एक ऐसे पैमानेपर पूर्ण युद्ध सम्भव हो गया है कि जिसके बारेमे सम्पूर्ण मानव इतिहासमें कभी कल्पना भी नही की गयी थी।

द्वितीय विश्व युद्धकी सैनिक कार्यवाहियोके प्रत्यक्ष फलस्वरूप नागरिक हताहतोकी समस्त सख्या का एक अल्प विवरण हवाई आक्रमणसे होनेवाली क्षति के सम्बन्धमे किसी भी व्यक्तिके मस्तिष्क पटलपर अमिट चिन्ह अकित करनेमे सहायक होगा। पाच वर्षोंकी अवधिमे सैनिक लक्ष्योपर जर्मन बमवर्षकों तथा प्रक्षेपास्त्रोके आक्रमणके फलस्वरूप इकसठ हजार ब्रिटेन नागरिक हत हुए थे। इंग्लैण्ड तथा अमरीकाके बमवर्षको द्वारा जर्मनीपर किये गये १५ लाख धावोके फलस्वरूप, स्वय जर्मनोकी गणनानुसार, लगभग २५०,००० नागरिक और महत्वपूर्ण स्थलोकी बमबारीके सर्वेक्षणके अनुसार, ३०५००० नागरिक हत हुए थे। हवाई आक्रमणोके कारण ७५ लाख जर्मन व्यक्ति गृहहीन बना दिये गये थे।

सामूहिक टी. एन. टी. (T.N.T.) तथा आग लगानेवाले (Incendiary) आक्रमणोंके फलस्वरूप हेमबर्ग, कासेल, डार्म्सटेट (Darmstadt) और ड्रेसडनमे पूर्व–आणविक अग्नि तूफान (Pre-atomic fire storms) उत्पन्न हुआ था। एक नाभिकीय अस्त्रसे कष्टदायी तप्त वायुके झोके, जिनका व्यास सहस्रो गज का था, गगनधूलि के समान नभमे मीलो तक उठते जाते थे और आसपासके खुले स्थानोमे इनके द्वारा लोग रक्तहीन हो जाते थे, तीन फीट मोटे वृक्ष टूट जाते थे तथा ईट और पत्थर जलने लगते थे।

अगस्त १९४३ मे हेम्बर्गमे जो अग्निकाण्ड हुआ था, उसमे कहा जाता है कि साठ हजारसे एक लाख जर्मनीके निवासी मारे गये थे। १९४५ के मार्च माहमे टोकियोमें अग्नि–बमो (आग लगानेवाले बमो) के द्वारा जो बडा आक्रमण किया गया था, कहा जाता है कि उसमे ९४००० व्यक्ति मारे गये। यह सख्या हिरोशिमा या नागासाकीमे मृत व्यक्तियोकी संख्यासे कही अधिक थी। श्री यूजिन एम्म (Mr. Eugene Emme) के एक लेखके अनुसार, जिससे इस पैराग्राफकी उपयुक्त सख्याए ली गयी है, ज्ञात होता है कि द्वितीय विश्वयुद्धमे १,६०,००००० (एक करोड साठ लाख) रूसी मारे गये थे। उपर्युक्त समस्त विवरणोके साथही अन्य अनेक विवरण हवाई आक्रमणके रोमाचकारी परिणामोके बारेमे निश्चय ही प्रभावित करेगे।

अतएव जब मै यह मत प्रकट करता हूँ कि नाभिकीय युद्ध मानवताके अतिजीवन (Survival) की लडाई होगी तब उसका अर्थ वही है कि जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। इसी प्रकार जब मै यह कहता हूँ कि मनुष्योकी मृत्युके साथ ही हम पशुओकी हानि, मॉस–मछली तथा अन्य खाद्यपदार्थोका दूषित होना विस्मृत नही कर सकते तब इसका आशय वही है, जिसका कि विवरण ऊपर किया जा चुका है। ऐसी स्थितिमे समस्त वनस्पतियाँ दूषित हो सकती है तथा पशुओका चारा खाना भी खतरनाक हो सकता है। इससे हवाई आक्रमणकी क्षतिके सम्बन्धमे कोई भी व्यक्ति सरलतासे सोच सकता है।

उपर्युक्त विवरण काफी दु:खपूर्ण हो चुका है और लेखकका उसे और अधिक दु:खपूर्ण बनानेका इरादा नही है फिरभी यह स्मरण रखना चाहिए कि हवाई आक्रमणका परिणाम सर्वतोमुखी है और पृथ्वीकी प्रत्येक वस्तुकी स्थितिको वह प्रभावित करता है ।

विनाशके ऐसे भयकर साधनो और अभिकर्ताओके विरुद्ध भी सुरक्षाके उपायके सम्बन्धमे अब हमें विचार करना है। इस पुस्तकके विभिन्न अध्यायोमे अलगसे जो कुछ वर्णित किया जा चुका है, उसके अतिरिक्त आगामी अध्यायमे भी इस सम्बन्धमे प्रयास किया गया है।

– अध्याय १३ –

हवाई आक्रमणके विरुध्द बचावके उपाय

१ वराज गुब्बारे (Barrage Balloons)
२ हवामार तोपें
३ लड़ाकू विमान
४ खोज बत्तियाँ
५ छद्मावरण (Camouflage)
६ चेतावनी प्रथा
७ रेडार (Radar)

हवाई आक्रमणके विरुद्ध बचावके उपायोंमे सबसे महत्वपूर्ण वस्तु मानवीय तत्व है। अनुभवके द्वारा विशेषकर हमने जो ज्ञान प्राप्त किया है उससे यह तथ्य प्रमाणित होता है। जब युद्ध प्रारम्भ हुआ था तब इग्लैण्ड तैयार नही था, परन्तु हिटलरके अत्यन्त शक्तिशाली अस्त्रोका सामना करनेके लिए लोग तैयार हो चुके थे। वे किसी भी त्यागके लिए, कि जो उनमे अपेक्षित था, तैयार थे। जब सेनामे अनिवार्य भर्ती प्रारम्भ हुई तब उन्होने तुरन्त स्वेच्छा पूर्वक तथा बडे हर्षके साथ इसके लिए अपने को अर्पित किया था ओर अपने कर्तव्य पर वे डट रहे थे। कोवेन्ट्री पर इतनी तीव्र बमबारी हुई थी कि अन्य अनेक स्थानोंके लोगोका नैतिक तथा मानसिक बल किसीभी प्रतिकारके लिए अयोग्य हुआ होता, परन्तु वहाँके लोग तब तक अपने कर्तव्य पर अडे रहे और आक्रमणके प्रमुख अविचल रूपको वहन करते रहे जब तक कि वह समय नही आ गया जिसमे वे अपने धैर्य, [illegible] और कठिन परिश्रमके सुपरिणाम देख सके। उस समय पुरुष महिलाये, सबने समान रूपसे जीवनके प्रत्यक क्षेत्रमे कार्य किया। महिलाओंने वैतनिक तथा अवैतनिक रुपसे नागरिक प्रतिरक्षा स्वय सेविकाओ का कार्य किया। उन्होने वाहन चालको, नागरिक प्रतिरक्षा अधिकारियो और परिचारिकाओ तथा चिकित्सकोका कार्य किया। उन्होने खाद्यान्न उत्पादन करनेके क्षेत्रमे कार्य किया, जब सक्रिय कार्य करनेके कारण पुरुषो की सख्यामे ह्रास हो गया था, तब अपने प्रतिरूप पुरुषकी भाति कार्य करते हुये उन्होने अपने देशमे नागरिक प्रतिरक्षा की अति महत्व पूर्ण समस्याको हलकर उसे सचालित करते रहनेमे सहायता दी। वृद्ध अवकाश प्राप्त व्यक्तियो

ने जिनमेसे अनेक दुर्बल भी थे, अपने राष्ट्रको बचानेमे अपना योगदान दिया । ये पक्तिया मै स्वत: के अनुभवके बल पर लिख रहा हूँ और मै यह कह सकता हूँ कि विश्वके प्रत्येक अन्य देशके लिये ये मार्गदर्शक का कार्य करेगी। दूसरा श्रेष्ठ उदाहरण जो कि उद्धत किया जा सकता है, मास्को और लेनिनग्राड निवासियोके द्वारा किये गये प्रतिकारका है। भारी बमबारी , जन-धनकी भारी क्षति, जर्मनोके द्वारा प्रयुक्त अत्यन्त वेगवान तथा विनाशकारो अस्त्र और अनेको स्थानो पर विपरीत परिणामो को सहन करनेके बावजूद भी मास्को तथा लेनिनग्राड निवासियोने जर्मन शत्रुका प्रतिकार किया था। अग्नि परीक्षाकी जिन घडियोके बीचसे वे गुज़रे थे उसके बावजूद भी रूस निवासियोने सहनशीलता नही खोई और समयकी कसौटी पर वे खरे उतरे।

यह बहुत अच्छी तरहसे स्मरण रखना चाहिये कि शत्रु दलके बम वर्षकोके आक्रमणका सामना करनेमे यदि साधारण जन अपने आवश्यक कर्त्तव्यकी पूर्ति नही करते तो सर्वश्रेष्ठ शरणगृह, चिकित्सालय, रक्षक, प्राथमिक उपचार केद्र और अन्य उपाय तथा साधन भी आपके बचावके लिये अधिक उपयोगी नही होगे। यदि वे आतकित हो गय तो प्रारभिक अवस्थाओ मे हो आधी लडाई वे हार जायेगे। उन्हे नागरिक प्रतिरक्षा के उपायोको तो जानना ही है किंतु इसके साथ ही उन्हें वास्तविक साहसी मनुष्य भी वनना है। उन्हे एसे पुरुष और महिलाये बनना है जो कठिनाइयोके समयम अपना कर्त्तव्य समझ सके और जो स्वार्थी न होकर यह अनुभव करे कि ख़तरा सबके लिय एक हो प्रकारका है। अतएव यह आवश्यक है कि सबसे सबधित सामान्य हितके लिये उन्हे अपन कर्त्तव्यका पालन करना चाहिये।

मानवीय तत्वको अधिक महत्व प्रदान करनेके बावजूद भी यह स्मरण रखना चाहिये कि विशेषकर विगतयुद्ध के अनुभवके आधार पर बचावमे जो ऊपाय हमे सुलभ है वे ही हमारे मार्गदर्शक हाग। फिर भी एक लेखकके लिये उन विषयो पर लिखना कि जो वस्तुत: अनुभवके विषय नही है, एक कठिन कार्य है। अब युद्ध प्रणालीका पूरा रूप बदल चुका है ओर ससार नाभिकीय अस्त्रो के विकासकी ओर बढ़ गया है। विगत युद्धमे विश्वको जो अनुभव प्राप्त हुआ वह परपरागत प्रकारोके अस्त्रो और उपायो तक ही सीमित है और जापानके त्वरित आत्मसमर्पणको ध्यानमे रखते हुए वस्तुत: वहा प्रयोग मे आये अणुबमो का अनुभव अधिक उपयोगी नही रह गया है। जापानके आत्मसमर्पणका वर्णन इस पुस्तकके "प्रक्षेपास्त्र, अणुबम और परमाणु बम" नामक ५ वे अध्याय मे किया जा चुका है। फिर भी अमेरिका, इग्लैड या रूस निवासियो द्वारा किये गये अनुसधानो और प्रयोगोका आदर करना चाहिये। इस पुस्तकके आवश्यक स्थानोमे मैने इन सबका संक्षिप्त विवरण देने का प्रयास किया है परतु इस तथ्यको अस्वीकार नही किया जा सकता कि विशिष्ट अनुभवोके अभावमे

संसार यह सोचनेमें, कि नाभिकीय आक्रमणके समय सबसे अच्छा कर्तव्य क्या है, केवल अवसरों पर ही निर्भर हो रहा है ।

किसी भी मामलेमें तथा इस पुस्तकमे आवश्यक स्थानो पर दिये गये विवरण के अनुसार रेडियो सक्रिय धूलिके विरुद्ध बचावका उचित और स्पष्ट अवसर रहता है और यदि इस पुस्तकमे दिये गये सुझावोके अनुसार आवश्यक पूर्व– उपाय कर लिये जाते हैं, तो हताहतो की सख्या काफी दूरी तक कम की जा सकती है । इस प्रसंगमें यह ध्यानमें रखना चाहिये कि विभिन्न देशो द्वारा मरुस्थलो, वनो और समुद्रोमे किये गये प्रयोग साधारण जनके लिये अधिक उपयोगी नही होते क्योकि यह स्पष्ट नही है कि विशेषकर नाभिकीय अस्त्रोकी किरण वर्षा वस्तुतः किस प्रकार कार्य करेगी और रेडियो सक्रिय धूलि वायुमे मिलकर किस प्रकार मानव जीवनको प्रभावित करेगी ? वैज्ञानिक यह सोच सकते है कि इससे मनुष्यके फेफडे प्रभावित होते है, परन्तु कौन जानता है कि इससे और भी उलझने उत्पन्न हो जाये कि जिनके बारेमे पहले कभी सोचा तक न गया हो । अतः मै केवल यह सोचा करता हूँ कि यदि नाभिकीय अस्त्रोंकी किरणोकी वर्षासे फसलें प्रभावित हों और उसी समय जल भी दूषित हो जाये तो किन विशेष उपायोको अपनाया जा सकता है । ये तथा अन्य अनेक समस्याओ से निश्चय ही बुद्धि चकित हो जाती है किन्तु ऐसी स्थितिमे भी अत्यन्त बुरे प्रश्नका भी सदैव कोई न कोई मार्ग होता ही है । मैने ऐसी और अन्य अनेक समस्याओं पर विचार किया है और पाठकको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक के सम्बन्धित अंशोका पठन कर इस संबंधमे वह लाभ उठाये ।

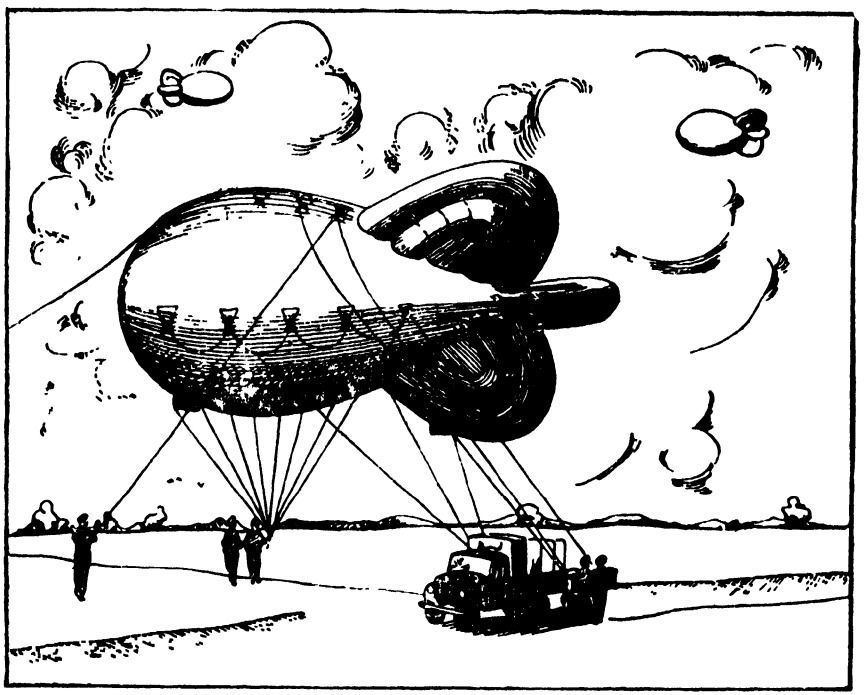
नागरिक प्रतिरक्षामे बचावके अनेक साधन है जिनका उल्लेख इस पुस्तकके भिन्न–भिन्न स्थानों पर किया जा चुका है और इनके अतिरिक्त भी वस्तुतः अन्य अनेक उपाय हो सकते है जिनसे सम्बन्धित विचार सम्पूर्ण रूपसे लेखनी–बद्ध नही किये जा सकते । इसका कारण यह है कि हमारे समयका युद्ध आज घरेलू मोर्चेके युद्धका रूप धारण कर चुका है और घरेलू मोर्चे की समस्याएँ स्वाभाविक रूपसे अगणित है । इसलिए नागरिक प्रतिरक्षासे सम्बन्धित सभी समस्याओके प्रति कोई भी लेखक न्याय नही कर सकता, अर्थात् सभी समस्याओ पर वह पूर्ण रूपमे आवश्यक विचार नही कर सकता । फिर भी विगत युद्धमें जिनकी चर्चा पहले हो चुकी है उन उपायोके अतिरिक्त कुछ शेष किन्तु महत्वपूर्ण उपायोके बारेमे भी मैने विचार किया है । विश्वके विभिन्न भागोके नागरिक प्रतिरक्षा कर्मचारियों और पाठकोके मार्गदर्शनके लिए इसके बादके पैराग्राफोमे उन पर विचार किया गया है । वे इस प्रकार है :–

१ – बराज गुब्बारे, २ – हवामार तोपे, ३ – लड़ाकू विमान ४ – खोज बत्तियाँ, ५ – छद्मावरण ६ – चेतावनी प्रथा तथा ७ – रेडार

बराज गुब्बारे (Barrage Balloons)

विगत युद्धमें जब मै लदन और ग्रेट ब्रिटेनके अन्य भागोंमें था, तब मैने प्रतिरक्षाकी विभिन्न प्रणालियोंका अवलोकन किया था। ये प्रणालियां बराज गुब्बारे, हवामार तोपें, लडाकू विमान, खोज बत्तियॉ, छद्मावरण, चेतावनी प्रथा, रेडार, शरणगृह और खाइया, ब्लैक आऊट और प्रकाश प्रतिबंध इत्यादि थी। इनमेसे प्रत्येक प्रणाली महत्व-पूर्ण थी और उस देशकी प्रतिरक्षामें उसने उसी प्रकार योगदान दिया था कि जिस प्रकार इन उपायो का उपयोग करने वाले अन्य देशोकी भी प्रतिरक्षामे उसके द्वारा योगदान दिया गया था।

बराज गुब्बारोके सम्बन्धमे पाठककी रूचि सबसे प्रथम यह जाननेकी होगी कि इस शब्दका उपयोग क्यो किया गया है। बराज या बाँध शब्द एक नदी पर निर्मित बाँधके लिए प्रयुक्त होता है इसीलिए यह भाव आकाशमें फैले अनेक गुब्बारोका चित्र प्रस्तुत



चित्र ६०

बराज गुब्बारा

करता है। आकाश गुब्बारोसे ऐसा परिपूर्ण हो जाता है जैसे एक बाँध जलसे परिपूर्ण रहता ह। बराज गुब्बारा एक साधारण पतगके उडानेके सिद्धान्त पर आधारित है। वह वायुमे ऊंचाई की ओर जाता है और भूमि पर वह मोटर वाहन या अन्य किसी सहारेकी वस्तुसे तारो द्वारा बँधा रहता है। इसका चित्रण चित्र सख्या ६० मे किया गया है।

गुब्बारोका बाँध या बराज गुब्बारे का आशय यह है कि चित्र सख्या ६०के अनुसार एक विमान तारोके चक्रव्यूहके सम्पर्क मे आतेही वह नीचे आ जायेगा। तारोकी लम्बाई विशिष्ट परिस्थितियोके अनुसार भिन्न-भिन्न रहती है। वह एक पूर्वनिश्चित ऊंचाईपर रक्खा जाता है तथा हवाके साथ चालीस फीट पतले इस्पातके तारके सहारे उग्र विस्फोटक से पूर्ण एक कनस्तर या शैल रहता है। इसलिए शत्रुके विमानोको दुहरे खतरेका सामना करना पड़ेगा -एक तो उसके पख तारोमे लिपट कर निष्क्रिय हो जायगे और दूसरे वह स्वय बमके सम्पर्कमे आ जायेगा। यदि तारपखको पकड़ लेता है तो बम पीछेकी ओर उडकर विमानके विरुद्ध विस्फोट करेगा। बममे एक मियादी पलीता (Time Fuse) (समय पर फूटनेवाला पलीता) लगा रहता है। यह बमके सुरक्षापूर्ण चालन पर ही उसे सक्रिय बनाता है और एक दिये हुए समयके पश्चात् उसे निष्क्रिय कर देता है। जब लदन या मेनचेस्टर, लिवरपूल, लीड्स, बर्मिघम या शेफिल्ड जैसे इग्लैण्डके बड़े नगरो पर जर्मनीके विमान आते थ तब वे अपने ऊपर, नीचे और आसपास ऐसे हजारो छोटे और मुक्त गुब्बारोको पाते थे कि जो विस्फोटक पदार्थसे परिपूर्ण थे और जिनसे बच निकलना मुश्किल था। वे वायु मे उडते हुए विमान को निष्क्रिय बनानेमे बहुत उपयोगी थे क्योकि जर्मन विमानो के लिए आकाशमे अधिक ऊंचाई पर उड़ना अत्यन्त आवश्यक था और इच्छित लक्ष्य पर वार करनेमे उन्हे निश्चयही बहुत कठिनाई होती थी।

यह ध्यानमे रखने योग्य है कि विगत युद्धमे बराज गुब्बारोका सचालन कोई सरल बात नही थी। इग्लैण्डमे प्रयुक्त भारी तथा अत्यन्त शक्तिशाली वाहनो के अतिरिक्त जहाज़को बाँधने वाले तार पर महिला-सहायक-वायु-सेना (Women's Auxiliary Air Force) की सदस्याये कार्यरत थी। उनके द्वारा किया जानेवाला कार्य बहुत कठिन था और उनका कार्य निश्चय ही प्रशसनीय था, क्योकि विगत युद्धमे बराज गुब्बारे अत्यन्त सहायक साधन प्रमाणित हुए थे।

प्रथम विश्व युद्धमे भी लन्दनकी प्रतिरक्षाके लिए गुब्बारा-आवरणोका उपयोग किया गया था। सन्धिके पश्चात यह मत प्रचलित था कि सिर्फ ऐसे गुब्बारोका रखना उचित है कि जो ऐसे मज़बूत तार उठा सके कि जिनसे टकराने पर विमान निश्चित रूपसे नष्टप्राय: हो जाये। बहुत वर्षोके अनुभवने १९३६ तक वायु-सेनाके कर्मचारि-

योंको यह अनुभव करा दिया था कि निकट भविष्यमे ऐसे गुब्बारेके प्राप्त करनेकी कोई संभावना नही है कि जो १५००० फीट या उससे अधिक ऊँचाईपर कि जिस सतह पर भावी युद्धमे विमान उडेगे, तार ले जा सके। दूसरी ओर ऊँचाई पर उडनेवाले गुब्बारे, जो कि १५००० फीटकी ऊँचाईपर उड़ने योग्य थे और इस प्रकार जो निम्न स्तरकी बमबारीको रोक सकते या उसमे विघ्न पैदा कर सकते थे, पूर्ण रूपसे साध्य थे। इसके अनुसार उक्त वर्षकी ग्रीष्ममे साम्राज्य प्रतिरक्षा समितिने इस सुझावको स्वीकार किया था कि लन्दनकी प्रतिरक्षाके लिये ४५० गुब्बारोके एक बराजकी स्थापनाकी जानी चाहिए। जब तक लन्दन बराज मूर्त रूप ले सका था तब तक अन्य अनेक स्थानोमे बराजोकी माँग बढ़ गई थी।

निम्नस्तरीय बमबारीके विरूद्ध इग्लैण्डकी प्रतिरक्षाकी समस्या एक अपेक्षाकृत अधिक व्यापक समस्याका एक पक्ष थी। इसका उद्देश्य आक्रान्ताको आहत करना था तथा विनाशसे बचनेके लिए उसे ऊंचा उडनेके लिए विवश करना था किन्तु शत्रु विमान तथा उसके लक्ष्योके बीच वह अभेद्य दीवालका रूप नही धारण कर सकी थी। इस पर भी शस्त्रगृह, सग्रहागार तथा पुलोके समान महत्वपूर्ण वस्तुये जब तक कि पूर्व निश्चित स्थानीय रूपसे प्रतिरक्षित क्षेत्रमे स्थित न हो या अलग–अलग रूपसे प्रतिरक्षित न हो तब तक आवश्यक सख्यामे आने वाले उन आक्रमणकारियो के आक्रमणसे उन्मुक्त नही थी कि जो वैमानिक युद्ध क्षेत्रको भेदकर प्रविष्ट होते थे। भारी तथा हल्की हवामार तोपो, गुब्बारो और खोज बत्तियोके रूपमे इग्लैण्डके ऐसे सभी स्थानोको स्थानीय प्रतिरक्षाकी व्यवस्था करनेका प्रश्न ही नही था क्योकि इससे साधन बहुत दूर–दूर तक व्यापक रूपसे तितर–बितर हो गये होते और इस प्रकार इसके परिणामस्वरूप सामूहिक शक्तिके स्थानपर सामूहिक निर्बलता आ जाती। फिर भी साधनो के अनावश्यक रूपसे तितर बितर करने और सकेन्द्रण (Concentration) के बीच सन्तुलन लानेकी समस्या स्पष्टत: एक ऐसी समस्या थी कि जिसके लिए अपेक्षाकृत उससे भी अधिक गहन अध्ययनकी आवश्यकता थी, जो कि युध्द जब एक एकान्तिक या दूरकी कल्पना थी, तब सभव हुआ था। इस सबधमे गृह–प्रतिरक्षा समितिने इस प्रश्न का अध्ययन किया था और प्रथम बार उन्होने ऐसे स्थानोकी जो सूची तैयार की जिसमे व्यक्तिगत स्वामित्वके कई औद्योगिक कारखाने भी सम्मिलित थे। इस सूचीमे उन्होने विमानो से बचावके लिए आवश्यक अति महत्वपूर्ण बातोकी सूची भी संयुक्त कर दी थी और, कारखाने, व्यापारिक तैलकेन्द्र, तार, दूरभाष, बेतार के तार, तार प्रणाली, प्रकाश करने वाले तथा बिजली उत्पन्न करनेवाले सयंत्र, गोदियाँ (Docks), कारखाने, पुल और युद्ध अवधि मे वृहत् मात्रामे खाद्यान्न या अन्य वस्तुओ का जहाँ सग्रह हुआ हो या होने वाला हो ऐसे स्थान, आदि ऐसे विभिन्न प्रकारके लक्ष्य इस सूची मे सम्मिलित थे।

इससे पाठकको यह ज्ञान हो जायेगा कि विगत युद्धकी अवधिमे गुब्बारोके बाँधों (Barrage Balloons) से ब्रिटेनकी प्रतिरक्षाका अड़वाल (Bulwark of Britain's Defence) प्रमाणित होनेके पूर्व ही आवश्यक प्रबन्ध तथा आयोजन सम्पन्न कर लिये गये थे। अतएव कोई भी व्यक्ति कल्पना कर सकता है कि विश्वके समस्त देशोमे इसी प्रकारका प्रबन्ध करना कितना महत्वपूर्ण है। इस वक्तव्यमे मेरा आशय यह नही है कि उन देशो को जहाँ युद्ध न हो रहा हो या होनेकी सम्भावना न हो, ऐसे बराज गुब्बारे बड़ी सख्यामे तैयार करना चाहिए परन्तु भाव यह है कि कुछ बराज गुब्बारे तैयार करना और इस प्रकार का आयोजन करना कि जिसमे आकस्मिक घटना की स्थितिमे यथा सम्भव अल्पाति-अल्प समयमे उन्हे स्थापित करना सभव हो सके, स्वय उनके लिए ही हितकारी है। अपने वर्तमान समयकी युद्ध-प्रणाली के प्रकारसे परिचित होनेके नाते एसा पूर्व उपाय निश्चय ही स्थायी तथ्य प्रमाणित होगा अतएव इसके लिए समय, जिसकी बचत की जा सकती है, नही खोना चाहिए। इस सबधमे पूर्व प्रबन्धके महत्वपर अधिक बल देना अनावश्यक हो है। इस बात पर विचार करते समय यह स्मरण रखना चाहिए कि इस उद्देश्यके लिए आयोजन करते समय कई लक्ष्य छोड़े जा सकते है और कारखानो तथा स्थापनाओके अतिरिक्त कि जिनकी स्थिति देशके लिए अति महत्वपूर्ण है उन स्थानोके लिए कि जो अत्यधिक सकेन्द्रित है ऐसे बचावके लिए आवश्यक प्रबन्ध करना चाहिए।

बराज गुब्बारो के इस सक्षिप्त विवरण पृष्ठ भूमिमे लेखकका वह अनुभव है जो उसे विगतयुद्धकी अवधिमे इग्लैण्डमे प्राप्त हुआ था। फिर भी इस तथ्य के सबधमे दो मत नही हो सकते कि लन्दनमे बराज गुब्बारो की स्थितिके कारणही जर्मनोको अपने लक्ष्यों पर वार करनेमे बडी कठिनाइयोका सामना करना पडा था और उन्हे सदैव इस बातका भय रहता था कि कही उनके विमान गुब्बारोके तार या स्वय गुब्बारोके बीच फस न जाये। एक बार जबकि ब्रिटेनमे तीव्र युद्ध हो रहा था 'मेशर्श'–मिट्' (Messerschmitt) लड़ाकू विमानोने सामूहिक रूपसे कार्य करते हुए ब्रिटेनके गुब्बारोके बाध पर आक्रमण किया था। इनमेसे एक अग्नि ज्वालाके रूपमे इग्लैण्डके दक्षिण–पूर्व तट पर गिर पडा था। परन्तु अन्तिम विश्लेषणके रूपमे यह निश्चय ही कहा जा सकता है कि इस प्रकारके प्रयास अधिक उपयोगी नही थे और जर्मन विमानोकी क्षति की सख्यामे प्रतिदिन वृद्धि होती गई थी।

वर्तमान समयके तीव्र गतिसे बढते हुए विश्वमे और आजके विश्वको जिस प्रकारकी युद्ध प्रणाली का सामना करनेकी सभावना है–इन दोनो कारणोसे तैयारीके लिए प्राय: बिलकुल समय नही मिल पायेगा। अतएव मुझे ये कहनेमे बिलकुल हिचकिचाहट नही है कि सर्व सम्बन्धितका हित इस तथ्यको स्थापित करता है कि गुब्बारो के

बराज के सम्बन्धमे कुछ तैयारी तथा समुचित आयोजन करना चाहिए ताकि सकटके समय सर्व सम्बन्धित व्यक्तियोकी महत्वपूर्ण सहायताके साधन के रूपमे इन्हे पाया जा सके। इतना ही नही, चूंकि आधुनिक युद्धप्रणालीमे समय एक महत्वपूर्ण तथ्य है अतएव सर्व सम्बन्धितके हितमे इस दिशामे पूर्व उपाय करनेके महत्वपर अब और अधिक बल देनेकी आवश्यकता नही है।

बराज गुब्बारो का विषय बहुत कुछ प्रतिरक्षाका विषय है परन्तु चूंकि उसी संगठनको नागरिक प्रतिरक्षाका नाम दे दिया गया था, अतएव इस पुस्तकमे इस विषयका वर्णन करनेका विचार उपयुक्त समझा गया है। क्योंकि अन्तत इसका संबध सामान्य जनके बचावसे है और हवाई आक्रमणोमे बचावके लिए अपनाये गये उपायोंमे से भी यह एक उपाय है। इसलिए यह उचित समझा गया है कि बराज गुब्बारों या गुब्बारोके बाधके विस्तृत विवरण तथा उसकी कार्य–विधिके बारेमे किसी भी देशके नागरिक प्रतिरक्षाके कर्मचारी वर्गको आवश्यक ज्ञान होना चाहिए।

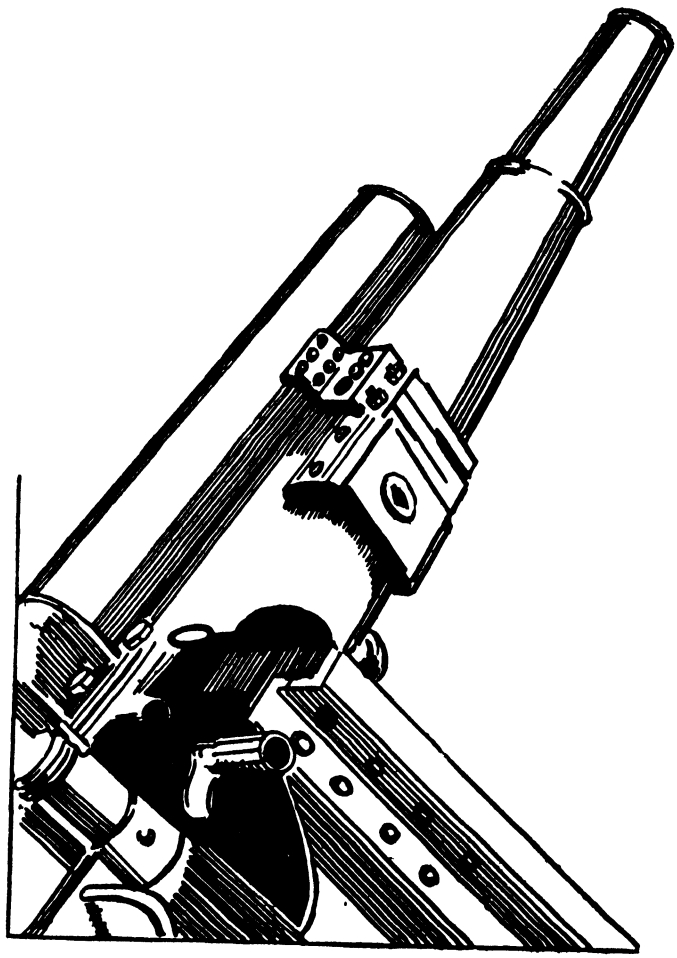
हवामार तोपें (Anti Aircraft Guns)

आधुनिक युद्धप्रणालीमे प्रत्येक देशके लिए हवामार तोपे आवश्यक है। इस विश्व का कोई भी देश अपनी प्रतिरक्षाके बारेमे तब तक नही सोच सकता कि जब तक हवामार तोपोकी उचित व्यवस्था न हो गई हो। साधारणत वे भारी तथा हल्के प्रकारकी होती है और विशेष स्थान तथा आवश्यकता के अनुसार इनका उपयोग इच्छानुसार किया जाता है। जब सितम्बर १९३९ मे युद्ध आरभ हुआ तब मुझे स्मरण है कि जर्मन विरुद्ध इग्लैण्डके तटकी रक्षा तथा देखभालके लिए हवामार तोपोकी समुचित व्यवस्था की गयी थी। तटका सावधानीके साथ अवलोकन उस समयका सांकेतिक शब्द (Keyword) था और वे मूलस्थल (Keypoint) जहा हवामार तोपे लगाई गई थी स्वय समुद्रके भीतर इस्पात और काक्रीटसे बने हुए किलोके समान थे।

उनके तोपखानोंके दुर्ग रक्षक (Garrison) दिन या रात किसी भी समय तत्काल कार्यवाहीके लिए तैयार थे और इनमेसे प्रत्येकको भरपूर तोपो और युद्ध सामग्रीसे सज्जित किया गया था। विमानके प्रत्येक उतरनेके सभव स्थानपर अग्नि उत्पादक शस्त्रास्त्र बिछा दिये गये थे। तट पर प्रत्येक प्रकार की शक्ति वाली तोपो की कतार लगा दी गई थी। इसके साथही छद्मावरण (Camouflage) के प्रकारके साथ एक भारी तटीय तोप अत्यन्त रुचिपूर्ण तथा दर्शनीय चित्र प्रस्तुत करती थी। अतएव यदि उदण्डता पूर्वक निश्चित की गई कार्य–सूचीके अनुसार जर्मन आक्रमणकारी कभी प्रयास भी करते तो सामान्यत.उनका बडे गर्म जोश के साथ स्वागत होता था अर्थात् उन्हे भयकर प्रतिकारका सामना करना पडता था।

पाठकके लाभार्थ हवामार तोपका चित्रण चित्र सख्या ६१ मे किया गया है। यह चित्र प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार हवामार तोप लगाई जाती हैं और किस प्रकार हवामें उडते हुए लक्ष्य पर गोली चलानेके लिए वह सदैव तैयार रहती है। किसी विशेष समयकी आवश्यकताके अनुसार उसे किसी भी दिशामे घुमाय जा सकता है। यह भूमि तथा समुद्र तटपर विशेषकर अत्यन्त घातक अस्त्र है। वह वायु पथपर तथा भूमि पर या समुद्रमें अग्नि प्रेरित करती और गिराती है और यह तथ्य उस समय स्पष्ट रूपसे दिखायी पड़ता है कि जब एक हवामार तोप द्वारा विमान नीचे गिराया जाता है।

द्वितीय विश्व युद्धमे इग्लैण्ड द्वारा हवाई आक्रमणके लिए जो तैयारियाँ की गई थी और जर्मनी मे हवामार तोपो तथा अपनी सीमाके भीतर तथा अन्य देशोमें सैनिक महत्वके स्थानमे जो वृद्धि की गई थी उनके सबधमे यहाँ कुछ शब्द कहना उपयुक्त



चित्र ६१

हवामार तोप

होगा । हवाई प्रतिरक्षाके बारेमे इंग्लैण्डमे जो तैयारियाँ की गई थी उनके फलस्वरूप एक प्रधान सेनापतिके अन्तर्गत एक लड़ाकू दल तथा तीन बमवर्षक क्षेत्र–कमान (Bomber Area Command) की जो कि उसके आधीन थे, स्थापना की गई थी; यद्यपि १९३३ तक इन तीन मे से केवल एक ही पूर्णत. कार्यरत था । इसी प्रकार हवामार तोप–प्रतिरक्षाको भी स्थान दिया गया था। इंग्लैण्डमें बहुत वादविवादके पश्चात् अन्ततः यह निश्चय किया गया था कि बम वर्षा करने वाले स्क्वाड्रन्स (Squadrons) को इस रक्षावरणके पीछे स्थित किया जाये, यद्यपि आक्रमणके लिए इसमसे निकलनेकी आवश्यकताके फलस्वरूप असुविधा हो सकती थी। यदि समुद्र तट पर आवरणके पहले इन्हे स्थित किया जाये तो हवाई अड्डोको अत्याधिक क्षति पहुँच सकती थी । ग्रेट ब्रिटेनकी हवाई प्रतिरक्षाके न केवल प्रशिक्षण बल्कि दाँव–पेच पर भी वायुसेना कर्मचारी महत्वपूर्ण नियत्रण रखते थे। हवाई प्रतिरक्षासे सबधित समस्याये इतनी नवीन थी और तकनीकी विकास इतनी तीव्रगतिसे हो रहा था तथा पूर्णतः नवीन सेवाका निर्माण करनेकी कठिनाईयाँ इतनी भीषण थी कि उन प्रश्नो पर, जिनका निर्णय ब्रिटेनको अन्य दो सेवाओंम अन्य प्रकारसे कर लिया जाता था, सदैव ही वायुसेना प्रमुखके अधिकार और अनुभवको सबधित किया जाता था । बम वर्षक सेनाके निर्माण और प्रशिक्षणम अत्यधिक मितव्ययता द्वारा प्रेरित रुकावटोके बावजूद भी वायु सेना प्रमुखने सैनिक दृष्टिसे महत्वपूर्ण उस उद्देश्यको, जिसके लिए उक्त सेनाका निर्माण हुआ था, पूर्णतः अक्षत (Intact) बनाये रखा था । यह उद्देश्य बमबारोके द्वारा आक्रमणसे कि जिसके बिना महाद्वापीय युद्धमे नौ सेना या थल सेनाको विजय नही मिल सकती थी, शत्रुका तख्ता पलट देना था । इस दिशामे हवामार तोपोकी गोलाबारीने महत्वपूर्ण योगदान दिया था और यदि ऐसा न होता तो जर्मनीके ऊपर ब्रिटेनकी सफलता का रूप ही इससे भिन्न होता ।

जर्मनीमे हवामार तोपोकी सख्यामे वृद्धिकी ओर पुन. दृष्टिपात करते समय हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि रीश (Reich) को सक्रिय प्रतिरक्षाके लिए जो विमान वहाँ कार्यरत किये गये थे उनके अतिरिक्त हवामार तोप–सगठन (Anti-Aircraft Organisation) मे लगे हुए कर्मचारियोकी तथा आवश्यक सामग्रीमे भी काफी वृद्धि की गयी थी । १९४१ मे कर्मचारियोकी जो सख्या कार्यरत थी उसमे बादके वर्षमे एक लाख तक वृद्धि हुई थी । १९४० मे कर्मचारियोकी जो सख्या थी उसमे भी १९४१ के वर्षमे इसी प्रकारकी वृद्धि हुई थी। "दि स्ट्रेटेजिक एयर वार' (The Strategic Air War) नामक पुस्तकके ९६ वे पृष्ठ पर दिये गये आकड़े यह दर्शित करते है कि १९४० मे यह संख्या २,५५,२०० थी । १९४१ मे यह संख्या ३,४४,४०० और १९४२ मे ४,३९,५०० हो गई थी। इस वर्ष प्रति वर्ष वृद्धिका कारण चाहे जो भी हो यह निश्चित है कि रूर (Ruhr) और राइनलैण्ड (Rhineland) को बचानेके लिए भारी पार्श्व वाली

तोपोकी आवश्यकता उस समय थी। तब हवामार तोपोके उत्पादनको बढानेके आदेश दिये गये थे। इस प्रकार १९४२ मे हल्की तोपोका मासिक उत्पादन ७९५ से बढाकर १५२६ और भारी तोपोका मासिक उत्पादन १९९ से बढ़ाकर ३४८ कर दिया गया था और सशस्त्र सेना दलोके साधनोमे निरन्तर वृद्धि होती गई थी। इस प्रसगमे यह ध्यानमे रखना चाहिए कि हिटलरने उस समय जबकि वह दूसरे शस्त्रास्त्रोके उत्पादनमे कमी कर रहा था, इन अस्त्रोके उत्पादनकी जिस अकल्पित (Fantastic) सख्यामे माग की थी उसकी तुलनामे उपर्युक्त वृद्धि बहुत ही कम थी। इससे आधुनिक युद्ध प्रणालीमे हवामार तोपोके महत्वका आप ही पता चल जाता है।

जर्मनीके द्वारा आवश्यकताओ तथा सकट कालीन स्थितिके अनुरूप ही हवामार तोपोंका समजन किया गया था। फिर भी यह जानना रुचिकर होगा कि विगत युद्धमे जब उत्तरी इटलीके नगरोपर आक्रमण हुआ था तब हवामार तोपोको इस देशमे इटली भेजना पडा था फिर भी यह सत्य था कि भारी तोपो मे अधिकाश का उपयोग रीश (Reich) मे ही किया गया था। उस समय हल्की पार्श्व वाली तोपो मे भी काफी वृद्धि हुई थी। खोज बत्ती–सकेन्द्रणो (Searchlight Concentrations) और रेडार केन्द्रोकी नई श्रखला मे भी महत्वपूर्ण विकास किया गया था। छद्मावरण और शत्रुको जालमे फसानेकी विधिकी तैयारियाँ और अधिक विस्तारपूर्वक की गई थी। इस अध्यायमे जिन वस्तुओका क्रमशः वर्णन किया गया है उन सबमे जर्मनीमे हवामार तोपोकी सख्यामे जो वृद्धि हुई थी वह स्मरण रखने योग्य है।

उपरोक्त विवरण पाठक को इस तथ्यसे प्रभावित करेगा कि आज किसी भी देशके लिए हवामार तोपे कितनी महत्वपूर्ण है। यदि विशेषकर इन तोपोका समुचित प्रबन्ध नही किया गया तो इस असभ्य तथा निर्दयता पूर्ण आधुनिक युद्ध–प्रणाली मे उस देशकी क्या दशा होगी इसके बारेमे केवल कल्पनासे ही ज्ञान हो जायेगा।

किसी भी देशके नागरिक प्रतिरक्षा कर्मचारी यह कल्पना कर सकते है कि उनकी क्या दशा होगी यदि बिना आवश्यक सख्याके अथवा कि, परमात्मा न करे, बिना हवामार तोपोके उनका देश असुरक्षित रहने दिया जाता है। यथार्थ मे यह अच्छा होगा कि चाहे भौतिक या कोई भी त्याग किसी देशको क्यो न करना पडे, किन्तु सर्वस्व त्याग कर भी, चाहे वह कितना ही गभीर क्यो न हो, उसे इस प्रकारके प्रतिरक्षात्मक उपायके लिए आवश्यक सावधानी अवश्य करनी चाहिए। आधुनिक ढगके युद्धमे यदि किसी को अपना अस्तित्व सुरक्षित रखना है तो उसे ऐसा करना ही पड़ेगा। यहाँ हम ब्रिटेन और जर्मनीके सबधमे पूर्व–वर्णित उदाहरणोको नही भूल सकते। हम यह भी जानते है कि जर्मनी द्वारा विगत युद्धमे एक के बाद एक किये गये असाधारण हवाई आक्रमणोके विरुद्ध हवामार तोपे भी रूसी प्रतिरक्षाकी अडवाल (Bulwork of Russian Defence) प्रमाणित हुई थी।

आधुनिक युद्ध–प्रणालीकी प्रतिरक्षाकी वस्तुओंमें सभवत: हवामार तोपो की गोलाबारी सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। अतएव किसी भी देशको अपनी प्रतिरक्षाकी योजना बनाते समय इस पर समुचित विचार करना ही पड़ेगा। किसी विशेष स्थान पर युद्धका रूप चाहे कुछ भी हो आधुनिक युगमे आक्रमणकी सफलता या विफलता हवामें आक्रमण करने वालेकी शक्ति पर निर्भर रहेगी और यदि वह देश प्रतिरक्षक शत्रुके विमानोको उचित समयपर मार गिरानेकी क्षमता रखता है तो किसी भी आक्रमणका सफलतापूर्वक सामना करनेका अवसर मिल जाता है और यदि स्थिति इसके विपरीत हुई तो प्रतिरक्षक देशके विनाश की केवल कल्पना ही की जा सकती है। यद्यपि यह सत्य है कि आज नाभिकीय शक्तिमे अत्यधिक विकास हो चुका है परन्तु इस स्थितिमे भी बमवर्षकोके साथ ही बमोंको गतिशील होना आवश्यक है और यदि ये बम वर्षक उचित समय और उचित स्थान पर हवामार तोपों द्वारा नही गिराये जाते तो लाखो व्यक्तियोंकी जो दुर्गति होगी उसकी केवल कल्पना की जा सकती है। अतएव कोई भी प्रयास या कितनी भी धनराशि व्यर्थ ही है यदि उसका उपयोग इन जीवन–रक्षक सामग्रियोके लिए नही किया जाता। हवाई आक्रमणके प्रति पूर्व उपाय की योजनामे जो कि नागरिक प्रतिरक्षाका दूसरा नाम है, विश्वके प्रत्येक भागमे हवामार तोपे महत्वपूर्ण योगदान देती है।

लड़ाकु विमान (Fighters)

आधुनिक युद्ध प्रणालीमे लड़ाकू विमान प्रतिरक्षाकी एक महत्वपूर्ण प्रणाली है। हवामार तोपो, गुब्बारोके बराज और अन्य उपायोके अतिरिक्त लड़ाकू विमान प्रतिरक्षा के खम्ब (Bulwork of Defence) के रुप मे कहे जा सकते है, क्योकि ये शत्रुओ से नभमें ही लडते है। विगत युद्धके प्रारभमे लडाकू विमानोका कार्य प्राय: सीमित था किन्तु बादमे समुद्री तटके ऊपर केवल लडनेकी अपेक्षा उनका कार्य और अधिक विस्तृत हो गया। जब अमेरिका निवासियोने आवश्यक विश्वास प्राप्त कर लिया था तब उन्होने अपने लडाकू विमानोको उत्तरोत्तर बढती हुई सख्यामें आक्रमणकी स्थितिमे प्रयुक्त कर दिया था और विशुद्ध कर्तव्यके रूपमे बमवर्षकोके निर्माणमे अनुपातत: कम से कम लड़ाकू विमान प्रयुक्त किये गये थे। काफी हद तक लम्बी मारके लड़ाकू विमानोका कर्तव्य शत्रुको जहाँ कही भी मिले वहाँ खोजकर नष्ट करना हो चुका था। यद्यपि व्यक्तिगत बमवर्षकोंके निर्माणकी रक्षा स्वाभाविक रूपसे सदैव महत्वपूर्ण थी किन्तु उस समय उसकी तत्काल रक्षाका महत्व गौण हो चुका था। उस समय केवल स्थानीय हवाई सर्वोपरिता (Local Air Supermacy) के द्वारा नही बल्कि वैश्विक हवाई सर्वोपरिता (Universal Air Supermacy) के द्वारा बमवर्षकोकी सुरक्षा करना ही अभीष्ट माना गया था। इस नीतिके लिए अमेरिकाके बमवर्षकोको भारी नुकसान उठाना पड़ा था परन्तु अन्तत: यूरोप पर दिनमे हवाई आक्रमण करनेकी क्षमता जर्मनोसे अमेरिका निवासियोंके हाथमे चली गई थी।

वायु–पथ पर तथा भूमि पर युद्धके सम्पूर्ण स्वरूप पर इस तथ्यके मूलभूत दूरदर्शी परिणाम प्राप्त हुए थे।

अब पाठकको यहाँ आकाशमे द्वन्द युद्धका एक परिचय देना आवश्यक है। अगस्त १९४० मे ब्रिटेन निवासियोंने ब्रिटिश लड़ाकू विमानो और जर्मन हेन्किल्स (Heinkels) 'डारनियर्स' (Dorniers) और 'मेशर्समिट्स' (Messerschmitts) के बीच तीव्र तथा सांघतिक लड़ाइयाँ देखी थी। कैन्ट, ससेक्स, हेम्पशायर, डारसेट, ब्रुसेल्स और लदनके ऊपर श्वेत बाष्पके मालाकार रूपही आकाशमे हुए द्वन्द युद्धके अविशिष्ट रूपमे दिखाई देते थे। लगभग पाँच या छः मील ऊँचाईपर परस्पर शत्रु देशोके दो विमान प्रतिघण्टा सहस्रो मीलकी अपनी सयुक्त गतिसे जिस प्रकार एक दूसरेकी ओर बढ़ते थे और प्राणोको स्पन्दनहीन बना देनेवाला युद्ध होता था उस दृश्यका वर्णन किसी एक चित्र द्वारा नही किया जा सकता। एक ओर लडाकू विमान ओर दूसरी ओर शत्रुके बमवर्षकोंमें युद्धके फलस्वरूप शत्रुके बमवर्षक विमान अग्निज्वालाओके रूपमे नष्ट होते थे। विगत युद्धमे ऐसे दृश्योको जिन्होने देखा था उन्हे वे सदैव स्मरण रहेगे। इस सबधमे पाठक केवल इस चित्रकी कल्पना करे कि एक बमवर्षक जलते हुए गिरता है–– पीछेकी ओर भागता है तथा ऐसा करते हुए अपने भारको हल्का करनेके लिए उसे एक चारागाहमे गिराता है किन्तु उससे चरागाहकी कोई हानि नही होती। विगत युद्धके दर्शक यह स्मरण रखते होगे कि नभ पथको मुक्त रखनेका कार्य करते हुए किस प्रकार लड़ाकू विमान आते और जाते थे।

चाहे ब्रिटिश लडाकू जहाज़ थे, चाहे जमर्नो के चाहे अमेरीकनो के जहाज थे, वह सब सुरक्षा के मुख्य अग थे ओर आधुनिक युद्ध मे नागरिक प्रतिरक्षा की किसी भी योजना के सबन्ध मे उनका ठीक ज्ञान होना बहुत लाभदायक है।

खोज बत्तियां (Searchlights)

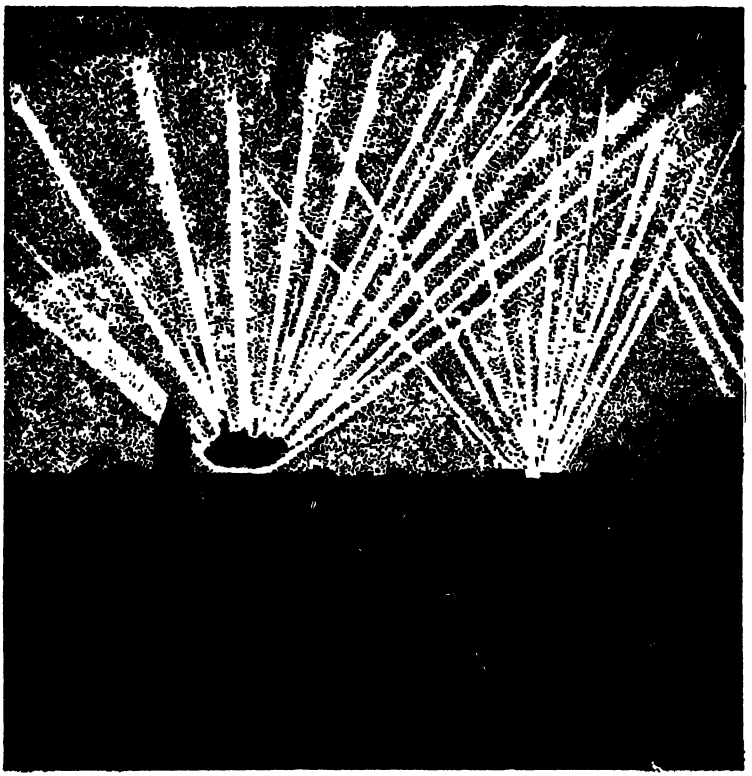
हवाई आक्रमणोंके विरुद्ध प्रतिरक्षाकी अति महत्वपूर्ण प्रणालियोमे से यह एक है। चित्र सख्या ६२ यह दर्शित करता है कि किस प्रकार खोज बत्तियाँ क्षितिजको प्रकाशित करती है।

इस चित्रसे पाठकको यह ज्ञात हो जायेगा कि रात्रिमे किस प्रकार आकाश पूर्णतः प्रकाशमान हो सकता है। इसकी सहायतासे निश्चय ही रात्रिमे भी शत्रु बमवर्षककी स्थिति जान लेना सभव है। फलस्वरूप हवामार तोप ठीक रीतिसे, तत्काल और परिणामकारी ढंगसे उसे मार सकती है।

खोज बत्तियाँ एक बम वर्षककी स्थितिको जाननेमे ही केवल सहायक नही होती अपितु पहाड़ी तथा चट्टानी क्षेत्रोमें होने वाले युद्धमे रात्रिके समय शत्रुकी स्थिति और उसकी गतिविधिको जाननेमे भी सहायक होती है। उद्धारकार्य मे भी खोज बत्तियोका काफी महत्व है और नागरिक प्रतिरक्षा कर्मचारियोके लिये विशेषकर इस

क्षेत्रमें खोज बत्तियाँ अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है यद्यपि ऊपर वर्णित अन्य मार्गोका आवश्यक ज्ञान भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

मुझे उस अत्यन्त उत्तेजक क्षणका स्मरण है जब मैं विगत युद्धके समय लन्दन मे था और जब रात्रिमें खोज बत्तियोंके प्रकाशमें मैंने जर्मन बमवर्षक देखा था। आकाशमे सभी स्थानोंमें किरणें उसका पीछा कर रही थी और जैसे ही हवामार तोपों और खोज



चित्र ६२
खोज बत्तियों द्वारा क्षितिजके चारों ओर प्रकाश डालना

बत्तियोंने प्रायः स्वतः चालित रूपमें एक साथ कार्य किया वैसे ही वह तुरन्त मारकर गिरा दिया गया था। इस क्रियाके समाप्त होनेपर उत्तेजक क्षण समाप्त हो गया और इसके बाद समाप्ति की सूचना देनेके लिए खोज बत्तियोके द्वारा संकेत देनेका दृश्य सचमुच ही उतना ही मनोरजक था जितना कि ब्रिटिश प्रतिरक्षाकी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रणालीके रूपमे खोज बत्तियोंके द्वारा प्रेरित सांघतिक किरणोंके प्रकाश मे आकाशमे एक जर्मन

विमानको चमकते हुए तारेकी भांति ऊपर जाते हुए देखना मनोरंजक था। ये खोज बत्तियाँ अन्धकारमे लन्दनके लिए नेत्रोका कार्य करती थी।

जब रात्रिकी काली छाया उनके सिर पर छा जाती थी तब ग्रेट ब्रिटेनके निवासियोके लिए खोजबत्तियाँ मार्गदर्शक प्रकाशका कार्य करती थी, और यह सचमुच ही हास्यास्पद था कि जहाँ एक ओर वहाँके लोग अन्धकारपूर्ण गलियोमे कीचड़मे धंस जाया करते थे वहाँ दूसरी ओर खोज बत्तियाँ ऊपर आकाशको प्रकाशित करती रहती थी। खोज बत्तियों और हवामार तोपोंके कार्य एक साथ होते थे। जैसे ही एक विमान दिखाई देता था वैसे ही तुरन्त मारकर गिरा दिया जाता था और यह स्थिति ग्रेट ब्रिटेनके प्रत्येक भागमे थी।

जर्मनीकी प्रतिरक्षा प्रणालीमे भी खोज बत्तियाँ उतनी ही महत्वपूर्ण थी। इनमे वृद्धि के आकड़े इस तथ्यको प्रमाणित करते है। जनवरी १९४१ में ब्रिटिश गणनाके अनुसार केवल जर्मनी तथा पश्चिमी मोर्चेपर २,५२० जर्मन खोज बत्तियाँ थी। इसी अवधि मे जर्मनी के अधिकार तथा प्रभावके अन्तर्गत अन्य मोर्चे पर ३६ खोज बत्तियाँ थी। जनवरी १९४२ मे खोज बत्तियोकी सख्यामे इतनी अधिक वृद्धि हुई कि केवल जर्मनी तथा पश्चिमी मोर्चे पर उनकी सख्या ३,२७६ हो गई थी। दूसरे शब्दोमे जर्मनीके केवल घरेलू मोर्चेपर एक वर्षमें ७५६ खोज बत्तियोकी वृद्धि हुई थी। जर्मनी अधिकार तथा प्रमाणके अन्तर्गत अन्य मोर्चो पर जनवरी १९४२ मे १०८ खोज बत्तियाँ थी। दूसरे शब्दोमे केवल एक वर्षमे ही इन मोर्चो पर ७२ खोज बत्तियोकी वृद्धि हुई थी। जैसे–जैसे युद्ध आगे बढ़ता गया, वैसे–वैसे प्रत्येक आने वाले वर्षमे खोज बत्ती सकेन्द्रण स्थान (Searchlight Concentrations) को और अधिक सख्यामे खोज बत्तियोंकी आवश्यकता होने लगी थी। अतएव वर्ष–प्रतिवर्ष सदैव नये कार्यक्रम प्रारंभ किये जाते थे। वह ऐसा समय था कि जब रूसमे होने वाली पराजयोसे यह दर्शित हो रहा था कि विजय प्राप्त करने के लिए और अधिक प्रयास करने पड़ेगे। अतएव विशेषकर जर्मनी की मानव शक्ति तथा उत्पादन क्षमतामे वृद्धि की मागके साथ ही अन्य अनेक विषयोमे भी वृद्धिकी माग थी किन्तु इसी समय खोज बत्तियोमे वृद्धिकी माग ने माँगोकी कडीमे महत्वपूर्ण वृद्धि की थी।

फिर भी जर्मनी, इग्लैण्ड या अन्य किसी देशमे खोज बत्तियोका उपयोग सदैव केवल विमानोको मारनेके लिए ही नही किया जाता था। उनकी सहायता से बहुत कुछ उद्धार कार्य भी किये जाते थे। इस प्रसंगमे जहाज़ोंके लिए खोज बत्तियोके महत्वको विशेष रूपसे स्मरण रखना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि १८९३ मे केवल २०,००० कैण्डल शक्ति (Candlepower) की खोज बत्तियाँ थी। किन्तु आधुनिक खोज बत्तियाँ तत्कालीन खोज बत्तियोंकी अपेक्षा अत्याधिक शक्तिशाली है। यहा यह स्मरण रखना चाहिए कि आधुनिक ढंगसे खोज बत्तियोंमे सुधार होनेके पूर्व आक्रमणके लिए

दिनकी अपेक्षा रात्रिका समय ही शत्रु द्वारा अधिक उपयुक्त माना जाता था और दिनके प्रकाशकी अपेक्षा अधकारमे ही सदैव अधिक हानि पहुंचाने की आशाकी जाती थी। तब प्रत्येक रात्रिमें चेतावनियोंका दिया जाना साधारण बात थी किन्तु खोज बत्तियोकी सहायता से यह भय बहुत कुछ दूर कर दिया गया था।

जैसा कि इस अध्यायसे प्रतीत होगा, रेडार केन्द्रों (Radar Stations) की श्रंखलासे किसी भी देशके लिए शत्रु विमान की ऊँचाई और स्थिति जान लेना संभव हो गया था और इसके पूर्व कि वह विमान लक्ष्य पर पहुंचने की बात सोच सके खोज बत्तियोकी सहायता से अब उसे प्रकाशित करना तथा मारना संभव हो गया है। अतएव रात्रिमे जब किसी एक विशेष देशके निवासियोके बचावके लिए खोज बत्तियोके द्वारा इतना सफल तथा उपयोगी कार्य किया जा सकता है तब इनके महत्वके बारेमे कोई भी व्यक्ति अनुमान लगा सकता है।

किन्तु यह एक समस्यापूर्ण प्रश्न है कि विभिन्न देशोके लिए खोज बत्तियोका कितना प्रबन्ध करना चाहिए? एक देशके द्वारा देखभाल किया जानेवाला तटवर्तीय क्षेत्र, एक विशिष्ट स्थानपर युद्ध अथवा अन्यथाकी स्थिति और सम्बन्धित देशमे सुलभ वित्तके आधार परही निर्भर करता है। यद्यपि जब विमानको मारना होता है या उद्धार कार्यके लिए उपयोग करना पड़ता है तब खोज बत्तियाँ महत्वपूर्ण होती है किन्तु पहाड़ी स्थानोकी देखभाल करते समय भी ये खोज बत्तियाँ कम महत्वपूर्ण नही होती।

इसप्रकारके युद्धमे किसी भी देशके लिए खोज–बत्ती सहायक सिद्ध होगी क्योकि इसके द्वारा एक विशिष्ट पहाडी चट्टानी क्षेत्रमे शत्रु सकेन्द्रण या उसकी गति विधियोको दूरसे निश्चित किया जा सकताहै और इसके पूर्वकि निश्चित स्थान पर पहुंचनेके प्रयास मे उसे सफलता मिल सके, रक्षक विमानको उन्हे मारनेमे सहायता मिल जायेगी। वस्तुत. प्रतिरक्षाका मुख्य कार्य शत्रुके उद्देश्यको व्यर्थ करना है और इस उद्देश्य के लिए खोजबत्तियोके महत्व पर अधिक बल देनेकी आवश्यकता नही है। आधुनिक युद्धमे प्रतिरक्षा और नागरिक प्रतिरक्षा बहुत कुछ एक दूसरे से सम्बद्ध है। फिर जहा तक खोज बत्तियोका सम्बन्ध है वे इन दोनो के लिए अनेक प्रकारसे अलग–अलग और संयुक्त रूपसे उपयोगी है।

मेरा मत है कि इस विश्वके प्रत्येक देशको अत्याधिक आधुनिक प्रकारकी खोज-बत्तियोके लिए समुचित प्रबन्ध करना चाहिए। जहाँ कही वित्तीय अथवा अन्य कोई कठिनाई मार्गमे आये वहाँ खोज बत्तियोकी सख्या कम की जा सकती है परन्तु प्रत्येक देशको खोज बत्तियोकी प्राप्ति तथा उनके निर्माणके लिए उचित आयोजन करना ही चाहिए जिससे आकस्मिक घटनाके समय उन्हे महत्वपूर्ण स्थानो पर लगानेमे कोई कठिनाई न हो। उद्धार कार्यके लिए भी काफी संख्यामे खोज बत्तियो को सुलभ

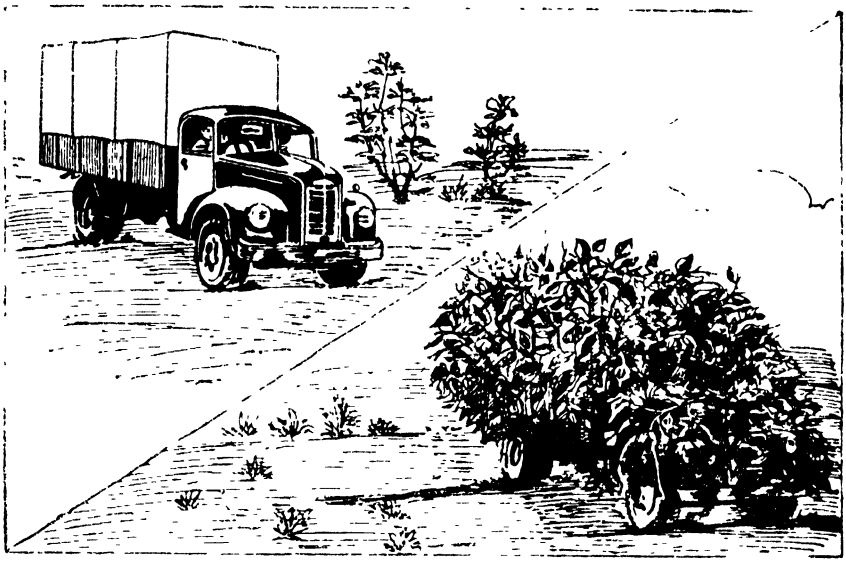
करना चाहिए और यदि पहाड़ी तथा चट्टानी क्षेत्रों की देखभाल करना हो तो प्रत्येक देश की सीमा पर आवश्यक संख्यामें खोज बत्तियाँ सुलभ करना चाहिए ।

छद्मावरण (Camouflage)

संज्ञाके रूपमे छद्मावरण (Camouflage) का अर्थ है —विभिन्न रंगोंके आवरणसे बाहरी रूपरेखा को अदृश्य बनाते हुए तोपो, जहाज़ों इत्यादि को छिपाना। यह लोगोंको भ्रमित करनेका एक साधन है। छद्मावरण द्वारा छिपाना भी इसका अर्थ है।

इस विषयके एक स्पष्ट उदाहरणके रूपमे कि किस प्रकार छद्मावरण द्वारा कोई छिप सकेगा, अगले पृष्ठपर चित्र संख्या ६३ देखिये। इससे यह प्रदर्शित होता है कि किस प्रकार एक वृक्षकी शाखाओ और पत्तियो इत्यादिसे एक मोटर ट्रकको छद्मावरण द्वारा छिपा दिया गया है।

यहाँ यह ध्यान देनेकी बात है कि प्रतिरक्षा ओर नागरिक प्रतिरक्षा कर्मचारियो के लिये छद्मावरणके लिए यथा संभव जो भी व्यवस्था की जा सके उसे करना एक महत्व-पूर्ण विषय है। विगत युद्धके समय चाहे वह जर्मनी, इग्लैण्ड, रूस, पोलेण्ड, फ्रांस, जापान, इटली हो या इथोपिया या विश्वका अन्य कोई स्थान हो जहाँ कही भी बमबारीका प्रयोग किया गया था वहाँ तेलके स्थानों, सचार व्यवस्थाओं, चुनी हुई सख्यामे औद्योगिक नगरो, पनडुब्बी निर्माणो (Submarine Constructions) और बड़े तथा छोटे बन्दरगाह, नौ सेनाके जहज़, वैमानिक उद्योग और हवाई अड्डे, शत्रुके जल–स्थान तथा अन्य ऐसे लक्ष्य पर जो किसी राष्ट्रके लिए बुनियादी रूपसे महत्वपूर्ण है, सदैव आक्रमण करनेका प्रयास किया गया था। वस्तुत. उपर्युक्त समस्त वस्तुओ और स्थानोका पूर्ण रूपसे छद्मावरण सभव नही है लेकिन स्पष्ट रूपसे हमे ऐसा प्रयास करना चाहिए कि यथा सभव अधिक से अधिक जीवनदायिनी वस्तुएँ और स्थान बच सके। इस पुस्तकके १२ वें अध्यायमे एक हवाई आक्रमणके स्वरूपके वर्णन करनेका प्रयास किया गया है और उससे पाठकको स्पष्ट हो जायेगा कि तोपची निशाना लगाने वाले (Air Gunner Aimer) के लिए लक्ष्य पर आघात करना कितना कठिन है। यदि लक्ष्योका समुचित छद्मावरण किया गया है और हवाई निशाना लगाने वालेको धोखा देनेका प्रयास किया गया है तो निश्चय ही यह युद्ध क्रियाका एक अग है। कहा जाता है कि प्रेम और युद्धमें प्रत्येक वस्तु उचित है अतएव इस रूपमे धोखा देना सामान्य नियमका अपवाद नही है। क्या यह तथ्य नही है कि पैदल सेना या वायु सेनाके गणवेष सदैव ऐसे रगो मे बनाये जाते है कि जो बहुत चमकीले नही हों और जिससे गणवेष धारण करने वाला स्पष्टत: दिखाई न दे। यह छद्मावरणके सिद्धान्तके सम्बन्धमें भी कहा जा सकता है।



चित्र ६३
छद्मावरणके पूर्व तथा पश्चात् एक मोटर ट्रकका चित्र

जब हमे ज्ञात होता है कि शत्रु पुलो पर बम वर्षा कर समस्त सचार साधनोको अव्यवस्थित कर सकता है तब हम उनका छद्मावरण करते है। किसी महत्वके स्थानको छिपाने और जहा कुछ भी न हो ऐसे अन्य स्थानपर उसी स्थानके समान चिन्ह बनाकर भी हम शत्रुको धोखा देते है। ये छद्मावरणके कौशल पूर्ण उपाय है और युद्धमे इनका पालन किया जाता है। आधुनिक युद्धमे केवल प्रतिरक्षा कर्मचारियोके द्वारा ही नही बल्कि उन्होके समान नागरिक प्रतिरक्षा कर्मचारियो द्वारा भी इनका अनुसरण किया जाना चाहिए। जबकि यह दोनोको भली भाति ज्ञात है कि किसी खास लडाईके मोर्चे की अपेक्षा युद्ध–गृह–मोर्चे पर होता है और सभवत: गृह–मोर्चे पर और अधिक होता है तब दोनो प्रकारके कर्मचारियोका यह कर्तव्य होता है कि वे लोगोके प्राण और धनको बचाये। यह हो सकता है कि कुछ समयके लिये तथा कुछ कारणोसे हवाई बम वर्षा न अपनाई जाये किन्तु कुछ आधुनिक युद्धमे ऐसी स्थिति स्थानीय और अस्थायी होती है। आधुनिक युद्धका अर्थ जैसा कि इस शब्दका आशय है, आधुनिक उपायो और विनाशके आधुनिक साधनोका उपयोग है, और नाभिकीय अस्त्रोके अति विध्वसक उपायोके अतिरिक्त परंपरागत अस्त्रोके प्रकार और उपायोके द्वारा भी समान रूपसे इन साधनोको समझा जाता है।

फिर भी यह ध्यान रखने योग्य है कि विकिरण–विज्ञान संबंधी (Radiological) युद्ध तथा जैविक और रासायनिक युद्धके विरुद्ध [illegible] अधिक उपयोगी नही हो सकता किन्तु भयंकर विध्वंसक और अग्निदाहक बमों तथा गत युद्धमे प्रयुक्त अनेक परपरागत उपायोंके विरुद्ध यह निश्चय ही एक अत्यन्त उपयोगी उपाय हो सकता है।

जहाजोका छद्मावरण इसलिए किया जाता है कि वे सागर जलकी भाति दिखाई पडे और शत्रुको उनके स्थानका निश्चय करनेमे कठिनाई हो। यही स्थिति बंदरगाहोके विषयमे भी है।

बमके गोले, जहाजके पेदी तोडने वाले अस्त्र टारपीडो तथा असंख्य चमकीले प्रक्षेपास्त्र शस्त्रास्त्र निर्माण कारखानो से आते है और ये सब प्रतिरक्षा सेवाओं के भूमिगत तहखानोमे रखे जाते है। अतः ऐसे स्थानोको आवश्यक रूपसे छद्मावरण किया जाता है । स्थानोको जोड़नेवाले अत्यन्त महत्वपूर्ण साधनोंका भी छद्मावरण किया जाता है और प्रत्येक राष्ट्रको यथासम्भव अपने जलागारो, विद्युत–गृहो और ऐसी ही अन्य वस्तुओके कि जो वस्तुतः युद्ध रूपी शरीरके लिए स्नायुकी भाति है, छद्मावरण करना पड़ता है।

इस प्रसगमे इतना और कहा जा सकता है कि अपने सरक्षको, नगर सैनिको और अन्य सेवाओके माध्यमसे नागरिक प्रतिरक्षा कर्मचारी इस विषयमे अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है । ये लोग स्थानीय स्थितियो मे पूर्णतः अवगत होते है और ये ही उस क्षेत्र तथा संपूर्ण राष्ट्रके लिये आवश्यक समस्त स्थानो या वस्तुओके छद्मावरण की व्यवस्था कर सकते है। आधुनिक युद्धमे छद्मावरण प्रतिरक्षाका एक महत्वपूर्ण उपाय है और न केवल प्रतिरक्षा या नागरिक प्रतिरक्षा कर्मचारियो को ही, बल्कि स्वयं लोगोको इसके लिए यथासभव सभी प्रकारके प्रयास करने चाहिए। अन्तत. जनताको ही कष्ट सहन करना पड़ता है अतः लोगोको सदैव यह ध्यानमे रखना चाहिए कि संकटके समय प्रतिरक्षा या नागरिक प्रतिरक्षा कर्मचारियोसे यह आशा नही की जाती कि वे लोगोकी सुरक्षाके साथही मानव जीवनके समस्त पहलुओके प्रति भी अपने कर्तव्यका न्यायपूर्ण ढगसे पालन कर सकेगे। वे आघातके मुख्य अंगका सामना करनेके हेतु यथाशक्ति प्रयास कर रहे है और जनताके के लिए भी छद्मावरण जैसे उनके सामान्य कर्तव्योमे सहयोग देना आवश्यक है क्योकि छद्मावरणमे धैर्यके साथ बहुत कार्य करनेकी [illegible] है और इस संबंधमे लोग स्वयं अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है। वस्तुतः यह तो अन्तर्निहित है ही कि यथासंभव ऐसे कार्योको करते समय वे सम्बन्धित अधिकारियोंसे सलाह लेगे अथवा उनका निर्देशन प्राप्त करेगे।

चेतावनी पद्धति (Warning System)

गत युद्धकी अवधिमें जब मै इंग्लेण्डमे था तब चार प्रकारकी चेतावनियाँ और सदेश दिये गये थे, यथा :—

१ – पीली और २ – लाल चेतावनी
३ – हरे और ४ – श्वेत सदेश।

१ – **पीली चेतावनी** (Yellow Warning) :– आक्रमणकारियोके पथमे आने वाले उन जिलोको दी गई थी जिन पर गंभीर आक्रमण होनेकी सम्भावना नही थी। इस चेतावनीके मिलते ही बाहरी स्थानोकी प्रतिबधो से मुक्त समस्त प्रकाश व्यवस्थाको बुझा देना पडता था। किन्तु" पीले" के लिए आवश्यक तथा उचित कार्यवाहीके सिवाय अन्य कोई कार्यवाही नही की गई थी। यह "पीला" 'बैगनी' सदेशके रूपमे भी जाना जाता था । यह "लोक चेतावनी" या "प्रारम्भिक सदेश" के रूपमे भी जाना जाता था। यह विमानके बाईस मिनट उडनेमे जितना समय लगता है उतने समयका प्रतिनिधित्व करती थी और जैसे ही प्रोटेक्टर (Protactor) की बाहरी लाइने चेतावनी वाले जिलेको स्पर्श करती थी वैसे ही यह चेतावनी प्रेषित कि जाती थी । "पीली" चेतावनी उनको जो कि चेतावनी सूचिमे थे, पूरी तरहसे प्राथमिकताके आधार पर ही दी जाती थी जैसे कि शासकीय विभाग, सैनिक केन्द्र, हवाईहमले से बचाव केन्द्र, पुलिस तथा अग्निशामक (फायर ब्रिगेड) मुख्यालय और अनेक औद्योगिक प्रतिष्ठान। वह साधारणत. इस अर्थमे गोपनीय मानी जाती थी कि इसके प्राप्तकर्ताओको यथासम्भव सामान्य ढगसे आवश्यक पूर्व–उपाय करना पडता था । लाल और हरे की भाति ही यह सन्देश भी सीधे दूरभाष सम्पर्क द्वारा लन्दन, लिवरपूल और ग्लासगोके तीन दूरभाष केन्द्रो (Exchanges) को भेजा जाता था। इनमेसे प्रत्येक विभिन्न दलोके छै केन्दोमे सयुक्त था और ये केन्द्र स्थानीय केन्द्रोसे जुडे हुए थे। ये स्थानीय दूरभाष केन्द्र सदेशोको उन्हे भेज देते थे कि जिनके लिए वे भेजे गये थे। इन लोक चेतावनियोको, जैसा कि प्रधान मत्री श्री विन्स्टन चर्चिल इन्हे कहा करते थे– " काफी समय तक सुनाई देने वाली बन्शी की गुर्राहटो " (Prolonged Banshee Howlings) को मुक्त रूपमे ध्वनित करना आवश्यक था।

२ – **लाल चेतावनी** (Red Warning) :– लाल चेतावनी देनेकी 'सूची' भी पूर्व वर्णित पीली चेतावनीकी सूचीकी भाति पूरी तरहसे प्राथमिकताके क्रमका अनुसरण करती थी। किन्तु इस प्रकारकी चेतावनी प्राप्त करनेवाली सख्या काफी बडी थी । इस कार्यवाही प्रारभ करने वाली चेतावनी

को प्राप्त करनेका अर्थ यह संकेत था कि समस्त सार्वजनिक भोंपू को ध्वनित किया जाये–समस्त औद्योगिक कार्यवाहियाँ बन्द की जाये और प्रत्येक व्यक्ति शरणगृहमें चला जाये। "कार्यवाही" अथवा लाल प्रारंभ कराने वाली चेतावनी उसके द्वारा भीतरी लाइनोंके स्पर्श करनेके समयसे बारह मिनट उड़नेके समयका प्रतिनिधित्व करती थी। जैसा कि श्री चर्चिलने पार्ल्यामेंटमे बताया था––"लाल" चेतावनीका आशय किसी विशेष स्थानके लिए तत्कालीन खतरेकी चेतावनीकी अपेक्षा लोगो को साधारण ढगसे मतर्कबनाना था। यह चेतावनी हवाई–आक्रमण के समय भोपूके द्वारा चिल्लाने या रोनेकी ध्वनिमे दी जाती थी। इसे और अधिक समझाया जाये तो हू–हू की ध्वनि करने वाले ('हूटर') और भोपुओ (सायरनो) के द्वारा ध्वनित रुक–रुक कर विस्फोटकी ध्वनिसे या स्वरके विभिन्न चढाव–उतार के द्वारा अस्थिर या कू–कू ध्वनिके सकेतसे – यह चेतावनीदी जाती थी। इन सकेतो के पूरकके रूपमे पुलिसकी सीटियाँ जोर जोरसे फूँक कर बजाई जाती थी किन्तु यह अत्यन्त आवश्यक नही था।

युद्धकी घोषणा होनेके कुछ ही मिनट बाद परीक्षणके रूपमे यह चेतावनी सुनी गई थी। इसको सुनते ही बिना किसी हडबडीके और इतना ही नही बल्कि यहा तक कि "अब क्या होगा"? की भावनाके प्रति भयकी अपेक्षा उसके प्रतिकूलका भाव लिये हुए तथा मुसकुराते हुए लोग पहलेसे ही बनाये गये शरणगृहोमे चले गये थे। बादमे चलकर ऐसे परीक्षण अमगल–सूचक यथार्थ के साथ सम्बद्ध किये गये थे। ऐसे परीक्षणोमे भोपूकी प्रथम ध्वनि नकली चेतावनी थी। ब्रिटेनमे यथार्थ परीक्षण तो कुछ समय बीत जानेके बाद हुआ था।

३ – **हरा सन्देश** (Green Message) :– "हवाई आक्रमण करने वाले चले गये"––इस प्रकारका (या हरा) सन्देश तब दिया जाता था जब शत्रु किसी ज़िलेके बाहर चला जाता था। यह संकेत एक लगातार ध्वनिके रूपमे था।

(४) **श्वेत सन्देश** (White Message) – "सावधानीकी अवधि समाप्त हुई"–इस प्रकारका (या श्वेत) सन्देश तब दिया जाता था, जब कि सारी सावधानियो को शिथिल किया जा सकता था।

ग्रेट ब्रिटेनमे चेतावनी और सन्देश पद्धति, जिसका अनुकरण मै इस विवरणमे कर रहा हू, म्युनिच–सधिपर हस्ताक्षर होने तक कार्यान्वयनकी दृष्टिसे काफी दूर तक तैयारी कर ली गयी थी और जब १५ सितम्बर १९३९ को उस देशपर सकटने विकट रूप धारण कर लिया था, तब लन्दनमे यह पद्धति पूरी तरहसे सक्रिय बना दी गयी थी और एक सप्ताह या उसके बाद ही यह पद्धति अत्यन्त प्रभावकारी ढंगसे सम्पूर्ण देशमें स्थापित हो चुकी थी। अक्तूबर १९३९ के अन्तमे एक राष्ट्रीय परीक्षणने अधिकारियोंको इस

बातसे सन्तुष्ट कर दिया था कि यह पद्धति युद्धमें पर्याप्त कुशलतापूर्ण ढंगसे कार्य करेगी और नये सालके प्रारम्भमें इस प्रकारके और परीक्षण भी आयोजित किये गये थे।

द्वितीय विश्व–युद्ध प्रारम्भ होनेके पूर्व इंग्लैण्डमे यह सब निश्चित कर लिया गया था कि सभी हवाई आक्रमणके सदेशोको प्रारम्भिक रूपसे भेजनेके लिए लडाकू विमानोके दलके क्षेत्रीय अधिकारी प्रमुख सेनापति उत्तरदायी रहेगे। शत्रु विमानके मार्ग और उसकी पहुंचके सम्बन्धमें रेडार, अवलोकन दलों (Observer Corps) और अन्य साधनो द्वारा उनको सूचना दी जाती थी। इस अधिकारीको स्वयं इस बातका निर्णय करनेकी अत्यधिक विवेक–स्वतन्त्रता दे दी गयी थी कि एक विशिष्ट अवसर-पर वह चेतावनी भेजे या नही।

इंग्लैण्डमें रात्रिमे हुए विस्तृत आक्रमणके फलस्वरूप चेतावनियोके सम्बन्धमे शासनमें तत्काल प्रतिक्रिया हुई। जून १९४० के अन्तिम सप्ताहमें देशके अनेक भाग लम्बी अवधिके लिए लाल चेतावनीके अन्तर्गत आ गये थे। फलस्वरूप युद्ध–सामग्री के उत्पादनमें गम्भीर बाधा उपस्थित हो गयी थी। ऐसी स्थितियोमे युद्धकालीन मन्त्रि-मण्डलने यह निश्चित किया कि लाल चेतावनीके बाद भी कारखानोके श्रमिकोको अपना कार्य चालू रखनेको कहा जाय और जब तक कि बन्दूक या बमकी ध्वनि सुनायी न दे तब तक वे शरणगृहोमे न जायं। पहले सुरक्षा करनेकी अपेक्षा पहले उत्पादन करनेको महत्व देनेके कारण नीतिमे काफी पविरवर्तन हो गया था। ब्रिटेनके युद्ध सम्बन्धी उद्योगोके उत्पादनको जर्मनोके द्वारा अस्तव्यस्त करनेके प्रयासको विफल बनानेके लिए ही यह कदम उठाया गया था। युद्ध सामग्रीके उत्पादनमे लगे हुए श्रमिकोंको हवाई आक्रमणकी सार्वजनिक चेतावनी के बाद भी तब तक कार्य चालू रखनेके लिए प्रोत्साहित किया जाता था जब तक कि यह स्पष्ट रूपसे ज्ञात न हो जाय कि शत्रु द्वारा वास्तवमे तुरन्त ही आक्रमण होनेवाला है।

विगत युद्धमे ग्रेट ब्रिटेनमें औद्योगिक समस्या अत्यधिक महत्वपूर्ण थी। यह मसस्या लोक चेतावनीके अन्तर्गत औद्योगिक चेतावनी पद्धतिके निर्माणके द्वारा हल की गयी थी। उच्च स्थलपर स्थित अवलोकन करनेवाले व्यक्तियोंको (Roof Watchers) जो कि प्रधानमन्त्री श्री विन्स्टन चर्चिल द्वारा "जिम कौवे या अवलोकन कर्ता व्यक्ति" (Jim Crows or Lookout Men) के रूपमे वर्णित किये गये थे, किसी भी स्थानपर तत्कालिक ख़तरा होनेकी सम्भावनापर कारख़ानों और ऐसे ही अन्य स्थानोमे ख़तरेकी सूचना देनेके लिए प्रशिक्षित किया गया था।

अनेक प्रकारके अनुभवों और विशेषकर फ्रासके आत्मसमर्पणके पश्चात् प्राप्त अनुभवोंने इंग्लैण्डके लिए कुछ स्थानोमें, विशेषकर तटवर्ती ज़िलोमे, परिवर्तन करना आवश्यक कर दिया था। कुछ जिलोमे, उदाहरणार्थ नारविचमे

बिना बमवर्षाके भी अनेक लाल चेतावनियाँ दी गयी थीं। जहाँ कि दूसरी ओर भोंपू (सायरन) के ध्वनित हुए बिना ही अनेक छोटे आक्रमण हो गये थे ऐसे तथा अन्य अनेक मामलोंमें चेतावनी पद्धतिमे पुनः सुधार करनेके लिए एक निश्चित समयपर क्षेत्रीय आयुक्तोसे विचार विमर्श किया जाता था।

कृत्रिम चेतावनी सन्देश भी काफी व्यर्थकी बाधा उत्पन्न करती थी। इस विषय पर ग्रेट ब्रिटेनकी सरकारने पुलिसके मुख्य अधिकारियोके लिए एक आदेश प्रसारित किया था। यहाँ यह और भी बता दिया जाय कि चर्चकी घण्टियोके बजनेसे उत्पन्न होने-वाली ध्वनि भी काफी विघ्न उत्पन्न करती थी। फलस्वरूप सैनिक अधिकारियों द्वारा हवाई छतरी (Parachutist) या अन्य हवाई आक्रमणके सम्बन्धमें चेतावनीके लिए इनके उपयोगको छोडकर देश भरमे उनपर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था।

रे–डार (Radar)

चाहे हम रे-डारकी चर्चा हवाई निर्देशन के सहायकके रूपमे करें या किसी भी वायुसेना दलके लिए महत्वपूर्ण होनेकी चर्चा करे, लेकिन तथ्य यह है कि आधुनिक युद्धमे रे-डार प्रथम और अतिआवश्यक उपकरण है। मानवताकी प्रतिरक्षा के लिए अत्यन्त प्रगतिशील सहायक रे-डारकी सहायताके अभावमें आज कोई भी देश सुर-क्षित नही कहला सकता। अतएव यह एक सत्यके रूपमे कहा जा सकता है कि "विश्वसे रे-डारको हटा दीजिए और इस प्रकार आपने सुरक्षाको समाप्त कर दिया है। इतना ही नही, जिस प्रकार एक व्यक्ति जुएके खेलमे जबर्दस्ती खेलकर सब कुछ हार जाता है, उसी प्रकार आपने पूर्ण विनाशका मार्ग खोल दिया है।" आजके साघातिक विनाशके युगमें मानव जातिको बचाये रखनेके लिए प्रमुख खाद्यान्नोकी भाति ही रे-डार भी मह त्वपूर्ण है। अलंकारिक ढगसे कहा जाय तो आधुनिक युद्धमे रे-डार प्रतिरक्षाका हृदय है।

रे-डारके महत्वके सम्बन्धमे संयुक्त राष्ट्रीय सैनिक दल (U. S. Military Mission) के भारतमे आनेके पूर्व जनवरी १९६३ मे "टाइम्स आफ इण्डिया" मे प्रकाशित प्रेस नोटकी ओर मै पाठकोका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। विमान, विमान–प्रतिविमान प्रक्षेपास्त्र (Air to Air Missiles-Side Winders) रेडार तथा अन्य सहायक सामग्रीके लिए भारत द्वारा प्रार्थना किये जानेपर यह दल (Mission) भारतमे आया था। इस दलमे अन्य व्यक्तियोके अतिरिक्त ग्रेट ब्रिटनके 'इम्पीरियल जनरल स्टाफ' के प्रमुख (Chief of the Imperial General Staff of United Kingdom) जनरल सर रिचर्ड हल भी सम्मिलित थे। उनका महत्व अन्तर्राष्ट्रीय विश्वमे उन सबको ज्ञात है कि जो प्रतिरक्षा या नागरिक प्रति-रक्षाकी चिन्ता रखते है। उन्होने प्रसन्नताके साथ इस पुस्तकके सम्बन्धमे बडा उत्साह-वर्धक मत प्रकट किया है। यह मत पुस्तकके आवरण–पृष्ठ (Cover Page) पर

प्रकाशित है। उपर्युक्त प्रेस–विज्ञप्ति "टाइम्स आफ इण्डिया" के समाचार –सेवाकी ओरसे भेजा गया था और उसकी तिथि वाशिगटन १६ जनवरी १९६३ थी। उपर्युक्त प्रेस–नोटसे सम्बन्धित भाग नीचे दिया जाता है, जिससे कि भारतीय हवाई प्रतिरक्षाके सम्बन्धमें रे-डार–रक्षावरण (Radar Screen) का महत्व दर्शित हो जायगा।

रे–डार सामग्री (Radar Epuipment)

रे-डार सामग्री (Radar Equipment) की व्यवस्थाके सम्बन्धमें तकनीकी समस्याओंपर भी काफी ध्यान दिया जायगा। रे-डार हवाई प्रतिरक्षाकी "आंख और कान" है।

संयुक्त राज्य अमेरिकाके सैनिक मुख्यालयके विशेषज्ञोका कहना है कि हवाई हमलोके विरुद्ध सम्पूर्ण प्रतिरक्षा नही हो सकती। फिर भी भारतीय हवाई प्रतिरक्षाकी समस्याके विषयमें वे सजीव आशावादके साथ सोचते है। वे तथ्य कि जिनके आधारपर ऐसा दृष्टिकोण रखा जाता है, निम्नलिखित है :—

(१) चीनका बमवर्षक दल पुराना हो चुका है। उसके श्रेष्ठ बमवर्षकोमे इलूशिन २८ (Ilyushin 28) है जो कि अब स्वनिक (Subsonics) है। हमारे पराध्वनिक या अतिस्वन लडाकू विमानो (Supersonic fighters) को उनका सामना करनेमे कठिनाई नही होनी चाहिए।

(२) उनके अन्य विमान, जिनमे १५, १७ और कुछ १९ मिग (Mig) विमान सम्मिलित हैं, सीमित विस्तारवाले विमान है।

(३) चीनी विमान चालकोंकी अपेक्षा भारतीय विमान चालक अधिक अच्छे ढंगसे प्रशिक्षित है।

(४) यह सन्देहास्पद ही है कि चीन तिब्बतसे एक लम्बे आक्रमणको चला सकता है, क्योकि पेट्रोलपूर्तिके लिए उसे लम्बी दूरी तय करनी पड़ती है। तिब्बतमें उनके पेट्रोलके संग्रहागारोंपर सरलतासे बमबारी की जा सकती है।

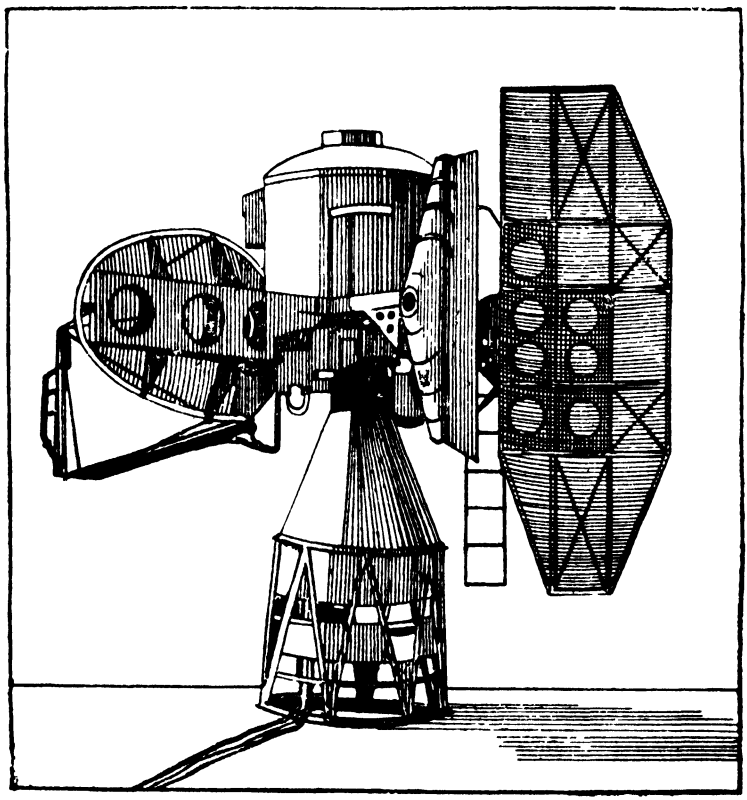
भारतीय हवाई प्रतिरक्षाकी कुंजी रे-डार–रक्षावरण (Radar Screen) है, जिसकी पूर्तिके लिए प्रतीत होता है कि संयुक्त राज्य राज़ी है।

भारतीय हवाई शक्तिके विषयमें संयुक्त राज्यके विशेषज्ञ बड़े उच्च विचार रखते है। यह हवाई शक्ति यद्यपि अपेक्षाकृत छोटी ही है, किन्तु यह अधिक सक्रिय और कुछ बातोंमें तकनीकी दृष्टिसे अधिक श्रेष्ठ है। यदि सावधानीसे इसका उपयोग किया जाय, तो वह समान–शक्ति रखनेवाली चीनी सेनाके बराबर सिद्ध हो सकती है, क्योंकि तिब्बतमें स्थित होनेके कारण चीनी वायुसेनाके बड़ी होनेकी सम्भावना नही है।

यदि सांघातिक साइडवाइन्डर्स (Side winders) से, कि जो चीनियोके पास नही है, इसकी शक्तिमें वृद्धि कर दी जाय, तो संयुक्त राज्यके विशेषज्ञोके मतानुसार भारतकी वायुसेनाकी योग्यता और क्षमतामे काफी वृद्धि हो जायगी"।

उपर्युक्त विवरणसे यह स्पष्ट होगा कि किसी भी देशकी प्रतिरक्षाके लिए रे-डार अत्यन्त आवश्यक है। अनेक पाठक यह जानना चाहेगे कि रे-डार किस प्रकारका होता है? चित्र–संख्या ६४ मे एक रे-डार है जो एक चौकी (Single Mount) लगे हुए खोज और ऊँचाई मापक 'एन्टेनाज' (Antennas) प्रदर्शित करता है। खोज–एन्टेना (Antenna) बाये तरफ, ऊँचाई मापक दाहिने तरफ प्रदर्शित है। वे दिगंश (Azimuth) में लगातार ४ आर.पी.एम. (4 Rpm) की गतिसे घूमा करते है।

रे-डारको समझनेके लिए किसी भी व्यक्तिको केवल यह जान लेना है कि वह प्रतिध्वनिके सिद्धान्तपर आधारित है। अधिकांश लोग आगराके ताजमहलमे गये



चित्र ६४
रे-डार

होगे और अपनी प्रतिध्वनिके अनुभवको याद रखते होगे। पुराने समयमे लोग प्रतिध्वनिसे यह जान लेते थे कि उनके सामने अन्धकार है या कुहरा। वे प्रतिध्वनिसे दीवाल, पहाड़ी, पहाड़ या हिमखण्डके बारेमे भी जान लेते थे। अतएव प्रतिध्विनि एक प्रकारकी मार्गदर्शिका थी और इससे मनुष्य यह निर्णय कर लेता था कि उसे सुरक्षाके साथ अपना मार्ग तय करना है या जहा वह है वही खड़े रहना है। आज हम बहुधा रास्तेमे नेत्रहीन व्यक्तियोको अपनी घडीसे निकली हुई ध्वनिके सहारे अनेक गलियो और सभाभवनोमे अपना मार्ग बनाकर जाते हुए देखते है। प्रकृतिमाताने अपने निर्मितोके द्वारा इसी सिद्धान्तको प्रदर्शित किया है।

गुफाओंके पूरे अधेरेमे केवल प्रतिध्वनियोकी सहायतासे चमगादड उडते है। तो रे-डारके विवरणकी ओर पुन. लौटते हुए कहा जा सकता है कि विज्ञान द्वारा प्रतिध्वनिका सिद्धान्त ही व्यवहृत किया गया था। वस्तुत: किसीने यह महसूस भी किया होगा कि मानवीय सुरक्षाके सबसे बडे उपाय—रे-डारका अविष्कार परमात्माकी सृष्टिके छोटे प्राणी "चमगादड़" से हुआ था।

फिर भी उपर्युक्त विवरणसे रे-डार भिन्न होता है। परम्परागत चिल्लाहटको मापने और प्रतिध्वनिके लिए ठहरनेके बदले रे-डारमे विद्युत चुम्बकीय शक्तिके कोलाहलमय स्फुरण (Shout pulses of Electro Magnetic energy) उच्चध्वनि घनत्वपूर्ण रेडियो तरगोसे (High Frequency Radio Waves) प्रेपित किये जाते है। तब प्रतिध्वनि, जो लौटकर आती है, बडी शुद्धता और ठीक ठीक रीतिसे मापी जाती है। अतएव प्रत्येक स्फुरण या स्पन्दन (Pulse) को उद्देश्य तक पहुचने और वहासे लौटनेमे जो समय लगता है, उसे बिल्कुल ठीक—ठीक मापना चाहिए। प्रत्येक स्फुरण (Pulse) जिस दिशामे प्रेपित किया जाता है, उसका सकेत उसी समय सरल ढगसे तथा समझमे आ जाने योग्य आकारमे प्रस्तुत करना चाहिए। आधुनिक उपायो और प्रणालियोमे रेडारके क्षेत्र तथा पता लगानेके क्षेत्रमे भी काफी वृद्धि हुई है। उदाहरणके लिए एक पलके लिए कल्पना करे कि किसी विशेष स्थानपर आक्रमण करनेके लिए शत्रुका विमान एक आयोजित उड़ानपर है। यहा रे-डारने अपने जाननेके साधनोके द्वारा उस विमानकी पहुँचकी सूचना बहुत पहलेसे प्राप्त कर ली है और फिर शत्रुके मार्गका पता लगानेमे भी उसने सहायता की है। अतएव खोज वत्तियोके साथ तोपो या प्रतिआक्रमण या प्रतिरक्षाके लिए जो भी अन्य अस्त्र उपलब्ध हो उन्हे अच्छी तरह सक्रिय बनाया जा सकता है और उन्हे आक्रमणके लिए तैयार कर उस स्थानको सम्पूर्ण विनाशसे बचाया जा सकता है। सक्षेपमे कहा जाय, तो रे-डार शत्रुका काफी पहलेसे पता जाननेमे सहायक होता है।

इसलिए प्रत्येक देशको मुख्य—मुख्य स्थानोपर रे-डार—केन्द्र स्थापित करने चाहिए और किसी भी देशकी सरकारको प्रतिरक्षाके लिए ऐसे महत्वपूर्ण केन्द्रोके निर्माणके

लिए आवश्यक धनराशि निर्धारित कर देनी चाहिए, क्योकि अपने महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानो (Installations) के अति महत्वपूर्ण हितों तथा अन्य इमारतोकी रक्षाके लिए सावधानी बरतना और नागरिक जनसंख्याकी सुरक्षाकी देखभाल करना उनका कर्तव्य है। इन सबका अर्थ रे-डारकी सहायताकी समस्याओका सावधानीके साथ अध्ययन करना है।

रे-डारके निर्माणमे सन्निहित तकनीक, लाभ तथा हानि, स्थितिका स्थान, रे-डारका प्रबन्ध करनेवाले कर्मचारियोका प्रशिक्षण और उसके संचालनके लिये नियुक्त कर्मचारियोको उचित शिक्षा मार्गदर्शनके लिए अद्यतन (Up-to-date) नक्शा और तथ्य दर्शक आकडे—ये सब अति आवश्यक है और लोगोंकी सुरक्षाके लिए काफी महत्वपूर्ण है।

समुद्री लडाईके लिए भी रे-डार वरदान सिद्ध हुआ है और चूकि अन्य प्रतिरक्षाके स्थानोकी भाति समुद्री किनारे भी उतने ही महत्वपूर्ण है अतएव इससे जो उपयोगी सहायता, विशेषकर पनडुब्बियोका पता लगानेमे, मिलती है उसका विशेष उल्लेख करना आवश्यक है। रे-डारकी सहायतासे शत्रुद्वारा होनेवाले आक्रमणसे जरा भी भयभीत न होते हुए जहाजोके बेडे विस्तृत सागरमे सुरक्षापूर्वक जा सकते है, क्योकि उपयोगी प्रतिरक्षात्मक प्रबन्धोकी सहायतासे शत्रुको बहुत कुछ रोका जा सकता है। ये प्रबन्ध इसलिए सम्भव हो जाते है कि प्रतिरक्षाके अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन रे-डार द्वारा शत्रुकी गतिविधियोका बहुत पहलेसे पता लगाया जा सकता है।

हमारे युगमे प्रतिरक्षा तथा नागरिक प्रतिरक्षा दोनो दृष्टियोसे रे-डारका महत्व बहुत बडा है और प्रत्येक देशको इस तथ्यको महसूस करना तथा सैनिक दृष्टिसे महत्व-पूर्ण स्थानोपर काफी संख्यामे रे-डार केन्द्र स्थापित करनेके लिए आवश्यक क़दम उठाना चाहिए। अन्य देशोके अतिरिक्त विशेषकर अमरीका, केनेडा, इग्लैण्डने अपने तटोकी निगरानीके लिए जो कुछ किया है, उससे हमे सबक लेना चाहिए। जब हम इस चित्रकी कल्पना करते है कि द्वितीय विश्वयुद्धमे यु—नौकाओ (U--Boats) और विस्फोट-कोसे पूर्ण चुम्बकीय सुरगो (Magnetic Mines) के विरुद्ध युद्धमे क्या हुआ था तब समुद्री युद्धमे रे-डारके महत्वका अनुभव हममेसे कोई भी व्यक्ति कर सकता है। क्या विश्वके राष्ट्र पर्ल हारबरमे मिली हुई सीखको विस्मृत कर सकते है ? इतना सब कुछ लिख जानेके बाद रे-डार सहायताके महत्वपर बल देनेके लिए और कोई बात शेष नही रह जाती। फिर भी इतना कहा जा सकता है कि द्वितीय विश्व—युद्धमे रे-डार तथा सम्बन्धित प्रणालियोके विकासके लिए जो व्यापक अनुसंधान और विकासका प्रयास किया गया था, उसके फलस्वरूप सैनिक उपयोगके लिए सहस्रो रे-डार (जिनमेसे कुछ संभवित शान्तिकालके लिए भी थे) का केवल निर्माण ही नही बल्कि अनेको सूचनाओ और वैद्युत अणु (Electronics) तथा उच्चध्वनि घनत्वके

क्षत्रो (High Frequency Fields) में नयी प्रणालियोंका ज्ञान भी हुआ था। द्वितीय विश्वयुद्धसे प्रेरित होकर जब रे-डार विकासका कार्य गतिसे अग्रसर हो रहा था, तब अनेको रे-डार–हीन सामुद्रिक उपकरणो (Non Radar Navigational Aids) के सुधारकी गति भी तीव्र कर दी गयी थी। ये तथा अन्य रे-डार–हीन सहायक उपकरण (Non Radar Aids) इस समय प्राप्त प्रणालियोका स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करते है। विगत युद्धके बादमे रे-डार तथा रे-डार–हीन (Non radar) प्रणालियोंमे जो विकास किया गया है, वह काफी व्यापक है। भविष्यमे क्या सम्भव है, इस बातकी कल्पना इस तथ्यमे की जा सकती कि हमारे युगके तीव्रगतिवान प्रक्षेपास्त्रो और राकेटो का विकास इस विश्वके लिए आवश्यकताके कारण यह सम्भव कर देगा कि वह रे डार प्रणालीका अन्तिम सीमा तक विकास कर सके क्योकि एक विशेष देशका सम्पूर्ण जीवन उसकी सम्पूर्ण स्थिति और आक्रान्ताके आक्रमणके सम्बन्धमे प्राप्त सामयिक सूचनापर निर्भर रहेगा। किसी शत्रु देश द्वारा प्रक्षेपास्त्र या राकेट छोडने और उसके हजारो मील दूर जाकर आघात करनेके पूर्व केवल कुछ ही मिनटोका समय रहेगा। अतएव आधुनिक युद्धमे रे-डारका महत्व इस साधारण तथ्यसे समझा जा सकता है कि किसी राकेट या प्रक्षेपास्त्रके छोडनेके बारेमे समयपर एकत्रित सूचना एक देशको उचित समयपर प्रतिआक्रमणका प्रयास करनेमे सहायता दे सकती है। इस प्रतिआक्रमणके फलस्वरूप आक्रान्ताके उपर्युक्त शस्त्रास्त्रोका केवल पूर्ण विनाश ही नही हो सकेगा, बल्कि उसके सैनिक स्थलोको नष्ट करनेके लिए आक्रमणात्मक कदम उठाने तथा उसके (शत्रुके) लिए बदलेके उपाय अपनाना असम्भव कर देनेमे भी सहायता मिल सकेगी।

– अध्याय १४ –

बचाव–दल, विध्वंस–दल और मलबेकी सफाई

इस अध्यायको लिखते समय युद्धके पूर्व इंग्लैण्डमे बचाव और विध्वंस सेवाओकी स्थितिको मै विशेषरूपसे स्मरण करता हू। १९३९ के प्रारम्भ मे १,२५,००० व्यक्तियोकी 'कागजी' शक्तिके साथ वहाके सेवादलोमे आकाररूपमें इसका स्थान तीसरा था। बहरहाल, इसका प्रभावकारी संगठन, अभी तक प्रतीक्षा करता रहा कि कितनी दूरी तक इमारतोके प्रशिक्षित या कुशल व्यक्तियो और इसी प्रकारके व्यवसायवालो पर भरोसा किया जाय। यह भी प्रश्न था कि इन व्यक्तियोको किन शर्तो पर नियुक्त किया जाय।

शीघ्र ही ऐसे निर्णय हो भी गये। लंदन क्षेत्रमे प्रमुखरूपसे प्रगति की गयी। वहाँपर लदन–काउन्टी–काउन्सिलने विध्वस और सडकोको साफ करनेका उत्तरदायित्व ले लिया और यह स्वीकृत हुआ कि बचाव दलका कार्य प्रमुख रूपसे मलबोके नीचे दबे या दफन हुए लोगोंके बचावसे सम्बद्ध है। इसमे ऐसे मलबोकी सफाई या विध्वसके कार्य भी आ जाते है, जिसमे लोग फस गये हो। इस दलका संगठन (Composition) भी परिवर्तित कर दिया गया। भारीदल (Heavy Parties) वे जिनके पास अधिक भारी सामान या साधन थे, मे अभी भी आठ व्यक्ति और एक चालक रहा किन्तु छोटे या हलके दल (Light parties) की शक्तिको बढाया गया। उनमे दस व्यक्ति और एक चालक होने लगे। इनमेसे चार प्राथमिक उपचारमे प्रशिक्षित रहते थे।

कार्योकी इस सीमितताके बावजूद लंदनका 'होम आफिस' गृह कार्यालय इस बातपर पूराविश्वास करता था कि 'बचाव कार्यके लिए स्थानीय अधिकारियो अथवा भवन व्यापारियो (Building Traders) मे से लिए हुए कुशल व्यक्तियोका औसतन अधिक होना आवश्यक है। वेतन, साज–साधन और प्रशिक्षण आदिसे सम्बद्ध कुछ कठिनाइयाँ भी उत्पन्न हुई, परन्तु उनका बचाव और विध्वंस दलोकी 'होम आफिस' लदन द्वारा महत्ता–स्वीकृतिको दृष्टिपथमे रखते हुए अत्यन्त सफलतापूर्वक सामना किया गया। उनकी महत्ता स्वीकृतिके आलोकमे अधिकारियो द्वारा इन दलोके विशिष्ट कर्मचारियो या अधिकारियोके लिये विशेष वेतन और भत्तेको अनुशसित (Recommend) किया गया था।

विशेष रूपसे बल देकर यह लिखा गया कि बचाव और विध्वंसके कार्योंके लिए कुशल व्यक्तियोकी आवश्यकता है। यद्यपि सहायताके लिए भारी और हल्के दलोंसे अप्रशिक्षित व्यक्तियोंको भी सम्बन्धित किया जायगा।

लंदनमे बचाव दलोने हवाई हमलेके भीषण सकटकालमे किस प्रकार ध्वसावशेषोके मध्य कार्य किया था, यह एक ऐसी कहानी है जो उन दर्शकोकी आँखोके समक्ष जीवन्त रूपमे चित्रित है। किन परिस्थितियोमे बचाव दलोने कार्य किया, मलवोके अम्बार में गिरते पड़ते, कमसे कम आरामके साथ कठोर परिश्रम करते, पक्की चिनाईकी ईटोके अन्दर दफन हुए या दबे हुए अभागे जीवितोको बाहर निकालनेके लिए प्रयत्न करनेमे समस्त वैयक्तिक खतरोकी अवहेलना करते अथवा ध्वस्तप्राय घरोमे मूर्च्छित पड़े हुए लोगोंको बाहर निकालनेका प्रयत्न करते और जिन लोगोका सहार हो गया है, उनके मृत शरीरोंको खोज निकालते हुए बचाव दलवालोने जो कार्य किये है, वे आज भी उन दृश्योके तत्कालीन दर्शकोकी आँखोमें चित्रित हो उठते है।

एक और बात थी जिसपर १९३९ ई. मे ध्यान केन्द्रित किया गया था और यह बात बचाव दलके साज–सामानोसे सम्बद्ध थी। तब तक इग्लैण्डमे साज–सामान १९३१ ई. के टोकियोके भूकम्पके अनुभवके आधारपर विनिर्मित किये गये थे और इनमे मुख्य रूपसे उत्तोलनदण्ड (Levers), मब्बलो (Crowbars), रस्सियो (Ropes), छोटे डडे या झडे (Jacks) और प्रयोगके अन्य उपकरण शामिल थे। युद्धके समयमे उथल–पुथलके क्षणोके लिए प्रत्येक दल भारी या हल्के बचाव दलके लिए, इन उपकरणोका पूरा सेट रखना आवश्यक था, इसीलिए उसी वर्ष मार्चमें ब्रिटेन सरकारने केन्द्रीय पूर्तिके सिद्धान्तपर हमे निश्चय किया। बहुत बडी सख्यामे अपेक्षित साज सामानोको प्राप्त करना कठिन सिद्ध हुआ। बहरहाल इस वर्ष जूनमे सयुक्त राज्य अमरीकामे दो अत्यन्त महत्वपूर्ण वस्तुओके लिए यथा, उठानेवाले रस्सो, कप्पियो और रेचेट डडो (Ratchet Jack) के बहुत बडे आदेश दिये गये। अगस्त १९३९ तक अर्थात् युद्धकी घोषणाके एक माह पहले तक स्थानीय अधिकारियों तक इनमेसे अधिकाश साज सामानोके पहुचनेमे अच्छी प्रगति हुई। वस्तुतः जब युद्ध शुरू हो गया, तब पहली ही बारमे आवश्यक पदार्थोकी पूर्तिके प्रयत्न गतिवर्द्धित (Accelerated) हुए और अगस्त १९४० मे अर्थात् उसके एक वर्ष पश्चात् जब तडित गति युद्ध (Blitz-krieg) आ गया, तब आक्रमणके आघातका सामना करनेके लिए बचाव दलके आदमी, साज–पदार्थों और आवश्यक सामानोसे सुसज्जित और प्रस्तुत थे।

बचाव और विध्वस दलके अप्रशिक्षित कार्यकर्ताओको प्रथमोपचार मे आवश्यक रूपसे प्रशिक्षित करनेके प्रश्नको भी उस समय तक पूर्णतः स्थिर कर लिया गया था।

इस संदर्भमे यह ध्यानमें रखनेकी बात है कि अगस्त १९३९ ई. तक इन सेवाओंका कार्य यथा–प्रथमोपचार दलका कार्य–अनेक हवाई–हमलेसे सुरक्षा करनेवाले दलके स्वयंसेवकोके द्वारा एक कोमल या कच्चे अथवा 'अवैध बच्चे' के समान समझा जाता थाऔर यह बात अगस्त १९३९ ई. मे 'बोर्नमाउथ–स्टाफ' के एक प्रशिक्षक द्वारा इस कार्यके विषयमें लिखे गये वक्तव्यसे स्पष्ट हो जाती है कि जो उसने इंग्लैण्डमें हवाई हमलेसे (पूर्वोपाय) सुरक्षा करनेवाले विभागको यह लिखा था कि उसके स्थानपर अधिकारीने प्राथमिक उपचार दल संगठित करनेका निश्चय किया है और उसने साथ में यह भी पूछा था कि कौन–सा केन्द्रीय विभाग इस सेवाके लिए उत्तरदायी है ।

इन सबके बावजूद प्रत्येक वस्तु पूर्ण रूपसे सज्जित और प्रस्तुत थी और लोगोंने अपने उत्तरदायित्वको महसूस भी किया था और प्रत्येक वस्तु अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक स्थिर कर ली गयी थी और बचाव तथा विध्वस–दलोके कार्यकर्ताओंको पूर्ण प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया था । उस संकटके समय उस देशके लोगो द्वारा प्रस्तुत किया गया उदाहरण सभीके लिए एक मार्ग–निर्देशक आदर्शके रूपमे स्वयको सिद्ध करता है और मुझे यह कहते हुए कोई झिझक नही है कि उन परिस्थितियोको अनेक बाधाओके होनेपर भी ग्रेट–ब्रिटेनके लोगोके द्वारा स्वीकृत किये गये उपाय सभी सबद्धोको समस्त तकनीकी (Techanical) और अन्य उपायोके प्रसगमे निश्चय ही आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है ।

बचाव कार्यसे सम्बद्ध सभी लोगोके लिए यह स्पष्ट किया जा सकता है कि बचाव दलोका सगठन ब्रिटेनमे गत युद्धके दौरान सर्वत्र उसी प्रकारका नही रहा । १८ अप्रैल १९४० ई. को मन्त्रिमण्डलके द्वारा हवाईहमलेसे सावधानी के सगठन विषयपर एक नया परिपत्र (Circular) प्रचालित (issued) किया गया था । इसमे नयी प्रथ्योक्तियाँ (Maxims निर्देश) सन्निविष्ट थी, जो मूलत. समाज्ञापक और वैतनिक तथा अवैतनिक कार्यकर्ताओके लिए निर्धारित थी । दोनो बचाव और प्रथमोपचार दलकी दो कतारे बनाने (Double Banking) और भारी तथा हल्के सुरक्षादलो (लदनके अलावा) के अन्तरको समाप्त कर दिया गया । इसके पहले भारी और हल्के बचाव दल थे । भारी बचाव पार्टीमे सामान्य रूपसे तीन प्रशिक्षित और कुशल व्यक्तियो और एक फोरमैन (Foreman) को लेकर आठ व्यक्ति हुआ करते थे । हल्के बचाव दलोमे तीन प्रशिक्षित व्यक्तियो, एक ज्येष्ठक (फोरमैन Foreman) के अतिरिक्त सहायता कार्यके लिए छः कुशल और प्रशिक्षित व्यक्तियो, जिनमे चार प्रथमोपचार प्रदान करनेमे कुशल होते थे, को लेकर दस व्यक्ति हुआ करते थे । भारी और हल्के बचाव दलोंके मध्यके अन्तरकी समाप्तिके पश्चात् सभी बचाव दलोमे ग्यारह व्यक्ति होने लगे । इनमे सात साथ रहनेवाले (Standing by) हुआ करते थे और यह अभिस्तावित किया गया कि इस कार्यके लिए नगरपालिकाके कर्मचारियो

(Municipal Employees) को भी उपयोगमें लाया जायगा। नये आदेशोने विशिष्ट प्रशिक्षण (Specialised Training) और प्रथमोपचार तथा बचाव दलोका प्रशिक्षित करने और दूसरोके कार्योमे शुद्धिकरण दलकी महत्तापर अधिक बल दिया गया था। वैतनिक स्टाफ आगे चलकर कम कर दिया जानेवाला था। लदन क्षेत्रमें इनमेंसे किसी भी आदेशका नियोजन नही किया गया था। यद्यपि उस स्थानके प्रवर आयुक्त (Senior Commissioner) इस बातपर सहमत हो गये थे कि यदि जर्मन शत्रु उसी प्रकार दमन कार्यको जारी रखता है जिस प्रकार कि १९३९ ई. में युद्धके आरम्भसे लेकर अप्रैल १९४० ई. तक वह करता रहा, उस क्षेत्रमे वैतनिक कार्य कर्ताओकी छंटनी भी आवश्यक थी।

बचाव-दलों के साज-सामान

बचावदलोके मामलोमे साज-सामान अत्यन्त महत्वपूर्ण अग है। यदि इन दलोके लोगोको अपेक्षित साज-सामान उपलब्ध नही होता, तो सर्वोत्तम प्रशिक्षण भी सहायक नही होता। इस उद्देश्यके लिए १९३९ ई. मे लदनके 'होम आफिस' (गृह विभाग कार्यालय) द्वारा प्रकाशित परिशिष्ट (Appendix) को मै मार्गदर्शकके रूपमे श्रेयस्कर समझता हूँ। इसमे आवश्यक मदो (items) के नाम भी निर्धारित थे, जो उनकी रायमे भारी और हल्के बचाव दलोको उपलब्ध कराये गये थे। इस परिशिष्ट (Appendix) के प्रथम भागमे जो यहाँ नीचे उद्धृत है, उन मदो (Items) को वर्णित किया गया था, जिनकी किसी स्थानीय अधिकारीको आवश्यकता होती है और जो स्थानीय हवाई हमलेसे सावधानी प्रदान करनेवाले अधिकारियोसे प्राप्त की जा सकती थी। इस (Appendix) के दूसरे भागमे उन मदो (Items) को उल्लेखित किया गया था, जिनका बचाव दलोके पास होना आवश्यक था और जिनके लिए उन्हे स्थानीय हवाई हमलेमे पूर्वोपाय रूपमे सावधानी प्रदान करनेवाले अधिकारियोसे मागनेकी आवश्यकता नही थी।

उस परिशिष्ट (Appendix) मे वर्णित सामानोके अतिरिक्त बचाव दलोके लिए 'प्रथमोपचार बैग' एक प्रथमोपचार वक्स 'टेप' और पानीकी बोतलोके साथ थाईके लिए दो लम्बी चपातियां (Splints) को भी प्रदान किया जानेवाला था।

पूर्वोक्त परिशिष्ट, जिसमे बचाव दलोके लिए आवश्यक सामानोका निर्देश किया गया है, निम्नलिखित है :-

भारी बचाव दलके लिये	भाग १	हल्के बचाव दलके लिये
३ (१२ फीट)	आरयरन शाड–लीवर्स (लोहेके रंभे) (Iron shod Leavers)	२ (१० फीट)
१ (३ टन)	उठानेवाले रस्से कप्पिया (Lifting Tackle)	१(३० हंडखेट)
३	६ फीट लम्बी जंजीर (पर्याप्त अच्छी और मज़बूत–जो ३ टन वजन उठा सके)	१
१ (४ इंच)	रस्से–कप्पियोंका सेट, ३ चरखियाँ : २ चरखियाँ : घिरियाँ Set of Rope Tackle, 3 Sheave 2 Sheave	१ (३ इंच)
१ (४ इच)	एक चरखी, खुलकप्पी (Single Sheave Snatch Block)	१ (३ इंच)
२	जैक (छोटा डंडा) दातेदार, जो १० या १५ टनका वज़न उठा सके Jacks with 10 or 15 Ton lift— Preferably ratchet Type.)	२
१	जैक २० टनका वज़न उठा सकने योग्य (मुख्यतः रैचेट प्रकारका) Jacks with 20 Tons Lift, Preferably ratchet Type)	
१	घुमावदार सीढी ३५ फीट लम्बी (Turntable Ladder)	१
१	एसीटिलिन कर्तनके सुवाह्य औज़ार (Protable Acetylene Cutting Outfit)	
२	लघु ऐसीटिलीन प्रकाश (Small Acetylene Flares.)	२
१	दीर्घ आकारकी खोजबत्ती (Largesize Searchlight)	
२	दीर्घ आकारकी कुल्हाड़ियाँ (Large size Axes.)	१
२	फायरवालोंकी कुल्हाडियाँ (Fireman's Axes.)	२

२	दो मूँठोवाली–तिरछी काट आरी (Two handled cross cut saws.)	१
३	४० फीट लम्बे डेढ़ इच मोटे सनी रस्से (40 Ft Length X 1½ inch. thick, Manila Lashing lines)	३
१	सनी रस्सा : लगभग १०० फीट लम्बा और ३ इंच मोटा (Manilla Rope Length about 100 Ft. X 3 inch.)	१
६	१५ फीट लम्बी तार–रस्सी (15 Feet long wire rope)	६
४	हल्के फावडे (Spades : Light one.)	३
	PART II	
४	रभे या सब्बल (Crowbars)	३
४	फावड़े–कुदाले (Shovels)	३
२	घन (लोहार के भारी हथोड़े) (Sledge Hammers)	१
२	हस्त आरी (Hand saws)	२
२	(लोहेके) इकपहिया ठेले (Wheel Barrows—Iron)	१
३	(९" × ३" परिमाणके तख़्ते) (9" X 3" Deals)	३
६	तुफानी लालटैन (Hurrican Lamps) फायर डैविल या आग बुझानेकी टोकरी शीतमे फसे हुए लोगोंकी सूचनाके लिए (Firedevil or Fire basket for warning trapped persons in winter) और उत्तोलको और आलम्बोके लिए कप्पियाँ (Blocks for fulcrums for levers)	४

बचाव दलोके लिए दिये जानेवाले साज–सामानोके सिलसिलेमे दूसरोके लिए उपयुक्त परिशिष्ट मार्गदर्शक हो सकता है। बहरहाल, स्थानीय स्थितियो अथवा किसी देशमें सामान्य रूपसे प्रचलित परिस्थितियो के अनुसार आवश्यक समंजन (Adjustment) किये जा सकते है। यदि सम्भव हो तो किसी बचाव दलके समूहके लिए एक हेलीकोप्टरकी व्यवस्था भी की जानी चाहिए, क्योकि वह उस समयके लिए अत्यन्त उपयोगी है, जबकि बचाव कार्य किसी घाटी या पहाडी क्षेत्रमे किया जा रहा हो।

बचाव दलों का कार्य

ज्यो ही नियन्त्रण या रपट केन्द्रसे समाचार या सूचना प्राप्त हो, त्योही जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दीमे बचाव दलोको क्षतिके स्थानपर पहुच जाना चाहिए। घटनास्थलपर पहुचनेपर ज्येष्ठक (Foreman) क्षतिके विषयमे विवरण प्राप्त करता है। वह उस क्षत भवन का सर्वेक्षण करता है, तदनन्तर उसका पहला कार्य यह निश्चय करना है कि बचाव कार्य सीधे शुरू कर देना चाहिए अथवा उसे तब तक प्रतीक्षा करनी चाहिए जब तक कि उस भवनका एक विशिष्ट भाग गिरा नही दिया जाता अथवा उस भवनके किसी भागको आधार प्रदान करना आवश्यक है। उसे यह भी निश्चय करना पडता है कि वह कार्य हल्के बचाव दलके लिए पर्याप्त अच्छा है अथवा उसे भारी बचाव दलको करना चाहिए। उसे यह भी निश्चय करना पडता है कि क्या भवनको गिरानेके लिए अथवा मलबेकी सफाईके लिए अधिक आदमियोकी आवश्यकता है।

उस परिस्थितिके समस्त पक्षापक्षो (Pros & Cons) की परीक्षा करनेके अनन्तर ज्येष्ठक (Foreman) रपट केन्द्रपर अपनी रपट भेजता है और यदि आवश्यकता हुई, तो वह उस स्थलकी विशिष्ट परिस्थितिके अनुसार सहायता भी मागता है। बचाव दलोंके कार्योमे एक प्रमुख कार्य है उन जीवित व्यक्तियोका उद्धार करना, जो दुर्भाग्यवश मलबेके नीचे दफन हो गये है। ये लोग अस्थायी तौरपर पानी, गैस, विद्युत आदिकी पूर्तिको बन्द करते है, जिससे कि इनके प्रवाहसे आगे और क्षति न हो सके। यदि पाइप किसी कारणसे खराब हो गया है, तो ज्येष्ठक (Foreman) रपट–केन्द्रपर सूचना भेजता है, जिससे कि क्षतिके सुधार या मरम्मतके लिए घटनास्थलपर विशेषज्ञ भेजे जाते है। बचाव दलके लोग किसी इमारतके गिर जानेके कारण मरे हुए व्यक्तियोकी लाशोको भी प्राप्त करते है। बहरहाल, यह आवश्यक है कि ऐसा करते समय उन्हें अपनी सुरक्षाके प्रति आवश्यक सावधानी रखनी चाहिए। यदि ऐसा होता है कि समीपमे कोई इमारत अत्यन्त कमजोर है, तो उसके नीचे गिर जानेका ख़तरा है और जिसका यह परिणाम हो सकता है कि जीवन और सम्पत्तिकी क्षति हो सकती है अथवा विशेष मार्ग अवरुद्ध हो सकता है, बचाव

दलका कर्तव्य यह देखना होता है कि उस इमारतको या तो गिरा दिया जाय, या यदि आवश्यकता हो, तो उसे आवश्यक आधार प्रदान किया जाय। यदि ऐसी स्थिति आये कि तुरन्त वहाँपर कोई चीज़ ठीक करनी हो, तो उनका यह कर्तव्य है कि वे उसे तुरन्त ठीक कर दे। बचाव दलके अधिकारियोंके कार्योंमें एक प्रमुख कार्य यह है कि वे इन बातोंकी भी सूचना और जानकारी अपने पास रखे कि यहाँसे लकडीके भारी प्रकारके सामान और खासकामोके लिए खास वस्तुएँ प्राप्त की जा सकती है। उन्हे इस बातका भी ध्यान रखना पड़ता है कि मलवेके नीचे कोई कीमती पदार्थ या भोजन सामग्री दब गयी है, तो उस स्थितिमे उसे बाहर लानेके लिए प्रमाणिक प्रयत्न करना चाहिए, हा, इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि ऐसा करते समय बचाव दलके किसी अधिकारीके लिए जीवनका कोई खतरा न हो।

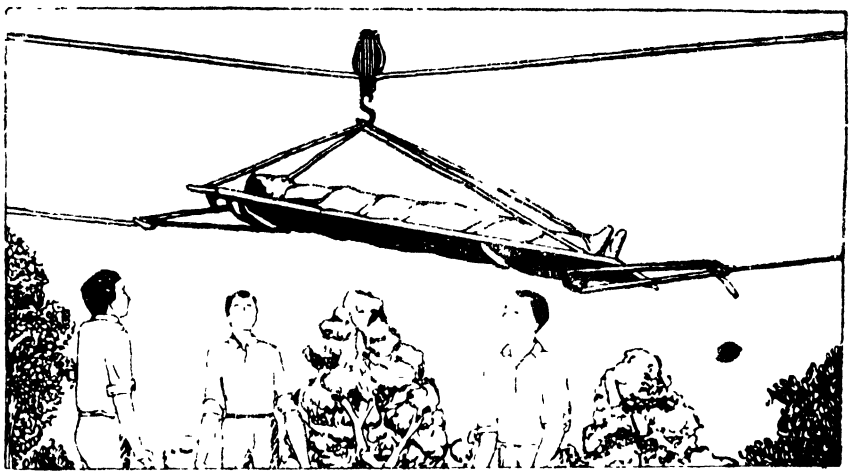
प्रथमोपचार दलको सहायतार्थ बुलानेका कर्तव्य सम्बन्धित क्षेत्रके स्थानीय संगठनके लोगोंसे सम्बन्धित है। लेकिन, यदि ऐसा होता है कि प्रथमोपचार दलके क्षतिके स्थानपर पहुंचनेके पहलेही बचाव दल पहुच जाता है, तो उनका यह कर्तव्य है कि वे उस स्थानपर आवश्यक प्रथमोपचार प्रदान करे। बचाव–दलके लोगोंको गैससे भरे हुए या गैससे विदूषित पदार्थोवाले स्थानोपर अनेक बार काम करनेका अवसर आ सकता है। उन्हें वहा भी काम करना पड़ सकता है, जहां नाभिकीय बम वर्षाके परिणामस्वरूप रेडियो–सक्रिय–धूलिके द्वारा सभी पदार्थ प्रभावित अथवा विदूषित हो गये है। अतएव यह आवश्यक है कि इन सबके विरोध मे सुरक्षाके उपायोंके सम्बन्धमे बचाव दलके लोग पूर्णत: प्रशिक्षित हो और इस कार्यके लिए आवश्यकताके रुपमे उन्हे आवश्यक साज–सामानोंको दिया जाना चाहिए। बहरहाल, यह ध्यान रखने योग्य है कि यदि किसी पदार्थके विदूषित होनेकी पूर्व जानकारी हो अथवा किसी स्थानके रेडियो सक्रिय धूलिसे विदूषित होनेकी जानकारी हो, तो उस विषयके विशेषज्ञोंकी सलाहके पश्चात् ही कोई कदम उठाना चाहिए।

विशिष्ट स्थानोपर बचाव दलोको विलक्षण कार्योका सपादन भी करना पड़ सकता है। इस प्रकारके अनेक कार्योमे एक काम है—किसी रोगीको रस्सीके सहारे दूर हटाना है। इस विषयका एक चित्र चित्र सख्या ६५ मे अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित है।

जैसा कि ऊपर बताया गया है इस प्रकारके मामलेमे बडी निपुणता (Dexterity) और सहयोगिता (Co-ordination) की आवश्यकता है और यह स्पष्ट है कि बचाव दलके अधिकारियोके ऐसे कठिन कामोको सम्पादित करनेमे पूर्णत: प्रशिक्षित होना चाहिए। उनकी कोई भी भूल अत्यन्त घातक हो सकती है।

ऐसे ही एक और महत्वपूर्ण प्रकारका दूसरा विषय है, जिसमे दूसरे बड़े कठिन कार्यका सम्पादन करना पड़ता है जबकि बचाव दलके अधिकारियोको आकस्मिक

रूपसे घायल किसी व्यक्तिको जलते हुए मकानसे निकालना पड़ता है। अतएव सम्बद्ध व्यक्तिको दमकलवालोंके 'लिफ्ट' की (जो इस कार्यमे उपयोगी है) जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। अगले पृष्ठ पर दिये हुए चित्र–संख्या ६६ से स्पष्ट है कि बचाव दलके द्वारा किस प्रकार ऐसा कठिन कार्य पूरा किया जा सकता है।

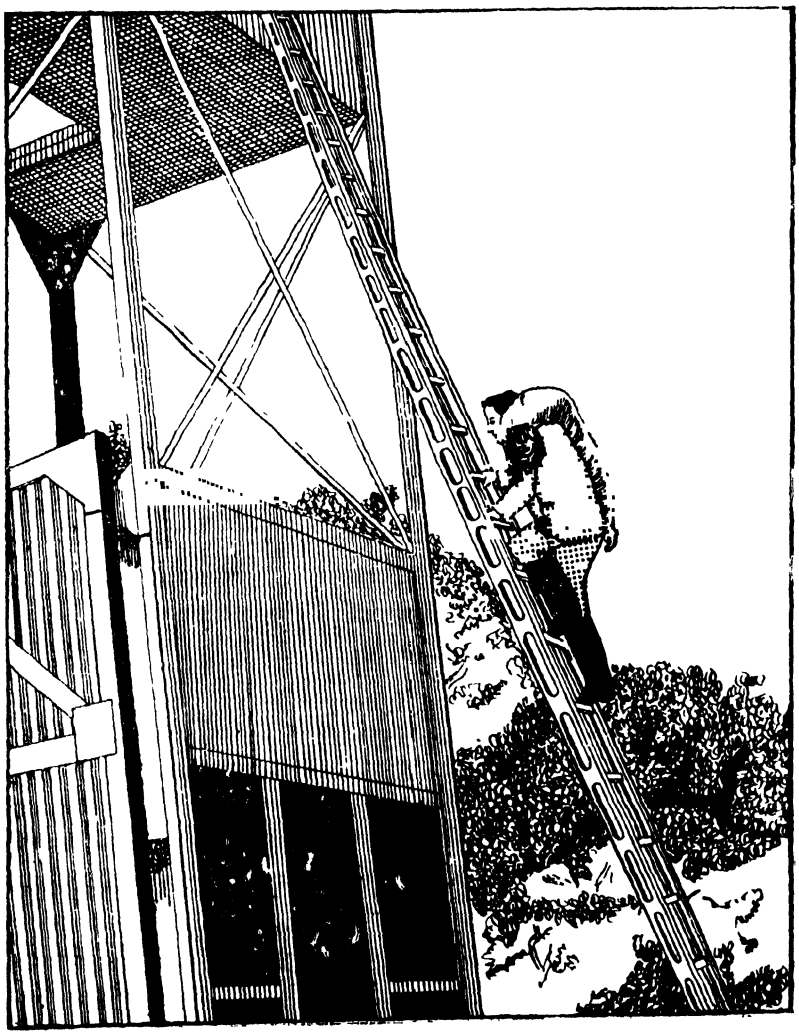


चित्र ६५
रस्सीकी सहायतासे रोगीके हटाये जानेका चित्र।

चित्र–संख्या ६६ मे यह देखा जा सकता है कि घुमावदार सीढ़ियोंकी सहायतासे बचावकर्ता काफी ऊँचे स्थानपर पहुंचनेमें समर्थ होगा और जैसा कि उस चित्रमें दिखाया गया है कि जब वह किसी आदमीकी जान बचा सकता है, तो कोई भी व्यक्ति उसकी महत्ताकी कल्पना कर सकता है। यदि उपर्युक्त बचाव–कर्ताने अत्यन्त निपुणताके साथ अपने कार्यका संपादन न किया होता, तो एक आदमी अपनी जान गंवा बैठता ।

बचाव दलके अधिकारियोंको उपर्युक्त और उनके अतिरिक्त अन्य अनेक कार्योंका संपादन करना पड़ सकता है और इन समस्त विलक्षण कार्योंको पूरा करते समय उस विशिष्ट अवसरके उपयुक्त उन्हें अपने विवेक और अपनी बुद्धिका उपयोग करना पड़ेगा। बहरहाल, यह याद रखने योग्य है कि बचावकर्ता को अपने स्वयंके कार्योंपर अपना ध्यान केन्द्रित करनेका प्रयत्न करना होगा। यद्यपि उसे किसी विशेष समयमें जीवन रक्षाके लिए विध्वंस (Demolition) कार्य भी करना पड़

सकता है, विध्वसका कार्य आवश्यक रूपसे विध्वंसदलका है। इसी प्रकार प्रथमोपचार का कार्य प्रथमोपचार दलोंका है, यद्यपि प्रथमोपचार दलके घटनास्थलपर पहुंचनेके पूर्व अथवा जहाँपर एक या अन्य कारणसे एकदम कोई न मिल सके, वहांपर बचावकर्ताको अवश्य ही प्रथमोपचार प्रदान-करना चाहिए।

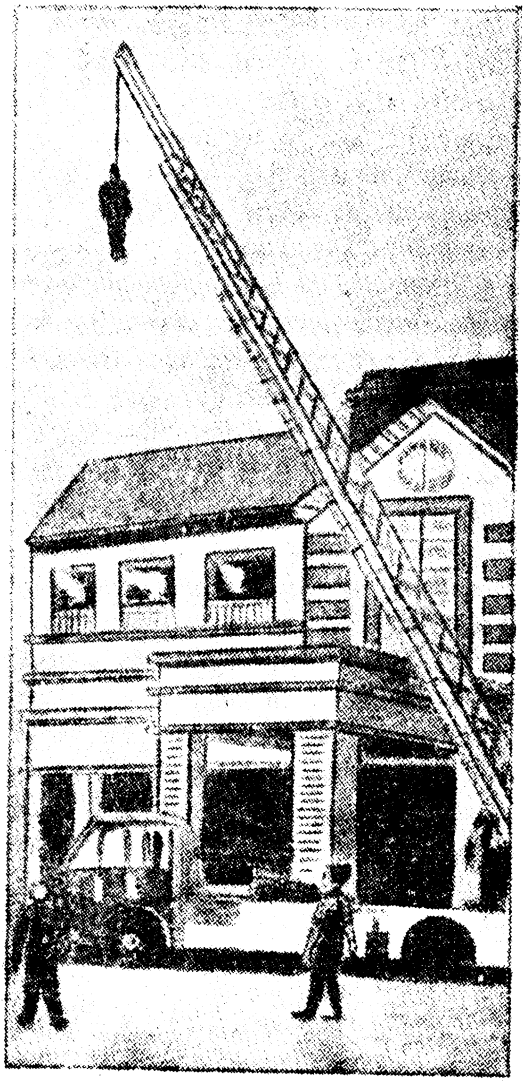


चित्र ६६

एक जलती हुई इमारतसे आकस्मिक रूपसे ग्रस्त व्यक्तिको बचानेमे दमकल-वालोके 'लिफ्ट' का प्रयोग।

बचावदलों का प्रशिक्षण

६५ और ६६ सख्या वाले चित्रो और इनके अतिरिक्त पूर्ववर्ती पैराग्राफमे वर्णित अन्य अनेक तथ्य पाठकोको इस बातसे विश्वस्त बनानेके लिए पर्याप्त अच्छे है कि प्राकृतिक आपत्तियो या नागरिक उथल–पुथलके समयोमे किये जानेवाले बचावकार्योके



चित्र ६७

डेवी सुरक्षा पद्धति और घुमावदार सीढ़ीके माध्यम द्वारा बचाव प्रदर्शन।

लिए विशिष्ट –प्रशिक्षण नितान्त आवश्यक है। अर्द्धशिक्षा या (नीमहकीमी–अल्पविद्या) खतरनाक है और इसलिए यह आवश्यक है कि बचावदलो के अधिकारियोको अपने कार्यमे आवश्यक रूपसे भूतपूर्व अध्यापक होना आवश्यक है। डेवी सुरक्षा पद्धति और घुमावदार सीढियोके माध्यमके द्वारा बचाव प्रदर्शनका एक चित्र (चित्र सख्या ६७) मे पिछले पृष्ठ पर उदाहरणस्वरूप दिया गया है।

उक्त चित्र ६७ मे देखा जा सकता है कि ऐसे कठिन कार्यके लिए विशिष्ट प्रशिक्षण आवश्यक है। हम केवल उस जोखिम (Risk) की कल्पना ही कर सकते है। इस कार्यके सम्पादनमे रचमात्रकी कमी या भावोद्वेग होनेमे जोखिमके कैसे बडे तत्व विद्यमान है।

अन्य अनेक उपादानोके साथ–साथ ऊँचे स्थानसे बचावके लिए सीढीके प्रभावकारी उपयोग और पत्थर लगाने या उसे ठीकमे खडी करनेमे भी उपर्युक्त व्यक्तियोके पूर्ण प्रशिक्षणकी आवश्यकता है।

ऊपर जो कुछ भी कहा गया है, उसके साथ ही यह याद रखने योग्य है कि वहा जहा तक सम्भव हो, बचाव अधिकारियोके प्रशिक्षणके प्रसगमे प्रशिक्षणप्राप्त करनेवाले लोगोके गुणो और वैयक्तिक अनुभवोका भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। उन्हे उनके कार्यमे इस प्रकार प्रशिक्षित करना चाहिए कि वे यथासम्भव अत्यन्त कम प्रयत्न करके मलवेसे लोगोके बचाव–कार्यको पूर्ण कर सके। अनेक स्थितियोमें ऐसे लोगोका भवन–व्यवसाय (Buiding Trade) मे चुना जाना परामर्श्य होगा और जहा तक सम्भव हो, बचावदलके अधिकारियोको ऐसे व्यक्तियोके अन्तर्गत प्रशिक्षण प्रदान किया जाय, जो भवनरचित (निर्माणकला) के अधिकारी है। इस तकनीकी प्रकृतिके विषयमे यह आवश्यक है कि प्रत्येक सरकार, जो इस प्रकारके प्रशिक्षणकी व्यवस्था करती है, आवश्यक व्यय वहन करनेके लिए भी प्रस्तुत रहे।

सम्बद्ध सरकारके लिए यह आवश्यक हो सकता है कि वह प्रशिक्षण देनेके लिए बाहरसे तकनीके विशेषज्ञो को आमन्त्रित करे और मै बलपूर्वक अभिलेखित (Record) करता हूं कि ऐसा करनेमे जितना भी खर्च लगे , उतना खर्च करना चाहिए, क्योंकि बचाव अधिकारियोको उनके कार्यका सर्वोत्तम और वैज्ञानिक प्रशिक्षण मिलना ही चाहिए। बचाव–कार्य और उसके अधिकारियोके प्रशिक्षणके विषयमे चर्चा करते समय हमे कल्पना करनी चाहिए कि बचाव–दलके लोगोको क्या कार्य करना पडता है। एक भूकंप–ध्वस्त नगर असख्य समस्याओको उपस्थित कर सकता है और बचाव अधिकारियोको अवश्य ही ऐसा प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए, जिससे कि वे पूर्ण सफलता, शक्तिमत्ता और चतुराई जो पहलवान की खालकी तरह (Like the athelete's Skin) इस कार्यके लिए उपयुक्त हो, से अपने समस्त कार्योका संचालन करनेमे समर्थ हो सकें।

यह ध्यान देनेकी बात है कि बचाव अधिकारियोंका प्रशिक्षण केवल लोगोंको मलवेसे बचाने अथवा पूर्वोक्त प्रकारके दूसरे कार्यों तक ही सीमित नही रहेगा, उन्हें प्रथमोपचारका भी पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करना पडेगा, जिससे कि यदि क्षतिके स्थल-पर पहुंचे तो वे उन अभागे व्यक्तियोंको–जिन्हें अत्यन्त आवश्यकता है–प्रथमोपचार प्रदान कर सकें। उन्हें यह भी अवश्य जानना चाहिए कि रक्तस्रावको कैसे रोका जाय और कृत्रिम श्वसन कैसे प्रदान किया जाय। उन्हें अन्य कार्योंका भी सम्यक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए–जो जीवन रक्षाके लिए आवश्यक है। दुर्घटना स्थलपर प्रथमोपचार दलके पहुंचनेके पूर्व उनका बहुत बड़ा महत्व है और इसलिए ऐसे प्रशिक्षणकी आवश्य-कताको मुश्किलसे ही अतिबलपूर्वक कहा जा सकता है। बहरहाल, इस प्रसगमे इसे ध्यान रखना चाहिए कि प्रथमोपचार – दलके विशेषज्ञोकी भाति उन्हें प्रथमोपचार विषयक सविस्तार ज्ञानको प्राप्त करना आवश्यक ही नही है, लेकिन आवश्यकताके एक विषयके रूपमे बचाव दलके लोगोंको इसे सीखना ही पडेगा, क्योंकि दुर्घटना स्थलपर जीवन बचानेके लिए यह नितान्त रूपसे और निश्चय रूपसे भी आवश्यक है। बचावदलके अधिकारियोको गैस और रेडियो–सक्रिय धूलिके विरोधमे सुरक्षा विषयक ज्ञान भी अवश्य ही प्राप्त करना चाहिए। बहरहाल, यह आवश्यक है कि बचाव दलके अधिकारियोका प्रशिक्षण लगातार होता रहे और सभी सबद्ध व्यक्ति बचावके विविध पहलुओका लगातार अभ्यास भी करते रहे, और इस प्रयोजनके लिए प्रदर्शनका सगठन करना अत्यन्त सहायक है। यह अवश्य याद रखना चाहिए कि बचाव कार्यकर्ताओंको केवल दिनमे ही अपना कार्य नही करना पडेगा, ऐसे कार्योको करनेके लिए उन्हें रात्रिमे भी बुलाया जा सकता है। इस तथ्यके प्रकाशमे यह आवश्यक है कि बचाव–कार्यकर्ताओके प्रशिक्षण मे रात्रि- कालीन अभ्यासको भी शामिल करना चाहिए, यद्यपि यह सामान्य – सी तर्ककी बात है कि उनका प्रशिक्षण दिनमे कार्य करनेके अभ्यास और ज्ञानको प्रदान करनेमे ही शुरू होना चाहिए, उन्हे रात्रिमे भी कठिन कार्योके सपादनका प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाना चाहिए जिससे कि जब ऐसे कार्योको पूरा करने का अवसर आये, तो उन्हे कोई कठिनाई न हो।

सभी पहलुआमे पूर्ण प्रशिक्षण बचाव कार्यका मूल या सारभूत तत्व है और इस तथ्यके लिए जहाँ तक सम्भव हो, अधिकसे अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

बचाव कर्मचारियों के कार्य में बुनियादी उपादान

सामान्य रूपसे बचाव–कर्मचारियोंका कार्य अत्यन्त खतरनाक है और इसके लिए बहुत अधिक नैपुण्यकी आवश्यकता है। ऐसे कार्योको अभियताओ (Engineers) और संविदकारो (Contractors) के अतिरिक्त भवन–निर्माणकार्यमे सलग्न अन्य लोगो के सहयोगसे करना चाहिए। बचाव–कार्यकर्ताओ को मलवेको लावकर या आर–पार काटकर मार्ग बनानेके बाद उसमेसे होकर जाना पड़ता है। उन्हें लकड़ीके भारी लट्ठोंको भी फर्शके ऊपरमे उठाना पड सकता है और ऐसा करनेमे

उन अभागे व्यक्तियोंको भी वहाँसे खोज निकालना पडगा, जो वस्तुतः उन स्थानोंमें दफन हो गये है। अतएव, यह नितान्त आवश्यक है कि बचाव दलोके लिए केवल उन्ही व्यक्तियोंको चुनना चाहिए जो स्वयं आराम, असुविधा और विश्वासके साथ ऐसे ख़तरनाक कार्योको पूरा कर सके। बहुधा ऐसे दलोमे उन लोगोंको ही रहना चाहिए जो ऊँचाईपर चढ़ने और इमारतोको गिरानेके कार्योंका अभ्यास कर चुके हों। ऐसे लोग जो गाड़ी खानों (Garages) मे भग्न या उध्वस्त (Dismantled) वस्तुओंकी मरम्मत (Repair) करते है अथवा जो सीढ़ियोंपर चढ़नेके कामके अभ्यस्त है—ऐसे दलोंमें अत्यन्त उपयोगी होगे। अधिकसे अधिक मात्रामे जितना प्रशिक्षण सम्भव हो, ऐसे व्यक्तियोंको दिया जाना चाहिए। उन्हें गैस, प्रथमोपचार और रेडियो सक्रिय धूलिके विषयमे भी आवश्यक प्रशिक्षण अवश्य ही मिलना चाहिए। यह सही है कि उन्हें गैस—निवारण—दल (Decontamination Squad), प्रथमोपचारका दल अथवा रेडियो—सक्रिय—धूलिके विरोधमे कार्य करनेवाले दलके कार्योंका दायित्व अपने ऊपर नही लेना चाहिए, लेकिन बचाव—कार्यकर्ताओको इन सबके कार्योंकी आवश्यक जानकारी रखनी चाहिए, जिससे कि वे गैस या रेडियो सक्रिय धूलिसे विदूषित स्थानोसे गुजरते समय स्वयं की रक्षा कर सके। बचाव कार्यकर्ताओको मलवेके नीचेसे दबे हुए लोगोंको खोज निकालते समय इस बातका अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि उनका कार्य बहुत धीमी गतिसे, सावधानी के साथ और दबे हुए लोगोंको बिना आघात या घाव पहुचाये किया जा रहा है। दबे हुए लोगोका जीवन यो ही कष्टमे है तथा कोई भी और आघात सहनीय नही हो सकता। इस तथ्यको अवश्य ही स्पस्ट रूपसे ध्यानमे रखना चाहिए। ऐसे मामलोमे प्रथमोपचारका कुछ ज्ञान उनके लिए बड़ा सहायक सिद्ध होगा।

बचाव कार्यकर्ताओंको अपने साथ अपने 'गैससूट' और 'गैस—मास्क' को ले जाना चाहिए, क्योकि जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि उन्हे गैसविदूषित क्षेत्रमे भी कार्य करना पड़ सकता है। वह रेडियो—सक्रिय धूलिके विरोधमे भी उपयोगी हो सकता है। अतएव, यह आवश्यक है कि इस विशिष्ट प्रकारसे आवश्यक सावधानी बरतनी चाहिए। यह अत्यन्त उपयोगी होगा यदि बचाव कार्यकर्ताओको कुछ समयके लिए गैस—निवारण—दल (Decontamination Squad) और प्रथमोपचार दलके साथ कार्य करनेका अवसर दिया जाय, क्योकि इस प्रकार से वे विशेषज्ञोके कार्य का प्रत्यक्ष कार्यकारी ज्ञान प्राप्त कर सकेगे और उनको आवश्यकताके समयमे वह बड़ा सहायक सिद्ध हो सकता है।

पर्वत और हिमानी – यात्रा

जैसा कि अभी हाल ही मे लद्दाख और नेफा मे भारतीय सेनाको अनुभव प्राप्त करना पड़ा है पर्वतों और ग्लेशियरोमे बचाव— कार्य आवश्यक हो सकता है। इन

यह ध्यान देनेकी बात है कि बचाव अधिकारियोंका प्रशिक्षण केवल लोगोंको मलवेसे बचाने अथवा पूर्वोक्त प्रकारके दूसरे कार्यों तक ही सीमित नहीं रहेगा, उन्हें प्रथमोपचारका भी पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करना पड़ेगा, जिससे कि यदि क्षतिके स्थल-पर पहुंचे तो वे उन अभागे व्यक्तियोंको–जिन्हें अत्यन्त आवश्यकता है–प्रथमोपचार प्रदान कर सकें। उन्हें यह भी अवश्य जानना चाहिए कि रक्तस्रावको कैसे रोका जाय और कृत्रिम श्वसन कैसे प्रदान किया जाय। उन्हें अन्य कार्योंका भी सम्यक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए–जो जीवन रक्षाके लिए आवश्यक है। दुर्घटना स्थलपर प्रथमोपचार दलके पहुंचनेके पूर्व उनका बहुत बड़ा महत्व है और इसलिए ऐसे प्रशिक्षणकी आवश्य-कताको मुश्किलसे ही अतिबलपूर्वक कहा जा सकता है। बहरहाल, इस प्रसंगमे इसे ध्यान रखना चाहिए कि प्रथमोपचार – दलके विशेषज्ञोकी भाति उन्हे प्रथमोपचार विषयक सविस्तार ज्ञानको प्राप्त करना आवश्यक ही नही है, लेकिन आवश्यकताके एक विषयके रूपमे बचाव दलके लोगोंको इसे सीखना ही पड़ेगा, क्योंकि दुर्घटना स्थलपर जीवन बचानेके लिए यह नितान्त रूपसे और निश्चय रूपसे भी आवश्यक है। बचावदलके अधिकारियोंको गैस और रेडियो–सक्रिय धूलिके विरोधमे सुरक्षा विषयक ज्ञान भी अवश्य ही प्राप्त करना चाहिए। बहरहाल, यह आवश्यक है कि बचाव दलके अधिकारियोंका प्रशिक्षण लगातार होता रहे और सभी संबद्ध व्यक्ति बचावके विविध पहलुओका लगातार अभ्यास भी करते रहे, और इस प्रयोजनके लिए प्रदर्शनका संगठन करना अत्यन्त सहायक है। यह अवश्य याद रखना चाहिए कि बचाव कार्यकर्ताओंको केवल दिनमे ही अपना कार्य नही करना पड़ेगा, ऐसे कार्योंको करनेके लिए उन्हें रात्रिमे भी बुलाया जा सकता है। इस तथ्यके प्रकाशमे यह आवश्यक है कि बचाव–कार्यकर्ताओंके प्रशिक्षण मे रात्रि- कालीन अभ्यासको भी शामिल करना चाहिए, यद्यपि यह सामान्य – सी तर्ककी बात है कि उनका प्रशिक्षण दिनमे कार्य करनेके अभ्यास और ज्ञानको प्रदान करनेमे ही शुरू होना चाहिए, उन्हे रात्रिमे भी कठिन कार्योंके संपादनका प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाना चाहिए जिससे कि जब ऐसे कार्योंको पूरा करने का अवसर आये, तो उन्हे कोई कठिनाई न हो।

सभी पहलुओंमे पूर्ण प्रशिक्षण बचाव कार्यका मूल या सारभूत तत्व है और इस तथ्यके लिए जहाँ तक सम्भव हो, अधिकसे अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

बचाव कर्मचारियों के कार्य में बुनियादी उपादान

सामान्य रूपसे बचाव–कर्मचारियोका कार्य अत्यन्त खतरनाक है और इसके लिए बहुत अधिक नैपुण्यकी आवश्यकता है। ऐसे कार्योंको अभियताओ (Engineers) और संविदकारो (Contractors) के अतिरिक्त भवन–निर्माणकार्यमे संलग्न अन्य लोगो के सहयोगसे करना चाहिए। बचाव–कार्यकर्ताओ को मलवेको लावकर या आर–पार काटकर मार्ग बनानेके बाद उसमेसे होकर जाना पड़ता है। उन्हें लकड़ीके भारी लट्ठोको भी फर्शके ऊपरमे उठाना पड सकता है और ऐसा करनेमे

उन अभागे व्यक्तियोंको भी वहाँसे खोज निकालना पड़गा, जो वस्तुतः उन स्थानोंमें दफन हो गये है। अतएव, यह नितान्त आवश्यक है कि बचाव दलोके लिए केवल उन्ही व्यक्तियोंको चुनना चाहिए जो स्वय आराम, असुविधा और विश्वासके साथ ऐसे ख़तरनाक कार्योको पूरा कर सकें। बहुधा ऐसे दलोमें उन लोगोंको ही रहना चाहिए जो ऊँचाईपर चढ़ने और इमारतोको गिरानेके कार्योंका अभ्यास कर चुके हों। ऐसे लोग जो गाडी खानों (Garages) मे भग्न या उध्वस्त (Dismantled) वस्तुओंकी मरम्मत (Repair) करते हैं अथवा जो सीढियोंपर चढ़नेके कामके अभ्यस्त हैं—ऐसे दलोंमे अत्यन्त उपयोगी होगे। अधिकसे अधिक मात्रामे जितना प्रशिक्षण सम्भव हो, ऐसे व्यक्तियोको दिया जाना चाहिए। उन्हें गैस, प्रथमोपचार और रेडियो सक्रिय धूलिके विषयमे भी आवश्यक प्रशिक्षण अवश्य ही मिलना चाहिए। यह सही है कि उन्हें गैस–निवारण–दल (Decontamination Squad), प्रथमोपचारका दल अथवा रेडियो–सक्रिय–धूलिके विरोधमे कार्य करनेवाले दलके कार्योका दायित्व अपने ऊपर नही लेना चाहिए, लेकिन बचाव–कार्यकर्ताओको इन सबके कार्योकी आवश्यक जानकारी रखनी चाहिए, जिससे कि वे गैस या रेडियो सक्रिय धूलिसे विदूषित स्थानोसे गुजरते समय स्वयं की रक्षा कर सके। बचाव कार्यकर्ताओको मलवेके नीचेसे दबे हुए लोगोंको खोज निकालते समय इस बातका अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि उनका कार्य बहुत धीमी गतिसे, सावधानीके साथ और दबे हुए लोगोंको बिना आघात या घाव पहुचाये किया जा रहा है। दबे हुए लोगोका जीवन यो ही कष्टमें है तथा कोई भी और आघात सहनीय नही हो सकता। इस तथ्यको अवश्य ही स्पस्ट रूपसे ध्यानमे रखना चाहिए। ऐसे मामलोमे प्रथमोपचारका कुछ ज्ञान उनके लिए बड़ा सहायक सिद्ध होगा।

बचाव कार्यकर्ताओको अपने साथ अपने 'गैससूट' और 'गैस–मास्क' को ले जाना चाहिए, क्योंकि जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि उन्हे गैसविदूषित क्षेत्रमे भी कार्य करना पड़ सकता है। वह रेडियो–सक्रिय धूलिके विरोधमे भी उपयोगी हो सकता है। अतएव, यह आवश्यक है कि इस विशिष्ट प्रकारसे आवश्यक सावधानी बरतनी चाहिए। यह अत्यन्त उपयोगी होगा यदि बचाव कार्यकर्ताओको कुछ समयके लिए गैस–निवारण–दल (Decontamination Squad) और प्रथमोपचार दलके साथ कार्य करनेका अवसर दिया जाय, क्योंकि इस प्रकार से वे विशेषज्ञोंके कार्य का प्रत्यक्ष कार्यकारी ज्ञान प्राप्त कर सकेगे और उनको आवश्यकताके समयमे वह बडा सहायक सिद्ध हो सकता है।

पर्वत और हिमानी – यात्रा

जैसा कि अभी हाल ही मे लद्दाख और नेफा मे भारतीय सेनाको अनुभव प्राप्त करना पड़ा है पर्वतों और ग्लेशियरोमे बचाव– कार्य आवश्यक हो सकता है। इन

दोनों उपर्युक्त स्थानोंमें हेलिकोप्टरोका प्रयोग ख़ूब किया गया था और वे अत्यन्त सहायक थे। अतएव, यह परामर्श्य है कि बचाव–कार्यके लिए हेलिकोप्टरोकी व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त नीचे घाटीमें गिरे लोगोको, जवानोंको लम्बे रस्सों और बांसों की सहायतासे खोज निकालना या बचाना पडता है। इस कार्यके लिए बड़े नैपुण्य और साहसकी आवश्यकता है, पर ये सब उनके बचाव–कार्यके अंग है।

पर्वत और ग्लेशियरपर यात्राके लिए तकनीकी बातोंकी जानकारी आवश्यक है। पर्वतीय देशोंमें कभी–कभी मेडों (Ridges) पर यात्रा करना या चलना उत्तम होता है–बर्फकी सतह (Snowsurface) शायद अधिक दृढ़ होगी और कोई भी व्यक्ति ऊँचाईसे अपने रास्तेका अधिक सुन्दर दृश्य देख सकेगा। किसी भी व्यक्तिको बर्फ और तुषार या बर्फीली ऊपर लटकनेवाली पहाड़ीके बर्फीले ढालुएं भाग (Overhanging Steep Slopes) को ध्यानपूर्वक देखना चाहिए। विशेषरूपसे गर्मीके दिनोमे और भारी बर्फ पूर्तिके पश्चात् बर्फाच्छादित पहाड़ी ढालों या उतारोपर हिमध्रानके संकट या ख़तरें है।

ग्लेशियर पर अत्यन्त सावधानी से रहना पड़ेगा। बचाव कार्यकर्ताओंको बर्फीली दरारों (Crevasses) (बर्फमे गहरे फटाव) की प्रतीक्षा करनी चाहिए। वह बर्फसे आच्छादित हो सकता है। उन्हें समूहमे, तीन व्यक्तियोसे कम नही, यात्रा करनी चाहिए और यदि सम्भव हो, तो ३० से ४० फीटकी दूरीपर एक दूसरेसे रस्सेमे बंधे भी हो। उन्हे प्रत्येक ढालू स्थानके पहले गहराई नाप लेनी चाहिए और उन्हें हिम–विवर (Snow brige Crevasse) को उसके दाहिने कोनेपर ही पार करना चाहिए। बर्फ काटनेकी कुल्हाड़ी या किसी खभे या बल्ली (Pole) से खोजनेके द्वारा पुलका दृढ़तम भाग खोज निकालना चाहिए। किसी हिम–विवर पुलको पार करते समय बचाव दलके लोगोको यदि उन्होने बर्फ–सूट या 'स्किस' (Skis) नही पहन रखा है, तो रेंगनेकी क्रियाके द्वारा अपना वजन बांट लेना चाहिए।

यह ध्यान देनेकी बात है कि बचाव कार्यमे जीवित रहना पहली विचारणीय बात है। जीवित रहनेसे केवल यही तात्पर्य नही है कि केवल उन्हें ही बचाया जाय जो मलवेके नीचे दब गये है, बल्कि उन लोगोके भी जीवित रहनेसे है जो बचाव कार्य कर रहे है। अतिजीविता (Survival) की विचारणीय शीत क्षेत्रो, रेगिस्तानों, पानी, कटिबन्धीय, वर्षा–जगलों, सागरतटो, घाटो, महासागरो और सागरो और सागरके जलमें और जलके अन्दर भिन्न–भिन्न है। प्रत्येक स्थितिमे विशेष ज्ञान आवश्यक है। बचाव कर्ताको सदैव इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि उसे कभी भी अपनी प्रत्युत्पन्नमति (Presence of Mind) को नही खोना चाहिए। उसे सदैव अपने मस्तिष्कको शान्त रखना चाहिए, और प्रथम कार्यको सफलतापूर्वक पूर्ण करनेके अनन्तर उसे सदैव अगले कदमके विषयमे ध्यान देना चाहिए। उसे सदैव यह अवश्य याद रखना

चाहिए कि बचाव कार्य एक मज़ाक नहीं है, यह सामान्य मामला या बात नही है। जीवन दांवपर लगे हुए है और स्वयं अपनी रक्षा करना भी उसका कर्तव्य है।

विध्वंस दल और मलवेकी सफाई

'बचाव कार्य कर्ताओके वस्तुत: क्या कार्य है ? इस विषयका ज्ञान पाठको को पूर्ववर्ती पैराग्राफोंसे होगा। यह सही है कि जहा आवश्यकता हो और वह विशेषत: जीवन–रक्षाके लिए हो अथवा अन्य किसी अत्यन्त महत्वपूर्ण कारणके लिए हो, बचाव दलके कार्यकर्ता किसी विशेष स्थानपर किसी विशेष भागको गिराने या छोटे मलवेको साफ करनेका कार्य कर सकते है। लेकिन जैसा निर्दिष्ट कर दिया गया है और स्पष्टत: कहा भी जा चुका है निश्चय ही यह उनका कार्य नही है। इन उद्देश्योके लिए अधिकारियोको दूसरोंपर निर्भर रहना पड सकता है और इंग्लैण्डमे ऐसे लोग विध्वस–दलके अंग रूपमे होते है। वस्तुत: ये लोग हवाई हमलेसे सावधानी–सेवामे सम्बन्ध नही रखते, लेकिन संविदाकारो और अभियन्ताओ (Engineers) अथवा भवन-व्यवसाय के लोगोंने ऐसे दलोंकी व्यवस्था की थी। गत युद्धमे ग्रेट-ब्रिटेनमेऐसे लोगोका कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण था। उस सकटमय निर्णायक समयमे भवनोको गिराना अथवा सडकोंकी मरम्मत करना आदि उनके कार्य थे।

किसी विशेष देशके अधिकारियोके लिए यह ध्यान देनेकी बात है कि उनके सगठनके मूल ढांचेमे इन व्यक्तियोको किस प्रकार सर्वोत्तम रूपमे प्रतिष्ठित किया जाय, पर इसके साथ ही किसी विशेष संगठनका जैसा कुछ भी ढांचा हो, ऐसे लोगोकी महत्ताको कम नही किया जा सकता। पडोसकी इमारतको भी आग पकडनेसे बचानेके लिए किसी विशेष इमारतको गिरानेके महत्वकी एक क्षणके लिए कल्पना कीजिये। दूसरी ओर हम किसी भवन के गिरानेकी भी कल्पना कर सकते है जो कि अत्यन्त कमजोर हो गया है और जिसका अस्तित्व लोगोके जीवन और सम्पत्तिके लिए खतरनाक है। विध्वंस दल का भी बहुत बडा महत्व है, क्योकि ये वे ही लोग है, जो मलबेकी सफाईकीभी व्यवस्था करते है। जैसा कि पूर्ववर्ती पैराग्राफोमे बताया गया है कि मकानो के गिराने या मलवेकी सफाई करनेका काम बचाव–दलका नही है और ये दोनो कार्य आधुनिक युद्धमें अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योकि ऐसे अवसरोपर इमारते पगोडा वृक्षसे गिरनेवाले फलोकी तरह गिरती है। अतएव विध्वंसदलकी महत्ताको मुश्किलसे ही बलपूर्वक कहा जा सकता है। जब सड़के विशेष रूपसे हवाई बम वर्षाके द्वारा क्षत–विक्षत हो जायं, तो वे सडकोकी मरम्मतके लिए भी महत्वपूर्ण है। विध्वस-दलके कार्यके सम्बन्धमे यह उल्लेख करना आवश्यक है कि प्राचीन पद्धति या उपाय पुराने फैशनके हो गये है और आधुनिक युगकी वर्तमान उपनति या प्रवृत्तिमे विध्वसका कार्य विस्फोटक द्रव्यों या बारुद (Explosives) के प्रयोगके द्वारा किया जाता है। इग्लैण्डमे

विध्वंस–दलके द्वारा विध्वंस या भवनोंको गिरानेके कार्योंके लिए 'इम्पीरियल केमिकल इडस्ट्रीज लिमिटड' के द्वारा ऐसे प्रयोगोके लिए व्यवस्था की गयी थी। यह आवश्यक नही है कि प्रत्येक देश उसी प्रकारकी व्यवस्था करे, लेकिन विस्फोटक द्रव्योंका प्रयोग प्रत्येक व्यक्तिके हाथमें न चला जाय, इसलिए यह अधिक अच्छा है कि ऐसा खतरनाक अस्त्र–यहां तक कि उपयोगी कार्योके लिए भी–उपयुक्त लोगोके द्वारा भलीभाति नियन्त्रित होना चाहिए। अतएव, यह परामर्श्य है कि प्रत्येक देशको इंग्लैण्डके आदर्शका अनुकरण करना चाहिए और जैसा कि उस देशके द्वारा किया गया था––एक नियन्त्रित रुपमें विध्वंस कार्योंके लिए विस्फोटकोके प्रयोगकी व्यवस्था करनी चाहिये। बहरहाल, यह ध्यान देने योग्य बात है कि सहकारिता किसी कार्यके विशेषत. संकटके समयमे सफलतापूर्वक सम्पादन का सार है। इस सर्वेक्षणके प्रकाशमें यह नितान्त आवश्यक है कि बचाव दल और विध्वंस दलके कार्योमे पूर्ण सहयोग अवश्य होना चाहिए और उनका कार्य साथ-साथ चलना चहिए। जैसा ऊपर कहा गया है बचाव दलका ज्येष्ठक (Foreman) ही यह निश्चित करता है कि अमुक इमारतको गिराना है अथवा उसे आधार देना है, जिससे कि वह गिर न जाय। ऐसे सभी मामलोंमे ज्येष्ठक (Foreman) और उसके दलके लोग यह कार्य नही करते, इस कार्यके लिए दूसरे लोग होते है और चूकि ऐसा है, अत: विध्वस दल और अन्य सम्बद्ध दलोकी महत्ताको कम नही किया जा सकता। इन लोगोके कार्योमे एक प्रमुख कार्य सडको और पुलोसे सम्बद्ध है। अनेक सड़के 'ट्रक रोड' (Trunk Road) होगी और जिनकी देखभाल लोक-निर्माण-विभाग (Public Works Department) के द्वारा की जायगी, इनके अतिरिक्त कुछ ऐसी भी सड़के होगी, जिनकी देखभाल जिला–अधिकारियो द्वारा की जायगी। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य प्रकारकी भी सड़के होंगी, जिनका सम्बंद्ध किसी विशेष स्थानके नगरनिगमसे होगा। ऐसे सभी मामलोमे युद्धके दौरान विध्वस–दलके लोगोका बहुत बडा महत्व है। ये लोग अत्यन्त उपयोगी कार्यका सपादन करेंगे, क्योंकि यातायात (Transport) किसी भी संस्थाका मेरुदण्ड है और उपयुक्त सडकोके अभावमे यह मेरुदण्ड स्वाभाविक रुपसे भग्न हो जायगा।

युद्धके दौरान यातायात या परिवहनके लिए अत्यन्त सावधान या विचारशील चिन्तन की अपेक्षा रहती है। जो बचाव कर्मचारियो और उनके साज–सामानोको ले जा सकती है, ऐसी ट्रकोको अलगसे बचाव दलको अभिहस्ताकित (Assigned) कर देना चाहिए। अचानक ही गाड़ियोकी संख्याको विलक्षण रुपसे वर्द्धित नही किया जा सकता। इसके साथ ही किसी सस्था को समयकी आवश्यकताके अनुसार ऐसा प्रावधान रखना चाहिए कि वे जितनी अधिक गाड़ियाँ चाहें, प्राप्त कर सके। परिस्थितिकी तमाम कठिनाइ-

योंके साथही, आवश्यक सेवाओंके पास उपयोगके लिए अपेक्षित गाड़ियोका रहना आवश्यक है। यदि ऐसा नही किया गया, तो हम आनेवाली कठिनाइयोंकी कल्पना कर सकते है। यदि गाड़ियोंकी पूर्तिके अभावके कारण बचाव दलके लोग ठीक समयपर दुर्घटना या क्षतिके स्थलपर नही पहुंचते है, तो भारी और अपूरणीय हानि हो सकती है। अतएव, यह आवश्यक है कि ऐसी आवश्यक सेवाओके लिए समस्त सम्भव प्राथमिकता अवश्य ही दी जानी चाहिए। सचमुच यह ध्यान देनेकी बात है कि गाडियोकी पूर्ति–स्थिति विशिष्ट स्थानके ऊपर निर्भर करेगी, लेकिन इसके साथ ही उन सेवाओको जो लोगोके जीवनकी सुरक्षासे सम्बन्धित है, जैसे बचाव–दल, प्राथमिकताकी पक्तिमे अधिक ऊंचाईपर रखना चाहिए । सडकोकी स्थितिमे अवश्य ही सुधार होना चाहिए और विशेषत किसी हवाई हमलेके पश्चात् जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी ऐसा करना आवश्यक है। क्षत–विक्षत सडकोकी तुरन्त मरम्मत होनी ही चाहिए और इस सम्बन्धमे विध्वस दलका महत्व मुश्किलसे ही बलपूर्वक कहा जा सकता है। परिवहनके सम्बन्धमे, यह ध्यान रखना चाहिए कि यद्यपि भारी बचाव दलोके लिए भारी गाडियोकी व्यवस्था की जा सकती है, हल्के बचावदलोके मामलेमे हलकी गाडियो जो भी हो सके, की व्यवस्था करना उचित है। यदि आवश्यक हो, तो ऐसी गाडियोको मलवोके उपरसे भी चलाया जा सकता है।

मुझे विश्वास है कि इस महत्वपूर्ण विषयपर पाठकोंके लिए उपर्युक्त वक्तव्य पर्याप्त होगा। बहरहाल, यह उचित समझा जाता है कि कतिपय अत्यन्त आवश्यक बातोंको 'कर्तव्य' और 'निषेध' शीर्षकोके अन्तर्गत उपस्थित करके इस अध्यायको समाप्त किया जाय।

कर्तव्य

(१) बचाव दलोको यथासम्भव सर्वोत्तम प्रशिक्षण दीजिए। उनका कार्य उच्च रूपसे तकनीकी प्रकृतिका है और सर्वोत्तम प्रशिक्षण, जिसमें इस विषयके बाहरसे बुलाये गये विशेषज्ञो द्वारा प्रदत्त विशिष्ट प्रशिक्षण भी सम्मिलित है, प्रदान करनेमे धन या कष्टसाध्य श्रम की कोताही नही करनी चाहिए।

(२) बचाव दल या विध्वस दलके द्वारा की जानेवाली विशिष्ट कार्यवाही के लिए किसी निर्णयपर पहुचनेके पहले बचाव दलके ज्येष्ठक (Foreman) को उस स्थलका एक विस्तृत पर्यवेक्षण अवश्य करना चाहिए।

(३) मलवेसे किसी दुर्घटनाग्रस्त या हताहत (Casualty) को खोद निकालते समय बचाव दलोको बड़ी सावधानी बरतनी चाहिए। उन्हे अपनी सुरक्षाका भी ध्यान रखना चाहिए।

(४) जब आप क्षतिग्रस्त सीढ़ियोंपर हो, तो यथासम्भव दीवालके अत्यन्त निकट रहें।

(५) यदि प्रथमोपचार दलके क्षतिग्रस्त स्थलपर पहुंचनेके पूर्व बचावदलके लोग पहुंच जाते है, तो उन्हें घायल व्यक्ति या व्यक्तियोकोतुरन्त प्रथमोपचार प्रदान करना चाहिए। सर्वप्रथम उन्हें आकस्मिक रूपसे हताहतों (Casualties) के मुख और नाकमें संधूलिको साफ कर देना चाहिए और इस प्रकार उसकी सांस-क्रिया को सहज बनाना चाहिए।

(६) रोगीको पुनराश्वासन दे और यदि आघात गम्भीर न हो, तो उस स्थितिमे उसे उसके घर भेजनेका प्रबन्ध करें, साथ ही उसे परामर्श दे कि वह घर जाकर पूर्ण विश्राम ले।

(७) सभी कपडोको ढीला कर दे, रोगीको लिटा दे, उसे गर्म रखे।

(८) प्रथमोपचार दलके पहुचनेके पहले रोगीके आक्षोभका उपचार करे, रक्तस्राव रोके और यदि आवश्यकता हो, तो कृत्रिम श्वसन प्रदान करे।

(९) यदि क्षति या घटनास्थलपर प्रथमोपचार दल नही पहुचता और यदि आघात गम्भीर हो, तो बचाव दलको तुरन्त निकटतम प्रथमोपचार चौकी से सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए।

(१०) बचाव दलके लिए अन्य वस्तुओकी अपेक्षा यह अधिक आवश्यक है कि वे शान्त चित्त रहे और क्षतिके दृश्योमे, भले ही अपारक्षति हुई हो, घबडाये नही।

(११) विध्वंस दलोको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करना चाहिए और उन्हे बचाव दलके ज्येष्ठक (Foreman) द्वारा दी गयी सलाहके अनुसार कार्य करना चाहिए।

(१२) इसे याद रखिये कि मलबेके बाहर निकाला गया हताहत व्यक्ति एक सदिग्ध या आपत्तिपूर्ण (Precarious) स्थितिमे होता है, आपको उसको हिलाने-डुलानेमे बडी सावधानी बरतनी पडेगी और उसके मलबेको अत्यन्त सावधानीके साथ हटा दीजिए।

(१३) क्षतिके स्थानपर कार्य करते समय बचाव दलको विद्युत-पूर्ति, गैस और पानीके नलोको अस्थायी समयके लिए बन्द कर देना चाहिए।

(१४) इसे याद रखिये कि बचाव और विध्वस, दोनो कार्योके लिए आनुपातिक रूपमे अत्यन्त निपुण व्यक्तियोकी आवश्यकता है। ये व्यक्ति मुख्यत: अभियान्त्रिक (Engineering) अथवा भवन-व्यापारसे अवश्य लिये जाय।

(१५) यद्यपि बचाव या विध्वसका कार्य असुखकर हो सकता है, तो भी आपको अपना कार्य पूरी दिलचस्पीसे पूरा करना चाहिए, क्योकि ऐसे समयमे जीवन दावपर लगा रहता है।

(१६) अपनी परिवहन–व्यवस्थाको उत्तम रूपमें, प्रथम श्रेणीकी रखे। हवाई हमलेके द्वारा क्षत–विक्षत हुई सडककी तक्षण मरम्मत करे।

(१७) विध्वंस दलोंके अतिरिक्त बचाव और प्रथमोपचार दलोंके मध्य पूर्ण सहयोग रखे।

(१८) अभियन्ताओं (Engineers), सविदाकारों (Contractors) और भवन–व्यापारमें लगे हुए लोगोंको बचाव और विध्वंसके इस राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहयोग और समर्थन प्रदान करना चाहिए।

(१९) समय–समयपर (Periodically) बचाव–अभ्यासोंका सगठन करें। बचावके सर्वोधिक कठिन कार्यके सम्बन्धमें जो कुछ भी सीखा गया है, उसका अभ्यास बनाये रखनेका वह सर्वोत्तम उपाय है।

(२०) बचाव दलसे सम्बद्ध अनिपुण व्यक्तियोंको प्रथमोपचार–कार्यका ज्ञान अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिए।

निषेध

(१) क्षतिके दृश्यको देखकर भयातकित न हों।

(२) मलबेसे हताहतोंको निकालते समय जल्दबाजी न करें। यदि आप अविवेकतापूर्ण ढ़गसे अपना कार्य करेंगे, तो आप आगे और क्षतिके कारण बन सकते है।

(३) अविवेकपूर्ण ढंगसे भग्नावशेषोंकी लकडीको मत उलटिये। इससे आप और अधिक ढहानेके कारण बन सकते है।

(४) खुले हुए विद्युत तारोंका स्पर्श न करें।

(५) मलबेसे हताहतको निकालते समय अपनी सुरक्षाके प्रति पूरा ध्यान रखना न भूलें।

(६) जब आप क्षति–स्थलकी ओर चलें, तो आवश्यक साज–सामानोंकी व्यवस्था करना न भूलें।

(७) जब तक कि आप परिस्थितियोंसे बाध्य न हों, तब तक किसी भवनके अस्त–व्यस्त भाग या मलबेके ऊपर रेंगकर न चलें।

(८) प्रथमोपचार दलकी प्रतीक्षा न करें और तुरन्त रक्त–स्राव को बन्द करें।

(९) यदि आवश्यक हो तो कृत्रिम श्वसन प्रदान करना न भूलें, क्योंकि इसके अभावमें आप किसी व्यक्तिके जीवन दीपको बुझते हुए देखते रह जायेंगे। आप असहाय भावसे किकर्तव्यविमूढ़ होकर खडे–खडे केवल इस दृश्यको देखते रह सकते है।

(१०) अपने ऊपर डाक्टरके कर्तव्यका भार न लें।

(११) बचाव दलको परिवहन या यातायातके लिए प्राथमिकता प्रदान करना न भूलें।

(१२) सामान्य रूपसे क्षति–स्थलपर अपेक्षित भारी प्रकारके काष्ट पदार्थ और विशेष वस्तुएं कहांपर मिलती है, एतद्विषयक आवश्यक सूचना या जानकारी रखना न भूले।

(१३) क्षति–स्थलकी ओर जानेके पूर्व अपना गैस–मास्क, गैस–सूट और गम–बूट लेना न भूलें। आपको ऐसे स्थानोमे भी गुज़रना पड सकता है, जो गैस अथवा रेडियो–सक्रिय धूलिसे विदूषित हो।

(१४) इसे न भूले कि बचाव दलोको विशिष्ट प्रशिक्षणकी आवश्यकता है।

(१५) इसे न भूले कि बचाव दल और विध्वंस दलके कर्मचारियोको बचाव-दलके ज्येष्ठक (Foreman) का निर्णय मानना ही होगा। जब बचाव दल क्षति-स्थलपर पहुचना है, तो ज्येष्ठक ही उस स्थलका सर्वेक्षण करता है।

(१६) इसे न भूले कि हताहत व्यक्ति अधीरताकी मनःस्थितिमे है और अन्य चीजोकी अपेक्षा उसे आश्वासन और सहानुभूतिकी आवश्यकता है।

(१७) इसे न भूले कि जब मलवेसे किसी हताहतको खोज निकाला जाता है, तब अस्थिभग, विशेषतः पसली (Ribs) का हो सकता है।

(१८) इसे न भूले कि किसी क्षतिग्रस्त या अन्य किसी इमारतको गिरानेका निश्चय तभी किया जाय, जब ऐसा करना नितान्त आवश्यक हो। सबसे पहले परि-स्थितिका सामना करनेके लिए समर्थन या आधार प्रदान करनेके द्वारा प्रयास किया जाना चाहिए।

(१९) इसे न भूले कि बचाव–कर्मचारियोको आपके पूर्ण समर्थन और सह-योगकी आवश्यकता है। वे जीवनको दावपर रखकर खेल रहे है।

(२०) एक हेलीकाप्टरके लिए व्यवस्था करना न भूले। घाटियोमे और पहा-डियोपर बचाव कार्य मे वह आवश्यक है।

– अध्याय १५ –

नागरिक प्रतिरक्षाका अर्थ और औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षा

नागरिक प्रतिरक्षाका अर्थ "नागरिक प्रतिरक्षा" शब्दके वास्तविक अर्थको समझनेके लिए यह श्रेयस्कर होगा कि हम आधुनिक युगमे इसकी उत्पत्तिके विषयमे जानकारी प्राप्त करे। गत युद्धके शुरू होनेके कुछ पहले और उसके कुछ पश्चात् ग्रेट ब्रिटेनमे यह अनुभव किया गया कि परिस्थिति ऐसी थी कि वहाके लोगोको एक साथ ही उस देशके विभिन्न भागोपर सधन हवाई आक्रमणका सामना करना पडा और इस आक्रमणने वास्तविक रूपमे एक आतक पैदा कर दिया। यदि उन विध्वसित क्षेत्रोमे परिस्थितियोको तत्काल नियन्त्रणमे नही लाया जाता, तो जीवित रहनेका राष्ट्रीय मनोबल टूट जाता। युद्धकालीन मन्त्रिमण्डलके लिए सुझाये गये शीर्षक मे यह मनोबलपर दोहराकर जोर दिया गया था। युद्ध प्रारम्भ होनेके समयसे ही अनेक नागरिक विभाग मोर्चेकी अग्रिम पक्तिमे थे, वरन कानून, शान्ति, भोजन, परिवहन (Transport) आदिके प्रति भी उत्तरदायी थे। 'नागरिक प्रतिरक्षा' के मनोवैज्ञानिक क्षणोमे नागरिक विभागो के द्वारा अपनाये जानेवाले युद्धकालीन सभी उपायोके द्वारा पूछताछका यह विशदीकरण सकेतित है। सितम्बर १९३९ ई. तक ब्रिटेनमे नागरिक प्रतिरक्षा सगठनके प्रमुख अग (Components) अस्तित्वमे थे और युद्धके अन्त तक इसी प्रकार रहे।

नागरिक प्रतिरक्षाका अर्थ है–वर्तमान प्रयत्नोका समन्वय (Co-ordination), भविष्यके प्रयत्नोका सगठन, जनताका शिक्षण और नौ बमवर्षाकेद्वारा हो सकनेवाली सपत्तिके नुकसान शारीरिक और मानसिक क्षतिको विशेषज्ञोके उपयोगके द्वारा कमसेकम करना।

वर्तमान प्रयत्नोके समन्वय और भावी प्रयत्नोके सगठनका अर्थ है–अत्यन्त कम समयमे शारीरिक और मानसिक क्षतिका सामना करनेके लिए डाक्टरों, उपचारिकाओ, अभियन्ताओ और [illegible] सगठन। सामान्य रूपमे हमारा इन दोनोमे आशय है।

अब, हमे इस शब्दके ठीक–ठीक अर्थको देखना चाहिए, जो इन दोनोंपर वैयक्तिक रूपसे लागू होता है।

(१) **वर्तमान प्रयत्नोंका समन्वय :–** इसका अर्थ है कि किसी अन्य ओरसे किसी अन्य प्रयत्नके अतिरिक्त समस्त नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओंको एक–दूसरेकी सहायताके लिए होना चाहिए। उदाहरणके लिए, डाक्टर और उपचारिकाओके कामोमे निकटका समन्वय होना चाहिए। सरक्षकोको अग्निदलके लोगोकी सहायता करनी चाहिए, प्रथमोपचार दलके लोगो को बचाव–दलके लोगोकी सहायता करनी चाहिए, सडकोके बन्द होनेकी स्थितिमे यदि अग्नि दलकी गश्त को ठीक स्थलके लिए निर्देश नही किया जायगा, और उन्हे आवश्यक सूचनाए नही दी जायगी, तो अनावश्यक रूपमे विलम्ब हो सकता है जिसमे कि अपारक्षति भी हो सकती है और ठीक निर्देश और आवश्यक सूचनाके द्वारा इन्हे दूर किया जा सकता है। यही बात दमकल सेवा पर भी लागू होती है। डाक्टरो, उपचारिकाओ, जल–सेवाओ जैसे जल–कार्यके लोग आदिकी सेवाओमे यदि उचित समन्वय स्थापित रहेगा, तो अनेक शारीरिक और सपत्तिकी क्षतिकी अवहेलना की जा सकती है। क्योंकि इसे अत्यन्त कम समयमे करना पडता है। सरक्षक और बचाव दलके लोग सरचना–प्रतिरक्षा, शरणगृह और खाइयाँ और किसी हवाई आक्रमणके विरोध मे अपने घरको कैसे बचाया जाय आदि समस्याओसे निपटनेके लिए आवश्यक रूपसे प्रशिक्षित नही होते और इन कार्योंके लिए उन्हे अभियन्ताओंकी सहायताकी आवश्यकता पडेगी और कोई भी सेवादल तब तक कार्य नही कर सकता जब तक कि समस्त सेवादलोको जोडनेवाली एक कडी न हो। वह जोडक कडी परिवहन है। यदि हम अत्यन्त कम समयमे हताहतोको अस्पतालो तक पहुचानेकी बातमे सुनिश्चित होना चाहते हे, तो हमारी रोगिवाहन–सेवा (Ambulance Service) अत्यत दक्ष होनी चाहिए। यदि परिवहन सेवा अस्पताल वालोके साथ सहयोग करनेमे पिछड़ जाती है, तो अस्पतालकी सेवा अपने कार्यमे असफल हो सकती है। यदि हम वर्तमान प्रयत्नोमे समन्वयके सार अशका अर्थ प्रदान करना चाहे, तो यह कहा जा सकता है कि यह एक विशिष्ट व्यवस्था और सद्भावना है जिसकी प्रत्येक सस्था दूसरी सस्थाके लिए एक परिसम्पत्ति है और हवाई हमलेसे सुरक्षाके लिए पूर्वोपायो केप्रति लोग समस्त वर्तमान प्रयत्नोकी एक सलग्न इकाई बनाते है।

२ **भावी प्रयत्नोंका संगठन :–** शारीरिक और सपत्तिके नुकसान के साथ ही, हवाई आक्रमणके कारण मानसिक क्षति भी होती है और वह क्षति तभी कम की जा सकती है जबकि प्रत्येक व्यक्ति यह जाने कि युद्धकालीन आपद् का सामना करनेके लिए एक सगठन भी है।

यह समय स्वावलम्बनका है। हमे भावी प्रयत्नोके लिए प्रत्येक वस्तुका सगठन करना चाहिए। सरकारसे मिलनेवाली हर सम्भव सहायताके साथ ही हमे नागरिकोके रूपमे, अपनी और अपनी सम्पत्तिकी देखभाल करनी चाहिए।

किसी नौसेना के जहाज और भूमि या जहाजो से उडनेवाले युद्धके हवाई जहाजो द्वारा आक्रमण की सदैव सभावना है।

हवाई बमवर्षा नाभिकीय आयुधो, उग्र विस्फोटक बमो एक साथ या अलग-अलग प्रयुक्त अग्निबम और गैस बम वर्षाकी जा सकती है। इनमेंसे प्रत्येक प्रकारका अस्त्र अपने विशिष्ट प्रकारसे क्षति पहुचाता है, पर एक ख़तरा जो सामान्य रूपसे सबके द्वारा होता है, आतंकका सामना केवल ज्ञान और सगठनके द्वारा किया जा सकता है। हम इसे भलीभाति जानते है कि किसी सकटकी स्थितिमे यह सामान्य रूपसे देखा जाता है कि आतक पैदा करना शत्रुके हाथमे एक सर्वाधिक विध्वसक अस्त्र है। ऐसी परिस्थितियोमे कोई भी सगठन लगभग असम्भव हो जाता है। अतएव यह आवश्यक सामना करनेके लिए हमे अपने प्रयत्नोको बहुत पहलेसे ही सगठित कर लेना चाहिए।

(३) **जनताकी शिक्षा**—भारतवर्षमे और विश्वके किसी भी अन्य देशकी वर्तमान परिस्थितिमे जनता को शिक्षा देने वाला वर्ग किसी भी अन्य वर्गसे कम महत्वपूर्ण नही है। किसी भी नागरिक प्रतिरक्षा योजनाके सफलतापूर्वक कार्यान्वयन के लिए, जनता के अग्निबम अग्नि-शमन, बचावके उपाय, अपने घरो, खिड़कियो, दरवाज़ेकी सरक्षा और घरके छः व्यक्तियोके लिए एक सामान्य खाई बनाने, भले ही वे विविध प्रकारके सतह शरणगृहो, खाइयो या तलगृहोके विषयमे अधिक न जानते हो, आदिके सामान्य उपायोमे भलीभाति प्रशिक्षित होना चाहिए। वे सरचनाप्रतिरक्षाका भी कुछ ज्ञान रख सकते है, पर उन्हे बमोके उडनेवाले टुकडो, उत्स्फोटो और मलबापातोके विरोधमे विविध प्रकारकी सुरक्षाके उपायोको अवश्य जानना चाहिए। उन्हे यह भी जानना चाहिए कि वे रेडियो-धर्मी धूलिसे स्वय अपनेको किस प्रकार बच सकते है।

शत्रुके बमवर्षको का उद्देश्य अन्य वस्तुओकी अपेक्षा आतक पैदा करना और औद्योगिक एव इस प्रकारके अन्य कार्योको अस्त-व्यस्त करना होता है। ऐसी परिस्थितियोमे अशिक्षित जनता सबसे बडा शत्रु है। ऊपर जो कुछ कहा गया है, उसके अतिरिक्त उन्हे यह भी सीखना चाहिए कि सरकार, प्रमुख वार्डन, उनके विभागोके वार्डन, ज़िला या नगर हवाई आक्रमणसे एहतियाती सुरक्षाके अधिकारियोके अनुदेशोका किस प्रकारसे पालन करना चाहिए। यद्यपि गैस आक्रमणकी अत्यन्त कम सम्भावना है, तो भी उन्हे गैसके विषयमे कुछ न कुछ शिक्षा प्राप्त करनी ही चाहिए। प्रथमोपचारके विषयमे उन्हे अधिकसे अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और इन सबसे अधिक उन्हे श्रमकी महत्ताका ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। यदि किसी स्थितिमे उनके इलाकेमे आग लग गयी हो तो उन्हे कुएसे पानी खीचकर निकालनेमे और बाल्टियोमे भर-भरकर घटनास्थलपर लानेमे शर्मका अनुभव नही करना चाहिए। किसी आपातका सामना

करनेके लिए शिक्षित जनता सुरक्षित तम और सुनिश्चितम माध्यम है। सरकार जो कुछ भी करती रही है, उन सबके अतिरिक्त हवाई आक्रमणमे सुरक्षाके पूर्वोपायोके विषयमे सामान्य जनताको शीघ्र प्रशिक्षण प्रदान करनेकी महत्ताको जितना कहा जाय थोडा है।

(४) हवाई और नौ बमवर्षाके कारण हुई संपत्ति-संबंधी शारीरिक और मानविव क्षतिको कम करनेके लिए विशेषज्ञोंका उपयोग–विशेषज्ञोका उपयोग यथा वास्तुशिल्पिया, अभियन्ताओ, डाक्टरो, बचावदलोके विध्वसदलो अथवा रोगीवाहन सेवाओके लोगो, रक्षक सेवाके लोगो और अन्य नागरिक प्रतिरक्षा योजनाओके विशेषज्ञोका उपयोग प्रायः जितना अधिकसे अधिक सम्भव हो करना ही चाहिए। इग्लैण्डमे प्रथमोपचारक और उपचारिकाए, अग्निदल के लोग और वे जिन्हे मनोविकार सेवाओके कार्य करने पडते है किसी भी अन्य व्यक्तिसे कम महत्वपूर्ण नही माने जाते। प्रथमो-पचारमे प्राशिक्षित प्रत्येक व्यक्तिको अपने पास एक योग्यता परिचय–पत्रक रखना चाहिए, जिससे कि किसी विशिष्ट समयमे जहाँ कही भी वह हो, उपयोगी हो सके। हमे किसी भी प्रकारका असुनियोजिप्रयास नही करना चाहिए, बल्कि विशिष्ट शाखाओंमे नियुक्त विशेषषज्ञो के आदेशोको पालन करनेका प्रयत्न करना चाहिए। उस स्थितिमे हवाई और नौ बमवर्षासे हम कम से कम नुकसान होने दे सकते है। उत्स्फोटीय प्रभावो, बमोके उड़नेवाले टुकड़ो और मलबापातोसे रक्षा करनेके लिए हमे विशेषज्ञोका पूरा उपयोग करना चाहिए। वे हमे उन सही सूचनाओको प्रदान करेंगे, जिन्हे हम नही जानते। मानसिक क्षतिके सदर्भमे विशेषज्ञकी सलाह अन्य किसी भी मामलेसे कम महत्वपूर्ण नही है। हमने पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि हवाई बमवर्षा जैसी स्थितिमे शत्रु कितना भयकर आतक पैदा कर देता है। नौ–बमवर्षाका प्रश्न केवल बम्बई, कलकत्ता, कराची, मद्रास और ऐसे ही अन्य बन्दरगाहोपरही लागू होता है। वस्तुत. यह बम वर्षा देशके भीतरी भागोके प्रदेशोमे रहनेवाले लोगोपर लागू नही होती। क्षति कम मे कम हो इसलिए विशेषज्ञोके उपयोगको प्राथमिक महत्वताके कार्यके रूपमे मानना चाहिए।

वस्तुतः नागरिक प्रतिरक्षाका उद्देश्य दो प्रकारका है --

(१) पहलेसे ही जहाँ तक सम्भव हो सुरक्षात्मक उपायोको जो कि हताहती और क्षति, दोनोको कम करनेके लिए सर्वोत्तम माने जाय, अपना लेना और (२) एक बार हताहतहो जानेपर उनके लिए आवश्यक सेवाओको प्रदान करना। यथासम्भव शारीरिक क्षतिको नियन्त्रित करना और बमवर्षाके कारण आवासीय समस्याओका नियन्त्रण करना। इनमे सकटकालीन भोजन प्रदान करना, गृह–विहीनोंको पुनः गृह प्रदान करना आदि मामले सम्मिलित है।

जहाँ तक निवारक या आक्रमणसे पूर्वके उपायोका सम्बन्ध है, इनमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण शरणगृहोकी व्यवस्था और निष्क्रमण या विसर्जन (Dispersal) के लिए

प्रबन्ध भी सम्मिलित है। कुछ और भी महत्वपूर्ण अभिलेखो के विसर्जन और प्रतिलिपिकरण (Duplication), आवश्यक अतिजीविता मदोंके संचय, उद्योगों के विसर्जन और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाको पूर्णरूपसे नष्ट हो जानेसे बचानेके लिए इसी प्रकारके और भी निवारक उपाय है। नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओको जनसंख्याके नियन्त्रण, अग्निशमन, बचाव, प्रथमोपचार, अस्पताल, सरक्षकों, टोह या प्रारम्भिक सर्वेक्षण (Reconnaissance) और कल्याणके लिए अवश्य व्यवस्था भी करनी चाहिए। इस कमानकी एक सुसगठित व्यवस्था होनी चाहिए और इन दलोका एक बहुत बड़ा भाग अवश्य ही गतिशील (Mobile) होना चाहिए और उसे पर्याप्त सचार-साधन (Communication) भी प्रदान किया जाना चाहिए।

एक अत्यन्त महत्वपूर्ण वर्ग आपातके प्रभावके संचारेक्षण या अनुश्रवण (Monitoring) के विषयमे और ऐसे कारणोसे हताहतोके ख़तरेको कम करनेके लिए किये जानवाले कार्योके विषयमे अवश्य ही प्रशिक्षित होना चाहिए।

आधुनिक युगकी किसी भी नागरिक प्रतिरक्षा योजनामें नाभिकीय आपात जन्म वादलोकी यात्राके विषयमे अन्तराष्ट्रीय सूचना प्रदान करनेके लिए व्यवस्था अवश्य ही होनी चाहिए। इन सबके ही समान ओर कुछ चीज़ोसे भी महत्वपूर्ण समस्या है स्ट्रेचरो और अग्नि-नलो (Fire Hoses) के लिए अनुकूलितो (Adaptors) का मानकीकरण।

इसके अतिरिक्त नागरिक प्रतिरक्षा फिल्म, फिल्म-पट्टी (Film Strip) पुस्तकालय और नागरिक प्रतिरक्षा-साहित्यके लिए भी पुस्तकालयकी व्यवस्था होनी चाहिये। नागरिक प्रतिरक्षा बुलेटिनोके लिए भी प्रावधान होना चाहिए जो कि किसी विशिष्ट देशकी स्थितिके अनुसार सामयिक पत्र-पत्रिका के रूपमे (Periodically) प्रकाशित हो सकते है। भूकम्प, बाढ आदि शान्तिकालीन विनाश (Disasters) के अवसरोके लिए पारस्परिक सहायताकी भी एक योजना होनी चाहिए। यह योजना उपर्युक्त अन्य किसी भी योजनासे कम महत्वपूर्ण नही है।

परिवहनके अनुरक्षणके सम्बन्धमे यह याद रखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि चाहे वह समुद्रके द्वारा हो चाहे अन्तर्देशीय जलमार्गसे, चाहे रेल, सड़कमे हो चाहे वायुमार्गसे, पर प्रगतिशीलताके लिए यथासम्भव हर प्रकारकी व्यवस्थाकी जानी चाहिए। जहा तक गृहमोर्चेकी अतिजीविताका सम्बन्ध है परिवहन केवल एक अत्यन्त आवश्यक मद ही नही है, बल्कि यौद्धिक प्रयत्नोके सक्रिय अभियोजन के लिए यह उसका मेरुदण्ड है। नागरिक प्रतिरक्षामें और भी अनेक महत्वपूर्ण समस्याएं है, जैसे भोजन और इंधन-पूर्ति, युद्धकालमे उत्पादनको बनाये रखने या बनाये रखने के प्रयत्नके लिए औद्योगिक कच्चे माल की पूर्ति, लोकोपयोगी सेवाएं जैसे जल, गैस, विद्युत और मलनाली जनशक्ति और स्वावलम्बन। अन्तिम मदके सम्बन्धमे यह अवश्य याद रखना चाहिए कि

नागरिक जनसंख्या भी उसी प्रकार युद्ध कटिबन्धमें है, जिस प्रकारसे सैनिक शक्तियाँ और यदि उन्हे जीवित रहना है, तो उन्हें स्वयं अपनी रक्षामे सक्रिय भाग अवश्य लेना चाहिए । वे एक साथ ही आधुनिक युद्धमें अपनी सुरक्षाके लिए अत्यन्त आवश्यक चीज़ोको भी नही जान या सीख सकते और इसी कारण शान्तिकालमे नागरिक जनसंख्याको या कमसे कम इसके एक पर्याप्त अच्छे भागको अग्निशमन, प्रथमोपचार, गृह–संरक्षा, अनावश्यक ख़तरोकी अवहेलना और जबकि रेडियो–धर्मी विदूषणका ख़तरा उपस्थित हो, तो घरेलू शरण-गृहोमे स्वय संतुष्ट रहनेके लिए तैयारी करना आदि विषयोमें प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए।

जनताकी भलाईके लिए नागरिक प्रतिरक्षाके कार्यकर्ता जनताके लिए जो सर्वोत्तम कार्य कर सकते है वह उपर्युक्त सभी मामलोमे, और विशेष रूपसे उन मामलोमे उनकी अभिरुचिको जागृत करनेमे और समन्वयमे उनका सहयोग करनेमे और दुर्लभ उपायोंको, जो कि निश्चय ही अवाछनीय है और यदि सम्भव हो तो उसकी अवहेलना भी की जानी चाहिए, का आश्रय ग्रहण किये बिना उनका सहयोग प्राप्त करनेमे अभिरुचि पैदा करना है।

यह अवश्य ज्ञानमे रखना चाहिए कि प्रत्येक नागरिक प्रतिरक्षा सगठन संकटकालमें राष्ट्रकी सामान्य नागरिक जागरूकताको सुनिश्चित बनानेके लिए और युद्धके क्षणोमे महत्वपूर्ण कार्योको चालू रखनेके लिए आवश्यक रूपसे एक समन्वयकारी संस्था है। ऐसे संगठनमे नागरिक नेतृत्व महत्वपूर्ण योगदान देता है और इस सम्बन्धमें स्वीडेन और गेट ब्रिटेनके नामको ध्यानमे रखा जा सकता है।

आधुनिक उलझे हुए या भ्रान्त बौद्धिक युगमे चार प्रकारकी प्रतिरक्षाएं है :–

(१) पदाति सेना, नौसेना और वायु सेना,

(२) नागरिक प्रतिरक्षा,

(३) आर्थिक प्रतिरक्षा, और

(४) मनोवैज्ञानिक प्रतिरक्षा।

इन चार प्रकारकी प्रतिरक्षाओमेसे द्वितीय अर्थात् नागरिक प्रतिरक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योकि यह तथ्य विश्वके सभी भागोमे स्वीकृत है कि किसी विश्वयुद्धमे भविष्यके सभी सुयुद्धोका भाग्य–निर्णय युद्धके मैदानमे निर्णीत नही होगा, बल्कि यह जनताके गृहोमे होगा। यह निर्णय वस्तुतः ठीक है कि यदि द्वितीय प्रतिरक्षाको भलीभांति पूर्ण नहीं किया गया, तो अपने अन्तिम प्रयत्नमे प्रथम प्रतिरक्षा भी प्रभावहीन हो जायगी ।

जो कुछ पूर्वगत कंडिकाओ या पैराग्राफोमे कहा गया है, उसके अतिरिक्त पाठकोको प्रतिरक्षाके दोनो अर्थोंको लगातार अपने दृष्टिपथमे रखना चाहिए। ब्रिटेनमे

नागरिक प्रतिरक्षाने अपने नियन्त्रित अर्थमे गतयुद्धमे उन प्रतिरक्षाओको आक्रमणके तात्कालिक प्रभावका सामना करनेके लिए –इनमेसे अनेक तो पहलेसे ही कार्य कर रही थी, निर्देशित किया था। इसने अपने व्यापक अर्थोमें उन नयी सेवाओं या कार्योंको युद्धके दौरान निर्देशित किया था जो कि योजना या विकासकी प्रक्रियामे थे। दूसरेके दृष्टिकोणसे देशमे नागरिक प्रतिरक्षा समितिमे–जबकि इसका विस्तार किया गया था तब इस निर्माणके समय इसमे लगभग १६ मन्त्री थे, जिनके विभाग वास्तविक रूपमे (Potentially) इसी समस्याके संलग्न थे। बड़ी शीघ्रताके साथ और अत्यन्त कम लिखित रेकार्डके साथ निर्णय लिये गये थे, मन्त्रियोने अपने स्थायी सचिवो (Secretaries) को बहुतसे अधिकार दिए और उन सचिवोने उसी प्रकार अपने अधीन विभागीय प्रमुख सहायकोको बहुतसे अधिकार दिये थे। समन्वयके उपकरण स्वरूप, गृह–सुरक्षामन्त्रालय दूसरे विभागोके पुराने अधिकारियोंके साथ अनौपचारिक सम्बन्धोपर अधिक निर्भर था। युद्ध प्रारम्भ होनेपर सुरक्षाकालीन बढ़ते हुए विभागोकी सख्याके प्रासगिक क्रियाकलापोका समन्वय, नये विभाग और अन्य एजेन्सियाँ आवश्यक हो गयी थी। नागरिक–प्रतिवेदन (Civil Report) जो नियमित रूपसे हर समय पर युद्ध-मन्त्रिपरिषद (War cabinet) को सुपुर्द की गई थी उसमें ए. आर. पी. की उन्नति, अग्निसेवा, स्वास्थ्य विभागके कार्य, आहत–सेवा, निष्क्रमण, आपत्काल, अस्पताल–योजना (हास्पिटल स्कीम), भवन, आवागमन, सरकार–निष्क्रमण और नागरिक प्रतिरक्षासे सम्बन्धित अन्य विषय भी अनुलग्न थे। सम्पूर्ण सेवा–विभागोमे एकीकरण अपने पूर्णरूपमे सम्पन्न हुआ था। इस-लिए यह प्रत्यक्ष रूपसे सत्य है कि नागरिक सुरक्षामे समन्वयका बहुत महत्वपूर्ण स्थान है।

यद्यपि मन्त्रालयका मुख्य घरेलू स्वरुप बहुत पहले ही निश्चित हो गया था, फिर भी बहुत सी महत्वपूर्ण कतिपय अन्य विभागोके कार्योमे बादमे जोड दी गयी थी, एवं बहुत–सी प्रशाखाए भी निर्मित हुई थी। सार्वजनिक समन्वयका उत्तरदायी विभाग और रीजनल कमिश्नरके कार्य, आक्रमणसे उसके नौ महीनोके बाद अतिव्यापक समस्याओके साथ, अनुबद्ध हो गये थे। संभरण–नीति विभाग (Supply Policy division) जैसे कतिपय अन्य विभाग तथा उनपर अवलम्बित विभागोके अतिरिक्त बहुतसे विभाग, गैस विरोधी उपायोके अलावा अनेक नक्शे, उत्पादन और वितरणके उत्तरदायी हो गये थे। गुप्तचर विभागने युद्ध–कक्षमे आये हुए समाचारोको मन्त्रालयमे वितरित करनेका उत्तर–दायित्व अपने ऊपर ले लिया था।

विषयको अधिक अच्छी तरह समझनेके लिए यह आवश्यक है कि पाठकका ध्यान इंग्लैण्डके १९४० के मईसे अगस्त तकके समयके ऊपर केन्द्रित किया जाय जबकि भय दुगना बढ़ गया था और जर्मनो द्वारा की गयी चढ़ाईकी नयी मात्रासे, उस देशमे

जीवन और मरणकी समस्या उत्पन्न हो गयी थी । भीषण दुर्घटनाओने चारों ओर अशान्तिका वातावरण उत्पन्न कर दिया था । १० मईको जर्मनी ने पश्चिम–देशोंपर लम्बे अरसेसे स्थगित अपना आक्रमण प्रारम्भ किया । ठीक उसी दिन मि. चर्चिल प्रधान मन्त्री हुए और उन्होने सर्व–दलीय–सरकार (All Party Govt.) की स्थापना की । १३ मईको उन्होने हाउस आफ कामन्न (House of Commons) के सामने प्रधानमन्त्रीके रूपमे भाषण दिया । उनके स्मरणीय शब्द थे–"हम लोग इतिहासकी बडी लडाइयोमे से एककी प्रारम्भिक अवस्थामे हैं" और उन्होने आगे कहा "मै रक्त, मशक्कत, भय तथा पसीनेके अतिरिक्त कुछ नही दे सकता ।"

जर्मन सेनाकी तीव्र प्रगतिसे ब्रिटेन और भी अधिक भयग्रस्त हो गया । सम्पूर्ण शक्ति एवं साधनोके साथ किया गया आक्रमण सबके लिए भयका कारण बन गया । १८ मईको राटेर्डम (Rotterdm) व्यामृष्ट हुआ और जर्मन छतरी-धारी तथा अनुगामी सैनिक, रक्षक दलकी सम्मुख–कतारसे बहुत पीछे उतरने लगे । विनाशके इस अवसरपर जनरल हेड क्वार्टर्स होम फोर्सेस और उसके सहायक प्रत्यक्ष रूपमें मैदानमे आ गये थे । १४ मई १९४० को स्थानीय प्रतिरक्षा–स्वयंसेवको (Local Defenee Volunters) का सगठन किया गया । इनका कार्य देशकी सुरक्षामे सैनिकोंकी सहायता करना था । आठ सप्ताहके अन्दर ही इनकी संख्या १,०००,००० से अधिक हो गयी । इन्हे स्वेच्छासे नागरिक प्रतिरक्षा स्वीकार करने-वाले पुरुष नागरिकोके बीचसे ही लिया गया था, यह एक महत्वपूर्ण बात है । नागरिक प्रतिरक्षाके अर्द्ध सामयिक सदस्य होनेके नाते उन्हें लघु भत्ता दिया जाता था, वेतन नही । वे शस्त्रसज्ज थे और कामके समय कानून और अनुशासनके पाबन्द थे । दूसरे देशोको भी बलिदान के इस उदाहरणको स्वीकार करना चाहिए । भारतीय तथा अन्य देशोके गृहसरक्षको (Home Guards) को चाहिए कि वे अपनेको इसी तरह व्यवस्थित बनाये, जिससे युद्धके समय निश्चित रूपसे देशकी द्वितीय प्रति-रक्षा (Second Defence) का रूप धारण कर सके ।

१९४० की मईसे अगस्त तकके समय तक ब्रिटेनमे नागरिक प्रतिरक्षा अधिका-रियोंके कर्तव्य और उत्तरदायित्व बहुत बडे बढ गये थे । आक्रमण उस समय मुख्यतया दो रूपोमे हो रहा था :–

(१) विस्तृत रूपमें समुद्रवाहित आक्रमण (Sea Borne Invasion) जिसमें जर्मन वायुसेना, नौसेना और स्थल सेनाके सहायक रूपमे कार्य कर रहे थे ।

(२) लघुरूपमे हवाई आक्रमण या खास ख़ास जगहो पर और उसके अतिरिक्त दूसरी जगहो पर हवाई हमले ।

प्रस्तुत और अन्य प्रकारके भयके सम्बन्धमे, गृह कार्यालय और अन्य नागरिक विभाग (Civil Departments) विभिन्न उत्तरदायित्वोंको वहन करते थे । उन्हें हम चाहे तो अतिव्यापक रूपमे नागरिक प्रतिरक्षा कहें अथवा गृह प्रतिरक्षा ।

संकटकालीन शक्ति (प्रतिरक्षा) अधिनियम (The Emergency Power Defence Act.) ने जो २२ मई, १९४० को पारित हुआ था, सरकारकी शक्तिको बहुत अधिक बढा दिया। इसका सम्बन्ध बहुतसे ख़ास–ख़ास मामलोंसे था जैसे सड़कबन्दी, कार तथा अन्य वाहनोंका स्थगन और कर्फ्यू लगानेका अधिकार। १९३७ और १९३९ के अधिनियमोंके अनुसार स्थानीय प्रभुताधारी, नागरिक प्रतिरक्षा कार्योंमें पहलेसे ही आवश्यक अधिकार प्राप्त कर चुके थे। मई १९४० से नागरिक प्रतिरक्षाके कार्योंको साहस और शक्तिके साथ नियन्त्रित किया गया था। यहा तक कि आक्रमणके समय आदेशानुसार नागरिक प्रतिरक्षा क्षेत्रको प्रतिरक्षा प्रदेश घोषित कर दिया गया था। नागरिक प्रतिरक्षा अधिकारियोंके गृह प्रतिरक्षा या आक्रमण–विरोधी कार्योंको बहुत अधिक महत्व मिला और अनेक नय स्वरूप भी प्राप्त हुए।

उल्लिखित विवरणका उद्देश्य, विगत महायुद्धमें नागरिक–प्रतिरक्षाको ग्रेट ब्रिटेनमें जो महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ था, उससे पाठकोंको परिचित कराना था। युद्धके भयानक थपड़ोंका सामना ग्रेट ब्रिटेनको करना पड़ा था और उसमें नागरिक प्रातरक्षान काफी सहयोग दिया था। यह एक अति उत्तम उदाहरण है, जिसका अनुकरण ूसरे सब देशा द्वारा भी किया जाना चाहिए। ग्रेट ब्रिटेनम नागारक प्रतिरक्षाने हवाई आक्रमणसे बचनमें काफी सहयोग प्रदान किया था। सितम्बर १९३९ की आपत्ति के बाद हवाई हमलेसे बचाव (Air Raid Precautions) को अत्याधिक महत्व दिया गया। युद्धका ख़तरा बढ़ते ही हवाई आक्रमण सरक्षक (Air Raid Wardens) और विशष पुलिस अपने कामपर तैनात हो गये। सहायक अग्निपुरुष (Firemen) अपने–अपने स्टेशनपर जा पहुचे। शुद्धीकरण केन्द्र, गैस आक्रमणके लिए पहलेसे ही तैयार थे। अस्पताल, आहतोंके लिए पहलेसे ही खाली रखे गये थे। खाइया खोदी गयी थी, शरणगृह बनाये गये थे। बालूके बोरे जुटा लिये गये थे और ब्रिटनका पूरा स्वरूप एक रात्रिम ही बदल गया था। यद्यपि प्रातिरक्षाओंकी तैयारीमें परीक्षणके पहले कुछ समय अवश्य लगा था, परन्तु जब उनकी परीक्षा ली गयी, उस समय वे पूर्णतया सक्षम थी।

इस पुस्तकके विभिन्न अध्यायोंमें, ब्रिटेन निवासियों द्वारा किये गये नागरिक प्रतिरक्षाके कार्योंका विवरण दिया गया है। पाठक उन्हे पढकर, उस अवस्थाके लोगोंके मार्गदर्शनके लिए एक निश्चित रूपरेखा तैयार कर सकते है। उस देशके नागरिक प्रतिरक्षा अधिकारियोंकी सख्याके बारेमें दो शब्द लिखना भी अनावश्यक नही होगा। जून १९४० तक वैतनिक और अवैतनिक नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओंकी सख्या दस लाखसे कुछ ही कम थी। इसके अतिरिक्त अग्नि सेवाओंके आदमियोंकी सख्या २ लाख, आरक्षक ६०,००० और आहतोंकी देखभाल करनेवालोंकी सख्या २,५०,००० थी।

यह स्मरण रखना चाहिए कि शरणगृह तथा अन्य सेवाओके सम्बन्धमे जो कुछ किया गया उससे युद्धकी सर्वाधिकारवादी प्रवृत्ति और अधिक स्पष्ट हो गयी एवं बमवर्षा सैनिक–उद्देशो तक ही सीमित न रह सकी। सुरक्षामे सहयोग देना सबका काम हो गया और प्रत्येक सडक तथा ज़िलेमे––सुशिक्षित तथा विशेष योग्यताप्राप्त सेवकोकी, जो हर समय अपने कामपर तैनात रहते थे, सहायता करनेके लिए योग्य शरीरवाले पुरुष और नारिया अग्नि सरक्षकोके रुपमे तैयार रहती थी।

नागरिक प्रतिरक्षाके अर्थके सम्बन्धमे, पाठकोको सयुक्त राज्य अमेरिका (युनाईटेड स्टेटस् आफ अमेरीका) और सोवियत रूसमे (यूनियन आफ सोवियत सोसलिस्ट रिपब्लिकमे) इसे जो महत्व प्राप्त हुआ था, उसे नही भूलना चाहिए। अमेरीकाने १९५८ मे १९५० के केन्द्रीय नागरिक प्रतिरक्षा अधिनियम (Federal Civil Defence Act.) मे कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन किये। जब राष्ट्रपतिने उसी वर्षके अक्तूबर महीनेमे राष्ट्रीय योजनाकी घोषणा की तो उस महत्वपूर्ण उपायकी प्रभावात्मकता और भी अधिक बढ गयी । उस अधिनियम या योजनाका सविस्तार वर्णन यहापर आवश्यक नही है। पाठक यदि अधिक रुचि रखते हो तो १९५९ मे राष्ट्रपतिके विधायक कार्यालय (Excutive Office) नागरिक और प्रतिरक्षा सैन्य संसज्जन कार्यालय (Office of Civil and Defence Mobilization) द्वारा प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदनको पढ सकते है। इसे याद रखना चाहिए कि (यू एस ए) सयुक्त राज्य अमरीका रेडियो सक्रिय धूल आदिके विरुद्ध बचावके लिए, विभिन्न शरणगृहोके प्रयोगमे तमाम रुपमे डोलर खर्च करता है। एक तरफ तो वे आम जनताको ध्यानमे रखकर बनाये जाते हे ओर दूसरी तरफ परिवार विशेषके उद्देश्यसे। दूसरी ओर रूस, जहा तक नागरिक प्रतिरक्षाका सम्बन्ध है, एक विशेष प्रकारकी व्यूह रचना तक पहुच गया है। सोवियत रुस (यू एस. एस. आर.) मे नागरिक प्रतिरक्षाकी केन्द्रीय सरकार मास्कोमे, आन्तरिक समस्याओके मन्त्रालयके माध्यमसे नियन्त्रित प्रथाको, रखती है। सक्षेपमे उसे एम. पी. वी. ओ. (M P V O)कहा जाता है और उसके पास पूर्णकालिक जनपदसेवी अधिकारियोका पेशेवर सैन्यदल रहता है। एम. पी वी. ओ. स्थानीय और राष्ट्रव्यापी सरकारके सभी स्तरोमे प्रभावात्मक ढगसे कार्य करता है। शहर नियोजन (City Planning) मे उसकी रायका आदर किया जाता है और वह उद्योगोको तितर–बितर करनेके लिए दबाव डाल सकता है तथा नये रुपमे शरणगृहोका सस्थापन करवा सकता है।

रूसकी जनतामे कम्युनिस्ट पार्टी, डी. ओ. एस. ए. ए. एफ., (DOSAAF) इच्छानुगामी समाज –जो स्थल सेना, वायु सेना और नव सेनाको सहयोग प्रदान करता है और जिसके सदस्योकी सख्या २०,०००,००० से भी अधिक है, द्वारा विशाल रुपमे सचालित जनपदसेवी प्रशिक्षण कार्यक्रम बहुत ही उल्लेखनीय है।

उसका प्रत्येक सदस्य नागरिक प्रतिरक्षामे अनिवार्य पाठ्य विषय लेता है और इसके अतिरिक्त सोवियत रेड–क्रॉस लाखोको शिक्षित बनाता है।

डी. ओ. एस. ए. ए. एफ. और रेड–क्रॉसके कार्यक्रमोसे आगे बढ़कर सोवियत रूसने यह घोषणा की है कि वह नागरिक प्रतिरक्षा–प्रशिक्षण पाठ्यक्रम जिसकी अवधि २२ घटे है, और जिसमे सब को भाग लेना आवश्यक है सचालित कर रही है, जिसके द्वारा २००,०००००० सोवियत नागरिक आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेगे।

पाठककी जानकारीके लिए यह बता देना उचित होगा कि सोवियत रूस (यू एस. ए. आर) की नागरिक प्रतिरक्षाकी समस्याएं सयुक्त राज्य अमरीका (यू एस ए.) से भिन्न है। उसके मुख्य विषय (Points) निम्नलिखित है ––

(१) सोवियत कार्यक्रम ऐच्छिक न होकर अनिवार्य है।

(२) सोवियत औद्योगिक और अधिवासित केन्द्र अत्यधिक तितरबितर है।

(३) सोवियत नागरिक प्रतिरक्षाका कार्यक्रम एक बजटपर चलता है, जो लेखककी जानकारी के अनुसार जनता के सामने प्रकट नही किया जाता।

(४) बहुत वर्षोके व्यूह बधनके बाद सोवियत जनता नागरिक प्रतिरक्षा अनुदेशोका पालन अनुशासित रूपमे करेगी जो अमरीकाके स्वतन्त्र समाजके बिलकुल विपरीत होगा और क्योकि वहापर अनिवार्यताका प्रश्न नही है।

(५) सोवियत राज्यकी नियन्त्रित रचना सक्षिप्त सूचनापर ही नागरिक प्रतिरक्षाके लिए, उपकरण एवं कार्यकर्ताओंको व्यवस्थित रूपमे भेज सकती है। अमरीका के परिपाटीबद्ध अर्थमे नागरिक प्रतिरक्षा सोवियत राज्यमे राजनीतिक अथवा आर्थिक समस्या नही है।

नागरिक प्रतिरक्षाका अर्थ समझनेके लिए पाठकोका ध्यान स्वीडन जैसे प्रसिद्ध देशोमे जो कुछ किया गया है, की ओर आकर्षित करना आवश्यक है। पिछले अध्यायोमे जनतापर आरोपित बन्धनोका जो चित्रण किया गया है, उसमे स्पष्ट हो जाता है कि उनके देशमे नागरिक प्रतिरक्षाको कितना महत्व दिया गया है। यदि आवश्यक हुआ तो वह देश, निष्क्रमण योजनामे अपनी आधी जनसख्या को तितर – बितर कर सकता है। पाठक इस पुस्तकके प्रासगिक अशोमे समझ सकते है कि स्टाक होल्म (Stock Holm) की आठ लाख जनसख्यामेमे पचास हजारमे एक लाख लोग आवश्यक सेवाओ और अग्निदमन इत्यादिके लिए तत्पर रहते है। स्वीडन – नागरिक प्रतिरक्षा बन्धन, वास्तवमे प्रतिरक्षाके प्रत्येक स्वरूपको जिसका सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूपमे युद्धकार्योमे नही होता, आगे बढाता है। यदि देशपर आक्रमण हुआ तो पर्यवेक्षण और संचार सेवाये (Observation and Communication Services), अग्निदमन सेवा, बचाव दल गैस और रेडियो धूली से संबन्धित प्रतिरक्षा सेवाए, औषधीय सेवा, निष्क्रमण और कल्याण

सेवाएं हटानेवाली तथा विध्वशक करतेवाली सेवाये–यह सब उपयोगके लिए बहुत उचित रूपमे रूपांकित की गयी थी। यह योजना सशस्त्र सेना और आर्थिक प्रतिरक्षाके राष्ट्रीय बोर्डकी सलाहसे तैयार की जाती है। उसी तरह संसारके बहुतसे विकसित देशोमे नागरिक प्रतिरक्षाका सगठन अच्छे रूपमे योजनाबद्ध रहा है। स्पष्ट है कि जिन देशोने अभी तक इसपर ध्यान नही दिया है, उन्हे शीघ्रातिशीघ्र इसे सम्पन्न कर लेना चाहिए, क्योकि जिस ससारमे हम रह रहे है, उसकी प्रगति अति तीव्र रूपमे हो रही है और यहां आपत्ति आनेपर तैयारी करनेके समयका न मिलना बिलकुल ही निश्चित सा है। ऊपर नागरिक प्रतिरक्षाका अर्थ समझाते समय जो कुछ कहा गया है उससे स्पष्ट है कि औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षा (Industrial Civil Defence) का इस सम्बन्धमेम हत्व एक पूर्ण विषय है। नीचे उसीका वर्णन किया जा रहा है।

औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षा

(Industrial Civil defence)

वास्तवमे औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षा, नागरिक प्रतिरक्षाके भीतर ही आ जाती है, परन्तु विगत महायुद्धमे अधिक महत्व पानेके कारण, एक अलग शीर्षकसे इसपर विचार करना अनुचित नहीं होगा। नागरिक प्रतिरक्षाके इस पक्षके महत्वको पाठकोके सामने प्रकट करनेके लिए, मै उनका ध्यान ७ जुलाई १९६० मे ब्रिटेन–प्रतिरक्षा–सेवा (Britain Defence Service) के प्रतिवेदनके पृष्ठ सख्या २१ मे जो कुछ लिखा है, उसपर खीचना चाहता हू। उसमे ३१ मार्च, १९६० के ग्रेट ब्रिटेनकी शक्तिका प्रासगिक रूपमे वर्णन है, जो इस प्रकार है —

नागरिक प्रतिरक्षा सैन्यदल (Civil Defence Corps.)	३५९,९५९
औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षा सेवा	१९२,५८८
(३१ अक्तूबर १९५९ मे)	
सहायक अग्निसेवा	१९,५८४
राष्ट्रीय अस्पताल सुरक्षित सेवा	
National Hospital Service Reserve	६६,०९२

अन्योकी तुलनामे स्पष्ट रूपसे १,९२,५८८ एक बड़ी सख्या है। उसी प्रतिवेदनमे पृष्ठ सख्या २१ के नीचे और २२ के ऊपर औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षाके सम्बन्धमे यह लिखा हुआ है —

" औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षा सेवा —

सरकारने बड़े औद्योगिक एवं व्यापारिक सस्थाओके प्रबन्धकोको इस बातके लिए आमन्त्रित किया है कि वे अपने कर्मचारियोकी सुरक्षा और आम जनताकी नाग-

रिक प्रतिरक्षा सेवाके सहायतार्थ नागरिक प्रतिरक्षा दल बनाये। सरकारका उद्देश्य है कि प्रत्येक भवनमे जहा दो सौ से अधिक लोग काम करते हो, एक सक्षम नागरिक प्रतिरक्षा दल होना चाहिए। इन प्रबन्धोके अधीन बने हुए दलोमे मुख्य कार्यालय, सरक्षक, उद्धार, प्रथमोपचार और अग्निरक्षक विभाग आते है। ये दल अधिकतर उसी रूपमें प्रशिक्षण देते हैं जैसे नागरिक प्रतिरक्षा सैन्य दल और युद्धमे उनसे और अन्य नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओमे निकट सम्बन्धके साथ कार्य करते है।"

इससे पाठकको मालूम हो जायगा कि उस कम्पनीके लिए औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षा का कितना महत्व है। दुनियाके सभी औद्योगिक देशोके लिए यह उसी तरह महत्वपूर्ण है। आक्रामकका प्रथम उद्देश्य देश विशेषके जन-जीवन और उत्पादनको नष्ट करना होता है। इसीलिए यह आवश्यक है कि उद्योगोकी अच्छी सुरक्षा हो। कभी ऐसा भी हो सकता है कि आक्रामक औद्योगिक कर्मचारियोको अक्षम और हर कामके लिए अयोग्य बनानेके तरीकोको अपनाये। इसमे उनकी परिस्थिति आहतो जैसी हो सकती है, जिसमे मरनेमे भी बुरी हालतका सामना करना पडे। इन सभीके लिए और सभी प्रकारके हवाई हमलोके लिए उद्योगमे लगे हुए लोगोको अच्छी तरह प्रशिक्षित होना चाहिए। उद्योगोको तितर-बितर करनेका पूर्ण प्रबन्ध प्रत्येक देशको करना चाहिए क्योकि आजका युद्ध रूप देशका सबसे बड़ा शत्रु है। औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षा योजना (Industrial Civil Defence Scheme) में प्रत्येक उद्योगके कुछ कर्मचारियोको अच्छी तरह प्रशिक्षित करनेकी उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

अच्छे और मजबूत शरणगृहोके निर्माणमे सहायता पहुचानेके लिए उचित अर्थ-व्यवस्था भी आवश्यक है। इसके साथ ही साथ प्रत्येक उद्योगमे प्रथमोपचार प्रशिक्षण (First Aid Training), अग्निसेवा, बचाव या उद्धार और उच्छेद (Rescue and Demolition) की भी व्यवस्था होनी चाहिए, जिसमे आवश्यकता पडनेपर उनका उपयोग तुरन्त किया जा सके। आपत्काल आने पर उचित अवसर पर सोचे गये पूर्वोपाय अधिक हितकर सिद्ध होगे। उद्योगके ठप होनेपर और उत्पादनके रुक जानेसे किसी भी देशकी अर्थव्यवस्था और तैयारियोकी हत्या अवश्यम्भावी है। इससे बढकर बदकिस्मती नही हो सकती कि विकसित होते हुए युद्धके समय आक्रामित देश, सैनिक एव नागरिक प्रतिरक्षा- दोनो रूपोमे अपनी सुरक्षा करनेके लिए पूर्ण तैयार न हो। इसलिए उद्योगके बीच नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओका उचित प्रबन्ध होना चाहिए और वहाके अधिकारियोको नागरिक प्रतिरक्षा सैन्यदल द्वारा प्रशिक्षण देनेका भी प्रबन्ध रहना चाहिए।

वर्तमान समयमे देशोके मार्गदर्शनके लिए, एक उदाहरणके माध्यमसे मै यह बता देना चाहता हू कि औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षा (Industrial Civil Defence) के सम्बन्धमे ग्रेट ब्रिटेनमे क्या हुआ था। इसमे यह मालूम हो जायगा कि एक समय ऐसा

भी था जब उद्योग इस प्रकारकी तैयारीके लिए बहुत उत्सुक नही था, यद्यपि १९३६ के लगभग ही औद्योगिक हवाई हमला पूर्वोपाय (Industrial Air Raid Precautions Scheme) की योजना हो चुकी थी। बादमे अवश्य ही उद्योगने अपने दलोके लिए आवश्यक पूर्वोपायोके बारेमे सोचना प्रारम्भ किया, परन्तु उस समय उनके सामने अर्थकी कठिन समस्या थी। यह सोचकर कि उनका अस्तित्व देशके अस्तित्वके लिए है, ओर उसी समय सरकार द्वारा यह सोचे जानेपर कि उद्योग, सरकार और देशके लिए है, आयकरमे छूटके लिए सुधार किया गया। इससे उद्योगको बहुत हद तक अव-मुक्ति मिली ओर वे अपना कल्याण और सुधार अच्छी तरह कर सके। ब्रिटेनमे क्या हुआ, उसका साराश नीचे दिया जा रहा है।

१९३६ के आसपास साम्राज्य प्रतिरक्षा समिति (Committee of Imprial Defenc) ने यह सुझाव दिया था कि सम्बधित विभागोको चाहिए कि जिन फर्मोसे उन्हान व्यापार सम्बन्ध स्थापित किये हो, उन्हे हवाई हमला पूर्वोपायका महत्व समझानेका प्रयत्न करे। १९३८ मे सम्बन्धित मन्त्रोने प्रारूप – विधि–व्यवस्था (Draft Legislation) को अनुमोदित किया, जिसके अनुसार मालिक ए. आर. पी. सवाओके प्रबन्धक लिए और अपन कारखानोमे काम करनवाल मजदूराको शरणगृह देनके लिए बाध्य थे। १९३८ तक विस्तृत रूपमे प्रधानमन्त्राको प्रतिरक्षा सम्बन्धा सलाह देनके लिए **उद्योगपति परामर्शदाता शूची** (Advisory Panel of Industrialists) की नियुक्त हुई। ये [illegible] हवाई हमला पूवोपाय (ए. आर. पी.) के उपायोसे जा उद्याग एव देशक लिए आवश्यक थ, सहमत हा गय थ। परन्तु आर्थिक अव्यवस्थासे योजना सफल नही हो सको। इस प्रकारका पारिस्थितिमे ब्रिटन सरकारने समस्याओका प्रयोगात्मक ढगसे निपटाना शुरू किया। **मार्च १९३९ में लार्ड प्रीवी सीलने शरणगृह सम्बन्धी छूटके बारमें मान्त्रमण्डलका अनुमोदन प्राप्त किया** जा प्रति कायकताक लिए आधकरका आधक स आधक ८ पाण्ड का छूटक बराबर था। इससे राजकोषको ७० से ८० लाख पाडका खर्च बर्दाश्त करना था।

इसके अतिरिक्त मन्त्रीने यह भी घोषणा की कि फर्मो द्वारा निर्माणकार्यके लिए किये गये व्यय ओर धमन भट्टो के प्रकाशको अन्धकाराच्छन्न करनक तथा अन्य प्रकारके महत्व पूर्ण खर्चोका ५०% भार सरकार वहन करेगी। इससे राजकोषके ऊपर लगभग तीस लाख पौडका अतिरिक्त खर्च आ गया था। लार्ड प्रीवी सील द्वारा **१६ मार्च, १९३९ में की गयी इन दोनों प्रकारकी छुटोंकी घोषणाओंने** जो एक तरफ ७० से ८० लाख पोड़ तक पहुच गयो थो आर दूसरो तरफ आतरिक्त व्ययके रूपमे तीस लाख पौड की थी, **आर्थिक अस्थिरताको समाप्त कर दिया।** इस तरह उद्योग ओर फर्मोकी मूल कठिनाई समाप्त हो गयो ओर वे आवश्यक कार्योको करते हुए आगे बढ़ने लगे। **अप्रैल १९३९ मे नागरिक प्रतिरक्षा विधेयक**

(Civil Defence Bill) **संसदमे पेश किया गया** और वह **उसी वर्षके मई महीनेमें पास हो गया।** इस विधेयकने मालिकोको हवाई हमला पूर्वोपाय (A. R. P.) सेवाओके सगठनके लिए बाध्य कर दिया। इसके साथ ही साथ कार्यकर्ताओको प्रशिक्षित करने, शरणगृहका प्रबन्ध करने और अन्य आवश्यक विषयोके प्रबन्धके लिए भी उन्हे बाध्य किया गया। मई १९३९ मे आयकरके मानक दरके बराबर, विशाल यन्त्र सम्मुच्चयकी रक्षाके लिए ठेकेदारोको अनुदान देनेका निश्चय किया गया। उसी महीनेमे ठेकेदारोको हवाई हमला पूर्वोपाय सम्बन्धी उचित सलाह देनेके लिए विशेष कर्मचारियोके वर्गकी नियुक्ति, ठेका लेनेवाले विभागको करनी चाहिए, तथा निरीक्षण भी करना चाहिए, के प्रस्तावके कारण पहले वायु मन्त्रालय (Air Ministry) और बादमे नौविभाग तथा सभरण एव वायुयान उत्पादन मन्त्रालयो (Admiratity and the Ministries of Supply & Aircraft Production) मे निष्क्रिय वायु प्रतिरक्षा विभागो (Passive Air defence Departments) की स्थापना हुई। मई १९३९ मे यह विचार किया गया कि केवल दो या तीन हज़ार फमे अन्तर्ग्रस्त होगी। जब उद्योग युद्ध सामग्रियोके उत्पादनमे लग गया तो उसकी सख्यामे तीव्रतासे वृद्धि होने लगी और नियत समयमे औद्योगिक हवाई हमलेसे सुरक्षाके पूवापाय (A. R. P.) सम्बन्धी उनकी अधिकतर जिम्मेदारिया इन दो सवाओ (Services) और दो युद्धकालिक नागरिक विभागो (War time Civil departments) पर आ पड़ी। युद्ध प्रारम्भहोनेके पूर्व ही शरणगृह सहिता (Shelters code) फिरसे जारी किया गया और १९३९ मे हवाई हमला पूर्वोपाय (ए.आर. पी.) सगठनके मार्गदर्शन के लिए निकाले गये अकमे बुनियादी सूचनाये पूर्ण की गयी। **इस प्रकार १९३८ के अन्त और १९३९ के बीच तक उद्योग सम्बन्धी हर प्रकारकी महत्वपूर्ण तैयारियां पूर्ण कर ली गयी थी।**

जैसा कि ऊपर कहा गया है लार्ड प्रीवी सील की घोषणामे निरूपित अनुदानको प्राप्त करनेके प्रारम्भिक प्रयासकी तिथि मन्त्रालय द्वारा **३० सितम्बर १९३९** तक निश्चित की गयी थी। पाठकको यह जानकर आनन्द होगा कि युद्धके प्रारम्भ होने तक अधिकतर कारख़ानोने विस्फोट और स्फोटखण्ड–रोधी शरणगृहोकी तैयारी की अच्छी शुरूआत कर दी थी। १२,००० या इसके आसपास के प्रतिशत ९० कारखानोने मन्त्रालयको शरणगृह तथा अन्य कार्यक्रमोको पहले ही पेश कर दिया था।

साराशका कुछ अश लिखनेके बाद मै पाठकोका ध्यान इस बातपर केन्द्रित करना चाहता हू कि म्युनिच समझौता (Munich Pact) पर हस्ताक्षर होनेके समय तक कुछ विशेष कारख़ानो जैसे–– बूटस् (Boots) और इम्पीरियल केमिकल इंडस्ट्रीज (Imperial Chemical Industries) को छोडकर हवाई हमला पूर्वोपाय के सम्बन्धमे उद्योगोने बहुत कम तरक्की की थी। यह सामान्य पिछड़ापन सरकारकी आर्थिक नीतिकी अस्थिरता, यथार्थ तकनीकी सलाहका

अभाव तथा उद्योगमें ही सामूहिक कार्यके अभावके कारण ही था। १९३८ के अन्तमे परिवहन मन्त्री (Minister of Transport) ने रेलवे कम्पनियोके साथ आर्थिक विचार–विमर्शके पूर्ण गत्यावरोधकी सूचना दे दी थी। परन्तु ब्रिटनमे जो प्रयोगात्मक कार्य किये गये उनसे युद्ध छिडनेके पूर्व ही उद्योगसे सम्बन्धित सारी व्यवस्थाएं पूर्ण हो गयी थी ।

स्पष्ट है कि यदि उल्लिखित व्यवस्था समयसे न कर ली गयी होती, तो औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षा (Industrial Civil Defence) सेवाकी बहुत बुरी दशा हुई होती। ससारके अन्य देश अपने मार्गदर्शनके लिए उस देशका उदाहरण अपने सामने रख सकते है। वास्तवमे, मै तो यहाँ तक कह सकता हूं कि ग्रेट ब्रिटेनके सगठन सम्बन्धी कमजोर विषय जिनका वर्णन ऊपर किया गया है, भले ही उनकी सख्या कम हो, दूसरे देशोंके रास्तेमे रोड़ा नही अटका सकते और उद्योगमे नागरिक प्रतिरक्षा सेवाकी उचित योजना संसारके प्रत्येक कोनेमे उचित समयसे बनायी जा सकती है। ऐसा भी हो सकता है कि विभिन्न देशोकी सरकारे, उद्योगोको निर्माणके समय तलघर इत्यादिके उचित प्रबन्धके लिए बाध्य करनेके बारेमे विचार करें. जिसमे कि आपत्कालमे कर्मचारी वर्ग अपनेको असुरक्षित न महसूस करे और शरणगृह बनानेका भय एवं आवश्यकता दूर हो जाये । प्रत्येक देशमे उद्योगके लिए धमन–भट्टी कुडके प्रकाशको अन्धकाराछन्न करनेकी समस्याओको हल करनेके लिए उचित व्यवस्था होनी चाहिए अथवा उसके हल करनेके दूसरे तरीकोका प्रबन्ध उचित समयमे होना चाहिए।

आवश्यकता अनुसार बडे कारखानोसे बाहर आनेवाले प्रकाशको अन्धकाराछन्न करनेके लिए आवश्यक कानूनी कार्यवाही की व्यवस्था होनी चाहिए । उसी तरह अन्य महत्वपूर्ण तरीकोका प्रबन्ध भी उचित समयमे होना आवश्यक है । कार्यकर्ता-ओको नागरिक प्रतिरक्षामे प्रशिक्षित करनेकी व्यवस्था भी यथोचित समयमे ही होनी चाहिए। जैसा कि इग्लैडमे हुआ, उद्योगोने युद्धारम्भके पूर्व हवाई हमला पूर्वोपायके परीक्षणकी ओर बहुत मनोयोगसे ध्यान नही दिया । वहाँ आवश्यक सामग्रीके अभावपूर्णकी भी कठिनाई थी। उस समय यह समस्या खड़ी हो गयी थी कि प्रशिक्षणके लिए आवश्यक सामग्रियोको स्थानीय पदाधिकारी प्रदान करे अथवा उद्योग स्वयं ही उसका प्रबन्ध करें। इस प्रकारकी सभी समस्याए विकसित एव अन्य देशोमे उचित समयमे ही हल हो जानी चाहिए। और वहाँ औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षाके बारेमे भी उचित रीतिसे विचार होना आवश्यक है।

इग्लैण्डमे, गृह कार्यालय विद्यालय (Home Office School) एव कर्मचारी वर्ग स्कूल (Staff School) द्वारा उद्योगोके प्रतिनिधियोको प्रशिक्षण दिया गया था, परन्तु इससे कुछ लोग ही प्रशिक्षण प्राप्त कर सके। जब यह

शिक्षा स्थानीय अधिकारियोंकी व्यवस्थामें दी गयी थी, उस समय भी यथोचित सुविधाओंका प्रबन्ध नही हो सका था। इसलिए युद्ध हो अथवा शान्ति, सभी समय इस प्रशिक्षणकी व्यवस्था हर एक देशमें होना चाहिए। नागरिक प्रतिरक्षाको उद्योग दलोंमे अनिवार्य बना देना चाहिए और यह सब उचित समयमे ही होना चाहिए, क्योंकि आपत्कालमें कोई भी देश आवश्यक प्रशिक्षणके प्रबन्धमे सफल नही हो सकता। युद्धके समय यह स्वाभाविक है कि प्रत्येक देश अधिक दबाववाली एव गम्भीर परिस्थितियोंको हल करनेमे ध्यानमग्न होगा और सुरक्षाके तरीकोसे अपने आदमियोंको उचित प्रशिक्षण न दे सकेगा जो आधुनिक ढंगके संग्रामके लिए बहुत आवश्यक है।

किसी भी भूमिकी आम जनता, सरकार, उद्योग और सभी जीवित प्राणियो के लिए नागरिक प्रतिरक्षाका महत्व ऊपर लिखे अनुसार अच्छी तरह समझा दिया गया है और मुझे विश्वास है कि लोग इस विषयपर उचित विचार करेगे। तीव्र गतिसे विकसित होनेवाले हमारे आजके संसारमे जब दूरियाँ कम हो गयी है, विनाशक अस्त्र दिन प्रतिदिन और अधिक विनाशक होते जा रहे है, जहाँ कोई भी अपने देशके अस्तित्वके बारेमें निश्चित रूपसे कुछ नही कह सकता, यह आवश्यक है कि नागरिक प्रतिरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षणकी महत्ता स्वीकार की जाय और नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओ (Civil Defence Services) के सगठन एव योजनाको ठीक समयमे पूर्ण किया जाय। सयुक्त राज्य अमरीका (U. S. A.) मे राष्ट्रीय नागरिक प्रतिरक्षा कार्यक्रमकी सफलताके लिए औद्योगिक सहयोग आवश्यक एवं महत्वपूर्ण माना गया है। वे राजधानीय क्षेत्र जो उस देशमें नागरिक प्रतिरक्षा कार्यकर्ताओ द्वारा 'शोचनीय लक्ष्य क्षेत्र' (Critical Target Areas) घोषित किये गये है, वे उद्योग एवं अमरीकन कार्यकर्ताओके सकेन्द्रणके कारण निश्चित रूपसे चिन्तनीय है।

नागरिक प्रतिरक्षा आणविक परीक्षण कार्यक्रमोमे उद्योगका सहयोग, साधारण नागरिक प्रतिरक्षाका विकास है। तकनीकी सूचनाओका देना ही अमरीकामे उद्योग द्वारा सहयोग माना जाता है यह सहयोग स्वय उद्योगोके बचावके लिए भी आवश्यक है और इससे उसका उत्पादन उच्चकोटिका हो सकता है। इससे उद्योगके अधिकारियोको आणविक अस्त्रोके प्रभावका अनुभव भी प्राप्त होता है।

नागरिक प्रतिरक्षा आणविक परीक्षण कार्यक्रमोमे उद्योगोका सहयोग १९५३ की परम्परासे प्रारम्भ हुआ। 'परीक्षणका सम्पूर्ण उद्योग क्षेत्र' (Industry Portion) भाग लेनेवाले अमरीकन उद्योगोके खर्चपर ही आयोजित हुआ था इसका उल्लेख करना भी उचित होगा कि १९५३ के प्रथम परीक्षणने ही परीक्षण–कार्यक्रमोमें उद्योग एव सरकारके सहयोग सम्भाव्यताकी पुष्टि कर दी थी।

केन्द्रीय नागरिक प्रतिरक्षा प्रशासन (Federal Civil Defence Administration) के एक प्रकाशनसे, जिसका मै इस विषय की जानकारी प्राप्त

करनेके लिए ऋणी हूँ और जिसे **परिचलन सुत्र** (Operation Cue) कहा जाता है, १९५५ के वसन्त कालमे सयुक्त राज्य अमरीका के आणविक ऊर्जा आयोग (Atomic Energy Commission) द्वारा प्रकाशित आणविक परीक्षण कार्यक्रमसे, मुझे यह मालूम हुआ है कि १५० से अधिक उद्योग संस्थाएँ, सस्थान और कम्पनियाँ नागरिक प्रतिरक्षा तकनीकी परीक्षण–कार्यक्रम और प्रयोग क्षेत्रीय अभ्यासमे भाग ले रही थी।

भाग लेनेका यह कार्य, उद्योग द्वारा विधेयकके लिए पूर्ण खर्च वहन करने जिसमे निर्माण एवं विधेयक अधिकारियोकी व्यवस्था, किसी उद्योग द्वारा विधेयक को सामान एव भौतिक चीजोका पहुँचना जिसमे उनकी विशेष रुचि हो, भी सम्मिलित थे, की प्रवर्तकतासे विस्तृत हुआ था। इसी स्रोतमे यह भी मालूम हो जायगा कि इसमे १०० मे अधिक उद्योग भाग ले रहे थे।

सयुक्त राज्य अमरीका की नागरिक प्रतिरक्षा योजनामे उद्योगके अत्यधिक महत्वके बारेमें ससारको विश्वस्त करनेके लिए ऊपरका विवरण बहुतही पर्याप्त है।

यह उन उपायोके अतिरिक्त है, जिन्हे उद्योगकी सुरक्षा एव कल्याण या सुधार के लिए स्वीकृत करना चाहिए, जैसा कि इस अध्यायके पूर्वोल्लिखित परिच्छेदोमे वर्णित है।

– अध्याय १६ –

शिक्षा और जनताके कर्तव्य

जनता की शिक्षा



चित्र ६८
जनता की शिक्षा

शत्रुके बमवर्षकका उद्देश्य किसी विरोधी जनसख्यापर अपनी प्रेषक सरकारकी इच्छाको आरोपित करना ह । इसके प्रयोग का उद्देश्य है

अधिक भय पैदा करना, प्रतिदिनके आर्थिक जीवनको पंगु बनाना और संचार –साधनों एवं महत्वपूर्ण औद्योगिक प्रतिष्ठानोंको ध्वस्त करना। केवल वह जनसख्या जो प्रतिरक्षा, आत्मानुशासन और स्वावलम्बन आदिमे सुसगठित है, उस नीति (Policy) को मात दे सकती है। शरणगृह, गैस–त्राण (Gas-mask), दमकल (Fire-brigade) और डाक्टरी सेवाए तो उपरिसंरचना मात्र है। यदि नीव ही नही है, तो उसका पतन हो जायगा और इसकी बुनियाद प्रशिक्षित व्यक्तिगत गृहस्थी है।

किसी हवाई हमलेके विरोधमे लडनेमे शिक्षित जनता श्रेष्ठतम अस्त्र है।

कर्तव्य

(१) गलतफहमी पैदा करनेवाली अफवाहे न फैलाये।

(२) शत्रुको सहायता पहुँचानेवाली बाते न करे।

(३) गप्प और अफवाह फैलाना बन्द करे, क्योकि ये चिन्ता और मानसिक क्लेषका कारण होती है।

(४) यदि कोई आक्रमण हो, तो अफवाहोंको न सुने, केवल अधिकारियोंसे ही आज्ञा ले। उदाहरणके लिए, अपने स्थानसे तब तक न हटे, जब तक कि आपको ऐसा करनेके लिए किसी सुपरिचित व्यक्ति द्वारा न कहा जाय।

(५) फौजी गतिविधियोके विषयमे कभी बात न करे। कारखानों, हवाई अड्डो, प्रतिरक्षा चौकियो और शिविरोकी स्थितिको प्रकट न करे।

(६) हवाई हमलेसे क्षतविक्षत स्थल या उससे हुए नुक़सान के विषयमे भले ही आपको जानकारी हो, पर उसे दूसरे से न कहे।

(७) बहुतसे लोग भयावह रूपमे बाते करते है और वे उन बातोंके ख़तरेको महसूस भी नही करते। बुद्धिमत्तापूर्वक उन्हे इगित कीजिये कि वे जो कुछ कह रहे है, उसे अनकहा ही रहने दिया जाय।

(८) यदि कोई व्यक्ति अफवाह फैलाना शुरू करता है, तो एक पुराना लिफाफा ले लीजिए और वह जो कुछ भी कह रहा है उसे लिखना शुरू कर दीजिए।

(९) दुतरफा प्रश्न या प्रति प्रश्न (Cross-question) के उपायका पालन करे. "क्या वस्तुतः आपने इसे देखा है ?"

"नही।"

"तो फिर किसने देखा है। ?"

"मै नही जानता। मुझसे किसीने कहा है।"

"आपसे किसने कहा है ?"

"अब तो मुझे याद नही है।"

(१०) यदि आप किसी ऐसे व्यक्तिको जानते है, जो अफवाहोको फैलाकर चिन्ता और दु:ख उत्पन्न करनेकी आदत बना चुका है और जो लगातार अटल भावसे बाते कहता ही जाता है, तो उससे शत्रुको सहायता मिल सकती है, अत: पुलिसको सूचना दे, पर ऐसा केवल तब करें, जब कि और कोई चारा न रहे।

(११) शत्रुके बमोके विध्वसके समय यदि आप गलीमे हो, तो अपने पेटके बल लेट जाइए, अपने हाथोको अपने कानोके ऊपर रख ले, अपनी कुहनी को नीचे ज़मीन-पर रखे। उस समय यदि आपको ज़रा भी अवकाश मिले, तो भारी दिमागी चोट (Concussion) प्रभावको कम करनेके लिए अपने दातोके मध्य अपना रूमाल रख ले।

(१२) यह जाननेका प्रयत्न करें कि "क्या होनेवाला है?" और जब वह घटित होने लगे तो ठीक ढ़गसे कैसे काम किया जाय?" ऐसी स्थितिमे आपके घायल होनेकी सम्भावना दस हज़ार मे केवल एकही है।

(१३) जब हवाई हमलेकी सूचना सुनायी पड़े अथवा तोप या गिरते हुए बमकी आवाज सुनायी दे तो फौरन अपनी रक्षाके लिए छिप जाना चाहिए चाहे हमलेकी चेतावनी हो या न हो।

(१४) जो व्यक्ति ऐसे सकटके समय अपने घरमे या उसके समीप हो, तो उसे शरणगृहमे सामान्य रूपमे अपने आश्रितोके साथ स्वय चले जाना चाहिए। हवाई हमले को चेतावनी के समय यदि आप सड़क पर हो तो घर भागने का प्रयत्न न करे जब तक आपका वहा ५ मिनट के अन्दर ही पहुचना सभव न हो।

(१५) जब बम गिर रहे हो, तब गलीमे फस जानेकी अपेक्षा, आप किसी असुरक्षित मकानमे रह सकते है।

(१६) दीवालोके पीछे, बालकनीके नीचे, तहखाने (Basement) मे, दरवाज़ेमे और छत्रो (Arch Ways) मे रहकर उड़नेवाले बमके धात्विक टुकड़ो और मलबोसे अपनी आशिक रक्षा कर सकते है। पर किसी ठोस पदार्थ, जैसे किसी मकानकी दीवालसे अपने शारीरिक सम्पर्कको सदैव बचाकर रखे।

(१७) विस्फोटके पूर्व, धरतीको भेदनेवाले बमके मामलेमे उससे व्युत्पन्न ज्वाला-मुखीके नट बमके उड़नेवाले टुकड़ोके उड़नेके मार्गको ऊपरकी ओर सीमित करनेमे प्रवृत्त होते है और यहा तक कि किसी ऐसे बमके मामलेमे भी जो धरती के भीतर धसने के पहले ही फटता है धरती के निकट तुलनात्मक रूपमे सुरक्षा अधिक है। अतएव आपको खडे रहनेकी अपेक्षा बैठ जाना चाहिए और बैठनेकी अपेक्षा लेट जाना चाहिए।

(१८) पच मार्गियो (Fifth Column Activities) की क्रियाओका और उनकी पराजयवादी बातोका सफाया (Stamp-out) कर दीजिए। इसके लिए साहस रखिए और आप जिनपर पंचमार्गीके रूपमे संदेह करें उन पर निकटसे पहरा रखे और प्रत्येक अफवाह का उसके मूल स्रोतसे पता लगायें।

(१९) प्रत्येक व्यक्तिको निकटतम सरक्षको (Warden) के नाम और पते और वार्डनकी रिपोर्टवाली चौकीकी स्थितिका ज्ञान होना चाहिए।

(२०) आपको अपने स्थानीय "हवाई हमला सावधानी, सगठन (A. R. P. Organisation) की अच्छी तरहसे जानकारी होनी चाहिए।

(२१) हवाई हमलेके दौरान और वस्तुत सकटके क्षणोमे हर समय यह आवश्यक है कि शान्ति रखे और पहलेसे ही प्राप्त उचित विषयके ज्ञानसे कामोको बडी ही शीघ्रतासे करें।

निषेध

(१) आप जो कह रहे है, उसके विषयमे तटस्थ या अपक्षपाती न बने। असावधानीसे की गयी बातोसे जानका जोखिम रहता है।

(२) इसे न भूले कि आपको सकटके क्षणोके लिए प्रस्तुत रहना ही है।

(३) अपने मनको बाहर हो रहे हवाई हमलेके दृश्यको देखनेके लिए प्रलोभित या आकर्षित न होने दे। रक्षावरण लेनेके स्थानपर द्वारके बाहर रहना या खिडकीके पास खडा रहना खतरनाक है।

(४) इसे न भूले कि एक हवाई हमलेके पश्चात् लम्बे अवकाशके बाद पुन हवाई हमले हो सकते है अथवा यह भी हो सकता है कि काफी लम्बे अरसे तक रात्रि और दिन दोनो समय लगातार हमले होते रहे।

(५) इसे न भूले कि हवाई हमलेके सभी अस्त्रोका स्वय उनके ही द्वारा प्रयोग किया जायगा। अथवा राष्ट्रके युद्धप्रयत्नका सर्वाधिक स्थान भ्रंश करनेके लिए और जनताके मनोबलको धमकीसे गिरानेके लिए प्रभावकारी रूपसे उनका प्रयोग किया जायगा।

(६) इसे न भूले कि "होमगार्डस्" आपकी सहायताके लिए तैनात है, लेकिन आपको उनकी सहायताके लिए अनावश्यक पुकार नही करनी चाहिए।

(७) छतरीधारी सैनिकोके उतरनेकी सम्भावनाकी उपेक्षा न करे। उनके विषयमे सावधान रहे। आवश्यक सावधानी रखे और निर्धारित आदेशोके अनुसार काम करें।

(८) किसी भी हवाई हमलेके विरोधमे आवश्यक सावधानी रखनेकी बातको न भूले। आपको सावधानीकी व्यवस्था अब और जब भी जरूरत हो तब करनी चाहिए।

(९) यदि कही अग्नि भडक उठे, तो दमकलके भरोसे बैठे मत रहिये। उसे तुरन्त बुझानेका प्रयत्न कीजिए।

(१०) यदि आप किसी खास मामलेमे प्रथमोपचारकी कार्यविधिसे अनभिज्ञ है, तो कृपया प्रथमोपचार प्रदान न करे।

(११) मृतकोके विषयमे अधिक चिन्ता न करे। पर घायलो और मलबेके नीचे दबे हुए लोगोका विशेष ध्यान रखे।

(१२) बचाव दलकी जहाँ तक हो सके, प्रत्येक सम्भव तरीकेसे सहायता करनेमे अपने उत्तरदायित्वका त्याग न करे। पर आपको ऐसे कार्य अधिकारी व्यक्तियोके आदेशोके अन्तर्गत ही करने चाहिए।

(१३) भयकर विस्फोटक अथवा अग्निदाहक बमसे निपटनेके सामान्य उपायोको याद करना न भूले।

(१४) यदि ऐसा क्षण आ जाय कि आपके बच्चोको अधिक सुरक्षित स्थानपर निष्क्रमण (Evacuate) करना हो, तो इस कार्यमें कोई कठिनाई उपस्थित न करे।

(१५) इसे न भूले कि जब हवाई हमलेके खतरेकी सूचना देनेवाला भोपू बजाया जाय, तो आपको तुरन्त शरणगृहमे जाना ही होगा अथवा यदि यह सम्भव न हो तो अपने ही घरमे रक्षावरण ले।

(१६) किसी हवाई हमलेके पश्चात् नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओको यदि आप सहायता प्रदान नही कर सकते, तो उनके मार्गमे कटक (Nuisance) बननेका प्रयत्न न करे।

(१७) इसे न भूले कि सकट काल मे अनुशासन (Discipline) अत्यन्त प्रमुख वस्तु है।

(१८) प्रत्येक प्रौढ व्यक्तिको अग्नि बम और तज्जन्य परिणामी अग्नि (Resultant Fire) का सामना करनेके उपायोसे सुपरिचित करना न भूले। प्रत्येक व्यक्तिके कर्तव्योका निर्धारण पहलेसेही कर दे।

(१९) अभिसपात या बम गिरनेकी स्थितिमे अन्दर रहना न भूले।

(२०) अभिसपात या बम गिरनेकी स्थितिमे खाने पीने और चीजोको छूनेके सिलसिलेमे असावधान न हो। इस प्रसगमे इस पुस्तकमे दिये गये आदेशोका पालन करे।

(२१) अपने कमरेमे खिडकियो, द्वारो और तरेडो या दरारो (Crevices) तकको बन्द करना न भूले, जिससे कि रेडियो –सक्रिय धूलि इसमे प्रवेश न कर सके। नाभिकीय अस्त्रोके अभिसपातकी स्थितिमे आपकी सुरक्षाके लिए विनिर्मित किसी विशेष शरणगृहके अभावमे यह सावधानी आवश्यक है।

जनता के कर्तव्य

आधुनिक युद्धमे शत्रुके विरोधमे लड़ाईमे शिक्षित जनता सर्वोत्तम अस्त्र है। अतएव जनताका यह कर्तव्य है कि वह हवाई हमलेके विषयमे और उनसे बचनेके लिए आवश्यक सावधानियोके विषयमे पूर्ण जानकारी रखे :

(१) (अ) अब

(ब) जब मौका पडे।

(२) (अ) जब सकटकाल आसन्न और भयावह (Immment) रूपमे उपस्थित हो।

(ब) जब हवाई हमलेके खतरेकी सूचना मिल जाय।

(स) हवाई हमलेके दौरान ।

(द) जब यह सूचना मिल जाय कि हवाई हमला समाप्त हो गया।

जहाँ तक हवाई हमलेकी प्रकृतिका सम्बन्ध है, हम अपने पाठकोका ध्यान इस पुस्तक मे दिये गये पृष्ठ ३४० के ऊपर के पैरे ग्राफ की ओर आकर्षित करना चाहते है ।

जनताको यह जानना चाहिए कि प्रतिरक्षा शत्रुके यन्त्रोंके पहुचनेकी बातसे अवगत नही हो सकती ओर इसीलिए जो सावधानी बरती जाय, वह अवश्यमेव इस प्रकृतिकी हो कि उससे समस्त सभावित घटनाओ (Eventualities) का सामना सफलतापूर्वक किया जा सके। किसी विशिष्ट प्रकारके आक्रमण—बमवर्षक आक्रमण, के परिणामस्वरूप सभावित क्षतिका परीक्षण करनमे हमे यह समझ लेना चाहिए कि वस्तुतः यह रूप जीवन आर अगके विरोधकी अपेक्षा लोगोको तन्त्रिका (Nerves) क अधिक विरोधम होता है। दरअसल जनसख्या एक बार भय, आतकक माध्यमस मनोबलहीन हो जाय, तो मृतकाकी अपेक्षा वे जीवित ऐसे व्यक्ति शत्रुक लिए वस्तुतः आधक उपयोगी होते हैं ।

भयातकके विरोधमे औपचारिक उपायके रूपमे जनताको भीड़—भाड़भरे शहरोको छोड़कर अधिक सुरक्षित क्षेत्राको की ओर जाना चाहिए। बच्चो, बूढ़ो, बीमार और पीड़ितो और गर्भणी स्त्रियोको एसा ही करना चाहिए। उन्हे हवामार तोपोके गोलो और बम गोलोंके गिरनकी भदकताका ज्ञान रखना चाहिए ओर शरणगृहकी व्यवस्था इस प्रकारसे करनी चाहिए कि काम मे कमसे कम रुकावट पड़े। उन्हे व्यर्थ आलसी की भाति बैठ रहनको अपेक्षा व्यस्त रहनेका प्रयत्न करना चाहिए। उन्हे अफ़वाहोके प्रतिकारको भी जानना चाहिये।

जनता के योग्य सावधानी की बातें

(१) (अ) **अब** (१) निश्चित कीजिये कि कोन सा स्थान सर्वोत्तम शरण-कक्ष होगा। अपने परिवार और उन लोगोके लिए, जिनकी सुरक्षाके लिए आप उत्तर-दायी है, इसको सुनिर्मित करनेकी योजना बनानी शुरू कीजिए।

(२) अग्नि बमो द्वारा उत्पन्न अग्निके विरोधमे सावधानियो का ध्यान-पूर्वक अध्ययन करे। इस सम्बन्धमे जनताको पानीके उपायोके द्वारा उनसे निपटनेके लिए सम्भव रूपमे अधिकसे अधिक व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

(३) रात्रिमे अपने घरोको पूर्णत. अधकारमय बना देनेके लिए प्रस्तुत रहिये।

(४) सोचिये कि क्या आप बच्चो, असमर्थों और अधिक उम्रवाले लोगोंको अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित स्थानमे भेज सकते है ?

(५) अपने जिलेके लिए "हवाई–हमले" मे सावधानीकी व्यवस्थाओंके विषयमे पूर्ण जानकारी प्राप्त कर ले और उपस्थित प्रसगके लिए आदेशोको नोट कर के रख ले।

(१) (ब) **अवसरके अनुरूप** प्राप्त होनेयोग्य सूचनाओ और आदेशोके अध्ययनके अनन्तर आप जिन साधनोको आवश्यक समझे, उन्हे एकत्र कर लेना चाहिए। शरणगृहोको जिनका हमे उपयोग करना है तैयार करके सुन्दर और उपयुक्त रूपसे रखना चाहिए। अन्तिम आदेश उन सबको दिया जाना चाहिये जो आपके साथ रहेगे।

अपने शरणकक्ष का चयन कैसे करें ?

इसका निर्माण अत्यन्त सुदृढ़ होना चाहिए। वहाँ पहुँचने और बाहर निकलनेमे आसानी होनी चाहिए। प्रवशमे काफी दूरीपर इसमे एक अलगसे बहिर्गमन द्वार भी होना चाहिए। इसम यथासम्भव कमसे कम खिड़कियाँ रखनी चाहिए जो श्रेयस्कर रूपमे किसी तग गली अथवा खाली दीवार या किसी भवनके सामने हो। यदि इसे दोनो ओरसे बद किया जा सके, तो किसी भीतरी गलियारेके रास्तेसे एक सुन्दर शरण-कक्षका निर्माण किया जा सकता है। अध.कोष्ठ (Celler) या तहखाना (Basement) शरणगृह सर्वोत्तम है। सबसे ऊपरके महलेके नीचेवाले किसी महल के किसो भी कमरेका प्रयोग किया जा सकता है।

ससक्त अथवा बाहरकी ओर कमरेमे बगलसे कुछ दूरीपर खुलनेवाली खिड़कियो वाले कोनके भागको दखल कर लीजिये। प्रत्येक व्यक्तिके लिए कम से कम २० वर्ग फीट स्थान चाहिए क्योंकि यह बिना सवातन (Ventilation) के उस कमरेमे १२ घंटो तक पूर्ण सुरक्षाके साथ रहनेमे उन व्यक्तियोको समर्थ बनायेगा। अन्तत. गलीमे दौड़ने (जैसा कि द्वितीय विश्व युद्धमे एक हमलेके दौरान रगूनके लोगोने किया था) की अपेक्षा शरणगृहके रूपमे कोई भी कमरा अधिक उपयुक्त है।

आवश्यक वस्तुओको पहले ही एकत्र कर लेना चाहिए। इनमे मोमबत्ती, दियासलाई, हथोड़ा या कीले (Nails), कैंचियाँ, पुराने अख़बार, बादामी अथवा भूरा पैकिग का कागज़, साफ रेक (Racks), विद्युत टार्च, प्रथमोपचार पूर्ति (First aid Supplies), ताश तथा घरमे खेले जानेवाले अन्य खेल, ग्रामोफोन, सुइयाँ, पुस्तके आदि हो सकते है। असमंजस (Suspence) की अवधिमे जनताको व्यस्त रखना चाहिए और इसीलिए मनोरजनके साधनोकी महत्ता है। इन सबके अतिरिक्त पानी और सुरक्षित भोजनकी भी व्यवस्था होनी चाहिए। भारत वर्षमे अनेक कामोमे चनेका सुझाव दिया जाता है।

कमरे की सुरक्षा कैसे करें ?

(१) खुली हुई खिडकियोंको बालूके बोरो अथवा कीचडकी दीवालसेरूंध दें।

(२) जहाँ कही भी वातायन काच (Window Panes) हो, उन्हें पारदर्शी और अज्जलनशील (Non-inflammable) पदार्थोके साथ भीतर से बन्द कर देना चाहिए।

यहाँ तक कि भूरे कागज़ी पट्टियो (Strips) पुराने लिनेन, पुरानी मच्छरदानी के कपड़ेके टुकड़ोको विस्फोट और बम-विस्फोटमे उडनेवाले टुकड़ोसे बचनेके लिए प्रयुक्त किया जा सकता है।

(३) मलवापातकी मारको वहन करनेमे कभी छत पर्याप्त मज़बूत न हो, तो उन्हे लकड़ीके स्तम्भो (Props) मे सहारा देना चाहिए और उन्हे पुनर्दृढ़ीकृत भी किया जा सकता है।

(४) लकडीके सामानोको अग्नि-निरोधक रग पोतकर सुरक्षित बनाया जा सकता है।

(५) आग लगने के ख़तरे को कम करने के लिए मकान को आग पकड़नेवाली वस्तुओंसे खाली कर दीजिए।

(६) पानी से भरी हूई बाल्टियाँ तैयार रखिए तथा जहाँ संभव हो पानी पहूचानेबाले (Striup Pumps) का प्रबध रखिए।

(७) सूखी बालू और मिट्टी बालटियो मे भर कर तैयार रखे तथा एक कुदाला जिसमे कि लम्बा डंडा लगा हो साथमे रखिए।

शरणगृह :- बम की सीधी मार से बचाव की बहुत कम सभावना है। जनता जो सुरक्षा प्राप्त कर सकती है वह सिर्फ स्फोट और आच्षण (Suction) तथा उड़नेवाले टुकड़ो तथा मलवापात से हो सकती है। शरणगृह युद्ध क्षेत्रों मे पड़ने वाले देशो जिन पर निरन्तर रात-दिन आक्रमण हो सकते है, मे बनाए जाते है। इनके अलावा हमे ध्यान रखना चाहिए कि खाइयाँ भी अच्छी सुरक्षा प्रदान कर सकती है। ये किस प्रकार की हो यह इस बात पर निर्भर है कि पानी ज़मीन मे किसी जगह पर कितनी गहराई पर है। यह सबका कर्तव्य है कि शरणगृह तैयार रखे और यह क़ायदा बन जाना चाहिए कि हरएक नई इमारत मे तहखानो का बनना अनिवार्य हो। इसमें नाभकीय आक्रमण के समय रेडियो-सक्रिय-धूलि से बचाव की सावधानी होनी चाहिए।

खाई शरणगृह :- (छ : व्यक्तियो के लिए)

(१) यह किसी इमारत से कमसे कम २० फुट दूरी पर होना चाहिए।

(२) खाई की सतह भूमि की सतह से ६ फुट नीची होनी चाहिए।

[३] नीचे इसकी चौडाई ३ फुट ६ इंच और ऊपर ४ फुट ६ इंच होनी चाहिए।

[४] यह तीन भागो मे बॉटी जाती है :–

[अ] १० फुट लम्बा शरणगृह भाग (Shelter Chamber)

[ब] प्रवेशद्वार ढका हुआ हो, साथ ही एक ढलुआँ गैस आवरण हो जो कि एक लकड़ी के परदे के सहारे टिका हुआ हो, यादि यह अतिरिक्त कार्यवाही आवश्यक हो।

[स] ३ फुट लम्बा प्रवेश द्वार हो, जिससे एक सीढ़ी के सहारे शरणगृह तक पहुँचा जा सके। प्रवेश द्वार के उपर एक लकडी का आवरण अथवा कूट द्वार (Trape Door) भी होना चाहिए ताकी बारिश से डचाव हो सके।

(५) प्रवेश द्वार फर्शको सुदृढ़ बनवाना चाहिए, आधार स्तम्भ या जस्तेदार लोह–चादरोसे सुदृढ़ करवा देना चाहिए।

(६) छत भी जस्तेदार, लोह–चादर या आधार–स्तम्भसे मज़बूत बनायी जा सकती है और खाई और आच्छादित प्रवेश द्वारको भी छत से ढकना चाहिए।

(७) उसके बाजुओं और छतके ऊपर पर्याप्त मिट्टी फैला देनी चाहिए। प्रवेश द्वारके ऊपर मिट्टी गिरनेका विरोध करनेके लिए आच्छादित प्रवेश द्वारको बालूसे भरे बोरो द्वारा ऊपर तक ढक देना चाहिए।

(८) यदि छह फुटकी गहराईके पहले पानीकी सतह मिल जाय, तो भूमिको उसकी सतहसे ऊपर उठाकर अपेक्षित अतिरिक्त ऊँचाई प्राप्त की जा सकती है।

(९) छह व्यक्तियोके लिए बनानेवाले शरणगृहपर सामान्य रूपसे ८० (या ९०) रुपये अथवा १५ रुपये प्रति व्यक्ति लागत आनी चाहिए।

(१०) प्रत्येक अतिरिक्त व्यक्तिके लिए खाईकी लम्बाई १ फुट ६ इंचके हिसाबसे बढ़ा दी जानी चाहिए।

जहाँ कही भी बहुत बडी संख्यामे लोगोके लिए खाइयोका रखना आवश्यक हो, वहाँ उन्हें एक विशिष्ट रूपमे बनाना चाहिए और उसके लिए **खुली हुई तिरछी बांकी खाइयां** (Open Zig-zag Trenches) सर्वोत्तम है, क्योकि बम विस्फोटके विरोधमे ये खाइयां सर्वाधिक मात्रामे सुरक्षा प्रदान करती है।

अग्निबम (Incendiary Bombs)

जनताको यह जानकारी रखनी ही चाहिए कि इन बमोसे कैसे निपटा जाय। उन्हें विशेष रुपसे जल–प्रणालीकी ओर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

भयकर विस्फोटक आघातके साथ प्रयुक्त अग्नि बमके एक प्रकारके विरोधमे पश्चिम (West) मे बालू प्रणालीने स्वयंको अधिक उपयोगी सिद्ध नही किया है ।

कुओको जितना अधिक सम्भव हो, उतना साफ रखना चाहिए। लोगोकी श्रमकी महत्ताकी प्रशंसा करनेकी आदतको वर्धित करना चाहिए जिससे कि कोई भी व्यक्ति एक स्थानसे दूसरे स्थान तक पानी ले जाने या पानी खीचकर अपने पड़ोसीकी मदद कर सके ।

नाभिकीय आयुध (Nuclear Weapons)

इस प्रसगमे पाठकोंको इस पुस्तक का "प्रक्षेपास्त्र, परमाणु बम और उदजन बम" शीर्षक अध्याय पढ़नेकी सलाह दी जाती ह । उसके अतिरिक्त पाठकोको यह भी सलाह दी जाती है कि वे इस पुस्तकके अध्याय आठ के "रेडियो–धर्मीयुद्ध" से सबन्धित भाग को भी पढ़े । जनताके लिए एक अत्यन्त महत्व पूर्ण कार्य यह है कि वह आक्रमणके समय भीतर रहे और वह तब तक ऐसा करे जब तक कि आक्रमणके समाप्त होनेका स्पष्ट सिगनल नही दे दिया जाता । उस स्थितिमे आवश्यक सावधानी बरतना प्रत्येक व्यक्तिका कर्तव्य है । सबको अपना गैस–आवरण और विशेष सुरक्षा सूट तत्काल प्रयोगके लिए तैयार रखना चाहिए ।

प्रथमोपचार

लोगो को जितना भी हो सके प्रथमोपचार के सम्बन्ध मे ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। इसके लिए इस पुस्तक के दसवे अध्याय से आवश्यक जानकारी प्राप्त हो सकती है ।

लोगोको याद रखना चाहिए कि सकटके क्षणोमे विशेषज्ञोके उपयोगके ऊपर सदैव निर्भर नही रहा जा सकता, क्योकि वे अन्यत्र भी व्यस्त हो सकते है । यदि सम्भव हो, तो प्रथमोपचारको तो प्रत्येक शिष्ट नागरिकको अपना कार्य व्यापार बना लेना चाहिए और इसीलिए जनताको व्यर्थमे ज़रा भी समय बरबाद नही करना चाहिए और जहाँ कही या जब कही अवसर प्राप्त हो, तो उन्हें उससे लाभ उठाते हुए प्रथमोपचारका ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

(२) (अ) जब संकट क्षण प्रमुख रूपमें उपस्थित होता है ।

लोगोको शाति रखनी चाहिए और अपने निर्णय एव विवेकका उपयोग करना चाहिए। उन्हे अपनी प्रत्येक वस्तुको क्रमसे रखना चाहिए, जिससे कि वे कमसे कम क्षतिमे किसी भी भयंकर विपत्तिका सामना करनेके लिए प्रस्तुत रह सके। उन्हे सरकारके आदेशोका पालन करना चाहिए और अफवाहोमे ज़रा भी विश्वास नही रखना चाहिए जिससे कि उनके मनोबल प्रयत्नों और भविष्यके सगठनोके प्रयत्न सहयोगकी दिशामे गतिमान हो । जनताको स्वयको शिक्षित बनानेमे अवसरको नही खोना चाहिए और इसके लिए जितना अधिक सम्भव हों, उतना अधिक जानकर लोगो की सहायता दी जानी चाहिए।

(ब) हवाई हमले की सूचना मिलने पर

लोगोंको निकटतम शरणगृहोंमें जाना चाहिए। यदि कोई शरणगृह न मिले, तो उन्हें अपने घरों में पनाह लेना चाहिए। मशीनगनोंकी गोलियोंके आक्रमणके विरोधमें उनसे पूर्ण सुरक्षा मिलती है। यदि वे सुदृढ़ हों, तो उनसे बम-विस्फोट और बमोंके उड़नेवाले टुकड़ोंके विरोधमें भी पर्याप्त सुरक्षा प्राप्त हो सकती है।

गलियों और सड़कोंको बिलकुल साफ कर देना चाहिए, और जनता के कार्योंमें तत्पर रहनेके अतिरिक्त दुसरी सवारियोंको रोक देना चाहिए। सवारियों या गाड़ियोंको भलीभांति "पार्क" करना चाहिए, जिससे कि दमकलको स्वतन्त्र गतिमें कोई व्यात उपस्थित न हो, और अन्य कार्योंपर तैनात गाड़ियों जैसे रोगिवाहन आरक्षी-कारको भी स्वतन्त्र गतिमें कोई बाधा न पड़े। यदि रात हो, तो किसी भी इमारत में रोशनी नहीं दिखाई देनी चाहिए।

प्रमुख तंग गलियोंमें जब कभी ऐसा सम्भव हो, तो गाड़ियोंको बगलकी गलीसे जानेके लिए इंगित किया जाना चाहिए। घोड़ोंको गाड़ीके धुरों (Shafts) से अलग ले जाना चाहिए और उन्हें बगलकी गली या अन्यत्र कहीं, जहांपर वे दीवार या इमारतसे प्राप्त होने योग्य सर्वोत्तम सुरक्षा पा सकें, आलोक स्तम्भ (Lamp-post) से बांध देना चाहिए। घोड़ों और बैलोंको उनकी अपनी घोड़ा गाड़ियों या बैल गाड़ियोंकी पट्टियोंमें बांध देना चाहिए, पर उन्हें दमकल बम्बे (Fire-hydrants) से कभी नहीं बांधना चाहिए, क्योंकि अग्नि-काण्ड की स्थितिमें उनकी आवश्यकता पड़ सकती है। शरणगृह या शरणकक्षमें जाते समय जनताको ऊपर वर्णित वस्तुओंके विषयमें आवश्यक व्यवस्था कर लेनी चाहिए। उस संकटपूर्ण स्थितिमें जबकि बाहर जाना अवरुद्ध हो जाय, आवश्यक वस्तुओंको लानेके अतिरिक्त पानी और भोजनके लिए पूरी व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

(स) हवाई हमले के समय

यदि आपके पड़ोसमें या समीप ही कहीं भयंकर विस्फोटक या अग्नि बम गिरा है, तो लोगोंका कर्तव्य है कि वे आपसमें एक दूसरेकी सहायता करें और वहां संरक्षक (Warden) को भी सूचना दे देनी चाहिए। यदि छोटे अग्नि बम गिराये गये हैं, तो बहुत सम्भव है कि कोई बम इमारतकी छतपर भी हो गिरा हो और ऐसी स्थितिमें उस इमारतमें रहनेवाले लोगोंको सूचित करना उनका कर्तव्य है। उन्हें वहां नहीं ठहरना चाहिए और उन्हें बम और उसके कारण लगनेवाली किसी भी अग्निको बुझानेमें अपनी पूरी सहायता देनी चाहिए।

यह प्रत्येक व्यक्तिका कर्तव्य है कि व्यर्थमे आतक न पैदा करे। यदि आप स्वयं भयातकित होने है, तो आप दूसरोको भी ऐसा ही बनानेके उत्तरदायी होगे।

किसी विशिष्ट क्षेत्रमे काम करनेवाले सरक्षकको रपट – केन्द्रमे क्षतिकी सूचना भेजनी पड़ती है।

घायलो अथवा मलबोके नीचे दबे हुए लोगोको कोई भी वैयक्तिक सहायता देनेके पहले ही उसे ऐसा करना चाहिए। जनताका कर्तव्य है कि वह व्यर्थमे उसे सहायता और उपचारकी प्रार्थनाओसे परेशान न करे। जनताको हवाई हमलेसे सावधानी और सुरक्षा सेवाओको वहाँ जितनी जल्दी सभव हो उतनी जल्दी बुलाने और पहुचनेमे सहायता करनी चाहिए। जब दुर्घटनास्थलपर हवाई हमलेसे सावधानीकी सेवाओके पहुंचनेके पहले सहायता प्रदान करनेके निमित्त वार्डन पहुचता है, तो जनताके उत्तरदायी लोगोका कर्तव्य है और उतना ही उत्तरदायित्व दूसरे सरक्षको, आरक्षियो और होम–गार्डोका भी है, कि ये सब क्षति – स्थलके चारो ओर एक घेरा (Cordon) बनानेमे, आग बुझानेमे, घायलोकी सुश्रुषा करनेमे, क्षति–भवनोमेसे लोगोको बाहर निकालनेमे अथवा किसी अविस्फोटित भयकर विस्फोटकबम आदिके पाससे लोगोको हटानेमे उसकी सहायता करे। तब तक लोगोको घेरा बनाये रखनेमे सहायता पहुचानी चाहिए जब तक कि हवाई हमलेसे [illegible] अपना काम पूर्ण नही कर ले। यातायातको दूसरी गलियाको ओर मोड़कर व्यवस्थित बनाना चाहिए।

(द) हवाई हमले की समाप्ति की सूचना मिलने पर

लोगोका अपने शरणगृहसे बाहर आ जाना चाहिए और इस बातका पता लगाना चाहिए कि क्या क्षति हुई है? यदि उनका घर नष्ट हो गया है, तो उस स्थितिमे उन्हे अपने किसी दोस्त या रिश्तेदारके यहाँ चला जाना चाहिए और इसके लिए पहिल से ही व्यवस्था कर लेनी चाहिए। यदि वे अपने मित्रो अथवा रिश्तेदारोके यहा व्यवस्था करनेमे असमर्थ हो और घरकी बर्बादीके पश्चात उनके सोने और खाने की व्यवस्था न हो तो किसी सकटकालीन विश्राम केन्द्रमे जाना सर्वोत्तम है। वहाँ उन्हे भोजन और आवश्यक विश्रामसे सम्बद्ध सहायता मिलेगी और उनकी तमाम समस्याए भी हल हो जायेगी। वहा गृहविहीनोके लिए नये आवासोकी व्यवस्था होगी और उनके दोस्तो और रिश्तेदारो को खोजनेके लिए व्यवस्था भी की जायगी। इसके लिए जनताको केवल उपयुक्त अधिकारियोके पास जाना होगा। घरोकी क्षतिके लिए मुआवजेके अतिरिक्त फर्नीचर और अन्य आवश्यकताकी वस्तुओके लिए भी उन्हे सहायता प्रदान की जा सकती है। यदि लोग घायल होगे तो प्रथमोपचार चौकियो और अस्पतालोमे उनका उपचार किया जायेगा। उस सम्बन्धमे जनताका यह कर्तव्य होगा कि वे इस बातका ध्यान रखे कि प्रथमके अनन्तर "अगले मोर्चे" पर लड़नेवालोकी सुश्रूषा और उपचार पहिले किया जाय।

— अध्याय १७ —

स्थायी उपायके रूपमें पाठशालाओं, महाविद्यालयों और विश्व-विद्यालयोंमें नागरिक प्रतिरक्षापर शिक्षाको मान्यताकी आवश्यकता

आजका विश्व भौतिक रूपमें बहुत बदल चुका है और आधुनिक युद्धने लड़ाईके पुराने साधनोंको पूर्णतः अप्रचलित तथा अनुपयोगी बना दिया है। आजके युद्धमें यह नहीं होता कि पुष्ट और सुदृढ़ शरीरवाले व्यक्ति मैदानमें जायं और निर्बल व्यक्तियोंको मार डालें। इसी प्रकार सख्या का भी महत्व नहीं है। हमारे युगमें युद्धमें नाभिकीय ऊर्जा और वैमानिक श्रेष्ठताका महत्व है। आप कल्पना कर सकते हैं कि केवल एक परमाणु बमका विस्फोट पाँच लाख व्यक्तियोंके समूहको अल्पसमयमें ही मार डालनेके लिए काफी है। विगत पीढ़ियोंके समय में ऐसी बात कभी सोची भी नहीं जा सकती थी।

और इस समय सबसे बुरी बात जो सामने आयी है, वह यह है कि नाभिकीय अस्त्र अपनेको केवल तथाकथित लड़ाईके मैदान तक ही सीमित नहीं रखता। 'तथाकथित' शब्दका उपयोग यह दर्शानेके लिए किया गया है कि वास्तवमें लड़ाईका मैदान होता ही नहीं। आधुनिक युद्धकी सीमाएं गृह–मोर्चेपर रहेंगी। ऐसी स्थितियोंमें यह आवश्यक हो गया है कि नागरिक प्रतिरक्षामें शिक्षा प्राप्त करनेके लिए लोग सकटके समयकी प्रतीक्षा न करें, क्योंकि ऐसा सकट बिना सूचना दिये कभी भी आ सकता है और ऐसा समय आयेगा ऐसी प्रतीक्षामें रहना हमारे लिए उचित नहीं है। वस्तुतः उस समय प्रशिक्षणके लिए समय नहीं मिलेगा और इस लिए यह आवश्यक है कि ऐसी आकस्मिक स्थितिके लिए उचित समयपर नागरिक प्रतिरक्षाके प्राथमिक सिद्धान्तोंकी शिक्षा अवश्य देनी चाहिए। अतएव हमें यह सोचना है कि किस प्रकार बहुत अच्छे ढगसे इस समस्याको हल किया जा सकता है। 'नागरिक प्रतिरक्षा–विशेषज्ञ विद्यालयों (Civil Defence Specialists Schools) के द्वारा, जो कि किसी भी देशमें महत्वपूर्ण स्थानोंपर स्थापित किये जा सकते हैं, उच्चपदोंपर स्थित लोगोंको प्रशिक्षित करना एक सरलतम उपाय है। परन्तु इन विद्यालयों में कितने व्यक्तियोंको प्रशिक्षित किया जा सकता है? विभिन्न देशोंकी विशाल जनसख्यापर विचार करते हुए तो ऐसे विद्यालयों द्वारा केवल कुछ व्यक्तियोंको ही प्रशिक्षित

किया जा सकता है । विशेषज्ञ विद्यालयोंमे सीखकर ये व्यक्ति अपने राज्योंमे स्थापित केन्द्रो या पाठशालाओ द्वारा कुछ प्रशिक्षण दे सकते है । ऐसे केन्द्र या पाठशालाए प्रत्येक राज्यमे उसकी स्थितिके अनुसार स्थापित की जा सकती है । मेरा दृढ़ मत है कि यह काफी नही होगा । इस सम्बन्धमे इंग्लैण्डमे जो कुछ हुआ था, वह उदाहरणके रूपमे प्रस्तुत किया जा सकता है। 'होम–आफिस स्कूल्स' (Home Office Schools), 'स्टाफ स्कूल्स' (Staff Schools) और इनके साथ ही स्थानीय अधिकारियो द्वारा सचालित विद्यालयो के द्वारा किये गये समस्त प्रयासोके बावजूद प्रशिक्षण–सुविधाए अपर्याप्त पाई गयी थी और प्रशिक्षणके लिए अन्य अनेक प्रकारकी व्यवस्थाओकी आवश्यकता समझी गयी थी । अतएव हमे सोचना पड़ेगा कि किस प्रकार बहुत अच्छे ढंगमे हम एक देशके निवासियोको सरलता और सुविधाके साथ नागरिक प्रतिरक्षाके प्राथमिक सिद्धान्तोका ज्ञान सुलभ करा सकते है । मेरे मतानुसार यह तभी हो सकता है जब हम विद्यालयो और विश्वविद्यालयोंमे अध्ययनके हेतु नागरिक प्रतिरक्षाको एक पाठक्रमातिरिक्त (Extra Curricular) विषय बना दे ।

लगभग तीन वर्ष पूर्व, जिसका प्रतिवेदन (Report) मेरे सामने है, ब्रिटेनने नागरिक प्रतिरक्षामे भर्ती और प्रशिक्षण–सुविधाओमे वृद्धि की थी । उस समय लदनके कार्यालयसे जो नवीनतम आकड़े निर्मुक्त किये गये थे वे यह प्रदर्शित करते है कि इग्लैण्ड, वेल्स और स्काटलैण्डके औद्योगिक तथा व्यावसायिक केन्द्रोमे १,८५,४७८ नागरिक प्रतिरक्षा स्वयसेवक तथा ७११० नागरिक प्रतिरक्षा प्रशिक्षक थे । १९६९ के प्रतिरक्षा–प्रतिवेदन (Report) के अनुसार ब्रिटिश श्वेतपत्र (White Paper) द्वारा इस बातपर अधिक बल दिया गया था कि नागरिक प्रतिरक्षाका प्रमुख कार्य एक ढाचेके अन्तर्गत वर्तमान सगठन और साधनोको बनाये रखना और कभी भी आवश्यक हो ता अधिक विकसित करना है । उपर्युक्त प्रतिवेदन (Report) मे आगे चलकर यह बताया गया है कि जब तक स्वयसेवकोकी लगातार भर्ती नही होती और भर्तीके लिए ऐसा उचित वातावरण निर्मित नही किया जाता कि जो नाभिकीय युद्धमे नागरिक प्रतिरक्षाके योगदानके महत्वको प्रदर्शित कर सके तब तक इस ढाचेको न तो कायम रखा जा सकता है और न इसका विकास ही किया जा सकता है ।

उपर्युक्त विवरणसे यह स्पष्ट है कि उस देशमे स्वयसेवको और अन्य व्यक्तियोके प्रशिक्षणको कितना महत्व दिया गया था । १६ मिलीमीटरका एक नया सवाक चलचित्र (Film) "नागरिक प्रतिरक्षा संक्रिया नियन्त्रण" (Civil Defence Operation Control) भी तैयार किया गया था । इसकी

अवधि ४७ मिनिटकी थी और यह दो भागोमे था । प्रथम भागमे ब्रिटेनमें नागरिक प्रतिरक्षा के संगठन और कार्य दिखाये गये है । दूसरे भागमे नाभिकीय आक्रमणके पश्चात क्षेत्र–नियन्त्रण केन्द्र (Area Control Station) के द्वारा की जानेवाली कार्यवाहीका विवरण है । उपर्युक्त उद्देश्यके लिए ब्रिटेनमे जो ऐसे चलचित्र प्रदर्शन किये गये थे, उनका अनुसरण, लाभदायक रीतिसे विभिन्न देशोकी पाठशालाओ और वहाँके विद्यालयो तथा विश्व विद्यालयोमे इस विषयपर प्रशिक्षण देनेके लिए किया जा सकता है।

दूसरा उदाहरण मेरे सामने **स्वीडेन** का है। वहाँ नागरिक–प्रतिरक्षा सम्पूर्ण प्रतिरक्षा–प्रणालीका यथार्थरूपमे एक महत्वपूर्ण अग है। जिसमें आज की विचारधारामें प्रसारके अनुसार सैनिक प्रतिरक्षा, नागरिक प्रतिरक्षा, आर्थिक प्रतिरक्षा और मनोवैज्ञानिक प्रतिरक्षा नामक विषय सम्मिलित है । इन सबमे नागरिक प्रतिरक्षा उस देशमे अत्यन्त महत्वपूर्ण है । एक पत्रकारके विवरण के अनुसार स्वीडेन निवासियोने नागरिक प्रतिरक्षाके लिए स्वय मतदान किया है। १९३८ मे वहाँ स्वीडेनकी ससद (रिक्सडाग Riksdag) द्वारा एक विधि (Law) पारित कर यह नियम बना दिया गया था कि स्वीडेनका प्रत्येक नागरिक चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, नागरिक प्रतिरक्षा मे सेवाके लिए उत्तरदायी है । वस्तुत: प्रतिरक्षामे सेवाके लिए यह राष्ट्रव्यापी अनिवार्य भर्ती थी। इससे केवल सैनिक सेवामे रत तथा रोगी और अशक्त व्यक्ति ही मुक्त किये गये थे। उस देशमे इसे कितना अधिक महत्व दिया गया था, यह अनिवार्य भर्ती की उपर्युक्त विचारधारासे स्पष्ट हो सकता है। पाठक यह सरलतासे समझ सकता है कि यह विचार कितना प्रभावपूर्ण होगा कि पाठशालाओ, महाविद्यालयो और विश्व विद्यालयोमे नागरिक प्रतिरक्षाके शिक्षणको स्थायी रूप दिया जाय जिससे कि केवल युवक ही नही, जिन्हे किसी भी समय इस भारको वहन करना पड़ सकता है, बल्कि वे भी जो कि बहुत छोटे है, भविष्यमे यदि कोई आकस्मिक घटना हो तो उसके लिए पूर्णत: तैयार हो जाय।

अब मै पाठकोका ध्यान इस बातकी ओर आकर्षित करना चाहता हू कि नागरिक प्रतिरक्षाके आवश्यक ज्ञानका प्रसार करनेकी दिशामे सयुक्त राज्य अमरीका अपने विद्यालयो और महाविद्यालयोका उपयोग करनेके लिए क्या करता है। इस सम्बन्धमे अपने मार्गदर्शनके लिए नागरिक तथा प्रतिरक्षा सगठनके कार्यालय अध्यक्ष (President Office of Civil Defence Mobilization) के कार्यपालिका कार्यालय (Executive Office) द्वारा प्रकाशित १९३९ के वार्षिक प्रतिवेदनकी यहाँ चर्चा करता हूँ।

प्रशिक्षण तथा शिक्षाका उल्लेख करते हुए यह प्रतिवेदन एक ऐसे नेतृत्वकी व्यवस्थाकी चर्चा करता है जो कि राष्ट्रके बचे रहने और उसके पुन: निर्माणके

लिए तथा इस उद्देश्यकी प्राप्तिके लिए शासनको सभी स्तरोपर सहायता पहुँचानेके लिए आवश्यक प्रशिक्षण तथा शिक्षा प्रत्येक व्यक्तिको देगी । नागरिक तथा प्रतिरक्षा सगठनके कार्यालयने इन ओजस्वी प्रशिक्षण और शैक्षणिक गतिविधियोको चालू रखा था ।

"**विद्यालय और विद्यालयीन कार्यक्रमों**" शीर्षकके अन्तर्गत उपर्युक्त वार्षिक प्रतिवेदनमे यह उल्लेख है कि २००० मे अधिक व्यक्ति ८७ पाठ्यक्रममे भाग ले रहे थे। इस प्रकार नागरिक और प्रतिरक्षा सगठन कार्यालयके विद्यालयोमे पूर्ण उपस्थितिसख्यामे बढकर १८,२९७ हो गयी थी। उस समय बेटल क्रीक मिचिगन (Battle Creek Mich.) कर्मचारी महाविद्यालय (Staff College) और रेडियोलाजिकल प्रतिरक्षा विद्यालय (Radiological Defence Schools) और ब्रूक लाइन एन वाय. मे (Brooklyn N. Y.) पूर्वीय प्रशिक्षक प्रशिक्षण-केन्द्र (Eastern Instructor Training Centre) कार्यरत थे।

कर्मचारी महाविद्यालय (Staff College) और उसके प्रशिक्षकोका पर्यटनकारी दल (Travelling team of Instructor) दोनो नागरिक प्रतिरक्षाके तत्व, प्रतिरक्षा गतिशीलता सगठन, सकटकालीन व्यवस्था तथा कार्यवाही और विशेष वर्गोके लिए धार्मिक मामलो, उद्योग और परिवहनआदि विषयोके पाठ्यक्रमकी व्यवस्था करते थे ।

सयुक्त राज्यकी राष्ट्रीयशरण-गृह नीतिको कार्यान्वित करनेके लिए आवश्यक विकिरण – विज्ञान सम्बन्धी (Radiological Monitoring) प्रतिरक्षा पद्धतिकी व्यवस्थामे सहायता देनेके लिए विकिरण-विज्ञान-सम्बन्धी सचारेक्षण (Radiological Monitoring) मे प्रशिक्षित ७३७ प्रशिक्षकोको सम्मिलित करते हुए नागरिक और प्रतिरक्षा गतिशीलता सगठन कार्यालय द्वारा (Office of Civil and Defence Mobilization) विकिरण – विज्ञान – सम्बन्धी प्रतिरक्षामे (Radiological Defence) ९०९ व्यक्ति प्रशिक्षित किये गये थे । इसके अतिरिक्त नागरिक तथा प्रतिरक्षा लामबन्दी सगठन कार्यालय (OCDM) द्वारा उच्चतर पाठशालाओ, महाविद्यालयोमे प्रशिक्षण सामग्री दी गयी तथा उनके विज्ञान पाठ्यक्रममे विकिरण-विज्ञान-सम्बन्धी (Radiological) प्रतिरक्षाकी शिक्षाको सम्मिलित कराने तथा विकिरण-विज्ञान-सम्बन्धी यन्त्रोके वितरण द्वारा सचरेक्षण (Monitoring) योग्यताको सुदृढ बनानेमे सहायता दी गयी थी।

नागरिक प्रतिरक्षा और प्रतिरक्षा सगठनके सिद्धान्तो के अध्यापन के लिए राष्ट्रकी पाठशाला – पद्धतियोके प्रमुख साधनोको जानने तथा

उनका उपयोग करनेके लिए नागरिक तथा प्रतिरक्षा गतिशीलता सगठन कार्यालयने सयुक्त राज्यके शिक्षा–कार्यालय तथा अन्य बडे राष्ट्रीय शैक्षणिक संगठनोके साथ अपना कार्य चालू रखा था। १९५९ के उपर्युक्त प्रतिवेदनमे उल्लेख है कि शिक्षा कार्यालयने **"नाभिकीय विज्ञान अध्यापन सहायक और गतिविधियाँ"** ("Nuclear Science-Teaching Aids and Activities") **नामक** एक सक्षिप्त पुस्तिका तैयार कर उच्चतर पाठशालाओके विज्ञान शिक्षकोमे वितरित कराया था। नागरिक प्रतिरक्षा के दूसरे खास शिक्षक वर्गो से सम्बन्धित प्रकाशनो की भी सब विद्यालयो मे बहुत माग बढ गई थी। शिक्षा सम्बधी अमरीकी परिषद, (American Council on Education), राष्ट्रीय सगठनके सुरक्षा शिक्षण आयोग, Commission of Safety Education of the National Education Association), अमरीकी व्यावसायिक सगठन (American Vocational Association) प्रौढ शिक्षा सगठन (Adult Education Association) और राष्ट्रीय पाठशाला मण्डलोके (National School Boards Association) सगठनकी सहायतामे ऐसे प्रकाशनोको विकसित किया जाता था। इस प्रकारके प्रकाशनोकी पाण्डुलिपियाँ जो कि राजकोषीय वर्ष (Fiscal Year) मे प्रकाशित नही हुई थी, पाठशाला अधिकारियोके अमरीकी सगठन की सहायतामे तैयार कर ली गयी थी।

सयुक्त राज्यके शिक्षा–कार्यालयके द्वारा नागरिक -- प्रतिरक्षा गतिशीलता सगठन कार्यालयने (OCDM) प्रौढ शिक्षा कार्यक्रमोको विकसित करनेका कार्य किया था। इस उद्देश्यके लिए चार राज्योमे अनुबन्धकी वार्ता की गयी थी और कथित–प्रतिवेदनके अनुसार अन्य राज्योमे भी इस कार्यक्रमका विस्तार होनेको था। नागरिक प्रतिरक्षा शिक्षाकी प्रौढ कक्षाओको सचालित करनेके लिए और मूलत. राष्ट्रीय शरणगृह नीति और स्वय सहायतामे सम्बन्धित राष्ट्रीय नीतिके पक्षोपर जोर देनेके लिए स्थानीय शिक्षकोको यात्रा करनेवाले प्रशिक्षकोके दलो द्वारा प्रशिक्षित करना था। ये दल प्रशिक्षकोके उसी प्रशिक्षण दलके अन्तर्गत थे।

मै आशा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण विश्वके अन्य समस्त देशोको अत्यन्त उचित तथा ठीक उदाहरणका अनुसरण करनेमे मार्ग दर्शन करेगा और मुझे पूर्ण विश्वास है कि पाठशालाओ, महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयोमे एक स्थायी उपायके रूपमे नागरिक प्रतिरक्षाके शिक्षणको मान्यता प्रदान करनेकी आवश्यकतामे प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित होगा। मेरा यह व्यक्तिगत मत है कि नागरिक प्रतिरक्षाको केवल पाठ्यक्रमातिरिक्त प्रवृत्तियोके विषय रूपमे ही नही बल्कि स्नातक कक्षाओके पाठ्यक्रमके एक महत्वपूर्ण विषयके रूपमे भी मान्यता देकर अमरीकाके समान धनी, शक्तिशाली और महत्वपूर्ण देश इस विषयमे विश्वका और आगे नेतृत्व कर सकता है। उस स्थितिमे इस अथाह समुद्रके समान महत्वपूर्ण और विस्तृत विषयमे अनुसधान-कर पी. एच. डी. और डी. लिट. की डिग्री प्राप्त करनेके लिए बहुतसे छात्र मिल

जाएंगे। ऐसा नेतृत्व उन दूसरे देशोंके लाखों व्यक्तियोंको लाभ पहुचायेगा जहाँ पर प्राप्त साधन इतने अधिक नही है कि जितने संयुक्त राज्य अमरीकाके समान विकसित देशमें है।

एक और उदाहरण, जिसे मै यहाँ देना चाहता हूँ, **रूस** (U S.S.R.) का है। प्रतीत होता है कि वहाँ सोवियत प्रतिरक्षा योजनाओका सशोधन पहले ही १९५८ मे कर लिया गया था। उस संशोधनके निष्क्रमण इत्यादिके प्रश्नको छोड़कर मै यहाँ उस प्रश्नकी चर्चा करना चाहता हूं कि जो उपर्युक्त विषयसे ही बहुत कुछ सम्बन्धित है।

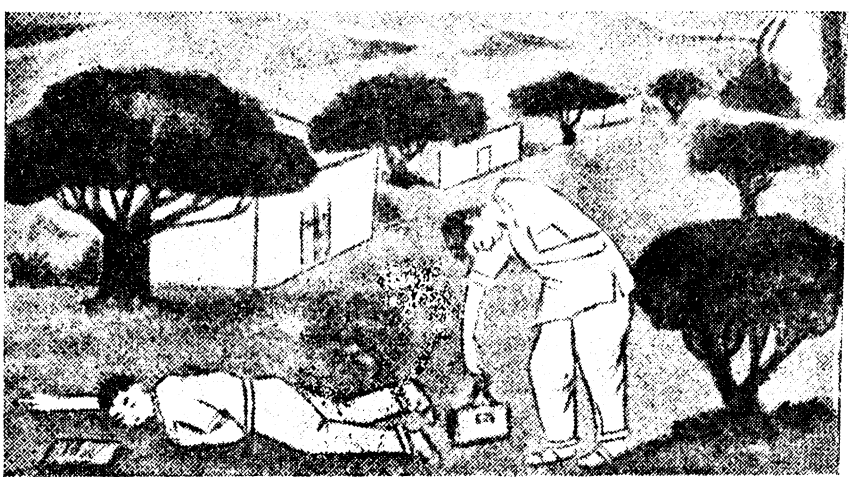
इस सम्बन्धमें मै पाठकका ध्यान शासकीय कार्योकी गृह समितिकी सयुक्त राज्य सैनिक कार्य उपसमितिके प्रतिवेदन (Report of the United States Military Operations Sub- Committee of the House Committee on Government Operations) की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। प्रतिवेदनका अन्य आधा भाग सोवियत सघ से सबधित है। इस प्रतिवेदन मे अन्य बातोके साथ ही यह कहा गया है कि सम्पूर्ण जनसख्याको भाषणा और वास्तविक प्रशिक्षणके पाठ्यक्रमोके द्वारा नागरिक–प्रतिरक्षाके मूलभूत सिद्धान्तोका प्रशिक्षण देनेके लिए रूसमे एक विस्तृत अनिवार्य कार्यक्रम तैयार हो रहा था। इस प्रसगमे यह उल्लेखनीय है कि डोसाफ (DOSAAF) के साथ ही अन्य-साधनोके द्वारा लगभग बीस करोड़ रूस निवासियोको –नागरिक–प्रतिरक्षाका प्रशिक्षण प्राप्त होता है। यह 'डोसाफ' (DOSAAF) एक स्वेच्छिक सगठन है जो अपना कार्य थल सेना, वायुसेना और नौसेना और रेडक्रास सगठन से मिल–जुलकर करता है। सयुक्त राज्य–सैनिक–कार्य–उपसमितिका उपर्युक्त प्रतिवेदन उस सोवियत दावेका भी उल्लेख करता है, जिसके अनुसार १९५५ से लेकर उस समय तक उसके अधिकाश नागरिकोको कमसे कम ३२ घटेका नागरिक प्रतिरक्षा प्रशिक्षण मिल चुका था और उन्हें और अधिक प्रशिक्षण भी दिया जाने वाला था। ऐसे प्रशिक्षणके पाठोमे अल्पसमय के लिए वास्तविक विषैली गैसके विरुद्ध गैस कवच का उपयोग तथा अग्नि–शमन सम्मिलित थे। सामूहिक प्रशिक्षण कार्यक्रमके क्षेत्र और उसकी तीव्रताका सम्भवन यह अर्थ है कि अन्य किसी देशकी अपेक्षा सोवियत सघमे अपेक्षाकृत अधिक लोगोने नागरिक प्रतिरक्षाके मूलतत्वोको जान लिया है।

किसी भी देशके समस्त निवासियोके लिए नागरिक प्रतिरक्षा शिक्षण के महत्वके विषयमे शेष विश्वका इस उदाहरण द्वारा मार्गदर्शन भी होना चाहिए। और इस उद्देश्यके लिए पाठशालाओ, महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयो के अतिरिक्त और कौनसा अच्छा माध्यम हो सकता है?

उपर्युक्त देशोके विशाल क्षेत्रोमे होनेवाले कार्यसे प्राप्त प्रत्यक्ष अनुभवपर आधारित ऊपर दिये गये उदाहरणोके बलपर मुझे यह उल्लेख करनेमे कोई हिचकिचा-

हट नही है कि नागरिक प्रतिरक्षा शिक्षणको पाठ्यक्रमातिरिक्त प्रवृत्तियोंके एक महत्व-पूर्ण विषयके रूपमे मान्यता मिलनी चाहिए। यदि हम तत्वज्ञानियो और प्राचीन लेखकोकी कृतियोको पढ सकते है, यदि हम अध्ययनार्थ विषयके रूपमे विज्ञानके उपायोके विभिन्न प्रकारोका अध्ययन कर सकते है, यदि हम अष्टम हेनरीकी पत्नि-योकी सख्याके विस्तार सहित अध्ययनको समुचित महत्व प्रदान कर सकते है तो अपने अध्ययनके विषयके रूपमे नागरिक सुरक्षाके बारेमे भी क्यो नही हम सोच सकते ? वस्तुतः इस विषयके अध्ययनसे, यदि हम आधुनिक युद्धसे, जो कि जैसा कि सबको ज्ञात है, बिना पक्षपातके और जाति, रंग , वर्ण या स्थानकी परवाह किये बिना लोगोकी हत्या करता है, बचनेके उपाय जान ले तो हम लाखो लोगोकी रक्षा कर सकते है।

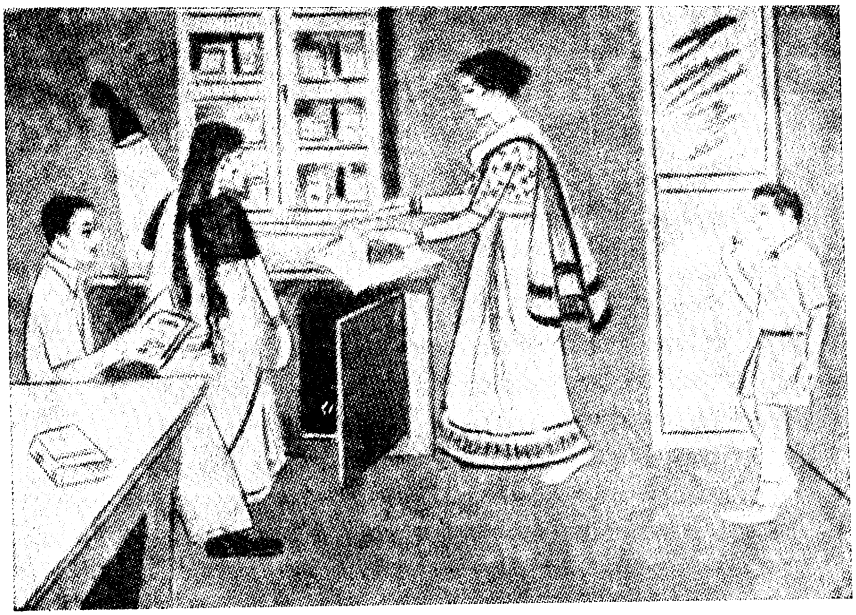
महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयोमे नागरिक प्रतिरक्षा के ज्ञानका प्रसार लड़कोको यह जाननेका अवसर प्रदान करेगा कि यदि हवाई हमला हो तो उन्हे अप-नेको किस प्रकार बचाना चाहिए, यह हवाई हमला चाहे भयकर विस्फोटक या अग्निदाहक या नाभिकीय आक्रमण हो या अन्य किसी प्रकार का आक्रमण हो। यदि अणुबमके उपयोगसे उस समय कि जब उक्त बम विस्फोटके फलस्वरूप विनाशक तत्वोंकी वर्षा हो रही हो और लोग खुले स्थानमे असुरक्षित हो दस लाख व्यक्तियोकी मृत्यु होती हो, किन्तु यदि लोग शरणगृहो या उनके अभावमे दीवालोके पीछे रहें तो इस संख्याके केवल एक अशकी ही मृत्यु होगी। दो चित्र सख्या क्रमाक ६९ और ७० एक ओर अणुबम प्रेरित विनाशक तत्वोकी वर्षाके समय खुले स्थानमे रहने-वाले लोगोपर और दूसरी ओर ऐसे सकटपूर्ण समयमे शरणगृहोमे रहनेवाले लोगोपर पडनेवाले प्रभावोको प्रदर्शित करनेके लिए यहाँ प्रस्तुत किये गये है।



चित्र ६९
विनाशक तत्वोकी वर्षाके समय खुले स्थानमे रहनेवाले लोगोपर प्रभाव।

चित्र संख्या ६९ का विवरण अपने आप स्पष्ट है।

चित्र संख्या ७० उस समयका वर्णन करता है जबकि विनाश तत्वोंकी वर्षाके समय लोग पूर्व–उपाय अपनाते है तथा शरणगृह मे रहते है ––



चित्र ७०

विनाशक तत्वोंकी वर्षाके समय शरणगृहमे रहनेवाले लोगोकी दशा।

उपर्युक्त वर्णनसे यह तथ्य ज्ञात होता है कि यदि लोगोको समुचित प्रशिक्षण दिया जाय तो आकस्मिक सकटके समय वे अपने आपको निश्चय ही बचा सकते है। यदि लोगोको यह प्रशिक्षण उचित समयपर सुलभ हो जाय, तो यह बचाव और भी सर्वोत्तम ढगसे किया जा सकता है और इस उद्देश्यके लिए सर्वश्रेष्ठ माध्यम महाविद्यालय और विश्वविद्यालयमे शिक्षा प्राप्त करनेका समय है। और वे व्यक्ति भी कि जो वस्तुतः महाविद्यालय या विश्वविद्यालयमे प्रवेश नही लेते, उन लोगोके द्वारा बहुत अच्छी तरहसे मार्ग–निर्देशन प्राप्त कर सकते है, जिन्हें इस प्रशिक्षणमें सम्मिलित होनेकी सुविधा प्राप्त हो चुकी है और आधुनिक युगके प्रगतिशील समाजमे जिनकी संख्या काफी अधिक है। उनका नेतृत्व कुटुम्बी, स्थानीय बस्तियो और उपनगरोंको उनके स्थानपर ही प्राप्त होगा तथा समस्त सम्बन्धित व्यक्ति इससे लाभान्वित होगे। लडके किसी भी राष्ट्रके आधार

(Bulwork) होते है और वास्तवमें इन्हें ही प्रशिक्षित करना चाहिए, जिससे कि आधुनिक प्रकारके युद्धके समय वे अपने स्थानके लोगोकी प्रतिरक्षा कर सके। हमारे पास ऐसी शक्ति होनी चाहिए कि जो आवश्यक शस्त्रास्त्रो द्वारा समर्थित हो किन्तु केवल शस्त्रास्त्रोसे युद्धमें विजय नही प्राप्त होती। वस्तुत: महत्व अनुशासनका है। अतएव यह आवश्यक है कि प्रत्येक देशकी पाठशाला वहाँके महाविद्यालय और विश्वविद्यालयके छात्रो और युवकोमे नागरिक प्रतिरक्षा के प्रशिक्षणका प्रसार होना चाहिए।

छात्रों और शिक्षकोमे नागरिक प्रतिरक्षाकी शिक्षाके प्रसारका एक मार्ग लम्बी छुट्टियोकी अवधिमें विभिन्न प्रकारके सम्मेलन है। एक विशेष उदाहरणके स्वरूप मै यहाँ "दि टाइम्स आफ इण्डिया" के नयी दिल्ली ३ फरवरी १९६३ के अंकमे प्रकाशित प्रेस विज्ञप्ति को उदधृत करता हू। उसमे यह उल्लेख है कि ,:--

"विद्यालय प्रतिरक्षा दल योजना"
(School Defence Corps Scheme)
ग्रीष्ममे प्रारभ

नयी दिल्ली, फरवरी ३ -- केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालयने राज्य सरकारोसे ग्रीष्मावकाशमे "विद्यालय–प्रतिरक्षा दल कार्यक्रम" का प्रारम्भ करनेको कहा है। राज्यके शिक्षा विभागोको प्रेषित एक आदेशमे मन्त्रालयके सचिव श्री पी. एन. किरपालने यह संकेतित किया है कि इस कार्यक्रममे जिन क्रियाकलापो और योजनाओकी कल्पना की गयी है, वे पाठ्यक्रमीय कार्यको समृद्धिशील बनायेगी और प्रतिरक्षा–प्रयासमे हाथ बटानेके लिए छात्रो औरशिक्षकोको अवसर प्रदान करेगी। श्री किरपालने सुझाव दिया है कि कार्यक्रमका उत्तरदायित्व वहन करनेके लिए और वार्षिक परीक्षाओके पश्चात तुरन्त ही उसे प्रारम्भ करनेकी दिशामे तैयारियाँ करनेके लिए प्रत्येक राज्यमे एक वरिष्ठ अधिकारीको नियुक्त करना चाहिए। प्रेस–ट्रस्ट आफ इण्डिया।"

इससे यह स्पष्ट है कि ग्रीष्मावकाशमे विद्यालय–प्रतिरक्षा दल कार्यक्रम को उचित स्वरूप ग्रहण करना था।

इसी प्रकार पुनश्चर्या या नवीकरण पाठ्यक्रम (Refresher Courses) भी आरम्भ किये जा सकते है। अभ्यासो तथा प्रदर्शनोके द्वारा नागरिक–प्रतिरक्षा का प्रशिक्षण दिया जा सकता है। सार्वजनिक भाषणो और व्यक्तिगत संगोष्ठियो इत्यादिके द्वारा इस विषयके विभिन्न पक्षोका अध्ययन भी विद्यार्थियो से कराया जा सकता है।

नागरिक प्रतिरक्षाका विषय इतना व्यापक है कि मानव–जीवनका प्रत्येक पहलू उसमे सम्मिलित है। लड़ाईके मोर्चेपर लडनेवाले व्यक्ति सामान्यतः प्रशिक्षित होते है। अतएव वे ऐसी बहुत सी बाते जानते है जो उन्हें सहायता दे सकती है और बचा सकती है किन्तु जो अपने घरोमे है, उन्हे अपनी रक्षा कर सकना तबतक असभव होगा जबतक कि हवाई हमलेके विरुद्ध सुरक्षाके कुछ प्राथमिक उपाय वे नही जानते। आजका हमारा विश्व एक छोटे परिवारका रूप धारण कर चुका है और यह कोई कभी भी नही जानता कि कष्ट कब तथा किस दिशासे आयेगा।

मैने देखा था कि लदन और ग्रेट–ब्रिटेनके अन्य भागोमे युद्धके प्रारम्भ होते ही लोगोने नागरिक प्रतिरक्षाके लिए अपनी तैयारियाँ आरम्भ कर दी थी। फिर भी इग्लैण्डमे हुए तीव्र युद्ध या तडित–गति (Blitz) के पूर्व हवाई हमलेके विरुद्ध सुरक्षाके लिए वहाँकी जनसंख्याके एक बडे भागको प्रशिक्षित करनेमे काफी समय लग गया था। युद्ध–घोषणाके तुरन्त बाद ही लंदनकी जनपदीय परिषद (London County Council) ने लदनके प्रत्येक भागमे केन्द्रोके खोलनेका प्रबन्ध किया था। इन केन्द्रो का उपयोग लोगोको प्रशिक्षित करने और विभिन्न भागोमे नागरिक प्रतिरक्षा कार्य संगठित करनेके लिए किया गया था। इसके साथ ही सकटोका सामना करनेके लिए रक्षक–सेवाओका सगठन किया गया, अग्निशायक दलके सगठनमे वृद्धि की गयी, उद्धार दलोको उचित स्वरूप प्रदान किया गया, चिकित्सालयोकी सख्या बढ़ायी गयी और प्रत्येक चिकित्सालयमे बिस्तरोकी संख्यामें वृद्धि की गयी। प्रायः प्रत्येक स्थानपर आक्रमणके समय अपनेको तैयार रखनेके लिए लोगोमे अत्यन्त तीव्र गति की क्रियाविधि दिखायी देती थी और यह स्थिति केवल लदनमे ही नही बल्कि युनाइटेड किगडमके प्रत्येक भागमे भी थी। उन्होने जर्मनीके 'किलोएलेक्ट्रॉन बमो (Kilo Electron Bombs) का उपयोग देखा। भयंकर रूपसे विस्फोटक बमोके अतिरिक्त यह बम बहुत ही कष्टदायक था। किन्तु कुछ ही समयमे रूस अपेक्षाकृत एक अधिक साघातिक अस्त्रको सामने ले आया। इसका नाम "मोलोटोव्हकी ब्रेड बास्केट" (मोलोटोव्हकी रोटीकी टोकरी)

(Molotov's Bread Basket) था और इसकी सहायतासे भयंकर विस्फोटक बमोके अतिरिक्त रूसने कई अग्निदायक बमोको भी साथ ही साथ गिराया था। इन समस्त उदाहरणो और अन्य अनेक बातोसे हमे इस तथ्यके प्रति सजग होना चाहिए कि युद्धकी अवधिमे कुछ भी हो सकता है। अतः किसी भी देशके बालकोको हवाई आक्रमणके विरुद्ध सुरक्षाके उपायोका ज्ञान होना चाहिए चाहे वह परम्परागत शस्त्रास्त्रस्त्रोके आक्रमणके विरुद्ध हो या अन्य प्रकारके शस्त्रास्त्रोके विरुद्ध हो।

हमारे युगमे सबसे बुरी चीज़ जो हुई वह नाभिकीय शक्तिका विकास है। इस समय इसका अधिकतर उपयोग विनाशक शस्त्रास्त्रोके निर्माणमे किया जाता है और इस तथ्य ने हमारे जीवनको पहलेसे किसी भी समयकी अपेक्षा इस समय अधिक दु:खदाई बना दिया है। किन्तु यूरोप तथा अन्य देशोने विगत युद्धके कुछ वर्षोमे जो कुछ सीखा वह केवल अग्निदायक और भयकर विस्फोटक बमोके उपयोगके विरुद्ध सुरक्षाके साधनोके बारेमे ही था। परन्तु सबसे बुरी दशा उस समय हुई जबकि विश्वको हिरोशिमा और नागासाकीपर अणुबमके गिरनेका समाचार मिला। इस समाचार ने लोगो को आधुनिक युद्ध की वास्तविकताओ के प्रति सजग कर दिया। फिर भी विश्वने इस दुर्घटनामे भी बहुत कुछ नही सीखा। इनबमोके गिरनेके बाद तुरन्त ही जापानने आत्मसमर्पण कर दिया था। फलस्वरूप जापानी सरकार इस प्रकारके बमोके विरुद्ध सुरक्षाके उपायोके बारेमे कभी नही सोच सकी। इसके अतिरिक्त यह भी एक तथ्य था कि दोनो बम ऊचाई से छोडे गये थे और हिरोशिमा या नागासाकी मे वस्तुतः परमाणु बमकी वर्षा (Fall out) नही हुई थी। ऐसी स्थितिमे यदि कोई अनुभव प्राप्त हुआ होता तो विश्वको कुछ बातोका ज्ञान हो गया होता और वर्तमान पीढी के लोगोके लिए भी ऐसे बमोके उपयोगके विरुद्ध निश्चित रूपमे सुरक्षाके वास्तविक उपायोका जानना सम्भव हो जाता। फिर भी पोलैण्डके प्रोफेसर राटब्लेट (Prof. Rotblat) जो कि इंग्लैण्डके अणुशक्ति आयोगके सदस्य थे, तथा इग्लैण्ड, अमरीका और रूसके अन्य वैज्ञानिकोके अनुसधानो के बारेमे जानकारी प्राप्त करनेकी हमे सुविधा है। यह जानकारी हमे बताती है कि इस पुस्तकके विभिन्न स्थानोमे दिये गये सुझावोके अनुसार यदि हम केवल आवश्यक पूर्व उपाय करनेके बारेमे जानते है, तो बहुतसे व्यक्ति बचाये जा सकते है। फिर भी यह किसी भी प्रकारसे सरल कार्य नही है। अतएव जब स्थिति ऐसी है तो इन चीज़ोको ठीक रीतिसे समझनेके लिए हमे क्यो नही प्रयास करना चाहिए? और यह तभी सम्भव है कि जब विद्यालयो, महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयोमे यह विषय पाठ्यक्रमातिरिक्त विषय बना दिया जाय। ऐसी स्थितिमे नागरिक प्रतिरक्षा समस्याओके प्रति लोग विचार करेगे और तब बहुत-सी बाते सरल हो जायंगी। मेरा मत है कि यह उचित समय

है कि जब नागरिक प्रतिरक्षाके विषयको एक स्थायी उपायके रूपमे मान्यता देनेके विषयमें हमारे देशको सोचना चाहिए, क्योकि आजका बालक केवल इस युगके लोगोंके भाग्यका बचानेवाला ही नहीं है, बल्कि वह भावी पिता भी है।

मेरी यह सिफारिश केवल अपने देश तक ही सीमित नही है परन्तु एशिया, सयुक्त राज्य अमरीका, रूस, यूरोप और विश्वके प्रत्येक भागमे स्थित सभी देशोके लिए समान रूपसे प्रभावकारी है । आधुनिक युद्धके प्रभावोकी स्थिति इस विश्वके प्रत्येक देशको समान रूपसे प्रभावित करती है। पुरानी पीढी, जो कि आज विश्वके किसी भी भागमे उत्तरदायी पीढी है, दस या बीस वर्षोके बाद मर सकती है । उसके बाद विद्यालय, महाविद्यालय, और विश्वविद्यालयके वर्तमान छात्रोको उत्तरदायित्व वहन करना पडेगा । अतः यह आवश्यक है कि आधुनिक युद्धमे नागरिक प्रतिरक्षाके उपायोको जान लिया जाय। विद्यालयो, महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयोमे सुलभ साधन ऐसी शिक्षा देनेके लिए सर्वश्रेष्ठ है । इन सस्थाओमे इस विषयको कमसे कम पाठ्यक्रमातिरिक्त विषयके रूपमे मान्यता देनी चाहिए चाहे उसे अनिवार्य विषय बनानेकी आवश्यकता न हो।

इस प्रसंग मे यह स्पष्ट कर देना है कि इस विषयके महत्वका क्रम विभिन्न स्थितियोके अनुसार भिन्न–भिन्न हो सकता है। उदाहरणार्थ, विद्यालयों मे १५ या १६ वर्षकी अवस्थाके दलको आधुनिक प्रकारके युद्धके सम्बन्धमे प्राथमिक ज्ञान दिया जा सकता है, क्योकि यह सर्वथा उचित है कि सामान्य स्थितिमे इस कठिन विषयको लेकर ऐसे बच्चोके मनमे गड़बड़ी पैदा नही करना चाहिए। परन्तु महाविद्यालय और विश्वविद्यालयके छात्रोके बारेमे, जो कि काफी बड़ी आयु के होते है, नागरिक प्रतिरक्षाकी शिक्षा एकीकृत ढगसे दी जा सकती है।

चूँकि नागरिक प्रतिरक्षाका सम्बन्ध मानवीय जीवनके प्रत्येक पक्षसे है, जिसमें कि अग्नि, विस्फोटक पदार्थ, जीवाणु–युद्ध, नाभिकीय शस्त्रास्त्रसे लेकर सामूहिक विनाशके लिए मानवीय युक्ति द्वारा निर्मित प्रायः किसी भी प्रकारके शस्त्रास्त्रके विरुद्ध सुरक्षा से संबन्धित है, अतएव इस विषयपर शिक्षा देनेकी कोई सीमा नही हो सकती। फिर सभी लोगो के अनुभवके द्वारा कुछ प्राथमिक उपाय प्रकाशमे आये है। ये अनुभव ऐसे लोगोके द्वारा प्राप्त हुए है, जिन्होने उन देशोमे कार्य किया है, जहाँ युद्ध चल रहा था अथवा ये अनुभव उनसे भी प्राप्त हुए है, जिन्होने उन देशोके बारेमे बहुत कुछ अध्ययन किया है कि जहाँ युद्ध चल रहा था। इनमे वे सभी सम्मिलित है, कि जो दूसरोके द्वारा शिक्षित किये गये थे और जो इस विषयको जानते है। ऐसे व्यक्ति इस विषयमे शिक्षा देनेके लिए निश्चयही उस समय उपयोगी हो सकते हैं कि जब विभिन्न सरकारो के द्वारा इस विषयको उचित मान्यता दे दी जाय। इस प्रकार केवल अतीतके अनुभव ही नही बल्कि

विश्वके विभिन्न स्थानोमे इस विषयपर किये गये अनुसंधान भी प्रकाशमे लाये जा सकते है। आज स्थिति यह है कि सभी चीजें मिश्रित और अव्यवस्थित है और अनेकों बार अनेकों व्यक्ति सम्बन्धित विषयपर अधिक जानकारी के बिना भी अपने ही तरीकेसे बात करते पाये जाते है। परन्तु समयकी पुकार है कि हमें वैज्ञानिक आधारपर चीज़ोको समझना चाहिए जिससे कि जब कष्टकर समय उपस्थित हो तो हमे प्रायश्चित करनेका अवसर न रहे।

आधुनिक युगमे किसी भी देशका उद्योग उस देशका मेरूदण्ड है। यह तो सभी जानते है कि यदि उसके प्रति उचित चिन्तन न किया जाय तो युद्ध के समय वह शक्तिहीन हो सकता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्तिको यह सीखना चाहिए कि यदि हवाई हमला हो अथवा नाभिकीय अस्त्रो द्वारा जीवनको अस्तव्यस्त और शक्तिहीन करनेका मामला भी हो तो किस प्रकार सारी व्यवस्था करनी चाहिए। इस हेतु महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयोंमे नागरिक प्रतिरक्षाका शिक्षण देनेका महत्व स्वत. स्पष्ट है।

महाविद्यालयो और अन्य संस्थाओंमे एन. सी. सी. सगठन होनेकी दिशामे हमारा देश सौभाग्यशाली है। हमारी सस्थाओमे स्काउट (बालचर) और नगर सैनिक (Homeguards) भी है। इन समस्त संस्थाओमे नागरिक प्रतिरक्षाके उपायोके प्रशिक्षणको अनिवार्य कार्य बना देना चाहिए। ऐसे सगठनोमे, जो कि राष्ट्रीय जीवनके लिए इतने उपयोगी है, प्रविष्ट होनेवाले छात्र–छात्राओंको यदि नागरिक प्रतिरक्षाके उपायोका समुचित प्रशिक्षण दिया जाय तो सकटकालमे वे अत्यन्त उपयोगी होंगे। विश्वके समस्त देशोकी सस्थाओंमे भी ऐसे संगठन पाये जाते है और मै समस्त सम्बन्धित सरकारोंसे यह जोर देकर आग्रह करता हू कि उपर्युक्त सभी बातोके लिए नागरिक प्रतिरक्षा शिक्षाको एक स्थायी उपायके रूपमे मान्यता देनेकी आज विश्वमे आवश्यकता है।

अनेक देशोंमे शिक्षा विकेन्द्रीकृत (Decentralised) विषय है, परन्तु हमारे युगके आजके सन्दर्भमे केन्द्रको यह देखनेके लिए आवश्यक नियन्त्रण रखना चाहिए कि नागरिक प्रतिरक्षा जैसे विषयमे प्रशिक्षण देनेके लिए आवश्यक धनराशि निर्धारित की जाती है, जिससे कि आपत्तिके आगमनपर किसी गड़बड़ी या आतंकके बिना प्रत्येक वस्तुकी सावधानीसे देखभाल हो सके।

विद्यालयो, महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयोमे इस विषयकी शिक्षाको एक स्थायी उपाय के रूपमे मान्य करनेके पक्षमे उपर्युक्त तथा अन्य अनेक तर्क प्रस्तुत किये जा सकते है। इन तर्कोके आधारपर यह आवश्यक है कि इस सम्बन्धमे समयकी हानि किये बिना तुरन्त उचित कार्यवाही की जाय।

उत्तर अटलान्टिक संधि संगठन (North Atlantic Treaty Organization) इस सम्बन्धमें महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। उनके पास अनेकों अध्ययनदल है और यदि इनमे से किसी एक दल के द्वारा इस समस्यापर विस्तृत रूपमे अध्ययन किया जाय औरयदि शिक्षण सस्थाओमे नागरिक प्रतिरक्षामे शिक्षाको एक स्थायी उपायके रूपमे मान्यता देनेके हेतु आवश्यक कार्यवाही करनेके लिए विभिन्न सरकारोंको यह सगठन निर्देश दे तो इस कठिन कार्यका अधिकाश उचित ढंगमे संपादन हो सकेगा। वे देश भी जो उत्तर अटलाटिक सधि सगठन जिमे सक्षेप मे नाटो (NATO) कहा जाता है, के सदस्य नही है, उपर्युक्त देशो द्वारा जो उचित कार्यवाही की गयी है, उसका लाभ मेरे द्वारा सुझाये गये मार्गोके अनुसार उठा सकते है। सयुक्त राष्ट्रसंघ, UNO जोकि आधुनिक विश्वकी आशा है, इस सम्बन्धमे और भी अधिक उपयोगी हो सकता है।

जनरल के. एम. करिअप्पाने, जिन्होंने इस पुस्तककी प्रस्तावना लिखी है, निम्न उद्धृत प्रकरण मे स्पष्ट रूपसे लिखा है कि –

"मै ईमानदारीसे आशा करता हू कि यह पुस्तक, जो मेरी जानकारीके अनुसार भारतमे अपने प्रकारकी पहली प्रकाशित पुस्तक है, इस देशमे व्यापक रूपसे प्रत्येक व्यक्ति द्वारा पढी जायगी। मेरा विचार है कि हमारे समस्त महाविद्यालयोके छात्रोको पाठ्यक्रमातिरिक्त विषयके रूपमे इसे पढना चाहिए। द्वितीय विश्वयुद्धकी अवधिमे इग्लैण्डमे लेखकको जो महत्वपूर्ण और व्यापक अनुभव प्राप्त हुए थे तथा उसके बादमे उन्होने जो लगातार अध्ययन किया है उनका परिणाम ही यह कार्य (पुस्तक) है।"

उपर्युक्त विवरणमे यह स्पष्ट सकेत मिलता है कि श्री. के. एम. करिअप्पा जैसे अनुभवी जनरल यह सोचते है कि हमारे समस्त विद्यालयोमे पाठ्य क्रमातिरिक्त विषयके रूपमे नागरिक प्रतिरक्षा पर पुस्तक, जैसे कि यह पुस्तक है, पढी जानी चाहिये। अतएव पहले दिये गये अनुच्छेदो (पैराग्राफो) मे वर्णित अन्य तथ्योके अतिरिक्त इस तथ्यकी भी स्थापना हो जाती है कि विद्यालयो, महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयोमे नागरिक प्रतिरक्षाकी शिक्षाको एक स्थायी रूपमे मान्यता देनेकी स्पष्ट आवश्यकता है।

सिफारिशों का संमावेश

(१) केन्द्रीय रूपमे स्थापित नागरिक प्रतिरक्षा सस्थाए तथा स्थानीय अधिकारियो द्वारा स्थापित सस्थाए (यदि ऐसी कोई सस्थाए हो)– ये दोनो मिलकर भी काफी बडी सख्यामे लोगोको नागरिक प्रतिरक्षाके उपायोका प्रशिक्षण देनेके लिए कभी भी काफी नही हो सकती। इसीलिए विद्यालयो, महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयो मे नागरिक प्रतिरक्षा शिक्षणको एक स्थायी रूपमे मान्यता देनेकी आवश्यकता है।

(२) आधुनिक युद्धमे आसन्न आपत्तिकी समुचित सूचना सम्भवत: न मिल सके, अतएव उचित समयपर हवाई आक्रमणके विरुद्ध सुरक्षाके उपायोंका प्रशिक्षण लोगोंको देना चाहिए। इसके लिए हमारे विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय श्रेष्ठ माध्यम है।

(३) केवल इतना ही नही कि एक युवा बालक हमारे समयमे आनेवाली आपत्तिके अवसरपर सहायक हो सकता है, परन्तु वह उस समय और अधिक उपयोगी होगा जब वर्तमान पीढ़ीके अनेक वृद्ध व्यक्ति मर जायंगे। वास्तवमे वह भावी पिता है। इसीलिए यह आवश्यक है कि वह जिस संस्थामे पढ़ता है, उसके द्वारा उसे नागरिक प्रतिरक्षापर शिक्षा देनी चाहिए, क्योंकि ऐसी शिक्षा संकटकालके समय एक बड़ी संख्यामे लोगोकी जान बचा सकती है।

(४) एन. सी. सी. (National Cadet Corps), नगर सैनिक (Homeguards), स्काउट (बालचर) और ऐसे अन्य संगठनोंको जो कि संस्थाओके अंग है, आवश्यक रूपसे नागरिक प्रतिरक्षामें शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

(५) इग्लैण्ड, रूस, संयुक्त राज्य अमरीका, स्वीडेन और विशेषकर जापानमें, प्राप्त अनुभवका विश्वको लाभ उठाना चाहिए और ऐसा करते समय विद्यालयों, महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयोमे नागरिक प्रतिरक्षा की शिक्षाको स्थायी उपायके रूपमे उन्हे मान्यता देनी चाहिए।

(६) चित्र संख्या ६९ बम वर्षा नाभिकीय अभिसंपात (Fall out) के समयमे खुले स्थानोमे रहनेवाले व्यक्तियोपर होनेवाला प्रभाव दर्शित करती है। जबकि चित्र संख्या ७० आणविक बम वर्षा नाभिकीय अभिमपात (Fall out) के समय शरणगृहोमे रहनेवाले लोगोपर होनेवाले प्रभावका उल्लेख करता है। आधुनिक युद्धमे शिक्षणका मूल्य इससे आप ही आप स्पष्ट हो जाता है। विद्यालयो, महाविद्यालयो और विश्व-विद्यालयोंके द्वारा अधिकतम संख्यामें लोगोंको ऐसे पूर्व उपाय अपनानेके हेतु श्रेष्ठ ढंगसे शिक्षित किया जा सकता है।

(७) लम्बी अवधिके अवकाशके समय विश्वके प्रत्येक भागकी उन संस्थाओमे, जहाँ नागरिक प्रतिरक्षा उपायोंकी शिक्षा एक अगके रूपमे सुलभ है, पाठयक्रमोका संगठन करना चाहिए। विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयके छात्रोको प्रदर्शनो तथा अभ्यासोंके द्वारा ऐसी शिक्षा देनी चाहिए।

(८) समस्त विद्यालयो, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयोंमें नागरिक प्रतिरक्षाको पाठ्यक्रमातिरिक्त विषयके रूपमे मान्यता देनी चाहिए।

(९) विश्वमे संयुक्त राज्य अमरीका, युनाइटेड किगडम और रूस जैसे विकसित देशोके विश्वविद्यालयोंको नागरिक प्रतिरक्षा विषयपर पी. एच. डी.

और डी–लिटकी उपाधियो को प्रोत्साहित करना चाहिए। आधुनिक युद्धके वर्तमान विनाशकारी उपायो तथा जनधनकी हानिको घटानेके लिए इस युद्धके विरुद्ध सुरक्षाके उचित उपायोमे अनुसधान कार्योंको गति प्रदान करनेमे इससे बहुत बडी सहायता मिलेगी।

(१०) उन अत्यन्त ताज़े अनुसधान कार्योको, जो कि वर्तमान विश्वमे नागरिक प्रतिरक्षाके सम्बन्धमे किये जा रहे है, उपयोगमे लानेके लिए हर सम्भव उपाय करना चाहिए। यदि नागरिक प्रतिरक्षा विषयको एक स्थायी उपायके रूपमे महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयो द्वारा मान्यता मिलती है, तो यह कार्य अत्यन्त श्रेष्ठ ढगसे किया जा सकता है।

(११) केन्द्रीय अधिकारियोको, जिनका यह उत्तरदायित्व है, कि वे यह देखे कि हवाई आक्रमणके समय लोगोको सथासम्भव अधिकसे अधिक सुरक्षा सुविधा प्राप्त हो गयी है, देखना चाहिए कि नागरिक प्रतिरक्षाका शिक्षण देनेके लिए राज्य, जिला और स्थानीय सगठनोको काफी धनराशि सुलभ की जाती है।

(१२) विद्यालयो, महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयो मे इस शिक्षणको एक स्थायी मान्यता देनेके विषयमे नाटो सगठन (उत्तर अटलाटिक सधि सगठन (NATO) को मार्गदर्शकका कार्य करना चाहिए। आधुनिक विश्वमे इस विषयमे आवश्यक निर्देश देनेके लिए वे उपयुक्त व्यक्ति है। परन्तु इस विषयमे नाटो (उतर अटलाटिक संधि सगठन NATO) से अधिक महत्वपूर्ण सयुक्त राष्ट्रसघ (United Nations Organization) है। यह आधुनिक विश्वकी वास्तविक आशा है और अपने सदस्य–राष्ट्रोकी समस्त विद्यालायो, महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयोमे नागरिक-प्रतिरक्षाकी शिक्षाको एक स्थायी उपायके रूपमे मान्यता देनेके लिए वह निश्चय ही आदेश प्रसारित कर सकती है।

– अध्याय १८ –

सरकारी, अर्द्ध-सरकारी और स्वैच्छिक संस्थाऐं

नागरिक–सुरक्षाका विषय मानव जीवनके प्रायः प्रत्येक पहलूको आत्मसात किये हुए है, क्योंकि यह गृह–मोर्चेसे सम्बन्धित है, जो कि आधुनिक युद्धके असिल मोर्चेसे अधिक महत्वपूर्ण है। हवाई–हमलेसे सुरक्षाके उपाय सरकारके द्वारा बताये जाते है। अर्द्धसरकारी और स्वेच्छिक सस्थाएं भी इसमे अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य करती है, क्योकि ये सस्थाए एक दूसरेसे पूर्णत सबद्ध रखकर कार्य करती है। इसमेसे प्रत्येक सस्थाका कार्य दूसरी सस्थासे अनेक प्रकारसे अन्त – सम्बन्धित किवा अपृथक्या अन्योन्य भावसे जुडा भी रहता है। भयकर सकटमय युद्धके प्रभावोसे घायलोकी जान बचाने तथा उन्हे पुनः जीवन प्रदान करनेसे सम्बद्ध इन सस्थाओके महत्वको मुश्किलसे ही बल्पूर्वक कहा जा सकता है ।

इन सस्थाओका प्रमुख कर्तव्य है कि ये जनताको प्रशिक्षित करे, जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति और परिवार शत्रुके हमलेके दुष्परिणामोका सामना करनेके लिए प्रस्तुत रहे और धैर्यपूर्वक सभी कठिनाईयोका निवारण करनेका प्रयत्न भी करे। इस प्रसगमे यह भी ध्यान देनेकी बात है कि यदि कोई दल, सम्प्रदाय या पन्थ–– नागरिक प्रतिरक्षा और प्रतिरक्षा मे सोत्साह सक्रिय भाग लेना चाहता है, तो उसे उसके उद्यममे पूर्णत सहयोग प्रदान करना चाहिए। बहरहाल, जन– कल्याणके प्रश्नको सदैव और प्रत्येक स्थितिमे–दृष्टिपथमे रखना चाहिए।

प्रचण्ड सकट (Stress) और अपयश (Strain) के क्षणोमे इस उद्देश्यकी प्राप्तिके लिए नेतृत्व प्रदान करना चाहिए––यह प्रत्येक व्यक्तिको सभी स्तरोपर और सभी सबद्ध व्यक्तियोकी सहायता करने और राष्ट्रीय अतिजीविता (Survival) और पुनः जीवता प्रदान करने (Recovery) के लिए आवश्यक शिक्षा और प्रशिक्षिण प्रदान करना, प्रतिरक्षासे सबद्ध विभिन्न संस्थाओके निर्माण और उन्नतिका पूर्ण उत्तरदायित्व सरकारपर है और सरकारको बुद्धिमत्तापूर्वक योजना बनानी चाहिए, जिसमे सचमुच इस कार्यके लिए पर्याप्त समय रहे जिससे कि सबद्ध देश वास्तविक रुपमे आघात पाने या धकियाये जाने के समय तन्द्रामग्न न पाया जाए ।

इस पुस्तकके पूर्ववर्ती अध्यायोंमे वर्णित सभी संस्थाओं और इस अध्याय में वर्णित संस्थाओके प्रसंगमें इसे सदैव याद रखना चाहिये कि नागरिक प्रतिरक्षा का श्रीगणेश घरसे ही होता है। घर किसी जाति या संप्रदायकी मौलिक हकाई है ओर इसी मौलिक हकाईपर गृह–मोर्चेकी प्रतिरक्षाका निर्माण हौना चाहिये। चाहे आप गृहिणी हों चाहे सचिव (Sccretary), चाहे आप व्यापार–प्रबन्धक हों चाहे डाक्टर या परिवारिका (Nurse), नागरिक प्रतिरक्षाको आपसे आपके घरकी सुरक्षाके विषयमे सक्रिय भाग लेनेकी अपेक्षा है। आधुनिक शस्त्रोंके विरोधमें अपने परिवारके स्वतः बचावके विषयमे अपने परिवारको प्रशिक्षित करना या कराना और शत्रुके आक्रमणके विरोधमें अपने घरको जितना अधिक सुरक्षित हो सके उतना सुरक्षित बनाना ही नागरिक प्रतिरक्षामे आपका प्रथम कर्तव्य है। आपका दूसरा कर्तव्य जाति– (Community) की नागरिक प्रतिक्षामे भाग लेना है और नागरिक प्रतिरक्षाके लिए प्रयत्न करनेवाले प्रत्येक व्यक्तिकी सहायता करना सरकारका कर्तव्य है। जनताको संगठित करना, उसे निर्देशन प्रदान करना और उचित समयमे नागरिक प्रतिरक्षा सगठनको प्रभावकारी सुरक्षाके उपाय प्रदान करना सरकारका कर्तव्य है। यह हर सयय स्मरण रखनेकी बात है की राष्ट्रीय नागरिक प्रतिरक्षा तभी अधिक प्रभावकारी हो सकती है, जबकि किसी राष्ट्रके लोग इसे बनाते है।

नागरिक आबादी पर हवाई हमलेके प्रभावको कम (Mitigate) करने के लिये मनुष्य और स्त्रियोके प्रशिक्षित और संगठित संगठणनोके साथ इन सभी प्रकारकी सस्थाओंकी महत्ताको गत द्वितीय विश्वयुद्धने स्पष्ट दिखा दिया है। ग्रेट ब्रिटेनमे १९४८ ई. मे नागरिक प्रतिरक्षा कानूनमे स्वीकृति दी है कि राष्ट्रोय सुरक्षाके लिए नागरिक प्रतिरक्षाकी एक स्थायी बूयवल्धा आवश्यक है। आज विश्वके प्रत्येक देशके मामलेमें वह तथ्य सत्य सिद्ध होता है। नाभिकीय अस्त्रोके विकासने नागरिक प्रतिरक्षाकी समस्याको अधिक तीव्र बना दिया है। ग्रेट–ब्रिटेनमे प्रतिरक्षाके विषयमे १९५४ ई. मे प्रकाशित श्वेतपत्रके शब्दोमे नागरिक प्रतिरक्षा, प्रतिरक्षाके अवयवभूत या मूलभूत (Integral Part) के रूपमे महत्वपूर्ण है। यह तथ्य प्रत्येक देशके मामलेमे सदर्भमे स्वैच्छिक संस्थाओंकी महत्ताको भी ध्यानमे रखना चाहिए। जैसा कि नाभिकीय आक्रमणके समयमे, आधुनिक युद्धमे, सत्य है इस दुर्घटनास्थलपर सर्वप्रथम नागरिक सेवाए विपत्तिका सामना करनेके लिए तुरन्त सहायतार्थ पहुंचेगी, और उसके पश्चात ही इन सेवाओंको अन्य सेवाएं सहायता प्रदान करेंगी। इस प्रसंगमे पाठकोका ध्यान इस तथ्यकी ओर आकर्षित किया जाता है कि संयुक्त राष्ट्र अमरीकामें 'महिलाओंकी स्वैच्छिक संस्था' (Women's Voluntary Organisation) का उद्देश्य जैसा कि १९५२ में

संघीय नागरिक प्रतिरक्षा व्यवस्था (Federal Civil Defence Administration) द्वारा प्रकाशित "नागरिक प्रतिरक्षामें महिलाए" शीर्षक पत्रमे दिखाया है कि १ करोड़ ७० लाख कार्यकर्ताओंकी अद्भूत (Fantastic) सख्यासे अधिक कार्यकर्ताओं के होने का लक्ष्य था।

सरकारी संस्थाऐ

इनमे अनेक देशोमे अनेक सेवाए आयंगी और प्रस्तुत लेखमे उनके क्षेत्रके प्रति पूर्ण न्याय संभव नही है। इस पुस्तकके पिछले परिच्छेदोमे इनमेंसे अनेक सेवाओंका वर्णन किया जा चुका है। यहाँपर सामान्य रूपमे (अ) नागरिक प्रतिरक्षा संगठनों और (ब) आरक्षी (The Police) इन दो के ही संक्षिप्त वर्णन अभीष्ट हैं।

(अ) नागरिक प्रतिरक्षा संगठन

भिन्न भिन्न देशोमें नागरिक प्रतिरक्षा संगठनोके निर्माण और कार्य करनेके मूल अंग किसी विशिष्ट देशकी आदर्शवादी भौगोलिक और राजनैतिक स्थितियोके अनुसार अथवा किसी विशिष्ठ सरकार के कार्य करने की पद्धति के अनुसार होते हैं। उदाहरणार्थ—रूसमे सरकार लोगोको बलात कार्य करनेके लिए बाध्य कर सकती है, क्योकि उस देशमे अधिशासन या फौजी शासनका बोलबाला है। दूसरी ओर अमरीकामे यह बात लागू नही होती, वहाँ सम्पूर्ण बनावट या रचना कुछ और ही रूप ग्रहण करेगी। यद्यपि नागरिक प्रतिरक्षाकी महत्ता उस देशमे भी समान रूपसे भलीभाति अनुभूत की जाती है वहाँ स्वयं जनताकी स्वतन्त्र इच्छाके ऊपर बहुत सी चीज़ो को छोड़ना ही होगा। वहाँ उन्नत रूपमें प्रजातात्रिक व्यवस्था होनेके कारण सामान्य रूपसे यह बात देखनेमे नही आती कि किसी योजनाको सफलता प्रदान करनेके लिए बलप्रयोग (Coercion) किया गया है। अमरीकामे सम्पूर्ण ढांचा (Texture) कुछ भिन्न प्रकारका ही होगा, यद्यपि उस देशमें भी नागरिक प्रतिरक्षाकी महत्ताको समान रूपसे अनुभव किया जाता है। वहांपर बहुत सी बाते जनताकी स्वयकी स्वतन्त्र इच्छापर छोड दी गयी है। चूँकि वहांपर प्रजातन्त्र अपने समुन्नत रूपमे सुस्थापित है, इसलिए वहां की स्थितिमे किसी योजनाको सफलताप्रदान करनेके लिए बल प्रयोगकी आवश्यकता नही है।

इन सबके साथ ही सरकारी सगठनोने नागरिक प्रतिरक्षा कार्योंके सगठनके लिए कतिपय विशिष्ट बातो जिसे अंग्रेजी मे फीचर्स (Features) कहा गया है को प्रदर्शित किया है। ब्रिटेनका एक उदाहरण लेते हुए मै इस बातको अधिक स्पष्ट करना चाहता हूं। वहापर गत युद्ध प्रारम्भ होनेके काफी पहले यहां तक कि उन्नीस सौ तीसके आसपास ही नागरिक सुरक्षाकी महत्ताको स्वीकृत किया गया था और उस समय 'हवाई हमलेसे सावधानी' ने ही

प्रमुखता प्राप्त की थी। जैसा कि इस पुस्तकके 'निष्क्रमण' शीर्षक ग्यारहवें अध्यायसे स्पष्ट है कि वास्तविक अभ्यास शुरू होनेके काफी समय पहले ही सारी तैयारी पूर्ण हो गयी थी और यह एक तथ्य रह जाता है कि 'निष्क्रमण' का विचार न केवल प्रजनित किया गया था बल्कि इसे वास्तविक रूपमें और उचित ढंगसे योजनाबद्ध भी बना लिया गया था और यही कारण है कि बिना किसी भी व्यक्तिके हताहत हुए तीन दिनोंकी अल्प अवधिमें १५ लाख लोगोको निष्क्रमित किया गया था। लंदनमें 'लंदन काउन्टी काउन्सिल' मुख्य रूपसे 'सरकारी नागरिक प्रतिरक्षा कार्यो (Govt. Civil defence work) कें लिये उत्तरदायी थी। इस 'काउन्सिल' ने 'संरक्षक सेवा, हताहत सेवा, बचाव सेवा, विध्वस सेवा दल अथवा प्रथमोपचार दल प्रभृति प्रत्येक संगठनके विषयमे यथासम्भव आवश्यक देखभालका कार्य सम्भाल लिया था। लंदनके अनेक भागोमे 'अेम्बुलेन्स स्टेशनों' की संस्थापना की गयी थी। अस्पताल सेवाओको भी सुनिश्चित रुपमें संगठित कर लिया गया था और हवाई हमलेकी दुर्घटनामे अस्पतालोमे और अधिक हताहतोके आनेकी सम्भावना थी, अत: उन्हे स्थान प्रदान करनेके लिए अस्पतालोमे विस्तरो (Beds) की सख्या बढ़ा दी गयी थी। इन सेवाओमेसे अनेकका वर्णन इस पुस्तकके गत अध्यायोमे किया जा चुका है। अतएव, यहापर मै सामान्य रूपमे (अ) नागरिक प्रतिरक्षा संगठन और (ब) आरक्षी (The Police) की कुछ बाते बताना चाहता हूं।

यद्यपि सरक्षक सेवा (Wardens service) एक स्वेच्छक और वैतनिक सगठन था, तथापि उसे भी काअसिलने अच्छी तरह संगठित किया था। बचाव सेवाको भी अच्छी तरह संगठित किया गया था और काअंसिलके द्वारा वैतनिक कुशल व्यक्तियो और ऊचे प्रशिक्षित कुशल व्यक्तियोको उसमें रखा गया था। सरकारने स्वयं नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओको नेतृत्व प्रदान किया था, यद्यपि यथासमय स्वेच्छिक कार्योंने भी अपनी बड़ी महत्ताको सिद्ध कर दिया था।

लंदनके केन्द्रीय सूचना कार्यालयके सदर्भ (Reference) विभागके द्वारा जुलाई १९६० में ब्रिटेनकी प्रतिरक्षा सेवाओंपर प्रकाशित विवरणमे यह देखा जा सकता है कि यूनाइटेड किगडममे नागरिक प्रतिरक्षा योजनाका उत्तरदायित्व कई मन्त्रियोंपर था इनमेसे प्रत्येक मंत्री इस कर्तव्यको भी पूरा करता था कि उसके युद्ध-कालीन कार्योंके स्वाभाविक विस्तारमें शातिकालीन कार्योकी उपयोगिता भी अनुस्यूत रही। चूंकि उस देशमें स्थानीय स्तरपर प्रभावकारी नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओके विकास कार्यमें अधिक योजनाये सम्मिलित थी, इसलिए केद्रिय शासनके अधिकारियोने स्थानिक सरकारी कार्यकर्ताओ, उद्योग (Industry) और व्यापार और अनेक प्रकारकी जनसमितियों, जिसमे स्वैच्छिक संगठन भी आ जाते है, जैसे कि स्वैच्छिक सहायता समितियों और महिला–स्वेच्छिक सेवाओकी सहायता हेतु

एक सूची तैयार की थी। १९४८ के नागरिक प्रतिरक्षा कानूनके अतर्गत आनेवाले अपने समस्त प्रत्यक्ष उत्तरदायित्वोके साथ ही गृह - सचिव (Home Secretary) सरकारकी समस्त नागरिक अभिकरणो (Agencies एजेन्सिओ) की प्रतिरक्षा योजनाओंमे सहयोग प्रदान करनेके लिए भी उत्तरदायी था। स्काटलैण्डका राज्य-सचिव (Secretary of State for Scotland) उस देशमे नागरिक प्रतिरक्षाके मामलोके लिए उत्तरदायी था।

जैसा कि ब्रिटेनकी प्रतिरक्षा सेवापर उक्त रिपोर्टसे स्पष्ट है कि गृह–सचिव आरक्षी और अग्निसेवाओका निरीक्षण (Supervison) करता था और वह नागरिक प्रतिरक्षा कोर (Corps) और औद्योगिक नागरिक सेवाओपर शासन करता था, साथ ही शरण–गृह–नीति और राष्ट्रीय हवाई हमला और अभिसपात–चेतावनी और (Monitoring) प्रणालीका भी वही शासक था। गृह–कार्यालय (Home office) का नागरिक प्रतिरक्षा विभाग गृह–सचिव (Home Secretary) द्वारा नियुक्त नागरिक प्रतिरक्षाके महानिर्देशक (Drector General) के अतर्गत था। अन्य शासकीय विभाग अपने द्वारा नियत्रित नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओके कार्यान्वयके लिए सीधे उत्तरदायी थे।

इंग्लैड दस नागरिक प्रतिरक्षा क्षेत्रोमे विभाजित है। ये क्षेत्र गृह– कार्यालय (Home office) के द्वारा नियुक्त नागरिक प्रतिरक्षाके क्षेत्रीय डाइक्टरोके अधीन है। वेल्सके लिए अलगसे नागरिक प्रतिरक्षाका एक डाइरेक्टर है। उनके कर्तव्योमें सशस्त्र सेनाओके साथ सपर्क स्थापित करना और सयुक्त अभ्यासोका नियोजन भी सम्मिलित है।

इस अभियानके दौरान, इग्लैण्डके स्थानीय अधिकारियोको यह आदेश दिया गया था कि वे स्थानीय प्रकाशन की व्यवस्थाओ और सेनामे भरती होनेके लिए विशिष्ट प्रयत्नोके द्वारा सहयोग प्रदान करे। औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षा इकाइयोके द्वारा अधिकतम हिस्सा बटानेके कामको उत्साह प्रदान करनेके लिए भी उनसे निवेदन किया गया था। औद्योगिक इकाइयोके व्यवस्थापकोको इस ब्रिटिश अभियानमे भाग लेनेके लिये आमत्रित किया गया था। अपने ही भवनोमे औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षा इकाइयोमे रुचि जागृत करने और प्रकाशन साधनोके नियोजनमे स्थानीय नागरिक प्रतिरक्षा अधिकारियोके साथ सहयोगके द्वारा उन्हे सक्रिय कार्य करनेके लिअे आमन्त्रित किया गया था।

संयुक्त राज्य अमरीकामें नागरिक प्रतिरक्षा संगठन के विषयमे लिखनेके पूर्व हमे १९५० के सघीय नागरिक प्रतिरक्षा कानूनमे हुए बड़े परिवर्तनोका ध्यान रखना चाहिये। राष्ट्रीय योजनाकी प्रभावशीलतामे इनका काफी योग है। प्रतिरक्षा कानून मे संशोधन निम्नलिखित है।

(१) **वृहत्तर संघीय उत्तरदायित्व (Greater Federal Responsibility):**

(अ) नागरिक प्रतिरक्षाका उत्तरदायित्व **संघीय शासन और राज्यों एवं उनके राजनैतिक उप-विभागोंको सौंपा गया है।** प्रारभिक रुपमें यह राज्यो और उनके उपविभागोके आधीन था ।

(ब) सहयोग और निर्देशन (Guidance) प्रदान करनेके साथ ही सघीय शासन आवश्यक **दिशार्दशन** के लिए भी उत्तरदायी है ।

(२) राज्योको नागरिक प्रतिरक्षा अधिकारियो और शासन – व्ययके लिए सघीय आर्थिक सहायता निर्धारित योजनाओंपर निर्भर थी । इन प्रयोजनोके लिए पहले वित्तीय सहायताका निषेध था ।

(३) राज्योंको ऋण या अनुदान (Grant) के द्वारा नागरिक प्रतिरक्षाके प्रयोजनो के लिए संघीय अधिप्राप्ति (Procurement), अनुरक्षुण (Maintenance) और वितरण (Distribution) निर्धारित शर्तोके अनुसार ही होता था :

(अ) रेडियो धर्मी यत्रो और परिचयन साधन (Detection Devices)

(ब) सरक्षी मुखाच्छादन (Protective Masks)

(स) गैस परिचयन–सामान (Gas Detection Kits)

राष्ट्रपति की १९५९ मे प्रकाशित रिपोर्ट के दूसरे भाग में **जीवन और संपति रक्षा–सरकार का चालू रहना** "(PROTECTION OF LIFE AND PROPERTY - CONTINUITY OF GOVERNMENT)" शीर्षक के नीचे बताया गया है :—

"किसी भीषण आक्रमण (Massive attack) के क्षणोमे एक राष्ट्र के रुपमे हम लोगोकी अतिजीविका (Survival) सघी राज्य और स्थानीय शासनोके उत्तरदायित्व निर्वाहपर निर्भर है ।

आवश्यक 'रेकार्डस' की सुरक्षा करने, सरक्षित स्थानोको शासकीय गतिविधियोके लिए विकसित करने और सभी स्तरोपर शासनके समस्त कर्मचारियो, सुविधाओ ओर साज–सामानोका पूर्ण उपयोग करने, महत्वपूर्ण अधिकारी और कर्मचारियोके लिये उत्तराधिकारकी पक्ति–स्थापना हेतु जिससे कि शासनके प्रोग्राम निरंतर गतिमान रहे ।

सयुक्त राज्य अमरीकामे नागरिक प्रतिरक्षा सगठनका दृष्टिकोण यह है कि प्रत्येक सप्रदायको एक **नागरिक प्रतिरक्षाका डाईरेक्टर** रखना चाहिए, जो नागरिक प्रतिरक्षाके कार्यकर्ताओकी गतिविधियोके निर्देशन और नियोजनके लिए उत्तरदायी रहेगा सामान्यत: एक डाइरेक्टरके पास सहायकोका एक वर्ग होता है, जो नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओमे अध्यक्षके रूपमे काम करते है ।

जिस प्रकार परिवार और पडोसीको संकटकालमें सहायताकी आवश्यकता हो सकती है, उसी प्रकार शहरोको भी सहायताकी आवश्कता हो सकती है। शत्रुके आक्रमणके समयमे एक दूसरेकी सहायता करनेके लिए अनेक पडोसी नगर और शहर पहलेसे ही सहमत हो चुके है। इस दुतरफी सहायताको 'पारस्परिक सहायता' (Mutual Aid) नामसे भी जाना जाता है।

प्रत्येक राज्यके पास नागरिक प्रतिरक्षाका डाइरेक्टर होता है। वह और उसके स्टाफके लोग मिलकर राज्यके समस्त साधन स्रोतो और जनताके लिए नागरिक प्रतिरक्षाका कार्यक्रम योजना और सहयोग प्रस्तुत करते है। आक्रमणग्रस्त क्षेत्रो (Attacked areas) मे व्यवस्थित स्वयंसेवक सहायता भेजनेके लिए राज्य–डाइरेक्टरके पास एक योजना रहती है। इस प्रकारकी सहायताको चल– सहायता (Mobile support) कहते है।

जैसा कि १९५० ई. के कानून–सशोधनके विषयमे चर्चा करते हुए ऊपर कहा जा चुका है कि राष्ट्रीय नागरिक प्रतिरक्षा–व्यवस्था (National Civil Defence Administration) सघीय नागरिक प्रतिरक्षा व्यवस्था का उत्तरदायित्व है। यह अपने क्षेत्रीय कार्यालयोके माध्यमसे राज्योको कार्यक्रमोके क्रियान्वय और सघठनको चलाते रहनेके लिए सहायता और निर्देशन प्रदान करती है। वह योजनाए और सजा–सामानोको प्रदान करती है और जब कहा जाय तब अन्तर्राज्यीय पारस्परिक सहायताका प्रबन्ध करनेके विषयमे सहायता प्रदान करती है।

सोवियत नागरिक प्रतिरक्षा के सम्बन्धमे सयुक्त राज्य अमरीकाकी शासन–सचालन (Operation) पर हाउस कमेटी (गृह समिति) की मिलिटरी आप- रेशन सब–कमेटीकी रिपोर्टमे लिखा है कि 'सोवियत नागरिक प्रतिरक्षा योजनाओमे लगता है कि १९५८ मे ही सशोधन और सुधार हो गए थे। उसमे जो नए अग जोड़े गये थे, उनमे बडे शहरोका आशिक निष्क्रमण भी सम्मिलित है। बमवर्षाके परिणामस्वरूप गृहहीन हो जानेवाले लोगोके लिए आवासोकी व्यवस्था करनेके लिए सस्थाओका सगठन ओर ग्रामीण क्षेत्रोमे आक्रमण होनेपर नागरिक प्रतिरक्षा व्यवस्था भी इसीके अन्तर्गत है।

सरचनात्मक प्रतिरक्षा शीर्षक वाले अध्याय ९ मे उल्लेख किया जा चुका है कि मास्कोमे रूसने अपनी आन्तरिक मामलोके मन्त्रालय (Ministry of Internal Affairs) के माध्यमसे केन्द्रीय शासनके द्वारा नियन्त्रित एक नागरिक प्रतिरक्षा प्रणालीकी स्थापना की है। वह दोनो स्थानीय ओर राष्ट्रीय – स्तरपर प्रभावकारिताके परिवर्तित अशोमे कार्य करती है। रूसमे नागरिक प्रतिरक्षा–व्यवस्थाके सम्बन्धमे पाठकोको इस पुस्तकके अध्याय १७ मे दिये गये विशेष विवरणको पढ़नेकी सलाह दी जाती है। हमारे सम-

यमें एक 'प्रभावकारी नागरिक प्रतिरक्षा–व्यवस्थाकी महत्ताको प्रमविष्णु रुपमें प्रस्तुत करनेके विचारसे मै पाठकोका ध्यान **स्वीडेन** के मामलोकी ओर आकर्पित करना चाहता हूं। मैने अध्याय १७ में पहले ही रिक्सडेग (Riksdag) द्वारा १९३८ मे पारित कानूनके विषयमे लिख दिया है, जिसके अनुसार कुछ अपवादोके अलावा प्रत्येक पुरुष और स्त्री नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओके प्रति उत्तरदायी है। संसारके अन्य अनेक देशोमे नागरिक प्रतिरक्षा व्यवस्थाकी अपेक्षा यह व्यवस्था अधिक महत्वपूर्ण है। यह कानून प्रतिरक्षा के प्रत्येक रूप जो प्रत्यक्ष रूपसे युद्ध पर आधृत नही है –– को बिनियमित (Regulates) करता है। इस व्यवस्थाके कार्य और कर्तव्य दो वर्गो मे विभाजित किए जा सकते है, यथा :

(१) सुरक्षात्मक उपाय और
(२) राहत कार्य

स्वीडनने निष्क्रमण (Evacuation) को जो ब्लैक आउट, एलार्म, शरणगृह – निर्माण और अधिक राष्ट्रीय नगर योजनाके समान अनेक [illegible] उपायोमे एक है –– अधिक महत्व प्रदान किया। स्वीडेन वासियोने अपनी प्रणालीको 'निष्क्रमण प्रणाली' पर ही प्रतिष्ठित किया है।

स्वीडेनमे राहत कार्योमे अग्नि–बुझाना, बचाव, यातायात–मार्ग (ट्रेफिक स्ट्रस) की सफाई और गृहविहीनों एव घायलोकी देखभालका भी ममावेश है। उस देशके लोगोके लिऐ 'नागरिक प्रतिरक्षा – सगठन' ऐक सहयोगी सस्था है, जो उस देशके लोगोके लिये किसी सकटका सामना करनेके लिए सामान्य नागरिको को सुनिश्चित रखती है और युद्धकी स्थितिमे प्राणदायक कार्योको निरतर चालू रखती है। यह दृष्टिकोण सभी देशोके लिए सुन्दर रहेगा।

जहां तक भारत वर्षका प्रश्न है, नागरिक प्रतिरक्षा सगठनकी दिल्ली मे गृह-मन्त्रालयके द्वारा देखरेख की जाती है। वहा नागरिक प्रतिरक्षा का एक महासंचालक (Derector General) है जिसे विभिन्न कार्योको पूरा करना पडता है।

इस प्रसगमे 'टाइम्स आफ इण्डिया' नयी दिल्ली मे २७ फरवरी १९६३ ई. को निम्नलिखित शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित एक प्रेम विज्ञप्तिकी ओर मै पाठकोका ध्यान आकर्पित करता हू .––

(DIRECTIVE TO STATES ON CIVIL DEFENCE)

नागरिक प्रतिरक्षापर राज्योको निदेश पत्र

इसका पहला भाग इस प्रकार है:––

"The British civil defence expert Gen. Irwin, who recently visited on the invitation of the Government has suggested certain arrangements—both to meet "conventional enemy attacks" like dropping of Bombs and also unconventional forms of attack."

ब्रिटेनके नागरिक प्रतिरक्षा विशेषज्ञ जनरल इरविनने, जिन्होने अभी कुछ समय पहले भारत– सरकारके निमन्त्रणपर यहांका भ्रमण किया है –– कुछ व्यवस्थाओंका सुझाव दिया है – जिनमे बमोंके गिरानेके समान शत्रुके परम्परागत आक्रमणोके साथ ही " आक्रमणके अपरम्परागत –– आधुनिक प्रकारोका सामना करनेके लिए कुछ व्यवस्थामूलक सुझाव दिये गये है । "

लोकसभामे श्री. एच. सी. माथुर और अन्य अनेक सदस्योंको उत्तर देते हुए गहमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्रीने इस तथ्यका उद्घाटन किया था ।

श्री. शास्त्रीनें कहा कि इनमेसे कुछ अनुशंसाओं (Recommendations) को शीघ्र ही कार्यान्वित किया जायगा, जबकि अन्योके विषयमे कार्यवाही की एक योजनाका कागज़ी प्रारूप प्रस्तुत करके रखना है ।

उक्त मन्त्रीने कहा है कि यह कहना ठीक नही है कि संघीय शासन (Union Government) ने १९५३ के पश्चात् नागरिक प्रतिरक्षा विषयक कोई भी योजना नही बनायी है। वस्तुतः १९५३ में एक योजना प्रकल्पित (Devised) हुई थी, लेकिन उसके बाद तीव्रगतिसे स्थितियोमे परिवर्तन हुआ। अतएव, यह निश्चय किया गया कि किसी विशेषज्ञकी सलाह ली जाय और इसीके अनुसार जनरल इरविनको आमन्त्रित किया गया था ।

श्री शास्त्रीने कहा था कि भारत और इंगलैण्डकी परिस्थितियोमे अन्तर है । जबकि वहांपर नागरिक प्रतिरक्षा व्यरस्थाका लक्ष नाभिकीय आक्रमणको रोकना था और यहापर ऐसे आक्रमणकी आशा नही थी।

आगे और पूछे गये प्रश्नोका उत्तर देते हुऐ श्री शास्त्रीने कहा था कि जनरल इरविनकी अनुशंसाओं (Recommendations) के आलोकमे राज्योको आगे आदेश भेजे जायंगे ।

चीनके द्वारा आकस्मिक आक्रमणके पश्चात् असाधारण रूपसे परिवर्तित परिस्थितिमे ऐसे आदेश दिये गये थे । उस समयमे पश्चिम बंगाल और आसममे तुरंत कार्यवाही करनी आवश्यक थी ।

अन्य राज्योसे कहा गया था कि वे ए. आर. पी. (Air Raid Precautions) हवाई हमलेसे बचाव की योजनाओको तैयार रखें । बहरहाल, यदि

उनमेंसे कुछ राज्योंने केन्द्रके आदेशोंके अनुसार कार्य किया था, तो उन्होंने कोई अनुचित कार्य नही किया था।

ग्रामीण क्षेत्रोंमे व्यवस्थाके विषयमे पूछे जानेपर उक्त मन्त्रीने कहा था कि "ग्रामीण क्षेत्र हवाई हमलेसे अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित है। बहरहाल, गृह रक्षकों (Home Guards) के सगठन जैसे अन्य कार्य किये गये है।"

नयी दिल्ली, २२ नवम्बर १९६२ को प्रकाशित 'सिविल डिफेन्स जोनल हेडक्वार्टर्स स्कूल स्टार्ट फक्शनिग' (Civil Defence Zonal Headquarters School Start functioning) नागरिक प्रतिरक्षा कटिबधीय मुख्यालय स्कूलने कार्य करना शुरू कर दिया है। शीर्षकके अन्तर्गत लिखा गया था :—

"आज प्रथम नागरिक प्रतिरक्षा प्रशिक्षण स्कूल और प्रतिरक्षा के उपायोंको विनियमित करनेके लिये पाच कटिबन्धीय मुख्यालयोंने अपने कार्यका श्रीगणेश कर दिया।"

उपर्युक्त विवरणसे यह स्पष्ट है कि भारतवर्षमे नागरिक प्रतिरक्षा सगठन—विषयक एक प्रयत्न किया गया था। पर मेरा मत है कि पूर्ववर्ती पैराग्राफोमे जिन देशोंके उदाहरण दिये गये है, उनका अनुसरण किया जा सकता है और एक सुदृढ़ सगठनका कार्य पूर्ण किया जा सकता है, जिसमे कि सकट या आपत्ति क्षणामे किसी भी प्रकारका उपद्रव (Convulsion) अथवा भयानक न हो सके। हमारा देश एक अत्यन्त सहज कार्य कर सकता है कि हम भारतवर्षकी समस्त सस्थाओमे नागरिक प्रतिरक्षा शिक्षणको एक स्थायी सुरक्षा विषयके रुपमे स्वीकृत कर ले। यह आवश्यक है जैसा कि मै सोचता हू कि राष्ट्रके बुद्धिजीवी वर्गमे नागरिक प्रतिरक्षाके ज्ञानको पर्याप्त रुपमे प्रचारित करनेके सम्बन्धमे हमारी सस्थाए सर्वोत्तम माध्यम है। इसके अतिरिक्त, इस पुस्तकके अध्याय १७ मे इस सस्तुतिके समर्थनमे अन्य अनेक कारण मिलेगे।

प्रत्येक देशके नागरिक प्रतिरक्षा सगठनका वर्णन करना वस्तुत. यहा तक कि उसका स्पर्शकरना भी व्यवहार्य नही है। बहरहाल, शासकीय सगठनोंके कतिपय प्रमुख लक्षणों (Salient Features) की ओर पाठकोका ध्यान आकर्षित करनेके लिए ऊपर दिये गये कुछ देशोके उदाहरण पर्याप्त होगे।

इस प्रसगमे मै सोचता हू कि यह उचित है यदि मै इतना और कहू कि आधुनिक युगमे नागरिक प्रतिरक्षा के विषयमे पारस्परिक सहयोगमे अनेक सरकारे क्या कर सकती है। अब हम नाटो अथवा उत्तर अटलाटिक सधि सगठन (NATO) के सगठनका उदाहरण ले रहे है। यह संस्था अकेले अपने विविध अध्ययन—

वर्गोके माध्यमसे बडा ही एकाग्रताके साथ कार्य करती आ रही और यूरोपमे निष्क्रमणयोजनाओके सम्बन्धमे इसके कार्य विषेश उल्लेखकी अपेक्षा रखते है। लेकिन अन्य सभी वस्तुओकी अपेक्षा नाभिकीय नियन्त्रणकी योजनाके सम्बन्धमे इसकी कार्यवाही अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस प्रसंगमे मै यहापर 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' दिनाक ११–४–१९६३ को 'पेरिस' १० अप्रैल १९६३ के प्रेस नोट को उद्धृत करना चाहता हू :—

"आज विश्वस्त सूत्रोसे ज्ञात हुआ है कि अटलाटिक सधिके सदस्यों ने फ्रेच यूनिट्स को सम्मिलित करते हुए एक 'सहयोगी नाभिकीय कमान' (Co-ordinated nuclear command) की स्थापना का निश्चय किया है।"

यह 'कमान' जो प्रभावमे बहुराष्ट्रीय शक्तिके रूपमे रहेगा – यूरोपमे मित्र-राष्ट्र मुख्यालयो (Allied Head Quarters) के कमाडिग जनरलकी आज्ञाके अन्तर्गत कार्य करेगा जो आजकल कमाडिग जेनरल यूनाइटेड स्टेट्सके जनरल लीमैन लैमिन्ट्जर हे।

इन्ही सूत्रोसे ज्ञात हुआ ह कि इस 'कमान' मे मित्र राष्ट्रो – फ्राग, बेल्जियम, हालैण्ड, पश्चिम जर्मनी, इटली, और कनाडा, साथ ही ब्रिटेन और यूनाइटेड स्टेट्स — के हवाई जहाज सम्मिलित रहेगे।

यूनाइटेड स्टेट्सके द्वारा उन्हे स्वय पारमाणविक युद्ध प्रमुखता प्रदान की जायगी ओर वह अमेरिकन परिरक्षा (Custody) और अमेरिकन निमन्त्रणके अन्तर्गत रहेगी — अे पी."।

ओटावा, २८ मई, १९६३ की एक अन्य प्रेस विज्ञप्ति, जो टाइम्स ऑफ इण्डिया मे २५ मई १९६३ ई को (NATO Nuclear Strike Force) नेटो न्यूक्लीयर स्ट्राइक फोर्स " शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी — वह इस प्रकार है —

"नेटो मन्त्रिमण्डलीय काऊसिलने आज " नेटो – नाभिकीय स्ट्राइक फोर्स (Nato Nuclear Strike Force) को अपनी अन्तिम स्वीकृति प्रदान कर दी है, ब्रिटेनकी वी. बमवर्षक (V–Bombers) सेना और तीन यू. अेस. पोलरिस पनडुब्बियोको, इस कार्यके लिए नियत कर दिया गया है।

इस सैन्य शक्तिसे यह आशा की जाती है कि वह आठ यूरोपीय देशोकी सामरिक वायु–सेनाको भी सम्मिलित करे, यद्यपि तीन दिनोके सम्मेलनके अन्तमे दी गयी विज्ञाप्तिमे केवल ब्रिटेन और सयुक्त राज्य (यू. अेम.) के योगदानको ही प्रशान्त ओर स्पष्टरूपमे उल्लेखित किया गया था।

फ्रांसके अनुरोध के कारण उस विज्ञाप्तिमें स्ट्राइक – फोर्सका 'इंटर– अेलाइड न्यूक्लीयर फोर्स' के रुपमे उल्लेख नही किया गया।

उस प्रतिवेदनमें लिखा है कि मित्र राष्ट्रोके आभिस्ताव (Disposal) पर नाभिकीय सक्षमताकी प्रभावशीलताको पैदा करने और सहयोगको बढ़ाने एवं नाभिकीय सेनाको नियंत्रित करनेके लिए स्वीकृत सुरक्षामूलक उपायोका मंत्रियोंने स्वागत किया।"

सांग्रामिक आयोजना

OPERATIONAL PLANNING

उक्त 'काउसिल' ने नियत किये गये या नियत किये जानेवाले यूरोपीय मित्र राष्ट्रीय सर्वोच्च सेनाध्यक्ष (Supreme Allied Commander) जनरल लेमेन लीमिट्ज़रने नाभिकीय सैन्य दलको सगठित करने के लिये निम्नलिखित मुख्य कार्योंको अनुमोदित किया था :–

(१) ब्रिटिश वी (V) बम वर्षक दल और तीन यू. अेस. पोलरिस पनडुब्बियोको सर्वोच्च एलाइड कमाडर इन यूरोप (SACEUR) के लिए नियतकरना।

(२) यूरोपीय मित्र राष्ट्रीय सर्वोच्च सेनाध्यक्ष (SACEUR) के नाभिकीय मामलोके लिए एक उप उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्तिकी नियुक्ति।

(३) यूरोपके मित्रराष्ट्रोंकी कमानमें नाभिकीय कार्यवाहियोमें नेटों (NATO) सदस्य देशोके अधिकारियोके द्वारा प्रशस्ततर रूपमे भाग लेनेकी व्यवस्था करना।

(४) दोनो फौजी और राजनीतिक प्रकारके राष्ट्रीय अधिकारियोको पूर्ण सूचना प्रदान करना।

उक्त काउन्सिलने खेद व्यक्त किया ह कि सोवियत सघने प्रमुख समस्याओके लिए सुनीति संगत (Equitable) समाधान खोजनेमे अभीतक अत्यन्त कम रुचि प्रदर्शित की है।

इसमे कहा गया है कि जर्मनी और बर्लिनमे धमकी अभी तक समाप्त नही हुई है, पर पश्चिमकी सुदृढ़ अभिवृत्ति (रवैया– Attitude) को धन्यवाद है–बर्लिन के मित्रराष्ट्रके लिये हानिकारक विकास काफी तौर पर रोक दिया गया है।"

—रायटर

सम्बद्ध देशोंकी प्रतिरक्षाके साथ ही नागरिक प्रतिरक्षा सगठनसे उपयुक्त बाते सम्बन्ध रखती है। मै सोचता हूं कि केवल "नेटो" (NATO) सगठन ही पर्याप्त नही है विश्वमें इसी प्रकारके कुछ और संगठनोका होना आवश्यक है। नाभिकीय आयुधोके विरोधमें सुरक्षाकी एक भावनाको जगानेमे यह अत्यन्त सहायक होगा। वस्तुतः मै आश्चर्यचकित हूं कि संयुक्त राज्य की असेम्बली (United Nations Assembly) अन्ततः कुछ अत्यन्त सुदृढ कार्य करनेमे सफल क्यों नही हुई।

इसके सदस्य कोई प्रस्ताव पारित कर सकते है अथवा यह देखनेके लिए कोई प्रभावकारी कदम उठा सकते है कि वे नाभिकीय अस्त्रों का आश्रय नही लेगे। इस संबंधमे काफी अधिक चर्चा हो चुकी है और यद्यपि यह कार्य आसान नही पाया गया है तो भी इस क्षेत्रमे बहुत कुछ किया गया है। इसके साथ ही अन्तिम बार प्रयत्न करनेमे कोई हानि नही है और मुझे विश्वास है कि विश्व जनताकी राय, जो निश्चय ही नाभिकीय अस्त्रोके प्रयोगके सख्त विरोधमे है, इस क्षेत्रमे प्रबल वर्चस्वी हो सकती है। इन सबके बाद यह एक और सबके द्वारा स्वीकृत है कि ऐसे भयकर विध्वंसक अस्त्रोके प्रयोगकी अवश्य ही अवहेलना की जानी चाहिये और जब सभी लोगोंकी ऐसी धारणा है तो संयुक्त राष्ट्रसंघ (U. N. O.) को इस उत्तम कार्यके लिए अन्त तक प्रयत्न करते रहना चाहिये। मुझे विश्वास है कि नाभिकीय शस्त्रोके प्रयोगपर निषेध लगानेके सम्बन्धमे इस विश्व–सगठनके द्वारा मानवताके उन्नति और विकासके लिए आगे और बहुत कुछ किया जा सकता है।

आरक्षी (Police)

किसी भी देशमे आरक्षी भी नागरिक प्रतिरक्षा–सगठनका एक महत्वपूर्ण अग है, और इसकी विशिष्ट महत्ताको दृष्टिपथमे रखकर इसके लिए अलग विभाग प्रदान करनेकी बातको ठीक ही सोचा गया है। आरक्षी विभागके अगणित कार्य है। वस्तुतः आरक्षी किसी भी शासनका एक महत्वपूर्ण अंग है और विश्वमें बिना उचित आरक्षी सगठनके कोई भी शासन कार्य नही कर सकता। बहरहाल, सकटके समयमे नियमित आरक्षी समयकी मागके साथ योगदान देने मे असमर्थ हैं और इसी कारण सहायक आरक्षी दलोंको परिस्थितिकी अपेक्षाओं के अनुसार विभिन्न कार्य नियत किये गये है। आरक्षी विभागका प्रमुख कार्य कानून और शान्ति दोनोंको शान्तिके समय और संकट के क्षणोंमे भी बनाये रखना है। लेकिन संकटकाल मे इसके कार्योको ऐसे कार्यों तक वर्द्धित कर दिया जाता है जो कि शान्तिकालमे आरक्षीके सामान्य कार्योंसे परे है और ऐसे दबाब और संकटके समयमे आरक्षी दल (Police) शासकीय, अर्द्ध–शासकीय और स्वेच्छिक सगठनोके साथ

कार्य करता है और उनके कार्य अन्य सस्थाओके साथ– साथ चलते है। अन्य संगठनोके साथ आरक्षी दलके कार्यका आदर्श विभिन्न देशो मे शासन – प्रबन्धके विभिन्न ढाचेपर निर्भर करेगा। अन्य अनेक कार्योके अतिरिक्त आरक्षी दल के प्रमुख कार्योमे यह देखना भी ऐक है कि भारी बम–वर्षा अथवा किसी अन्य कारणसे जनताका मनोबल न टूटने पाये। ऐसे मामलोमे आरक्षी लोग अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य कर सकते है और यह देखनेके लिए अत्यन्त उपयोगी हो सकते है कि बुरी स्थितियोके बावजूद जनताका मनोबल उन्नत बना रहे।

युद्धकालमें आरक्षी के वास्तविक कार्योको समझनेके लिए मै अपने पाठकोका ध्यान ग्रेट ब्रिटेनके अत्यन्त उपयुक्त उदाहरणकी ओर आकर्षित करना चाहता हू। इसके विषयमे लिखनेके पूर्व मै यह बता देना चाहता हूँ कि द्वितीय विश्व–युद्धमे क्या हुआ था। उस समय चेतावनीकी समस्याका समाधान प्राप्त करनेमे बडी कठिनाईका सामना करना पडा और आरक्षी महत्वके दृष्टिकोणसे युद्धके प्रथम चरणोमे चेतावनी प्रसारणका यह कठिण कार्य प्रमुख कास्टेबलोको सौपा गया था। आक्रमण या आक्रमणकी धमकीके समय १९१७ की ग्रीष्म ऋतुसे बृहत्तर जनताकी स्थितिके विकासको ध्यानमे रखना इस सदर्भमे पर्याप्त दिलचस्प होगा। इस समय तक जो व्यक्ति सक्रिय सेवामे नही थे, उन व्यक्तियोपर भी युद्धका दबाव या बल पर्याप्त रुपमे पड़ चुका था। लंदनमे जनताकी चेतावनीकी मागके लिए धीरे- धीरे और अनिच्छापूर्वक सरकारने मार्गदर्शन किया। जुलाई १९१७ मे पुलिस कमाडरके नियत्रणके अन्तर्गत एक प्रणालीका श्रीगणेप किया गया जो कि १९३९–४५ के 'सायरन' के आदी लोगोको अत्यन्त पुरानी-सी लग सकती है। चेतावनीका आशिक सप्रसारण हवामे फायर किये गये ध्वनि बमोके द्वारा और आशिक रूपमे पैदल, साईकिल सवार अथवा कारोमे बैठे हुए **"अपने आपको सुरक्षित करो"** के बोर्ड लिये हुए सीटिया बजाते हुए अथवा तूर्यनाद करते हुए पुलिसके आदमियो द्वारा किया गया।

इगलैण्डमे आरक्षीयोके सम्बन्धमे दूसरी महत्वपूर्ण बात यह थी कि प्रथम विश्वयद्धके सर्वेक्षण चौकियोके घेरा – (Cordoned) पद्धतिके अनेक प्रकार १९१७ ई. मे अयोग्य सैनिकोसे जो सक्रिय युद्ध सेवाके लिए अयोग्य थे, पुलिस को दे दिया गया था। इससे प्रतिरक्षा सेवाओसे अवकाश प्राप्त व्यक्तियोकी तुलनामे आरक्षियो (Police) की श्रेष्ठतर स्वीकृतिकी स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है।

यह अवश्य ध्यान रखने योग्य है कि इगलैण्डमे सम्पूर्ण हवाई हमलेसे बचाव की योजनाके प्रभावपूर्ण कार्यान्वयन के लिए आरक्षी और दमकल सेवा-

सदैव आवश्यक पायी गयी है और इस सम्बन्धमे आरक्षी सेवा एक महत्वपूर्ण जोड़क कड़ीके रूपमे थी । पर निश्चय ही आरक्षी विभागके लोगोने अन्य सेवाओं और स्वेच्छिक संगठनोके साथ अन्योन्य सहायकके रूपमे कार्य किया था। उदाहरणार्थ, प्रथम विश्वयुद्धमे प्रयुक्त पुराने तरीके अपेक्षाकृत अधिक छोटे क्षेत्रमे चेतावनी और स्थानीय गैस एलार्मके लिए विशेष रूपसे प्रयोगमे लाये गये थे। यह प्रस्तावित था कि गत युद्धके दौरान आरक्षी गण और सरक्षक (Wardens) सीटियोंको जोर–जोरसे बजाकर 'सायरन' चेतावनीको दुहराते थे ।

इस एक दूसरे उदाहरणमे, जहा कि हम फ़रवरी १९३७ से सितम्बर १९३९ के मध्यकी सकटकालीन दमकल सेवा सुरक्षाके उपायोके विषयमे चर्चा करते है तो हमे मिलता है कि स्थानीय और केन्द्रीय दोनो रूपोमे दमकल सेवाके व्यक्ति पुलिस सेवाओके साथ परम्परागत सम्बन्ध रखते थे!

गत युद्धके दौरान कार्य करनेमे अनेक अनुभवो और कठिनाइयोका सामना करना पड़ा था। विराम (Respite) की अवधिमे तमावरण (Black out) और चेतावनी– पद्धतिके सम्बन्धमे आनेवाली कठिनाई भी उनमेसे एक थी। अपने स्वयके आग्रहपर सायरन बजानेकी आरक्षी और ए. आर. पी. अधिकारियो के उत्तरदायित्वकी एक परम्पराने, जो किसी विकास-मान आक्रमणको तो देख सके, पर यथार्थ यह निर्णय करनेमे असमर्थ हो, कि हवाई आक्रमणकारी कब गुजर गये, बडी उलझन उपस्थित कर दी थी। यह आवश्यक था कि जब एक बार क्षेत्रीय कमाडर इन चीफने अपना व्यक्तिगत निर्णय दे दिया, तो यथा सम्भव शेष प्रक्रियाको स्वयंचालित ही होना चाहिये और उन्हे किसी वैयक्तिक निर्णयके कारण किसी भी स्तरपर व्यवधान नही डालना चाहिए।

यह ध्यान रखना चाहिए कि पुलिस, सरक्षक और नागरिक स्वयसेवक अविस्फोटित बमो और खोलोके विषयमे रिपोर्ट करने और उन्हे हटानेके विषय मे एक साथ प्रशिक्षित किये गये थे। आक्रमणके दौरान और जब आक्रमणके लिये तैयारी का समय हो (Lulls) दोनो स्थितियोमें उनके कुशलतापूर्वक कार्य–संपादनके द्वारा संरक्षकों, बचावदलो और अन्य हवाई हमलेसे सावधानीकी सेवाओका मनोबल स्वाभाविक रूपसे वर्द्धित हुआ था ।

नागरिक प्रतिरक्षाके ढाचेमे पुलिसका कई रूपमे विनियोजन हुआ था। उन अधिकारियोमे, जहा नियन्त्रक चीफ कास्टेबल नही थे, वहा पुलिस अधिकारियोने प्राय: उप–नियन्त्रकके रूपमे कार्य किया था और संरक्षक सेवा लगभग २०० अथवा २५० स्कीमो मे सामान्य रुपसे चीफ कान्स्टेबल के आधीन थी ।

नवम्बर १९३९ मे या उसके आसपास कुछ नियम बनाये गये थे, जिनके अनुसार सरक्षको (Wardens) की स्थितिका स्पष्टीकरण किया गया था। उसके अनुसार शरणगृहोमे अर्द्ध आरक्षी अधिकार शरणगृह सरक्षकोको सौप देने पर जबकि बाह्य नियत्रण आरक्षी दलके हाथमे था, इस प्रथा का कार्य शातिपूर्ण ढगसे चला । आपत्कालीन अधिकारियोकी स्थितिके साथ ही साथ (vis-a-vis) आरक्षी की स्थिति को भी उसी वर्ष स्पष्ट किया गया था। लदन क्षेत्रमे दो महत्वपूर्ण सिद्धान्त निश्चित किये गये थे :--

प्रथम यह कि पुलिस, जिसके पास साविधानिक (Statutory) कर्तव्य और प्रवर्तन (Enforcement) शक्ति है, की परिस्थितिको सामान्य रूपसे प्रभार अपने हाथोमे ले लेना चाहिये और जनतामे शाति बनाये रखने और परिवहन को नियन्त्रित करनेका हर प्रकारसे प्रयत्न करना चाहिये। द्वितीय, नागरिक प्रतिरक्षा आपत्कालीन अधिकारी, जो दमकल- सेवाके साथ सहयोग के साथ काम करेगा, पर उस सेवाके ऊपर उसका नियत्रण नही रहेगा, लेकिन वह ए.आर.पी. (Air Raid Precautions) हवाई हमलेसे बचाव की सामान्य सेवाओंसे स्वयको परिरुद्ध करेगा । यह देखा जायगा कि इस प्रबन्धने अच्छी तरह कार्य करके पुलिसकी स्थितिको अत्यन्त स्पष्ट कर दिया है, क्योकि आपत्कालीन अधिकारीने ए. आर. पी. सेवाओका और एक दमकल अधिकारीने दमकल सेवाओका मार्गदर्शन किया है ।

एक उच्च आरक्षी (Senior) अधिकारीको एक आपत्कालीन अधिकारी होनेके लिए उत्तम व्यक्ति माना जाता था ।

बहरहाल, इतना और कहा जा सकता है कि लदनके अतिरिक्त अन्य क्षेत्रोमे सरक्षको (Wardens) और आरक्षियोको आपत्कालीन अधिकारियो के रूपमे प्रशिक्षित किया गया था। सरक्षको, दमकल कर्मचारियो और अन्य सेवाओके लोगो और आरक्षियोके मध्य व्यवस्था के सिलसिलेमे अनेक बार झगडे उपस्थित हुए थे -- विशेषत: आरक्षियो और ए. आर. पी. (हवाई हमलेसे बचाव) के अधिकारियोके मध्य कार्योके सिलसिलेमे झगडे हो जाते थे। एक ओर प्रमुख आरक्षी (Chief Constables) किसी निर्देशनके विषयमे पर्याप्त बुद्धिमत्ता प्रदर्शित करते थे कि अन-आरक्षी-आपत्कालीन अधिकारी सभव है कि नियत्रण करना चाहे। दूसरी ओर अे. आर. पी. (A R P.) सेवाओके लोगोने ऐसा महसूस किया कि आरक्षी लोग अे. आर. पी. के विषयमे कम या लगभग कुछ नही जानते है-इतनेपर भी मध्यस्थता (Interfere) करना चाहते थे । इस परिस्थितिकी समस्त कठिनाइयोके साथ ही इस बातका आग्रह किया गया था कि आपत्कालीन नियन्त्रणका उत्तरदायित्व आरक्षी पर रहेगा ।

१९४३ ई. के बसन्त तक ऐसा लगता है कि आरक्षी दलको विश्वास हो चला था कि नागरिक प्रतिरक्षा के अधिकारी लोग आपत्कालीन अधिकारी की स्थितिसे उन्हे (आरक्षियोको) दूर रखनेके इच्छुक थे। दूसरी ओर अे. आर. पी. (हवाई हमले से बचाव) सेवाओका कहना था कि कुछ क्षेत्रोमे आपत्कालीन नियन्त्रण-आदेश प्राप्त करनेमे आरक्षियोने नागरिक प्रतिरक्षा कर्मचारियोको आज्ञा देनेसे इन्कार कर दिया था और मरक्षकोको घटनास्थलसे दूर चले जानेकी आज्ञा दी गयी थी। ऐसी और इसी प्रकारकी और अनेक कठिनाइया थी, जो वस्तुत: उठ खडी हुई थी। बहरहाल, अन्तत: यह निश्चय किया गया था कि आपत्कालीन अधिकारीको चुनने और भेजनेका उत्तरदायित्व प्रमुख कान्स्टेबल (Constable) के ऊपर रहेगा, पर यदि एक बार वह अधिकारी घटना-स्थलपर पहुच गया, तो उसे सामान्य सेवाओके कार्यान्वयन और नियन्त्रण अधिकारीके प्रति उत्तरदायी रहना पडेगा।

इगलैण्डमे आरक्षीके विषयमे एक और मनोरजक बात उल्लेखनीय है और वह है फौजी सहायताके बारेमे, जो कि हवाई हमलेकी परवर्ती (Post Raid) समस्याओमे एक प्रमुख समस्या थी। इसमे इस प्रक्रियाका अनुसरण किया गया। प्रथम यह कि प्रमुख क्षतिग्रस्त क्षेत्रमे घेरा डालनेमे आरक्षीकी सहायता करना और तदनन्तर मलवोकी सफाई करना और खतरनाक इमारतोको गिराना, जिससे कि पुन: स्थापनामे सहायता करनेवाली सेवाओको अपना कार्य करनेका अवसर मिले।

यद्यपि गत दो युद्धोके दौरान इग्लैण्डमे आरक्षीकी स्थितिके विषयमे उल्लेखनीय और भी बाते हो सकती है, तथापि मै अतिरिक्त विवरणकी अवहेलना करना पसन्द करता हू और द्वितीय विश्वयुद्धमे आरक्षी और नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओमे नियुक्त सख्यामे पाठकोको अवगत कराना चाहता हू। केवल १९४० ई के लिए नियुक्त व्यक्तियोका विवरण इस प्रकार है --

(हज़ार मे) पूर्ण-कालिक

ह.ह.सा.		राष्ट्रीय दमकल सेवा		हताहत सेवा		नियमित आरक्षी		सहायक आरक्षी सेवा		कुल
पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	
१०८.७	१८.९	७२.२	४.७	१४.९	३३.०	६४.४	०.३	३१.९	०.२	३४५.२

अश – कालिक

७१९.४	१३६.९	१६१६	८.९	४६.७	१३४.२			१५९.३	०.६	१३६७.६

उपर्युक्त सार–वृत्त (Resume) को देनेके मूलमें हमारा आशय पाठकोको इस बातसे प्रभावित करना है कि किसी शासनमें आरक्षी का क्या महत्व है। चाहे इंग्लैण्ड हो चाहे अन्य देश, आरक्षीकी स्थिति सर्वोच्च है, यद्यपि किसी संकटकालमे उन्हे नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओके साथ सहकारितापूर्वक कार्य करना ही पडेगा। किसी भी स्थितिमे उन्हे अन्य सेवाओसे स्वयंको श्रेष्ठ नही समझना चाहिये यद्यपि उन्हे सदैव ध्यानमे रखना चाहिये कि वे अन्य सेवाओके साथ सहयोगके द्वारा निश्चय ही देशकी सर्वोत्तम सेवा कर सकते है।

अर्द्ध–शासकीय संगठन (Semi.-Govt. Organizations)

शासकीय और अर्द्ध–शासकीय सगठनो के मध्य बिल्कुल पक्की पानी की टकी के समान (Water tight compartment) विभाजनीय दीवार बनाना एक कठिन समस्या है। बहरहाल, सभी चीजोको भलीभाति समझनेके लिए मै समझता हू कि देश मे हमारे राष्ट्रीय केडेट कौर (N. C. C.) और गृह–रक्षको (Home Guards) जैसे सगठनो को अर्द्ध शासकीय सगठनोकी श्रेणीमे रखा जा सकता है। विश्वके अनेक देशोमे इसी पद्धतिपर आयोजित और भी अनेक सगठन हो सकते है, लेकिन मै इस श्रेणीमे केवल इन्ही दो का उल्लेख करने का प्रस्ताव करता हू।

राष्ट्रीय केडेट कौर्प्स (National Cadet Corps)

राष्ट्रीय केडेट कोर्प्स भारतवर्षमे नवयुवकोका प्रधान सगठन है। देशके नवयुवको और नवयुवतियोमे प्रतिरक्षाकी रूचिको जागृत करने, सेवाके आदर्श, नेतृत्व, मित्रत्व और चारित्र्यके विकासके लिए समद द्वारा एक कानून पास किये जानेके अन्नतर जुलाई १९४८ ई. मे इसका श्रीगणेश किया गया था। शासन द्वारा प्रस्तावोकी रूपरेखा बनानेके लिए, सगठित की गयी विशिष्ट समिति द्वारा मार्च १९४७ ई. मे प्रस्तुत किये गये अभिस्तावोके परिणामस्वरूप यह कानून पास किया गया था।

आज किसी देशके लिए प्रतिरक्षाकी चार स्वीकृत पद्धतियोमे से आधुनिक युद्धमे नागरिक प्रतिरक्षा वास्तविक रूपमे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतिरक्षा है और इस उद्देश्यके लिए राष्ट्रीय केडेट कोर्प्स जैसे सगठनोका निश्चय ही बहुत अधिक महत्व है। देशकी रक्षाके साथ ही नागरिक प्रतिरक्षाकी समस्याओमे यह सगठन केडेटोमे एक बौद्धिक रुचि जागृत करता है। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय सकटकालमे सेनाको तुरन्त बढ़ानेके लिए उसके पीछे इस कोर्प्स के लोगोको प्रस्तुत रखना है।

इस आन्दोलनका उद्देश्य बहुत बडी सख्यामे नवयुवकोके समूहको तैयार करना है, जिसमेसे भारतीय सशस्त्र सेनाके लिए भविष्यके अधिकारियोको लिया

जा सके और जो मेरे मतानुसार नागरिक प्रतिरक्षा समस्याओंमे सहायता देने और सगठन करनेमे आपात या विपत्तिके क्षणोंमे प्रकाश सकेत (Beacon Light) के रूपमे स्वयको सिद्ध कर सके।

भारतवर्षमे प्रतिरक्षा मन्त्रालयमे राष्ट्रीय कैडेट कोर्प्स सचालनालय केन्द्रमे केन्द्रीभूत निर्देशन प्रदान करता है। एन सी सी मे तीन विभाग सम्मिलित है :—

(१) प्रवर विभाग (Senior Division) जो २६ वर्ष तक के कैडेटोको सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है।

(२) अवर विभाग (Junior Division) जो १३ से १७ वर्षके स्कूलोके विद्यार्थियोको प्रवेश देते है।

(३) कन्या—विभाग (Girls Division)

लडकोके प्रवर और अवर विभागो दोनो को पैदल सेना, नौ सेना और हवाई सेनाके उप विभागोंमे विभाजित किया गया है।

सशस्त्र सेनाओके नियमित अधिकारियोको नियन्त्रण, प्रशिक्षण और सहकारिताके लिए एन सी सी. से सम्बद्ध कर दिया गया है। एन. सी. सी. के प्रवर, अवर और कन्या विभागोके अधिकारियोको भी कैडेटोके प्रशिक्षणका कार्य दिया गया है। ये अधिकारी प्राध्यापक और अध्यापक है और अपने प्राथमिक परिक्षणके पश्चात् चुने गये है। कन्या विभागमे भी प्रवर और अवर टुकड़िया है। कन्या विभागकी प्रवर टुकड़ीका श्रीगणेश १९४९ मे हुआ था।

कन्या विभाग (Girls Division)

राष्ट्रीय कैडेट कोर्प्सका यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अग है। १९४९ ई मे कन्या विभाग (प्रवर टुकड़ी) की प्रथम तीनो टुकड़ियो—मध्यप्रदेश, पजाब और पश्चिम बगाल राज्यमे प्रत्येकमे एकको उत्थित किया गया था। इस प्रयोग मे बडी सफलता मिली और १९५२ मे कन्या विभागका निरन्तर विस्तार होता जा रहा है। १९५८ ई. मे मिली कन्या विभागकी योजनाको स्कूलो तक विस्तार किया गया और तबसे सम्पूर्ण देशके स्कूलोमे अवर टुकड़ीके दल (Troops) की सख्या खूब बढी है। कन्या विभागके प्रशिक्षणका मुख्य उद्देश्य था कन्याओके व्यक्तित्व (Personality) का विकास करना, उन्हे अत्यन्त आत्म—विश्वासी बनाने, उनके शरीरको सुस्वस्थ बनाने और उन्हे कतिपय आवश्यक विषयोमे प्रशिक्षित करनेके लिए, जिसमे कि वे सकटके क्षणोमे सामान्य रूपसे पुरुषोके द्वारा सपादित होनेवाले कुछ कार्योको कर सके। इस प्रशिक्षण का अक्षर—निर्माण (Syllabus) उन वर्गोकी अवस्था और उनके कैडेट्स की मानसिक प्रवृत्तियोको ध्यानमे रखकर ही बनाया गया है।

प्रवर टुकड़ी शारीरिक प्रशिक्षण, स्क्वाड–ड्रिल, नागरिकतामें प्रशिक्षण, मान–चित्र–पठन, सिग्नलमे प्रशिक्षण, सफाई, स्वास्थ्य, प्रथमोपचार और गृहसेवकाई, शस्त्र–प्रशिक्षण, वाद–विवाद और वार्ताओ और पिस्तोल चलाने आदिपर बल देती है।

भारतवर्षमे नवीनतम विकासोके सदर्भमे अब यह भी आवश्यक होगा कि 'राष्ट्रीय केडेट कोर्प्स मे प्रवर लडको और लडकियोको ऊपर वर्णित विषयोके अतिरिक्त जो कि उन्हें सिखाये ही जाते है और जो प्रथमोपचार और गृह–सेवाकी भाति नागरिक प्रतिरक्षाके अग है, नागरिक प्रतिरक्षाके कुछ अगोका आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान किया जाय।

पाठकोका ध्यान इस तथ्यकी ओर भी आकर्षित किया जाता है कि जब चीनी आक्रमणके फलस्वरूप भारतवर्षमे सकटकालकी घोषणा की गयी, तब हमारे देशमे जितने अधिक–विद्यार्थियोको हो सके, उतने अधिक विद्यार्थियोको अधिकसे अधिक सैनिक–प्रशिक्षण प्रदान करनेकी माग हुई थी। इसके फलस्वरूप समयकी आवश्यकताका अनुभव करते हुए शासनने उनके लिए नेशनल केडेट कोर्प्सके प्रशिक्षणको अनिवार्य कर दिया था। (Infantry N. C. C. Rifles) नामक नई इकाइयोकी वृद्धिके द्वारा यह योजना सभी विद्यार्थियोको एन. सी. सी. रैकमे प्रवेश पानेका सौभाग्य प्रदान करेगी। व्यापक रूपमे, एन्. सी. सी. की राइफल्स यूनिटको सेनाके राइफल रेजीमेण्टके आदर्शपर ही उसके अनुसार सज्जित, प्रशिक्षित और सगठित किया जाना चाहिए।

इस प्रसगमे पाठकोको ध्यानमे रखना चाहिए कि केडेटोको राष्ट्रीय अकादमी (National Academy) मे प्रवेश पानेके लिए एन. सी. सी. का प्रशिक्षण परिसपत्ति (Asset) है।

सेनामे एन. सी. सी. प्रशिक्षण प्राप्त कर्मचारियोकी भरती की सख्याको तीव्रगतिसे बढानेके लिए निर्णय लेकर शासनने अत्यन्त सुदर कार्य किया है। इस भरतीको बढानेके लिए सेनाके कमीशनप्राप्त रैकमे एन. सी सी. केडेटो के लिए कुछ प्रतिशत स्थान लगभग १० से १५ प्रतिशत तक स्थान बढानेके लिए शासनने अपने निर्णयकी घोषणा की है।

इस प्रसगमे यह ध्यान देने योग्य है कि एन. सी. सी. के अफसरोके प्रशिक्षणकी इकाइयोकी सख्याको देशके विभिन्न राज्योमे भी बढानेकी आशा की गयी थी जिससे कि उन एन. सी. सी. कडेटोको, जो सशस्त्र सेनामे नौकरी करनेके लिए स्वीकृति दे चुके है ऊचे ढंग का प्रशिक्षण मिल सके। ऐसी सुविधाके साथ ही ग्रीष्मावकाशके दौरान छह सप्ताहोकी अवधिके वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का भी

उल्लेख किया जा सकता है, जिसने केडेटोमे दल या समूह भाव (Team Spirit) का विकास करनेमे महत्वपूर्ण योग दिया है ।

एन. सी. सी. के विषयमे ये सब और अन्य अनेक तथ्य अत्यन्त रुचिकर है। स्थानाभावके कारण उसका सविस्तार वर्णन यहा नही किया जा सकता । इन सबके साथ ही '**सहायक केडेट कौर्प्स**' (Auxiliary Cadet Corps) के विषयमे भी दो शब्द कहना सगत होगा। सहायक राष्ट्रीय केडेट कौर्प्स रूपमे १९५३ मे एक नवीन नवयुवक का आन्दोलन सूत्रपात किया गया था। इस आन्दोलनका उद्देश्य स्कूलो और महाविद्यालयोके विद्यार्थियोको अनिवार्य प्रशिक्षण प्रदान करना था और जो हमारे देशके युवकोकी शारीरिक स्वस्थताको बढ़ावा देनेमे और चरित्र निर्माण करनेमे सहायक होना था । अन्य अनेक कारणोसे, जिनमे आवश्यक व्ययके वहनका भी प्रश्न सम्मिलित है, अब तक यह सम्भव नही है कि एन. सी. सी. को विस्तार देनेके हेतु इसमे बहुत बडी सख्यामे विद्यार्थियोको प्रवेश की आज्ञा दी जाय। इसके साथ ही जनता और स्वय विद्यार्थियोकी ओरसे पाठ्यक्रमातिरिक्त प्रशिक्षण पद्धतिके लिए एक सक्रिय माग आती रही, जो विद्यार्थियोमे '**टीम-स्पिरिट**' को वर्द्धित करेगी और सगठित समाज सेवाको प्रेरणा किवा प्रोत्साहन प्रदान करेगी। इस इच्छाके उत्तर स्वरूप कतिपय चुनी हुई शैक्षणिक सस्थाओमे राष्ट्रीय युवक आन्दोलन को शुरु किया गया था। यह आन्दोलन अब अपने प्रयोगात्मक स्तरको पार कर चुका है और इसकी सफलताओको दृष्टि पथमे रखते हुए शासनने इसे सहायक कैडेट कौर्प्स (Auxiliary Cadet Corps) के रूपमे सगठन करनेका निश्चय किया है, जिससे कि यह एन. सी. सी. के साथ अपेक्षाकृत अधिक निकटका सम्बन्ध रख सके।

यहा यह भी याद रखनेकी बात है कि कि सामान्य रूपसे भारतवर्षमे पालकोने एन. सी. सी. का स्वागत किया है। वे सोचते है कि एन. सी. सी. का प्रशिक्षण बादके जीवनमे उपयोगी होगा और उनमेसे लगभग ७० प्रतिशत लोगोने इस अन्यतम सगठनमे प्रवेश लेनेके परिणामस्वरूप बच्चोके अध्ययनमे हुए प्रत्यक्ष सुधारको देखा है। वे इसकी उपयोगिता से पूर्णतः विश्वस्त है और उन्होने अनेक स्थानोपर कहा भी है कि वे चाहेंगे कि उनके सभी प्रतिपाल्य (wards) इस उपयोगी शगल या उपव्यवसाय (Avocation) को अपनाये।

उपर्युक्त सार-वृत्त (Resume) से यह स्पष्ट हो जायगा कि राष्ट्रीय केडेट कौर्प्स (N.C.C.) का स्वरूप या गुण का सैन्य-पक्षकी ओर पर्याप्त अशोमे झुकाव है। मै महसूस करता हू कि यह महत्वपूर्ण युवक आन्दोलन, जिसमे शासकीय और अ-शासकीय अधिकारियोने महत्वपूर्ण कार्य किया है, अभी और अधिक मूल्यवान सिद्ध होगा, हा यह उसी स्थितिमे सम्भव

है, जबकि युवक लड़कों और लड़कियोंको (उनके) प्रशिक्षण विषयके अन्तर्गत प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे अंग रूपमें आनेवाले उपायोंके अतिरिक्त नागरिक प्रतिरक्षामें भी आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान किया जाय।

इस प्रसंगमें यह ध्यान रखने योग्य है कि पूर्ण व्यक्तित्व-निर्माणके लिए केवल पुस्तकों और साहित्यका अध्ययन ही पर्याप्त नहीं है। यह आवश्यक है कि जीवनकी आवश्यक वस्तुओं में आभ्यासिक अनुभव अवश्य प्राप्त होना चाहिए और इस उद्देश्यको प्राप्त करनेके लिए, ऊपर वर्णित एन सी. सी. के विषयोंके अतिरिक्त नागरिक प्रतिरक्षा विषयको भी उसमें सम्मिलित करना चाहिए और इन सबमें लड़के या लड़कीको ऐसे विषयोंमें प्रशिक्षण प्राप्त होगा जो किसी भी व्यक्तिके जीवनमें अत्यन्त मूल्यवान सिद्ध होगा। निश्चय ही ऐसे कैडेट इस देशके अत्यन्त उपयोगी नागरिकके रूपमें प्रमाणित होंगे और वस्तुतः ऐसे लड़के और लड़कियाँ अन्यत्र भी इस प्रकारके किसी भी संगठनमें समान रूपसे मातृभूमिके लिए परिसंपत्ति (Asset) के रूपमें सिद्ध होंगे।

आधुनिक युगमें प्रतिरक्षाकी ही तरह नागरिक प्रतिरक्षाको अचानक ही संगठित नहीं किया जा सकता, क्योंकि आधुनिक युद्धका स्वरूप ही कुछ और है और इसी कारण अब परिस्थितियाँ भी पहलेकी अपेक्षा बहुत बदल गयी हैं। अब यह दर्शकोंका प्रश्न हो गया है और इसीलिए एन. सी. सी के लोग राष्ट्रके उन सौरभ भरे फूलोंमें हैं, जिनकी विशेष देखभाल करनी है और वस्तुतः ये वही लोग हैं, जो समयकी प्रक्रियाके द्वारा वर्तमान पीढ़ीकी समाप्ति के पश्चात् भारतवर्षकी भविष्यकी पीढ़ीके पुर्ननिर्माणका नेतृत्व करेंगे और विश्वका भविष्य प्रमुख रूपसे इस बातपर निर्भर करेगा कि वे हमारे समयके पीड़ित-संकटापन्न विश्वको कौन-सा संदेश देते हैं।

सभी संबद्ध व्यक्तियोंकी रुचिमें यह आवश्यक है कि ऐसे बच्चोंको प्रतिरक्षा और नागरिक प्रतिरक्षाके उपायोंका आवश्यक प्रशिक्षण अवश्य प्रदान किया जाना चाहिये; इन्हें हमारे समयमें प्रस्तुत विचार्य विषयके सिलसिलेमें एक सह-सम्बन्धित शब्दके रूपमें समझा जाता है।

गृह-रक्षक (HOME GUARDS)

मैं इस परिच्छेदमें गृहरक्षियोंके विषयको दो भागोंको वर्णन कर रहा हूँ। प्रथम भागका विचार्य विशेष ग्रेट ब्रिटेनमें गृह-रक्षियोंका उद्भव और कार्य करने की रूपरेखा है और द्वितीय भागका वर्ण्य विषय है कि किस प्रकार बम्बईमें १९४६ में गृह-रक्षी-संगठनकी नींव डाली गयी और तबसे भारतके अन्य भागोंमें किस प्रकार इसका प्रसार हुआ और इसने कैसे कार्य किया।

जहां तक ग्रेट ब्रिटेनका सम्बन्ध है, मै पाठकोका ध्यान मई–अगस्त १९४० के मध्यके समयकी ओर, जबकि गत युद्धके दौरान धमकी द्विगुणित हो गयी थी, आकर्षित करना चाहता हू। मेरा लेखा मिस्टर टी. एच. ओ. ब्रायन की पुस्तक हिस्ट्री आफ दी सेकेण्डवर्ल्डवार "सिविल डिफेन्स" मे वर्णित तथ्योपर आधारित है और जिसके प्रति मै अपना हार्दिक आभार व्यक्त करता हू। आक्रमण और अग्रेषणकी नवीन मात्रा अत्यन्त भयकर रही क्योकि जर्मन मेनाओने तडित गतिमे प्रगति की थी। समस्त बाह्य आक्रमणोका खतरा अधिक बडे खतरेमे समाहित हो गया। एसा पहिले कभी तजुर्बा भी नही हुआ था और न ऐसा कभी ख़्याल ही हो सकता था।

स्पष्टतः ऐसी स्थिति थी कि यदि फ्रासका पतन होता है, तो जर्मन अपनी समस्त वायुसेनाको ब्रिटेनके विरोधमे केन्द्रित कर देनेके लिए स्वतत्र हो जाते। यह वहत् आपात (Greater Catastrophe) जर्मनोको नॉर्वेसे ब्रिटनी तक फैले हुए आधारोमे ब्रिटिश द्वीपसमूहके जिसमे समस्त वेस्ट कोस्ट, स्काटिश और आईरिश स्थल भो सम्मिलित है, किसी भी भागके विरोधमे दूर दूर तक मारक बमवर्षको (long range bombers) को भेजनेमे समर्थ बना सकता था। इन भयावह (Formidable) शक्तियोका सामना करनेके लिए ब्रिटेनको गृह–आधारित (Home based) लडाकू सेनामे ७०० प्रथम पक्तिमे युद्धक हवाई जहाजोको, जिनके पीछे तुरन्त महायता प्रदान करनेके लिए प्राप्त हो सकने योग्य २३० युद्धक जहाजोको सुरक्षित रखना था, इकट्ठा करना पडा। सर्वाधिक खराब स्थिति यह थी कि लडाकू विमानोका उत्पादन क्षतिके साथ कदम मिलाकर नहीं चल सकता था और इनमेसे वहुत से तो दो शहरो–कैवेन्ट्री और बरमिघम मे केन्द्रित थे, और ये दोनो शहर जर्मनोके लक्ष्य थे। जहा तक नागरिक प्रतिरक्षाका सम्बन्ध है, यह कहा गया था कि जब तक कि वहापर (Quasipeace time Organisaton) अथवा अर्ध शान्तिकालीन व्यवस्था चलती रहतो वहा यह गारण्टी नहीं थी कि ग्रेट ब्रिटेन हालत को सभाल सकेगा। इन और ऐसे ही अनेक कारणो से सामान्य ब्रिटिश 'सिविलियन' (Civilian) सामान्य रूपसे हवाई आक्रमणोसे होनेवाले खतरोकी धमकियोका अथवा वस्तुतः हो चुके हवाई हमलोका विस्तृतम ज्ञान रखते थे। इन्ही सप्ताहोमे हुए केन्द्रीय सरकारके पुनर्गठनके अनुसार जनरल हेडक्वार्टरो, गृह–सेनाओ और इनके अनुवर्ती संगठनोने स्वयको सशक्त रूप से क्षेत्रमे पाया। १४ मई १९४० को स्थानीय प्रतिरक्षा स्वैच्छिक कार्यकर्ता (Local Defence Volunteers) जिनको तुरन्त गृह रक्षक का नाम दिया गया (soon rechristened the Home Guards) नियमित सेना को ब्रिटिश द्वीपसमूहकी प्रतिरक्षाके लिए पूरक रूपमे रखे गये। आठ सप्ताह से भी कम समयमे इन स्वयंसेवकोकी सख्या दस लाख से भी अधिक हो गयी। यह एक

महत्वपूर्ण बात है कि वे उन्ही पुरुष नागरिकोके वर्गोसे लिए गए थे जिन्होंने नागरिक प्रतिरक्षाके लिए स्वयसेवकके कार्य किए थे। नागरिक प्रतिरक्षाके अशकालिक सदस्योंकी भाति उन्हे छोटे–छोटे भत्ते मिलते थे, पर उन्हे वेतन नही दिया जाता था। लेकिन इनके प्रतिकूल वे सशस्त्र : कमसे कम सिद्धान्त रूपमे थे : और अपने कार्योंके समय विधि (Law) और अनुशासन (Discipline) के अन्तर्गत थे। **इस प्रकारसे ब्रिटेन में १४ मई, १९४० को गृह–रक्षियोंका अविर्भाव हुआ।**

जुलाई १९४० मे यह घोषणा की गयी थी कि ब्रिटेनमे सैनिक प्रतिरक्षा के लिए स्वयंसेवकोकी १,३००,००० व्यक्तियोसे अधिक सख्या हो गयी है। उस देशकी युद्धक प्रवृत्तिका इससे अधिक श्रेष्ठतर निश्चायक–प्रमाण (conclusive proof) और क्या हो सकता है? इच्छानुकूलता–सानुकूलता साजसामानकी उपलब्धि से अधिक प्रभावकारिक थी (willingness outran equipment) और प्रारम्भमे सादे वस्त्रोमे ओर सकल्पकालिक अस्थर्थी (makeshift) अस्त्रोके साथ उनका प्रशिक्षण कार्य किया गया। इस नागरिक शक्ति (civilian force) की कथा राष्ट्रीय उत्साहके विजयकी एक गाथा है। बडे ही दरिद्र रूपमे सज्जित ओर साधारण रूपमे सगठित स्थानीय प्रतिरक्षा स्वयसेवको का झुण्ड अपने इस मूल रूपमे एक चुस्त, सुन्दर रूपमे अनुशासित सेनाके रूपमे उगा– उभरा और इसे विशेष तकनीकी ढगसे प्रशिक्षित किया गया जिससे नियमित सेनाकी एक सहायक सेनाके रूपमे इसे प्रतिष्ठा मिली। : १ : गति · २ : संचालन (Mobility) : ३ : मोर्चे या सड़कोमे रहकर कार्य करनेकी क्षमता, और अग्निदल (fire power) को इस तकनीकके चार आवश्यक अंगोंके रूपमे बताया गया। स्थानीय जानकारी स्पष्ट रूपसे बडी महत्वपूर्ण होगी। अनेक स्थानीय युद्धोने, जो आभ्यासिक प्रदर्शनके लिए संगठित किए गएथे– गृहरक्षियोको अत्यन्त मूल्यवान अनुभव प्रदान किया। यह इन्ही के माध्यमसे था कि गृहरक्षियोने यह सीखा कि वे किस उपायसे आपत् कालमे अपनी और अपने देशकी रक्षा कर सकते है। अनुभवके उद्देश्यसे ऐसे प्रदर्शनो को सगठित किया गया था और गृहरक्षी और सैनिक दोनोने गलियोकी लड़ाई (streetfighting) के अभ्यासोमे भाग लिया। आक्रमणके क्षणोमे वे शत्रुको किस प्रकार रोक सकेगे–– इसके भी अभ्यासमें दोनोने भाग लिया। ये सब भारतवर्षमे गृहरक्षियोके लिए अत्यन्त उपयोगी हो सकेगे और वे अपने अभ्यासोकी व्यवस्था करते समय ऐसे उदाहरणोसे लाभ उठा सकते है।

यह ध्यान देनेकी बात है कि अपने उत्साहके साथ ये गृहरक्षी कुछ भूले भी कर सकते है। इसी प्रकारकी भूलोमे एक थी––जबकि सितम्बर १९४० के प्रारम्भ मे उनके कमाण्डरोने कतिपय क्षेत्रोमे घण्टियाँ बजाई थी और इस प्रकार कुछ उलझन

उपस्थित कर दी थी। संपूर्ण देशमें चर्चोकी घण्टियोंको बजनेपर प्रतिबन्ध था, तो भी उन्होने ऐसा किया था। जैसा कि इस पुस्तकमे पहले ही उल्लेख किया जा चुका है—हवाई या समुद्री आक्रमणके समय चेतावनी देनेके लिए ऐसा करना केवल सेनाका ही कार्य था।

प्रारम्भ से ही गृह–रक्षी सगठन इतना लोकप्रिय रहा कि शीघ्र ही यह ए. आर. पी. (Air Raid Precautions) हवाई हमलेसे बचाब सेवाका एक भयकर : (Formidable) प्रतिस्पर्धी हो गया । यहा हम दो उदाहरण देना चाहेगे—बर्मिघम और शेफील्डमे पर्याप्त सख्यामे सरक्षको और अन्य व्यक्तियोने इस बौद्धिक संगठनमे, जिमकी सख्या अस्तित्वमे आनेके कुछ ही सप्ताहोके अन्दर तीव्र गतिसे बढी थी–मे प्रवेश हेतु प्रार्थनापत्र दिया था। उनके अस्तित्वमे आनेके उत्तरवर्ती कुछ ही वर्षोमे राष्ट्रीय अग्नि–सेवाके कुछ भागो मे गृहरक्षियोने भी अपनेको प्रतिस्पर्धी (competition) के रूपमे सिद्ध कर दिया था और यह तब हुआ जबकि सरकार द्वारा अशकालिक नियुक्तिका निर्णय किया गया था और जबकि इस और इसके अतिरिक्त अनेक अन्य कारणोमे राष्ट्रीय अग्नि–सेवाके लिए अपने लक्ष्य तक पहुचना कठिन हो गया था। १९४१ ई के अन्त तक अशकालिक जनबल : (Manpower) . के लिए माग वृहत् (Infinitely) थी और बाज़ार विशेष रूपसे लघुतर था। अब गृहरक्षी, प्रेक्षक (Observer) दल और अग्नि–गारद (Fire Guard) : के प्रतिस्पर्धाके दावे थे और उद्योगोमे अधिक घण्टो तक कामकी माग की गयी थी।

ब्रिटेनमे गृह–रक्षियोंके प्रशिक्षणके विषयमे भी दो शब्द महत्वपूर्ण है। इसके प्रारम्भसे लेकर १९४१ के अन्त तक यह सर्वोत्तम व्यवस्थित रूपमे चला। जनवरी १९४२ मे ए. आर. पी. स्टाफ स्कूल—जो कि युद्ध छिडनेपर बन्द हो गया था–का एक उत्तराधिकारी 'स्टोक डीएबरनन, सरे 'मे नागरिक प्रतिरक्षा स्टाफ महाविद्यालय खुलनेके द्वारा स्थापित हुआ था। इसका प्रथम उद्देश्य था—नागरिक प्रतिरक्षाके शासन–प्रबध और उच्चतर सगठनके विषयमे स्थानीय प्रवर अधिकारियोको प्रशिक्षण प्रदान करना और हवाई हमलोमे प्राप्त पाठोकी और साग्रामिक (Operational) तकनीकोकी पूर्ण जानकारी प्रदान करना। १९४२ मे पूरे साल भर तक नागरिक प्रतिरक्षा सेवा-ओकी प्रशिक्षण–योजना दोनो—विषय रूपमे और सलग्न कर्मचारियोके रूपमे—प्रसार पाती रही। मईमे महिलाओकी स्वैच्छिक मेवा–समिति" ने अपने सदस्योंको बुनियादी नागरिक प्रतिरक्षा –उपायोमे प्रशिक्षित करनेका निश्चय किया। अगस्त मे 'युद्ध–कार्यालय' ने गृह–रक्षीके लिए इसी प्रकार की एक योजना स्थापित (Introduced) की और क्षेत्रीय प्रशिक्षणाधिकारियों और स्थानीय अधि-कारियोको प्रशिक्षण, साज–सामान और स्थान देकर उनकी सहायता देनेके लिए कहा

गया था। ये प्रशिक्षक सामान्य रूपसे वे होते थे जो मरेके ए. आर. पी. स्टाफ स्कूलमे नागरिक प्रतिरक्षा–प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे। यह द्रष्टव्य है कि गृहरक्षियोको उसी पद्धतिपर प्रशिक्षित किया गया था जिस पर क्षेत्रीय प्रशिक्षणाधिकारियो और 'महिला-ओकी स्वेच्छिक सेवा' को। इससे स्पष्ट हो जायगा कि नागरिक प्रतिरक्षाका ज्ञान गृहरक्षियोके लिए––उनके कार्य करनेके एक आवश्यक अगके रूपमे' युद्ध–कार्यालय' के द्वारा पुरस्थापित किया गया था। इस प्रसगमे यह उल्लेख किया जा सकता है कि स्थानीय मुख्यालयो मे प्रशिक्षण –सुविधाओ का उपयोग न केवल बचाव सेवाके सदस्योके ही लिए, बल्कि गृहरक्षियोके सदस्योकी बढ़ती हुई सख्याके लिए और सशस्त्र सेनाओके लिए भी किया गया था। यह स्थिति विशेषरूपसे स्काटलेड मे थी जहा पर १९४१ ओर १९४५ के मध्य गृहरक्षियो को तीन (बचाव–सेवा–स्कूलो) मे दुर्घटना–नियन्त्रण और बचाव–कार्यमे प्रशिक्षित किया गया था।

जहा तक गृह–रक्षियो और अन्य ए. आर. पी. कार्यकर्ताओके यूनिफार्म (Uniforms) की व्यवस्थाका सम्बन्ध है, इस विषयमे काफी लम्बे समय तक विचार किया जाता रहा। इस कार्यमे सलग्न विशाल समूहमे से प्रत्येक कार्यकर्ता-ओके मन्त्रिमडल नि:शुल्क वस्त्र प्रदान करनेके लिए एक बहुत बड़ी सख्यामे धन, नगर रक्षको तथा हवाई हमले से बचावसे सम्बन्धित कार्यकर्ताओको गणवेषकी पूर्तिके सम्बन्धमे एक दीर्घ अवधि तक विचारोका मन्थन चलता रहा। वस्तुत: इस कार्यमे बड़ी सख्यामे रत लोगोमे से प्रत्येकको नि.शुल्क गणवेषकी पूर्तिके लिए एक बड़ी धनराशिके व्ययके लिए मन्त्रालय हृदयसे राजी नही था। १९४० की वसन्त तथा ग्रीष्म ऋतुओमे सेवाकी कुछ शाखाओको हवाई–हमलेसे सावधानीसे सम्बन्धित नीली-सूती वर्दी प्रथम बार दी गयी थी। इन शाखाओमे लन्दन सहायक–एम्बुलेन्स : (Ambulance) सेवा भी थी कि जिससे इस पुस्तकका लेखक सम्बद्ध था। शेष लोगोको उस समय तक भी इस्पातके बने टोप तथा भुजाकवचकी पूर्ति की गयी थी, किन्तु भारी हवाई हमलोके प्रारम्भके फलस्वरूप सुरक्षित रखनेवाले सुरक्षापूर्ण वस्त्रोका प्रश्न शीघ्र ही काफी गम्भीर बन चुका था। इसका फल यह हुआ कि खुले स्थानमे गैस–विरोधी कार्य के लिए तैलीय–चमड़ेकी जाकेट : (Oilskin Jackets) और रबरके जूतोके उपयोगकी स्वीकृति दी गयी और उद्धार कार्य करनेवालोकी टोपियो (Groundsheet caps) और चमड़ेके जूतोकी पूर्ति की गयी। इन सेवाओके पूर्णकालिक सदस्यो और नगर रक्षकोको सम्मिलित करते हुए उन अशकालिक सदस्योको जो कि एक माहमे ४८ घण्टे कर्तव्यरत रहते थे, मई १९४१ से ही नीले सर्जके ऊपरी वस्त्र, लबादा (Overcoat) टोपियो और जूतोकी पूर्ति प्रारम्भ हो सकी थी।

जहां तक साजसज्जाका प्रश्न था, ऊपरकी ओर पानी फेंकनेवाले पम्पो की पूर्तिकी मागके अनुपातमें विशेषकर ग्रेट ब्रिटेनके अन्य भागो तथा लन्दनपर होनेवाले अग्नि-दाहक आक्रमणोकी अवधिमे आवश्यक मांगकी अनुपातमे, सीमित और धीमी थी। उस समय कुछ प्राथमिकताओंको मानना पडता था। इसके साथ ही काफी मांग होते हुए भी केवल आशिक पूर्ति ही हो पाती थी। अतएव अग्निदाहक आक्रमण जैसे गंभीर समयमे आरक्षी दल, गृहरक्षक, सगठित दमकल दल और नगररक्षकोको इस साम-ग्रीकी पूर्ति करनी पड़तीथी। इस विश्लेषणसे यह दर्शित होता है कि नगररक्षकोको प्राथमिकताकी सूचोमे रखा गया था और इस तथ्यको ध्यानमे रखते हुए अग्निदाहक आक्रमणकी अवधिमे उनके महत्वको मन्त्रालय द्वारा समुचित मान्यता दी गयी थी।

१९४० की अन्तिम छैमाहीमे जब ब्रिटेनपर आक्रमणोकी सधनतामे वृद्धि हुई थी, जब जर्मनोका सबसे शक्तिशाली अस्त्र उनके विरोधीका तैयार न होना ही था। अग्निको रोकनेकी क्रिया अपने शैशवमे थी, साजसज्जा अत्यन्त कम थी ओर व्यवसाय प्रधान जिलोमे सड़कोसे सम्बन्धित दमकल दलोंकी सख्या बहुत थोड़ी थी। कार्यस्थलोके भीतर प्रवेश करनेके अधिकारपर प्रतिबन्धोके कारण दमकल दलोकी क्षमता और सीमित हो जाती थी। परिणामस्वरूप प्रतिरक्षा :सामान्य : विनिमय १९३९ के द्वारा सहायक दमकल दलके सदस्योको प्रवेशका जो अधिकार दिया जा चुका था, वह १९ अक्तूबर १९४० को हवाई –हमलेसे रक्षको तथा किसी भी मान्यता प्राप्त स्वैच्छिक दमकल–दलके सदस्योको दिया गया था। बादमे यह अधिकार गृहरक्षक, स्थानीय अधिकारियो द्वारा निर्मित दमकल दलके सदस्यो और सिपाहियोको भी दिया गया था। ग्रेट ब्रिटेनमे अग्निसे बचानेके बारेमे गृहरक्षकोकी स्थितिकी मान्यताके बारेमे इस तथ्यसे पता चल जाता है।

मै ऊपर बता ही चुका हू कि १९४१ के अन्तिम चरणमे ग्रेट ब्रिटेनमे राष्ट्रीय जनशक्तिकी कमी अनेक समस्याए प्रस्तुत कर रही थी। अतएव उस वर्ष दिसम्बरमें एक नथे प्रतिरक्षा विनिमय द्वारा नागरिक प्रतिरक्षाके लिए लोगो को पूर्णकालिक या अशकालिक सेवाएं देनेके लिए श्रम तथा राष्ट्रीय सेवामंत्री को अधिकृत किया गया था। चूकि उस समय तथा उसके बाद भी बमबारीके आक्रमणोंसे उत्पन्न अग्निके भयकी अपेक्षा ब्रिटेनपर आक्रमणका ख़तरा और अधिक निकट प्रतीत होता था अतएव जनशक्तिके निर्धारणके सम्बन्धमे गृहरक्षकोसे प्रतिस्पर्धामे प्राय: दमकल रक्षकोको अधिक महत्व नही दिया जाता था। यह एक ऐसा स्मरण रखने योग्य तथ्य है जिससे ज्ञात होता है कि ग्रेट ब्रिटेनमे नागरिक प्रतिरक्षा–सेवाओमें गृहरक्षकोंके महत्वमे क्रमश: वृद्धि होती जा रही थी।

हवाइ–हमलेसे बचावसे सम्बद्धित नागरिक सेवाओके बारेमे कुछ क्षेत्रोमें सैनिक दलोका बुलाया जाना एक महत्वपूर्ण बात थी। बमबारीके पूरी तरह

प्रारम्भ होनेके पश्चात् अक्तूबर १९४० मे ब्रिटेनके सामान्य मुख्यालय (General Head Quarters) ने अत्यन्त महत्वपूर्ण सैनिक कारणोको छोडकर शेष बातोके लिए सैनिक दलोको मुक्त रूपसे नागरिक अधिकारियोके अन्तर्गत कर दिया था। उन्होने निम्नलिखित आदेश समस्त सेनानायकोको दिए थे—

"अभी हाल ही की भारी बमबारीसे कुछ क्षेत्रोमे नागरिक साधनोको काफी क्षति पहुची है। प्रधान सेनापति की इच्छा है कि जहां बमोके द्वारा नागरिक सम्पत्तिको क्षति पहुची हैं, वहा अपने कार्य तथा प्रशिक्षणकी सीमाओं को ध्यानमे रखते हुए सैनिक दलोको यथासम्भव सहायता करनी चाहिए। हवाई हमलेसे सावधानीसे सम्बन्धित नागरिक सेवाओके परामर्शसे ऐसी सहायता देनी चाहिए।"

यहा यह ध्यानमे रखा जाय कि असैनिक अधिकारियोको सहायता देनेके लिए सुलभ सैनिक दलोमे तब गृहरक्षक सम्मिलित कर लिए गए थे ।

ब्रिटेनमे नगररक्षकोकी स्थितिके बारेमे जो अन्तिम महत्वपूर्ण बात ध्यानमे रखने योग्य है उसका सम्बन्ध 'व्ही' आकारके अस्त्रोके आक्रमण के समय उनके द्वारा दी गयी सहायतासे है। इन 'व्ही' (V) आकारके अस्त्रोके लगातार आक्रमणके फलस्वरूप यह आवश्यक हो गया कि समस्त भेद्य (Vulnerable) क्षेत्रोमे नागरिक–प्रतिरक्षा दलमे ऐसे लोगोकी पूर्ति लगातार चलती रहे, जो पूर्णकालिक अथवा अशकालिक कर्मचारियोके रूपमे प्रतिदिन काफी लम्बे समय तक कर्तव्यरत रहे। चूकि हवाई हमलेसे बचावमे सम्बन्धित सेवाओके पुष्टीकरणके लिए यथासम्भव अधिकसे अधिक स्वयसेवकोकी आवश्यकता थी अतएव गृहस्थित सैनिक दलोके प्रधान सेनापति ने समस्त नगर रक्षक सेनापतियोको यह निर्देश दिया कि वे उन शर्तोकी उदार व्याख्या करे जिनके अन्तर्गत गृहरक्षक नागरिक–प्रतिक्षा सेवाओको सहयोग दे सकते थे तथा जिनके कारण उन समस्त सदस्योको, जो किसी अन्य कर्तव्यके लिए आवश्यक नही थे, अपने निवासस्थानोके क्षेत्रोमे सडकोंपर कार्यरत दमकल दलोके साथ जाना पड़ता था। फलस्वरूप आवश्यकताके समय हवाई–हमलेसे बचावसे सम्बन्धित सेवाओके पुष्टीकरणके लिए किए गये आव्हानका गृहरक्षकोने बडी स्वेच्छा तथा बडे हर्षके साथ अनुकुल उत्तर दिया था। यह तथ्य स्वय ही गृहरक्षकोके उस महत्वको प्रकट करता है जो द्वितीय महायुद्धके इतिहासमे ग्रेट–ब्रिटेनके सबसे बुरे समयमे उन्हे प्राप्त हुआ था।

जहा तक भारत वर्षमे गृहरक्षकोका सम्बन्ध है, मै यह देखता हू कि बम्बईमे हुई गड़बड़ीके समय इसका प्रारम्भ हुआ था—यद्यपि यह गडबडी ग्रेट ब्रिटेनपर

आक्रमणके उस भयके समान नही थी जिसके फलस्वरूप उस देशमे जैसा कि पहिले बताया जा चुका है, आठ सप्ताहोमे भी कम समयमे कमसे कम दस लाख गृहरक्षक भर्ती हुए थे। बम्बईमे साम्प्रदायिक दगोकी गडबडीके समय १९४६ के दिसम्बर माहमे तत्कालीन गृहमन्त्री श्री. मोरारजी देसाईने विधि तथा व्यवस्था को बनाए रखनेमे सरकारकी सहायता करनेके लिए पुरुषो तथा महिलाओका नागरिक-दल प्रारम्भ करनेका निश्चाय किया था। उन्हे यह प्रतीत हुआ था कि गड़बडीके क्षेत्रोमे शान्ति तथा सुस्थिरता लानेके लिए केवल सरकारी बल ही काफी नही था और उन्होने यह भी महसूस किया कि नागरिकोकी भी सहायता करनी चाहिए और वस्तुतः शान्ति और सद्भावनाके वातावरणका निर्माण करनेमे हाथ बटाना चाहिए। ऐसी स्थितियोमे ही श्री मोरारजी देसाईने, जो कि "गृहरक्षक आन्दोलनके जनक" (Father of Home Guard Movement) भी माने जाते है, बम्बई नगरमे गृहरक्षकोका सगठन प्रारम्भ किया था। प्रशिक्षण प्राप्त करनेके पश्चात् जैसे ही उत्साही स्वयसेवक कर्त्तव्यके लिए नियुक्त किए गए, वैसे ही अल्प अवधिमे ही लड़ाईके फलस्वरूप बटे हुए समाजमे शान्तिकी भावना लौट आई थी और नगरमे पुन. सामान्य जीवन चलने लगा था।

बादमे बम्बईसे इस सगठनका विस्तार अहमदाबाद तथा अन्य स्थानोमे हुआ था। क्रमशः राज्यके जिलो और तालुकोमे यह सगठन पहुच गया था और आज इस आन्दोलनने अपना सन्देश सघके अन्य समस्त राज्योमे फैला दिया है।

दबाव और तनाव स्थितिमे, प्राकृतिक सकटोके समय और जहा कही भी आवश्यकता पड़ी, गृहरक्षक दलके सदस्योने सरकारको सहायता पहुचायी है। बम्बईके गृहरक्षक दूसरे स्थानोके लिए आदर्श बन गए थे। किन्तु बम्बई के विभाजनके साथ ही पुराने सगठनकी स्थिति समाप्त हो गयी और वह गुजरात तथा महाराष्ट्रके नए राज्योके बीच विभाजित कर दिया गया था। इसके पश्चात् यह आन्दोलन प्रायः और अधिक वेगके साथ विकसित हुआ और गुजरात, महाराष्ट्र, पजाब, मध्यप्रदेश, मैसूर, दिल्ली, आन्ध्र प्रदेश तथा अन्य स्थानोमे इसका जो तीव्र विकास हुआ, वह उल्लेखनीय है। इस सेवाके कर्मचारियोको अग्निसे बचाव करने तथा तत्सम्बन्धी विषयोमे प्रशिक्षण देनेके लिए सन् १९५६ मे एक प्रशिक्षण पाठशाला भी हैदराबादमे स्थापित की गयी थी।

यहा यह ध्यानमे रखने योग्य है कि जाति, पथ, रग और व्यवसायकी भावनाओके परे गृहरक्षकोमे सभी श्रेणियोके लोग है। व्यवसायी, वकील, अभियान्त्रिक, चिकित्सक, लिपिक, छात्र तथा विद्वान व्यक्ति—इन सबने जनसेवाकी भावना मात्रको आगे बढ़ानेके हेतु अपना समय तथा अपनी शक्ति अर्पित करते हुए रक्षकोंके संगठनमे अपनेको सम्मिलित किया था। इस

संगठनमें सम्मिलित होनेपर प्रत्येक नगररक्षकको जिसको गृहरक्षक के नाम से भी पुकारते है सेवाकी प्रतिज्ञा करनी पडती है। इस प्रतिज्ञाके अनुसार गृहरक्षक यह घोषित करता है तथा निश्चय प्रकट करता है कि वह पक्षपात या प्रेम, ईर्ष्या, या द्वेष या साम्प्रदायिक या राजनीतिक भावनासे प्रेरित न होते हुए सेवा कार्य करेगा। वह यह भी निश्चय करता है कि वह अपनी समस्त शक्तिके साथ शान्तिकी स्थापना करेगा तथा उसे बनाए रखेगा और जन तथा धनके विरुद्ध होनेवाले अपराधोको रोकेगा। आगे वह यह भी प्रतिज्ञा करता है कि अपनी पूरी कुशलता तथा अपने पूरे ज्ञानके साथ विधिके अनुसार वह एक सदस्यकी भाति अपने कर्तव्यका निर्वाह ईमानदारीके साथ करेगा और सरकार अथवा उसके बड़े अधिकारियो द्वारा निर्धारित कर्तव्यमे धार्मिक अथवा राजनीतिक भावनाओ की अड़चण नहीं आने देगा। यह प्रतिज्ञा इस सगठन के जो कि अराजनीतिक और पूर्णतः निष्पक्ष है, वास्तविक गुणको प्रतिबिम्बित करती है।

यहां यह ध्यानमे रखा जाए कि गृहरक्षक आरक्षी नही है, परन्तु वे उपर्युक्त सेवाके अतिरिक्त कई प्रकारसे आरक्षीकी सहायता करते है। गृहरक्षक संगठनकी महिला स्वयंसेविकाएं भी पुरुष गृहरक्षकोके साथ कन्धेसे कन्धा भिड़ाकर कर्तव्य-रत रही है। वे अपने पुरुष प्रतिरूपोकी भाति ही उसी प्रकारका प्रशिक्षण प्राप्त करती है और अनेको अवसरोंपर उन्होने अपनी क्षमता प्रमाणित की है।

तो, पन्द्रह वर्षोकी अवधि पूरी करनेके पश्चात् यह उचित समझा गया कि समाजके लिए उसकी उपयोगिताको मापनेके लिए गृहरक्षकोके कार्यका मूल्याकन तथा पुनःनिरीक्षण होना चाहिए। तदनुसार, महाराष्ट्र सरकारने भारतीय सेनाके भूतपूर्व प्रधान सेनापति जनरल के. एम. करिअप्पाकी अध्यक्षतामे इस विषयके कुशल व्यक्तियोकी एक समिति नियुक्त की थी। यह समिति राज्यके कई ज़िलोमे गयी और शासनके तथा आरक्षी विभागके वरिष्ठ अधिकारियो, राज्यके विधायको और जनप्रतिनिधियोसे, जिनमें वकील, चिकित्सक, विभिन्न राजनीतिक दलोके व्यक्ति, शिक्षाशास्त्री, भूतपूर्व सैन्य अधिकारी, व्यवसायी तथा प्रमुख समाचार पत्रोके सम्पादक सम्मिलित थे, भेट किया था। अन्ततः अपने विचार –विमर्शको समाप्त करते हुए समितिने यह मत प्रकट किया :–

"हम गृहरक्षक संगठनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाहेगे। इस संगठनने पन्द्रह वर्षोमें बहुत सुदर कार्योंका विवरण प्रस्तुत किया है। यह अधिकार उस समर्थनके कारण संभव हुआ है जो इस संगठनको राज्य सरकारसे और विशेष-कर श्री मोरारजी देसाई और श्री वाई बी चव्हाण जैसे मुख्यमन्त्रियोसे प्राप्त हुआ था। धनी हो या निर्धन, उच्च हो या नीच, समस्त वर्गोके व्यक्तियों से संग-ठनके लिए जो अनुकूलता प्राप्त हुई थी, वह महत्वपूर्ण रही है। इस संगठनके द्वारा राजनीतिक उत्साहको आरक्षित विशाल संग्रह तथा समाजकी उपयोगी सेवा करनेकी भावनाको प्रकटित तथा प्रेरित किया गया है।

"इस संगठनके निर्माणका श्रेय अधिकतर सेनानायक जनरल मानेकजी को है जिन्होने जनताके लिए इस संगठनको सक्षम तथा उपयोगी बनानेके कार्यमे अपनेको पूरी तरह से लगा दिया था। राज्यमें आरक्षी दलसे पूरी तरह सहयोगके साथ कार्य करते हुए उन्होने एक स्वेच्छिक शक्तिके रूपमें संगठनके व्यक्तित्वको बनाए रखा है। उन्होंने संगठनमें तीव्र उत्साह और क्रियाशीलताकी भावनाओ को प्रविष्ट किया है और सदस्योकी जनसेवाकी भावनाको उपयोगी कार्योंकी दिशा में प्रेरित किया है। यह संगठन इतना उपयोगी प्रमाणित हुआ है कि भारत सरकार के गृह मन्त्रालयका ध्यान उसने आकर्षित किया है। भारत सरकार इस संगठनसे इतनी सतुष्ट थी कि उसने सभी राज्योसे उपने नगररक्षक दलोको उसी नमूनेके अनुसार संगठित करनेकी सिफारिशकी है कि जो "बम्बई–नमूना" (Bombay Pattern) के नामसे लोकप्रिय हुआ है। इस उद्देश्य के लिए भारत सरकारके मान सेवी सलाह-कारके रूपमें कमाण्डेण्ट जनरल मानेकजी की नियुक्त हुई है।

"विभिन्न गृहरक्षक—इकाइयोसे भेटकी अवधिमे हमने बड़े हर्षके साथ उस उत्कटता और उत्सुकताकी भावनाको देखा कि जिसके साथ समस्त अधि-कारी तथा अन्य कर्मचारी काम कर रहे थे। प्रत्येक व्यक्ति अपने गणवेषमे सदैव अपनेको अच्छी तरहसे प्रस्तुत करता था।

"हम यहा इस बात पर जोर देगे कि जैसा अतीतमे किया गया था, संगठनके निष्पक्ष तथा अराजनीतिक स्वरूपको बनाये रखना चाहिए तथा बड़ी दृढताके साथ उसकी रक्षा करनी चाहिए। जैसा कि समक्ष भेटके समय अनेक लोगोंने हमे बताया था कि यह संगठन जाति, पथ या समाजके भेदभावसे परे अधिकतर जनताके एक सगठनके रूपमे कार्य करता रहा है। हम नगररक्षक सगठन के, जो कि आकस्मिक घटनाओके समय समाजके लिए उपयोगी कार्य करनेकी दिशामे एक बड़ी संख्याके लोगोंकी आकाक्षाकी पूर्ति करता है' महान भविष्यकी कल्पना करते है . . . . . !"

उपर्युक्त विवरण महत्वपूर्ण रूपसे स्पष्ट है और इस तथ्यकी जानकारी देता है कि अपने प्रारम्भसे लेकर पन्द्रह वर्षो तक की अवधिमे गृहरक्षकोंने देशमें अत्यन्त उपयोगी कार्य किया था।

नगररक्षक सगठनकी स्थापना, साधारण तथा किसी भी राष्ट्रीय संकटके समय उत्पन्न होनेवाली असाधारण स्थितियोमें जनताकी सहायताके उद्देश्यसे की गयी थी। त्यौहारके अवसरोंपर जबकि सडको और मन्दिरोंमें काफी भीड़ रहा करती है, लोगोंके आवागमनमें सहायता देनेके अतिरिक्त गृहरक्षकोंको परेड, रायफल चलाने, प्रथमोपचार और शारीरिक कसरतोंमें प्रशिक्षण दिया जाता

है। जब कभी सेना युद्धके समय दूर चली जाती है, तब गृहरक्षकोसे नगरो और शहरोकी रखवाली करनेकी आशा की जाती है। आवश्यकता होनेपर सेनाके पुष्टीकरणमे भी उन्हे सहयोग देना पडता है और शान्तिकालमे वे लोगोको दैनिक कार्यो को सरल बनानेमे सहायता देते है। सर्वसम्बन्धित व्यक्तियो द्वारा राष्ट्रीय सकटोके अवसरपर गृहरक्षकोके कर्तव्योको महत्वपूर्ण बताया गया है और इनसे जिन कार्योकी अपेक्षा की जाती है उसका प्रत्यक्ष प्रमाण उन प्रदर्शनोंमे दिया जा चुका है, जो सरकार, नगरपालिकाओ और स्वैच्छिक संगठनों के सहयोगसे वहत्तर बम्बई, दिल्ली तथा अन्य स्थानोके गृहरक्षकोके द्वारा प्रस्तुत किए गए थे। उन्होने उद्धार कार्य, अग्निसे बचाव तथा कृत्रिम श्वसन इत्यादि के प्रदर्शन प्रस्तुत किए थे। यह गृहरक्षक आन्दोलन, जो कमाण्डेण्ट जनरल माणिक जी द्वारा सावधानी से घोषित किया गया था, भारतीय नागरिकोकी कर्तव्यके प्रति लगन और त्यागकी भावनाके बलपर विकसित हुआ था।

भारत सरकारका और विशेषकर दो सघीय गृहमन्त्री श्री गोविन्दवल्लभ पन्त तथा श्री लालबहादुर शास्त्री का सहयोग इस आन्दोलनको वर्तमान अखिल भारतीय रूप दिलानेमे बहुत कुछ उत्तरदायी है। चीनी आक्रमणके समय गृहरक्षको के महत्वमे बहुत वडी वृद्धि हुई थी। कमाण्डेण्ट जनरल मानेकजी तथा उनकी पत्नी--दोनोने सीमावर्ती क्षेत्रोमे जाकर स्थलपर ही प्रत्यक्ष रूपसे सहायता देनेका प्रयास किया था। मुझे विश्वास है कि देशकी नागरिक प्रतिरक्षाके हितके लिए, जो कि नगररक्षकोके कार्योका एक महत्वपूर्ण अंग है, इस भाग्यशाली दम्पति द्वारा उपयोगी सेवा की जाएगी। यथार्थमे, जैसा कि मै समझता हू नागरिक प्रतिरक्षाके महानिर्देशक तथा गृह मन्त्रालयके अन्य व्यक्तियो के साथ ही कमाण्डेण्ट जनरल मानेकजी को भी नागरिक प्रतिरक्षाके मामलेमें महत्वपूर्ण कर्त्तव्य निभाना है। मेरा यह खयाल है कि नागरिक प्रतिरक्षा कार्यके लिए नेशनल कैडेट कोर (National Cadet Corps) के कार्योका जहाँ तक सम्बन्ध है, वे इसके लिए पूर्णतः उत्तरदायी थे।

सघीय गृहमन्त्री स्व. प. गोविन्दवल्लभ पन्तने अपने जीवनकालमे आयोजित प्रथम नगररक्षक सम्मेलनमे विचार-विमर्शकी अवधिमे कहा था :-

"जिस समयके बीचसे हम गुज़र रहे है और क्षितिजपर जिन बादलोको देखते है--इन्हे विशेषकर ध्यानमे रखते हुए यह राज्योके हितमे है कि प्रत्येक नागरिक किसी भी आकस्मिकताका सामना करनेको तैयार रहे।

हम अपने देशमें तथा बाहर भी शान्तिके समर्थक है किन्तु केवल ऐसे शेर व्यक्ति ही कि जो अपने पैरोंपर खडे रह सकते है, अपने देशमे शान्ति बनाये रख सकते है अथवा ऐसे आन्दोलनोको चलानेमे सहायता दे सकते है जो कि विश्व-शान्तिकी स्थापनामे सक्रिय रूपसे सहायक हो सके।"

नगरक्षकोसे प्रभावित क्षेत्रका विस्तार करनेमे पण्डित पन्त का उपर्युक्त मत बहुत कुछ उत्तरदायी था। यह सगठन उनके जीवनकालमे उन स्थानोके अतिरिक्त, जहा पहलेसे गृहरक्षक आन्दोलन प्रभावशील हो चुका था., राजस्थान, उडीसा, त्रिपुराके क्षेत्र, मणिपुर, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और काश्मीर तक फैल गया था। उसी समय भविष्यमे इसी प्रकारका सगठन स्थापित करनेके उपाय और साधनोके बारेमे आन्ध्रप्रदेश तथा मद्रास भी विचार कर रहे थे।

वर्तमान (तत्कालीन) गृहमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्रीकी सरक्षण प्रवृत्तिने गृहरक्षकोको अत्यत महत्वपूर्ण तथा अधिकारपूर्ण स्थिति प्रदान की और मेरे पास ऐसा विश्वास करनेके कारण है कि यदि सघीय सरकार पहले की भाति ही उतनाही सरक्षण देती जाए तो यह सगठन और अधिक विकसित होगा। कमाण्डेण्ट जनरल मानेकजीके इस सम्बन्धके अथक प्रयास उन लोगो द्वारा नही भुलाए जा सकते जो जानते है कि भारतमे अभी तक गृहरक्षकोको जो सफलता मिली है, जिनका उल्लेख उन समस्त प्रशसाओमे पाया जाता है जिन्हे कि मैने पढा है, उसका मुख्य श्रेय उनको ही है। उनकी पत्नी श्रीमती मानेकजीने इस सम्बन्धमे जो महत्वपूर्ण योगदान दिया है, उसे भी भुलाया नही जा सकता। गृहरक्षकोकी महिला शाखा मे उनका योगदान विशेष उल्लेख के योग्य है। यहा जब तक की भारत तथा बाहरके महत्वपूर्ण व्यक्तियो द्वारा गृहरक्षक आन्दोलन की जो प्रशसाए की गयी है, उनमे से जब तक कुछका मै उल्लेख नही करता हूँ तब तक भारतमे गृह रक्षकोका विवरण पूरा नही होगा।

बर्माके अर्ल माउण्टबेटन (भारतके गवर्नर जनरल) ने बम्बईके ब्रेबोर्न स्टेडियम (क्रीडागण) मे १६ दिसम्बर १९४७ को गृहरक्षकोकी परेडका निरीक्षण करनेपर कहा कि.–

"प्रारम्भमे ही आजकी परेडमे गृहरक्षक जिस प्रकार प्रस्तुत हुए थे, उसके लिए मै आपको बधाई देता हू। आपकी परेड प्रत्येक अर्थमे बहुत सफल थी और इनकी तुलना मेरे द्वारा इग्लैण्डमे देखी गयी गृहरक्षकोकी परेडसे अच्छीतरह की जा सकती है।

"गृहरक्षकोके बारेमे आज महत्वपूर्ण बात यह है कि वह ऐसी स्वैच्छिक शक्तियोका प्रतिनिधित्व करते है जो बम्बईकी नागरिक जनसख्यामे से ली गयी है और जो विधि तथा व्यवस्थाकी शक्तियोका समर्थन करनेको प्रस्तुत

है .....मैं आशा करता हूं कि आप यह अनुभव करते है कि बम्बईकी प्रशंसनीय स्थितिका एक कारण इस संगठनके अस्तित्वका होना ही है।"

पण्डित नेहरूने जब विगत वर्ष बम्बईके गृहरक्षकोंका निरीक्षण किया था, तब कहा था –:–

"यदि आपमे आवश्यक उत्साह नही है, तो कोई बड़ी चीज़ नही हो सकती किन्तु केवल उत्साहसे ही आप बहुत बड़ी सफलता नही प्राप्त कर सकते। आपको एक अनुशासित शक्ति बनना चाहिए।

ऐसा प्रायः होता है कि जब बाहरसे कोई खतरा दिखायी पड़ता है, तब व्यर्थ ही जनता आतंकित हो उठती है और इससे समस्त आन्तरिक सुरक्षा प्रबन्धोमे गडबड़ी उत्पन्न हो जाती है। तो, ऐसी ही स्थितिमे आप गृहरक्षकोको अपना कार्य करना है।

हमारे पास आवश्यक शस्त्रास्त्रोसे सज्जित शक्ति होनी चाहिए किन्तु केवल शस्त्रास्त्रोसे युद्ध नही जीते जा सकते। वस्तुतः अनुशासन ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।"

"अतएव मै यह देखनेके लिए बहुत उत्सुक हूं कि आप जो प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है, उसका विस्तार महाविद्यालयके छात्रों और देशके युवकोंमें हो।"

स्वैच्छिक संगठन (Voluntary Organizations)

यह स्मरण रखना चाहिए कि पूर्ववर्णित अर्ध–शासकीय सगठनो उपविभागमे चर्चित स्वेच्छिक सगठनोके बीच विभाजनकी कोई स्पष्ट रेखा नही हो सकती। फिर भी प्रत्एकमे विशिष्ट प्रकारका तत्व होनेके कारण दोनोपर अलग–अलग विचार किया गया है।

कोई भी राष्ट्र आज तक किसी युद्धका अथवा राष्ट्रीय सकटका सामना नही कर सकता जब तक कि वहांके निवासियोंकी इच्छाशक्ति साथमे न हो। इसलिए स्वैच्छिक संगठनोका महत्व आप ही आप स्पष्ट है। प्रत्एक देशमें ऐसे संगठनोंका अस्तित्व है। ऐसे संगठन संकटके समय भी उभर पड़े हैं और उन सबके या उनमेसे बहुतोके सम्बन्धमे इस अध्याय के एक भागमे चर्चा कर सकना सम्भव नही है। यहां, रेड क्रास, सेण्ट जान एमुलेन्स, बालचर और महिलाओकी स्वैच्छिक सेवाओ जैसे कुछ महत्वपूर्ण संगठन मैने चुन लिए है।

यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इनके अतिरिक्त अनेकों संगठन एक देशके नागरिक प्रतिरक्षा कार्यमें सहायता देते हैं। उदारणार्थ, संयुक्त राज्य अमेरिकामें अति-

जीविता तथा पुनःनिर्माणके लिए जनता को प्रशिक्षित करनेके लिए आवश्यक नेतृत्वकी पूर्ति करनेकी दिशामे नागरिक तथा प्रतिरक्षा लामबन्दी कार्यालयको अनेको अशासकीय संगठन सहायता पहुंचाते है। स्थानीय कनिष्ठ व्यापारी संघ और कोरिया तथा द्वितीय विश्वयुद्धके अनुभवी व्यक्ति संयुक्त राज्य अमेरिकाको सहायता पहुंचाने का बड़ा भारी साधनरहे है । नागरिक तथा प्रतिरक्षा लामबन्दी कार्यालयके कार्यपालिका कार्यालयके अध्यक्षका १९५९ का वार्षिक प्रतिवेदन यह उल्लेख करता है कि राष्ट्रीय महिला सलाहकार समितिके माध्यमसे नागरिक तथा प्रतिरक्षा लामबन्दी कार्यालय जिन राष्ट्रीय सगठनोके साथ कार्य करता था उनकी सामूहिक सदस्य संख्या छ. करोड़ तीस लाख थी। इन संगठनो तथा राज्यके और स्थानीय नागरिक प्रतिरक्षा अधिकारियोके तत्वावधानमे १९५९ के वित्तीय वर्ष मे राष्ट्र भर मे १४०० से अधिक आन्तरिक तैयारी कर्मशालाओमे (Home Preparedness Workshops) पचास हज़ारसे अधिक महिलाएं भर्ती हुई थीं। इन कर्मशालाओं को जिन महिला नेत्रियो द्वारा चलाया जाता था, उन्हें नागरिक और प्रतिरक्षा लामबन्दी कार्यालय द्वारा जो सूचना सामग्री दी गयी थी, उसके आधार-पर कहा जा सकता है कि दुर्घटनाओ अथवा शत्रु द्वारा आक्रमणके समय व्यक्तिगत तथा कौटुबिक सकटसे संबधित समस्याओ को हल करनेके लिए गृहनिर्मायकोंको तैयार करनेकी जो आवश्यकता थी, उसकी पूर्ति इस प्रशिक्षण द्वारा की गयी थी।

नागरिक प्रतिरक्षा तथा प्रतिरक्षा लामबंदीका एक पाठ्यक्रम विकसित करने तथा प्रमुख विश्वविद्यालयो और महाविद्यालयोमे आयोजित १४० नियमित रूपसे अनुसूचित श्रमिकोकी ग्रीष्मकालीन पाठशालाओमे इस पाठ्यक्रमको सम्मिलित करनेमे अमरिकी श्रमिकोके सघ तथा औद्योगिक प्रतिष्ठानोकी काग्रेसने नागरीक तथा प्रतिरक्षा लामबन्दी कार्यालयको सहयोग प्रदान किया था। व्यवसायिक सघके प्रशासनिक तथा उत्पादन स्तरके नेताओके लिए ये पाठशालाए है और प्रतिवर्ष प्रायः दस हजार श्रमिक सघके सदस्य इनमे उपस्थित होते है।

१९५९ का उपर्युक्त प्रतिवेदन बताता है कि नागरिक–प्रतिरक्षा तथा प्रतिरक्षा लामबदिमे अपने महत्वके प्रति चर्चो और धार्मिक सस्थाओने अधिक जागृति प्रदर्शित की थी। भौतिक सपत्तिके व्यापक साधनों, पादरी वर्गके स्वीकृत नेतृत्व और विशेषकर चर्चके लाखो सदस्योकी आध्यात्मिक शक्तिके कारण यह जागृति निश्चय ही महत्वपूर्ण थी। अनेको धार्मिक सस्थाओने (जिनकी संख्या बढ़ती ही जाती थी) अपने वार्षिक ममारोहोमें राष्ट्रीय प्रतिरक्षाके लिए तैयार रहनेके समर्थक प्रस्ताव पारित किये थे। राज्य स्तरीय तथा स्थानीय परिषदों और कर्मशालाओ में पादरी उपस्थित हुए थे और नागरिक तथा प्रतिरक्षा लामबन्दी द्वारा संचालित

धर्मसबंधि पाठ्यक्रममें २९७ व्यक्ति उपस्थित हुए थे। नागरिक तथा प्रतिरक्षा लामबदी कार्यालय द्वारा आयोजित लेखको तथा सपादकोकी एक परिषदके फलस्वरूप चर्चकी पत्रिकाओमें नागरिक प्रतिरक्षापर बारह निर्माणात्मक लेख प्रकाशित हुए थे। उपर्युक्त प्रतिवेदनके विवरणके अनुसार इन पत्रिकाओंकी प्रसार संख्या १७ लाखसे अधिक थी।

इसी प्रतिवेदनमे आगे चलकर बताया गया है कि खाद्यान्न तथा अन्य साधनोकी पूर्तिमें ग्रामीण अर्थव्यवस्थाके महत्वको स्वीकार करते हुए नागरिक तथा प्रतिरक्षा लामबंदी कार्यालयने अमरीकी फार्म ब्यूरो फेडरेशन, दि नेशनल ग्रेज और राष्ट्रीय किसान यूनियनके सहयोगसे एक ग्रामीण सूचना कार्यक्रमका विकास किया था। यह कार्यक्रम इस प्रकार तैयार किया गया है कि १८ हज़ार कृषि विस्तार कार्यकर्त्ताओ और काउण्टी एजण्टो, ११ हज़ार व्यावसायिक कृषि प्रतिक्षकों, ३० हजार काउण्टी तथा स्थानीय कृषि क्षेत्र सगठनोके नेताओ और ६० हजार आंतरिक प्रदर्शन दलोंके द्वारा यह कार्यान्वित हो सके।

ग्रट ब्रिटेनमे विगत युद्धके प्रारभ होनेके पूर्व , युद्धकी प्रगतिकी अवधिमे तथा लदन और ब्रिटेनके अन्य भागोमे हुई लडाईकी भली और बुरी स्थितिमे सदैव ही नागरिक प्रतिरक्षा कार्यके सगठनमे स्वैच्छिक सगठनोने शासनको सहयोग दिया है। इस सबधमे किन्ही विशेष स्वैच्छिक सगठनोके योगदान का वर्णन करना सभव नही है। फिर भी अनेको धार्मिक तथा धर्मनिरपेक्ष सगठनोके प्रतीकके रूपमे युद्ध क्षेत्रोंमें सेण्ट मार्टिनके द्वारा दिये गये योगदानका उल्लेख किया जा सकता है। जैसे ही लदनमे लड़ाई प्रारभ हुई वैसे ही लदनके सभी भागोसे सभी प्रकारके लोग उन छः बड़े तहखानोमे शरण लेने के लिए आये जिन्हे कि वेस्ट मिनिस्टरी की नागरिक परिषदकी प्रार्थनापर इस चर्चके अधिकारियोने शरणगृहोके रुपमे सुलभ कर दिया था। इनमे लगभग ६०० व्यक्तियोको सोनेकी सुविधा प्रदान की गयी थी। इनमे से कई स्थायी शरणगृह बन गये थे और क्रमशः उनमे भोजनालय तथा विभिन्न मनोरजनोकी सुविधाओकी भी व्यवस्था की गयी थी। ब्रिटेनके स्वेच्छिक सगठनोके विषयमे उल्लेखनीय दूसरी महत्वपूर्ण बात उनके द्वारा सुरग शरणगृहोमे (Tube shelters) अल्पाहारकी पूर्तिके सबधमे है। कल्याणकारी सगठनोको नलीके आकारके शरणगृहोमे उतना क्षेत्र नही मिलता था जितना कि अन्य प्रकारके शरणगृहोमे। किन्तु इन सुरंग शरणगृहो (Tube shelters) के बीच सामूहिक उद्योगके द्वारा बच्चोके लिए बुनने और सीनेके दलो, कथा कहनेवाले वर्गो, पुस्तकालयों और व्यक्तिगत समस्याओपर परामर्शदायक केन्द्रोकी स्थापना हो गयी थी।

रूसके बारेमें विचार करते समय यह दर्शित होगा कि वहा नागरिक प्रतिरक्षाके मामलेमे स्वैच्छिक सगठन अत्यन्त प्रमुख योगदान देते है। सेना, वायुसेना तथा नौसेनाके सहयोगके लिए निर्मित स्वेच्छिक सगठनके रूपमे साम्यवादी दलके डोसाफ (DOSAAF) द्वारा क्रियान्वित विशाल नागरिक प्रशिक्षण कार्यक्रमका रूसी जन-सख्यापर व्यापक प्रभाव अत्यन्त स्पष्ट है। इस सगठनकी सदस्य सख्या दो करोडसे भी अधिक है। इसका प्रत्येक सदस्य नागरिक प्रतिरक्षाके अनिवार्य पाठ्यक्रमको ग्रहण करता है और इसके अतिरिक्त सोवियत रेडक्रास द्वारा भी लाखोव्यक्तियोको प्रशिक्षित किया जाता है।

इसी प्रकार, यद्यपि बिलकुल ठीक इन्ही रूपोमे ही नही, विश्वके अनेक देशोमे स्वेच्छिक सगठन है और इन सबके द्वारा नागरिक प्रतिरक्षा कार्य तथा प्रशिक्षण सचालित किया जाता है।

रेड क्रास

यह एक ऐसा सगठन है जिसका प्रसार विश्वके प्रत्येक देशोमे हो चुका है, जो शाति और युद्ध दोनो मे सर्वत्र समादरित है, जिसने सैनिकोकी वापसी मे अत्यन्त उपयोगी कार्य किया है और युद्ध क्षेत्रमे मृत तथा घायल व्यक्तियोके प्रति की गयी जिसकी सेवाए इतिहासमे सदैवके लिए स्वर्णित अक्षरोमे लिखी जायेगी। युद्ध, प्राकृतिक विपत्ति और व्याधियोसे बचाने अथवा कष्टो को हल्का करनेके लिए इस सगठनका अस्तित्व है। अपने वर्तमान सगठित रूपमे रेडक्रास दुखितोकी सहायताका एक शक्तिशाली माध्यमके साथ ही मनुष्यकी सर्वोच्च भावनाओके विशाल नैतिक बलका प्रतीक भी है।

प्राय: प्रत्येक देशमे एक रेडक्रास सगठन है जो व्यक्तिगत रूपसे प्रत्येक देशकी आवश्यकताकी पूर्तिके लिए विकसित किया जाता है किन्तु जो अन्तर-राष्ट्रीय समझौतोके अन्तर्गत मानवीय उद्देश्योके लिए सबके साथ सहयोग करता है। प्रत्येक स्थानमे रेड क्रास मानवताके आधारपर कार्य कर रहा है। यह एक अन्तरराष्ट्रीय विधि द्वारा मान्यता प्राप्त एक स्वीकृत तथ्य है कि जिस व्यक्ति या एम्बुलेन्स या किसी गृहपर रेडक्रासका प्रतीक चिन्ह हो उसपर आक्रमण नही करना चाहिए। इस तथ्यका पालन काफी हद तक किया गया है।

रेडक्रास किस प्रकार आरभ हुआ ? पहले इसका प्रारभ यूरोपमे हुआ। इसके पश्चात अमेरिका तथा अन्य स्थानोमे इसका विकास हुआ। १८६२ मे एक स्विट्जरलैण्ड निवासी जीन हेनरी डुनान्ट इटलीमे – जहा कि यह व्यवसाय तथा मनोरजनके लिए गया था – अत्यन्त दुर्गतिपूर्ण दृश्योको देखनेके पश्चात एक अत्यन्त क्रोधी तथा

चिन्तनशील व्यक्तिके रूपमें बदल गया। यह व्यक्ति अपने जीवनके तीससे चालीस वर्षों की अवधिमे एक समृद्धशाली तथा अनेको स्थानोकी यात्रा किया हुआ बैंक व्यवसायी था। १८६२ मे इस व्यक्तिने "**अनसोवेनियर डे सालफेरिनो**" (Un Souvenir de Solferino) नामक एक छोटी-सी पुस्तक लिखकर अपने व्ययसे यूरोपकी समस्त सरकारोको भेजी थी। इटलीके सालफेरिनो ग्रामके आसपासके दुर्गतिपूर्ण विनाशको देखकर ही उसने यह पुस्तक लिखी थी। जैसा कि पहले बताया जा चुका है यह व्यक्ति इटली गया था और वहाके दृष्योसे प्रभावित हुआ था। डुनान्ट पुस्तक लिखनेके सिवाय और क्या कर सकता था? वह कोई राजनीतिक व्यक्ति या प्रसिद्ध सामाजिक वर्ग या व्यावसायिक समाजका सदस्य नही था। किन्तु जेनेवामे विद्वानोका एक प्रसिद्ध दल था जो अपनेको जनहितका सगठन मानता था। इन्होने डुनान्टके उद्देश्यको अपनाया और इस प्रकार पुस्तकको अपना महत्व प्रदर्शित करनेका अवसर प्राप्त हुआ।

२२ अगस्त १८६४ को जेनेवा समारोहमे एक मित्र यूरोपीय देशो द्वारा युद्धमे घायल तथा बीमारोकी देखभालके लिए मानवीय विनिमयकी स्थापनाके बारेमे एक समझौता हुआ था। बाडेन, बेल्जियम, डेनमार्क, फ्रान्स, हैस, इटली, नीदरलैण्डस्, पुर्तगाल, प्रशा, स्पेन, स्विट्ज़रलैण्ड और उरहेमबर्ग इस समारोहमे प्रारम्भिक हस्ताक्षरकर्ता थे। दो वर्षोकी अवधिमे ग्रेटब्रिटेन, ग्रीस, मैकलिन वर्ग–स्वेरिन, नारवे, रूस, स्वीडन और टर्की द्वारा जेनेवा–समारोहका समर्थन किया गया। १८६८ मे जेनेवामे आयोजित द्वितीय सम्मेलनमे एक पूरक समझौता तयार किया गया। इसका महत्वपूर्ण परिणाम **१८७० में रेड क्रास संगठनकी स्थापना** था।

कभी–कभी ऐसा होता है कि तत्कालीन विचारकोके मनको जो आकाक्षाए, प्रश्न और निष्कर्ष उद्वेलित करते रहते है, उनमे से कुछ व्यक्ति ठोस विचारोका निर्माण कर लेते है। ऐसे लोगोने भावनाओंको स्वरूप, विचारोको शब्द और सबसे महत्वपूर्ण आदर्शोंको क्रियात्मकता प्रदान की है। इसी प्रकारसे इस सगठनकका प्रारम्भ यूरोपमे हुआ था। इसका अविर्भाव १८६२ मे भावनाओकी उस यातनासे हुआ था जिसने लगातार तीन आत्मचिन्तनके वर्षोमे एक भावुक व्यक्तिको जीर्ण-शीर्ण कर दिया था। अतएव यूरोपमे यह कथा श्री डुनान्टसे प्रारम्भ होती है जिनके फलस्वरूप पहले दिये गये वर्णनके अनुसार १८६४ मे जेनेवा समारोहका आयोजन हुआ था।

अमेरिकामे इस कहानीका प्रारम्भ विश्वमे क्लारा बारटनके नामसे ज्ञात एक छोटी किन्तु समर्पित भावनावाली महिलाके भावनापूण किन्तु व्यावहारिक प्रयासोके द्वारा बीससे अधिक वर्षोके बाद हुआ था। क्लारा बारटन गृहयुद्धमें लड़ाईके

मैदानोमे अपने कार्यके लिए पहले ही आन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुकी थी। इस प्रकार १८८१ मे अमरीकी रेडक्रास संगठनकी स्थापना हुई थी।

स्वयं सहायताकी क्षमताओको विकसित करनेकी दिशामे अमरीकी राष्ट्रीय रेडक्रास (American National Red Cross) सदैव नागरिक और प्रतिरक्षा–सगठन कार्यालयके साथ सहयोग देता आया है। अमरीकी राष्ट्रीय रेडक्रासके पदाधिकारियोके सघने (ANRC Chapters) प्रथमोपचार, बीमार तथा घायल व्यक्तियोंकी घरेलू देखभाल और संकटकालीन सामूहिक भोजन व्यवस्थाके प्रशिक्षण पाठ्यक्रमोपर और अधिक ज़ोर दिया था। इसके अतिरिक्त सकटकालीन सामूहिक सेवाओके आयोजन और विकासमे नागरिक तथा प्रतिरक्षा लामबन्दी कार्यालयके क्षेत्रीय कार्यालयोको सहायता देनेके हेतु प्राय: अमरीकी राष्ट्रीय रेडक्रासके कर्मचारी सदस्य दिये जाते है। इसके अतिरिक्त उपर्युक्त १९५९ के वार्षिक–प्रतिवेदनसे ज्ञात होता है कि नागरिक तथा प्रतिरक्षालामबन्दी कार्यालय (OCDM) के राष्ट्रीय मुख्यालयमे यह सगठन एक पूर्णकालिक सम्पर्क प्रतिनिधि भी रखता आया है।

अमेरिकामे रेडक्रासकी कहानी क्लारा बारटनके नेतृत्वकी कहानी है। अपनी अवस्थाके अनुसार वे भले वृद्धा हो, कभी–कभी निराशा और थकानके क्षणोसे आबद्ध होनेके कारण वे थोड़े समयके लिए अशक्त भी हो जाती थी, परन्तु वे एक निष्क्रिय सगठनका आरामसे नेतृत्व करनेवाली महिला कदापि नही थी। उनकी दृढ़सकल्पी लड़ाइयोकी विचित्रताए चाहे जो भी हो, किन्तु ये विचित्रताए सदैव क्रियाशीलताके पक्षमें थी। वे सगठनको केवल सगठनके लिए वाली भावनामे विश्वास नही करती थी।

जब हम अमरीकी रेडक्रासकी चर्चा करते है तब १९४१–४५ की भयकर अवधि विशेषकर स्मरण रखनेके योग्य है। पर्ल हारबरकी घटनाने अमरीकी रेडक्रासको पुन: उसकी महान मौलिक भावनाकी पृष्ठभूमिपर पहुचा दिया था यद्यपि विकासकी क्रियाके फलस्वरूप उससे लड़ाईके मैदानोमे किये जानेवाले कार्यकी आवश्यकता तथा अवसरको व्यगात्मक ढगसे छीन लिया गया था। वस्तुत: इस कार्यके लिए ठीक साठ वर्षोके पूर्व इसकी स्थापना हुई थी। बमबारीके पश्चात् प्रथम तनावपूर्ण रात्रिके तमावरण (Black Out) मे होनोलूलुसे एक अस्थायी रेडक्रास भोजनालय ने नागरिक प्रतिरक्षा कार्यकर्ताओ को कौफी और सेन्डविचो की पूर्ति की थी। तमावरण (Black Out) तथा टूट–फूट से परिपूर्ण क्षेत्रमें चालीस रेडक्रास महिलाए वाहनो को चलाने का कार्य कर रहीं थी। उस प्रथम रात्रि में विनष्ट स्थानोसे रेडक्रासकी सहायतासे तीन हज़ार महिलाओ और बालकोका निष्क्रमण किया गया था। जिन स्थानोमे अत्यन्त व्यापक रूपसे लोग घायल हुए थे वहांके चिकित्सालयोमे रेडक्रासके संग्रहालसे

शस्त्रचिकित्सकोंके उपचारकी सामग्री तथा रक्तजीवाणु अबाध गतिसे भेजे गये थे। मनीलासे, जहां कि फिलिपाइन रेडक्रास तब अमरीकी रेडक्रास की एक शाखा के रूपमे कार्यरत था, अस्सी हजार व्यक्तियोंका निष्क्रमण करनेके हेतु रेडक्रासद्वारा नेतृत्व ग्रहण किया गया था। जब सेनाने शस्त्र चिकित्सा सम्बन्धी "अर्द्धवार्षिक पूर्ति" को दो दिनोंमें समाप्त कर दिया था तब रेडक्रासने ही समस्त आवश्यकताकी पूर्ति की थी। जब जापानियोंने इस स्थानमें प्रवेश किया था तब जनरल डगलस मेकआर्थरने प्रमुख अमरीकी सेनाओंको बाटान (Bataan) मे भेज दिया था। उन्होंने फिलिपाइन रेडक्राससे, जिसके सदस्य जो आकस्मिक रूपसे परित्यक्त से हो गये थे, मनीलाके एक चिकित्सालयमे छूटे हुए घायल व्यक्तियो को भेजनेके लिए साधन ढूढनेको कहा था। ये तथा अनेक और कथाएं रेडक्रासके बारेमे बतायी जा सकती है।

दूसरी ओर ग्रेट ब्रिटेनमे रेडक्रास नागरिक प्रतिरक्षामे तथा औद्योगिक प्रतिष्ठानोके साथ सदैव सहयोग रहा है। अनौपचारिक सम्पर्कोके साथ ही वहा इस बातपर ज़ोर दिया गया था कि हवाई हमलेसे सावधानी आवश्यक रूपसे स्वैच्छिक प्रयास और जनताकी सद्भावनापर निर्भर है।

युद्धके समय ब्रिटेनके युद्ध कार्यालयका रेडक्रासके सदस्योंपर प्रथम अधिकार था और मई १९३९ तक तो "अचल" सदस्योंको भी उनके सैन्य उत्तरदायित्व से मुक्त नही किया गया था। युद्धकी प्रगतिकी सम्पूर्ण अवधिमे रेडक्रास नागरिक प्रतिरक्षा सगठनका एक महत्वपूर्ण अग था।

विश्वके दूसरे भागोमे भी रेडक्रास इतना ही महत्वपूर्ण रहा है। भारतमे भी रेडक्रासका कार्य सदैव प्रशसनीय रहा है। भारतीय रेडक्रासके अध्यक्ष डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन् रहे थे। उनका पता—भारतीय रेडक्रास सगठन, रेडक्रास रोड नई दिल्ली–११ था। चीनके द्वारा भारतको युद्ध बन्दियो के प्रदानके सम्बन्धमे रेडक्रास के कार्यका विशेष उल्लेख करनेकी आवश्यकता है। रेडक्रास की कहानी जितनी आकर्षक है, उतनी ही उपयोगी भी है। आधुनिक पृष्ठभूमिमे उसे संक्षिप्तमे समझनेके लिए निम्नाकित अश स्मरण रखा जा सकता है।

रेडक्रास एक ऐसा राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय माध्यम है जिसका मूलभूत उद्देश्य युद्धके समय बीमार, घायल तथा बन्दियोकी देखभाल करना रहा है और आज भी है। रेडक्रास आन्दोलनके विकाससे विशेषकर १९१९ ईस्वीसे, किसी भी कारणसे होनेवाले मानवीय कष्ट को दूर करनेका कार्य रेडक्रासके कार्यक्षेत्रके अन्तर्गत माननेकी विश्वव्यापी प्रवृत्ति परिलक्षित होती आयी है।

अंतरराष्ट्रीय रेडक्रास समिति : इसके उद्देश्य निम्नलिखित माने गये है :–

(अ) समस्त देशोको रेडक्रास आन्दोलनको समझाना।

(ब) रेडक्रासके बुनियादी सिद्धान्तोंका अभिभावक बनना।

(स) वर्तमान सगठनोको नये रेडक्रासके सगठनके विधानको अनुसूचित करना।

(ड) समस्त सभ्य राज्योको जेनेवा–सम्मेलनके आदेशो को मानने के लिए प्रेरित करना।

(ई) यह आश्वस्त करना कि जेनेवा–सम्मेलनका पालन हो रहा है तथा जब कभी यह भंग किया जाये तो उसकी निन्दा करना।

(फ) शासनसे ऐसा प्रतिवेदन करने अथवा सेनाओंको ऐसे आदेश देनेके लिए अनुग्रह करना कि जिससे इस प्रकारके उल्लघनोंको रोका जा सके।

(ज) युद्धके समय बन्दियो तथा युद्धके लक्ष्य बने हुए अन्य व्यक्तियोकी सहायताके लिए अन्तरराष्ट्रीय अभिकरणका निर्माण।

(ह) बन्दी शिविरोमे जाना, युद्धबन्दियोको सुख और सहानुभूति पहुचाना और समस्त सुलभ प्रभावोके द्वारा उनकी स्थितिको और अच्छी बनानेका प्रयास करना तथा शान्तिकाल और युद्धके समयमे भी शासन और लोगो तथा जातियोके बीच एक उदारहृदय मध्यस्थका कार्य करना ताकि युद्ध-जनित कष्टोको दूर करनेका मानवीय कार्य वह स्वय कर सके अथवा दूसरोके द्वारा ऐसा कार्य किया जाना सभव हो सके।

प्रथम विश्व–युद्ध में किये गये कार्यः विभिन्न सेनाओ और नौसेनाओके हजारो व्यक्तियोका पता लगाया गया, युद्धबन्दियोको सहायता पहुचायी गयी, पाच हज़ार विभिन्न बन्दी शिविरोको नियमित भेट दी गयी और अधिकृत ज़िलोसे नागरिकोके निष्क्रमण, अधिक गम्भीर रूपसे घायल, कुछ प्रकारके बीमार बन्दियो तथा समस्त चिकित्सा कर्मचारियोको वापिस भेजने या निर्दलीय क्षेत्रमे उन्हे रोक रखनेके लिए सुविधाएं प्राप्त की गई। अन्तरराष्ट्रीय अभिकरणकी वित्तीय सेवाओने ३१ दिसम्बर १९१७ तक युद्धबन्दियोको ७,१५००० पौण्डसे अधिक राशि प्रेषित की थी।

प्रथम विश्व-युद्ध के पश्चात् गतिविधियांः शत्रुता समाप्त होनेके पश्चात् रूस तथा साइबेरियामे ठहरे हुए विभिन्न राष्ट्रोके युद्धबन्दियोको तथा मध्य यूरोपके विभिन्न रूसी युद्ध बन्दियोको वापस भेजनेका प्रबन्ध अन्तरराष्ट्रीय समिति द्वारा किया गया था। इसके बाद की स्थितिमे

भी वन्दियोके आदान–प्रदानसे समिति संबंधित थी। स्वास्थ्य संबंधी कार्यके बारेमे अन्तरराष्ट्रीय समितिके सदस्योंको १९१८ में यह आदेश दिया गया था कि वे उस समय फैलनेवाले टायफस नामक संक्रामक रोगसे संघर्ष लेनेमे सहयोग दे। युद्धके आर्थिक परिणामोसे अत्यन्त विषम ढगसे प्रभावित जनसंख्या को राहत पहुंचानेके लिए आस्ट्रिया और हंगरीमें राहत सम्बन्धी गतिविधियोके समुचित रूपसे समन्वयका कार्य समितिने अपने हाथमे लिया था।

युद्धके समय तथा शत्रुता समाप्त होनेके तुरन्त पश्चात वाले वर्षोमे बालकोंको जो विशेष कष्ट सहन करने पड़े थे, उनकी उपेक्षा करना असम्भव था और एसी स्थितिमे पड़े हुए बालकोको राहत पहुचानेके कार्यमे सुविधा प्रस्तुत करनेके उद्देश्यसे अन्तरराष्ट्रीय समितिने जनवरी १९२० मे "बालकोकी रक्षा करो" के अन्तरराष्ट्रीय सघकी स्थापनामे भाग लिया और उक्त सघकी सरक्षक बनी।

निष्क्रमणार्थी समस्या भी समितिके लिए एक प्रधान विचारणीय प्रश्न रहा है। जहा तक राहतकी सामान्य समस्याका सम्बन्ध है, आपत्तिग्रस लोगोको पारस्परिक राहत पहुचानेके लिए एक अन्तरराष्ट्रीय सघकी स्थापनाके बारेमे अमेरीका सिनेटके एक विशेष सदस्य द्वारा कल्पित तथा लीग आफ नेशन्स द्वारा योजनाका समर्थन प्रारम्भसे ही अन्तरराष्ट्रीय समिति करती थी।

लीग आफ नेशन्सकी तकनीकी सेवाओ और अन्तरराष्ट्रीय श्रम अधिकारियोंको सहयोग देनेके लिए अन्तरराष्ट्रीय समितिको प्रायः बुलाया गया है। समितिने बड़ी रुचिके साथ चिकित्सा कर्मचारियोके प्रश्नका जो कि रेड क्रासके समर्थित सम्पूर्ण इतिहास तथा कार्यसे घनिष्ट रूपसे संबधित है, अनुसरण किया है।

इस समितिने जेनेवामे चिकित्सा सामग्रीकी एक अन्तरराष्ट्रीय सस्थाकी स्थापना भी की है। इसमे अधिकारियोके माध्यम तथा राष्ट्रीय रेडक्रास संगठनसे प्राप्त प्रदर्शन–वस्तुओका एक स्थायी संग्रहालय भी सम्मिलित है। इस अभूतपूर्व संग्रहसे इन प्रश्नोसे संबधित छात्रोको विभिन्न देशोंकी चिकित्सा –सेवाओकी प्रणालियोका अध्ययन करने और उनकी तुलना करनेमे सहायता मिलती है। स्ट्रेचरो (Stretchers) के विभिन्न प्रकारोके नमूने और घायल व्यक्तियोंको हटाने और ले जानेके समस्त आविष्कार, बन्धनपट्टियोके नमूने, पहचान तश्तरियाँ (Identity discs), घायल व्यक्तियोके पहचानपत्र के साथ ही मानचित्र, छायाचित्र तथा दस्तावेज़ इत्यादि इसमें सम्मिलित है। इस संबंधमें समितिने विभिन्न देशोंकी सैन्य चिकित्सा सेवाओके मानकीकरणके लिए एक अन्तरराष्ट्रीय आयोगका निर्माण किया है। १९२६ ईस्वीसे यह आयोग नियमित अवधिके पश्चात् मिलता रहा है और प्रतियोगिताओंका आयोजन करता रहा है।

उसने विभिन्न प्रकारके यत्रोसे तरह तरह की खोज भी की है। उसके कार्यका उद्देश्य स्ट्रेचरो (Stretchers), रैको (Racks) बन्धनपट्टियों, पहचान पत्रो और रेड-क्रासके बाजूबन्द (Red cross Brassards) के मानकीकृत रूप निश्चित करना है।

इसके अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय समितिने सामान्य मानवीय रुचिके अनेक प्रश्नोके अध्ययनका कार्य भी अपना लिया है। ये प्रश्न रासायनिक युद्ध, शत्रु क्षेत्रोमे युद्धविरत की स्थिति, हवाई एम्बुलेन्सकी स्थिति और रेडक्रास एम्बुलेन्सका दुरुपयोग आदि आदि है।

ऊपर जो कुछ कहा जा चुका है इसके अतिरिक्त रेडक्रासके अध्ययनमे रेडक्रास सगठनोकी लीग और राष्ट्रीय रेडक्रास संगठनोकी कुछ जानकारी भी आवश्यक है। राष्ट्रीय सगठन प्रायः समस्त देशमे युद्धके समयमे थलसेना, नौसेना और चिकित्सा सेवाओको अवलम्बन प्रदान करने तथा सहयोग देनेके एकमात्र उद्देश्य के लिए निर्मित किये गये ये। किन्तु तबसे उनका कार्यक्षेत्र अत्यधिक व्यापक हो गया है।

राष्ट्रीय रेडक्रास सगठनोके अन्तर्गत युद्ध सम्बन्धी कार्य (१९१४–१८) जो कि उनके सेना तथा चिकित्सा सेवाके सहायक होनेके कारण, उनका प्राथमिक कर्तव्य था, बहुत पहलेसे प्रारम्भ हो गया था। उनके युद्धोत्तर कार्यमे अपग व्यक्तियोका प्रशिक्षण, भूतपूर्व सैनिकोको सहायता, विनष्ट क्षेत्रोके निवासियोको सहायता तथा स्थायी चिकित्सालयो, औषधालयो और निदान, चलित चिकित्सालयो और एम्बुलेन्सो, परिचारिकाओको प्रशिक्षण और सहायक कर्मचारियोको स्वास्थ्य सबधी लोकप्रिय तथ्योका शिक्षण, शिशुकल्याण तथा कनिष्ठ रेडक्रासके सबधके कार्य सम्मिलित थे।

जहा तक अन्य सामाजिक अभिकरणोसे सहयोगका सम्बन्ध है, शासकीय सेवाओको सहयोग देनेके अतिरिक्त राष्ट्रीय रेडक्रास सगठन, आर्डर आफ सेण्ट जान आफ जेरुसलम (Order of St. John of Jerusalum), दि साव्हरेन आर्डर आफ माल्टा (The Sovereign Order of Malta), समाजसेवा दल और यात्रियो तथा प्रवासियोकी सहायताके संगठन जैसी अन्य मानवीय सस्थाओसे सदैव सम्पर्कमे रहा है।

सेण्ट जान एम्बुलेन्स संघ
(ST. JOHN AMBULANCE ASSOCIATION)

रेडक्राम तथा सेण्ट जान एम्बुलेन्स संघ–दोनो की गतिविधियां उपर्युक्त विवरणके अनुसार, साथ ही साथ चलती है। अन्य किसी कार्यकी भाति एकके

एम्बुलेन्स कार्य में दूसरे संघ द्वारा सेवा कार्य किया जा सकता है या सहायता दी जा सकती है। परन्तु फिर भी पहले जिस प्रकार मैने रेडक्रासके सबधमे चर्चा की है, उसी प्रकार सेण्ट जान एम्बुलेन्स संघ और उनके कार्यके बारेमे उल्लेख करनेका कुछ न्यायपूर्ण कार्य करना चाहता हूं।

इग्लैण्डमे नागरिक एम्बुलेन्स सगठनके बारेमे बहुत ध्यान दिया गया है। १८७८ मे सेण्ट जान आफ जेरुसलमका ब्रिटिश एम्बुलेन्स सघ प्रारम्भ किया गया था। सड़कपर तथा रेलमे या नागरिक जीवनके किसी भी कार्यके दुर्घटनाके फल-स्वरूप आहत व्यक्तियोका प्रथमोपचार करना उसका उद्देश्य था। संघके द्वारा पहल (Initiative) किये जानेके फलस्वरूप ग्रेट ब्रिटेनके अनेको बडे नगरों मे एम्बुलेन्स दलोका निर्माण हुआ था तथा आरक्षी, रेलवे सेवको और कर्मचारियोको चिकित्सक के आने तक प्रथमोपचार करनेकी विधिका प्रशिक्षण दिया गया था। इस संघका मुख्यालय क्लर्केनवेल, लन्दन (Clerkenwell, London) में है तथा इसकी शाखाए राष्ट्रकुलके बहुतमे भागोमे है।

ग्रेट ब्रिटेनमे सेण्ट जान एम्बुलेन्स ब्रिगेडका जन्म जून १८८७ मे हुआ था। १८८८ मे महामहिमामयी रानी विक्टोरियाने इग्लैडके चर्चो के बडे सघ (Grand Priory of England) को प्रथम शाही अधिकारपत्र प्रदान किया था और उस संघके सम्राज्ञीके रूपमे प्रमुखका पद स्वीकार करते हुए तथा अपने सबसे बडे पुत्रको एच. आर. एच. प्रिन्स आफ वेल्स (H. R. H. The Prince of Wales) को प्रथम शाही महाप्रधान (Grand Prior) नियुक्त करते हुए उसे सम्मानित किया था।

पाच वर्षोके पश्चात् २१ दिसम्बर १८९२ को न्यूज़ीलैण्डके डयूनेडिन (Dunedin) मे एम्बुलेन्स विभागके निर्माणके साथ ही समुद्रपार ब्रिगेड भी अस्तित्वमे आ गया था।

१९०५ ईस्वीमे बम्बईमे एक पारसी एम्बुलेन्स तथा परिचारिका विभागके निर्माणके साथ ही भारतमे भी एम्बुलेन्सके दर्शन हो गये थे।

एम्बुलेन्स गाड़ियाँ : ब्रिटिश एम्बुलेन्स गाड़ियोका निर्माण चार सोये हुए रोगियो, एक बैठे हुए रोगी और चालक अथवा १४ बैठे हुए व्यक्तियोके लिए होता है। भारतीय एम्बुलेन्स गाडियाँ दूसरे प्रकारकी है। हमारे यहाँ ब्रिटिश की भाति ही प्राय: कोई भी भिन्नता न रखते हुए एम्बुलेन्स गाड़ियाँ है, किन्तु बैलो अथवा खच्चरो द्वारा खीची जानेवाली दो पहियोकी छोटी गाडियोका उपयोग भी हम एम्बुलेन्सकी

तरह करते है। वे बडी मज़बूतीके साथ बनी हुई होती है और गाड़ीके चालकके अतिरिक्त दो सोते हुए या चार बैठे हुए व्यक्तियोको ले जानेकी क्षमता उनमें रहती है।

इस सम्बन्धमे सेण्ट जान एम्बुलेन्स संघकी भारतीय परिषदके बारेमें कुछ जानना अधिक उपयुक्त होगा। इस समय मेरे सन्मुख १९४० का वार्षिक प्रतिवेदन है। इससे हमे ज्ञात होता है कि इस वर्ष सेवाके उन और बृहत आदेशोंको देखने का अवसर प्राप्त हुआ था कि जो आर्डर आफ सेण्ट जान (Order of St. John) के समस्त कार्योंके हृदय और सारतत्व की भांति है। प्रतिवेदनके ही शब्दोंमें "सेण्ट जान एम्बुलेन्स आन्दोलन सेवाकी अन्तःप्रेरणाको प्रेरित करता है तथा घायल व्यक्तियोको सहायता देने और शारीरिक कष्टसे पीडित व्यक्तियोंकी सेवा करनेके उद्देश्यकी पूर्तिके लिए उक्त प्रेरणाका प्रदर्शन करता है। प्रथमोपचार, घरेलू परिचारिकाका कार्य तथा अन्य सम्बन्धित विषयोमे, जिनमे कि वर्तमान युगमें अति आवश्यक हवाई हमलेसे सावधानीके लिए प्रशिक्षण भी हाल मे ही सम्मिलित कर लिया गया है, जाति या पथके भेदभावसे परे पुरुषों और महिलाओ तथा लड़को और लडकियोको सेण्ट जान एम्बुलेन्स सघ द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है। जो यह प्रशिक्षण प्राप्त कर लेते है, उन्हे बादमे आर्डर आफ सेण्ट जान (Order of St. John) की एम्बुलेन्स विभागकी एक शाखा सेण्ट जान एम्बुलेन्स ब्रिगेडमे प्रविष्ट किया जा सकता है। इसके द्वारा सेण्ट जान एम्बुलेन्स संघका प्रमाणपत्र धारण करनेवालोको जनहितके लिए व्यक्तिगत प्रयास को जारी रखने तथा सैना और नागरिक--दोनो सेवाओके विभिन्न क्षेत्रोंमे अपनेको उपयोगी बनानेके अवसर मिलते है। इस प्रकार आर्डर आफ सेण्ट जान (Order of St. John) के आधारभूत सिद्धान्तो-- पीडित मानवताकी सेवा तथा आत्मत्यागके आदर्शो--की पूर्तिके उन्हे अवसर प्राप्त होते है"।

भारतीय परिषदके १९४० के प्रतिवेदनके अन्तमे सेण्ट जान सघ (नई दिल्ली) की कार्यकारिणी समितिके अध्यक्ष श्री ए. सी. बेडेनाक (A. C. Bedenoch) ने उस विशाल आकारके कार्यकी चर्चा की है जो समस्त भारतमे स्वैच्छिक रूपसे किया गया था। इस कार्यके द्वारा ऐसे कार्यकर्ताओके दलोमे लगातार वृद्धि की गयी थी जो कि उस उद्देश्यके लिए उन्हें हृदयमे प्यारा था, और सहर्ष अपना समय और शक्ति देते थे। उनके दृढ़ मतानुसार १९३० से १९४० तक भारतमे सघ का कार्य लगभग दुगना हो गया था।

इस प्रसगमे सेण्ट जान एम्बुलेन्स सघ (भारतीय परिषद) के द्वारा उनके नयी दिल्ली स्थित मुख्यालयसे प्रसारित तथा इस पुस्तकमे चौथे अध्याय अन्यत्र उद्धृत पत्रकका

पाठकके लिए पढ़ना रुचिकर होगा। उसका शीर्षक है—"क्या आप प्रथमोपचार करनेकी योग्यता रखते है? क्या आप बीमार व्यक्तिका परिचार कर सकते है"। इस पत्रकमे एक खण्डका शीर्षक है—" "एम्बुलेन्स प्रशिक्षणका महत्व।"

इसी पत्रकके एक और खण्डको भी ध्यानमे रखा जा सकता है। उसका शीर्षक है—"समुद्रपारमे सेण्ट जान एम्बुलेन्स ब्रिगेड"। इसके अनुसार यह ब्रिगेड एम्बुलेन्स तथा परिचय विभागोसे बना है। एम्बुलेन्स विभागोमे प्रथमोपचार का प्रमाणपत्र धारण करनेवाले व्यक्ति है और परिचार विभागोमे प्रथमोपचार तथा घरेलू परिचय—दोनो का प्रमाणपत्र धारण करनेवाली महिलाएं है। इसके सदस्य अभ्यासके लिए नियमित रूपसे मिलते है और समस्त प्रकारके सार्वजनिक कर्तव्योको हाथमे लेते है। इनमे मेल, त्यौहार, खेलकूद, सभाए, जुलूस इत्यादि जहा कही भी दुर्घटना होनेकी सभावना है—सम्मिलित है। परिचार विभाग चिकित्सालय कल्याण-केन्द्रो, पाठशालाओ इत्यादिमे सहयोग देते है।

"सेण्ट जान एम्बुलेन्स के समुद्रपार ब्रिगेड" के सामान्य विनियमोका स्मरण रखना महत्वपूर्ण है। वे १९२७ ईस्वीमे प्रसारित किये गये ये। वे इस पुस्तकमे चौथे अध्याय मे अन्यत्र दिये गये है किन्तु पाठककी तत्काल जानकारीके हेतु उन्हे यहा पुनः अवतरित करना उचित प्रतीत होता है। इसके अनुसार समुद्रपार ब्रिगेड के उद्देश्य निम्नलिखित है :—

(अ) सेण्ट जान एम्बुलेन्स सघसे प्राप्त प्रथमोपचार प्रमाणपत्र धारण करनेवालोको जनहितके लिए व्यक्तिगत प्रयासोको सयुक्त करनेके उद्देश्यसे एम्बुलेन्स तथा परिचारमे अभ्यास करनेके लिए एक साथ मिलनेके अवसर प्रदान करता है।

(ब) आरक्षी तथा अन्य अधिकारियोकी स्वीकृतिसे सार्वजनिक अवसरोपर घायल व्यक्तियो तथा बीमारोका प्रथमोपचार करना तथा ऐसे कर्तव्यके निर्वाहके लिए पुरुषो और महिलाओके दलको पूरी तरहसे तैयार बनाये रखना।

(स) ऐसे नागरिकोके दलको भर्ती करना जो प्रथमोपचारमे योग्यता प्राप्त हो तथा एम्बुलेन्स अभ्यास और परिचारिकाके कर्तव्योमे प्रशिक्षित हो और जो आवश्यकताके समय देशमे या देशके बाहर सार्वजनिक चिकित्सा सेवाओके पूरकके रूपमे नौसेना, थलसेना, वायुसेना या अन्य अधि-कारियो के अन्तर्गत रखे जानेके लिए प्रस्तुत हो।

(ड) एम्बुलेन्स परिवहन कर्तव्योके लिए लोगोको प्रशिक्षित करना।

(ई) बीमार तथा घायल व्यक्तियोको सहायता देनेके प्रत्येक उपायको विकसित करना तथा आगे बढ़ना।

शासकीय लेखन सामग्रीमे उपयोगके लिए सेण्ट जान एम्बुलेन्सके समुद्रपार ब्रिगेडका चिन्ह चित्र सख्या ७१ मे नीचे दिया गया है।

प्रत्येक विभागकी साजसामग्री की प्रत्येक वस्तुपर विनियमोके अनुसार यह चिन्ह छापा, रंगा, पिनो या अन्य किसी उपाय द्वारा बाधा जा सकता है किन्तु सभी मामलोमे यह चिन्ह केवल काले और सफेद रगोमे ही रहेगा।



चित्र ७१

सेण्ट जान एम्बुलेन्स सघका चिन्ह

सामान्य विनियमोके एक उस भागको भी उद्धृत किया जा सकता है, जो सेण्ट जान एम्बुलेन्सके समुद्रपार ब्रिगेड जैसे सगठनकी सदस्यतासे प्राप्त लाभोका उल्लेख करता है। वे साधारण विनियमोमे वर्णित सक्षेपमे इस प्रकार है :—

(अ) प्रथमोपचारमे सक्रियता प्रदान करना है क्योंकि सदस्यताकालके प्रत्येक वर्षमे प्रति सदस्यको उस विषयमे पुन: योग्यता प्राप्त करनी पडती है और महिलाओके मामलेमे परिचारिका प्रशिक्षणके विषयमे भी पुन. योग्यता प्राप्त करनी पडती है।

(ब) अनुशासनके प्रति स्वेच्छासे समर्पित करनेकी दिशामे सदस्योको प्रेरित करता है। मनुष्यके हितके लिए इसके दूरगामी प्रभाव होते है। श्रमिकोके बडे—बडे विनियोजक जिस प्रकार अपने कर्मचारियोको ब्रिगेडमे सम्मिलित होने तथा सदस्यता चालू रखनेके लिए उत्साहित करते है उससे इस तथ्यका पता लग जाता है।

(स) सदस्योंको थोड़ा–सा ड्रिल करने का अभ्यास प्राप्त करनेका निश्चित अवसर देता है जिससे कि वे बिल्कुल ठीक रीतिसे कार्य कर सके या चल सके। इस प्रकार बड़े सकटके अवसरोंपर अनुचित शीघ्रता और प्रदर्शनसे बचत होती है।

(ड) सदस्योंको सार्वजनिक कर्तव्यमे रत रहनेके समय एक स्पष्ट गणवेष पहननेका अधिकार देता है ताकि जब उनकी सेवाओकी आवश्यकता हो तो वे तुरन्त ही पहचाने जा सके।

(ई) राष्ट्रीय संकटके अवसरोंपर प्रशिक्षित पुरुषो तथा महिलाओंको नौसेना, थलसेना और वायुसेना अधिकारियोके अन्तर्गत अपनेको प्रस्तुत करनेके योग्य बनाता है।

बालचर (SCOUTS)

बालचर, चाहे वे किसी से भी सम्बद्ध क्यो न हो, नागरिक प्रतिरक्षामे सदैव अत्यन्त सहायक रहे है। उनके प्रशिक्षण तथा कार्योका स्वरूप ही ऐसा है कि वे इस उद्देश्यके लिए अत्यन्त उपयुक्त है। यह अवश्य सत्य है कि आप तरुण बालचरोमे नागरिक प्रतिरक्षाकी कठिन समस्याओकी देखभाल की अपेक्षा नही कर सकते, यद्यपि अनेक प्रकारमे वे इस उद्देश्यके लिए भी निश्चयही उपयोगी हो सकते है।

जब हम बालचरोकी चर्चा करते है तो सबसे प्रथम वस्तु जो हमारी कल्पना मे उभरती है, वह है बेडेन पावेल बालचरोका अविर्भाव। राबर्ट बेडेन पावेल एक ब्रिटिश अधिकारी थे ओर युद्धके समय वे मेफकिग नामक स्थानकी रक्षा करनेके लिए दक्षिण अफरीका भेजे गये थे। वहा उन्होने देखा कि उनके अन्तर्गत सैनिक खुले स्थानमे रहनेके लिए तैयार नही थे अतएव खुले स्थानमे जीवन बितानेके बारेमे जानकारी प्राप्त करनेमे सहायता देनेके लिए उन्होने अनेक प्रकारकी क्रीडाओका आयोजन किया। वे इन्हे "[illegible] लिए विशेष प्रवास" के नामसे (Stunts for Scouting) पुकारते थे। सैनिकोको प्रहरी दलोके नामसे विभिन्न दलोमे उन्होने विभाजित किया था। प्रत्येक प्रहरी दल अपना नेता स्वय चुनता था। इन क्रीडाओसे सैनिकोका मनोरजन होता था तथा इनसे वे बहुत कुछ सीखते थे। कुछ समय के पश्चात् शीघ्रही–इग्लेड के बालक इन खेलो को खेलने लगे। सन् १९०८ ईस्वीमे बेडेन पावेलने बालकोके लिए कार्यक्रमके रूपमें इन क्रीडाओके सम्बन्धमे पुन. लिखा तथा **बालक बालचरोंकी स्थापना की**।

बालिकाओने अपने भाइयोको तमाशेका आनन्द लेते हुए देखा और स्वय अपना क्लब (club) होनेकी इच्छा उनमे जाग्रत हुई। १९०९ मे

लन्दनके क्रिस्टल पैलेसमे बालकोकी एक बालचर रैली हुई। इस अवसरपर इग्लैण्डके राजाने सर राबर्ट बेडेन पावेलको "मैफकिगका वीर नायक" घोषित किया था। इस अवसरपर बालकोके साथ बालिकाओके एक दलको मार्च करते हुए देखकर प्रत्येक व्यक्तिको जो आश्चर्य हुआ था, उसकी केवल कल्पना ही की जा सकती थी । वे खाकी कमीज, घाघरा और चौडे किनारेके टोप पहने थी। उन्होने बालचर बननेका दृढ निश्चय कर लिया था।

इस प्रकार बेडेन पावेल बालचरोका अस्तित्व प्रारम्भ हुआ था। क्रमशः वह फैलकर विश्वव्यापी सगठन बन गया। बीस वर्षसे भी अधिक हुए होगे कि जब विगत युद्धके समय लन्दनसे भारत लौटनेके पश्चात् मै इलाहाबादमे लोगोको हवाई हमलेमे बचावके बारेमे प्रशिक्षण दे रहा था, तब स्वय मै भी सहायक बालचर आयुक्त (Assistant Scout Commissioner) के रूपमे इस सघके लिए कार्य करता था।

इलाहाबादमे दूसरा महत्वपूर्ण सघ—हिन्दुस्तान बालचर सघ था जिसके आयुक्त श्री श्रीराम बाजपेयी थे और उनकी प्रार्थनापर हवाई हमलेसे बचावके बारेमे हिन्दुस्थान बालचरोके सम्मुख मै ने क्रमश अनेक भाषण दिये थे। मुझे यह भली भाति स्मरण है कि इलाहाबादमे हवाई—हमलेमे बचावसे सबधित प्रशिक्षणका केन्द्र या तो बेडेन पावेल बालचर सघ था या हिन्दुस्थान बालचर सघ। इस सबधमे जिला अधिकारियोने भी अपने कर्तव्यका पालन किया था। उन्होने भाषणोका आयोजन किया था। इनमेसे एक भाषणमाला इलाहाबाद के मेयो हालमे आरक्षी तथा जिला अधिकारियोके सम्मुख मेरे द्वारा दी गयी थी। परन्तु यह सब उपयुक्त दो बालचर सघोकी सहायतासे ही बहुत कुछ हुआ करता था। यहा तक कि जनताके लिए जो साहित्य तैयार किया गया था वह या तो मेरे द्वारा लिखा गया था या श्री श्रीराम बाजपेयीके द्वारा।

इलाहाबादकी भाति अन्य सभी स्थानोमे नागरिक प्रतिरक्षामे बालचरो ने महत्वपूर्ण कार्य किया था।

बालचर ऐसे व्यक्ति होते है कि जिनके जीवनमे वेशभूषा, अनुशासन, कला और हस्तोद्योग, साहित्य और नाटक, सगीत और नृत्य, सामूहिक जीवन, अन्तराष्ट्रीय मैत्री, खुले मैदानकी गतिविधियाँ, खेलकूद तथा क्रीडाएं, तमाशा तथा समन्वेषण—ये समस्त तथा अन्य महत्वपूर्ण वस्तुए प्रमुख योगदान देती है और इनमेसे प्रत्येक व्यक्तिगत रूपमे तथा सब मिलाकर सामूहिक रूपमे नागरिक प्रतिरक्षा कार्यके लिए उपयोगी है, अतः नागरिक प्रतिरक्षाके लिए एक स्वैच्छिक सगठनके रूपमे बालचरोका महत्व आप ही आप स्पष्ट है इसीलिए उसपर अधिक बल देनेकी आवश्यकता नही है। और सर्वोपरि तो यह स्मरण रखना चाहिए कि सभी पाठशालाए तथा महाविद्यालय अपने बालचरोको सरक्षण प्रदान करते है और चूँकि

भविष्यमे इन व्यक्तियोंको ही उत्तरदायित्व वहन करना है, अतएव किसी भी नागरिक प्रतिरक्षा योजनामें बालचरोके महत्वको हमे सदैव ध्यानमे रखना चाहिए।

महिलाओंकी स्वच्छिक सेवाएं
(WOMEN'S VOLUNTARY SERVICES)

इस शीर्षकके अन्तर्गत दिए गए विवरणका सम्बन्ध प्रमुखतः ग्रेट ब्रिटेनमे इस सम्बन्धमे किए गए कार्यसे है। यह विषय इतना व्यापक है कि विश्वके समस्त या अधिकाश देशोका विवरण दे सकना व्यावहारिक नही है। सुडेटनलैण्डमे सकटके समय गृहविभागमे आयोजित ब्रिटेनके प्रमुख महिला सगठनोकी एक सभामे हवाई हमलेसे बचावके लिए महिलाओकी स्वेच्छिक सेवाओके निर्माणका निश्चय किया गया था। गृहसचिव द्वारा लेडी रीडिगको लिखे गये एक पत्र मे उसके उद्देश्य निम्नलिखित बताये गए थे –

(१) स्थानीय अधिकारियोकी हवाई–हमलेमे बचावमे सम्बन्धित सेवाओके लिए महिलाओको भर्ती करना।

(२) देशके प्रत्येक गृहनिवासिको यह समझानेकी सहायता करना कि हवाई हमलेका क्या परिणाम हो सकता है।

और

(३) प्रत्येक गृहनिवासीको यह ज्ञात करा देना कि अपने बचावके लिए तथा समाजकी सहायताके लिए वह क्या कर सकता है।

१८ जून १९३८ को राष्ट्रमे घोषित महिलाओके इस नूतन स्वरूपकी तैयारियो का कार्य बडे उत्साहपूर्वक हाथमे लिया गया था। उसके मुख्यालयके कर्मचारियोके लिए आवश्यक स्थानकी व्यवस्था की गयी तथा उसके सामान्य प्रशासकीय व्ययका उत्तरदायित्व वहन करना शासनने स्वीकार किया था। हवाई–हमलेसे सावधानीके तौरह प्रादेशिक क्षेत्रमे से प्रत्येक मे महिलाओकी स्वैच्छिक सेवाओकी प्रतिनिधियोको नियुक्त तथा देश भरमे केन्द्रोके नामसे ज्ञात स्थानीय महिलाओकी स्वैच्छिक सेवाओ के निर्माण द्वारा इसका प्रारम्भ किया गया था।

२३ जनवरी १९३९ को प्रधानमन्त्रीकी बी. बी. सी. वार्ताके साथ ही भर्ती का एक नवीन आन्दोलन प्रारम्भ किया गया था। उसी समय "**राष्ट्रीय सेवा पथदर्शक**" नामक पुस्तक देशके प्रत्येक कुटुम्बमे वितरित की गयी थी। इसका एक महत्वपूर्ण अग यह था कि हवाई हमलेसे बचावसे सबधित दलका एक तृतीय अश महिलाओका होनेको था। महिलाओकी स्वैच्छिक सेवाए, जिसका उसी वर्ष फरवरी माहमे "नागरिक प्रतिरक्षाके लिए महिलाओंकी स्वैच्छिक सेवाएं" के नामसे

पुनः नामकरण किया गया था, तब तक हवाई हमलेसे बचावके लिए भर्ती स्वयंसेवी माध्यमके रूपमें अपने वास्तविक कार्यक्षेत्रसे बहुत आगे बढ गयी थी। यद्यपि हताहतों तथा परिचारिकाओंकी सेवाओके लिए स्वयसेविकाओको भर्ती करनेका कार्य जारी रखा गया था किन्तु अब उसके नये नामसे यह स्पष्ट हो चुका था कि हवाई–हमलेसे बचावके कार्यक्षेत्रसे और आगे बढकर यह सगठन अन्य अनेक बातोकी ओर, विशेषतः चिकित्सालय पूर्ति केन्द्रोका सगठन तथा निष्क्रमण के आयोजनमे स्थानीय अधिकारियोको सहयोग आदि की ओर ध्यान देने लगा था।

१९४० के सधन आक्रमणमे और उसके पश्चात् १९४१, १९४२ और १९४३ मे महिलाओकी स्वैच्छिक सेवाओका कार्य अत्यन्त प्रशसनीय था। मुख्यालय तथा समस्त क्षेत्रीय कार्यालयोमे उनकी सख्या भी काफी बढ़ गयी थी।

यहा मै सर्वप्रथम पाठकका ध्यान (जुलाई १९४० से मार्च १९४४) की अवधिके लडाईके ज्वारो अर्थात् धमासान लडाइयोकी ओर आकर्षित करना चाहता हू तथा इस प्रसगमें सर्वप्रथम ब्रिटेनकी लडाई (जुलाई–अक्टूबर १९४०) की चर्चा करना चाहता हू। इस अवधिमे केवल सैनिक स्थापनाओंपर ही नही बल्कि उद्योग तथा परिवहन सेवाओपर भी दिन और रात त्रस्तकारी आक्रमण जारी रखे गए थे। इस सबधमे यहा केवल एक ही उदाहरण काफी होगा–. केवल एक वायुयानसे गिराए गए बमोके फलस्वरूप साउथ वेल्स स्थित तैलमग्रह केन्द्रमे भयानक आग लग गयी थी। उक्त केन्द्र एक सप्ताह तक जलता रहा था और पन्द्रह तैल–सग्रहो मे से इसके फलस्वरूप दस सग्रह नष्ट हो गए थे। लीवरपूल, पोर्ट टेलबाटडाक्स, बर्मिघम, क्रायडन, बोस्टन, गदरहेम और कार्डिफपर वायुयानोकी छोटी सख्या द्वारा कुछ क्षति पहुचाते हुए रात्रिके समय आक्रमण किए गये थे। ये आक्रमण उन भारी आक्रमणोके अतिरिक्त थे जो इसी अवधिमे लन्दन, पोर्टमाउथ और साऊथेम्पटनपर किए गए थे। फलस्वरूप आक्रमणोसे प्राप्त अनुभवोंकी सख्या तीव्र गतिसे बढ़ रही थी। ऐसी विपरीत परिस्थितियो मे नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओको और अधिक व्यापक रूपमे सक्रिय होना पडा था और उनकी "कुशलता, उत्साहपूर्वता और सहनशीलता" के बारेमे मन्त्रालय को अनेक सूचनाए प्राप्त हो रही थी। "बुलाए जानेपर" स्वयमेवक सन्तोषजनक ढगसे प्रस्तुत होते थे और अशकालिक स्वयसेवक तो प्राय. प्रस्तुत होते थे। किन्तु इससे ज्ञात होता था कि अपेक्षाकृत अधिक अच्छे स्थानीय प्रबन्धकी आवश्यकता थी। इसी प्रकार, दुर्घटना स्थलोपर चलित भोजनालयोकी व्यवस्थामे तथा अन्य प्रकारसे महिलाओकी स्वैच्छिक सेवाओने अत्यन्त बहुमूल्य सहयोग प्रदान किया था।

लंदनकी लड़ाईकी अवधिमें (नवंबर–दिसंबर १९४०) जो कि श्री चर्चिल के शब्दोंमें "युद्धकी निर्णायक लड़ाइयोंमें से एक" थी, महिलाओंकी स्वैच्छिक सेवाओंनें अत्यन्त उल्लेखनीय योगदान किया था। लोंगोंके द्वारा, जिनमे महिलाओं की स्वेच्छिक सेवाओकी समस्याएं भी सम्मिलित थी, बडे साहस और धैर्यके साथ सधन तडितगति आक्रमण (Blitz) को सहन किया गया था। इस आक्रमणके प्रमुख आघातको सहनेके लिए जो कुछ किया जा सकता था वह इन सेवाओंकी सदस्योंने किया और जर्मन–आक्रमणका सामना करनेमे इन्होंने लोगो की सहायता की। महिलाओंकी स्वेच्छिक सेवाओके संबंधमे एक महत्वपूर्ण बात "शयनागार शरणागृहों" मे सबधित समस्या थी। लदनकी लडाईके प्रारंभ होते ही जन–स्वास्थ्यका विशेष रूपसे ध्यान रखते हुए शरणगृहकी स्थितियोके निरीक्षणके लिए शासनके द्वारा लार्ड होर्डरकी अध्यक्षतामे एक छोटी-सी समिति नियुक्त की गयी थी। अध्यक्षके अतिरिक्त स्वास्थ्य मंत्रालयके प्रमुख चिकित्सा अधिकारी, गृह सुरक्षा मत्रालयके मुख्य अभियता, बेथनल ग्रीनके मुख्य रक्षक (सर विन्डेम डीड्स) और महिलाओंकी स्वैच्छिक सेवाओंकी एक प्रतिनिधि इस समितिके सदस्य थे। यह तथ्य कि महिलाओंकी स्वैच्छिक सेवाओंकी प्रतिनिधि इस महत्वपूर्ण समितिकी सदस्या थी स्वय इस गठनके उस महत्वका उल्लेख कर देता है कि जो उसे लदनकी नागरिक प्रतिरक्षा योजनामें प्राप्त था। इस प्रसंगमें यह और बता दिया जाय् कि ईस्ट ऐण्ड के शरणगृहोको रात्रिमे देखनेके पश्चात् होर्डर–समितिने एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया था। इस प्रतिवेदनके अनुसार रात्रि भरके आक्रमणोंमे जो अनेक समस्याए उत्पन्न हुई थी, उनमे प्रमुख समस्या लोगोंके अत्यधिक सख्यामे एकत्र हो जानेकी थी। और यद्यपि इस भीड़को हल्का करनेके लिए लोगोंको इधर–उधर ले जानेके सिद्धान्तके बारेमे कोई आलोचना नही की किन्तु उन्हे सदेह था कि लोगोंको अपने निवास स्थानोंके समीप ही शरण लेनेके लिए राजी करना कदाचित् ही समीचीन हो। अतएव शरणगृहोंके भीतरकी स्थितियोंपर उन्होंने विशेष ध्यान दिया और इनको नियमित रूपसे साफ करने, इनका निरीक्षण करने, स्वास्थ्य रक्षा सबधी उपकरणो तथा प्रथमोपचार केन्द्रोकी समुचित व्यवस्था करने और बड़े शरणगृहोमे निरीक्षण अधिकारियो (Marshals) की नियुक्ति करनेके संबध मे सिफारिश की थी। होर्डर समिति बडे सधन आक्रमणसे लेकर अक्टूबर १९४१ तक अस्तित्वमे रही थी।

शयनागार शरणगृहोमे अत्यधिक भीड़ एकत्रित होनेके सबंधमे प्रस्तुत प्रतिवेदनके बारेमे यह देखा गया कि इस समस्याको हल करना अव्यावहारिक था। यह समस्या केवल अनेक प्रकारके मनोरजनके साधनो और उपायोंको जुटाकर ही हल की जा सकती थी। उदाहरणके लिए ये साधन अव्यवसायिक गायकोको

अपने प्रदर्शनका अवसर देना तथा शरणगृह निवासियोको विभिन्न पुस्तकालयों द्वारा पुस्तको और साहित्यकी पूर्ति करना आदि थे। ऐसी स्थितिमें एक शरण गृहकी गतिविधियोका दूसरे शरणगृहकी गतिविधियोसे भिन्न होना स्वाभाविक ही था। इन गतिविधियोंमे महिलाओकी स्वैच्छिक सेवाए, बालकोके लिए कथा केंद्र, शिशुओके लिए खेलकूदके केद्र, बालको तथा बालिकाओके क्लब, माता-पिता को बच्चोकी देखभालके विषयमे सलाह आदि गतिविधिया सम्मिलित थी। ऐसी गतिविधियां शरणगृहोसे प्रारंभ होकर भारी आक्रमणके समाप्त होनेके पश्चात् प्रायः बाहर तक पहुच जाती थी। उपर्युक्त विवरण से यह दर्शित होगा कि शयनागार शरणगृहोमे अत्यधिक भीड एकत्र होनेकी उपर्युक्त प्रमुख समस्याको हल करनेमें महिलाओकी स्वेच्छिक सेवाओने किस प्रकार अपना योगदान दिया था।

अक्टूबर १९४० के अत तक लदनके अनेक ग्रामीण ससदीय क्षेत्रो (Boroughs) मे कल्याण अधिकारी नियुक्त किये गये थे, तीस कल्याणकारी समितिया कार्यरत थी और आवश्यकता पड़नेपर छः और समितिया कार्यके लिए प्रस्तुत थी। अब भूमिसतहपर स्थित सामूहिक शरणगृहोमे कल्याण कार्यपर अधिक ध्यान दिया जाने लगा था। इस कार्यमे महिलाओकी स्वैच्छिक सेवाओकी प्रायः सहायता ली जाती थी। इससे इस तथ्यका परिचय प्राप्त होता है कि इस सगठनका कल्याणकार्य विशेषरूपमे उल्लेखनीय था।

महिलाओकी स्वैच्छिक सेवाओमे यह ध्यानमे रखना महत्वपूर्ण है कि स्टाक-डे–एबरनान, सरे के नागरिक प्रतिरक्षा कर्मचारी महाविद्यालयमे हवालदारो, उद्योग, ग्रामीण ससदीय क्षेत्रके यान्त्रिको, सर्वेक्षको, स्वास्थ्यके चिकित्सा अधिकारियो, प्रशिक्षण अधिकारियो, राष्ट्रीय दमकल सेवा और महिलाओकी स्वैच्छिक सेवाओ की सदस्याओके लिए विशेष पाठ्यक्रम सचालित किये गये थे। १९४२ के वर्षभरमे नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओके विषय तथा प्रशिक्षणार्थियोमे सवर्धित प्रशिक्षण कार्यक्रममे विस्तार हुआ था। मई माहमे महिलाओकी स्वेच्छिक सेवाओने अपनी सदस्याओको नागरिक प्रतिरक्षाकी बुनियादी उपायोमे प्रशिक्षित करनेका निश्चय किया था। अगस्त माहमे नगर रक्षको तथा क्षेत्रीय प्रशिक्षण अधिकारियोके लिए युद्ध कार्यालयने इसी प्रकारकी योजनाका प्रारम्भ किया था। इन सबसे यह दर्शित होता है कि महिलाओकी स्वेच्छिक सेवाओकी स्थिति उतनी ही महत्वपूर्ण थी जितनी कि इस अनुच्छेदमे वर्णित नागरिक प्रतिरक्षा प्रशिक्षणके सबधमे अन्य किन्ही प्रमुख सेवाओकी थी।

जैसे–जैसे यूरोपपर आक्रमणकी तिथि निकट आती गयी वैसे–वैसे निष्क्रिय हवाई प्रतिरक्षा दुर्घटना नियंत्रण और उद्धारकार्यमे मित्र राष्ट्रोके सैनिक दलोके

प्रशिक्षणकी मांगमें वृद्धि होती गयी थी और नागरिक-प्रतिरक्षा-संगठनकी सेवाओंका प्रायः उपयोग होने लगा था। इंग्लैण्डमे नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओमे लगातार कमी होने लगी थी। यह व्यवस्था मुख्यतया जर्मनीकी अपेक्षित प्रतित्रियाके विरुद्ध की गयी थी क्योंकी वे सहयोग देनेवाले उस प्रत्येक संभव साधनपर आक्रमण करते थे कि जिसकी ऐसी स्थितिमे आवश्यकता पड़ती थी। ऐसी स्थितिमें केवल महिलाओं और नगररक्षकोके साधन ही शेष थे। अतएव उद्धारकार्यमे सादे बुनियादी – प्रशिक्षणका प्रसार सभी नगररक्षको तक कर दिया गया था और रक्षक कर्त्तव्यों, दुर्घटना नियत्रणके कुछ कर्त्तव्यो विशेषकर दुर्घटनाजाच केन्द्रोके सचालन कार्यमे महिलाओकी स्वैच्छिक सेवाओको सादा – बुनियादी प्रशिक्षण दिया गया था। मित्र राष्ट्रो द्धारा यूरोपके आक्रमणके समय तथा उसके पूर्व की गंभीर अवधिमें महिलाओकी स्वैच्छिक सेवाओका महत्व इससे ज्ञात हो जाता है।

गणवेषकी पूर्तिके सबधमे मै पहले ही इस अध्यायमे नगररक्षकोकी चर्चा करते समय लिख चुका हू। यहा यह विशेषरूपसे उल्लेखनीय है कि इस सबंधमे महिलाओंकी स्वैच्छिक सेवाओने एक समय अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान दिया था। १९४१ की वसत ऋतुमे बडे सधन आक्रमण (Big Blitz) के अन्तमे हवाई हमलेसे बचावसे सबधित अनेको कर्मचारी उस समय भी अपने स्वयके स्वेटरोके ऊपर तथा अपने स्वयंके लबे कोटोके नीचे नीला सूती ऊपरी परिधान पहिने हुए थे। किन्तु बादके कुछ महीनोमे महिलाओकी स्वेच्छिक सेवाओ की अत्यन्त महत्वपूर्ण सस्था द्वारा एक कल्याणकारी तथा सुख-सुविधा सबधी कोषका सगठन किया गया था और इस कार्यके फलस्वरूप ही हवाई हमलेसे बचावमे सबंधित कर्मचारिओको बुने हुए वस्त्रोकी पूर्ति होने लगी थी। इस प्रयासके फल स्वरप ही इन सेवाओको पूर्णकालिक तथा प्रतिमाह कमसे-कम ४८ घटे तक कर्त्तव्यरत रहनेवाले अशकालिक सदस्योको ग्रेट ब्रिटेनमे नीली सर्जक वास्तविक गणवेष, लबादे, टोपियो और जूतोकी पूर्ति मई १९४१ से प्रारभ हो सकी थी।

ब्रिटेनकी महिलाओकी स्वेच्छिक सेवाओके सबधमे और अनेक महत्वपूर्ण बाते भी हो सकती है किंतु मै यहा एक तथ्यकी और चर्चा करते हुए इस विवरणको समाप्त करना चाहता हू। युद्धकी बादकी स्थितिमे यह मान्य किया गया था कि शिबिरमे रहते हुए सैनिकोको आवश्यक खाद्यान्न, निवास तथा वस्त्र की पूर्ति करना लोगोका परम कर्त्तव्य है। अनेको अवसरोपर ऐसी वस्तुओकी पुनः पूर्तिके लिए क्षेत्रीय मुख्यालयों द्वारा शिबिरोका आयोजन किया जाता था। परतु प्रायः स्थानीय अधिकारी, जिनके हितके लिए शिबिर स्थापित किये जाते थे, आवश्यक परिवर्तनोकी व्यवस्थाकी देखभाल करते थे। वे शिबिरको चलानेके लिए आवश्यक कर्मचारी निर्धारित करते थे तथा आवश्यकता पड़नेपर

शिबिरोंको प्रारंभ करते थे। अधिकाश शिबिरोमे कोई तात्कालिक ग्राहस्थिक सेवा प्राप्त नही होती थी अतएव यही महिलाओकी स्वेच्छिक सेवाएं अथवा संभवत. स्थानीय नागरिक प्रतिरक्षा कार्यकर्त्ताओकी महिलाएं इस अभावकी पूर्ति तथा ग्रहस्थिक कर्त्तव्योका सचालन करती थी। स्पष्ट है कि यह एक अति महत्वपूर्ण कार्य था और इस संबधमें महिलाओकी स्वेच्छिक सेवाओंका महत्त्व आप ही आप स्पष्ट हो जाता है।

सामान्य रूपसे यह ध्यानमे रखा जा सकता है कि विगत युद्धकेप्रारभसे ही नागरिक प्रतिरक्षाके लिए महिलाओकी स्वेच्छिक सेवाए महत्त्वपूर्ण थी। युद्ध प्रारंभ होनेके कुछ महीनो बाद इस संगठनकी एक लाख सदस्याएं हवाई हमलेसे बचावसे सबधित कर्मचारियोको सहयोग दे रही थी, छत्तीस हजार मदस्याए स्थानीय अधिकारियोके लिए एम्बुलेन्स या मोटर चला रही थी और परिचारिका –सहायकोके रूपमे छियासठ हजार सदस्याए भरती हुई थी। इनका सपूर्ण कार्य-क्षेत्र चार प्रमुख प्रकारके कार्योमे विभाजित किया गया था, यथा.–– हवाई हमले से बचाव, चिकित्सालय सेवाएं, निष्क्रमण तथा परिवहन जो अन्य सबसे संबध जोडता है। सभी क्षेत्रोमे उनका कार्य इतना [illegible] और प्रत्येक दृष्टिसे इतना उपयोगी था कि ब्रिटेन उनपर सदैव गर्व करता रहेगा। उनकी एक अत्यन्त उल्लेखनीय गतिविधि गृहिणी सेवाओका सगठन था। यह गतिविधि उन महि-महिलाओमे आप ही आप विकसित हो गयी थी जो कि अपनी गृहस्थिक स्थितिके कारण साधारण सेवाओके लिए अपनेको प्रस्तुत नही कर सकती थी। इस सग-ठनमे अनेको स्थानीय विचित्रताओका विकास भी हो गया था किन्तु अन्त तक उसमे एक यह सामान्य विशेषता पायी गयी थी कि वास्तविक आक्रमणके समय शरण देनेके लिए तथा यथाशक्ति सुविधाए पहुचानेके लिए समस्त महिलाओके द्वारा प्रतिज्ञा की गयी थी।

––००––

अध्याय — १९

नागरिक प्रतिरक्षा में विशिष्ट प्रशिक्षण

नागरिक प्रतिरक्षा प्रायः एक वैज्ञानिक विषय है और उसके सिद्धातो के साथ खेलनेका अर्थ है — सभ्रान्ति या गडबडी, अस्तव्यस्तता या अशांति और अपूरणीय क्षति। अतएव यह आवश्यक है कि नागरिक प्रतिरक्षाकी किसी भी योजनामें उसके उपायोंके प्रतिक्षणमें यथोचित महत्त्व प्रदान करना चाहिए। विगत युद्धका अनुभव हमारे मनश्चक्षुओके समक्ष है — और यद्यपि परम्परागत (Conventional) शस्त्रास्त्रोंके कम उपयोग होनेकी सभावना है तथा हमारे समयके किसी भी युद्धमें नाभिकीय अस्त्रोके उपयोगको अधिक महत्व दिया जायेगा फिर भी यह समझ लेना चाहिये कि ब्रिटेन तथा अन्य युद्धरत देशोमें विगत युद्धके समय जो उपाय अपनाये गये थे, वे आज भी उतने ही लाभप्रद है। दुनियाके समस्त या अधिकाश देशोकी बात तो जाने दे एक देशमे भी होने वाले नागरिक प्रतिरक्षा प्रतिक्षणके सभी उपायोपर प्रस्तुत विश्लेषणमे चर्चा करना संभव नही है। फिर भी मै ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस तथा अपने स्वयंके देशके नागरिक प्रतिरक्षा प्रतिक्षणकी यहापर इस प्रकार से चर्चा करनेका प्रयास कर रहा हू, जिससे कि सिद्धान्त पाठकोके समझने योग्य हो सके।

१९३९–४५ के युद्धमे युनाइटेड किगडमकी नागरिक–प्रतिरक्षाका एक अत्यन्त जटिल प्रश्नके रूपमे ही विकास हुआ था। साढ़े पाच वर्षोकी इस अवधिमे नागरिक प्रतिरक्षा संगठनको सतर्क रहना पडा था तथा सगठनमे उचित रूपसे कर्मचारियोको भी नियुक्त करना पडा था। इस संपूर्ण अवधिमे उसके कार्य तात्कालिक कर्त्तव्यके क्षेत्रसे बहुत आगे बढ़े गये थे। उसका तात्कालिक कर्त्तव्य तो भूमिपर होनेवाले हवाई आक्रमणके प्रतिकूल उपाय करना था, क्योकि ये हवाई आक्रमण वास्तवमे ग्रेट ब्रिटेनकी भूमिपर ही हुए थे। उक्त अवधिमे नये प्रकारके आक्रमण, विशेष उपकरणोकी देखभाल तथा पूर्ति , नये तथा प्रायः जिनके भविष्यके बारे में कुछ कहा नही जा सकता ऐसे कार्योके लिए लोगोको भर्ती करके प्रशिक्षण देना और अपने हिस्सेकी जनशक्तिके साधनोको व्यवस्थित करने का आयोजन करना— ये सब तत्कालीन प्रयासके अंग थे।

उस देशमें (इंगलैण्डमें) नागरिक प्रतिरक्षा प्रशिक्षणके संबंधमें पहली महत्वपूर्ण बात जो पाठक का ध्यान आकर्षित करेगी वह १९३५ में तैयार किये गये परिपत्र (Circular) के संबध मे है और जिसमे हवाई आक्रमणकी एहतियाती सेवाओ (A. R. P. Services) के लिए लोगो की भर्ती और उनका प्रशिक्षण तथा सामान्य जनोंका शिक्षण प्रथम कार्य निरूपित किये गये थे । इस परिपत्रके अनुसार प्रशिक्षणमे सहायता देनेके लिए विशेषकर रेडक्रास और सेण्ट जानको मान्यता दी गयी थी। आदेशमें आगे और उल्लेख किया गया था कि स्थानीय योजनाओको आरंभ करनेकी सुविधा देनेके लिए हवाई–आक्रमणका एहतियाती विभाग : (A. R. P. Department) स्थानीय अधिकारियोकी क्षेत्रीय परिषदे आयोजित करेगा। इस नीतिको आगे बढ़ानेके दायित्वका एक महत्वपूर्ण भाग ईस्ट वुड पार्क, फालफील्ड की गैस-विरोधी पाठशाला (Anti Gas School at East Wood Park, Falfield) को वहन करना पड़ा था। इस पाठशालाने १५ अप्रैल १९३६ से पाठ्यक्रम प्रारम्भ कर दिया था ओर इसका मुख्य उद्देश्य उन प्रशिक्षको को प्रशिक्षण देना था कि जो अपने घरोको लौटकर हवाई–हमलेकी एहतियाती सेवाओ (A. R. P. Services) के स्वयंमेवको तथा इस कार्यमे रुचि प्रदर्शित करनेवाले व्यक्तियोंको प्रशिक्षित करने वाले थे। ये रिहायशी या सनिवास (Residential) पाठ्यक्रम दस दिनोंकी अवधिकेथे और इनकी पूर्तीपर प्रथम तथा द्वितीय श्रेणीके प्रमाणपत्र दिये जाते थे। प्रत्थेक पाठ्यक्रमके लिए पाठशालाकी प्रवेश क्षमता ३० छात्रोंकी थी और अवकाश की अवधि तथा पाठशाला बन्द रहनेवाले दिनोंकी सख्याको ध्यानमे रखते हुए यह आशा की जाती थी कि प्रतिवर्ष लगभग ६०० व्यक्ति हवाई–आक्रमणका एहतियाती प्रशिक्षण (A R P. Training) प्राप्त कर लेगे । इस प्रसंगमे यह और बता दिया जाय कि जनवरी १९३७ तक प्रत्येक पाठ्यक्रममे पाठशालाकी क्षमताका विस्तार ६० छात्रो तक कर दिया गया था। विशेषकर सन् १९३८ का वर्ष हवाई हमलेकी एहतियातीके व्यापक प्रचारके लिए महत्वपूर्ण था। यह प्रचार भित्तिपत्रो और अधिक हवाई हमलेसे बचाव की एहतियाती सेवाओके अभ्यासो तथा ग्लासगो एम्पायर प्रदर्शनीमे किये गये प्रदर्शनको सम्मिलित करते हुए प्रदर्शनियोके द्वारा किया गया था। यहा यह स्मरण रखने योग्य है कि ब्रिटेन भर में हवाई हमलेसे बचाव (A. R. P.) के स्थानीय प्रशिक्षणकी व्यवस्थाको समुचित मान्यता दी गयी थी, यद्यपि उस वर्ष : १९३८ : जाने क्यो प्रशिक्षणके प्रति उत्साहका अभाव स्पष्टतः परिलक्षित था।

जब सितम्बर १९३९ मे युद्ध प्रारम्भ हुआ तब यह बात विशेष रूपसे उल्लेखनीय है कि स्वयंसेवकोकी सेनाका अपेक्षाकृत बडा भाग अप्रशिक्षित था। सक्रिय

तैयारियोंके एक सप्ताह बाद अनेको जिलोंमें संरक्षकोंकी संख्या आवश्यकताके अनुसार अनुमानित सख्या तक पहुंच गयी थी अथवा पहुंच रही थी, किन्तु इनमेसे एक छोटेसे भाग को ही प्रशिक्षश प्राप्त हुआ था। यह स्थिति उस समय थी जबकि अधिकारियोके प्रति सरकार द्वारा, हिटलरके जेकोस्लोवाकियापर अधिकार जमा लेनेपर १८ अप्रैल १९३९ को की गयी अपीलके साथ ही पहलेसे ही अनेक अपीले (Appeals) की गयी थी। इन अपीलो द्वारा अधिकारियोंसे कहा गया था कि वे तैयारियोंमे और शीघ्रता करें, अन्य सभी कार्योकी अपेक्षा नागरिक प्रतिरक्षाको प्राथमिकता प्रदान करनेके हेतु आगामी तीन महीनोंमे प्रबन्ध करे, हवाई आक्रमणकी एहतियात (A. R. P.) के लिए आवश्यक कर्मचारी नियुक्त करे और इन सुझावोके अनुसार कार्य करनेके पूर्व नागरिक प्रतिरक्षा विधेयक (Civil Detence Bill) के विधिके रूपमे पारित होनेकी प्रतीक्षा न करें।

दूसरा तथ्य, जिसके प्रति पाठकका ध्यान आकर्पित किया जा सकता है, युद्धके पूर्व स्थानीय स्वैच्छिक सेवाके रूपमे हवाई–हमलेसे बचाव (A. R. P.) के महत्व के सम्बन्धमे है। अनुभवने यह प्रमाणित कर दिया है. कि जब सामान्य सगठन और प्रशिक्षणमे सुधार हुआ (जैसा कि बर्मिघममे हुआ था) तब प्रवेश सख्यामे पहले जो कमी हो गयी थी, उसकी पूर्ति तुरन्त हो गयी। स्थानीय प्रशिक्षकोकी सख्यामे वृद्धि और अभ्यासोने जनताको हवाई हमलेकी एहतियात के प्रति और जाग्रत कर दिया। १० जुलाई १९३९ को लार्ड प्रिवी सील (Lord Privy Seal) ने यह घोषित किया कि समस्त स्वयसेवको को गहरे लाल रगके बिल्ले और पीले रगके बटनके साथ ही गहरे नीले रंगके सूती कपडेके युग्म परिधान : सूट (Suit) की वर्दी दी जायगी। हवाई हमलेसे बचाव (A. R. P.) के स्वयसेवकोकी स्थितिको मान्यता दिलानेमे यह बहुत कुछ उत्तरदायी था।

१९३९ मे समयके व्यतीत होनेके साथ ही अभ्यासोके रूप तथा उनकी सख्यामे लगातार वृद्धि हुई थी। ग्रेट ब्रिटेनमे अनेक अधिकारी सस्थाएं अपने तमावरण (Black Out) और सचार प्रबन्धों की परीक्षा की व्यवस्था करने लगी थी और इनमेसे जो अधिक साहसिक थी, उन्होने अपनी समस्त हवाई हमलेसे बचाव (A. R. P.) से सम्बन्धित सेवाओ के लिए आकस्मिक गतिदायक अभ्यास आयोजित किये थे। १९३९ के अप्रैल तथा मईमें ब्रिटेनके विभिन्न भागोंमे ३४ संयुक्त प्रशिक्षण आयोजित किये गये थे। बचाव दलके लोगोके लिए उनके विनियोजको द्वारा कार्यालयीन समयमे प्रशिक्षणका प्रबन्ध किया गया था। फिर भी यदि स्थानीय अधिकारी सस्थाएं बचाव

कार्यके लिए लोगोको भरती करती थी तो उनके लिए उनके तकनीकी प्रशिक्षण की व्यवस्था करना आवश्यक था। बचाव दलोके सभी सदस्योको गैस विरोधी उपायोमे प्रशिक्षित करना आवश्यक था और हल्के या छोटे दलो (Light Parties) के छ: अकुशल सदस्योमे से चार सदस्योको मलवेके अन्दर फसे हुए हताहतोकी व्यवस्थाके साथ ही प्राथमिक उपचारमे प्रशिक्षित करना आवश्यक था।

यह ध्यान रखनेके योग्य है कि एक बार जैसे ही हवाई हमले से बचाव (A. R. P.) सम्बन्धी विधि और शरणगृह सहिताका प्रकाशन हुआ, तो सरकारके इस आवेदनके प्रति कि अब आगे हवाई हमले से बचाव (A. R P.) को व्यवस्थाका एक आवश्यक अग समझा जायेगा, विनियोजकोमे अनुकूल तथा प्रभावशाली प्रतिक्रिया हुई थी। यह इस तथ्यसे स्पष्ट है कि यद्यपि अनुदान प्राप्त करनेकी तिथि ३० सितम्बर १९३९ थी किन्तु बारह हज़ार या लगभग इतने ही सम्बन्धित प्रतिष्ठानोके ९० प्रतिशत प्रतिष्ठानोने उक्त तिथिके पूर्व ही अपनी शरणगृह योजनाए प्रस्तुत कर दी थी। फिर भी इस प्रसगमे यह उल्लेखनीय है कि हवाई हमले मे बचाव सम्बन्धित सेवाओ (A. R P. Services) को सगठित तथा प्रशिक्षित करनेमे औद्योगिक क्षेत्रने प्राय. अवकाशपूर्ण दृष्टिकोण अपनाया था। गृह–कार्यालय पाठशालाए (Home Office Schools) और कर्मचारी पाठशाला (Staff School), विशेषकर नागरिक प्रतिरक्षा विधेयकके विधि बन जानेपर, यथाशक्ति अधिकतम प्रयास कर रही थी, परन्तु विगत युद्धके प्रारम्भ होनेके पूर्व केवल कुछ ही सहस्त्र औद्योगिक सगठन इन पाठशालाओ का लाभ उठा सके थे। फिर भी कारखानोमे प्रशिक्षण केन्द्रकी स्थापना तथा प्रशिक्षको को बाटनेके प्रबन्ध द्वारा ऐसी कठिनाईयोको यथासमय हल कर लिया गया था। इस प्रसगमे यह उल्लेखनीय है कि उद्योगो को हवाई हमले मे बचाव (A R P.) के उपकरणोकी पूर्तिकी असन्तोषजनक स्थिति प्रशिक्षणमे पिछड़ेपनका बहुत कुछ कारण थी।

अग्निशमन सेवाओमे प्रशिक्षणको प्रगति प्रदान करनेकी दिशामे 'दि फायर ब्रिगेड एक्ट १९३८' : अग्निशमन या दमकल कानून १९३८ एक महत्वपूर्ण उपाय था। अग्निशमन सेवा प्रशिक्षण केन्द्रोकी स्थापना करने और कानून किस प्रकारसे कार्यान्वित किया जा रहा है—इस सम्बन्धमे प्रतिवेदन देनेके हेतु प्रशिक्षकोको नियुक्त करनेके लिए उक्त कानूनके द्वारा ही राज्य सचिव या मत्रीको अधिकार दिये गये थे। किन्तु इन शान्तिकालीन उत्तरदायित्वोके निर्वाहके लिए दमकल अधिकारियोको राजकीय कोषसे कोई अनुदान नही मिला था।

मैं इसी प्रसंगमें पाठकका ध्यान श्री विलियम माबेन (William Mabane) की अध्यक्षतामें नियुक्त उस विभागीय समितिकी ओर आकर्षित करना चाहता हूं जिसमें कि अनेक क्षेत्रीय प्रमुख अधिकारी सम्मिलित किये गये थे और जिसने जनवरी १९४० में उत्तरदायित्व की पद्धति पर विचार करना प्रारम्भ किया था। समिति के सदस्योने यह मत व्यक्त किया कि हवाई हमले से बचाव (A. R. P.) मे नियुक्त स्वयंसेवको के वेतनका निर्धारण इस सिद्धान्तपर होना चाहिए कि "नागरिक प्रतिरक्षा निविनियोजन नही बल्कि सेवा है।" तदनुसार एक विवाहित तथा एक सन्तानवाले व्यक्तिगत सैनिकको जो युद्ध कालीन वेतन और भत्ता मिलता था प्रायः उसीके बराबर समान दरसे वेतन देने के सिद्धान्तको बनाथे रखनेका निश्चय किया गया। अन्य बातोके साथ ही समितिने यह भी प्रस्तावित किया कि स्थानीय प्रशिक्षकोंका नियमित रूपसे केन्द्रीय निरीक्षण किया जाय। इस माध्यमके द्वारा ही अपनी सेवा तथा कुछ अन्य सेवाओमे दूसरोके यहा कार्यरत सदस्योंके प्रशिक्षणकी स्थिति के सम्बन्धमे स्वयंसेवक अपने विचार व्यक्त कर सकते थे। यह एक ऐसा सिद्धान्त था जिसपर आगे चलकर बहुत महत्व दिया जाने लगा था। इसे 'अन्तर्परिवर्तनीयता" (Inter changeability) का नाम दिया गया था।

यहा इन सेवाओके कार्यके सम्बधमे प्रथम प्ररिक्षण तथा इनमे अनिवार्यता के सम्बन्धमें कुछ और बता देना आवश्यक है। ऐसी दुर्घटनाएं भी, जो बिलकुल छोटी होती थी तथा जिनमे बमोका भी उपयोग नही होता था, इन सेवाओ के नाटकमे अभिनयके समान प्रशिक्षण और भाषणोके स्थानपर परिवर्तन का अनुकूल तथा स्वागत योग्य अवसर प्रदान करती थी।

जनवरी १९४० के प्रारम्भमे मत्रालयके द्वारा हवाई हमले से बचाव (A. R. P.) के प्रशिक्षणके सम्बन्धमें विज्ञप्तियो (Bulletins) की एक माला शुरू की गयी थी। इन पत्रको द्वारा छोटी–छोटी पुस्तको और ज्ञापनमे पूर्व प्रकाशित सूचनाओको सशोधित तथा सक्षिप्त किया गया था और ये कारखानोके तथा अन्य उद्योगोके विनियोजकोके लिए विशेष महत्वपूर्ण थे। उस समय कार्य सम्बन्धी निर्देशो, टेलिप्रिन्टरों द्वारा सन्देशो, आदेशो तथा इसी प्रकारके अन्य उपायोके द्वारा अधिक औपचारिता न अपनाते हुए भी प्रशिक्षण लगातार संचालित किया गया था। वस्तुतः मै अपने अनुभवके आधारपर कह सकता हूं कि ऐसे प्रशिक्षणके अन्तकी दिखायी देनेवाली कोई संभावना नही थी। फिर भी यह ध्यानमें रखना चाहिए तथा इस संम्बंध मे अपने अनुभव के आधार पर यह ज़ोर देकर व्यक्त कर सकता हू कि हवाई आक्रमणसे रक्षाके पूर्व उपाय (A. R. P.) से

सम्बन्धित सेवाओमें जो अनिश्चितता पायी जाती थी, उसका स्थान बहुत पहले प्रशिक्षित योजनामे विश्वासनेले लिया था।

१९४१ की शरद ऋतुमे राष्ट्रीय जनशक्तिकी नीतिमे उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ था। आक्रमणका सामना करनेकी तथा मोर्चेपर डटे रहनेकी तैयारीका स्थान आक्रमणके लिए सक्रिय तैयारियोंने ले लिया था। फलस्वरूप अनेक आर्थिक उपाय अपनाये गये थे।" "अन्तरपरिवर्तनीयता" (Inter changeabilty) के सिद्धान्तको सधन रूपसे कार्यान्वित करना, चलित तथा विशेष अवसरपर उपयोगके लिए अलग रखे गये गश्ती स्वयंसेवको (Mobile Reserves) का और विकास करना तथा अशकालिक स्वयसेवको (Part timers) की अनिवार्य भर्ती करना—उपर्युक्त उपायोमें से एक उपाय था।

१४ अप्रैल १९४२ को प्रकाशित प्रसिद्ध गृहसुरक्षा आदेश क्रमांक ८८ स्वयं अपने ही मे बहुत महत्वपूर्ण था। इस आदेशके अनुसार पूर्वकालीन कार्यकर्ताओंके संख्यामे यथासमय लगातार कमी होना प्रारम्भ हो गया था। अशकालिक कार्यकर्ताओंकी शक्तिको मजबूत करनेके लिए सामनेके मोर्चेपर स्थायी कर्मचारियोका एक दल ही रह गया था। प्रमुखत: अशकालिक कार्यकर्ताओके इस दलको श्रेष्ट ढंगसे प्रशिक्षित, चलित तथा विशेष अवसरपर उपयोगके लिए अलग रखे गये गश्ती सुरक्षित दलो (Mobile Reserves) के द्वारा सहायता मिलनेको थी। ये दल पुन. शक्ति प्रदान करनेके हेतु (Reinforcement) क्षेत्रीय आयुक्तो द्वारा भेजे जा सकते थे।

१९४१ के प्रारम्भमे यह पाया गया था कि स्थानीय विनियोजकोके सम्बन्धमे अनिवार्यता नही कार्यान्वित की जा सकती थी। ऐसी स्थितियोमे उस समय भी समझा–बुझाकर राजी करना ही समस्याका एकमात्र हल प्रतीत होता था और तदनुसार १९४१ मे क्षेत्रीय अधिकारियोको यह बता दिया गया था कि उद्धारदलो, प्राथमिक उपचार दलो और विदूषित पदार्थोसे बचानेवाले दलो (Decontamination Squads) को और अधिक प्रशिक्षण देनेका निश्चय किया है जिससे कि प्रथम दो दल एक दूसरेका कार्य कर सके। उद्धार दलोको विदूषित पदार्थोसे बचानेवाले दलोके कार्य तथा इन दलो को भी उद्धार दलोके कार्यमे प्रशिक्षित करना था। सुविधापूर्वक कार्य करनेकी दिशामे इससे बहुत बढी सहायता मिली थी क्योकि सकटकालमे एक व्यक्ति दूसरे का कार्य कर सकता था।

सितम्बर १९४२ के अन्तमे केवल ३० प्रतिशत अग्नि–रक्षक नागरिक प्रतिरक्षा का सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे। और केवल १५ प्रतिशतको दांवपेच का युक्तिपूर्ण प्रशिक्षण मिला था। निरीक्षण करनेपर इस दुखजनक स्थितिका आभास हुआ था और तब सभी उद्योगोसे संबंधित

प्रशिक्षित अग्निरक्षकोकी संख्यामे वृद्धि करनेके लिए आवश्यक प्रशिक्षण को और गति प्रदान की गयी थी।

जनवरी १९४३ मे क्षेत्रीय अग्निप्रतिबन्धक प्रशिक्षण अधिकारियोके लिए लन्दनमे पाठ्यक्रम आयोजित किया गया था और यहाँ प्राप्त प्रशिक्षण अग्नि दुर्घटनाओको रोकनेमे बहुत सहायक हुआ था। इसी माहमे इस बातको भी मान्यता दी गयी थी कि प्रत्येक क्षेत्रके लिए निरीक्षकोको प्रशिक्षित करनेके हेतु एक स्थायी पाठशाला होना चाहिए। १९४४ मे स्थितिमे पूरा परिवर्तन हो गया था। इस वर्षमे नागरिक प्रतिरक्षा दलोमे लगातार कमी होती गयी थी और दिसम्बर माह तक नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओका औपचारिक प्रशिक्षण समाप्त हो गया था।

ब्रिटेनमे नागरिक प्रतिरक्षा प्रशिक्षण देनेके हेतु कर्मचारियोके महाविद्यालय (Staff College) की व्यवस्था एक महत्वपूर्ण बात थी। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है स्टोक–डी–एबरनान, सरे (Stoke 'D' Abernon, Surrey) मे जनवरी १९४२ मे नागरिक प्रतिरक्षा कर्मचारी महाविद्यालय (Staff College) प्रारम्भ कर किया गया था। यह महाविद्यालय हवाई हमले से बचाव के कर्मचारियोंकी पाठशालाके (A. R P. Staff School) जो कि युद्धके प्रारम्भमे बन्द हो गयी थी, उत्तराधिकारी के रूपमे स्थापित हुई थी। स्थानीय वरिष्ठ अधिकारियोको नागरिक प्रतिरक्षाके उच्चस्तरीय सगठन और प्रशासन मे प्रशिक्षण देना तथा आक्रमणो मे प्राप्त अनुभवो ओर कार्य–पद्धतियोमे हुए सुधारोके सम्बन्धमे महत्वपूर्ण पुरुषो तथा महिलाओको सम्पूर्ण जानकारी देना इस महाविद्यालयका प्रथम उद्देश्य था। इस महाविद्यालयने साढे तीन वर्षो के प्रशिक्षणकी अवधिमे बीस विभिन्न प्रकारके ११२ पाठ्यक्रम आयोजित किये गये थे। इनमे ४८९९ अधिकारियो तथा छात्रोने उपस्थित होकर लाभ उठाया था। इस सख्यामे से १२८६ व्यक्ति मित्र राष्ट्रोकी सेनाओमे से थे। जब यह महाविद्यालय पहले प्रारम्भ हुआ था तब ब्रिटेन आक्रमणकी आशका से घिरा हुआ था। उस समय आक्रमणसे उत्पन्न होनेवाली विभिन्न नागरिक समस्याओपर ही अधिक महत्व दिया गया था। नागरिक प्रतिरक्षाके आक्रमण के पश्चात्के परिणामोके गभीर महत्वके कारण केवल नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओ के सामान्य कर्तव्योके ही नही, बल्कि अन्य अनेक सेवाओके कर्तव्योके ज्ञानकी आवश्यकता उत्पन्न हो गयी थी। अतएव इस आवश्यकताकी पूर्तिके लिए शीघ्र ही पाठ्यक्रमोका निर्माण किया गया था। फरवरी १९४४ मे प्रतिकारहीन हवाई–सुरक्षाकी कार्यवाहीके नियत्रण तथा सगठनके सम्बन्धमे ब्रिटिश तथा सयुक्त राज्यके सेना अधिकारियोके सम्पूर्ण प्रशिक्षणका उत्तरदायित्व इस महाविद्यालयने ले लिया था। और अन्तमे जब मित्र राष्ट्रोके अनेक देश मुक्त किये गये तब नागरिक प्रतिरक्षा

सेवाओंके पुनः गठनके लिए आवश्यक आधारभूत सिद्धान्तोंका प्रशिक्षण इन देशोंके अनेक नागरिकोंको दिया गया था।

यहा यह स्मरण रखने योग्य है कि महाविद्यालयमे राष्ट्रीय अग्नि–सेवाके लिए विशेष पाठ्यक्रम रखे गये थे। अगस्त १९४२ मे महिलाओंके लिए अशकालीन –नागरिक–प्रतिरक्षा–सेवा अनिवार्य कर दी गयी थी। इस प्रकार एक और वर्गके लिए प्रशिक्षण आवश्यक हो गया था।

सन् १९४४ की बसन्त ऋतु तक इस देशके अधिकाशमे एक लम्बी अवधि तक शान्तिकी स्थिति बनी रही थी। इधर प्रशिक्षणका कार्य काफी कठिन था और लोग थके हुए थे तथा प्रशिक्षणके लिए सदैव उपस्थित होनेकी स्पष्टतः आवश्यकता नही रह गयी थी। फिर भी, प्रशिक्षणको अनेकों प्रकारसे रुचिकर बनानेके लिए यथासम्भव सभी प्रयास किये गये थे। किन्तु यूरोपके आक्रमणके बारेमे मित्र राष्ट्रोंकी सेवाओंके अनुमानके अनुकूल शत्रु द्वारा प्रतिक्रिया न किये जानेके कारण सदैव तैयार रहनेकी उत्तेजनापूर्ण स्थिति अनिश्चित काल तक के लिए नही रखी जा सकती थी। फलस्वरूप पहले दिये गये विवरणके अनुसार सितम्बर माहमे नागरिक प्रतिरक्षा कर्मचारियोंकी सख्यामे भारी कमीके आदेश दिये गये थे और समस्त अनुसूचीयुक्त क्षेत्रोंमे अग्निरक्षकोंका प्रशिक्षण बन्द कर दिया गया था। फिर भी नागरिक प्रतिरक्षा कर्मचारी महाविद्यालय तथा क्षेत्रीय पाठशालाओंने प्रशिक्षकोंके लिए पाठ्यक्रम आयोजित करना जारी रखा और सैनिक कर्मचारियों तथा समुद्रपार जानेवाले व्यक्तियोंको निष्क्रिय प्रतिरक्षा हवाई प्रतिरक्षा, दुर्घटना–नियत्रण और उद्धार कार्यमे प्रशिक्षण देना भी जारी रखा गया था। परन्तु दिसम्बरमे, जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, नागरिक–प्रतिरक्षा–सेवाओंका प्रशिक्षण समाप्त हो गया था।

ब्रिटेनमे नागरिक–प्रतिरक्षाके विशिष्ट प्रशिक्षणका विवरण तब तक अधूरा ही रहेगा जब तक मै यहाँ इस सम्बन्धकी बिलकुल हालकी स्थितिका उल्लेख न करू। इस सम्बन्धमे लन्दनके केन्द्रीय सूचना विभागकी निर्देश–शाखा द्वारा ब्रिटेन की सैन्यशक्तिके बारेमे जो प्रतिवेदन के पृष्ठ २२ पर प्रकाशित किया गया था तथा जिसका उल्लेख इस पुस्तक मे पहले किया जा चुका है उससे बढ कर अधिकृत सूचना और कोई नही हो सकती। उक्त प्रतिवेदन निम्नलिखित है :—

"प्रशिक्षण"

नागरिक–प्रतिरक्षा दलके सदस्योंके लिए यह प्रशिक्षण लेना आवश्यक है जिससे कि वे उक्त दलकी जिस शाखामे हों उसके साधारण सदस्यके कर्तव्योंका निर्वाह करनेके योग्य हो सके। इसके पश्चात् प्रतिवर्ष उन्हे अभ्यासोंके साथ ही पाठ्यक्रमके पुनः अभ्यासका कुछ घण्टोंका प्रशिक्षण भी लेना आवश्यक है। यदि

वे और अधिक ज्ञान बढाना चाहते हैं तो वे अतिरिक्त अधिक विकसित प्रशिक्षणके पाठ्यक्रम ले सकते है।

गृह–विभागके कार्यालय या स्काटलैण्डके गृह विभागके आदेशोके अनुसार गृह विभागीय कार्यालयकी तीन पाठशालाओमे से किसी एकमे अथवा स्थानीय अधिकारियोंके प्रबन्धके अन्तर्गत स्थानीय रूपसे नागरिक प्रतिरक्षाके शिक्षक प्रशिक्षित किये जाते है। नागरिक–प्रतिरक्षामे सम्बन्धित वरिष्ठ अधिकारियों के लिए सनिंगडेल वर्कशायर (Sunningdale, Berkshire) के नागरिक–प्रतिरक्षा–कर्मचारी महाविद्यालयमे और स्काटलैण्डमे टेमाउथ केसल, पर्थशायर (Taymouth Castle, Perthshire) की गृह विभागीय नागरिक प्र रिक्षा पाठशाला मे पाठ्यक्रम तथा अध्ययन आयोजित किये जाते है ।

सहायक अग्नि–रक्षकोको नियमित ब्रिगेडो (Brigades) के अधिकारियो तथा व्यक्तियो द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है । ये व्यक्ति तथा अधिकारी स्वयं ग्लाउसेस्टरशायर के मोरेटन–इनमार्श ग्लाउसेस्टरशायर (Moreton In-Marsh, Gloucestershire) के गृह विभागीय दमकल या अग्नि–सेवा–प्रशिक्षण–केन्द्रमे सकटकालीन अग्नि–शमनमे विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करते है। अग्नि–शमन केन्द्रो मे अतिरिक्त सहायकके रूपमे कर्तव्यपालन के द्वारा उन्हे अग्नि–शमनका व्यवहारिक अनुभव प्राप्त करनेके लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि अग्नि – काण्डकी सूचनाओके मिलते ही वे ब्रिगेड (Brigade) के नियमित सदस्योके साथ ही उक्त सूचनाओके प्रति आवश्यक कार्यवाहीके योग्य हो सके। इसके साथ ही ऐसे अभ्यास भी कराये जाते है जिन मे कि अनेको पम्प करनेवाले तथा अन्य अग्निशमन करनेवाले उपकरणोका नियंत्रण तथा कार्यान्वयन भी अन्तर्निहित रहता है।"

जहा तक **संयुक्त राज्य अमेरिकाका** प्रश्न है, वहाँ नागरिक प्रतिरक्षा स्वयसेवको को सकटकालीन कर्तव्योका प्रशिक्षण देना राज्य और समाजका कार्य है । ऐसी कक्षाओका आयोजन तथा सचालन स्थानीय रूपसे किया जाता है। इस सम्बन्धमे आवश्यक मार्गदर्शन, काफी प्रशिक्षण सामग्री तथा अन्य सुविधाए संघ–सरकार द्वारा दी जाती है।

इस सम्बन्धमे, नागरिक तथा प्रतिरक्षा कार्यके राष्ट्रपति कार्यालयके कार्यपालिका द्वारा १९५९ मे प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदन में जो कुछ बताया गया है, उससे अधिक इस विषयके सम्बन्धमे और कुछ भी अधिकृत नही हो सकता। उसे फिरसे दुहराना आवश्यक प्रतीत नही होता क्योकि पहले ही इस पुस्तकके "पाठशालाओ, महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयोमे नागरिक प्रतिरक्षा–प्रशिक्षणकी एक स्थायी रूपमे मान्यता" नामक शीर्षकके १७ वे अध्यायके प्रारम्भिक अंशोमें

इसका उल्लेख हो चुका है। और पाठकको इस संबंधमें आवश्यक रूपसे उन अंशोंको देख लेनेका निर्देश दिया जाता है क्योकि संयुक्त राज्य अमेरिकामें नागरिकमें–प्रतिरक्षा–प्रशिक्षणकी स्पष्ट जानकारीके लिए ऐसा करना उसके लिए आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त, सयुक्त राज्य अमेरिकामे प्रशिक्षणके विषयमे यह उल्लेखनीय है कि वहाके प्रशिक्षण कार्यक्रम महिलाओंको अपरिमित सुविधाए प्रदान करते है। प्रत्येक राज्य तथा समाजमे नागरिक–प्रतिरक्षा–सचालककी सहायताके लिए एक कर्मचारी दल रहता है जो कि प्रशिक्षण तथा शिक्षाकार्यक्रमके स्थापन और संचालनके लिए उत्तरदायी रहता है। इस कार्यक्रममे **कर्मचारी दल** के स्वयंसेवको के साथ ही **कक्षा संगठक और प्रशिक्षकोके रूपमें** भी महिलाओंकी आवश्यकता होती है। ये प्रशिक्षक साधारणत: पढानेका अनुभव रखते है तथा इन्हें नागरिक प्रतिरक्षाके तकनीकी विषयोमे से किसी एक विषयमे प्रशिक्षित किया जाता है। बहुतसे मामलोमे नागरिक–प्रतिरक्षाकी तकनीकी सेवाओंमें एक पुरुष या महिलाके जो अन्य हित सन्निहित रहते है, उनसे एक व्यक्तिके प्रशिक्षण सम्बन्धी उत्तरदायित्वोका विरोध नही होता। उदाहरणके लिए, एक पुरुष अथवा महिलाको सामाजिक कार्यमे अनुभव होनेके कारण सकटकालीन कल्याण सेवाओके सलाहकारके रूपमे चुना जा सकता है।

इसी समय यदि उसका समाज अपने नागरिक प्रतिरक्षा कार्यक्रमका विकास कर रहा हो तथा विशिष्ट कार्योंके लिए स्वयसेवकोको प्रशिक्षण दे रहा हो तो उक्त पुरुष अथवा महिला विपत्तिके समय सकटकालीन कल्याण सेवाओमे अपने कर्तव्यपर उपस्थित होते हुए भी उपयुक्त अन्य स्वयमेवकोके प्रशिक्षणका कार्य कर सकते है।

रूसमें क्रेमलिन इस विश्वास पर कि आधुनिक युद्ध मे युद्धकी सीमाए गृह मोर्चेपर होगी, नागरिक प्रतिरक्षा प्रशिक्षणको विस्तृत करनेके हेतु व्यापक तथा खर्चीले प्रयासोमें लगा हुआ है।

स्थानीय युद्ध–विरोधी प्रतिरक्षाके नामसे ज्ञात एम. पी. व्ही. ओ. (M. P. V. O.) वह रूसी सक्षिप्त शब्द है जिसे हम नागरिक प्रतिरक्षा कहते है। यह एक ऐसा वृत्तक कोर (Career corps) है, जिसके कार्यकर्ता पूर्णकालिक नागरिक –प्रतिरक्षामे विशेष रूपसे प्रशिक्षित है।

यह व्यवसायिक दल कारखानो, शासकीय कृषि क्षेत्रो, सस्थाओ और छोटे छोटे कमरे वाले गृहोमे नागरिक प्रतिरक्षा तैयारियोकी देखभाल करते हुए सोवियत शासनके प्रत्येक स्तरपर कार्य करता है।

"आत्मरक्षा" के लिए सोवियत जनता का वास्तविक प्रशिक्षण डोसाफ (DOSAAF) (थल–सेना, वायुसेना और नो–सेनाके साथ सहयोग करनेवाली स्वैच्छिक सस्था) द्वारा सचालित किया जाता है।

"डोसाफ (DOSAAF) वास्तवमे एक अतिरिक्त सैनिक सगठन है। इस सामाजिक दलगत सस्थामे दो करोडसे अधिक रूसी नागरिकोको सम्मिलित होना पडा है। "डोसाफ" (DOSAAF) संगठनने अपना 'उद्देश्य' प्रत्येक पाठशाला, विश्वविद्यालय, कारखाने और राजकीय तथा सामूहिक कृषिक्षेत्रमे एक नागरिक प्रतिरक्षा इकाईका निर्माण करना घोषित किया है।

उस देशमे प्रशिक्षण तथा अनिवार्यताने यह सभव कर दिया है कि **प्रत्येक नई इमारतके निर्माणमें नाभिकीय आक्रमण विरोधी शरणगृहोंका समावेश एक साधारण तथा नैमित्तिक कार्यके रूपमें होता है।**

रूसमे "डोसाफ" (DOSAAF), रेडक्राम सगठन और अन्य स्वेच्छिक सगठनोके द्वारा लगभग बीस करोड व्यक्ति नागरिक प्रतिरक्षा प्रशिक्षण प्राप्त करते है और इस तथ्यसे दुनियाको यह जान लेना चाहिए कि यह देश नागरिक प्रतिरक्षाके महत्वके प्रति पूर्णत· सजग है। नागरिक प्रतिरक्षा प्रशिक्षणका विस्तृत विवरण इस पुस्तकके सत्रहवे अध्यायमे दिया गया है और यहा पाठकको उक्त विवरणको देख लेनेकी सलाह दी जाती है।

भारतवर्ष के बारेमे मै उसी तथ्यपर स्थिर हू जिसका वर्णन मैने सत्रहवे अध्याय मे किया है। इसके अनुसार प्रत्येक देशके पाठशाला, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयके छात्रो तथा युवकोमे नागरिक प्रतिरक्षा प्रशिक्षणका प्रसार होना चाहिए। विगत युद्धमे कुछ प्रान्तो द्वारा स्वय सचालित हवाई हमलेसे बचाव की प्रशिक्षण पाठशालाओ (A R. P. Training Schools) के अतिरिक्त कलकत्ता, लाहौर, बम्बई और हैदराबादमे भारत सरकारकी नागरिक प्रतिरक्षा विशेषज्ञ पाठशालाओमे उक्त प्रशिक्षण दिया जाता था। बेडन पावेल स्काउट एसोसिएशन या हिन्दुस्तान स्काउट सगठन जैसे सगठनो द्वारा भी प्रशिक्षण दिया जाता था। परन्तु अनुभवने यह प्रदर्शित किया है कि इस देशकी विशाल जनसख्याके अनुकूल प्रशिक्षण–सुविधा निश्चय ही अनुपयुक्त थी। अभी हालमें ही चीनियोके द्वारा इस देश की सीमाके भीतर प्रवेशके समय दिल्ली तथा अन्य कुछ स्थानोमे नागरिक प्रतिरक्षा प्रशिक्षणके लिए प्रयास किया गया था किन्तु इस देशकी विशालताको देखते हुए इस प्रयासको किसी भी रूपमे काफी नही कहा जा सकता है। अतएव भविष्यमे हमे निराशा, असफलता या

दुःखद अनुभव न हो, इसके लिए यह आवश्यक है कि वर्तमान समयमे विश्वके कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण राष्ट्रोके उदाहरणका हम अनुकरण करे और आधुनिक जीवनमे नागरिक प्रतिरक्षा को एक आवश्यक प्रशिक्षण माने। यह तभी सभव हो सकता है कि जब हम पाठशालाओं, महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयोमे नागरिक-प्रतिरक्षाको एक स्थायी उपायके रूपमें मान्यता दे। मेरी इस सिफारिशके कारण इस पुस्तकके सत्रहवें अध्यायमे सूचित कर दिये गये है और इसके प्रति पाठकका ध्यान आकर्षित किया जाता है। मुझे विश्वास है कि इस विषयको हलके ढगसे नही लिया जायगा क्योकि सभी प्रकारसे दिवा-प्रकाशके समान यह एक तथ्य है कि तथाकथित आधुनिक प्रगतिके सम्बन्धमे चाहे जो भी कहा जाये किन्तु आधुनिक युद्ध कुछ इस प्रकारका हो गया है कि बुद्धिजीवी वर्गकी आवश्यकताके रूपमे नागरिक प्रतिरक्षाके उपायोमे प्रशिक्षण करना पूर्णत. आवश्यक है और ऐसा करनेके लिए अपनी शैक्षणिक संस्थाओके अतिरिक्त हमारे पास और कोई माध्यम नही है। अत. सभी बातोको उचित समयपर करना चाहिए और इस बातपर दो मत नही हो सकते कि ऐसे प्रशिक्षणकी तुरन्त ही व्यवस्था करनी चाहिए। चीनी घुसपैठिये (Chinese Incursion) के अनुभवके बाद इस संबधमे तर्क करनेके लिए शायद ही कोई स्थान हो।

मै यहा यह भी मत प्रकट करता हू कि उत्तर अतलान्तक सन्धि सगठन (North Atlantic Treaty Organisation) और इसी प्रकारका कोई भी अन्तरराष्ट्रीय सगठन नागरिक प्रतिरक्षा और इस विषयमे प्रशिक्षणके सबंधमे अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। मै इससे और एक कदम आगे बढकर अब यह कहता हू कि सयुक्त राष्ट्र सभा: (United Nations Assembly) नागरिक प्रतिरक्षा और उसके प्रशिक्षणो के सबंधमे अभी तक जो कुछ करती आयी है, उसकी अपेक्षा अब उसे और अधिक गंभीरतासे इस विषयको लेना चाहिए। जब यह स्पष्ट है कि नागरिक प्रतिरक्षाका विषय, छोटा हो या बडा, सबको समान रूपसे प्रभावित करता है, तब क्या यह भुलाया जा सकता है कि इस सभाके ऊपर इस सबंधमें बहुत बडा उत्तरदायित्व है?

– अध्याय २० –

विश्व प्रसंगमें नागरिक प्रतिरक्षा

हमारे इस परमाणु युगमे विज्ञान तथा ज्ञानके व्यापक विकासने मानव जातिको चकित कर दिया है। औद्योगिकीका जितना अधिक विकास इस युग मे हुआ है, उतना मनुष्यके पूर्ववर्ती अस्तित्वमे कभी भी नही हुआ। विखण्डन, एकरूपीकरण, रेडार, टेलिविज़न, स्वचलन, लघ्वीकरण, प्लास्टिक, जेट–विमान, राकेट, उपग्रह–इनमेसे प्रत्येक नयी अकल्पित कलाकी भाति था। प्रत्येक अविष्कारने एक वर्षसे दूसरेको इतने स्पष्ट रूपसे अलग किया कि जैसे पत्थर या कांसेने प्रागएतिहासिक युगके पूर्ण रूपोको अलग किया था। मनुष्यने परमाणुओंका प्रयोग आश्चर्यजनक संश्लिष्ट औषधियोके अणु, ट्रांजिस्टर तथा अन्तरिक्षवाहनो के लिये किया। परमाणु दीप्ति रेखाओं (Atomic Traces) की सहायतासे उसने प्रथम बार जीवनकी कुछ आधारभूत रासायनिक प्रक्रियाओको सुलझाया। नाभिकीय रूपान्तरणोके ज्ञानके द्वारा उसने सूर्य और नक्षत्रोकी शक्तिको माप लिया और उनके विकासका ज्ञान प्राप्त किया। उसने अपनी पृथ्वी की अन्तिम सर्वोच्च ऊंचाई, अन्तिम गहराई और बंजरभूमिपर विजय प्राप्त की और अब वह इस पृथ्वीको छोड़नेको प्रस्तुत है। परन्तु दुर्भाग्यवश उसी समय उसने नाभिकीय शक्तिके अपने तथाकथित विकासका उपयोग अपने समयकी मानवताके विनाशके हेतु किया है। इससे उत्पन्न भयने सदैव एक हौआके रूपमें जीवनके सुखोंकी स्थिति ऐसी कर दी है कि जैसी विषपूर्ण तत्वसे मिश्रित शक्करकी होती है और आज मनुष्य वस्तुत एक ऊचे ढालुए कगारके अन्तिम छोरपर खड़ा हुआ है।

वह कलके बारेमे (भावीके सम्बन्धमे) निश्चित नही है। एक परमाणु बम लाखों लोगोंको समाप्त कर देनेके लिए काफी है और उसके बादके अनुवर्ती विस्फोट वस्तुतः मानव जातिका अन्त कर सकते है। क्या यह बडी चिन्ताकी बात नही है? क्या हम सचमुच यह कल्पना नही कर सकते कि आधुनिक वैज्ञानिक विकास वस्तुतः निषेध या ऋणात्मक वस्तु ही है।

अतएव प्रथम समस्या, जो सबके मनमे बृहतरूपसे उभरती है, अपने देशकी सुरक्षाके बारेमे है। इस सम्बन्धमे प्रत्येक व्यक्ति यह सोचना आरम्भ कर देता

है कि इस उद्देश्यके लिए कौन सी बाते आवश्यक हैं ? एक देशकी सम्पूर्ण प्रतिरक्षामे सैनिक, नागरिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक प्रतिरक्षाए सम्मिलित रहती है। अतएव आज प्रत्येक देशमें इस विचारका प्रसार होना चाहिए कि सम्पूर्ण प्रतिरक्षा प्रणालीमे नागरिक प्रतिरक्षा वास्तवमें एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अग है।

ऐसी स्थितिमे यह प्रश्न उठता है कि विश्वके प्रत्येक देशको करना क्या है ? वे अब और अधिक बैठे हुए जो कुछ हो उसे देखनेकी प्रतीक्षा नही कर सकते। वे अपने जीवनके भविष्यको जानते है। वे यह जानते है कि आधुनिक युद्धका वास्तविक मोर्चा गृहमोर्चा है।

साधारणतः वे यह सोचना प्रारम्भ करते है कि यदि समाप्ति ही अन्तिम परिणाम है तो चिन्ता क्यो की जाय ? प्रथम विचारधाराके रूपमे यह तर्क भले ही अच्छा लगे किन्तु वह स्थितिके अनुकूल नही है। सभी आधुनिक हवाई आक्रमणोमे मृत्यु तथा अतिजीविताके तत्व निहित है। उदाहरणके लिए यदि नाभिकीय विस्फोटकके फलस्वरूप अभिसपातके कारण खुले स्थानमें पाये जानेवाले दस लाख व्यक्ति मरनेवाले हो, तो यदि समुचित बचावके उपाय किये जाय और लोग शरणगृह मे या दीवालोके पीछे रहे, तो केवल एक लाख व्यक्ति-ही मर सकते है। क्या विश्वके लोग यह अनुभव नही करेगे कि नौ लाख व्यक्तियोको बचाया जा सकता है ? वे सुरक्षाके उपायोके महत्वकी अवश्य ही प्रशसा क्यो नही करेगे ?

और आप यह कदापि पसन्द नही करेगे कि चूकि आपने कृत्रिम रूपसे श्वसन क्रियाको नही सीखा है, इसलिए आपका भाई अन्तिम अवस्था को पहुंच जाय और आप दर्शक बने रहे। आप गैसविस्फोट द्वारा अपनी सासको केवल इसलिए अवरोधित होती हुई देखना निश्चय ही नही पसन्द करेगे कि आप गैस त्राण (Gas Mask) का उपयोग पसन्द नही करते। ऐसे विवादास्पद प्रश्न आज विश्वके सभी देशोके लिए प्रस्तुत है।

हमारे समयका दुर्भाग्य यह है कि विश्वकी दो बडी शक्तियां सयुक्त राज्य अमरीका तथा सोवियत रूस—नाभिकीय ऊर्जामे इतने अधिक विकसित है, कि उनका बडी शक्तिके रूपमे होना अपेक्षाकृत छोटी शक्तियोके लिए खतरे का बडा चिन्ह है। विगत १५ वर्षोसे होनेवाला शीत—युद्ध अभी भी चल रहा है और केवल परमात्मा ही जानता है कि इसका कब अन्त होगा। आज सबसे बुरा रूप जो हम देखते है वह नाभिकीय परीक्षणसे सम्बन्धित है। यदि रूस एक परीक्षण करता है, तो अमेरिका उसका अनुकरण करता है और यदि अमरीका दूसरा परीक्षण करता है तो साधारणतः इसका अनुसरण रूसकी ओरसे एक

परीक्षणके रूपमें किया जाता है। ये परीक्षण मानसिक संज्ञाहीन (Mental Delirium) के साथ ही नाभिकीय अभिसंपातके फलस्वरूप वातावरणमे भी बहुत गम्भीर धक्का पहुंचाते है। यह बडे भाग्यकी बात है कि पश्चिमके देशोके साथ ही रूसने भी परीक्षण–प्रतिबन्धके विषयमे चर्चा करना स्वीकार कर लिया है। वाशिंग्टनका १० जूनका एक समाचार, जो 'दि टाइम्स आफ इण्डिया' मे ११ जून १९६३ को प्रकाशित हुआ है, निम्नलिखित है :–

"पश्चिम तथा रुस परिक्षण-समझौता वार्ताके लिए राजी"
संयुक्त राज्य अमरीका नाभिकीय विस्फोट स्थगित करेगा

"दि टाइम्स आफ इण्डिया" समाचार सेवा

वाशिंगटन, जून १०

परीक्षण–प्रतिबन्धकी एक विस्तृत सधिकी उपलब्धिकी दिशामे मास्कोमे शीघ्र ही उच्चस्तरीय वार्ता आयोजित करनेके लिए, सोवियत प्रधानमन्त्री श्री निकिता ख्रुशचोव और ब्रिटिश प्रधानमन्त्री श्री हेराल्ड मैकमिल्लनके साथ अपनी स्वीकृतिके सम्बन्धमे प्रेसिडेण्ट केनेडीने आज नाटकीय ढगसे घोषणा की है।

द्वितीयत उन्होने यह घोषणा की है कि सयुक्त राज्यने तब तकके लिए वातावरणमे नाभिकीय परीक्षण न करनेका सुनिश्चय किया है जब तक कि अन्य राज्य भी ऐसा ही करते है।

"हम पुन. (परीक्षण) प्रारम्भ करनेमे प्रथम नही होगे।" उन्होने प्रतिज्ञा की। ऐसे वचन देनेका आशय पश्चिमके साथ परीक्षण –प्रतिबन्ध–सधिमे सम्मिलित होनेके लिए सोवियत रुसको प्रोत्साहित करना भी है।

ये दोनो घोषणाए अति महत्वपूर्ण है, साथ ही विगत कुछ सप्ताहोमे चल रही आपसी त्रिकोणात्मक वार्ताके परिणामस्वरूप है। ये "उच्चस्तरीय वार्ताए" शिखर–सम्मेलनके तुल्य नही होगी, क्योकि ऐसी बैठक अभी वर्तमान समयमें कोई नही चाहता।

कोई यह नही कह सकता कि इसका परिणाम क्या होगा, परन्तु विश्व मे नागरिक प्रतिरक्षा कार्यके हितमे अन्य उपायोके अतिरिक्त यह निश्चय ही एक ऐतिहासिक घटना होगी। हमे यह अनुभव करना चाहिए कि मानव अन्ततः मानव ही है और उनसे कुछ गलतियोके भी होनेकी सम्भावना होती है। सयुक्त राज्य अमरीकाके राष्ट्रपति अपने कमरेसे सेना, वायुसेना, प्रक्षेपास्त्रो (Missiles) और परमाणु बमोकी समस्त गतिविधियोका नियन्त्रण करते है, और

जब वे मास्कोको अपना लक्ष्य बनानेवाले विशेष प्रक्षेपास्त्रके प्रषणके लिए बटन दबाना चाहेगे, तब उनके मनकी अत्यन्त उत्तेजनात्मक स्थितिकी केवल कल्पना ही की जा सकती है। अतएव यह मानवताके हितमे है कि स्थितिकी समस्त कमजोरियोके होते हुए भी एक ऐसा समझौता हो सकता है, कि जिसके अनुसार नाभिकीय परीक्षणोको प्रतिबन्धित किया जा सकता है और यह तथ्य लाखो व्यक्तियोको सुख और शान्ति प्रदान करेगा। उन अपेक्षाकृत छोटे राष्ट्रोको, जिनके सामने आर्थिक चिन्ताओंके होते हुए भी अत्यन्त अधिक खर्च वहन करनेपर विवश होना पडता है, सरल मार्ग प्राप्त हो जायगा, क्योकि इस प्रकार उन्हे नाभिकीय शक्तिके लिए तैयारी करनेकी ऐसी आवश्यकता नही रह जायगी जैसी कि आज उन्हे करनेपर विवश होना पडता है।

नाटो (NATO) शक्तियोकी ओर ध्यान आकर्षित करते समय, मै पाठकोका ध्यान ब्रिटिश श्वेतपत्र–प्रतिरक्षाका प्रतिवेदन, १९६०–की ओर खीचना चाहता हू। इस प्रतिवेदनमे इस बात पर जोर दिया गया था कि नागरिक प्रतिरक्षाके लिए प्रमुख कार्य वर्तमान सगठन और साधनोको एक ऐसे ढाचेके रूपमे बनाये रखना और विकसित करना है, जिससे कि यदि कभी आवश्यकता पडे तो उसका और अधिक विस्तार हो सके। यह स्वरूप तब तक नही बनाये रखा जा सकता और विकसित हो सकता जब तक स्वयसेवकोका इसमे लगातार प्रवेश न हो। अत पुन एक बार इस अभियानका उद्देश्य एक नाभिकीय युद्धमे नागरिक–प्रतिरक्षाको जो कार्य करना होगा, उसका ज्ञान कराते हुए उक्त सेवामे भर्तीके लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना है।

प्रथम बार केवल एक सार्वजनिक दस्तावेजमे "आठ नाटो देशो (ग्रेट ब्रिटेन, फ्रास, जर्मनी, डेनमार्क, नारवे, नीदरलैण्ड, बेल्जियम और इटली) दो निर्दलीय देशो (स्वीडन और स्विट्जरलैण्ड) और एक बडी–स्पर्धाशील शक्ति के रूपमे सोवियत सघके नागरिक–प्रतिरक्षा–कार्योका व्यवस्थित विवरण" सयुक्त राष्ट्र सैन्य–कार्य–उपसमितिके प्रतिवेदनमे सुलभ है। शासकीय कार्यकी गृह–समिति की यह उपसमिति है। इस प्रतिवेदनमे सोवियत नागरिक प्रतिरक्षा–योजनाओमे १९५८ मे हुए सशोधनकी चर्चा है। इस प्रतिवेदनके अनुसार इस सशोधनकी "नयी बातोमे बडे नगरोका आशिक निष्क्रमण (बच्चो तथा कार्य करनेके अयोग्य व्यक्तियो तक सीमित), बमबारी द्वारा बडी सख्यामे हुए गृहहीन व्यक्तियोकी व्यवस्थाके लिए सगठनोकी स्थापना और ग्रामीण क्षेत्रोमे नागरिक प्रतिरक्षाके प्रति तथा थोडी या बिना चेतावनीके हुए आक्रमणोके प्रति अधिक ध्यान देना सम्मिलित है।"

शासकीय, अर्धशासयकी तथा स्वैच्छिक संगठनो के विषय मे इस पुस्तकके अठारहवें अध्यायमें पहले दिये गये वर्णनके अनुसार नाभिकीय शक्ति दलके लिए अपनी योजनाके सम्बन्धमें नैटो (NATO) संगठन जो कुछ कर रहा है, उससे वह और अधिक उपयोगी कार्य कर सकता है। उक्त अध्यायमे वर्णित पेरिसके दिनांक १० अप्रैल १९६३ के प्रेस नोट (Press Note) की ओर पाठकोका ध्यान आकर्षित किया जाता है। फिर भी मै यह सोचता हूं कि नाटो (NATO) शक्तियो द्वारा नाभिकीय शक्ति दलका निर्माण ही सब कुछ नही है, क्योकि एक दलकी गतिविधिया निश्चय ही पूरे विश्वकी सहायता नही कर सकती। सो जो भी हो, संयुक्त राष्ट्रीय सविधान सभा (United Nations Assembly) ही इस सम्बन्धमे कुछ ठोस कार्य करनेमे सफल हो सकती है। हमारे राष्ट्रपति डा. एस. राधाकृष्णन ने भी १० जून १९६३ को सयुक्त राष्ट्रोके सन्मुख यह विचार प्रकट किया है कि मनुष्यकी अतिजीविताके लिए सयुक्त राष्ट्र ही एकमात्र आशा है। मै यह जरूरत समझता हू कि इस पुस्तकके पाठकोके हितके लिए और समस्त सम्बन्धित लोगोके लाभके लिए दिनाक १० जूनका सपूर्ण प्रेस–विज्ञप्ति यहा पुन: लिख दिया जाय :–

"मनुष्यकी अति जीविताके लिए संयुक्त राष्ट्र ही एकमात्र आशा है।" राधाकृष्णन द्वारा नयी विश्व–व्यवस्थाके लिए आव्हान

संयुक्त राष्ट्र
जून १०।

राष्ट्रपति राधाकृष्णनने आज यह घोषित किया कि सभी राष्ट्रो द्वारा व्यक्तिगत रूपसे एक विश्वकी विचारधारागके लिए अपनी प्रभुसत्ताके आशिक त्यागके लिए राजी होनेपर विश्वकी अतिजीविता निर्भर है।

सयुक्त राष्ट्रकी साधारण सभामे दिये गथे एक भाषणमे उन्होने यह भी कहा कि विश्वके समस्त राष्ट्रोको सयुक्त राष्ट्रका अग होना चाहिए ।

उन्होने साम्यवादी चीनका नाम नही लिया, किन्तु पेकिगके साथ अत्यन्त गम्भीर सम्बन्ध होते हुए भी संयुक्त राष्ट्रमे साम्यवादी चीनके प्रवेशके सम्बन्धमे भारतने अपनी स्थिति पूर्ववत् बनाये रखी है।

यह एक सौ ग्यारह सदस्यीय गोष्ठी विशेषत. भारतीय राजनीतिज्ञ को सुननेके लिए आयोजित की गयी थी। यह १४ मईसे अवकाशपर थी। इस दिन सयुक्त राष्ट्रीय आर्थिक सकटपर आयोजित वर्तमान विशेष सत्रका कार्य आय–व्ययक समितिको हस्तांतरित कर दिया गया था।

डाक्टर राधाकृष्णनके लिए प्रतिनिधियोकी एक बड़ी श्रोता संख्या सुलभ हो गयी थी। सभाके अध्यक्ष पाकिस्तानके सर मोहम्मद ज़फरुल्ला खां रूसके दौरेपर होनेके कारण अनुपस्थित थे और एक उपाध्यक्षने उनका स्थान ग्रहन किया था।

आजकी सभामे पुर्तगालका प्रतिनिधि उपस्थित नही था। पुर्तगालका पूर्व उपनिवेश गोआ १९६१ मे सैनिक कार्यवाही द्वारा भारतको पुनः प्राप्त हो गया था।

डाक्टर राधाकृष्णनने कहा कि एक केन्द्रीय अधिकारीके रूपमें संयुक्त राष्ट्र विश्वके समस्त लोगोंकी आशाओं और आकाक्षाओंका प्रतीक है।

बुद्धिवादी विचारधाराएं समस्त विश्वमे प्रसारित हो रही थी। एक समाजका विकास हो रहा था, आवश्यकता केवल इस बातकी थी कि समाजकी आत्माकी प्राप्ति हो। सयुक्त राष्ट्र इस आत्माकी पूर्ति कर सकता है।

उन्होने कहा कि यदि संयुक्त राष्ट्रके निर्णयोपर निर्भर रहा जाय तो विश्वके समस्त राष्ट्रोंको इसका सदस्य बन जाना चाहिये।

भारत एक सस्थापक सदस्य था। संयुक्त राष्ट्रके कार्यमें अपनी योग्यता के अनुसार यथाशक्ति उसने योगदान दिया है।

डाक्टर राधाकृष्णन एक वास्तविक तत्वज्ञानी है और वे यह ठीक ही सोचते है कि विग्रहसे पूर्ण हमारे एस विश्वमे केवल सयुक्त राष्ट्र ही आज एकमात्र आशा है। मै आशा करता हूं कि यह सभा नागरिक प्रतिरक्षाके विषयपर आवश्यक गम्भीरता के साथ विचार करेगी। संयुक्त राष्ट्रोके अधिकार पत्र (Charter) से यह बहुत अच्छी तरहसे स्पष्ट हो जायगा कि सभी सदस्य राष्ट्रोके प्रति उनका उत्तरदायित्व है। यह ठीक है कि उनके मार्गमे कठिनाइया है और उनकी सीमित स्थितिया है, परन्तु फिर भी एक ओर नाभिकीय परीक्षण प्रतिबन्धकी दिशामे और दुसरी ओर स्ट्रेचरोके मानवीकरण, निष्क्रमणके आयोजन और सिद्धान्तों, प्रथमोपचार करने तथा उसका प्रशिक्षण व्यापक रूपसे देने और विश्वमें सभी पाठशालाओ, महाविद्यालयों और विश्व विद्यालयोमे नागरिक प्रतिरक्षाको एक स्थायी उपाय बनानेमें वे निश्चय ही प्रमुख सहयोग दे सकते है। मै आशा करता हूं कि वे इस तथ्यके प्रति पूर्णतः आश्वस्त हो जायगे कि ठीक हो या ग़लत लेकिन विश्व आज एक ऐसी विचित्र स्थितिमे है जबकी कितना ही अधिक निर्लिप्त रहना वे चाहे, किन्तु यह आवश्यक है कि वे सामने आयें और देखनेके लिए आगे बढ़ें, कि मानवताकी सुरक्षा सुनिश्चत हो।

किन्तु विश्वके प्रत्येक देशको यह ध्यानमे रखना चाहिए कि आधुनिक युद्धमे सैनिक दलोंकी भांति नागरिक जनसंख्या भी समाघात क्षेत्रमे है, और यदि उन्हें बचना है तो अपनी प्रतिरक्षा के लिए सक्रिय योग देना चाहिए। उन्हे

शान्तिकालमें बता देना चाहिए कि वे क्या अपेक्षा कर सकते है और उनसे क्या अपेक्षा की जाती है। और यथा सम्भव अग्निशमन, प्रथमोपचार, गृहोकी रक्षा, अनावश्यक ख़तरोंसे बचने और जब पदार्थोको दूषित करनेवाले रेडिओ सक्रियतत्व वर्तमान हो, तब अपनेगृहो और शरणगृहोमे पूर्णतः स्वावलम्बी होनेकी तैयारी करनेके सम्बन्धमे उन्हें मूलभूत प्रशिक्षण देना चाहिये।

विगतकेअनेक युद्धोसे विश्वको अनेकों प्रकारके सबक मिले होंगे, परन्तु जहा तक नागरिकका प्रतिरक्षा का सम्बन्ध है, यूरोप और ब्रिटेनपर हुई हवाई बमबारीसे विश्वको सबसे अच्छा सबक मिल सकता है। ऐसा मै इस तथ्यके होते हुए भी कहता हूं कि विगत पन्द्रह वर्षोमें नाभिकीय शक्तिका अत्यधिक विकास हुआ है, परन्तु उसी समय इस प्रकारके युद्धके बारेमे विश्वका अनुभव बहुत ही सीमित है और मुख्यत. विगत युद्धके अनुभवोका सहारा लेनेके सिवाय विश्वको अन्य कोई चारा नही है। इस युद्धमें केवल परम्परागत प्रकारके अस्त्रोका प्रयोग किया गया था और केवल हिरोशिमा और नागासाकीको छोडकर नाभिकीय अस्त्रोका उपयोग कही नही किया गया। किन्तु जैसा कि अन्यत्र समझाया जा चुका है यह विश्वके लिए अधिक उपयोगी नही था। बमोके गिरनेके तुरन्त बाद ही जापानने आधीनता स्वीकार कर ली थी और सुरक्षाके लिए कोई उपाय अपनाये या आयोजित नही किये गये थे। यह तथ्य इस तथ्यके अतिरिक्त है कि बम ऊचाईसे छोड़े गये थे। परिणामस्वरूप वहा वस्तुत अभिसपात (Fall-out) करीब करीब बिल्कुल नही हुआ था।

ग्रेट ब्रिटेन के बारे मे हम पाते है कि वहा युद्धके वास्तविक रूपमे प्रारम्भ होनेके बहुत पहले ही नागरिक प्रतिरक्षाकी योजना और तैयारिया पूरी कर ली गयी थी। यथार्त निष्क्रमणकी योजना अग्रिम रूपमे कई वर्ष पहले ही तैयार कर ली गयी थी और सम्पूर्ण योजना युद्धके वास्वविक रूपमे आरम्भ होनेके पाच वर्ष पूर्व पूरी कर ली गयो थी। यह तथ्य कि युद्ध प्रारम्भ होनेपर बिना क्षतिके तीन दिनोके भीतर ही राजधानीके ग्रामीण जनदीप क्षेत्रो (Metropolitan Boroughs) को १५ लाख व्यक्तियोका निष्क्रमण पूरा कर लिया गया था, स्वय उचित समयपर उचित आयोजनके महत्वको बता देगा। मेरा यह निश्चित मत है कि प्रत्येक देश को अपने लिए ऐसी योजनाए तैयार रखनी चाहिये, जिससे कि आपत्तीके समय उन्हे कार्यरूपमे परिणत किया जा सके और जब आक्रमणके दबावका समय आये, तब किसी प्रकारकी अव्यवस्था या कोई आतंक न हो। पुस्तकके पूर्वके अशोसे पाठकको ज्ञात हो गया होगा कि १९३५ मे ही ग्रेट ब्रिटेनमे नागरिक प्रतिरक्षाका प्रथम परिपत्र (Circular) प्रकाशित हो गया था। हवाई हमले से बचाव

सम्बन्धी विधेयक १९३७ मे पारित हो गया था और नागरिक-प्रतिरक्षाका नया अंग अक्तूबर १९३८ तथा सितम्बर १९३९ के बीच पूरी तरहसे निर्मित कर लिया गया था। संकटकालीन दमकल सेवा (Emergency Fire Brigade) के द्वारा किये जानेवाले उपायोकी पूर्ति १९३७ के फरवरी तथा १९३९ के सितम्बर माहके बीचमें करली गई थी।

जब १९३९ के सितम्बर माहमे युद्ध प्रारम्भ हुआ तब उस माहसे लेकर १९४० के अप्रेल तककी अवधिमे विराम रहा था। उस अवधिमे आक्रमणके धक्केके विरुद्ध पूरी लामबन्दी की गयी थी तथा सभी प्रकारकी तैयारियोको पूर्ण कर लिया गया था। नागरिक प्रतिरक्षाके अभ्यासोने लोगोको यह सिखा दिया था कि आपत्तिके समय आक्रमणके धक्केको वे किस प्रकार सहन करे। इसी अवधिमे मनोधैर्यके गुणने, जो कि ब्रिटेनमे अत्यन्त ऊचे स्तर पर विकसित हो चुका था, अत्यन्त महत्वपूर्ण योग दिया था और इसी अवधिमे चेतावनी पद्धतिका परीक्षण किया गया था. और तमावरण (Black-out) मे ससोधन किया गया था। शसकीय तन्त्र का निष्क्रमण पूरा किया गया था और गैसविरोधी प्रतिरक्षा तथा शरणगृहोके लिए समस्त आवश्यकताओकी पूर्ति की गई थी तथा हवाई आक्रमणसे बचावसे सम्बन्धित सेवाओका पुन. निरिक्षण कर लिया गया था।

दूसरी अवधि मई माहसे अगस्त माह १९४० तक थी जबकि आक्रमणकी धमकी मे दुगुनी वद्धि हो गई थी। इस अवधिमे नये पैमानेपर आक्रमण तथा चढाई की गयी थी। उस समय व्यापक रूपसे हल्का आक्रमण किया गया था। निष्क्रमण पूरी तरहसे सम्पादित कर लिया गया था। चेतावनियो के सम्बन्धमे "खतरे" की चेतावनीने "सतर्क रहो" को सूचनाका स्थान ले लिया था तथा इस अवधिमे सेवाओ के सम्बन्धमे महत्वपूर्ण बातोमे कार्यवाही तथा अनिवार्यतामे प्रथम परिचय कुछ महत्वपूर्ण बाते थी।

अब मै यहां जुलाई १९४० से मार्च १९४४ तक हुई लड़ाइयोके बारेमे चर्चा करूगा। इस अवधिमे ब्रिटेनकी लडाई और लन्दनकी लडाईके साथ ही लदन ओर बन्दरस्थानो पर कुछ ध्यान देते हुए आन्तरिक क्षेत्रोके औद्योगिक केन्द्रोंपर फैले हुए छिटपुट आक्रमण हुए थे। इसी अवधिमे अटलान्टिक महासागरके बन्दरस्थानो की लडाइयोमे सधन तथा तीव्र युद्धके सकेन्द्रणमे वृद्धि होती जा रही थी। किन्तु इसी समय बाडकर–आक्रमणो (Baedeker Raids), "मारो और भागो" (Tip and Run) तथा 'लघुतीव्र युद्ध' (Little Blitz) के पूर्व ब्रिटेनको कुछ अवकाश मिल गया था।

एक महत्वपूर्ण उल्लेखनीय तथ्य संकटकालीन दमकल सेवाओ, नागरिक प्रतिरक्षा सेवाओंकी व्यवस्था, शरणगृहो और कार्यरत क्षेत्रीय आयुक्तोके सम्बन्ध

हैं। संकटकालीन दमकल सेवाओंके बारेमें लामबन्दी और अतिरिक्त सहायक, हवाई आक्रमणमे दमकलोके कार्य और राष्ट्रीय दमकल सेवाएं अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्य थे । राष्ट्रीय दमकल सेवाके सम्बन्धमें अत्यत महत्वपूर्ण बाते उसकी योजना, स्थापना, उसका संगठन एवं उसकी कार्यवाही थी ।

शरणगृहहोके सम्बन्धमे आक्रमणके कुछ परिणामोका परीक्षण किया गया था। शयनागार शरणगृहोकी समस्याएं बहुमुखी थी और उन्हे सावधानी, धैर्य तथा युक्तिके साथ हल किया गया था । शरणगृह मजबूत बनाये गये थे और उनमे वृद्धि की गयी थी और गहरे होने वाली शरणगृह सम्बन्धी नीतिमें संशोधन किया गया था । उस समय वितरणमें भी परिवर्तन किये गये थे और यह विशेषकर ध्यानमें रखने योग्य है कि १९४१–४२ के सम्मेलनमे एसकी नीतिके प्रति अनुकूल भावनाओमे उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी ।

नागरिक प्रतिरक्षा सेवाकी व्यवस्थाके वारेमे आरक्षण तथा अनिवार्यता को ध्यानमें रखते हुए जनशक्ति तथा राष्ट्रीय जनशक्ति बजटमे हिस्सा आदि महत्वपूर्ण प्रश्न हल करनेको थे। सेवाओकी व्यवस्थाके सम्बन्धमे अनुभव तथा जन–शक्तिकी मितव्ययिताने सेवाओकी पुनः व्यवस्ता की, और उसी समय प्रशिक्षण तथा सेवा–शर्तोंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। अन्य तथ्योके अतिरिक्त अग्निनिवारण तथा अग्निसे रक्षा ने भी अत्यन्त मनोरंजन, कठिन और महत्वपूर्ण समस्याओंको उत्पन्न किया था।

क्षेत्रिय आयुक्त पारस्परिक समर्थन की प्रमुख भावनाके साथ सदैव कार्य करते रहे थे। नागरिक प्रतिरक्षा आरक्षणका प्रश्न, आक्रमणके बादकी समस्याएं, बुद्धिमत्ता और विशेषरूपसे सैनिक सहायताने उनके साथ अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया था।

अप्रैल १९४३ और मई १९४५ के बीच अग्रेजी भाषाके 'व्ही' ("V") आकारके शस्त्रास्त्रोकी नयी चुनोती एक ऐसी समस्या थी जो अन्तिम होते हुए भी कम महत्वपूर्ण नही थी। इस अवधिमे ब्रिटेनको नये शस्त्रास्त्रोके विरुद्ध योजना तैयार करनी पड़ी थी। सेवाओकी अन्य विचित्र समस्याओ और गारद वापस (Stand Down) के अतिरिक्त 'व्ही, एक' तथा लम्बी मारके राकेटोके द्वारा आक्रमणोंका प्रश्न भी उस समय उपस्थित था।

इन समप्त तथा और अन्य कई समस्याओका सामना ब्रिटिश लोगों द्वारा साहस तथा धीरजके साथ किया गया था और विश्वके प्रसंगमे नागरिक प्रतिरक्षाके सम्बन्धमे लिखते हुए मुझे यह कहनेमे कोई हिचकिचाहट नही है कि ब्रिटिश लोगो द्वारा प्रस्तुत उदाहरण सबका मार्गदर्शन कर सकता है। सयुक्त राज्य अमरीकाके नागरिक तथा प्रतिरक्षा व्यवस्था सम्बन्धी राष्ट्रपतिके कार्यालयके कार्यपालिका

कार्यालय द्वारा प्रसारित १९५९ के वार्षिक प्रतिवेदन से यह देखा जा सकता है कि उस देशमें नागरिक प्रतिरक्षाके सम्बन्धमे चारो ओर गतिविधियाँ सचालित थी। १९५० मे एक नियमित नागरिक प्रतिरक्षा विधेयक पारित किया गया था और प्रतिवेदनमे दिये गये उल्लेख के अनुसार उसमें संशोधन भी हो चुका है। अब वहां जन-धन की रक्षा, अभिलेखो, सार्वजनिक सूचनाओ और शिक्षणको सुरक्षित रखने, मेद्यता (Vulnerability) मे न्यूनता लाने, आक्रमणकी चेतावनी देने, क्षतिका-निर्धारण करने, संचार सेवाएँ, अति-जीविताके लिये तैयारिया करने और आपत्ति सेवाओं, संकटकालीन स्वास्थ्य रक्षा, संकटकालीन कल्याण सेवाओ, उद्धार कार्य तथा विनाशसे बचाने, मलवेको हटाने और अभिययान्त्रिकी सेवाओ, अग्निसे प्रति-रक्षा और दूषण दूर करने, विलबित या अपरम्परागत प्रकारके शस्त्रास्त्रोसे रक्षा, विकिरण–विज्ञान सबन्धी प्रतिरक्षा राजकीय-स्थानीय तथा व्यक्तिगत सम्पत्तिकी सूचियाँ तैयार करने, सघीयद्यातुओंका सग्रहण, ठेकोंका पूर्वनिर्धारण, आयातित सामग्रियोकी स्थानापन्न सामग्रियोका विकास करने, आवश्यक खनिज पदार्थोके लिए नये घरेलू साधनोका विकास करने, उत्पादन क्षमताका विस्तार करने, आयातित वस्तुओंकी राष्ट्रीय सुरक्षाकी दृष्टिसे जाच करने, राष्ट्रीय औद्योगिक कारखानोकी रक्षा करनेमे और साधनोके कार्यान्वयन तथा व्यवस्था के लिए तैयारियाँ करने तथा इसी प्रकार की अन्य बातोके लिए सयुक्त राज्य अमरीकामे यथोचित राष्ट्रीय योजना है। इसी प्रकार खाद्यान्न, जन-शक्ति, ईंधन और शक्ति, उत्पादन और सामग्रियाँ, आर्थिक स्थिरता, दूर सचार सेवाओ (Tele-communications), परिवहन साधनो तथा युद्धकालीन सेन्सर (नियन्त्रण) के विषय भी इस प्रतिवेदनमे स्पष्ट रूपमे उल्लेखनीय है। इतना ही नही, अनुसद्यान और विकास, विकिरण–विज्ञान सम्बन्धी प्रतिरक्षा, शरणगृह, चेतावनी तथा सचार सेवाओ, स्वास्थ्य–विज्ञान औषधिविज्ञान और सामाजिक विज्ञानमे अनुसधान, अन्य अनुसधान प्रशिक्षण तथा शिक्षा जैसे सहायक कार्योके सम्बन्धमे भी इस प्रतिवेदनमे विवरण दिया गया है। वह अशासकीय सघटनो, सघीय सहायता, परीक्षण तथा अभ्यासोकी भी चर्चा करता है। इसी प्रकार शासकीय सलाहकार दलो और सघठनो, अन्तरराष्ट्रीय गतिविधियो, अमरीकी राष्ट्रीय रेडक्रॉस नागरिक प्रतिरक्षा सलाहकार परिषद नागरिक तथा प्रतिरक्षा लामबन्दी सम्बन्धी मण्डल और सलाहकार समितियोके बारेमे भी इस प्रतिवेदनमे उल्लेख है। दूसरे शब्दोमे सम्पूर्ण प्रतिवेदनसे यह प्रभाव पड़ता है कि नागरिक प्रतिरक्षाको अत्यन्त मजबूतीसे सगठित करनेके लिए सयुक्त राज्य अमरीकामे बहुत बड़ा प्रयास हो रहा है। सत्य है कि एक मार्गीकरण की नीतिके अभावमे अमरीकामें एक प्रकारके अनिवार्य प्रशिक्षणको उतनी बडी सफलता नहीं मिल सकेगी जितनी कि रूसको मिली है। परन्तु

अन्ततः यह तथ्य है कि संयुक्त राज्य अमरीकामे आयोजन पूरी तरहसे किया जा चुका है। वहांके लोग किसी भी आकस्मिक घटनाका सामना करनेको पूरी तरहसे तैयार हैं, चाहे उक्त घटना बिना सूचनाके क्यो न घटित हो। उनकी व्यवस्थाका अनुसरण विश्वके प्रत्येक देशको करना चाहिए और आधुनिक युद्ध के स्वरूपके लिए, जिसे देखना आजकी मानव जातिके भाग्यमे बदा है, यह आवश्यक है कि जिस प्रकार उस बडे देशमे हो रहा है उसी प्रकार उचित समयपर हर सम्भव सावधानी अपनाना चाहिए।

जैसा कि इस पुस्तकमे पहले बताया जा चुका है **सोवियत समाजवादी गणराज्य** के संघने डोसाफ (DOSAAF) तथा अन्य सगठनोके द्वारा कमसे कम दो करोड व्यक्तियोके प्रशिक्षणका प्रबन्ध कर लिया है। उद्योगोको इधर–उधर फैलाकर स्थापित करने तथा विशेषकर महिलाओ और बच्चोको निष्क्रमण करनेकी उनकी नीतियाँ उल्लेखनीय है और विश्वके प्रत्येक देशके लिए अनुसरण करनेके लिए वे निश्चय ही बहुत अच्छी है। यद्यपि यह सत्य है कि सोवियत समाजवादी गणराज्योके सघने एक मार्गीकरणके प्रमुख सिद्धान्त पर ही प्रशिक्षण तथा सगठनको आधारित किया है, परन्तु अन्ततः यह सत्य है कि इस देशकी नागरिक प्रतिरक्षा सम्पूर्ण विश्वके लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करती है। रूसमे नागरिक प्रतिरक्षा सगठनका एक प्रमुख अग इस तथ्यको मान्यता देना है कि प्रत्येक नयी बननेवाली इमारतमे तलघरकी व्यवस्था होनी ही चाहिए। यह एक ऐसी बात है कि जिसे विश्वके प्रत्येक देशको ध्यानमे रखना चाहिए। क्योकि आप यह कभी नही जानते कि विपत्ति कब आती है। ऐसे समयमे शरणगृहो और खाइयोकी व्यवस्थाके अभावमे अनेको देशोको कष्ट सहना पडता है और उन देशोमे एक बडी अस्तव्यस्तताकी स्थितिका निर्माण हो जाता है, जिसके फलस्वरूप मानव जीवन तथा साधनोकी ऐसी क्षति होती है कि जो पूरी नही की जा सकती।

विश्वके लाभके लिए एक और उदाहरण **स्वीडेन** का दिया जा सकता है। वहाँ नागरिक प्रतिरक्षाका आयोजन बडे सुदृढ आधारपर किया गया है और चूकि इस पुस्तकमे बहुत कुछ लिखा जा चुका है, अतएव यहाँ उसे पुनः दुहराना आवश्यक नही है। किन्तु स्टाकहोम से देहाती क्षेत्रोकी ओर निष्क्रमणके साथ ही उस देशमे नागरिक प्रतिरक्षा कार्यक्रमसे सम्बधित प्रश्नोका उल्लेख करनेवाले अंशकी ओर पाठकका आवश्यक ध्यान आकर्षित किया जाता है। उस देशका उदाहरण विश्वके दूसरे देशोके लिए अनेक प्रकारसे उपयोगी है।

विश्व मे अनेक देशो द्वारा जिन अत्यन्त महत्वपूर्ण सगठनोका उपयोग किया जाता है, उनमेसे एक **चर्च** है। सयुक्त राष्ट्र अमरीका, इगलैण्ड, और अनेको

देशोके अधिकांस निवासी चर्च–इंजील या गिरजाघरकी दिव्य वार्ता के अनुयायी है। सयुक्त राष्ट्र अमरीकामे वे आत्मके प्रश्नके महत्वपर वल देते हुए प्रतीत होते है। हवाई आक्रमणके फलस्वरूप मरनेवाले सैकड़ो और हजारो व्यक्तियोका प्रश्न महत्वपूर्ण अवश्य है, परन्तु मेरे मतानुसार चर्चके पादरियोको रक्षात्मक हवाई बचाव (Passive Air Defence) के उपयोग के लिये बहुत महत्व देना चाहिये। इस प्रसंगमे एक महत्वपूर्ण उल्लेख–योग बात राज्यके प्रभुत्तात्मक अधिकारोके विरूद्ध चर्चके प्रभुसत्तात्मक अधिकारोका प्रश्न है। नागरिक प्रतिरक्षा के बारेमे चर्चको किसी भी प्रकारसे एक समानान्तर संगठन नही समझना चाहिये। परन्तु इस सबधमें चर्च–सगठन और राज्यके बीचमे इस कार्यका साथ ही साथ चलना आवश्यक है। नागरिक प्रतिरक्षाके बारेमे चर्चोको राज्यके नागरिक–प्रतिरक्षा–सगठनका अनुकरण करना चाहिये और यह नही सोचना चाहिये कि वे राज्यसे बिलकुल स्वतंत्र है। इसके अतिरिक्त भी अन्य कई बाते है, जिन्हे हमारे समयके आधुनिक युद्धसे परिपूर्ण विश्वको ध्यानमे रखना चाहिये। हमारे समयकी दुखान्त घटनाए गलतफहमी, अशुद्ध गणना ओर अन्य व्यवस्थाके कारण हैं और यदि हम केवल उचित ढगमे सभी चीजोका आयोजन करनेके योग्य हो सकें, तो हम किसी भी देशकी नागरिक प्रतिरक्षा समस्याओंको हल कर सकते ह।

इसके पहले के अनुच्छेदोमे जो कुछ कहा जा चुका है, उसके अतिरिक्त ही नही बल्कि सर्वोपरि महत्वके रूपमे विश्वके प्रत्येक देशको विद्यालयो, महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयोमे नागरिक प्रतिरक्षाकी शिक्षाको एक स्थायी उपायके रुपमे मान्यता दी जानी चाहिये। यह स्मरण रखना चाहिए कि नागरिक प्रतिरक्षा महाविद्यालयो, नागरिक प्रतिरक्षा विशेषज्ञ विद्यालयो या स्थानीय नागरिक प्रतिरक्षा विद्यालयोके द्वारा नागरिक प्रतिरक्षाकी शिक्षा केवल सीमित सख्याके लोगोको दी जा सकती है। किसी भी देशकी जनसख्याके अधिकाशको नागरिक–प्रतिरक्षा–शिक्षाका लाभ पहुँचानेके लिए यह आवश्यक है कि पूरक साधनके रूपमे नागरिक प्रतिरक्षाको एक स्थायी उपायके रूपमे मान्यता दी जाय। वस्तुत शैक्षणिक सस्थाओके युवक तथा युवती छात्रोको ही भावी युद्धका धक्का सहन करना है। अतएव आज यह समस्त उत्तरदायी लोगोका कर्तव्य है कि अत्यन्त उपयुक्त समयपर जब उनके लिए नागरिक प्रतिरक्षामे शिक्षण लेना आवश्यक हो तब वे यह देखे कि उन्हे इस सम्बन्धकी आवश्यक शिक्षा प्राप्त होती है।

विश्वके प्रसंगमे नागरिक प्रतिरक्षाके इस अध्याके संबन्धमे जापानी चलचित्र "अन्तिम युद्ध" (The Last War) तथा हिन्दी महाकाव्य 'महाभारत'

के बारेमें सोचा जा सकता है*। इन दोनों उदाहरणोंमें हमें विश्वका अन्त देखनेको मिलता है। अतएव जब ऐसी स्थिति है, तो क्या हम उन उपायोके विषयमें नहीं सोच सकते कि जो ऐसी स्थितिमें हमारी सहायता करें। इस प्रकारसे ही नागरिक प्रतिरक्षाका महत्व ज्ञात होता है। आजके युगमे जबकि परमाणु सम्पूर्ण विनाशका प्रतीक बन चुका है, तब हम यह भी जानते है कि हताहतोकी संख्या और विनाशके तत्वको कम करनेके भी प्रश्न उठ सकते है। और इस उद्देश्यके लिए सुरक्षाके नथे उपायोके सम्बन्धमे आधुनिक विश्वको सम्यक ज्ञान रखना पडेगा तथा उसे नागरिक प्रतिरक्षाके प्रश्नका उचित मूल्यांकन करना पढ़ेगा।

---

*हिन्दी महाकाव्य से लेखकका तात्पर्य व्यास कृत सस्कृत महाभारतसे है।

अध्याय २१

शांतिकालमें नागरिक प्रतिरक्षाका महत्व

कुछ लोगोंका ख्याल है कि नागरिक प्रतिरक्षा कार्य केवल युद्धके समय आवश्यक है और युद्धके समाप्त हो जानेपर इसका कोई महत्व नही है। यह दलील बिलकुल गलत तथा हानिप्रद है। वे लोग यह भूल जाते है कि उन्हे चीनी हमले और हालके भारत पाक संघर्षसे सबक़ लेना है। चीनी हमलेके समय जो अव्यवस्था तथा गलतियाँ हुई, उन्हे नही भूला जा सकता है। वास्तवमे यह भूल जाना घातक होगा कि जब मुसीबत सिरपर आ पडे, तब उसका सामना करनेके लिए अपने आपको तैयार करना कठिन होता है।

नागरिक रक्षा कार्य युद्धकाल की भाति शान्तिकालमे भी महत्वपूर्ण है। यह बात सब लोगोको सदाके लिए समझ लेनी चाहिए। इसके मुख्य कारण दो है। एक तो है समयका महत्व। एक विशाल राष्ट्रकी नागरिक प्रतिरक्षाकी तैयारीमे बड़ा समय लगता है। दूसरे यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि भूकम्प, भूस्खलन, भीषण तूफान, विस्फोट, अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक आपदाओके समय भी नागरिक प्रतिरक्षा कार्य कम महत्वपूर्ण नही है। जहाँ तक नागरिक प्रतिरक्षाके लिए तैयारीका सवाल है, देशके सभी शिक्षित वर्गोके लिए इसकी शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। चाहे स्कूल हो या कालेज, उद्योग हो या व्यवसाय, अथवा पुलिस कर्मचारी हो या सरकारी अधिकारी, हर प्रकारके व्यक्तिके लिए नागरिक प्रतिरक्षा कार्यका शिक्षण वर्तमान युगमे बहुत आवश्यक है। यदि बुद्धिके विकासके लिए अनेक विषयोकी पढ़ाई की जा सकती है, तो उसकी प्रतिरक्षाके लिए इसकी शिक्षा भी आवश्यक समझी जानी चाहिए।

कुछ लोग कहते है कि आजके युगमे आणविक शक्ति तथा शस्त्रास्त्रोके विकासके बाद, अब तो पूर्ण विश्व के विनाशका ही प्रश्न होता है। परमाणु या हाइड्रोजन बमके प्रयोग किये जानेके बाद रक्षाके लिए कुछ भी करनेका समय कहा रह जायगा? वास्सवमे यह एक गलत धारणा कही जायगी। सबसे पहले हमे यह याद रखना चाहिए कि हर देश परमाणु अस्त्रोंका उपयोग नही कर सकता। उदाहरणार्थ, भारत–पाक संघर्षके गमय पाकिस्तानके पास इस प्रकारके शस्त्रास्त्र नही थे। भारत भी इस स्थितिमे नही था। यह सच है कि संसारमे अनेक

देशोंके पास परम्परागत शस्त्रास्त्रोंके भण्डार है। दूसरी बात यह है कि यह कहना पूर्णतया गलत है कि आणविक शस्त्रोंके उपयोग करनेपर पूर्ण विनाश होगा। नवीनतम खोजोंसे यह साबितहो गया है कि प्रतिरक्षा–विशेषज्ञ विशेष प्रकारके आणविक शस्त्रोंके बारेमे जिस अवधि तक छिपकर अन्दर रहनेके लिए बताये, वैसा करनेसे लोग इसके दुष्परिणामोंसे अपनेको बचा सकते है। हमे यह बात नही भूलनी चाहिए कि परमाणु या हाइड्रोजन बमके गिरनेसे उस स्थानपर एक गडढा बन जाता है। इसका व्यास कुछ मीलोतक हो सकता है। फिर रेडियो सक्रिय धूलि : (Radioactive Ash) का प्रश्न है जो पचाससे सौ मील या इससे भी लम्बे फासले तक प्रभाव डाल सकती है। इसी धूलिसे लाखों जाने जा सकती है, परन्तु आवश्यक हिदायतोका पालन करने से इसके बुरे परिणामोसे भी बचा जा सकता है। इन बातो पर ध्यान देने से दस लाख व्यक्तियों मे से नौ लाख व्यक्ति बचाये जा सकते है।

इन सब बातोंसे नागरिक प्रतिरक्षा कार्यकी तैयारीका महत्व स्पष्ट हो जाता है। हमे यह नही भूलना चाहिए कि इसी बातको ध्यानमे रखकर अमरीका करोडो डौलर इसपर खर्च कर रहा है। यह ठीक है कि हम पारिवारिक प्रतिरक्षा गृहो या सार्वजनिक प्रतिरक्षागृहो आदि पर होनेवाले यह खर्च बरदाश्त नही कर सकते, जो अमरीका कर रहा है परन्तु हम छोटे पैमानेपर जरूर काम कर सकते है। इसका एक सरल उपाय यह होगा कि जो नये तथा सार्वजनिक ढगके मकान बन रहे हो, उनमे तलमजिल अनिवार्य रूपसे बना दी जाय। इन स्थानोंको आवश्यकता पडनेपर प्रतिक्षागृहका रूप दिया जा सकता है, बशर्ते नागरिकोको उनके लिए पूरी शिक्षा मिली हो। शान्तिकालमे, प्राकृतिक आपदाओंमे भी यह स्थान लाभदायक हो सकते है। इसके अलावा वहाँ विश्राम स्थल, भण्डार या पुस्तकालय आदि की व्यवस्था की जा सकती है।

शान्तिकालमे नागरिक प्रतिरक्षा कार्यके महत्वको समझनेके लिए यह जानना पर्याप्त होगा कि जनेवा स्थित अन्तरराष्ट्रीय नागरिक प्रतिरक्षा सगठन (International Civil Defence Organisation, Genoa) युद्धकालकी अपेक्षा शान्तिकालमे किये जानेवाले नागरिक प्रतिरक्षा कार्योंपर बल दे रहा है। यह सगठन इस कार्यके लिए सबसे महत्वपूर्ण अन्तरराष्ट्रीय सस्था है। शान्तिकालमे नागरिक प्रतिरक्षा कार्यका एक उदाहरण २८ मार्च, १९६५ को चाइल (Chile) मे हुए भूकम्पके बाद किये गये कार्योसे मिल सकता है। इस भूकम्पके बाद चाइलकी नागरिक प्रतिरक्षा एजेन्सीने जनेवा स्थित अन्तरराष्ट्रीय सगठनसे तार द्वारा सहायता मागी। सगठनने भी अन्तरराष्ट्रीय आपद्कालीन राहत कार्य-

क्रमके अनुसार सहायताका प्रबन्ध कर दिया। जनेवाके सगठनने सभी सदस्य देशो, विशेषकर पडोसी देशोसे सहायता की अपील की। इस अपीलके बाद अर्जेण्टाइनाने एक विशेषज्ञ दल भेजकर उनकी जरूरतकी जानकारी हासिल की। इस तरह तम्बुओ, कम्बलो, आटा, डिब्बोमे बन्द पदार्थो, औषधियो की लम्बी सूची तैयार कर ली गयी और तीस मार्चसे ही आवश्यक चीजोको भेजनेका कार्य शुरू कर दिया गया और २० मई, १९६५ तक १०० टन से भी अधिक सामान भेजा जा चुका था। कुछ सामान विमानोसे भेजा गया। इस व्यवस्थित सहायता कार्यका सारा भार अर्जेण्टाइना नागरिक प्रतिरक्षा एजेन्सी द्वारा वहन किया गया था और प्राथमिकता सूचीके अनुसार माल तथा अनावश्यक चीजोको न भेजकर गडबडी टाली जा सकी। इस तरह यह कहा जा सकता है कि सारा राहत कार्य बडी आसानीसे पूरा हो गया।

इस उदाहरण तथा इसी प्रकारके अन्य कार्योंसे प्राकृतिक आपादाके समय अन्तरराष्ट्रीय सहयोगके महत्वपर प्रभाव पडता है। अन्तरराष्ट्रीय नागरिक प्रतिरक्षा सगठनने, जिसका मै भी एक सदस्य हूँ, अभी बताये गये राहत कार्योकी व्यवस्था अर्जेण्टाइना द्वारा की। इसके अतिरिक्त सयुक्त राष्ट्र आर्थिक तथा सामाजिक परिषदकी रिपोर्टो से भी शान्तिकालमे नागरिक प्रतिरक्षा कार्यों पर प्रकाश पडता है। उनमे प्राकृतिक आपदाओके समय अनेक प्रकारके राहत कार्य बताये गये है। १९६८ मे सयुक्त राष्ट्रसघ मे भी इस ओर विशेष ध्यान दिया गया था। इसके अलावा अनेक सरकारी तथा निजी एजेन्सियोके प्रयास भी महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक आपदाओसे उत्पन्न स्थितिमे प्रतिरक्षा, बचाव आदि के लिए आगसे बचाव, एम्बुलेन्स और उससे सम्बन्धित अन्य कार्योकी तत्काल व्यवस्था करना तब तक सम्भव नही, जब तक कि इनकी तैयारी पहले से ही करके न रखी जाय।

आवश्यक यह है कि पूर्ण प्रतिरक्षाका व्यापक अर्थ समझनेका प्रयास करना चाहिए। वास्तवमे प्रतिरक्षा कार्यके चार मुख्य पहलू है (१) स्थल सेना, वायुसेना और नौसेना का प्रतिरक्षा कार्य। (२) नागरिक प्रतिरक्षा। (३) आर्थिक क्षेत्रमे प्रतिरक्षा। (४) मनोवैज्ञानिक प्रतिरक्षा। इन सभी पहलुओको भली भाति समझना जरूरी है। दूसरे शब्दोमे इसका अर्थ है राष्ट्रीय तथा जनसाधारण की प्रतिरक्षा, चाहे युद्धकालमे हो या प्राकृतिक आपदाओके समय। क्या कोई यह कह सकता है कि नागरिक प्रतिरक्षा युद्धके समय ही महत्वपूर्ण है? अन्य सकटोके अवसर पर उसका महत्व कम है? यदि पूरे आकडे एकत्र किये जाएं, तो युद्धसे मरनेवालो की सख्या प्राकृतिक विपत्तियोसे मरनेवालोकी

संख्यासे कम होगी। यदि इन सब बातोंपर ध्यान दिया जाय, तो शान्तिकालमे नागरिक प्रतिरक्षा कार्यके महत्व को कोई भी कम नही बता सकता।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि ऊपर बताये गये सकटोंके अलावा, युद्धकालमे नागरिक प्रतिरक्षाकी तैयारीकी बात भुलायी नही जा सकती। कोई भी राष्ट्र परम्परागत एवं परमाणु शस्त्रास्त्रोंसे प्रतिरक्षाके उपायोंको शान्तिकाल में ही समझ सकता है और हर व्यक्ति इस सम्बन्धमे कुछ अभ्यास भी कर सकता है। चाहे वह स्कूल या कालेज मे हो, किसी आफिसमे अधिकारी या कर्मचारी हो, चाहे उद्योगके प्रबन्धक हो या कामगार, मकानके भीतर हो या बाहर, सभी लोगोके लिए प्रतिरक्षाके मूलभूत तथा न्यूनतम विषयोंकी जानकारी जरूरी है। यह सब केवल शान्तिके समय ही सम्भव है। अतः यह सबके हितमे होगा कि विभिन्न राज्योंमे नागरिक प्रतिरक्षा सगठनोंके अलावा इस बातको मान्यता दी जानी चाहिये कि शान्तिकालमे नागरिक प्रतिरक्षा और उसकी शिक्षाकी व्यवस्था आवश्यक है। सरकारी, अर्द्ध सरकारी तथा स्वेक्षिक संस्थाये जितना इस ओर ध्यान दे, उतना ही अच्छा होगा।

आज हमारे देशमे प्रायः प्रति सप्ताह कोई न कोई भयंकर दुर्घटना घट रही है। शासन और कुछ स्वयसेवी सस्थाओंकी ओर से राहत कार्योंकी व्यवस्था की जाती है। रेल-दुर्घटना, बाढ़, भूकम्प प्रभृति पचासो प्रकारकी दुर्घटनाओके क्षणोके लिए हमे पहले से ही सुचिन्तित और सुविचारित रूपमे प्रतिरक्षाकी व्यवस्था करनी पडती है। यदि हमारे नगरो मे शान्तिकालीन रक्षा व्यवस्थाका कार्य पूर्ण है, तो ऐसी दुर्घटनाके क्षणोमे अत्यन्त मूल्यवान सेवा कार्य दिखाया जा सकता है। हताहतोंकी प्राथमिक सुश्रूषा, उन्हे अस्पताल पहुचाना और उनके लिए हर प्रकारकी सुख-सुविधाओंको प्रस्तुत करना हमारी शान्तिकालीन प्रतिरक्षा के आवश्यक अग है। हमे चाहिए कि वह बड़े नगरो-उपनगरो और गांवोंमे शान्तिकालीन प्रतिरक्षाकी व्यवस्था करे, जिससे शान्तिकालमे भूकम्प, भूस्खलन, आघात, ओला-पाला, अनावृष्टि, अतिवृष्टि आदि दैवी प्रकोपो और रेल, मोटर, वायुयान आदि दुर्घटनाओं के समय लोगोको पूरी-पूरी सहायता प्रदान की जा सके। जिस प्रकार युद्धकालके लिए प्रतिरक्षा व्यवस्था अनिवार्य है, वैसे ही शान्तिकालके लिए भी यह अनिवार्य है।

शब्दानुक्रमणी

(GLOSSARY)

(अध्याय क्रमसे अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दो के हिन्दी रूपान्तर उनके सामने दिये है)

अध्याय १

अंग्रेज़ी		हिन्दी
Shelter	...	शरणगृह
Trenches	...	खाइयाँ
Civilian	...	नगरवासी
Splinters	...	बमोके उडनेवाले टुकड़े
Falling debris	...	मलवापात
Blast	...	उत्स्फोट
Shock	...	आक्षोभ
Nuclear attack	...	नाभिकीय आक्रमण
Radio-active	...	विघटनाभिक
Global scale	...	विश्व–स्तर
War hysteria	...	युद्ध प्रमोदोत्पत्ति
Suction	...	आचूषण
Concussion	...	सगहन
Basement	...	तलधरीय
Eventuality	...	दुर्घटना
High explosive bomb	. .	उग्र विस्फोटक बम
Regulation	...	विनिमय
Dugouts	...	विशिष्ट खाइया, पातालगृह
Nuclear Arms	...	नाभिकीय आयुध
Disarmament Conference	...	निरस्त्रीकरण सम्मेलन
Abeyance	...	आस्थगन
Onslaught	...	प्रचण्ड अभिपात
Atomic Energy Commission	...	पारमाणविक ऊर्जा आयोग
Radio-active attack	...	रेडियो सक्रिय आक्रमण
Hydrogen Bomb	...	उदजन् बम
Atom Bomb	...	परमाणु बम

Congregation	...	सभा
War zone	...	युद्धक्षेत्र
Headquarter	...	मुख्यालय
Hit	...	प्रहार
Direct hit	...	सीधा प्रहार
Prohibitive	...	प्रतिषेधात्मक
Subsoil	...	अधस्तलीय
Police	...	आरक्षी
Telephone	...	दूरभाष
Reinforced	...	पुनर्दृढीकृत
Home Office	...	गृह कार्यालय
Inundated by water	...	जलप्लावित
Diameter	...	व्यास
Airfiltration plant	...	वायु शुद्धीकरण संयन्त्र
Slit trenchs	...	दीर्घ खाइया
Close Zig-Zag Trench	...	बन्द सर्पिल खाई
Typical layout of trenches	...	खाइयोका प्रारूपिक अभियास
Easy entrance	...	सहज प्रवेश द्वार
Easy exit	...	सहज बहिर्गमन
Rectangular	...	आयाताकार
Basement shelters	...	तलघरीय शरणगृह
Ground floor shelters	...	भूमिस्तरीय शरणगृह
Scullery or larder	...	भोजनालय या रसोईघर
Renovating	...	पुनर्नवीकरण
Reinforcing	...	पुनर्दृढ़ीकरण
Reinforced concrete shelters	...	पुनर्दृढीकृत कंकरीट शरणगृह
Surface type	...	सतह पद्धति
Tunnel shelters	...	सुरग शरणगृह
Cinema	...	छविगृह
Ventilation	...	सवातन

Temperature	...	तापमान
Moderate	...	सामान्य
Explode	...	फटना:
Steel Plate	...	इस्पाती चादर
Slab	...	पट्टी
Withstand	...	सहन करना
Crumble	...	विशीर्ण
Radio-active dust	...	रेडिओ सक्रिय धूल
Toilet	...	प्रक्षालन स्थान
Emergency Exit	...	सकटकालीन बहिर्गमन
Illustration	...	निदर्श–चित्र
Ceiling	...	छत
Pillar	...	स्तम्भ
Instruction	...	आदेश
Indiscreet manner	...	अविवेकता पूर्ण
Anti-aircraft gun	...	हवामार तोप
Slit	...	दरारनुमा या सॅकरी
Plank	...	तख्ता
Helmet	...	झिलम टोप
Asset	...	परिसम्पत्ति
Gas mask	...	गैसत्राण
Prefabricated	...	पूर्वविनिर्मित
Square yard	...	वर्ग गज
Nissen Hut	...	गोल झोपडी
Ware house	...	संग्रहागार
Dual Purpose unit	...	द्वि–प्रयोजन इकाई
Incidentally	...	संयोगवश
Destruction	...	विध्वंस
Nuelear Energy	...	नाभिकीय शक्ति
Missiles	...	प्रक्षेपास्त्र
Latch	...	चिटकिनी

Ladder	...	सीढी
Atomic energy	...	पारमाणविक शक्ति
Supposition	...	अनुमान
Feasible	...	संभव
Percolating	...	स्रावित
Traverse	...	तिरछी
Chemical closet	...	रासायनिक छोटा कमरा
Architect	...	शिल्पकार
Detonating slab	...	अधिस्फोटक शिलाफलक
Air raid Precaution	...	हवाई हमले से बचाव
Picks	...	कुदाली
Humidity	...	आर्द्रता
Moisture	...	आर्द्रत्व
Sweeping way	...	व्यापक पद्धति
Cemented	...	सीमेन्ट से जोड़ा हुआ (सटाया हुआ)
Zig' Zag	...	सर्पिल
Advisable	...	परामर्श्य

– अध्याय २ –

अंग्रेजी		हिन्दी
Blackout	...	तमावरण
Lighting	...	प्रकाश
Restriction	...	प्रतिबन्ध
Press Note	...	प्रेस–विज्ञप्ति
Camouflage	...	छद्मावरण
Precaution	...	पूर्वोपाय, बचाव
Illustration	...	निदर्शचित्र
Pedestrians	...	राहगीर
Head lamp	...	बड़ी बत्ती
Swerve	...	विपथगमन, एकाएक मुड़ना
Collision	...	भिड़न्त
Skylights	...	रोशनदान, झरोखा
Dark blinds	...	गहरे रग वाले प्रकाशावरोधक
Opacity	...	अपारदर्शिता, धुंधलापन
Sample	...	नमूना
Do	...	कर्तव्य, कीजिए
Don'ts	...	निषेध, मत कीजिए, अकरणीय
Traffic light	...	यातायात बत्ती
Corrugated	...	नालीदार
Plywood	...	लकड़ी के अनेक पतले तहों को चिपका कर बना हुआ पटरा
Exposure of Light	...	प्रकाशोद्घाटन
Tarpaulines	...	तालपतरी, तिरपाल
Practicable	...	व्यवहार्य
Complete darkening	...	पूर्ण तिमिरान्धता
Monumental Public Property	...	लोक–स्मारकीय संपत्ति

– अध्याय ३ –

अंग्रेज़ी		हिन्दी
Wardens Service	...	सरक्षक सेवा
Air Attack	...	हवाई हमला
Rescue party	...	सुरक्षा दल
Modification	...	संशोधन
Perfect collaboration	..	पूर्ण सहयोग
Voluntary organisation	...	स्वैच्छिक संगठन
Armlet	...	बाहु–बंध
Steel Helmets	...	लोह शिरस्त्राण
Civilian Duty Respirator	...	जनतासेवी–श्वास–यन्त्र
Anti gas curtain	...	गैस प्रतिरोधक पटल
Impediment	...	बाधा
Narrow street	...	संकुचित सड़क
Predetermined	...	पूर्व निर्धारित
Meeting place	...	मिलन स्थल
Procedure	...	कार्यक्रम, काम करने की विधि
Report centre	...	सूचना–केन्द्र
Incendiary Bomb	...	अग्निबम
Priority	...	प्राथमिकता
Fire patrol	...	अग्निसे सबन्धित गश्त करने वाला जत्था
Raiders Passed	...	हवाई हमलावर वापिस चले गये
Reconnaissance	...	शत्रु के देश की पूर्व परिक्षा करना
Equipment	...	सामान
First aid post	...	प्राथमिक उपचार केन्द्र
Diagram	...	रेखा चित्र
Rescue and demolition	...	बचाव और विध्वस
Utility services	...	उपयोगी सेवाएं
Air raid warden	...	हवाई हमले का संरक्षक
Card of appointment	...	नियुक्ति कार्ड

Code words	...	कूट–शब्द
Report form	...	सूचना आकृति
Nuclear warfare	...	आणविक युद्ध
Chaos	...	अव्यवस्था
Rudimentary knowledge		प्रारम्भिक ज्ञान
Wardens post	...	सरक्षक चौकी
Skeleton staff	...	सक्षिप्त अधिकारी वर्ग
Convulsion	...	सक्षोभ, विप्लव
Augmented	...	आवर्द्धित
Missile		प्रक्षेपास्त्र
International conference	.	आतरराष्ट्रीय सम्मेलन
Emergency	...	आपद्काल
Effective air umbrella	. .	प्रभावकारी हवाई छतरी
Ultimately	...	अन्त मे
Devastating effect		उध्वसक प्रभाव

– अध्याय ४ –

अंग्रेज़ी		हिन्दी
Ambulence Service	...	रोगिवाहन सेवा
Nucleus	...	बीज केन्द्र संबंधी
Civil defence work	...	नागरिक प्रतिरक्षा कार्य
Air Raid Precaution	...	हवाई हमले से बचाव
Gas kits	...	गैसके थैले
Hose pipe	..	किरमिचकी नली
Amenities	..	सुविधाए
Topography	...	भौगोलिक स्थिति
Personnel	...	कार्यकर्ता लोगों की मंडली
First Aid	...	प्राथमिक सहायता
Staff card	...	अधिकारी वर्ग पत्रक
Civil war	...	गृह–युद्ध
Sanitary corps	...	आरोग्य रक्षक–दल
Rescue and demolition	...	बचाव दल और उच्छेद–काय
Pamphlet	...	प्रचार–पत्र
Willing	...	इच्छुक, उत्सुक
Ambulance Transport	...	रोगिवाहन प्रवहण
Ambulance attendant	...	रोगिवाहक, रोगिवाहन सेवक
Driving Wheel	...	मूल संचालक
Catastrophe	. .	दुर्घटना
Blitz	...	आकस्मिक आक्रमण, प्रबल आक्रमण
First aid post	...	प्रथमोपचार चौकी
Contaminated	...	दूषित
Capitulution	...	समर्पण
Vigilance	...	जागरूकता, चौकसी
Fracture	...	अस्थि भग
Moistened	...	गीला किया हूआ

Haemorrhage	...	शरीर की किसी धमनी मे से वेग का रूधिर स्राव
Punctilious	...	सूक्ष्म नियम निष्ट
Cerebral irritation	...	मस्तिष्कीय उत्तेजना
Reactionary	...	प्रतिक्रियात्मक
Bandage	...	पट्टी
Suffocation	...	घुटन
Jerky	...	झकोरनेवाला
Sympathetic	...	सहानुभूतिशील, उदार
Service respirator	...	युद्ध मे सेवा करने वालो का श्वास यन्त्र
Volunteer	...	स्वयंसेवक
Mobilisation	...	सैन्य संचालन
Purview	...	विषय, विस्तार, नियम का अंग
Problematical	...	समस्यामूलक
Satchel	...	थैला
Triangular Bandages	...	त्रिकोणात्मक पट्टिया
Exigencies	...	अत्यावश्यकता, विपत्तिकाल, संकट
Nuclear warfare	...	नाभिकीय युद्धप्रणाली
Police	...	आरक्षी
Report	...	सूचना, विवरण
Attitude	...	दृष्टिकोण
Splinters	...	कटे छोटे टुकडे, खमाचे
Tourniquets	...	रक्त–स्त्राव बन्ध
Exposure	...	उद्‌घाटन
Augment	...	आवार्द्धन
Hysteria	...	(गर्भिणी स्त्री का) वातोन्माद, मिर्गी
Pad	...	पुलिदा

अंग्रेज़ी		हिन्दी
Missiles	...	प्रक्षेपास्त्र
Atom bomb	...	परमाणुबम
Hydrozen bomb	..	उद्‌जन बम
Incendiary bomb	...	अग्निबम
Explosive		विस्फोटक , उत्स्फोटी
Cylinder	...	(धातुका) वेलन
Piercing	...	वेधक, भेदनेवाला
Cordon	...	घेरा, हदबन्दी
Localising	...	स्थानीय बनाना
Prey	...	शिकार
Onslaught	...	भयंकर आक्रमण
Technique	...	तकनीक
Horror	...	सत्रास, अतिघृणा
Annihilation	...	समुच्छेदन, सर्वनाश
Sleek	...	चिकना, चमकीला
Transcribed	...	लिप्यंतरित
Rolled	...	वेल्लित
Million	...	दशलक्ष
Nuclear	...	नाभिकीय
Wiped	...	मार्जित, आघात करके अंत किया
Tremendously	...	भीमाकार, दारुण भय अथवा चमत्कार उत्पन्न करनेवाला
Peril	...	जोखिम, विपत्ति
Innovation	...	नवीन पद्धति
Cyclic	...	चाक्रिक, चक्रीय, चक्रवत् होनेवाला
Tangible	...	स्पर्शनीय, स्पर्श्य द्वारा अनुभूत
Lethal	...	घातक, सांघातिक
Hazards	...	साहसिक कार्य
Radiation	...	विकिरण, केन्द्र से निकलकर प्रस्तार

Strategy	...	रण–नीति
Revastating	. .	उद्ध्वस्तकरना
Brigades		मिलीट्री युनिट, सैनाकी टुकड़ी
Remp	...	एकत्र करना
Circuits	. .	परिधि, आवर्तचक्र
Predominant	.	सर्वप्रमुख, प्रभविष्णु
Prohibitions	...	प्रतिषोधात्मक
Crater	...	ज्वालामुख
Drastically	..	उचण्ड, सतेज
Agents	...	अभिकर्ता
Grenades	...	हथगोला
Infantry	...	पदाति, पैदल सेना
Conflagration	...	प्रचन्ड अग्नि
Publicised	...	पत्रकारिता की
Burns	...	दहन होना
Blisters	...	फफोले
Explosions	...	विध्वस, विस्फोट
Testing Programmes	...	परीक्षात्मक आयोजनायें
Atomic Energy Commission	...	परमाणु शक्ति आयोग
Diameter	. .	ब्यास
Fire ball	...	अग्निकदुक
Initial	...	प्रारम्भिक
Thermal Radiation	...	तापीयदीप्ति–प्रसारण
Blast	...	विस्फोट
Nuclear Radiation	...	नाभिकीय विकिरण
casualty Producers	...	आकस्मिक दुर्घटनाके जनक
Organism	...	शरीरी रचना
Radioactive Contamination	...	रेडियोधर्मी विदूषण
Contaminated	.	विदूषित
Decades	.	दशको, दश वर्षके काल

अंग्रेज़ी		हिन्दी
Incendiary bomb	...	अग्निबम, अग्निदाहक बम
Fire Precaution	...	अग्निसे सावधानी, अग्निसे बचाव अथवा अग्नि से बचाव हेतु पूर्वोपाय
Nuclear Energy	. .	नाभिकीय ऊर्जा
Nuclear weapons		नाभिकीय आयुध
Illustration	..	निदर्श चित्र, निदर्शन पुस्तक का चित्र, उदाहरण
Combustible	.	दहनीय
Atomic reactor	.	परमाणविक रिअेक्टर (भट्टी)
Nuclear Power	.	नाभिकीय शक्ति
World disarmament Conference	. .	विश्व निरस्त्रीकरण सम्मेलन
Conflagration	..	प्रचण्ड ज्वाला
Explosive	...	विस्फोटक
Spark	...	चिगारी
Ignition	...	उत्ताप, ज्वलन
Impact	. .	टक्कर, कसकर दबाना
Ignitor	...	प्रज्वालक यन्त्र
Cylinder	. .	बेलन के आकार का पदार्थ
Planks	...	लकड़ीके पटरे
Celing	...	छत (पाटन)
Plaster	. .	पलस्तर, घाव पर लगाने की पट्टी
Magnesium	...	चुम्बक, एक प्रकार का श्वेत धातु जो जलने पर तीव्र प्रकाश देता है।
Chemical Extinguishers	...	रासायनिक शमनक
Nozzle of the Tube	...	मुहनाल, टोटी

Methodically	...	उचित ढंगसे
Maintenance	...	व्यवस्था, भरण पोषण, जीविका
Shield	...	ढाल
Forbearace	...	सहिष्णुता, आत्मसयम
Tact	...	चतुरता
Fortitude	...	पौरुष, सहन शीलता, धैर्य
Crawl	.	सरकना
Wrapping	. .	लपेटना
Unconsious person	.	मूर्च्छित व्यक्ति
Telephonic		दूरभाषिक
Inception	.	श्रीगणेश, प्रारम्भ
Baptized	...	नाम–सस्कार, जाति सस्कार
Fire Advisory Committee		अग्नि (दमकल) सलाहकार समिति
Inflammable	. .	ज्वालाग्राही
Attic	. .	घरका सबसे उपर का कमरा, अटारी
Beam	. .	लकडी की धरन
Fire resisting	.	अग्नि निरोधक
Asphalt	. .	तारकोल और रेतका मिश्रण, डामर
Coil	...	कोयल, गेहूरी मुडे हुए तार के गोल वडल जिनमे बिजली दौडती है
Smother	..	दबा देना, वायुमार्ग रोकना, गला घोटना
Ignition Point	...	दहनीय बिन्दु, अथवा दहनीय स्थान
Explosive Charge	...	विस्फोटके आघात, विस्फोटक आक्रमण
Non—explosive	...	अविस्फोटक
Fire Petrol	...	अग्नि गश्त, दमकल गश्त, फायर पतरोल
Spade	...	कुदाली, कुदाल, फावडा

अंग्रेज़ी		हिन्दी
High Explosive Bombs	...	भयकर विस्फोटक बम
Nuclear Weapons	...	नाभिकीय आयुध
Annihilation	.	विनाश
Surmise	...	आशंका प्रकट करना, अनुमान करना
Lopsided	. .	एकागी, एक पार्श्व भाग दूसरे से भारी अथवा बडा
Radio-active ash	..	रेडियो धर्मी राख, रेडियो-सक्रिय राख
Deprecated	...	अवमानित, उपेक्षित, विरोध करना, निन्दा करना
Vertically	...	लम्बात्मक रूपमे
Absolutely prefabricated	...	पूर्णतः संविरचित, पूरी तरह से पहिले निर्माण किये हुए
Allied nations	...	मित्र राष्ट्र
Precaution	...	एहतियात, पूर्वोपाय
Nuclear Energy	...	नाभिकीय ऊर्जा
Nuclear Warfare	...	नाभिकीय युद्ध
Explosive	...	विस्फोटक, धडाके से फटनेवाला
Combustion	...	ज्वलन
Gunpowder	...	बारूद
Guncotton	...	शतघ्नीतूल, तीव्र दाह्य तूलिका
Violence	...	प्रचण्डता, हिसात्मकता
Nature of an explosion	...	विस्फोटका स्वरूप
Dramatic expansion	...	नाटकीय प्रसरण, नाटकीय विस्तार
Substances	...	सारतत्व
Pressure	.	दाब, दबाव
Magnitude of explosions	. .	विस्फोटोकी विस्तुति
Ignites	...	दहता है

Missile	...	प्रक्षेपास्त्र
Blowing out	.	शान्त करना
Blast	. .	स्फोट
Suction	...	आचूषण
Shock	. .	आकस्मिक सक्षोभ
Crater	...	ज्वालामुखी पर्वत का मुख
Armour Piercing	...	लोहवर्म बेधक, युद्धपोतो की रक्षा करनेवाली बज्रलोह (पक्के लोह) की चादरो को बेधने वाला
Delayed action Bomb	. .	विलम्बमे फटनेवाले बम
Inconceivable	..	असभव, जिसकी कल्पना न की जा सके
Velocity	...	प्रवेग, गति
Rubber plugs	...	रबरके काग, रबर स्तंभनी
Deflected	...	व्याकुचित, उचित मार्ग से विचलित किया गया हो या हो गया हो, नीचे झुक गया हो
Detonation	...	अचानक धडाके के साथ विस्फोट
Ear Drums	...	कान के भीतर का परदा
Cover	...	आच्छादन
Resistance	...	प्रतिरोधात्मक

अंग्रेज़ी		हिन्दी
Chemical	...	रासायनिक
Biological	...	कीटाणु सम्बन्धी
Radiological	...	विकिरण विज्ञान सम्बन्धी
Warfare	...	युद्ध, युद्ध कार्य
Fosgene	...	फॉसजीन, भासज
Clorine	...	क्लोरिन (सास अवरोध करने-वाली भारी दुर्गन्धियुक्त गैस)
Mustard	...	मस्टर्ड, सरसो के समान विषाक्त वायु
Lead	...	सीसा
Protocal	...	सधि, राष्ट्रोके समन्त्रण का प्रथम अभिमत पत्र
Anti aircraft guns	...	हवामार तोपे
Pools	...	कुण्डो
Precautions	...	पूर्वोपाय, बचाव
Contaminated	...	विदूषित
Magnetic Mine	...	चुम्बकीय सुरग
Agents	...	अभिकर्ताओ
Aggression	. .	अग्रघर्षण, आक्रमण, बिना उत्तेजनाके किसी व्यक्ति अथवा राज्यपर आक्रमण
Captive labour	...	युद्ध–बन्दी–श्रम
Nuclear Munitions	...	नाभिकीय युद्ध सामग्री
Maim	..	विकलाग, अगहीन करना
Drain	...	मोरी, पानी ले जानेवाली नाली
Reserves	...	आरक्षण, भविष्य मे उपयोग करने के लिए प्रस्तुत
Manpower	...	जनशक्ति
Potential enemy	..	प्रभावशाली शत्रु
Strangling	...	दमघोटक
Horror	...	कष्टोत्पादक, अत्यन्त भयावह

Persistent	...	आग्रही, जम जाने वाली
Non—persistent	...	अनाग्रही
Intact		आवकल, पूर्ण, अखड
Evaporate	...	वाष्प छोडती है
Lung irritant (Choking) Gases	..	श्वासावरोधक या फेफडोमे क्षोभ पैदा करनेवाली गैसें
Ingredients		उपादानोके रूप, उपकरण
Nose irritant	...	नासाक्षोभक
(Squeezing gases)	.	(निपीडीन गैसे) निचोडनेवाली गैसे
Evaporating type	.	वाष्पन प्रकार (या पद्धति)
deadly chemicals	.	घातक रसायन
dreadful	. .	त्रिभीषिकापूर्ण
Blister gases	...	उत्स्फोटीय गैसे, फफोला डालने-वाली गैसे
garlic	. .	लहसुन
Reddish	..	लाल बैगनी, मूली
Geramiums	...	कषाय मूल, एक प्रकारका पौदा जिसकी पत्तिया लाल और गुलाबी और फूल सफेद होता है।
Evaporating		उद्वाष्पी. बाष्परूप मे परिणित करनेकी दशा
Concentration	...	साद्रता
Nerve gases	..	तत्रिका गैसे
Lethal	. .	घातक
Improved insectisides	.	सशोधित कृमि नाशक पदार्थ
Gas Masks	..	गैस त्राण
Item	. .	मद्द, प्रकरण
General Civilian Respirator	...	(असैनिक) या जनपदीय श्वासयन्त्र, नागरिक श्वास-यंत्र
Civilian duty Respirator	.	जनपदीय कार्यविधि श्वास-यन्त्र, नागरिक असैनिक श्वास-यन्त्र
Civilian Defence	...	असैनिक प्रतिरक्षा

General Service Respriator		सामान्य सेवा श्वास–यन्त्र
Radio–active attack	...	रेडियोधर्मी आक्रमण
Debility	. .	दौर्बल्य
Toxins	...	जीव–विष
Living Organism	...	जीवित अर्गो
Cropagents	...	फसल अभिकर्ताओ, शस्य-अभिकर्ता या तो पेड-पौधो या हृदय–शोध (V[illegible]) पर आक्रमण करनेवाले जीव
Virus	. .	रोगकारक विष
Micro—organism	...	जीव–अणु
Environment	. .	परिस्थिति
Pathogen	...	रोगजनको
Delivery	...	वितरण
Submarines	...	पनडुब्बिया
Flexibility	...	लचीलारूप
Installations	...	सस्थापनो
Saboteurs	...	अतध्वसको
Ranging	. .	क्रमवद्ध करना
Personnel	...	कार्मिको, कार्यकर्ताओ
Toxicological Agents	...	जीव–विष सम्बन्धी, अभिकर्ताओ
Alarm	...	खतरे या सकटकालकी घंटी
Minute Quantities	...	थोड़े भी
Mechanism	...	यत्रसज्जित दल
Visible	. .	सुदृश्य
Signal	...	सकेत
Audible	...	श्रव्य, कर्ण गोचर रूप से
Identity	...	शिनाख्त
Devices	...	साधनोपायो
Microscopic	...	सूक्ष्मदर्शीय
Air borne moisture	...	वायुविहित नमी

Particles	...	कणो
Identifying	...	अभिनिर्धारण, पहिचानकर
Rapid	. .	द्रुत, अतितीव्र
Dosimeter	...	उष्म-विसर्जन–मापी मात्राओको नापनेवाला यत्र
Individual Protection	...	वैयक्तिक सरक्षा
Fluids	...	तरल पदार्थो
Stimulants	...	उत्तेजक पदार्थो
Depressed	...	सविषादित, उदास हुए वे
Bleaching ointment	...	विरजन मलहम, रासायनिक क्रिया मे रग हटानेवाला मलहम
Efficient	...	क्षम
Smarting	...	चकाचौध
Crutch	...	मध्यटेक
Diffusion board	...	विसरण फलक, विस्तृत करनेवाला फलक
Aerosol	...	वायु धुन्ध
Filter	...	निस्यदक
Wall board	...	दीवाल फलक
Filter board	...	निस्यदक फलक
Rectangular	...	आयतकार.
Infant	...	शिशु
Aerosol Filter	...	वायुधुन्ध निस्यदक
Nerve	...	तत्रिका
Symptoms	...	लक्षण

अंग्रेज़ी		हिन्दी
Structural defence	...	इमारतोंकी सुरक्षा, संरचनात्मक प्रतिरक्षा
Defence Headquarter	...	सुरक्षा–मुख्यालय
Angle	...	कोण
Withstand	...	सहन करना
Blast	...	धमाका
Comparatively	...	अपेक्षाकृत
Innumerable	...	अगणित
Basement	...	तलघर
Precaution	...	पूर्व उपाय, पूर्वोपाय, बचाव
Refuge room	...	शरणदायक कमरा
Horizontal	...	आड़ी
Vertical	...	खड़ी
Transparent	...	पारदर्शक
Cellulose	...	सूक्ष्मछिद्रपूर्ण, सूक्ष्म छिद्रो से भरा हुआ
Mosquito net	...	मच्छरदानी
Nuclear Energy	...	नाभिकीय ऊर्जा
Sweeping argument	...	अविवेकपूर्ण तर्क
Radio active attack	...	रेडियो–सक्रिय –आक्रमण
Large Congregation	...	बडे समूह
Conflicting opinion	...	परस्पर विरोधी मत
Exigency	...	आवश्यकता
Improvised material	...	कामचलाऊ सामग्री
Artifical lighting	...	कृत्रिम प्रकाश
Resistance	...	अवरोधक शक्ति
Additional Strength	...	अतिरिक्त मज़बूती
Shovel		फावडे
Flexible	...	लचीला
Device	...	उपाय
Felt	...	नमदा
Airlock	...	वायु–निरोधक
Bleaching powder	...	विरंजन चूर्ण
Intelligentsia	...	बौद्धिक वर्ग, शिक्षित तथा सभ्य लोग

अंग्रेज़ी		हिन्दी
First Aid	...	प्राथमिक उपचार, प्रथमोपचार, प्राथमिक चिकित्सा
Observant	.	सावधानी
Tactfulness	...	चातुर्य
Resourceful	...	साधन सम्पन्न
Dexterous	...	निपुण
Explicit	...	स्पष्ट
Discriminating	...	विभेद करने योग्य
Eightpointed Amubulance Cross	...	अष्टबिन्दूमूलक रोगीवाहन स्वास्तिक चिन्ह
Emblem	...	कुलचिन्ह
Severe haemorrhage	...	गम्भीर रक्तस्राव
Artificial respiration	...	कृत्रिम श्वसनोपाय
Transport	...	यातायात, आवागमन
Wound	...	व्रण, घाव
Burn	...	जलन
Fracture	...	अस्थिभग
Drowning	...	जलमे डूबना,
Shock	...	आघात, आक्षोभ
Civilian helper	...	जनपद सेवी, असैनिक सहायक
Nervous system	...	नाडी मण्डल
Depression	...	उदासीनता
Collapse	...	आपतन, शक्तिहीन होना
Vital function	...	प्राण–स्पन्दन–कार्य
Abdominal injuries	...	उदरीय घावो
Onset	...	अभिसंपात, वेग से बढ़ता हुआ
Indicated	...	सांकेतिक
Bleeding	...	रक्तस्राव
Excitement	...	उत्तेजना
Shockedmen	...	आक्षोभित व्यक्तियो

Plug	...	स्तभिनी, डट्टा लगाकर बंद करना
Dressing	...	मरहम पट्टी
Bandage	...	घाव या चोट पर बाधने की कपड़े की पट्टी
Ribs	...	पसलिया
Muscular pump	...	पैशिक पप, स्नायु सबधी पम्प
Automatic	...	स्वयंचालित
Blood vessels	...	रक्तवाहिनी धमनियां
Internal organ	...	आन्तरिक अग
Arteries	...	धमनियाँ
Veins	...	रक्तवाहिनी शिराएँ
Capillaries	...	सूक्ष्मतम रक्तवाहिनी नाडिया
Scab	...	भरे हुए घाव के उपर की पपडी
Coupled	...	सबधित
Fatal	...	प्राणनाशक मृत्युकारी
Tourniquet	...	रक्त–स्राव बन्ध
Congealed	...	संशीत, जमा हुआ
Copious	...	विपुल, प्रभूत, फैला हुआ
perssure point	...	रक्तचापीय बिन्दु, दावबिन्दु
Grove	...	कुहनी बन्ध
Groin	...	अरुमूल, शरीर का वह भाग जहा पेट से जाघ मिलती है
Braces	...	जुडने और कसनेवाली पट्टी
Cord	...	सूत्र
Pair of braces	...	कमरपट्टी या बधनिका जोड़ा
Loop	...	पाश या फन्दा
Label	...	नामपत्र
Gangrenous	...	शरीर का वह भाग जिसका मांस सड़ गया हो
will have to be amputed	...	काटना ही पड़ेगा
Rolled	...	वेल्लित

Roller bandage	...	बेलन–पट्टी
Pressure	...	दाब
Thigh	...	जाघ
Main Vessel	...	प्रमुख रुधिर–वाहिनी
Palm	..	हथेली
Pad	...	पुलिन्दा
Boxing	...	मुक्केबाजी
Sling	...	गाल–पट्टी
Operation	...	शल्यक्रिया
Fractured	...	भगित
Nostrils	...	नासिकारध्र
sips	.	आचमन, चुमकी
Civilian	..	सिविलियन, जनपदीय
Spreadout	...	बाहर फैली हुई
Folded	...	मोडी हुई
Broad bandage	.	चौडी पट्टी
Narrow bandage	...	तग पट्टी
Reef knot		दोहरी गाठ
Granny Knot	...	ग्रेनी गाठ
Twist		व्यावृत, मरोड़
Braces		बधनिया
Chin	...	ठोडी
Small arm sling	...	छोटी गलपट्टी
Improvised	..	आशुरचित, कामचलाऊ
Large arm sling	...	बडी भुजा गलपट्टी
Roller bandage	...	बेलन पट्टी
Tale	. .	सिरा
Spiral	...	सर्पिल
Reverse	...	विपरीत
Ankle	...	टखना
Muscle action	...	मास पेशीयक्रिया
Knee cap	...	जानफलक, घुटने की चक्की

Tissues	...	जाल, ऊतकों
Surrounding Tissues	...	परिऊतको
Compound	...	मिश्रित
Comminuted Fracture	...	चूर्णिकृत अस्थिभंग
Complicated	...	जटिल
Dislocation	. .	स्थान भ्रश, मोच, अस्थिभंश
Splints	...	खपच्ची, कमाची, चपती
Greenstick fracture	...	छोटे बच्चोके हाथकी हड्डीका मुडना
Bonytissuses	...	अस्थि ऊतको
Impacted	...	सघट्टित
Medical science	..	डाक्टरी विज्ञान
The closed fracture	...	सवृत अस्थिभग
The Open fracture	. .	खुला अस्थिभग
Deformity	.	(अगोंकी) विकृति
Swelling	...	सूजन
Fore arm		हस्ताग्र
Collar bone	.	ग्रीवास्थि
Patella	.	जानफलक
Lower Jaw	. .	निचला जवडा
Sprain	...	मोच
Joints	...	ग्रन्थियो
Blast injuries	...	विस्फोट जन्य आघात
Burns	...	जलन, छाला
Incised wounds	...	कटा हुआ घाव
Instruments	...	औज़ार
Lacerated fracture	...	विदीर्णीकृत घाव
Contused wounds	...	मर्दित घाव
Bruised	...	छिल्लित घाव, खरोच
Punctured wounds	...	विद्धित या छिद्रित घाव
Spike		तीक्ष्णशकु
Bayonet	...	किरिच, सगीन

Shell	...	खोल
Gagged	...	तिरछे–बाके
White cells	...	श्वेताणु
Antiseptic	..	रोगाणुरोधक
Tringular bandage folded into a square	... . .	वर्गाकार मोड़ित, त्रिकोणात्मक पट्टी
Belly	.	पेट
Surgical	...	शल्य चिकित्सा
Blast injury	. .	विस्फोटजन्य आघात
Submarines	.	(जलगर्भमे) पनडुब्बियो
Contents	. .	अन्तर्वस्तुएं
Torpedo	. .	पोत-ध्वसक समुद्र के भीतर चलने वाला बेलन के आकार का यत्र
Impact	. .	आघात
Radiological	...	रेडियोधर्मी विकीरणी विज्ञान सबधी
Biochemical	...	जीव रासायनिक
Velocity		गति
High Explosive bombs	...	भयकर या उग्रविस्फोटक बम
Suction	. .	आचूषण
Blast	. .	तूफानी झोका
Brain		मस्तिष्क
Bony Box		अस्थिवत मजूषा, खोपड़ी
Voluntary movement		ऐच्छिक गति
Burns	.	छाले
Reddening the skin	.	चर्मको लाल करना
Blisters	...	फफोले
Eye shield	.	नेत्ररक्षक , नेत्र–ढाल–पलक
Gauntlets	.	हस्तत्राण, लोहेके दस्ताने
Tropics	...	उष्णावलय, अयन वृत मे स्थित प्रदेश

Boiler suit	...	'वाष्पित सूट'
preparation	...	संपाक
Tannic Acid Jellies	...	टैनिक–अम्ल–अवलेहो
Moistened	...	भिगोई हुई
Suffocation	...	दमघुटी
Asphyxia	. .	श्वासावरोध, दमघुटना, मुर्छा
Artificial Respiration	...	कृत्रिम श्वसन
Unoxygenated Blood	...	अ–आक्सीजनीकृत रक्त, रक्त जो प्राणवायु द्वारा शुद्ध न हुआ हो, अशुद्ध
Space	...	शून्य स्थान, अन्तराल
Oxygen	...	प्राणवायु
Fumes	...	धुएँवाले स्थानपर सास लेना
Electric shock	...	विद्युत आक्षोभ, विजली से उत्पन्न हुआ वा आक्षोभ
Smothering	...	वायुमार्ग का रुक जाना
Mucous	...	श्लेष्मामल
Induce Inspiration	...	अभिप्रेरित प्रश्वास
Swing	...	झुलाते हुए घुमाना
Jaw	...	जबड़ा
Index Fingers	...	तर्जनी (अगुली)
Clamp	...	दबाना, कसकर पकडना
Nostrils	...	नथुनो
Air way	...	वायुमार्ग, नासारध्र
Anaesthesia	...	मज्ञाहीनता, रोग या औपधि के कारण चेतना सून्यता
Mask	...	मुखच्छद
Resuscitation	...	निरसन, पुनर्जीवन
Substances	...	पदार्थो, द्रव्यो
Gaseous	...	गैसके रूपमे
Tear gases	...	अश्रुगैसे
Choking gases	...	श्वास–रोधन गैसे

Grenades	...	गोले, छोटे से बम जो हाथ से फेके जाते है
Irritant	...	सतापक
Blister gases	..	व्रणकराक गैसे, छाला डालने वाली गैसे
Persistant	...	स्थायी
Nitrus fumes	...	नाइट्स धूम, नत्र वायु सम्बन्धी तीव्र गन्ध
Paste	...	लेप
Sunstroke	...	आतपाघात, घाम मे आघात होना
Exposure	. .	उद्भासन, उद्घाटन
Frost bite	...	तुषाराघात या तुषार–दशन
Purple	...	जामुनी
Constricting clothes	...	वस्त्र सकुचन
Physicial Exhaustion	...	शारीरिक थकावट
Brisk rubbing	. .	तेज मालिश
Expedient	...	सुविधाजनक
Transport	...	परिवहन
Sterilised vaseline	...	निष्क्रिटित वैसलीन, वैसलीन जो पूतिनाशक पदार्थ से धोई हुई हो
Soda bicorbonate	...	सोडा-कार्बन-क्षार-घोल, Soda (खार) ओर Bicorbonate (दक्षारीय क्षारातु)
Solutions	. .	घोलो
Gas-contamination	...	गैस सदूषण, गैस से भ्रष्ट होना
Concussion	...	सघटन, तीव्र झटका
Compression	...	दाब, कुचित अवस्था
Apoplexy	.	पक्षाघात, मिरगी का रोग
Epilepsy	...	अपस्मार, मिरगी
Inter group	...	अन्तरवर्ग
Inter team	...	अन्तरदल
Inter school	. .	अन्तर–स्कूल
Grease	...	आवसा, पशु की वसा (चर्बी)
Coagulum	...	जम जाना, और सूख जाना
Spine	...	मेरुदण्ड
Venomous	...	विषाक्त, जहरीला
Caustic	...	क्षारक
Powdered Permaganate	...	चूर्णित परमेगनेट, चूर्णित किया हुआ लाल पावडर

अंग्रेज़ी		हिन्दी
Evacuation	...	निष्क्रमण
Inference	...	आशय
Financial implications	...	वित्तीय व्यय
Dispersion	...	विखण्डन या विस्थापन
Records	...	अभिलेख
Stockpiling	...	संग्रहण
Ruthless	...	नृशंस, निर्दयी
Resistance	...	अवरोधक, प्रतिकार
Air Bombardment	...	हवाई बममारी
Civil defence obligations	...	नागरिक प्रतिरक्षा उत्तरदायित्व
Preventive	...	प्रतिबचाव
Relief	...	दुःखपरिहारक
Fire fighting	...	अग्निशमन
Rescue	...	उद्धार
Welfare Services	...	कल्याण सेवाऐं
NATO	...	उत्तर अटलाटिक संधि संगठन
Refugee	...	शरणार्थी
Scientific working party	...	वैज्ञानिक कार्यरत दल
Thermo-Nuclear warfare	...	तापमानक नाभिकीय युद्ध
Eventuality	...	आकस्मिक आवश्यकता
Central zone	...	केन्द्रीय क्षेत्र
Industrial Installation	...	औद्योगिक प्रतिष्ठान
Mock practices	...	कृत्रिम अभ्यास
Urban Evacuation	...	शहरी निष्क्रमण
Boroughs	...	संसद क्षेत्रों
Auxiliary corps	...	सहायक सेना
Transport	...	परिवहन

Communication	...	सचार साधन
Happazard affair	...	बिना विचारा हुआ मामला
Panic	...	आतक
Invalid	...	अशक्त
Maternity	...	प्रसूति
evacuees	...	निष्त्रमणार्थी
Community project	...	सामूहिक योजना
Planners in chief	...	प्रमुख आयोजक
Dramatic exodus	...	नाटकीय बहिर्गमन
Due consideration	...	समुचित विचार
Unorganised Exodus	...	असगठित बहिर्गमन
Pre-fabricated	...	अग्रगठित अशो को पहिले निर्माण किया गया
Provision	...	आवश्यक सामग्री
Pre-determined	...	पूर्वनिश्चित
Exorbitant price	...	मनमाना मूल्य
Radio-active dust	...	रेडियो सक्रिय धूलि

अंग्रेज़ी		हिन्दी
Types of bombers	...	बमवर्षकोके प्रकार
Hitting the target	..	लक्ष्यको बेधना
Damage from an aerial attack	...	हवाई आक्रमणसे क्षति
Technique	...	तकनीक, किसी कलाका निपुण व्यवहार
Memorandum	...	ज्ञापन
High level	...	उच्चस्तर
Low level	..	निम्नस्तर
Barrage baloon	. .	गुब्बारोका जाल या बाध
Visibility	...	सुदृश्यता
Dive bombing	...	गोतामार बमबारी
Shallow	..	उथली
Anti aircraft fire	...	विमान विरोधी गोलो, हवामार गोलो
Shallow dive bombing	...	गोतामार बमबारी
Bombing sight	...	बम–दर्शा
Fusings	...	पलीतो, स्फिोटक पदार्थसे भरी हुई नली द्वारा विध्वस का कार्य करना
Bombing command	...	बमवर्षक कमान
Long range rockets	. .	दूरमारक राकेटो
Radar system	...	रेडार–पद्धति
Search light	...	खोजबत्ती
Anti aircraft guns	...	हवामार तोपे
fall out	...	वर्षा, अभिसपात
Standard caliber	...	मानक व्यास, सामान्य व्यासवाला
Wind breaks	...	वातरोक

Light, medium and heavy	...	हलके, मध्यम और भारी
Flying control officer	...	उड्डयन नियन्त्रण अधिकारी
Flight maintenance	...	उड़ानकी व्यवस्था
Ground servising	...	भूमिपर देखभाल–संभाल
Bombing up team	...	बमवर्षक दल
Bombing tractor driver	...	बमवर्षकका ट्रैक्टर चालक
Rockets missiles	...	प्रक्षेपास्त्र
Annihilation	...	समुच्छेदन, प्रलय, सर्वनाश
Squadron	...	"स्क्वाड्रन", बारह सैनिक वायुयानों का दल
Air gunner-bomb aimer	...	विमान तोपची, बमका निशाना लगानेवाला
Blitz	...	ततिड़ गति, आकस्मित आक्रमण
Rockets	...	प्रक्षेपणास्त्रों, आधुनिक युद्ध के अग्निबाण
Legendry giants	...	निजधरी भीमकाय
Radiological	...	विकिरण विज्ञान सम्बन्धी
Chemical warfare	...	रासायनिक युद्ध प्रणाली
Nuclear Fire power	...	नाभिकीय अग्निशक्ति, नाभिकीय मारशक्ति
Fronts	...	मोर्चे
Pre-Atomic	...	पूर्व आणविक
Diameter	...	व्यास
Survial	...	अतिजीवता
Agents of Destruction	...	विनाशके अभिकर्ताओं

अध्याय १३

अंग्रेजी		हिन्दी
Barrage baloon	...	गुब्बारों का जाल
Anti air craft guns	...	हवामार तोपें
Fighters	...	लड़ाकू वायुयान
Search light	...	खोजबत्ती
Camouflage	...	छद्मावरण, मायावरण (संज्ञा) छद्मावरण करना शत्रूको छलने के लिये सैनिक सामुग्री का रुप बदलना या छिपाना (क्रिया)
Radar	...	रेडार, आकाशवाणी द्वारा अधिकरण
Waning	...	क्षय, क्षीयमान
Civil defence	...	नागरिक प्रतिरक्षा
Propellers	...	वायुयान के पंखे, नोदक
Auxiliary air force	...	सहायक वायुसेना
Committee of Imperial defence	...	साम्राज्य–प्रतिरक्षा–समिति
Key words	...	संकेत शब्द
Commander in chief	...	सेना का प्रमुख, कमाण्डर–इन चीफ
Propellers control	...	नोदक नियन्त्रण
Propellers Thurst	...	पंखानोद
Propellers shafts	...	नोदक धुरी दंड, यंत्र का लंबा धुरा
Flank	...	पार्श्व, बगली, सैनाका पार्श्व भाग
Radar stations	...	रेडार केन्द्र
Heavy Guns	...	भारी तोपें
Concentrations	...	संकेन्द्रण
Bulwark of Defence	...	प्रतिरक्षाका अडवाल अथवा साधन

Bomber formation	...	बमवर्षकोंके निर्माण
Submarine	...	पनडुब्बी
Ammunition	...	युद्ध–सामग्री, शस्त्रागार
Bombard	...	प्रस्फोटास्त्र वर्षण करना, बम गोले से आक्रमण करना
Glittering	...	प्रभासमान
Installation	...	अधिष्ठायन, संस्थापन, प्रतिष्ठामन
Transmitted	...	संप्रेषित, स्थानान्तरित
Recepient	...	प्रापक, पानेवाला
Whooping	...	कुक्कर, युद्ध घोषणा
Wailing	...	क्रन्दन, विलाप करना
Menace	...	अभिशाप, विभीषिका
Sinister	...	अमंगल, कुटिल, दुष्ट
Elapse	...	बीत जाना
Observer	...	निरीक्षक
Widespread	...	सुविस्तृत, फैला हुआ
Imminent	...	निकटवर्ती
Periodically	...	नियतकालिक
Bogus	...	मिथ्या
Parachutist	...	हवाई छतरीसे उतरनेवाली पैदल सेना
Air borne	...	वायुवाहित
Navigation	...	नौकायन, नौ–विद्या
Accelerated	...	गतिवर्द्धित
Launching	...	प्रहार करना, फेंकना, उतारना, डालना
Rotate	...	परिभ्रमण करना, केन्द्र पर घुमाना, चक्कर खाना
Echo	...	प्रतिध्वनि
Bats	...	गादुर, चमगादड
Electromagnetic	...	विद्युत चुम्भिक

Frequency	...	आवृत्ति
Apace	..	वेगपूर्वक
Home Front	...	गृहमोर्चा
Time fuse	...	मियादी पलीता
Key points	...	मूल स्थल
Garrison	...	दुर्गरक्षक
Set backs	...	रुकावटे
Intact	...	अक्षत
Adjustment	...	व्यवस्था, सामंजस्य
Uinversal Air superemacy	...	वैश्विक हवाई सर्वोच्चता, सर्वोपरिता
Candle power	...	कैण्डल–शक्ति
Submarine construction	...	पनडुब्बी निर्माण
Air gunner aimer	...	हवाई तोपची, निशाना लगानेवाला
White message	...	श्वेत सन्देश
Subsonics	...	अवस्वनिक
Supersonic	...	अतिस्वन या परध्वनिक
Radar screen	...	रेडार रक्षावरण
Pulse	...	स्पंदन, नाडी, स्फुरण

अंग्रेजी		हिन्दी
Heavy parties		भारी दलों
Light parties	.	छोटे या हलके दल
Recommened	.	अनुग्रह करना, सलाह देना
Levers	...	उत्तोलन दण्ड रभा,
Crowbars		मब्बलों
Ropes	.	रस्सियों
Jacks	...	डडे, लकडी की फन्नी
Ratchet Jacks	.	किरकिरा, लोहा छेदनेवाला किरकिरा
Accelerated	..	गतिवर्द्धित
Techical	...	तकनीकी
Maxims		प्रथ्योक्तियाँ
Issued	.	प्रचालित · प्रदत्त, बाटा
Circular	..	परिपत्र
Senior Commissioner	.	प्रवर आयुक्त
Appendix		परिशिष्ट
Items	.	मदों
Precaution	...	पूर्वोपाय, बचाव
Iron Shod Levers		लोहेके रभे
Lifting Tackle		उठानेवाले रस्से–कप्पियाँ
Sheanes	..	चरखिया . थिरिया
Snatch block		खुल–कप्पी
Portable acetylene cutting outfit		ऐसीटिलिन कर्तनके सुवाह्य ओजार
Small acetylene flares	. .	लघु–ऐसीटिलिन प्रकाश
Large size searchlight	.	दीर्घाकार खोजबत्ती
Two handled cross cut saws	.	दो मूठोवाली तिरछीकाट आरी
Manila Lashing lines	. .	सनी रस्से
Manila Rope	..	सनी रस्सा
Spades	...	फावडे

Crowbars	...	रम्भे
Shovels	...	कुदाले
Sledge hammers	...	हथोड़े–हथोडी
Hand saws	..	हस्त आरी
Wheel barrows	.	इकपहिया ठेले
Great Deal of Dexterity	...	काफी परिमाणमे निपुणता
Hurricane Lamp	...	तूफानी लालटेन
Blocks for fulcrums	..	उत्तोलकों और आलम्बोके लिए
for Levers	...	कप्पियाँ
Adjustment	. .	समंजन, व्यवस्था
Foreman	. .	ज्येष्ठक
Queer Jobs	...	विलक्षण कार्य
Contaminated	...	विदूषित
Co-ordination	.	सहयोगिता
Demolition	. .	विध्वस
Clearance	...	सफाई
Debries	.	मलबे
Risk	...	जोखिम
Factors	. .	उपादानो
Reserve Personnel	..	बचाव कर्मचारी
Engineers	.	अभियन्ताओ
Contractors	...	सविदाकारो
Dismantled	.	उध्वस्त
Gas Decontamination Squad	...	गैस निवारण–दल
Glacier	.	गलेश्यर, हिम की चट्टान जो सरक कर धीरे-धीरे नीचे को उतरती है
Ridges	. .	मेडो
Avalanches	...	हिम घाव, टूटी हुई हिम की चट्टान जो पर्वत पर से वेग से नीचे सरकती है

Hazard	...	खतरा : संकट
Crevasses	..	बर्फानी दरारे
Snow crevasses	...	हिमविवर, हिमप्रवाह पर की दरारे
Skis	...	बर्फ–सूट या स्किस
Survival	..	अतिजीविता
Presence of mind		प्रत्युत्पन्नमतित्व
Trend		उपनति, प्रवृत्ति
Explosives		बारूद, विस्फोटक द्रव्यो
Public works department		लोक–निर्माण–विभाग
Transport	.	यातायात
Assigned	.	अभिहस्तांकित
Casualty		हताहत, दुर्घटनाग्रस्त
Precarious	...	सदिग्ध, आपत्तिपूर्ण
Engineering	...	अभियांत्रिकी
Periodically	. .	समय–समय पर
Indiscriminately		अविवेकपूर्ण ढगसे
Ribs	.	पसलिया

अंग्रेजी		हिन्दी
Industrial civil defence	...	औद्योगिक नागरिक प्रतिरक्षा
Coordination	...	समन्वय, समीकरण
Future effort	. .	भावी प्रयत्न
Calamity	. .	आपद
Aerial Bombardement	.	हवाई बमवर्षा
High explosive Bomb	.	उग्र विस्फोटक बम
Extinguishing fire	. .	अग्नि–शमन
Dislocation	.	स्थान–भ्रंश, उचित स्थान से हटने का कार्य
Falling debris	.	मलबा पात
Preventive	...	निवारक, प्रतिबन्धक
Duplication	.	प्रतिलिपिकरण
Reconnaissance	.	प्रारम्भिक सर्वेक्षण
Fire-Hose	. .	अग्नि बुझाने वाली जल ले जाने की रबड़ की नाली
Fallout cloud	...	नाभिकीय आपानजन्य बादल
Standardisation	...	स्तरीकरण
Film-strip	.	फिल्म–पट्टी
Transportation	. .	परिवहन
Home front survial	. .	गृहमोर्चेकी अतिजीविता
Backbone	. .	मेरुदण्ड
Active prosecution	...	सक्रिय अभियोजक
Self help	...	स्वावलम्बन
Combat zone	...	युद्ध कटिबन्ध
Global warfare	...	विश्वयुद्ध
Extensively	...	अत्यधिक
Informal	...	अनौपचारिक
Relevant	...	प्रासगिक
Device	...	उपाय
Memorable	...	स्मरणीय

Lighting progress	.	तीव्र प्रगति
Obliterate	...	व्यामृष्ट, मिटाना
Parachutists	...	छतरीधारी
Airbrone	...	वायुयान द्वारा लाये हुए
Peril	...	विनाश
Seaborne	...	समुद्रवाहित
Immobilisation	...	स्थगन
Anti-Invasion	...	आक्रमण विरोधी
Decontamination	...	शुद्धीकरण
Totalitarian	...	सर्वाधिकारवादी
Confined	...	सीमित
Regimentation	...	व्यूह रचना, पलटन मे विभाग करना
Professional	...	पेशेवर
Civilain	...	जनपदसेवी
Nation wide	...	राष्ट्रव्यापी
Incorporation	...	सस्थापन ससर्ग
Compulsory	...	अनिवार्य
Voluntary	. .	स्वैच्छिक, स्वयकृत
Population Centre	...	अधिवासित केन्द्र
Directive	...	अनुदेश
Conventional	...	परिपाटीबद्ध
Obligation	..	आरोपित बन्धन
Civil defence unit	.	नागरिक प्रतिरक्षा दल
Rescue	...	उद्धार
Aggressor	.	आक्रमक
Paralise	...	नष्ट करना
Precaution	...	पूर्वोपाय, बचाव
Obscuring	...	अन्धकाराछन्न, अन्धकारमय
Furnaces	...	अग्निकुड
Bill	...	विधैयक
Admiralty	...	नौवाहन विभाग
Supply	...	सभरण

Aircraft production	...	वायुयान उत्पादन
Grants	...	अनुदान
Stipulated	...	निरुपित
Splinter proof	...	स्फोटखण्डविरोधी
Resume	...	सारांश
Backwardness	...	पिछडापन
Eventuality	...	आपत्काल
Industrial	...	औद्योगिक
Technical	...	तकनीकी
Warfare	...	संग्राम
Destructive	...	विनाशक
Metropolitan	...	राजधानीय
Concentration	...	सकेन्द्रण
Atomic Test	...	आणविक परीक्षण
Extension	...	विकास
Series	...	परम्परा
Feasibility	...	सम्भाव्यता
Measures	...	उपाय
Sponsorship	..	प्रवर्तकता
Equipment	..	सामान
Betterment	.	आसुधार
Adopted	..	अभिस्वीकृत
Foregoing	..	पूर्वोल्लिखित
Paragraph	..	परिच्छेद
Relief	...	अवमुक्ति
Practical	...	प्रयोगात्मक, व्यवहारित
Exchequer	...	राजकोष

अंग्रेजी		हिन्दी
Policy	...	नीति
Gas masks	...	गैस त्राण
Fire brigede	...	दमकल
Superstructure	...	उपरिसंरचना
Cross question	...	प्रतिप्रश्न, दुतराफाप्रश्न
Basement	...	तहख़ाना
Arch ways	...	छत्तो
Police	...	आरक्षी, पुलिस
Fifth column activites	...	पचमार्गियोकी क्रियाअे
Stampout	...	सफाया करो
Warden	...	सरक्षक, वार्डेन
A. R. P. Organisation	...	हवाई–हमले से बचाव का संगठन
Zones	...	कटिबन्धो
Homeguard	...	होमगार्ड, गृहरक्षक
Parachutes	...	छतरीधारी सैनिको
Evacuation	...	निष्क्रमण
Discipline	...	अनुशासन
Resultant Fire	...	परिणामी अग्नि
Fall out	...	अभिसपात, वर्षा
Crevices	...	तरेडो या दरारो
Radio-active dust	...	रेडियो सक्रिय (धर्मी) धूलि
Imminent	...	आसन्न और भयावह
Eventualities	...	सभावित घटनाओ
Nerves	...	तत्रिका,
Directed	...	निशाना लगाना
Ailing	...	पीडितो
Incendiary bombs	...	अग्निबमों
Cellers	...	अधःकोष्ठो
Basment	...	तहख़ाना

Ventilation	...	वायु के आवागमन की विधि
Nails	...	कीले
Racks	...	रेकों, कटघरा, वस्त्र पात्र आदि रखने की रचना
Supply	...	पूर्ति, सामग्री
Suprise	...	असंमजस
Window panes	...	वातायान–काच
Non-inflammable	...	अज्वलनशील
Strips	...	पट्टियाँ
Props	...	स्तम्भो
Reinforced	...	पुनःदृढीकृत, संबलित
Suction	...	आचूषण
Blast	...	विस्फोट
Trapdoor	...	कूटद्वार
Galvanised ironsheet	...	जस्तेदार लोह चादर
Planks	...	आधार स्तम्भ, थूनी
Open zig zag trenches	...	खुली हुई तिरछी बाकी (सर्पिल) खाइयाँ
Charge	...	आघात
Nuclear weapons	...	नाभिकीय अस्त्रों
Radiological active warfare	...	रेडियोधर्मी युद्ध प्रणाली, रेडियो-धर्मी युद्ध
First aid	...	प्रथमोपचार
shafts		गाडीकी धुरी
Fire hydrents	...	दमकल बम्बे
Lamp post	...	आलोकस्तम्भ
Blocked	...	अवरुद्ध
Cordone	...	घेरा

अंग्रेजी		हिन्दी
Materially	...	भौतिक रुपमे
Obsolete and outmoded	...	अप्रचलित तथा अनुपयोगी
Rudimentary	...	प्राथमिक सिद्धान्त
Extra Curricular	...	पाठ्यक्रमातिरिक्त
White paper	...	श्वेत पत्र
Civil defence operational control	...	नागरिक प्रतिरक्षा सक्रिय नियन्त्रण
Area control station	...	क्षेत्र नियम्त्रण केन्द्र
Excutive office	...	कार्यपालिका कार्यालय
Radiological monitoring	...	विकिरण –विज्ञान सम्बन्धी संचरिक्षण
Fiscal year	...	राजरोषीय वर्ष
Dissemination	...	प्रसार
Air attack	...	हवाई हमला
Incendiary	...	अग्निदाहक
Eventuality	...	आकस्मिक सकट
Bulwark	...	अडवाल
Refresher course	..	नवीकर पाठ्यक्रम
London County Council	..	लन्दनकी जनपदीय परिषद
Bacterical warfare	...	जीवाणु युद्ध
Hotch Potch	..	मिश्रित और अव्यवस्थित
Recommendation	...	सिफॉरिश
Destructive Method	...	विनाशकारी उपाय

अंग्रेजी		हिन्दी
Semi–Government	...	अर्धशासकीय, अर्द्धसरकारी
Voluntary	...	स्वैच्छिक
Survival	...	अतिजीविता
Community	...	जाति, सम्प्रदाय
Secretary	...	सचिव
Nurse	...	परिचारिका, धाय
To Mitigate	..	हलका करना, शान्त करना
Intensified	.	तीव्र बनाया
Integral	...	मूलभूत
Objective	...	उद्देश
Fantastic	...	अद्‌भूत, झक्की मनुष्य
Police	. .	आरक्षी
Factor	...	अंग
Texture	...	संरचना, ढाचा
Coercion	.	बलप्रयोग
Generate		प्रजनित, उत्पन्न करना
Government Civil Defence work	...	शासकीय नागरिक प्रतिरक्षा कार्य
Beds	...	शय्या, बिस्तरो
Wardens Service	...	सरक्षक सेवा
Reference Division	...	सदर्भ विभाग
Industry	..	उद्योग
Home Secretary	. .	गृहसचिव
Agencies	...	अभिकरणो
Civil Defence Corps	...	नागरिक प्रतिरक्षा कोर
Supervision	...	निरीक्षण
Director General	...	महानिर्देशक
Guidance	...	निर्देशन, मार्ग प्रदर्शन
Grant	...	अनुदान, अर्पित धन
Procurement	...	अधिप्राप्ति, सम्पादन

Detection Devices	...	परिचय साधन
Protective Masks	...	संरक्षी मुखाच्छादन
Gas Detection Kits	...	गैस–परिचयन थैले
Massive attack	...	भीषण आक्रमण
Mutual aid	. .	पारस्परिक सहायता
Mobile Support	...	चल सहायता
Evacuation	...	निष्क्रमण
Regulates	...	विनियमित करता है
Federal	...	सघीय
Devised	...	प्रकल्पित, रचना, कृति
Zonal Headquaters	...	कटिबंधीय मुख्यालय
Convulsion	...	उपद्रव
Emergency	...	सकटकालीन, आपद्‌कालीन
Salient	. .	प्रमुख
Allied Headquarter	...	मित्रराष्ट्र–मुख्यालय
Communique	...	विज्ञप्ति
Operation Planning		सामरिक आयोजना
SAGE (Supreme Allied Commander)	...	मित्रराष्ट्रोके सर्वोच्च कमाडर
Equitable	..	सुनीति सगत
Attitude	...	रवैया, अभिभिवृत्ति
U. N. O.	...	सयुक्त राष्ट्रसघ
Adjunct	. .	महत्वपूर्ण अग, कोई वस्तु जो दूसरे से जुडी हो परन्तु उसका आवश्यक अग न हो
Exigencies	...	अपेक्षाए, नितान्त आवश्यकताएं
Reluctantly	...	अनिच्छापूर्वक
Cordoned	..	घेरा
Respite	...	विराम
Statutory	...	संविधानिक, वैधानिक
Enforcement	...	लागू करना
Relief Activities	...	राह कार्य
Preventive measures	...	सुरक्षात्मक उपाय
Traffic routes	...	यातायात मार्ग

Comprise	...	समावेश, सम्मिलित करना
Directives	...	निदेशपत्र, आदेश
Recommendation	...	अनुग्रह करना, पक्ष समर्थन
Whole Time	...	पूर्णकालीक
Part time	...	अशकालिक
Resume	...	सारवृत्त, सारांश
National Fire Service	...	राष्ट्रीय दमकल सेवा
Casualty Service	...	हताहत सेवा
Regular Police	...	नियमित आरक्षी
Auxiliary Police	...	महायक आरक्षी
N. C. C. (National Cadet cops)	...	राष्ट्रीय कैडेट कोर
Sponsored	...	प्रायोजित
Beacon light	...	प्रकाश–सकेत
Catastrophe	...	आपात या विपत्ति
Senior Division	...	प्रवर प्रभाग
Law	.	विधि
Makeshift	...	स्वल्पकालिक अभ्यर्थी, अस्थायी प्रवध
Sketchily	. .	साधारण रुपमे
Mobility	...	सचालन
Fire Power	...	अग्निदल, अग्निशक्ति
Competitor	...	प्रतिस्पर्धी या विरोधी
Manpower	...	जनबल, जनशक्ति
Observer	...	प्रेक्षक
Fire Guard	...	अग्नि–गारद
Infinitely	...	वृहद्
Operational	...	साग्रामिक
Overcoat	...	लवादा, ओवरकोट
General Headquarters	...	सामान्य मुख्यालय
Vulenerable	...	भेद्य, क्षत पहुँचाने योग्य

International	...	अन्तरराष्ट्रीय
ANRC. Chapters	...	अमरीकी रेडक्रासके पादरियोंका सघ
Initiative	...	पहल, सूत्रपात, आरम्भक
Scouts	. .	बालचर
Marshals	.	निरीक्षक अधिकारियो, मार्शल
Boroughs	.	ससदीय क्षेत्रो
Welfare	...	कल्याण

अंग्रेजी		हिन्दी
Specialised	. .	विशिष्ट
Training	. .	प्रशिक्षण, शिक्षा अभ्यास
Confusion	...	सभ्रान्ति, अव्यवस्था
Due importance	..	यथोचित महत्व
Conventional weapon	...	परम्परागत शस्त्रास्त्र
Circular	..	परिपत्र
Suit	...	युद्धपरिधान
Light party	. .	छोटे दल
Shelter code	...	शरणगृह सहिता
Shelter schemes	—	शरणगृह–योजनाए
Home office Schools	...	गृह–कार्यालय पाठशालाएं
Staff school	.	कर्मचारी पाठशाला
Grant	...	अनुदान
Bulletins	.	विज्ञप्तियाँ
Interchangeability	. .	अन्तरपरिवर्ततनीयता, परस्पर परिवर्तन शीलता
Rescue party	...	उद्धार–दल
Regional fire Prevention		क्षेत्रीय अग्निप्रतिबन्धक
Training officer	.	प्रशिक्षण अधिकारी
Staff College	.	कर्मचारी महाविद्यालय
Allied Nation		मित्र–राष्ट्र
National fire service	..	राष्ट्रीय अग्नि–सेवा
Civil defence crops	. .	नागरिक प्रतिरक्षा–दल
Auxiliary fireman	. .	सहायक अग्नि रक्षक
widespread	.	व्यापक
Navy	.	जल सेना विभाग
Para Military organisation	...	व्यापक नौसेना, अतिरिक्त सैनिक सगठन
Incursion	...	घुसपैठ, आक्रमण, धावा
Passive air defence	. .	निष्क्रिय प्रतिरोधात्मक हवाई प्रतिरक्षा
Incident control	. .	दुर्घटना–नियन्त्रण
United Nations Assembly	...	सयुक्त राष्ट्र सभा

अध्याय २०

अंग्रेजी		हिन्दी
World Context	...	विश्वप्रसग
Atomic age	..	परमाणु युग
Technology	. .	औद्योगिकी, उद्योग विद्या, कला विज्ञान
Fission	...	विखडन, विभजन
Fusion	. .	लय, एकरुपीकरण, समेकन, द्रवत्व
Automation	. .	स्वचलन
Miniaturization	.	लघ्वीकरण, सक्षिप्तीकरण
Satellite	...	उपग्रह
Molecular	. .	परमाणु सबधी
Synthetic Drugs	.	सश्लिष्ट औषधियाँ, कृत्रिम रूपसे मिश्रित करनेपर बनाई हुई औषधिया
Space	. .	अवकाश, आकाश, ब्रम्हाण्ड
Atomice Traces		परमाणु दीप्ति रेखायें
Chemical Processes	...	रासायनिक प्रक्रियाअे
Fall out	.	वर्षा, अभिसपात
Frame Wowk	.	ढाचा
Standardization	.	मानकीकरण
Combat zone	. .	समाघात क्षेत्र
Reconnaissance	...	टोह, गश्त
Mental delirium	.	मानसिक भ्राति जिसमे रोगीको उसके चारो ओरकी स्थितियो का ज्ञान नही रहता
Test Ban pact Talk	...	परीक्षण–प्रतिबन्ध–समझौता वार्ता
British white paper	...	ब्रिटिश श्वेतपत्र
Report	..	प्रतिवेदन

Intellectual ideas	...	बुद्धिवादी विचारधारायें
Conventional	...	परम्परागत
Mobilisation	...	लामबन्दी, युद्ध के लिये सेनाका एकत्रिकरण
Factor of morale	...	मनोधैर्यका गुण
Disperesed attack	...	छिटपुट आक्रमण
Tip and Run	.	मारो–भागो
Emergency fire services	. .	सकटकालीन दमकल सेवायें
Dormitory Shelters	. .	शयनगार शरणगृह
Noteworthy	.	उल्लेखनीय
National Manpower Budget		राष्ट्रीय जनशक्ति बजट
Civil defence reserve	. .	नागरिक प्रतिरक्षा–आरक्षण
Stand down	.	गारद--वापस
Vulnerability	...	भेद्यता
Jelecommunication	.	दूरसचार–सेवायें
Radiological defence	.	विकिरण–विज्ञान–सम्बन्धी प्रतिरक्षा
Fedral assistance	. .	सघीय सहायता
Regimentation	...	एकमार्गीकरण, पलटनमे विभाग

अंग्रेजी		हिन्दी
Landslide	...	भूस्खलन
Typhoon	...	भीषण तूफान, प्रचन्ड आंधी
Explosion	...	विस्फोट
Atom	...	परमाणु
Conventional Weapon	...	परम्परागत शस्त्रास्त्र
Radio–active ash	...	रेडियो–सक्रिय धूल
Family shelters	...	पारवारिक प्रतिरक्षागृह
Public Shelters	...	सार्वजनिक प्रतिरक्षा गृह
International Organisation	...	अन्तर राष्ट्रिय संगठन
Psychogical defence	...	मनोवैज्ञानिक प्रतिरक्षा
Semi-Government	...	अर्द्धसरकारी
Voluntary Organization	...	स्वयंसेवक संगठन
Econmic defence	...	आर्थिक क्षेत्रमें प्रतिरक्षा
Peace Times	...	शान्तिकाल
Earthquake	...	भूकम्प
Indo-pak conflict	...	भारत–पाक–संघर्ष
Civil defence	...	नागरिक प्रतिरक्षा
Government Officer	...	सरकारी अधिकारी
Total destruction	...	पूर्ण विनाश
Latest research	...	नवीनतम खोज
Necessary precautuions	...	आवश्यक हिदायतें
Basement	...	तलमंजिल, घरका सबसे नीचल हिस्सा
International Civil Defence Organization	...	अन्तरराष्ट्रीय नागरिक–प्रतिरक्षा संगठन
Internaltional Relief Programme	...	अन्तरराष्ट्रीय आपद्कालीन राहत कार्यक्रम
United Nations	...	संयुक्त राष्ट्रसंघ
Natural calamity	...	प्राकृतिक आपदा
Nuclear Weapons	...	परमाणु–शस्त्रास्त्र
Compulsory	...	अनिवार्य

ADVERTISEMENT SECTION

WITH THE HEARTY FELICITATIONS OF THE

AUTHOR



M A. DIP. ED. (ENG)
Member, International
Civil Defence Organisation,
Genoa.

Please **AWAIT** *for author's following publications :*

1. **MANUAL ON CIVIL DEFENCE FOR SCHOOLS**
2. **INDUSTRIAL CIVIL DEFENCE**
3. **CIVIL DEFENCE IN WAR & PEACE**
4. **REAL GLIMPSES OF BRITISH INDIAN HISTORY**
5. **DEVELOPMENT OF MODERN POLITICAL THEORY**
6. **MALAISE OF THE MODERN WORLD**

&

7. **What, IF THERE IS ANOTHER WAR ?**

RESIDENCE : INDUS COURT, A. Road, Marine Drive, BOMBAY.

PHONES : 263798 Office with Extn. to Residence
264927 Office
294635 Residence Tel. Add. BINARAJ Bombay
48110 Hyderabad No.

WITH COMPLIMENTS OF :



INDIAN TOURISM DEVELOPMENT CORPORATION

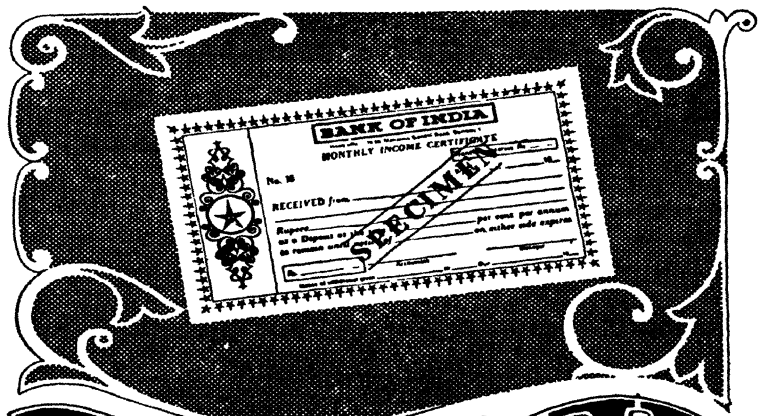


(DEPARTMENT OF TOURISM)

NEW DELHI.

नयी बचत-जमा योजना

मासिक आय



सर्टिफिकेट

बैंक ऑफ इन्डिया की
इस नयी बचत योजना का लाभ उठाइए।
इस योजना के अनुसार आपको
हर माह ब्याज मिलेगा

विशेष जानकारी के लिए
हमारी पास की शाखा में पधारिए

बैंक ऑफ इंडिया

RAAS/B/134 A HIN

For Homes — for Industries!

CALICO GROUP OF MILLS

MANUFACTURE:

TEXTILES:

CALI-CLOTH Sarees, Dress materials, Shirtings, Handkerchiefs, Pillowcases, etc.
CALI-SYNTH Sarees, Dress materials
CALI-KUT Sarees, Dress materials, Handkerchiefs, Scarves.
CALI-STRETCH/Helanca Yarn and Fabrics made of Cali-Stretch/Helanca
CALI-KNIT Warp-knitted Fabrics
CALI-THREAD Sewing Threads
CALI-SYNTHREAD Synthetic Sewing Thread
CALI-NET Round-mesh Mosquito Netting and Ready-made Nets
CALI-TOWEL Jacquard, Dobby and plain Terry Towels.

PLASTICS:

CALI-PLAST PVC Resins, Compounds, Plastisols
CALI-PLAST VC/VA Copolymers
CALI-PLAST PVC Aluminium Cables and Auto Cables
CALI-PLAST PVC Rigid Sheets, Rigid and Flexible Pipes.
CALI-PLAST PVC Films and Sheetings
CALI-PLAST PVC Handrails and Curtainrails
CALI-PLAST PVC Layflat Tubing, Heat-shrinkable Tubes and Water Stops
CALI-MUL, Cali-cryl and Cali-lak PVA Emulsions
CALI-SOLV Chlorinated Hydrocarbon Solvents
CALI-BOND Synthetic Resin Adhesive
CALI-CLAD PVC Wall Panelling
CALI-CHLOR Bleach-cum-Disinfectant.
CALI-COAT B, Calicoat MT for the Leather Industry
CALI-FLOW 1088 Processing Aid for PVC
CALI-THANE HC Hexachloroethane

For further details, please write to:

CALICO GRUOP OF MILLS

P.O. Box 173, AHMEDABAD (India).

Sorry .....

WE CAN'T PROVIDE FOREIGN EXCHANGE.

But .....

WE CAN HELP YOU SAVE
WITH OUR SYNTHETIC RUBBERS ...

ADD UP THE ADVANTAGES:

S-1500 Staining

S-1502 Non-Staining

S-1513 Non-Staining — Low Mooney — High Bound Styrene

S-1514 Non-Staining — High Mooney — High Bound Styrene

S-1712 37.5 Parts Oil-Extended Staining

S-1714 50.0 Parts Oil-Extended Staining

S-1958 Self Reinforcing

Plus Free Technical Service

Saving in Foreign Exchange

For more details. write to :

SYNTHETICS & CHEMICALS LIMITED

7, Jamshedji Tata Road,

BOMBAY - 20.

Sarangpur

WEAVES
PRESTIGE IN FABRICS

VOILES ■ SAREES ■ DRESS MATERIALS
POPLINS ■ SHIRTINGS ■ TERENE/COTTON SUITINGS
CAMBRICS ■ LENOS ■ DHOTIES
EMBROIDERED & PLEATED FABRICS
GENTS' & LADIES' HANDKERCHIEFS

THE SARANGPUR COTTON MFG. CO. LTD.,
MRAIWADI ROAD, P.O. BOX NO. 19, AHMEDABAD-8.



देना बैंक

सम्पूर्ण बैंकिंग सेवा के लिए

देना बैंक
हेड ऑफ़िस : देवकरण नानजी बिल्डिंग्स,
१७, हॉर्निमन सर्कल, फोर्ट, बम्बई-१.

Ratan Batra/DB/H/07-R

WITH
BEST WISHES
FROM
A
WELL-WISHER

REMEMBER

THE SHREENIWAS COTTON MILLS LIMITED

402, Senapati Bapat Marg,
BOMBAY - 13.

Manufacturers of a wide Range of Fabrics —

" COTTON ", ' TERENE '/COTTON, MIXED FABRICS BLEACHED, DYED, ROLLER PRINTED, SCREEN PRINTED, ORGANDIE, LONGCLOTH, MULLS, VOILES, DOBBY DORIAS, FULL VOILES, SPECIALLY TWISTED VOILES, DHOTIES, LAWNS, CAMBRICS, CHECKS/PATTAS, POPLINS, SHIRTINGS, SUITINGS, TUSSORES, SATEENS, FABRICS LABELLED 'SANFORIZED' AND THE RENOWNED SAREES, 'FLORINA'

Mill Own Retail Cloth Centres :

(1) Opp. Mills Premises,
402, Senapati Bapat Marg, Bombay - 13.

(2) 209/211, New Charni Road,
Prarthana Samaj, Bombay - 4.

(3) Padhye Bldg., N. C. Kelkar Road,
Near Maruti Temple,
Dadar (W. Rly.), Bombay - 28.

for that millionaire look



Century
for 100% cotton
textiles

CENTURIZED
PREMRUNK FABRIC

THE
CENTURY
SPG. & MFG. CO LTD.
BOMBAY 25 DD

Century's
Cosy-Cot
cotton SHIRTINGS
with Rich Woollen Feel



For Fashion Fabrics choose
Century Shirtings!

NPS CM 16

With Best Compliments from :



DEVIDAYAL STAINLESS STEEL INDUSTRIES PRIVATE LIMITED

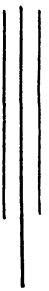
GUPTA MILLS ESTATE, DARUKHANA, BOMBAY-10.

Manufacturers of :

Wide Range of Kitchen Utensils, Tablewares, Electric Kettles, Pocket Tiffin Carriers, Fabricated Steel Tanks for Food and Chemical Industries, Wash Basins, Hospital Equipments and Railway Fittings etc.

With Best Compliments

From :



SHRI MAHENDRA KUMAR VAISH

Partner

UNIVERSAL STEEL INDUSTRIES

REROLLERS, ENGINEERS & FABRICATORS

Works :

197, KOLSHET ROAD,
THANA.

Office :

3rd LANE,
DARUKHANA,
BOMBAY - 10.

Grams : LOHAKENDRA,
Bombay - 10.

Phone { Darukhana 370977, 372748 / JATHA 328414 / Factory 592142

With best Compliments

from

✱

Vallabhdas Dayal & Sons

COTTON CONTROLLERS & LICENSED
CUSTOM HOUSE AGENTS

Indu House, Dougall Road, Ballard Estate,
BOMBAY-1.

Phone : 261897, 374732 Gram : DECORATION

With Best Compliments from :

OCM
CARPETS

MEHRA CARPET SHOWROOM

'CRYSTAL'
79, Dr. A. B. Road, Worli, Bombay-18.
Phone : 37 32 54

With Best Compliments from :



DEEP TRANSPORT

TRANSPORT OPERATING FOR BOMBAY
—TEMPO SERVICE

LAL BAHADUR SHASTRI MARG
MULUND, BOMBAY—80.
TELEPHONE 591048

With Best Compliments from :

★

P. S. JAIN GROUP OF COMPANIES

74, RAJPUR ROAD,
DELHI - 6

Telegraphic Address :
PASJAN
DELHI

Telephones :
227410
223720

Personal Nos.
220496
220448

Branches :—

(1) MADHYA PRADESH

(2) PUNJAB

(3) HIMACHAL PRADESH

(4) HARYANA

(5) MAHARASHTRA &

(6) NEPAL

With Best Compliments from :

DHRANGADHRA CHEMICAL WORKS LTD.,

Manufacturers of Heavy Chemicals

1. Caustic Soda (Rayon Grade)
2. Liquid Chlorine
3. Trichloroethylene
4. Tetrachloroethane
5. Perchloroethylene
6. Upgraded Ilmenite Ore
7. Soda Ash
8. Soda Bicarb
9. Calcium Chloride
10. Ammonium Bicarbonate
11. Salt

at

Sahupuram, Arumuganeri PO.
Tirunelveli Dist.,
Tamil Nadu.
Gram : ' CHEMICALS '
Arumuganeri
Phone : 30 Kayalpatnam

at

Dhrangadhra
Gujarat.
Grams : ' CHEMICALS '
Dhrangadhra
Phone : 31 & 67 Dhrangadhra

For your requirements, please write to :

DHRANGADHRA CHEMICAL WORKS LTD.
' Nirmal ' 3rd Floor,
Nariman Point,
Bombay - 1.

O U R B R A N C H E S A T :

' Dakshineswar '
10th Floor,
10 Hailey Road,
New Delhi-1:

127, Chittranjan
Avenue,
Calcutta-7.

2/7 Anderson Road,
Nungambakkam
Madras-6.

SMALL FAMILY — HAPPY FAMILY

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :



Mistry KANJI PITAMBER KHOKHAWALA

JARIMARI, MOHILI VILLAGE,
KURLA — ANDHERI ROAD,
BOMBAY - 72.

EVERY THING FOR YOUR STUDIO, CINEMA AND AUDIO VISUAL AIDS FOR

* TECHNICAL TRAINING
* EDUCATIONAL INSTITUTES
* MEDICAL PROFESSIONS
* SALES PROMOTION
* COMMUNITY PROJECTS
* BOARD MEETINGS
* ENTERTAINMENT

Cinerama Private Limited

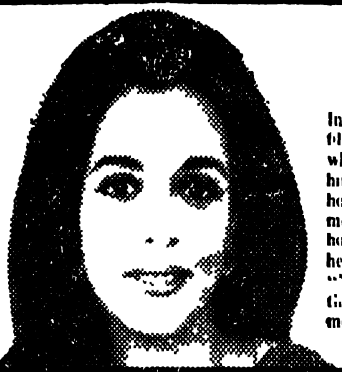
Metro House, Mahatma Gandhi Road, Bombay 1. Phone : 293873, 293874.

* Brampton Road, Delhi, Phone': 224746, * Light House Cinema, Calcutta. Phone : 234757

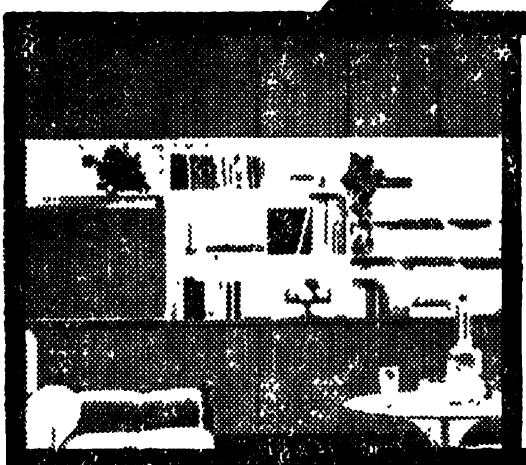
Agurchand Mansions, 35 Mount Road, Madras 2. Phone : 85308,

mcm'sg/242

"I've used Sungloss in my drawing room," says popular film star Leela Naidu, "because it is the only decorative surfacing which has over a hundred international designs and colours to choose from. So I can get the right pattern to go with my furniture."



International's acclaimed film star Leela Naidu, who has starred in hits such as "The Householder", takes as much meticulous care over her home as she does over her roles on the screen. "Nothing that is less than perfect will do for me," she says



There is a pattern for every kind of personality with Sungloss

This is why Sungloss is the perfect decorative surfacing for you

1 Sungloss can take the toughest wear and tear without bending or warping. It's almost indestructible.

2 Sungloss can be cleaned in seconds. Just wipe it clean with a damp cloth.

3 Sungloss can withstand surface temperature of 180°C without damage.

4 Sungloss does not absorb moisture. It resists colour, design and surface changes from boiling water, cooking liquids or household bleaches and detergents.

5 Sungloss repels vermin, white ants, termites, mildew and fungus.

6 Only Sungloss offers the largest variety of international designs and colours... over a hundred to choose from.

People who are used to the best use SUNGLOSS... do you deserve less?

Mfg. by: Caprihans (India) Pvt. Ltd., Shivsagar Estate, Worli, Bombay. Branches—Delhi, Calcutta, Madras.

Foremost on the Fashion Front

Distinctive Dinesh Fabrics

Woollen & Terene/Wool Suitings
Also wide range of Blankets, Shawls,
Knitting Wools, Special Export Qualities

Shri Dinesh Mills Ltd.,
Padra Road,
BARODA 5

PRAVINCHANDRA & SONS

178, Backbay Reclamation,
Bombay 20 : Tel. No : 294019.

Distributors of :

ALCO Link Chains
HOLLYWOOD Laminates
MUKAND Steel Products
PLASTICS Containers.

FROM THE HOUSE OF

SUBHASH

FABRICS for
you & your family

SUITING, SHIRTING, SAREE
& DRESS MATERIAL



SUBHASH SILK
MILLS PVT. LTD.
BOMBAY-72

AM

CIPLA

INDIA'S NATIONAL PHARMACEUTICAL CONCERN



CIPLA REMEDIES ARE AMONG THE WORLD'S BEST.

CHEMICAL, INDUSTRIAL &
PHARMACEUTICAL LABORATORIES, LTD.
282, BELLASIS ROAD, BYCULLA, BOMBAY-8.



Craftsmanship and strict quality control. These are the reasons why Carona Footwear is acclaimed all over the world Canvas, rubber, corduroy, P V C and rubber-soled leather Carona Shoes are worn by discriminating people on four continents

Carona FOOTWEAR

takes the wear, resists the tear!

Carona Sahu Co. Ltd.
221, Dadabhoy Naoroji Road,
Bombay 1
Telegrams: CARONASAHU

AIYARS CS. 127

With the Compliments

of



MAHINDRA AND MAHINDRA LIMITED

BOMBAY CALCUTTA DELHI MADRAS

With Compliments from

*

India Tube Mills & Metal Industries Private Limited

(Structural Engineers & Tank Fabricators)

Agra Road, Vikhroli,
P. O. TAGORE NAGAR,
BOMBAY - 83 NB

Gram : TUBEMILL Telex · 011-2691 Phone : 581541

KHANDELWAL UDYOG LIMITED

Manufacturers of

E O.T. Cranes upto 50 Tonnes Capacity in collaboration with Muocks of Norway

Industrial Heat Treatment Industrial Heat Treatment Furnaces in collaboration with Ing F. Ferre of Italy

Construction Machinery such as Concrete Mixers, Roller Pao Mixers, Builders' Tower Hoists, etc.

Economy Steel Structures in collaboration with C.M E.N.I. Durgapur SAVING IN STEEL COST & TIME

Also all kinds of Structural Fabrication Work

Kurla-Kirol Road,
Post Box 9208, P O. Ghatkopar West,
BOMBAY-86

Grams : LOHAUDYOG-GHK Phone . 555281

With Best Compliments from :

E. SEFTON & COMPANY PRIVATE LIMITED

(Estd. 1930)

MIRZAPUR (U.P.)

THE NAME THAT GUARANTEES QUALITY

Manufacturers of :

WOOLLEN & SHODDY YARNS & WOOLLEN FABRICS

Specialists in Woollen for Defence

Grams—WOOLSPIN Phones—568 & 303

THE BUNDELKHAND SOLVENT EXTRACTION & RICE MILLS PRIVATE LIMITED.

Manufacturers and Exporters of

Rice, Rice Bran Oil, Deoiled Rice Bran Cake etc.

ATARRA, Distt. BANDA, U.P.

Grams—EXTRACTION Phone—11

THE MIRZAPUR ELECTRIC SUPPLY COMPANY LIMITED.

Jubbulpore Road, Mirzapur.

Grams : KILOVOLT Phone : 302.

THE MIRZAPUR COLD STORAGE LTD.

Jubbulpore Road, Mirzapur,

Phone—457

A GROUP OF MAHESHWARI ENTERPRISES

CHAIRMAN—RAMJILAL MAHESHWARI

With Best Compliments from :

JALAN GROUP OF CONCERNS :

PRAKASH COTTON MILLS PVT. LTD.

BHARAT BARREL & DRUM MFG. CO. PVT. LTD.

JALAN DYEING & BLEACHING MILLS

FILMISTAN PRIVATE LIMITED

FILMISTAN STUDIOS

GWALIOR INVESTMENT CO. PVT. LTD.

WELDON CORDING WORKS

LOKENATH TOLARAM

JALAN INDUSTRIAL SYNDICATE

Prakash Cotton Mills Pvt. Ltd.

Regd. Office :
139, Medows Street,
Fort, Bombay-1 BR
Phone : 25 24 22

Market Shop :
M. J. Market, Krishna Chowk,
Bombay-2 BR
Phone : 31 29 62

H. O. & Mills :
Off Fergusson Road,
Lower Parel, Bombay-13 BC
Phones : 37 86 41 (5 Lines)

—: Specialities :—

TERENE SUITINGS & SHIRTINGS,
100% NYLON SOCKS, SLACKS, BELL-BOTTOMS,
BLEACHED, DYED & PRINTED HANDKERCHIEFS,
FLANELLETTES, VOILS, DRILLS, FULL VOILS, MULLS,
FURNISHING FABRICS, POPLINS,
DHOTIES, SAREES
& READYMADE GARMENTS.
COTTON YARN 10s TO 120s COUNT

IN SUPERIOR QUALITIES AT ATTRACTIVE AND REASONABLE PRICES

With Best Compliments from :

MAGANLAL DRESSWALA

INDIA'S LEADING COSTUMERS

CLOTH DEPT.

73/75/77, Bhuleshwar Road,
BOMBAY-2.

Telephones : 310009, 310156

COSTUMES :

JAI HIND ESTATES
Bhuleshwar Road,
BOMBAY-2.
Grams : COSTUMES"

With Best Compliments from :

LION SURESH MEHTA OF

INDUSTRIAL COMPONENTS

Manufacturers of :

TURNED PARTS & SHEET METAL JOBS

MEADOWS HOUSE, 3rd Floor,
Meadows Street, Fort, Bombay-1.

Tele : 257966 (Office)
379314 (Factory)

Grams : TURNWEL

With Best Compliments from :

M. JALALMIA & CO.

GENERAL FRUIT COMMISSION AGENTS

Jambagh Road, Hyderabad - 1 (A.P.).

Phones : 41100 (Office) 56348 (Resi.)

THE BOMBAY MERCANTILE CO-OP. BANK LTD.,

78, Mohamedali Road, Bombay - 3.

Reserve & Other Funds.	Rs. 23,09,800
Last Divident paid (free of tax)	9 per cent
Government Audit Classification.	'A'

OUR SPECIAL SERVICES

SAFE DEPOSIT VAULT. Lockers of various sizes available in the Air-conditioned and most modern Safe Deposit Vault in the building of the Bank at Mahim Branch, Bombay and Gandhi Road, Ahmedabad.

NIGHT SAFE: This is a unique service rendered by the Bank, at the Head Office The members and constituents can deposit their day's collection after banking hours in the Night Safe and thus be free from the risk of being looted overnight.

UTILITY ARTICLES: Sewing Machines, Washing Machines, Refrigerators, Domestic Furniture, Electric Fans and Window Type Room Air-conditioning Machines can be acquired by borrowing from the Bank at concessional rates.

All Kinds of Banking Business Transacted.

ZAIN G. RANGOONWALA
Managing Director.

EXPERT SERVICES BUREAU PVT. LTD.,

Cecil Court, Lansdowne Road,
Apollo Bunder, Bombay - 1.

Tel. Off.: 213396, 211626 Tel. Resd.: 211996

Specialists in: Industrial Security
Watch and Ward
Plant Protection and Labour Laws

All types of criminal, civil, industrial & private investigations undertaken, and carried out with efficiency to the entire satisfaction of our clients in strict confidence.

Representatives in big cities in India and Associates abroad.

Chairman: Mr. N. M. Kamte, I.P.(RTD.), M.B.E., J.P.,
Retired Inspector General of Police, Bombay.

Area Governor for India of World Association of Detectives Inc. and Member, Association of British Detectives.



THE HALLMARK OF QUALITY
IN
COPPER WINDING CONDUCTORS
TESTED TO PERFECTION
THE BEST IN COPPER WINDING WIRES
BECAUSE

* EXPERTLY ENAMELLED TO SUIT INDIVIDUAL END—USE REQUIREMENTS
* TESTED BEFORE, DURING AND AFTER PRODUCTION
* CONFORMS TO INTERNATIONAL STANDARDS
* CATERS TO THE VARIED NEEDS OF ELECTRICAL INDUSTRY

HINDUSTAN TRANSMISSION PRODUCTS
(Prop. Madhusudan Ltd.)

Shree Niketan, F Block, Shiv Sagar Estate
Dr. Annie Besant Road, Worli, Bombay - 18.

Phone : 378437 Grams : Anukaran
Telex : 011 - 3487

Pioneers in manufacture of Super Enamelled Copper Wires & Strips

With Best Compliments From :

★

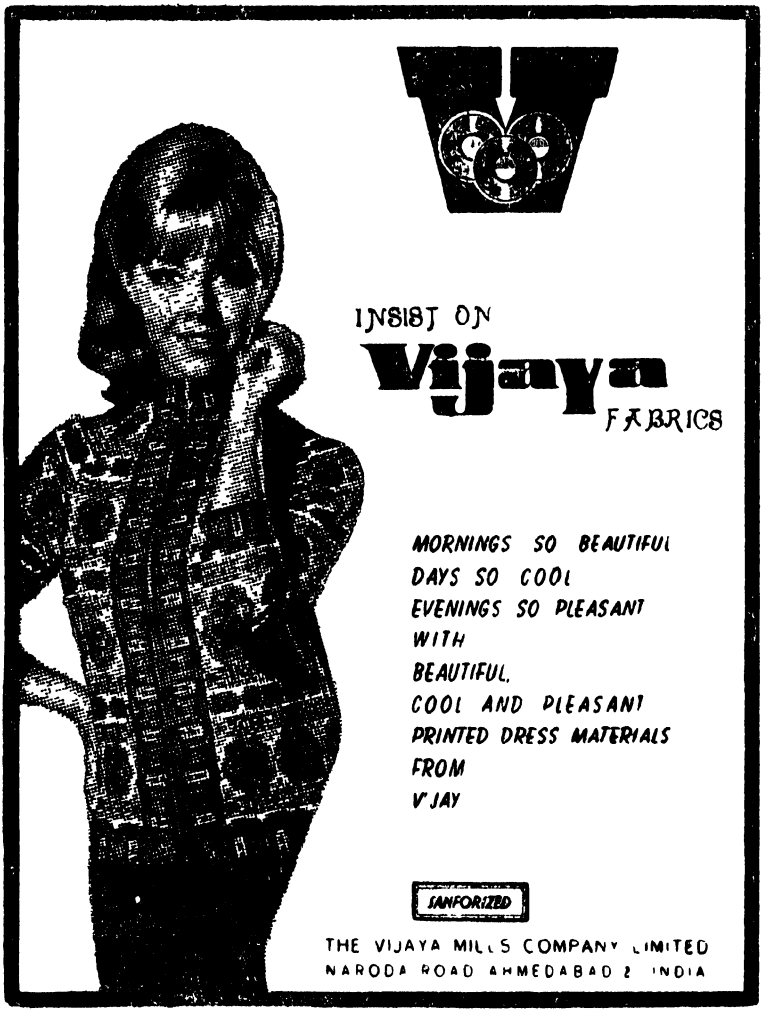
LAKSHMIRATAN ENGINEERING WORKS LTD.

Empire House,
Dr. D. N. Road,
Bombay-1.

Phone : 261213 Telegram : TEXPINDLES

Factory :

Lower Parel, Bombay. | Industrial Area No. 1, Faridabad. | Ratanpuri, Kanpur.



With Best Compliments

from :

CHHOTALAL KESHAVJEE & CO.

(Iron Steel & General Metal Merchants)

254, Sant Tukaram Road,
Carnac Bunder Bombay-9.

Gram : IRONBARS (Mandavi)

Phone : 323767 (Shoo) 321637
Resi. : 471954

INVEST SOUNDLY!

Earn Multiple Returns

Navjeevan Trading Finance Pvt. Ltd., pioneers in the field of savings has, till today, mobilised over 55,000 members in Savings Groups—amongst them doctors, engineers, businessmen, government servants, office-goers and industrial workers—to save systematically in the next 60 months varying amounts for their own welfare.

All this money is soundly and prudently re-invested in loans to members, catering to their diverse financial needs, and in banks, all of which means individual prosperity, more jobs and economic upliftment. All this with numerous opportunities of winning substantial cash gifts in addition.

NAVJEEVAN TRADING FINANCE PVT. LTD.

Administrative Office :
India's Premier Savings Organisation
ESTD.: 1969 REGD.: No. 1558
425-B, Sita Prasad Bldg., Chira Bazar,
BOMBAY-2. Phone : 354071
Office : Ahmedabad, Calcutta, Bangalore,
Nagpur, Kolhapur, Hospet, Mangalore.

With Best Compliments From :

★

Precision Bearings India Limited

" Nirmal " 14th Floor,
241-242, Backbay Reclamation,
BOMBAY-1 BR.

Phone : 25 69 01
25 69 80

Telex : 011-3391

Kamanis' brass World class!

Kamanis' brass strips get top rating in oversees markets.

Kamanis are known the world over for their meticulous insistence on quality...export millions of dollars worth of industrial products.

Kamanis' top-quality brass strips are manufactured to fulfil the strictest international standards...are used extensively and with confidence by various leading industries for manufacture of flashlights, battery caps, clock parts, telephone components, electrical accessories, etc., both in India and abroad.

For details write to:

KAMANI METALS & ALLOYS LIMITED

New Kamani Chambers, Nicol Road, Ballard Estate, Bombay 1 (INDIA)

K symbol of industrial vitality

With best Compliments from

JOESON TRADING CO.

JANMABHOOMI CHAMBERS,
309, 3rd FLOOR, FORT STREET
POST BOX NO. 1934, BOMBAY - 1.

Telephone : 266726 Telegram : JOESINDA

Manufacturers, Importers, Exporters and Distributors, of Drawing Office Equipments, Ammonia/Ferro Papers, Tracing Papers and Ammonia Liquid, Coir/Jute Mat and Mattings, Felts, Rubberised Coir Matresses, Pads and Air Filteres.

WITH BEST COMPLIMENTS

From

Shri Chiranjilal K. Saraf

OF

Kishandutt Chiranjilal

325, KALBADEVI ROAD, BOMBAY - 2.



With Best Compliments from :

SUPREME ARMS STORES

Residency Road, Hyderabad.

Grams : "SUPREME"

Phone : 4120

Importers. Distributors for
Indian Ordnance Products, Dealers
in Prohibited Bore Arms &
Ammunition

&

Licenced Manufacturers
Of Air Rifles, Percussion Caps,
Lead Shots, Leather & Canvas
Accessories

Kamanis' brass World class!

Kamanis' brass strips get top rating in overseas markets.

Kamanis are known the world over for their meticulous insistence on quality...export millions of dollars worth of industrial products.

Kamanis' top-quality brass strips are manufactured to fulfil the strictest international standards...are used extensively and with confidence by various leading industries for manufacture of flashlights, battery caps, clock parts, telephone components, electrical accessories, etc., both in India and abroad.

For details write to.

KAMANI METALS & ALLOYS LIMITED

New Kamani Chambers, Nicol Road, Ballard Estate, Bombay 1 (INDIA)

K symbol of industrial vitality

With best Compliments from

JOESON TRADING CO.

JANMABHOOMI CHAMBERS,
309, 3rd FLOOR, FORT STREET
POST BOX NO. 1934, BOMBAY - 1.

Telephone : 266726 Telegram : JOESINDA

Manufacturers, Importers, Exporters and Distributors, of Drawing Office Equipments, Ammonia/Ferro Papers, Tracing Papers and Ammonia Liquid, Coir/Jute Mat and Mattings, Felts, Rubberised Coir Matresses, Pads and Air Filteres.

WITH BEST COMPLIMENTS

From

Shri Chiranjilal K. Saraf

OF

Kishandutt Chiranjilal

325, KALBADEVI ROAD, BOMBAY - 2.



With Best Compliments from :

SUPREME ARMS STORES

Residency Road, Hyderabad.

Grams : "SUPREME"

Phone : 4120

Importers. Distributors for
Indian Ordnance Products, Dealers
in Prohibited Bore Arms &
Ammunition

&

Licenced Manufacturers
Of Air Rifles, Percussion Caps,
Lead Shots, Leather & Canvas
Accessories

With Best Compliments From :

Shri V. K. Jhamb

of Noble Builders, 211 Frere Road,

Bombay - 1

Builders of :

at Juhu Bombay - 54

1. Nehru Nagar Co-op. Housing Society
2. North Bombay Co-op. Housing Society
3. New Sujata Co-op. Housing Society
4. Rohit Co-op. Housing Society
5. Suraj Co-op. Housing Society
6. Jhamb Co-op. Housing Society
7. Chand Co-op. Housing Society

(a) Shaukuntala Co-op. Housing Society, Santacruz, Bombay-54.

(b) Punam Co-op. Housing Society, Andheri, Bombay

(c) Picnic Co-op. Housing Society, Versowa, Andheri

(d) Ruksana Co-op. Housing Society Pali Hill, Bandra

(e) New Asha Nagar Co-op. Housing Society, Chembur, Bombay

(f) Nev Vilas Co-op. Housing Society Vile Parle East, Bombay

(g) Suchitra Co-op. Housing Society, Vile Parle East, Bombay

USE CHATONS

for Vanity Wear & Costumes Jewellery

CHATONS PRIVATE LIMITED

Parijat, 95, Marine Drive,

Bombay-2

Manufacturers of Quality Chatons & Rainbow, 'IRIS STONES' Vacuum Metallisers & Plastics Glass & Metal Articles

Works : Andrewnagar,

Ghodbunder Road,

Bombay-68

Phone : 292715. 661237

With Best Compliments From :

★

MODIPON LTD.

Regd. Office :

Modinagar, District Meerut, (U.P.)

Bombay Office :

6/180 Shreyas, Marine Drive,
Bombay-20

Phones : 295556 & 297883

With Best Compliments From :

✱

SYNFIBRE CORPORATION

Regd. Office :

Modinagar, District Meerut, (U P.)

Bombay Office :

6/180 Shreyas, Marine Drive,
Bombay-20

Phones : 295556 & 297883

With Best Compliments From :

★

Devidayal Electronics & Wires Ltd.,

GUPTA MILLS ESTATE
Reay Road, Bombay-10

Tel. : 372151

With Best Compliments From :

★

Lions Pencils Private Ltd.

Parijat, 95 Marine Drive,
Bombay-2.

Phone : 292715, 661237

With Best Compliments From :



FRIGSALES INDIA PRIVATE LTD.

204 Commerce House,
Meadows St., Fort,
Bombay-1

Phone : 251798 Gram : FRIGFROST

Branches :

At Delhi, Calcutta & Madras

With Best Compliments from :

THE VICTORIA MILLS LIMITED

Manufacturers of :

"FOUR SWAN" Cotton and blended fabrics, Poplins, Gadlapat, etc.

Mills :
N. M. Joshi Marg,
Parel, Bombay-13.

Tel. : 373523 Telex : 011-3343

Regd. Office :
104 Bharat House
Apollo Street
Fort, Bombay-1
Tel. : 261398

With Best Compliments

From :

HIMALAYAN TILES & MARBLE PRIVATE LIMITED

and its Associate Concerns,

HIMALYA BAUG,
Mahim, Bombay

Tel. : 452721

With Best Compliments

From :

PACKWEL SERVICE

Manufacturers of Corrugated Paper, Boards and Boxes

•

15, Sainath Industrial Estate,
Goregaon East, Bombay-63

Tel. : 695875

With Best Compliments From :



GAYLAND
LUXURY AIRCONDITIONED
HOTEL

Juhu Bombay-54

Known Everywhere for a Comfortable and Pleasant Stay

Phone : 574705

With Best Compliments From :

*

SIMPLEX WOOLLEN MILLS

PROPS : SETH INDUSTRIES PVT. LTD.

Grams : SHODDYMILL

Phone : 266041 - 3 Lines.
Telex : 011-2925 (SETH)

Mills :

Swami Vivekananda Road, Dahisar,
P. O. Bhayandar,
Dist. Thana.

Tele : 662311, 662312

Head Office :

Sadhana Rayon House,
2nd floor, Dr. D. N. Road,
Bombay - 1

Manufacturers of :

SHODDY WOOLLEN YARN, WOOLLEN BLANKETS, BLAZERS, VELOURS, TWEEDS, ETC., AND INDUSTRIAL CLOTHES.

Gram :
' Ironstock '

Phones : { O : 32 41 05
R : 52 25 95

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Shri Lekhraj Manoharlal Agrawal

Manufacturers of :

" MLA "

BANDSAW BLADES, MACHINE KNIVES

Asoka House, 151, Narayan Dhuru Street,
Bombay - 3

Factory at :

Reay Road, Bombay - 10

With Best Compliments From :

Shri Kishen Chand of

M/s. Pannalal Sons Pvt. Ltd.

Nagdevi Cross Lane,
Bombay.

Telephones :

Factory :
47 34 23

Office :
32 27 95

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

★

SWASTIK AUTO CORPORATION

OFFICE · 3 to 6 p.m.

Phone : 356937
2F, Naaz Building.,
Lamington Road,
Bombay-400 004.

FACTORY :

Bhatia Glass Compound,
Vacola Pipe Line,
Santacruz, (East)
Bombay-400 055.

With Best Compliments from :

MR. ABID KAGALWALA

Managing Director

GLOLITE ELECTRICALS

Manufacturers of :

LIGHTING FIXTURES, BALLASTS, STARTERS AND ACCESSORIES, VARI-TRANS AUTOMATIC VOLTAGE STABILISERS, FLASH TEST UNITS.

Mazgaon, Bombay-10 DD.

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :



Shri Amichand Gupta

Managing Director :

Devidayal (Sales) Pvt. Ltd.

Gupta Mills Estate, Reay Road,
Bombay - 10

Mining Dept., ores Dept., Electric & Engineering Dept., Insecticide & Pulversing Dept., & N. G. K. Electrical Industries.

Telephones : 370001, 370002, 370003 & 370004

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Walker Anjaria & Sons Private Limited

EXPORTERS & IMPORTERS

Raw-wool, Scoured wool, Wool tops,
Goathair, Goatskins
and
Large Manufacturers of High Purity
INDUSTRIAL SALT

*

Registered Office :

ANAND ROAD, Post Box No. 71, JAMNAGAR

(Recipient of " Certificate of Merit Award " Ministry of Foreign Trade, Government of India for best performance In export of Raw wool for year 1968/69.)

BRANCHES :

BOMBAY, BEAWAR, BIKANER, NEW-DELHI,
CALCUTTA, RAJKOT, KEKRI, ANJAR.